जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश

[पंचम भाग]

शब्दानुक्रमणिका

जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश

[पंचम भाग]

शब्दानुक्रमणिका

क्षु. जिनेन्द्र वर्णी

भारतीय ज्ञानपीठ

चतुर्थ संस्करण : 2003 □ मूल्य : 130 रुपये

ISBN 81-263-0763 - 3 (Set)
81-263-0833 - 8 (Part-V)

भारतीय ज्ञानपीठ

(स्थापना फाल्गुन कृष्ण 9, वीर नि स 2470, विक्रम स 2000, 18 फरवरी 1944)

पुण्यश्लोका माता मूर्तिदेवी की स्मृति मे
साहू शान्तिप्रसाद जैन द्वारा सस्थापित
एवं
उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रमा जैन द्वारा सम्पोषित

मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड़, तमिल आदि प्राचीन भाषाओ में उपलब्ध आगमिक, दार्शनिक, पौराणिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि विविध विषयक जैन साहित्य का अनुसन्धानपूर्ण सम्पादन तथा उनके मूल और यथासम्भव अनुवाद आदि के साथ प्रकाशन हो रहा है। जैन-भण्डारो की ग्रन्थसूचियॉ, शिलालेख-सग्रह, कला एवं स्थापत्य पर विशिष्ट विद्वानों के अध्ययन-ग्रन्थ और लोकहितकारी जैन साहित्य ग्रन्थ भी इस ग्रन्थमाला में प्रकाशित हो रहे हैं।

•

प्रधान सम्पादक (प्रथम सस्करण)
डॉ हीरालाल जैन एव डॉ आ ने उपाध्ये

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003

मुद्रक बी के ऑफसेट, दिल्ली-110 032

© भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

Moortidevi Jain Granthamala Sanskrit Grantha No 48

JAINENDRA SIDDHĀNTA KOŚA

[PART-V]

INDEX

by

Kshu. JINENDRA VARNI

BHARATIYA JNANPITH

Fourth Edition : 2003 □ Price : Rs. 130

ISBN 81-263-0763 - 3 (Set)
81-263-0833 - 8 (Part-V)

BHARATIYA JNANPITH

(Founded on Phalguna Krishna 9, Vira N Sam 2470, Vikrama Sam 2000, 18th Feb 1944)

MOORTIDEVI JAIN GRANTHAMALA

FOUNDED BY

Sahu Shanti Prasad Jain

In memory of his illustrious mother Smt. Moortidevi

and

promoted by his benevolent wife

Smt. Rama Jain

In this Granthamala critically edited Jain agamic, philosophical, puranic, literary, historical and other original texts in Prakrit, Sanskrit, Apabhramsha, Hindi, Kannada, Tamil etc are being published in the original form with their translations in modern languages Catalogues of Jain bhandaras, inscriptions, studies on art and architecture by competent scholars and popular Jain literature are also being published

•

General Editors (First Edition)

Dr Hiralal Jain and Dr A N Upadhye

Published by

Bharatiya Jnanpith

18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003

Printed at B K Offset, Delhi-110 032

© All Rights Reserved by Bharatiya Jnanpith

प्रकाशकीय

जैन धर्म-दर्शन के प्रखर तत्त्ववेत्ता श्रद्धेय क्षु जिनेन्द्र वर्णी जी द्वारा लिखित 'जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश' भारतीय ज्ञानपीठ ने चार भागो मे पहली बार सन् 1971-73 मे प्रकाशित किया था। प्रस्तुत ग्रन्थ उक्त चारो भागो की शब्दानुक्रमणिका (इण्डेक्स) के रूप मे पॉचवॉ खण्ड है। वैसे देखा जाए तो कोश अपने-आप मे शब्दानुक्रम के रूप मे ही होता है, फिर भी इस इण्डेक्स की अपनी विशेष उपयोगिता है। उदाहरण के लिए, 1 कोश मे शब्द विशेष के विवेचन मे प्रसगवश अनेक ऐसे शब्दो का भी उल्लेख है, जिन्हे मुख्य शब्द के रूप मे नही रखा गया, मात्र सन्दर्भ के रूप मे ही उनका प्रयोग हुआ है, 2 अनेक ऐसे शब्द भी है जिनका प्रयोग प्रसगत अनेक बार अनेक सन्दर्भों मे हुआ है, साथ ही, 3 ऐसे भी अनेक शब्द है जिनकी प्ररूपणाओ के सन्दर्भ एक-साथ,एक-जगह न होकर ग्रन्थ मे यत्र-तत्र फैले हुए है। इन सब बातो को ध्यान मे रखकर वर्णी जी ने पूरे कोश की शब्दानुक्रमणिका जैसे श्रमसाध्य कार्य को भी अपने जीवन-काल के अन्तिम दिनो मे पूरा कर दिया था। वर्णी जी ने यह शब्दानुक्रमणिका कोश के प्रथम सस्करण के आधार पर बनायी थी, लेकिन बाद मे जो सस्करण निकले उनमे सशोधन-परिवर्तन के कारण चारो भागो की पृष्ठ-सख्या मे अन्तर आ गया । अत यहॉ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि यह शब्दानुक्रमणिका कोश के द्वितीय और उसके बाद के सस्करणो पर आधारित है। प्रथम सस्करण से इसकी पृष्ठ-सख्या मेल नही खाएगी। शब्दानुक्रम (इण्डेक्स) देखते समय पाठको को द्वितीय आदि सस्करण को ही ध्यान मे रखना होगा ।

इस शब्दानुक्रमणिका (इण्डेक्स) मे दिये गये शब्द के सन्दर्भ का पहला अक कोश के भाग का सूचक है । बिन्दु के बाद के अक उस भाग की पृष्ठ-सख्या के सूचक है । 'अ' का अर्थ उस पृष्ठ का पहला कॉलम है और 'ब' का अर्थ दूसरा कॉलम । जैसे '**केवली**—2 155 अ' का तात्पर्य है कि 'केवली' शब्द के लिए देखे—द्वितीय भाग के पृष्ठ 155 का पहला कॉलम।

हमारे विशेष अनुरोध पर श्री अरहत कुमार जैन (वाराणसी) ने इस शब्दानुक्रमाणिका के सशोधन कार्य—द्वितीय आदि सस्करण के अनुरूप पृष्ठ-सख्या शुद्धि के कार्य—मे अथक परिश्रम किया है। जैनेन्द्र वर्णी ग्रन्थमाला, पानीपत के प्रबन्धक श्री सुरेश कुमार जैन ने भी इस दिशा मे हमे पर्याप्त सहयोग दिया है। भारतीय ज्ञानपीठ की ओर से इन दोनों सहयोगी बन्धुओं के प्रति हम विशेष आभारी है।

—प्रकाशक

जैनेन्द्र कोश शब्दानुक्रमणिका

(क्षु. जिनेन्द्र वर्णी)

यदीया वाग्गंगा विविधनयकल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानाभोभिर्जगति जगता या स्नयपति ।
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥

अ

अंक —१.१ अ। चित्रा पृथिवी ३.३८९ ब। सौधर्म स्वर्ग पटल – निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४ ५१९, ब, आयु १.२६६। अनुदिश स्वर्ग श्रेणीबद्ध – निर्देश ४ ५१९ अ, अकन ४ ५१९, आयु १ २६९।

अक (कूट)—१.१ अ। कुण्डलवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ४८७, अंकन ३.४६७। मानुषोत्तर पर्वत का –निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अकन ३.६४। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६९।

अंकगणना — १.१ अ।

अंकगणित—१.१ अ।

अंकगति— वाम दिशा से २.२२२ अ।

अंकप्रभ—१.१ अ। कुण्डलवर कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६७।

अंकमय—१.१ अ। पद्मद्रह कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४५४।

अंकमूल—१.१ अ।

अंकलेश्वर—१.१ अ।

अंका— विदेहस्थ नगरी—नाम निर्देश ३.४७० ब, स्वरूप निर्देश ३.४६० अ, विस्तार ३.४७९-४८१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।

अंकावती—१.१ अ। विदेहस्थ नगरी—नाम निर्देश ३.४७० ब, स्वरूप निर्देश ३.४६० अ, ४६५ के सामने, विस्तार ३.४७९-४८१, अंकन ३.४४४, चित्र ३.४६० अ।

अंकुरारोपण—इन्द्रनन्दि १.२९९ ब।

अंकुरार्पण यंत्र – ३.३४८।

अंकुश रचना—अध.प्रवृत्तकरण २.८ ब, २.९ अ।

अंकुशित—१ १ अ, वन्दना दोष ३.६२२ ब।

अंक. को. को.—अन्तःकोटाकोटी २.२१८ ब।

अंग—१ १ अ। अनुमान १.९८ ब, उपदेश १.४२५ अ, देश ३ २७५ ब, पूजा ३ ८० ब, वानर वंश १.३२८ ब, शरीर १.१ ब, श्रुतज्ञान ४.६७ ब, सम्यक् चारित्र २ २८२ अ, सम्यग्ज्ञान २.२६३ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५० ब, सेना ४.४४४ अ।

अंगज्ञान—१ १ अ।

अंगज—४ २६ अ।

अंगद—१.१ अ, वानरवंश १.३३८ ब।

अंगधर – मूलसंघ १ ३१६-३१७।

अंगनिमित्त-ज्ञान—२ ६१२ ब, ऋद्धि १.४४८।

अंगपण्णत्ति—१.१ अ, इतिहास १.३४६ ब।

अंगप्रविष्ट—४ ६७ अ, ब।

अंगबाह्य—४.६७ ब।

अंगश्रुत—४ ६७ अ।

अंगांशधर—मूलसंघ १.३८७, ३२२ ब, १. परि./२.२।

अंगार—१.१ ब। देश ३.२७५ ब।

अंगारक – १.१ ब। देश ३.२७५ अ।

अंगारदोष—आहार १.२९२ अ।

अंगारिणी—१.१ ब। विद्या ३.५४४ अ।

अंगावर्त—१.१ ब। विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

अंगिरा – ४.३९८ ब।

अंगिरेयक—पर्वत ३.२७५ ब।

अंगुल—१ १ ब। क्षेत्र प्रमाण २.२१५ अ।

अगुलीचालन—१.१ ब। व्युत्सर्ग तप का दोष ३.६२२ अ।

अंगोपांग—१ १ ब।

अंगोपांग नाम कर्म प्रकृति—१ १ ब; प्रकृति २.५८३ अ, ३.९५ ब, स्थिति ४ ४६४, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६ अ, बन्ध ३ ९८, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७४ अ, ३७५, उदय स्थान १.३९०, उदीरणा १ ४११, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्व स्थान ४.३०३, त्रिसयोगी स्थान १.४०४ अ, सक्रमण ४ ८४ ब। अल्पबहुत्व १ १६९ अ।

अंजन—१ २ अ। चित्रा पृथिवी ३.३८९ ब। देवकुरु का दिग्गजेन्द्र—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३ ४८३, ४८५, ४८६, अकन ३.४४४। पाण्डुक वन मे यम देव का भवन ३ ४५० ब। प्रतिष्ठा-मण्डप का द्वार-पाल देव ३ ४९१ ब। वरुण लोकपाल का यान ४ ५१३ अ। सनत्कुमार स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४ ५१५, आयु १ २६७।

अंजन (कूट)—१ २ अ। मानुषोत्तर—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अकन ३.४६४। रुचकवर—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६८, ४६९।

अजनगिरि—१ २ अ। नन्दीश्वर द्वीप मे—निर्देश ३ ४६३ ब, विस्तार ३.४८७, वर्ण ३ ४७८, अकन ३ ४६५, चित्र ३.४६५। रुचकपर्वत का दिग्गजेन्द्र ३ ४७६ ब।

अजनमूल—१.२ अ। चित्रा पृथिवी ३.३९१ अ।

अंजनमूल (कूट)—मानुषोत्तर—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अकन ३ ४६४। रुचकवर—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अक ३.४६८, ४६९।

अजनमूलक—१.२ अ।

अंजनवर—१.२ अ। सागर द्वीप—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन ३ ४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४।

अंजन शैल—१ २ अ। वक्षार गिरि—निर्देश ३.४६० अ, नाम निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७।

अजना—१.२ अ। चतुर्थ नरक—निर्देश २.५७६ अ, पटल इन्द्रक श्रेणीबद्ध २ ५७८, २ ५८०, विस्तार २.५७६, २.५७८, अंकन ३.४३९, ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १.२६३।

अंजना (नरकगति प्ररूपणा)—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३७६, उदय स्थान १.३९२, उदीरणा १ ४११, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६। सत् ४ १७०, सख्या ४.९५, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४ ४७९, काल २.१०१, अन्तर १ ८, भाव ३,२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४ अ।

अंजना पवनंजय—इतिहास, १ ३४४ अ।

अंजली—प्रमाण १ ४७२ अ।

अजसा—१.२ अ।

अंजुका—इन्द्राणी ४ ५१३ ब।

अंड—१ २ अ।

अंडज—जन्म १.२ अ। वस्त्र ३.५३१ अ।

अंडर—१.२ अ, वनस्पति ३.५०६ ब, ३.५१० अ।

अंडा—उत्पत्ति ३.५८७ ब।

अंतःकरण—१.२ ब। मन ३.२७० अ, ३.२७१ अ।

अंतःकोटाकोटी—१.२ ब, सहनानी २.२१८ ब।

अंत—१ २ ब, गणित २२९ ब, २ २३० ब, गुणहानि २.२३२ अ। नरक पटल—निर्देश २.५८० ब, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३। परमाणु ३.१६ ब।

अंतकाल—४.३८५ ब।

अंतकृत—१.२ ब, केवली १.२ ब, २.१५७ अ, दशाग १ २ ब, ४६८ अ।

अंतडी—१.२ ब, औदारिक शरीर १.४७२ अ।

अंतधन—गणित २.२३० ब।

अंतप—मनुष्य लोक ३.२७५ ब।

अंतमति—सल्लेखना ४.३८५ ब।

अंतरंग—१.२ ब, उपयोग २.४०६ ब, कारण २.६२ अ, २ ७२ ब, चिह्न २.४७८ ब, छेद १ २१६ ब, २ ३०६ ब, ३ २९ अ, ४.५३३ ब, जल्प ३.५४३ अ, तत्त्व ३.३३६ अ, तप २.३६१ अ, त्याग ३.२७ ब, ३.२८ ब, धर्मध्यान २.४८५ ब, परिग्रह ३.२७ ब, ३ २८, ३ २९ अ, प्रत्यय ३.१२५ ब, प्रमेय ३.१४४ अ, प्रायश्चित्त ३ १५८ ब, शुद्धि ३.२९ अ, हिंसा ४.५३६ अ।

अंतर—१.२ ब, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, १.१०३ अ, गति परिवर्तन १.५ अ, साता असाता ३.५९२ ब। प्ररूपणा—ओघ आदेश १.७-२२, अनन्तानुबन्धी १.६१ ब, उदीरणा १.४१२, उपशम १.४३८, स्थितिबन्ध ४.४५८ ब, स्वामित्व सन्निकर्ष १.२४।

अंतरकरण—१.२५ अ, उपशम विधान १.४३८ ब, चारित्रमोह क्षपणा २.१८० अ।

अंतरकृष्टि—१ २७ अ, कृष्टि २.१४० अ, ब, चारित्र मोह क्षपणा २.१८० ब।

अंतरद—१.२७ अ, ग्रह २.२७४ अ।

अंतरनिवासी देव—व्यन्तर देव—आयु १ २६४ ब।

अंतरात्मा—१ २७ अ, आत्मा १ २४४ ब, जीव २ ३३३ अ, ब, त्याग-ग्रहण ३ ३०५ ब, भव्य ३ २१३ अ, शास्त्रज्ञान २.२६७ ब।

अंतरानुयोग द्वार—१ १०२ अ, काल २ ९४ अ।

अंतराय (आहार)—१.२७ ब।

अंतराय कर्म प्रकृति—१ २७ ब, अघातीवत् १ ९१ अ, आबाधा १.२४९ अ। प्ररूपणा—प्रकृति १ २७, ३ ८८, स्थिति ४.४६७, अनुभाग १.९४ ब, ९५, अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६७ अ, १ १६९ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदय स्थान १.३८७ ब, उदीरणा १.४०० अ, १.४११, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०१ अ, १ ३९९ ब। अध्यवसाय स्थान १ ९५, ३.१३८ अ, अल्पबहुत्व १ १६७ अ, सक्रमण ४.८५ ब।

अंतरायाम—अन्तरकरण १ २५ अ, १ २६ ब, १.२७ अ, उपशम १.४४१ अ।

अंतरिक्ष निमित्तज्ञान—२.६१२ ब, ऋद्धि १.४४८।

अंतरिक्ष स्थिति—अर्हन्नातिशय १ १३८ अ।

अंतरित—श्रद्धान ४.४५ अ।

अंतर्द्वीप—१.२९ व। कुमानुष द्वीप—निर्देश ३.४६२ ब, विस्तार ३.४४९, अकन ३ ४४४, ३.४६१, ३ ४६४ के सामने। कालविभाग २.९३, भोगभूमि २.४६२ ब। चक्रवर्ती का वैभव ४.१३ ब। म्लेच्छ—निर्देश ३.२७३ ब, ३ ३४५ ब, ३ ३४६ अ, अवगाहना १.१८०, आयु १.२६४ अ, गुणस्थान ३.२३६ अ। बौद्धाभिमत ३.४३४ ब।

अंतर्द्वीप ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५१ ब।

अंतर्पाण्ड्य—१.२९ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

अंतर्मग्न—मोक्षमार्ग ३.३३७ ब।

अंतर्मुख चित्प्रकाश—दर्शनोपयोग २ ४०६ ब, २.४०७ अ,

अंतर्मुहूर्त—१.३० अ, काल का प्रमाण २.२१६ ब, सहनानी २.२२० अ।

अंतर्विचारिणी—१.३० अ, विद्या ३ ५४४ अ।

अंतर्स्थिति—अन्तरकरण १.२५ ब, सक्रमण ४.८९ ब।

अंतश्चित्प्रकाश—दर्शनोपयोग २ ४०६ ब, २.४०७ अ।

अंतस्तत्त्व—तत्त्व २.३५३ ब।

अंतिम गुणहानि—गणित २.२३२ अ।

अतिमतीर्थ—कृतिकर्म २ १३४ अ, समवसरण ४ ३३१ ब।

अत्यसौक्ष्म्य—सूक्ष्म ४.४३८ ब।

अत्यस्थौल्य—४ ४३९ अ।

अंध—१ ३० अ, नरक पटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।

अंधपाषाण—३.२१२ अ।

अंधश्रद्धान—४ ४४ अ।

अंधहस्ती न्याय—एकान्त १ ४६३ ब।

अंधेद्रा—नरक पटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

अंध्र—नगरी १.३० ब।

अंध्रकरूढि—१ ३० अ, वानरवंश ६.३३८ ब।

अंध्रकवृष्णि—१.३० अ, यदुवंश १ ३०६, हरिवंश १.३४० अ।

अंबर—१ ३० व।

अंबरतिलक—१ ३० व, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

अंबरीष—१ ३० ब।

अंबर्णा—१.३० ब। नदी ३.२७६ अ।

अंबा—कुरुवंश १ ३३६ अ, व्यतर गणिका ३.६११ ब।

अंबालिका—कुरुवंश १.३३६ अ।

अंबिका—कुरुवंश १.३३६ अ। नव नारायण ४ १८।

अंबुवान—३ ५३२ अ।

अंभोद—राक्षस वंश १.३३८ अ।

अंभोधि—यदुवंश १.३३७।

अंश—१ ३० ब, उत्पादादि १ ३५८ अ, ३६१ ब, केवलज्ञान २.२५९ ब-२६०, गणित २ २२३ ब, गुण २.२४१ अ, ज्ञान २.२५९ ब, चारित्र २.२९३ ब, परमाणु ३ १७ ब, पर्याय ३.४५ ब, बन्ध ३ ३३४ अ, भेद विज्ञान ३.३३४ अ, मोक्ष ३ ३३४ अ, राग १.४३२ अ, ब, ३.३०५ ब, सवर ४ १४३ ब, सम्यक्त्व ३.३०९ अ, ३१० अ।

अंश कल्पना—१ ३० ब, विकलादेश ३.५३६ ब।

अंशपना—३ १८ ब।

अंशुमान—विद्याधर वंश १.३३९ अ।

अ—असज्ञी २.२१९ अ।

अकंप—यदुवंश १ ३३७।

अकंपन—१ ३० ब, गणधर २.२१३ अ, राज्यवंश १.३३५ अ, यदुवंश १.३३७।

अकंपनाचार्य—१ ३० ब, विष्णुकुमार १.३३६ अ।

अकबर—१ ३० ब ।
अकम्प—दे० अकंप ।
अकम्पन—दे० अकंपन ।
अकम्पनाचार्य—दे० अकंपनाचार्य ।
अकरण—उपशम १ ४३७ अ ।
अकर्तव्य—धर्म २ ४७१ ब ।
अकर्ता—एकान्तवाद २ ३४४ ब, कर्ताकर्म २.२४ ब, ज्ञानी २.२९९ अ, ज्ञानचेतना २ २९८ ब, ३००, राग ३ ३९९ अ, सम्यग्दृष्टि ४ ३७६ अ ।
अकर्तृत्व—कर्ताकर्म २.२४ ब, शक्ति १.३० ब, नय २.५२३ ब ।
अकर्म—उदय १ ३६६ ब ।
अकलक—चन्द्र १.३२३ ब, त्रैविद्य १ ३० ब, १ ३२५ १ ३३२ अ, भट्ट १ ३१ अ, मूलसघ १.३२२ ब, इतिहास १.३३४ अ, १.३४७ ब ।
अकलक स्तोत्र—१.३१ अ, अकलक १.३१ अ, आगम परम्परा १ ३४१ ब ।
अकषाय—कषाय २.३६ अ ।
अकषाय वेदनीय—३ ३४४ अ ।
अकषायी—उदय १.३८२, उदयस्थान १ ३९२, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८६, सत्त्वस्थान ४.३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ । सत् ४.२३२, संख्या ४ १०५, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २.११३, अन्तर १.१५, भाव ३.२२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५० अ ।
अकाम निर्जरा—२.६३२ ब ।
अकाय—सिद्ध—निर्देश २.४४, ४५ अ, जीवसमास २ ३४२ । अल्पबहुत्व १.१४७ ब, सत् ४.२११ ।
अकारु—३ ५२५ ब ।
अकार्य कारणशक्ति—१.३१ अ ।
अकाल नय—१.३१ अ, नय २ ५२३ ब ।
अकालमृत्यु—३ २८४ अ ।
अकालवर्ष—१.३१ अ, राष्ट्रकूट वश १ ३१५ अ, ब ।
अकालाध्ययन—१.३१ अ ।
अकालुष्य—शुभोपयोग १ ४३४ ब ।
अकिंचित्कर—कारण २.६८ अ ।
अकिंचित्कर हेत्वाभास—१.३१ अ ।
अकुशलानुबन्धा—२.६२२ ब ।
अकृत—१.३१ ब ।
अकृतिधारा—गणित २.२२९ अ ।
अकृतिमातृकाधारा—गणित २.२२९ अ ।
अकृत्रिम गृह—वसतिका ३.५२७ ब, ५२८ अ ।
अकृत्रिम चैत्यालय—२.३०४ अ ।
अक्रम—अनेकान्त १ १०५ ब, २.१७२ ब, गुण २.१७२ अ, केवलज्ञान २ १४६ ब, योगस्पर्धक ३ ३८३ ब ।
अक्रमवर्ती—२.१७२ ब ।
अक्रमानेकान्त—१ १०५ ब, २ १७२ ब ।
अक्रियवान—१ ३२ अ ।
अक्रियावाद—१ ३१ ब, एकान्त १.४६५ अ ।
अक्रियावादी—चार्वाक २.२९४ ब ।
अक्रूर—यदुवश १.३३७ ।
अक्ष—१ ३२ अ, गणित २ २२६ अ, ब, ग्रह २.२७४ अ, निक्षेप २ ५९८ ब, सुविधिनाथ २.३८४ ।
अक्षकर्म—२ २६ अ ।
अक्षत—पूजा ३ ७८ ब ।
अक्षपाद—परवाद ३ २३ अ, गौतम २.६३४ अ ।
अक्षमाला—अकम्पन १ ३० ब ।
अक्षमृक्षण—३ २२९ ब ।
अक्षमृक्षण वृत्ति—१ ३२ अ ।
अक्षयनिधिव्रत—१ ३२ अ ।
अक्षयफल दशमीव्रत—१.३२ अ ।
अक्षयानन्त—३ ३३२ अ ।
अक्षयी—कुरुवश १.३३६ अ ।
अक्षर—१.३२ ब, आगम १.२२८ ब, केवलज्ञान ४.६५ ब ।
अक्षरज्ञान—१.३३ ब, श्रुतज्ञान ४.६५ अ, ६६ अ ।
अक्षरसमास—१.३३ ब ।
अक्षरसमास ज्ञान—४.६५ अ ।
अक्षरात्मक—श्रुतज्ञान ४.५९ ब, शब्द ६.२२६ ब ।
अक्षसंचार—१.३३ ब, गणित २.२२६ अ ।
अक्षांश—१.३३ ब ।
अक्षिप्र—१.३३ ब, ज्ञान ३.२५६ अ ।
अक्षीण महानस—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५६ ब ।
अक्षीण महालय—ऋद्धि १.४४७, १.४५६ ब ।
अक्षीण परिभ्रमण १ ३३ ब ।
अक्षेत्रवान्—द्रव्य २.४५६ ब ।
अक्षेम—२ २०९ अ ।
अक्षोभ—१.३३ ब, विद्याधर ३ ५४६ अ ।
अक्षोभ्य—यदुवश १.३३७, विद्याधर ३.५४६ अ ।
अक्षौहिणी—१.३३ ब । सेना ४.४४४ अ ।
अखंड—१ ३३ ब, परमाणु ३ १८ ब, द्रव्य १ २२१ ब ।
अखड—नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१, नारकी—अवगाहना १.१७८,

आयु १.२६३ ।
अखंड—दे० अखड ।
अखोभिनी—संख्या प्रमाण २.२१४ ब ।
अगर्त—१ ३३ ब, देश ३.२७५ अ ।
अगाढ—१.३३ ब, श्रद्धान ४ ३७० ब ।
अगार—१ ३३ ब, ३४ अ ।
अगारी—१ ३३ ब, अनगारी व्रती ३.६२९ अ, ४.५० अ, अनगार १ ६२ अ ।
अगास देव—१.३४ अ ।
अगीतार्थ—आचार्य ४ ३९४ अ ।
अगुण—उपशम १ ४३७ अ ।
अगुणी—नय २ ५२३ ब ।
अगुप्ति भय—२ २०६ अ, ब ।
अगुरु—३.३०० अ ।
अगुरुलघु—१ ३४ अ, गुण १ ३४ अ, ४.८१ अ, मोक्ष ३.३२६ अ ।
अगुरुलघु नाम कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति १ ३४ ब, २.५८३, ३ ८८-८९ ब, स्थिति ४ ४६५, अनुभाग १ ९५ अ, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १६९ ब, प्रदेश ३ १३६, बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १.३७१, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी १.४०४ अ, सक्रमण ४ ८४ ब, स्वामित्व व गुणस्थान ३ १३७ अ ।
अगुरुलघु चतुष्क—उदय १.३७४ ब ।
अगुरुलघु द्विक—उदय १ ३७४ ब ।
अगुरुलघुत्व—गुण १ ३४ अ, मोक्ष ३.३२६ अ ।
अगृहीत द्रव्य—सहनानी २ २१९ अ ।
अगृहीत मिथ्यात्व—एकान्त १.४६४ ब ।
अगृहीता—४.४५० ब ।
अगृहीतार्थ—४ ४०३ ब ।
अग्गल—इतिहास १.३३१ अ, १ ३३२ अ, १ ३४४ अ ।
अग्नि—१ ३५ अ, कृत्तिका २ ५०४ ब, क्रोध १.३५ ब, चैत्य २.३०२ ब, जीव ४ ४५४ ब, त्रसत्व ४ ४५४ ब, देवता १.३५ ब, धर्म २.४७० अ, पंचाग्नि १.३५ ब ।
अग्निकायिक—१ ३६ ब । (विशेष दे० तेजकायिक) ।
अग्निकुंड—३.३२८ ब ।
अग्निकुमार—(देव) देव—निर्देश ३ २१० ब, अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १.२६५, अवस्थान ३.४७१, ३.६१२, ३.६१३ । इन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, शक्ति आदि ३ २०८ ब, परिवार ३ २०९ । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३०८, उदयस्थान १.३९२, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ । सत् ४ १८७, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५ अ ।
अग्निगति—१ ३६ अ, विद्या ३.५४४ अ ।
अग्निगुप्त—२.२१२ ब ।
अग्निचरण—ऋद्धि १.४४७, १.४५१ ब ।
अग्निजीव—१.३६ ब ।
अग्निज्वाल—१.३६ ब, ग्रह २.२७४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ ।
अग्नित्रय—१ ३५ अ ।
अग्निदत्त—कल्की २.३१ ब ।
अग्निदेव—१ ३६ ब, भूत—तीर्थंकर २.३७७, गणधर २ २१२ ब ।
अग्निप्रभ देव—१ ३६ ब ।
अग्निभूति—१ ३६ ब, गणधर २ २१३ अ ।
अग्निमंडल—१.३५ ब, १.३६ अ ।
अग्निमंडल यंत्र—३.३४८ ।
अग्निमित्र—१.३६ ब, शकवंश १ ३१४ अ ।
अग्निल श्रावक—कल्की २.३१ ब ।
अग्निवाहन—भावनेन्द्र—३ २०८ ब, निवास ३.२०९ ब, परिवार ३.२०९ अ, आयु १.२६५ ।
अग्निवेग—यदुवंश १ ३३७ ।
अग्निशिख—नव बलदेव ४.१७ अ, नव-नारायण ४ १८ अ, यदुवश १ ३३७ ।
अग्निशिखा—निश्चल ज्ञान २ ४९५ ब ।
अग्निशिखी—भावनेन्द्र—३ २०८ ब, निवास ३ २०९ ब, परिवार ३.२०९ अ, आयु १ २६५ ।
अग्निसह—१.३६ ब ।
अग्निहोत्री—१ ३५ ब ।
अग्न्याभ—लौकातिक देव ३ ४९३ ब ।
अज्ञात—१.३६ ब, फल १ ३६३ ब, सिद्ध १.३६ ब, हेत्वाभास १.२९० अ ।
अज्ञान—१ ३६ ब, अतिचार १.४३ ब, १ ३८ अ, अध्यवसान १.५२ ब, अभेदज्ञान २ २६७ ब, इन्द्रिय ज्ञान २.२६७ ब, कर्ता कर्म २ २२ ब, क्रिया २ २९८ अ, चेतना २.२९७ अ, २ २९८ अ, ब, २.२९९ ब, निग्रहस्थान १.३८ अ, परीषह १ ३८ अ, ३ ३३ ब, प्रज्ञा परीषह ३ ११४ ब, मिथ्याज्ञान २.२६६ ब, मिथ्यात्व १.३७ अ, मिश्र गुणस्थान ३ ३०८ अ, ब,

राग ३.३९८ ब।

अज्ञान (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०५, ३.१७५ अ, ३.३३८ ब, बन्धस्थान ३.१०८, ३.११३, उदय १.३८३, उदय स्थान १ ३९३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४.२८७, ४ ३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ, सत् ४.२३३, सख्या ४.१०५, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११३, अन्तर १.१५, भाव ३ २२१ अ, ३.३०४ ब, अल्पबहुत्व १.१५० अ।

अज्ञान निग्रहस्थान—१ ३८ अ।

अज्ञान परीषह—१ ३८ अ, परीषह ३.३३ व, ३ ३४ ब। प्रज्ञा परीषह ३ ११४ ब।

अज्ञानवाद—१.३८ अ, एकान्त १.४६५ अ।

अज्ञानान्धकार—२.२२ ब।

अज्ञानी—अनुभव १.८४ ब, कर्ता २.२२ ब, २ २९९ ब, ज्ञान २ २६५ अ, मिथ्यादृष्टि १.३७ अ, २ २६६ ब, २.२७३ अ, ३ ३०४ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३७ ब, राग ३.३९८ अ, हिंसा ४ ५३४ अ।

अज्ञायक—३ ३०३ ब।

अग्र—१ ३८ ब, एकाग्र १.४६५ ब।

अग्रदेवी—ज्योतिष देव २ ३४६ अ, वैमानिक देव ४ ५१२, ४.५१३।

अग्रनिर्वृत्ति क्रिया—४.१५२ अ।

अग्रप्रलम्ब—२.३६६ अ।

अग्रबीज—३ ५०२ ब, ३ ५०६ अ।

अग्रमुख—१.३९ अ।

अग्रय—श्रुतज्ञान ४ ६० अ।

अग्रवया—१ ३९ अ।

अग्रस्थिति—४.४५७ अ।

अग्रहण वर्गणा—३.५१३ अ, ब, ३.५१४ अ।

अग्रायणी—१.३९ अ, ४ ६७ ब, ४ ६८ ब।

अग्राह्य वर्गणा—३.५१३ अ-ब, ३.५१४ अ।

अग्रोद्यान—२ ३८३।

अघ—१.३९ अ, ग्रह २.२७४ अ।

अघनधारा—गणित २.२२९ अ।

अघनमातृका धारा—गणित २.२२९ अ।

अघाती—अनुभाग १ ९० ब, प्रकृति ३.९१ ब, वेदनीय ३ ५९४ अ।

अघोर—ऋद्धि १.४४७, १.४५४ अ, गुण ब्रह्मचर्य १.४४७, १ ४५४ अ, १.४५५ अ, १.४५६ अ, गुण ब्रह्मचारी ३.२०४ अ।

अचक्षुदर्शन—अनुभव १.८१ ब, दर्शनोपयोग २.४१३ अ, ब, २ ४१४ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०६, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८४, उदयस्थान १.३९३ अ, उदीरणा १ ४११, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १.४०७ ब। सत् ४ २४०, सख्या ४.१०७, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४९०, काल २.११५, अन्तर १ १००, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५१।

अचक्षु दर्शनावरण—२.४२० अ। प्ररूपणाएँ—प्रकृति २ ४२० अ, ३ ८८, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.९४ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ १०९, उदय १ ३७४ ब, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १.४११ ब, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसयोगी भग १.३९९ अ, संक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८ अ।

अचर ज्योतिष विमान—निर्देश २ ३४६ ब, संख्या २.३४८ ब, अवस्थान २.३४८ ब।

अचल—१ ३९ ब, गणधर २.२१२ ब, २ २१३ अ, जीव प्रदेश २ ३३९ अ, नारायण ४ २६ अ, प्रतिमा २ १३९ अ। बलदेव ४.१६ अ, वासुपूज्य नाथ २ ३९१।

अचलग्राम—नगर ३.२७६ अ।

अचलप्र—१.३९ ब।

अचलमात्रा—१.३९ ब।

अचलयोग—४.४१७ अ।

अचल स्तोक—१.३९ ब।

अचलात्म—१ ३९ ब। काल-प्रमाण २.२१६ ब, २ २१७ अ।

अचला देवी—विद्युत्प्रभ गजदन्त की देवी ३.४७३ अ, अकन ३.४५७।

अचलावली—१.३९ ब, आवली १.२७९ अ।

अचलित—३ १६ अ।

अचाक्षुष—४.४३८ ब। स्कन्ध ४ ४४७ ब।

अचार—अभक्ष्य ३ २०२ ब।

अचारित्र—अध्यवसान १ ५२ ब।

अचिता—३.२६२ अ।

अचिंतित—मनःपर्यय ज्ञान ३.२६५ ब, ३.२६७ अ।

अचित्त—१ ३९ ब, काल २.८१ ब, गुणयोग ३.३७६ अ, पाहुड ३.१५६ ब, पूजा ३ ७४ ब, ३.८० अ, बन्धक ३.१७९ अ, भाव ३.२१८ ब, योनि १.३९ ब, ३.४८७ अ, वर्गणा ३.५१६ ब, ३.५१८ अ, शल्य ४.२६ ब, सचित्त ४.१५८ अ।

अचित्त तद्व्यतिरिक्त—अन्तर १.३ ब।

अचित्त नोकर्म द्रव्यबन्ध—३.१७९ अ।
अचित्त पाहुड—३ १५६ ब।
अचेतन—१ ३९ ब, गुण २.२४४ ब, जीव ३ ३३२ ब, द्रव्य २.४५५ ब, सापेक्ष धर्म ४.३२३ ब, स्त्री ४ ४५१ अ।
अचेतनत्व—अजीव १.४१ ब।
अचेलक—१.३९ ब।
अचेलकत्व—१.३९ ब, १ ४० ब, निर्ग्रंथ २.६२१ ब, लिंग ३ ४१६ ब, ३.४१९ अ, साधु ४ ४०८ अ, ४.४०९ अ।
अचेल व्रत—१ ४० अ।
अचैलन्य—सापेक्ष धर्म १.१०९ अ।
अचौर्य—अणुव्रत १.२१३ ब, अस्तेय १ २१३ अ, अहिंसा १.२१७ अ, चारित्र शुद्धि व्रत २.२९४ ब, महाव्रत १.२१३ ब।
अच्छेज्ज—१ ४१ अ, वसतिका दोष ३.५२९ अ।
अच्युत—१ ४१ अ। सनत्कुमार चक्री ४ १० ब।
अच्युत स्वर्ग—१.४१ अ। स्वर्ग—पटल ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, उत्तर विभाग ४.५२० ब, अवस्थान ४ ५१४ ब, अंकन ४.५१५, इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ५२०। इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, उत्तरेन्द्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, अवस्थान ४ ५२० ब, चिह्न आदि ४.५११ ब, विमान नगर व भवन ४.५२०-५२१। देव—अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १.२६८, आयु बन्ध योग्य परिणाम १ २५८ ब।
अच्युत स्वर्ग (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.१९२, संख्या ४.९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०५, अन्तर १.१०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ अ।
अच्युता—१.४१ अ, विद्या ३ ५४४ अ।
अछेद—अर्द्धच्छेद २.२२५।
अछेद्य—१.४१ अ।
अज—अजघन्य २ २१८ ब।
अज—१.४१ अ. पूर्वाभाद्रपद २.५०४ ब, श्रोता ४ ७४ ब।
अजक—मगध देश १ ३१२।
अजघन्य—अनुभाग १ ८९ अ, सहनानी २ २१८ ब।
अजघन्य पद—१.१०२ ब, १.१०३ ब।
अजघन्य विभक्ति—१.१०३ ब।
अजयवर्मा—१ ४१ अ, भोजवंश १.३१० अ।
अजातशत्रु—१.४१ अ, मगधदेश १ ३१२, यदुवंश १.३३७।
अजितंजय—१.४१ अ, भरत चक्री ४.१५ अ, सुव्रतनाथ २.३९१।
अजितधर—१.४१ अ, रुद्र ४.२२ अ, अनन्तनाथ २ ३९१।
अजित—१ ४१ अ, पूर्व भव २.३७९-३९१, चन्द्रप्रभ का यक्ष २ ३७९।
अजितनाथ—१ ४१ अ। राक्षसवंश १.३३८ ब, विद्याधर वंश १.३३९ ब, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ।
अजितनाभि—१ ४१ अ, रुद्र ४.२२ अ, धर्मनाथ कालीन रुद्र २ ३९१।
अजितपुराण—१.४१ ब, इतिहास १ ३३३ अ।
अजितवीर्य—२ ३९२।
अजितसेन—१ ४१ ब, इतिहास १.३३२ ब, १ ३४५ अ।
अजीव—१ ४१ ब, कर्म २ २७ अ, ब, कषाय २ ३७ ब, क्रोध २ ३७ ब, विचय २ ४७९ अ।
अजीवाधिकरण—१ ४९ अ।
अटट—१ ४२ अ। संख्या प्रमाण २.२१४ ब, काल प्रमाण २.२१६ अ, २१७ अ।
अटटांग—१ ४२ अ, काल प्रमाण २.२१६ अ, २१७ अ।
अट्ठाईस—प्रकृति ४.८७ ब, २७६ अ, मूलगुण ४.४०४ अ।
अठारह—एकट्ठी की सहनानी २.२१८ ब, दोषातीत (अर्हन्त व आप्त) १.१३७ अ, १.२४८ अ, श्रेणी ४ ७२ अ।
अडड—काल प्रमाण २.२१६ अ।
अडडांग—काल प्रमाण २ ११६ अ।
अढाईद्वीप—१ ४२ अ, २ ४६२ ब, मनुष्य लोक ३.२७४ ब, चित्र ३.४६४ के सामने।
अढाई द्वीप प्रज्ञप्ति—अमितगति १.१३२ अ।
अणत्थमिय कहा—इतिहास १ ३४५ ब।
अणहिल—४ ८० ब।
अणिमा ऋद्धि—१.४४७, १.४५० ब।
अणु—१.४२ अ, परमाणु ३.१४ अ, ३.१८ अ, संघात ४.४४७ अ।
अणुचटन—३ २३७ अ।
अणुछेदन—२ ३०६ ब, ३०७ अ।
अणुवय रयण पईव—१.४२ अ, इतिहास १.३४५ अ; १.३३२ अ।
अणुवर्गणा—३.५१३ अ, ३.५१५ ब।
अणुविभजन—१.४२ अ।
अणुव्रत—अस्तेय १.२१३ अ, अहिंसा १.२१५ ब, परिग्रह

३ २६, बद्धायुष्क १ २६२ ब, ब्रह्मचर्य ३ १८९ ब, व्रत ३ ६२७ अ, श्रावक ४ ५० ब, सत्य ४ २७० ब, रात्रिभुक्ति २ ४०३ अ।

अणुव्रतरत्नप्रदीप—इतिहास १.३४५ अ।

अणुव्रती अगारी १.३३ ब।

अण्ड—दे० अड।

अण्डज—दे० अडज।

अण्डर—दे० अडर।

अण्डा—दे० अडा।

अतत—१ ४२ अ, सापेक्ष धर्म १ १०९ अ, १ १११ अ।

अतत्त्व शक्ति—१.४२ अ।

अतद्भाव—अभाव १ १२८ अ, अन्यत्व १.११२ अ।

अतिकाय—१.४२ अ। व्यन्तरेन्द्र—निर्देश (महोरग देव) ३ २९३ अ, ३ ६११ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १.२६४ ब।

अतिक्रम—१.४२ अ।

अतिक्रांत—१ ४२ ब। मत्याख्यान ३ १३१ ब।

अतिगोल—१ ४२ ब।

अतिचार—१ ४२ ब, अज्ञान १ ३८ अ, १ ४३ ब, अचौर्य ३ ६३८ ब, अतिथिसंविभाग १ ४५ अ, अनर्थदण्ड १.६४ अ, १ ६४ ब, अनशन १ ६५ ब, १ ६६ अ, अवमौदर्य १ २०० अ, अस्तेय १.२१३ ब, अहिंसा १ २१ अ, ३.६२८ ब, आखेट-त्याग १.२२५ ब, आगमज्ञान १.२२८ अ, आदान-निक्षेपण ४.३४१ ब, आलोचना १ २७७ अ, ईर्या समिति ४.३४० अ, उदबर फल १ ३६३ अ, एषणा समिति ४ ३४१ अ, कायक्लेश २ ४७ ब, कायगुप्ति २.२५० अ, कायोत्सर्ग ३.६२१ ब, ६२३ ब, गुप्ति २.२५० अ, जलगालन २ ३२५ ब, दिग्व्रत २ ४२९ अ, देशव्रत ३.४५१ अ, परस्त्रीत्याग ३.१९१ ब, परिग्रह परिमाण ३ २७ अ, प्रतिक्रमण ३.६२१ अ, प्रतिष्ठापना समिति ४.३४२ अ, प्रायश्चित्त ३ १५८ ब, प्रोषधोपवास ३ १६४ ब, ब्रह्मचर्य ३.१९१ अ, ६२८ ब, भावना ३ ६२६ ब, भाषा समिति ४.३४० ब, भोगोपभोगपरिमाण ३.२३९ अ, ३.६२८ ब, मद्यत्याग ३.२६० ब, मधुत्याग ३.२६० अ, मनोगुप्ति २.२५० अ, मांस त्याग ३.२९३ अ, मौन ३ ३४५ ब, रस-परित्याग ३.३९३ ब, रात्रिभुक्ति-त्याग ३.४०१ ब, वदना ३.६२२ ब, वचनगुप्ति २ २५० अ, विवेक ३.५६७ अ, वृत्तिपरिसख्यान ३ ५८१ अ, वेश्या-गमनत्याग ३.१९१ ब, व्युत्सर्ग ३.६२३ ब, शिकारत्याग १.२२५ ब, शीलव्रत ३.१९१ ब, श्रुतज्ञान १.२२८ अ, सत्य ३.६२८ ब, ४ २७२ अ, समिति ४ ३४०-३४२, सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ, सल्लेखना ४ ३८३ ब, सामायिक ४ ४१९ अ, स्वदारसतोष ३ १९१ अ।

अतिथि—१ ४४ ब।

अतिथिसंविभाग—१.४५ अ।

अतिदुःखमा काल—१.२७५ अ।

अतिपुरुष—१.४५ अ, किंपुरुष २ १२५ अ।

अतिप्रसग—१.४५ अ।

अतिबल—१.४५ अ, इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ, गणधर २.२१३ अ, नारायण ४.२६ अ, पद्मप्रभनाथ व सुमति नाथ २ ३७८।

अतिबाल विद्या—३ १९६ अ।

अतिभारारोपण—१ २१६ अ।

अतिरक्त—पाण्डुकवन की शिला—निर्देश ३.४५० ब, विस्तार ३ ४८४, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४५०।

अतिवीर—१ ४५ अ।

अतिवीर्य—१ ४५ अ, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ।

अतिवेलम्ब—१ ४५ अ।

अतिव्याप्त—लक्षण ३.४०९ ब।

अतिशय—अर्हन्त १.४५ ब, १.१३७ ब।

अतिशायन हेतु—४ ५४० ब।

अतिसुषमा काल—१.२७५ अ।

अतिसूक्ष्म—४ ४४६ अ।

अतिस्थापना—अपकर्षण १ ११३ ब, आवली १.२७९ अ, उत्कर्षण १ ३५३ ब, ३५५।

अतिस्थापनावली—आवली १ २७९ ब।

अतिस्थूल—४.४४६ अ।

अतींद्र—वानरवश १.३३८ ब।

अतींद्रियज—४ ४२९ ब।

अतींद्रिय सुख—४ ४३१ अ, ब, ४.४३३ ब।

अतीत—काल १ १४२ ब, ४ ४५ अ, गोचर नय २.५२२ अ, नयपक्ष २ ५१८ अ, पर्याप्ति ३ ४२ अ, प्राण ३ १५२ ब, संसार ३ २१२ अ, स्मरण ३ १८९ ब।

अतोरण—विमलनाथ २ ३७७।

अत्थिनेपुर—कालप्रमाण २ २१६ अ।

अत्थिनेपुरांग—कालप्रमाण २.२१६ अ।

अत्यंताभाव—१ १२७ ब—१.१२९ ब।

अत्यंतायोग व्यवच्छेद—एवकार १.४६७ अ, ब।

अत्यय—१.४५ ब।

अत्राणभय—३.२०६ ब।

अत्रिलक्षणत्व—सापेक्ष धर्म १.१०९ अ।

अथान— ३.२०३ अ।
अथालंद—चारित्र २.२८० ब, सल्लेखना १.४५ ब।
अदंडचता अधिकार—३.१९६ अ।
अदंतधोवन —१.४६ अ, २.४७ ब।
अदतमंजन—कायक्लेश २ ४७ ब।
अदत्त—१.२१५ अ।
अदत्तग्रहण--आहारातराय १ २९ ब, अस्तेय १ २१३ ब, १ २१४ ब, ४ ४४९ अ।
अदत्तादान—अस्तेय १.२१३ अ, १.२१५ अ, ४.४४९ अ, प्रत्यय ३ १५६ अ।
अदरख—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०४ अ।
अदर्शन—अध्यवसाय १.५२ ब, परीषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ, १.४६ ब, प्रज्ञापरीषह ३.११४ ब।
अदिति—१,४६ ब, विद्याधर वंश १.३३९ अ।
अदीक्षा ब्रह्मचारी—३ १९४ ब।
अदृष्ट—१.४६ ब, व्युत्सर्ग ३.६२३ अ।
अदेव—देव ३.३०० अ।
अद्धा—१.४६ ब, काल २ ८६ ब।
अद्धा असक्षेप—१.४६ ब।
अद्धाच्छेद—१ ४७ अ, अनुयोगद्वार १.१०३ अ, विभक्ति ३ ५५७ अ।
अद्धापल्य—उपमाप्रमाण २.२१८ अ, कालप्रमाण २.२१७ ब, क्षेत्रप्रमाण २.२१५ ब।
अद्धायु—आयु १ २५३ अ, ब।
अद्धा सागर—कालप्रमाण २.२१७ ब।
अद्वैत—२.४५८ अ। द्रव्यार्थिक नय २.५४२ ब।
अद्वैत दर्शन—१.४७ अ, वेदान्त ३ ५९६ अ।
अद्वैत नय—१.४७ अ, २.५२३ अ।
अद्वैतवाद—१.४७ अ, एकान्त १ ४६५ अ।
अद्वैतसिद्धि—३.५९५ ब।
अध करण—उपशम १.४३९ ब, ४४० अ।
अध:कर्म—१.४८ अ, आहारदोष १ २८७ ब, २९० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ ब, कर्म २ २६ अ, २७ अ, वसतिका दोष ३.५२८ ब। प्ररूपणाएँ—सत् ४.२६९ अ, सख्या ४.११६ ब, क्षेत्र २.२०८, भाव ३.२२३।
अध:प्रवृत्त--अप्रमत्त ४.१३० अ, उपशम १.४३९ ब, ४४० अ।
अध.प्रवृत्त संक्रमण—४.८४ अ, ४.८५ ब, ४.८७ ब, अल्पबहुत्व १.१७४ ब।
अध:प्रवृत्त संयत—गुणश्रेणी निर्जरा अल्पबहुत्व १.१७४।
अध:प्रवृत्तिकरण—अपूर्वकरण २.१३ अ, उपशम १.४३९ ब, १.४४० अ, चारित्रमोह क्षपणा २.१७९ ब, परिणाम २ ७-११।
अधरोष्ठ—कायोत्सर्ग अतिचार ३.६२१ ब।
अधर्म—अमूढदृष्टि १ १३३ अ, देवमूढता ३.३१५ ब, धर्म २.४६८ अ, ४ ४३१ ब, मिथ्यादर्शन ३ ३०० अ, स्वभाव ४.५०६ ब।
अधर्म द्रव्य – २.४८७ ब, अनुभाग १.८८ अ, अस्तिकाय २.४८७ ब, उत्पादादि, १.३६२ ब, उपकार २ ६३ ब।
अधस्तन कृष्टि - २.१४१ अ, द्रव्य २ १४१ ब।
अधस्तन द्वीप—१.४८ ब।
अधस्तन शीर्ष—२ १४१ ब।
अधिक—१.४९ अ, सकलन प्रक्रिया २.२२२ ब।
अधिकरण—१.४९ अ, अनुयोग १ १०२ अ, कारक २.४९ अ, कर्ता कर्म २.१७ ब, क्षेत्र २.१९२ ब, न्याय २.६३३ ब, शक्ति १.४९ अ, सिद्धान्त ४ ४२७ ब।
अधिकार—१ १०२ अ।
अधिकारिणी क्रिया—१ ५० अ, क्रिया २.१७४ ब।
अधिगत चारित्र—२.२८० ब।
अधिगत चारित्रार्थ—२.२८५ अ, २८८ ब।
अधिगम—१ ५० अ।
अधिगमज—ज्ञान १ ५१ ब, सम्यग्दर्शन, १ ५१ अ, ४ ३६२ अ।
अधीश्वर—३ ४०० ब।
अधोऽधिगम—१.५२ अ।
अधोगुरुत्व —२ २५३ ब।
अधोग्रैवेयक—४ ५१८-५२०।
अधोगौरव धर्म—पुद्गल २ २३५ ब।
अधोधिम—२ ६०२ ब।
अधोमुख—१ ५२ अ, नारद ४ २१ अ।
अधोलोक—निर्देश १ ५२ अ, ३ ४४० ब, नरक २.५७६ अ, विस्तार २ ५७६ ब, चित्र ३ ४४१, रत्नप्रभा ३.३८९ ब। क्षेत्रप्ररूपणा २.१९१ ब।
अधोलोक सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ अ।
अध्यधि—१ ५२ अ, आहारदोष १.२९० ब।
अध्ययन—शास्त्र ४.५२४ ब, स्वाध्याय ४.५२३ अ।
अध्ययनकुशल साधु—१.५२ अ।
अध्यवधि—१.५२ अ, आहारदोष १.४१३ अ।
अध्यवसान—१.५२ अ, पौद्गलिक ३.३१८ ब, परिग्रह ३ २८ ब, बन्ध ३.१७६ ब, व्यवहार नय २.५६३ अ।
अध्यवसाय—१.५२ अ, ५३ अ, अनध्यवसाय १.६२ ब, हिंसा ४.५३३ अ।
अध्यवसाय स्थान—कषायोदय स्थान १.५३ अ।

अध्यात्म—१ ५४ अ, तप २.३५८ ब।
अध्यात्मकमलमार्तण्ड—१.५४ अ, इतिहास १ ३४७ अ।
अध्यात्मतरंगिनी—इतिहास १.३४२ ब।
अध्यात्मपद टीका—१ ५४ अ, इतिहास १ ३४६ ब।
अध्यात्मपद्धति—३ ८ अ।
अध्यात्मभाषा—३ ८ ब।
अध्यात्मरति—४ ४३४ अ।
अध्यात्मरहस्य—१.५४ अ, आशाधर १.२८० ब, इतिहास १.३४४ अ।
अध्यात्मशास्त्र—१ ५४ अ।
अध्यात्मसंदोह—१.५४ अ, इतिहास १ ३४१ अ।
अध्यात्म सर्वया—इतिहास १.३४७ ब।
अध्यात्मसार—इतिहास १.३४७ ब।
अध्यात्मस्थान—१ ५४ अ, स्थान ४.४५२ ब।
अध्यात्मोपनिषद्—इतिहास १ ३४७ ब।
अध्यारोप—१.५४ ब।
अध्यास—१.५४ ब, षट्कारक २.५० ब।
अध्रुव—१.५४ ब, अनुभाग १ ८९ अ, ज्ञान ३ २५८ अ, पद १ १०२ ब, १०३ ब, बन्धी प्रकृति ३ ८८ अ, ९१ अ, ३.९३, स्थान ४ ४५३ अ।
अध्वगत—३ १३१ ब।
अध्वर—१ ५४ ब, पूजा ३.७४ अ।
अध्वान—१ ५४ ब।
अनंगक्रीडा—१ ५४ ब।
अनंत—१.५४ ब, कालाणु २.८६ अ, जघन्य उत्कृष्ट प्रमाण २ २१४ ब, गुण २ २४४ अ, ब, जीवराशि १.२२३ ब, द्रव्यराशि १ २२३ अ, धर्म २ २४४ ब, पर्याय १ १०९ अ, मोक्ष ३ ३३२ अ।
अनंतकथा—१ ५९ अ।
अनंतकायिक—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०४ अ, ब।
अनंतकाल—३ २१३ ब, कालाणु २ ८६ अ।
अनंतकीर्ति—१.५९ ब, नन्दिसंघ १ ३२३ ब, १ ३२४ अ, काष्ठा संघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३३० अ, आगम परम्परा १ ३४१ ब, १ ३४२ अ।
अनंत गणनांक—१ ५९ ब।
अनंत गुणवृद्धि—४.६६ अ।
अनंतज्ञान—४ ४३२ ब, केवलज्ञान २.१४९ अ।
अनंतचतुर्दशी व्रत—१.५९ ब।
अनंतचतुष्टय—अनन्तत्व १.५९ अ, चतुष्टय २.२७८ अ, अर्हन्त १.१३७ अ।
अनंतजीव—लोकाकाश १.२२३ अ।
अनंतदेव—१.५९ ब।
अनंत द्रव्य—लोकाकाश १ २२३ अ।
अनंत धर्म—२ २४४ ब।
अनंत धर्मत्व शक्ति—१ ५९ ब।
अनंतनाथ—१ ५९ ब, पूर्वभव २ ३७९-३९१।
अनंतनाथपुराण—१ ५९ ब।
अनंतनाथ पूजा—इतिहास १ ३४७ अ।
अनंतपर्यायमयत्व—सापेक्ष धर्म १ १०९ अ।
अनंतबल मुनि—१ ५९ ब।
अनंतभाग—४ ६६ अ।
अनंतमती—१ ५९ ब, सुमतिनाथ २ ३८८।
अनंतमित्र—यदुवंश १ ३३६।
अनंतरक्षेत्रस्पर्श—४ ४७५ ब।
अनंतर गति सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब।
अनंतर ज्ञान सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४ अ।
अनंतर चारित्र सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब।
अनंतरथ—१ ५९ ब, रघुवंश १ ३३८ अ।
अनंतर बन्ध—३ १७१ ब।
अनंतरोपनिधा—१ ५९ ब, अनुयोग १ १०२ अ, शब्द ४ ३ ब, श्रेणी ४ ७२ अ।
अनंतवर्मन—१ ५९ ब।
अनंतविजय—१ ५९ ब।
अनंतवीर्य—मोक्ष ३ ३२६ अ, वीर्य ३ ५७७ अ।
अनंतवीर्य—चक्रवर्ती ४ ११ ब, तीर्थंकर २ ३७७, ३९२।
अनंतवीर्य—१ ६० अ, इतिहास १.३३० ब, १ ३३१ ब, १ ३४२ ब।
अनंतवीर्य—कुरुवंश १ ३३६ अ।
अनंतव्रत कथा—इतिहास १ ३४५ ब।
अनंतशक्ति—द्रव्य २ २४४ अ।
अनंतसुख—४ ४३२ अ, ब, मोक्ष ३ ३२६ अ।
अनंता—सुमतिनाथ २ ३८८।
अनंताणु वर्गणा—३ ५१३ अ, ३ ५१५ ब, ३ ५१६ अ।
अनंतानंत—१ ५६ ब, उपमा प्रमाण २ २१८ ब, पुद्गल २ १४८ अ।
अनंतानंतप्रदेशी वर्गणा—३ ५१५ अ, ३ ५१६ ब।
अनंतानुबंधी—१ ६० अ। कषाय २ ३५ ब, २ ३८ अ, २ ३९ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ अ, सासादन ४ ४२३ अ, ब, मिश्रगुणस्थान ३ ३१० ब।
अनंतानुबंधी प्रकृति—१ ६० अ, उपशम १ ४४० अ, विसंयोजना ३ २८३ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३.३४४ अ, स्थिति ४ ४६१, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३.१३६, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१६१ अ, १.१७४ अ। बन्ध ३.९७, बन्धस्थान

३ १०९, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १ ३७२ अ, उदयस्थान १ ३८९ अ, ब, उदीरणा १ ४११, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७६ अ, ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९५, सत्त्वस्थान अल्पबहुत्व १ १६५ ब, १ १६७ ब, त्रिसयोगी भग १.४०१ ब। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ब।

अनतानुबंधी चतुष्क—उदय १ ३७४ ब।

अनंतावधि ज्ञान—१.१८७ ब।

अनक्षर वचन—३ २२७ अ।

अनक्षरात्मक भाषा—३ २२६ ब।

अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान—४ ५९ ब।

अनगार—१ ३३ ब, ३४ अ, ६२ अ।

अनगार धर्म—१.६२ अ।

अनगार धर्मामृत—१ ६२ ब, आशाधर १.२८० ब, इतिहास १ ३४४ अ।

अनधिगत चारित्र—२ २८० ब, २.२८५ अ।

अनधिगम चारित्रार्य—आर्य ८ २७५ अ।

अनध्यवसाय—१ ६२ ब, विपर्यय ४ १४५ ब, सशय ४ १४५ ब, १ ६२ ब।

अननुगामी—१ ६२ ब, अवधिज्ञान १ १८८ अ, ब, १ १९३ ब।

अननुभाषण—१ ६२ ब।

अनन्य—अशरण भावना २ ४६१ अ।

अनन्यमय—३ ३३८ अ।

अनपवर्ति आयुष्क—१ २६१ अ।

अनपायी—१.६२ ब।

अनभिज्ञ—४.७४ अ।

अनभिगृहीत—३ ३०१ अ।

अनभिलाप्य—श्रुत १ २२८ ब।

अनभिव्यक्ति—१ ६२ ब, अभिव्यक्ति ३ ६१६ अ।

अनय— १.६२ ब, ग्रह २.२७४ अ।

अनयाभास—१ ६२ ब, नय २ ५२४ अ।

अनरण्य—रघुवश १.३३८ अ।

अनर्थक पदत्व—१.१३६ अ।

अनर्थदंड—१.६२ ब, अतिचार १.६४ अ, प्रयोजन १ ६४ ब, महत्त्व १ ६४ ब, आखेट १ २२५ अ।

अनर्थसंतति—२ ४७० अ।

अनर्द्धि प्राप्तार्य—आर्य १.२७४ ब।

अनर्पित—१.६४ ब।

अनल—१ ६४ ब, अग्नि १.३५ अ।

अनलकायिक—१ ६४ ब। आकाशोपपन्न देव २ ४४५ ब।

अनवधृत—१ ६५ ब।

अनवधृत अनशन—१ ६४ ब।

अनवसर्पिणी सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब।

अनवस्था—१ ६४ ब, दोष २ ४६० ब।

अनवस्थाप्य—१ ६४ ब, परिहार प्रायश्चित ३ ३५ ब, ३ १६१ ब।

अनवस्थित—१ ६५ अ, अवधिज्ञान १ १८८ अ, १ १९३ ब, कुंड १ २०६ ब।

अनशन—निर्देश १ ६५ अ, निश्चय १ ६५ अ, व्यवहार १ ६५ अ, तप १ ६५ अ, अवधृत अनवधृत काल १ ६५ ब, अतिचार १ ६५ ब।

अनस्तमी व्रत—१ ६६ अ।

अनाकाक्ष—निःकाक्षित २ ५८५ ब।

अनाकांक्ष क्रिया—१.६६ अ, क्रिया २ १७४ ब।

अनाकार—१.६६ अ, उपयोग १ २२८-२२९, गुण २.२४२ ब, प्रत्याख्यान ३.१३१ ब।

अनागत—काल अल्पबहुत्व १ १४२ ब, प्रत्याख्यान ३.१३१ ब। अभिलाषा ३.१८९ ब।

अनाचरित—३ ५२९ अ।

अनाचार—१ ६६ अ, अतिचार १ ४४ ब।

अनाचिन्न—आहार दोष १ २९० ब, १ ४१३ अ।

अनात्मभूत—कारण २ ५४ अ, लक्षण ३ ४०९ ब।

अनादर—१ ६६ अ। जम्बूवृक्ष ३ ४५८ अ, ३.६१३-६१४।

अनादि—१.६६ ब, अनन्त १ ५९ अ, अनुभाग १.८९ अ, आगम १ २२८ अ, काल २.८८ ब, जीवकर्म बन्ध ३.१७३ ब, नय १ ६६ ब, नित्य पर्यायार्थिक नय २.५५१ ब, पद १ १०२ ब, १०३ ब, परिणाम ३.३१ ब, प्रकृतिबन्ध १.६६ ब, ३ ८८ अ, ३ १६९ ब, बन्धक ३ १७९ अ, बन्धी प्रकृति ३.९० ब। मिथ्यादृष्टि १ ४३८ अ, २ १८५ अ, ४ ३६८ ब, ४ ३६९ अ, ४ ३७२ अ। शरीरबन्ध ३.१७० ब, सिद्धान्त पद १ ४१६ ब, ३.५ अ।

अनादि नय—१ ६६ ब, नित्य पर्यायार्थिक २ ५५१ ब।

अनादि पद—१ १०२ ब, १०३ ब, सिद्धान्त पद १.४१६ ब, ३ ५ अ।

अनादिबंध—जीवकर्मबध ३.१६९ ब, ३.१७३ ब, प्रकृतिबध १.६६ ब, ३.८८ अ, शरीरबंध ३ १७० ब, स्थितिबध ४.४५७ अ।

अनादिबंधक—अनन्त ३.१७९ अ, बादर साम्परायिक

३ १७९ अ, सान्त ३ १७९ अ।

अनादिबंधी प्रकृति—३ ९० ब।

अनादि मिथ्यादृष्टि—४ ३६९ अ, अनादि तुल्य सादि ४ ३६८ ब, उपशम १ ४३८ अ, सयमासयम २ १८५ अ, सम्यक्त्व ४ ३६८ ब, ४ ३७२ अ।

अनादृत—१ ६६ ब, जम्बूवृक्ष का देव ३ ४५८ अ, ३ ६१३, ६१४, दोष ३ ६२२ ब।

अनादेय—३ ९६ अ।

अनाभोग—अतिचार १ ४३ ब, क्रिया २ १७४ ब, निक्षेप १.४९ ब।

अनायतन—१.२५१ अ, त्याग ४.३६१ ब।

अनारभ—१.६६ ब।

अनार्ष—३.३६९ अ।

अनालब्ध—१.६६ ब, कायोत्सर्ग ३.६२३ अ।

अनालोच्य वचन—असत्य १.२०८ ब।

अनावर्त—१.६६ ब।

अनावृष्टि—यदुवश १ ३३७।

अनाहत चक्र—पदस्थध्यान ३ ७ अ, ब, ह्रं ३ ७ ब।

अनाहार—१ ६६ ब।

अनाहारक—१ ६६ ब, आहारक १ २९४ ब, १ २९५ अ, केवली २ १६४, सक्रमण (उद्वेलना) ४ ८७ अ, समुद्घात २ १६७ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०८, बन्ध स्थान ३ ११३, उदय १.३८६, उदयस्थान १ ३९३ ब, उदीरणा १ ४११, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४.३०२, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०८ अ। सत् ४ १६७, सख्या ४ १९, क्षेत्र २ २०७, स्पर्शन ४ ४९६, काल २ ११९, अन्तर १ २१, भाव ३ २२ अ, अल्पबहुत्व १ १५३ अ।

अनि.सरणात्मक तैजस शरीर—२ ३९४ ब।

अनिःसृत—१ ६६ ब, ज्ञान ३ २५६ अ, ३ २५७ ब, ३ २५८ अ, प्राप्यकारी १ ३०४ ब।

अनिंदित—१ ६६ ब, किन्नर देव २ १२४ ब।

अनिंदिता—१ ६६ ब, सौमनस व नन्दन वन की दिक्कुमारी ३ ४७३ ब, ३ ४५१।

अनिंद्रिय—१ ६६ ब, अतीद्रिय ४ ४३२ ब, मन ३ २७० अ, ब, इद्रिय १ ३०६ ब, जीवसमास २ ३४२।

अनिंद्रिय जीव—इद्रिय १ ३०७ अ।

अनित्थं—सस्थान ४ १५५ अ।

अनित्य—अनुप्रेक्षा १ ७२ अ, १ ७९ अ, जाति २ ६०७ ब, सापेक्ष धर्म १ १०९ अ, ४ ३२३ ब।

अनित्यत्व—उत्पादादि १ ३५८ ब, सापेक्ष धर्म १ १०९ अ, १.१११ अ, ब, अपेक्षा निर्देश ४ ४९८ अ।

अनित्य नय—१ ६७ अ, नय २ ५२३ अ।

अनित्य निगोद—३ ५०३ ब।

अनित्यवाद—एकान्त १ ४६५ अ।

अनित्य समा जाति—२ ६०७ ब, २ ६०८ अ।

अनिबद्ध मंगल—३ २४१ ब।

अनियत—गति २ २३६ अ, नय २ ५२३ ब, विहार ४ ३९० ब, विहारी ३ ५७४ अ, सामायिक ४ ४१९ ब।

अनिरुद्ध—१ ६७ अ।

अनिर्वचनीय—अवक्तव्य १ १७७ अ, सप्तभगी ४ ३२४ ब, ४ ३२५ ब।

अनिल—राक्षस वश १ ३३८ अ, स्वाति २ ५०४ ब।

अनिवर्तक—१ ६७ अ, तीर्थंकर २ ३७७।

अनिवृत्ति—१ ६७ ब।

अनिवृत्तिकरण—१ ६७ अ, अन्तरकरण १ २६ अ, ब, अपूर्वकरण २ १४ अ, आरोहण अवरोहण २ २४७, करण २ १३ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ अ, परिणाम २ १३-१४, परिषह ३ ३४ अ, बन्धक ३ १७९ अ। प्ररूपणाएँ—बन्ध ३ ९८, बन्ध स्थान ३ १०८, ३ १०९, ३ ११०, ३ ११२, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९२ अ, उदीरणा १ ४११, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्व स्थान ४ २८९, ४ ३०४, त्रिसयोगी भग १ ४०६ अ। सत् ४ १६३, सख्या, ४ ९४, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ १००, अन्तर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३।

अनिष्ट—१ ६८ अ, आर्त्तध्यान १ २७३ अ, पक्षाभास ३ ३ अ।

अनिष्णात श्रोता—उपदेश १ ४२६ अ, श्रोता ४ ७५ ब।

अनिसृष्ट—१ ६८ ब, आहार दोष १ २९१ अ, १ ४१३ अ, वसतिका दोष ३ ५२९ अ।

अनीक (देव)—१ ६८ ब। भवनवासी देव—निर्देश ३ २०९ अ, जम्बू व शाल्मली वृक्ष स्थल मे ३ ४५८-४५९, आयु १ २६५। व्यन्तर देव—निर्देश ३ ६११ ब, श्री आदि देवियो के ३ ६१२, आयु १ २६४ ब। ज्योतिषी देव—निर्देश २.३४६ अ। वैमानिक देव—निर्देश ४ ५१२, सुमेरु की पुष्करिणियो मे ३ ४५०-४५१, देवियाँ ४ ५१३, आयु १ २६९, १.२७०।

अनीकदत्त—१ ६८ ब, यदुवश १ ३३७।

अनीकपाल—१ ६८ ब, यदुवश १.३३७।

अनीकिनी—४.४४४ अ।

अनीशार्थ—आहार दोष १.२९१ अ, १.४१३ अ।

अनीश्वर—आहार दोष १ २९१ अ, १ ४१३ अ-ब। नय

२.५२३ ब।

अनीहार—४ ३९० अ।

अनु—१.६८ ब।

अनुकंपा—१ ६९ अ, अहिंसा १ २१७ ब, करुणा २.१४ ब, शुभोपयोग १ ४३४ ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०५ अ सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ।

अनुकृति—१.७० अ।

अनुकृष्टि—१.७० अ, गणित २ २३१ ब, निर्वर्गण २.६२६ अ।

अनुकृष्टि गच्छ—१.७० अ, २.२३२ अ।

अनुकृष्टि चय—१ ७० अ, २ २३२ अ।

अनुक्त—१.७० अ, ज्ञान ३ २५७ अ, प्राप्यकारी १.३०४ ब।

अनुक्रम—२.१७१ ब।

अनुगताकार—बुद्धि १ ११२ ब।

अनुगम—१ ७० अ। अविभ्राड्भाव सम्बन्ध १.७० ब।

अनुगामी—१.७० ब, अवधिज्ञान १.१८८ अ-ब, १ १९३ ब।

अनुज्ञा—४ ३९१ ब।

अनुग्रह—१ ७० ब, उपकार १.४१५ ब, स्थितिकरण ४ ४७० ब।

अनुजीवी गुण—द्रव्य २.२४३ ब।

अनुत्कृष्ट—अनुभाग १ ८९ अ, पद १ १०२ ब, १०३ ब, विभक्ति १ १०३ ब, स्थिति ४ ४५९ ब।

अनुत्तर—१.७० ब, राक्षसवश १ ३३८ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ। विमान ४ १६ ब।

अनुत्तर देव—निर्देश ४ ५१० अ, अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६९, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १ २५८ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२, उदीरणा १.४११, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत ४ १९२, सख्या ४.९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१ काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

अनुत्तर स्वर्ग—१ ७० ब, ४ १६ ब। स्वर्ग—निर्देश ४ ५१९ अ, पचविमान ४.५१४ ब, पटल इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१८-५२०, अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४ ५१५, ४.५१७, कल्पातीत ४.५१० अ।

अनुत्तरोपपादक—१ ७० ब।

अनुत्तरोपपादक दशांग—१.७० ब, श्रुतज्ञान ४.६८ अ।

अनुत्पत्ति समा जाति—१.७० ब।

अनुत्पन्न देव—व्यन्तर जातीय देव—आयु १ २६४ ब।

अनुत्पादानुच्छेद—उत्पादादि, १ ३६१ अ, व्युच्छित्ति ३ ६१९ अ।

अनुत्सर्पिणी सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब।

अनुत्सेक—१ ७० ब।

अनुदय—उपशम १ ४३७ अ, कारण २ ६८ ब।

अनुदिश देव—निर्देश ४ ५१० अ, अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६९, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५८ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११, सत्त्व ४ २८२, सत्त्व स्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १९२, सख्या ४ ९८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

अनुदिश स्वर्ग—निर्देश ४ ५१४ अ, ४ ५१९ अ, पटल इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४ ५२०, विस्तार ४ ५१८, अकन ४ ५१५, ४ ५१७, कल्पातीत ४ ५१० अ, ४ ५१४ ब।

अनुदीर्ण—उपशम १ ४३७ अ।

अनुपक्रम काल—२ ८१ अ।

अनुपचरित—सापेक्ष धर्म—अनेकान्त १०९ अ, सप्तभगी ४ ३२३ ब।

अनुपचरित असद्भूत नय—नय २ ५६१ ब।

अनुपचरित नय—नय २.५६० अ।

अनुपम—गणधर २.२१३ अ।

अनुपमा—१ ७१ अ।

अनुपमान—चक्रवर्ती की विभूति ४ १५ अ।

अनुपलब्धि (हेतु)—हेतु ४.५३९ ब।

अनुपसंहारी हेत्वाभास—१.७१ अ।

अनुपस्थापन—परिहार प्रायश्चित्त ३ ३५ ब।

अनुपहारक—परिहार प्रायश्चित्त ३.३६ ब।

अनुपाख्यनिःस्वभाव—स्याद्वाद ४.४९९ अ।

अनुपात्त—१ ७१ अ।

अनुपालना शुद्ध प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३.१३२ अ।

अनुप्रेक्षणा—उपयोग १ ४२९ ब।

अनुप्रेक्षा—१.७१ अ, उपयोग १ ४३४ ब, ध्यान २ ४८२ अ।

अनुभय असत्य—योग ३.३८० ब।

अनुभय मन-वचन-योग—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्ध स्थान ३ ११३, उदय १.३७९, उदयस्थान १ ३९२ ब, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४.२१३-२१४, सख्या

४ १०२, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४ ४८५, काल २.१०८, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १.१४८ ।

अनुभयागत लब्धिस्थान—लब्धि ३ ४१४ ब ।

अनुभव—१ ८० अ, अनुप्रेक्षा १ ७२ ब, अनुभाग १.८८ ब, आत्मानुभव १ ८२, १ ८४ ब—८५, उदय १ ३६५ ब, उदीरणा १ ४१० अ, चेतना २.२९६ ब, दर्शन २ ४०६ ब, प्रमाण (अनुभव) १ ८२ अ-ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ अ, विपाक ३.५५६ अ ।

अनुभव प्रकाश—१.८७ अ ।

अनुभाग—१.८७ अ, अनुभव १.८८ ब, अल्पबहुत्व १.१६५ ब-१७१ अ, अविभाग प्रतिच्छेद १ २०३ अ, आयु कर्म १ २६१ अ, ईर्यापथ कर्म १ ३५० अ, कृष्टि (वर्गणा) २.१४० ब, निर्जरा २.६२२ अ, विपरिणमना ३.५५५ ब ।

अनुभाग उदय—अल्पबहुत्व १.१७६, उदय १.३६५ ब, १.३८६, कारण (जीव परिणाम) २ ६७ ब, २ ७२ अ ।

अनुभाग काण्डक—अन्तरकरण १ २६ ब, अपकर्षण १.११७ अ, काण्डक (कण्डकोत्करण काल) २.४२ अ

अनुभाग घात—अपकर्षक १ ११७, आयु का अपवर्तन १ २६१ ब, स्थिति घात (अपकर्षण) १ ११७ ।

अनुभागबंध—अध्यवसाय स्थान १.५३ अ, ४.११६ ब, अनुभागबन्ध १ ९० अ, १.९४-९५, प्रकृतिबन्ध ३ ९३ अ, प्रधानता (स्थिति) ४.४५७ ब, बन्धप्रत्यय ३ १३० ब, बन्धवेदना का अल्पबहुत्व १.१६५ ब, १.१७६, स्थितिबन्ध ४ ४६९ ।

अनुभाग सत्त्व—अल्पबहुत्व १.१६५ ब, १ १६६ अ, १ १७५, चौंसठ स्थानीय अल्पबहुत्व १.१६६ अ, समुत्कीर्तना ४.३११ ।

अनुभाग स्थान—अध्यवसाय १.५३ ब, ४.११६ ब, अनुभाग १ ८९ अ, स्थान ४ ४५२ ब, स्पर्धक ४.४७२ ब ।

अनुभाग स्वामित्व सन्निकर्ष—सत् १.९५, ३.११४, ४ ३१०, ४ ५२७-५२९, सख्या ४.११७, क्षेत्र २ २०८, स्पर्शन ४ ४९४, काल २ १२१-१२३, अन्तर १ २३, भाव ३ ३१३, अल्पबहुत्व १ १७५, ४.४६९, ४.५२७, भागाभाग ३.२१५, ४.११६ ।

अनुभाषण—१.९५ अ ।

अनुभाषणा शुद्ध प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३.१३२ अ ।

अनुभूति—अनुभव १.८१-८६ ब, उपलब्धि १.४३५ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५३ ब ।

अनुभूत्यावरण—१.८४ ब ।

अनुमति—१.९५ अ ।

अनुमति-त्याग प्रतिमा—अनुमति १.९६ अ ।

अनुमान—१ ९६अ, अनिःसृत मतिज्ञान ३ २५६ ब, अर्थ लिंगज श्रुतज्ञान ४ ५९ अ, ईहा ज्ञान १ ३५२ अ, केवलज्ञान २.१५० ब, प्रमाण (अनुमान) १ ९८ अ, मतिज्ञान ३.२५४ ब, ३.२५६ ब, लिंग (सम्यग्दर्शन) ४ ३५१ ब, सोपाधिक अनुमान (उपाधि) १ ४४४ अ ।

अनुमान बाधित—बाधित ३ १८२ ब ।

अनुमानित—१ ९९ अ, आलोचना १.२७७ ब ।

अनुमेयता—सम्यग्दर्शन ४.३५२ अ ।

अनुमोदक—अनुमति १.९६ अ ।

अनुयोग—१ ९९ अ ।

अनुयोगद्वार—अनुयोग १.१०१ ब, श्रुतज्ञान ४ ६४ ब ।

अनुयोगद्वार समास—श्रुतज्ञान ४.६४ ब ।

अनुयोग समास—१.१०३ ब ।

अनुयोगी—१.१०४ अ ।

अनुराग—आकांक्षा (वात्सल्य) ३.५३२ ब, उपलब्धि १.४३५ अ, प्रवचनवात्सल्य ३ ५३२ ब, राग ३.३९५ अ, वात्सल्य ३.५३३ अ ।

अनुराधा—१.१०४ अ, तीर्थंकर २.३८१, नक्षत्र २.५०४ ब ।

अनुरुद्ध—१.३१२, १.३१३ ।

अनुलोम—१.१०४ अ ।

अनुवाद—१.१०४ अ ।

अनुवाद वाक्य—वाक्य ३.५३१ अ ।

अनुवीचि भाषण—१ १०४ अ ।

अनुवृत्ति—१ १०४ अ ।

अनुशिष्ट—१ १०४ अ ।

अनुशिष्टि—सल्लेखना ४.३९० ब ।

अनुश्रेणी—१.१०४ अ, विग्रहगति ३.५४० अ ।

अनुष्ठान—भक्ति ३ १९८ ब ।

अनुसमयापवर्तना—१.१०४ अ । अपकर्षण—अपवर्तन घात १ ११९ ब, अनुभागकाण्डक घात १ ११७ ब ।

अनुसारी ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४८, १.४४९ ब ।

अनुसूर्य तप—कायक्लेश २ ४७ अ ।

अनुस्मरण—१.१०४अ, स्मृत्यन्तराधान ४ ४९५ ब ।

अनृजु—उत्तरप्रतिपत्ति १.३५६ अ, ऋजुमतिमनःपर्यय ३ २६४ अ ।

अनृत वचन—असत्य १.२०८ अ ।

अनेक—१ १०४ अ, अनेक अजीव अनुयोगद्वार १.१०२ अ, अनेक अजीव कर्म व कषाय २ २६ अ, २.३५ ब, अनेक क्षेत्र अवधिज्ञान १.१८८ ब, अनेकगृहभोजी क्षुल्लक २ १८९ ब, अनेक जीव अनुयोगद्वार १ १०२ अ, अनेक जीव कर्म व कषाय २ २६ अ,

२ ३५ ब, अनेक द्रव्य २ ४५६ ब, अनेक प्रदेशत्व (अनेकान्त व सप्तभंगी) १ १०९ अ, ४.३२३ ब, सापेक्षधर्म (सप्तभंगी) ४ ३२३ ब।

अनेकत्व – १ १०४ अ, अनेकान्त १.१०९ अ, १ १११ अ, ब।

अनेक नय – नय २ ५२३ ब।

अनेक प्रदेशत्व—सापेक्षधर्म (अनेकान्त व सप्तभंगी) १ १०९, ४ ३२३ ब।

अनेक प्रदेशी – सापेक्ष धर्म (सप्तभंगी) ४.३२३ ब।

अनेकान्त—१ १०४ ब, अनेकान्तात्मक (स्याद्वाद) ४ ४९७ ब, एकान्त (सप्तभंगी) ४ ३१७ ब, सप्तभंगी ४ ३१७ ब, सापेक्ष धर्म (अनेकान्त) १ १०९ अ, सुख ४ ४३१ अ, स्यात् ४ ४९६ अ।

अनेकान्तग्राही – प्रमाण (नय) २ ५१६ ब।

अनेषण – अनशन १ ६६ अ, तप २ ३६१ ब।

अनैकान्तिक हेत्वाभास—हेत्वाभास ३ ६१६ ब।

अनोजीविका—सावद्य खरकर्म ४ ४२१ ब।

अन्न—१.१११ ब, अभक्ष्य ३ २०३ अ।

अन्नपाननिरोध—१ २१६ अ।

अन्नप्राशन क्रिया—४.१५१ अ। मन्त्र ३ २४७ अ।

अन्नयाचानुद्देश्य—उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

अन्नशोधन—आहार १ २८५ ब।

अन्य—४ ५०७ अ।

अन्यत्व—१ १११ ब। अनुप्रेक्षा १ ७२ ब, १.७९ अ, एकत्व १ ७८ अ।

अन्यथानुपपत्ति—४ ५३८ अ, ४ ५४० ब।

अन्यथायुक्तिखण्डन—१ ११२ अ।

अन्यदेवमूढता—अमूढदृष्टि १.१३२ ब।

अन्यदृष्टि—अमूढदृष्टि १.१३३ अ।

अन्यदृष्टिप्रशंसा—१.११२ अ।

अन्यमती—कर्ता कर्म २ २३ अ।

अन्ययोगव्यवच्छेद—१.११२ अ, एकान्त १.४६२ अ, एवकार १.४६७ अ।

अन्यवश—२.४८६ अ।

अन्यापोह—१.१२८ अ।

अन्योन्यगुणकार शलाका—१ ११२ अ।

अन्योन्याभाव—१.१२७-१२९ अ।

अन्योन्याभ्यस्तराशि—१ ११२ अ, गणित २.२३१ ब, कर्म स्थिति २.२३२ ब।

अन्योन्याश्रय—हेत्वाभास १ ११२ अ।

अन्वय—१ ११२ अ, द्रव्य २.४५४ ब।

अन्वयदत्ति—२ ४२२ ब।

अन्वयदृष्टान्त—अनुमान १ ९८ ब, दृष्टान्त २ ४३८ अ।

अन्वय द्रव्यार्थिक नय—२ ५४५ ब।

अन्वयव्यतिरेकी—हेतु ४ ५४० अ।

अन्वयव्याप्ति—अनुमान १ ९७ अ।

अन्वयी—१ ११२ ब, गुण २ २४३ अ।

अन्वर्थ—१ ११२ ब।

अन्वीक्षा—२ ६३१ ब।

अन्वेषण—३ २९६ ब।

अप्—२ ३३३ ब।

अपकर्ष—१ ११२ ब, आयुबन्ध १ २५९ अ, आयुकाल अल्पबहुत्व १ १७३ अ।

अपकर्षण—१ ११२ ब, दशकरण २ ६, अन्तरकरण १ २५ ब, १ २६ अ, ब। गुणस्थान २ ६ अ।

अपकर्षण (कारण)—गुणस्थान २ ६ अ।

अपकर्षण (दोष)—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

अपकर्षण प्राभृत (दोष)—आहार १ २९० ब।

अपकर्ष समा—१ ११८ अ।

अपकायिक जीव—अवगाहना १ १७९ ब, आयु १.२६४ अ, काय २.४४ ब, जल २ ३२४, जीवसमास २ ३४३, निगोद ३ ५०५ ब, स्थावर ४ ४५३, ४ ४५४ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ अ। सत् ४ २०२, सख्या ४ १००, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४.४८३, काल २ १०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ब।

अपकार—उपकार १ ४१५ अ, कर्ता कर्म (मिथ्यात्व) २ २३ अ, शरीर ४८ अ।

अपकृष्ट—१ ११८ ब।

अपक्रम—गति २ २३६ अ।

अपक्वकर्म—उदीरणा १ ४०९ ब, १ ४१० अ।

अपक्वपाचन—उदीरणा १ ४०९ ब, १.४१० अ।

अपगतवेद—वेद ३.५८५ अ। प्ररूपणा—सत् ४.२२८, सख्या ४ १०४, क्षेत्र २ २०३, स्पर्शन ४.४८७, काल २ १११, अन्तर १ १५, भाव ३ २२१ अ। अल्पबहुत्व १ १४९ ब।

अपचय—ओम् १ ४७० अ।

अपचित अवयव पद—३.५ अ।

अपदर्श—१ ११८ ब।

अपदर्शन—कूट व देव—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार

३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६ अकन ३ ४४४।

अपदेश—१ ११८ ब।

अपध्यान—१ ११८ ब।

अपमण्डल—धारणा २ ३२४ ब, लोक ३ ४३४ अ।

अपमण्डल यन्त्र—३ ३५३।

अपमान—निन्दा २ ५८८ अ, मार्दव ३ २९८ ब, ३ २९९ अ।

अपमृत्यु—आयु का अपवर्तन १ २६१ अ, कषाय २ ३५ अ, मरण ३ २८४ अ।

अपर—परत्वापरत्व ३ १२ अ, परम ३ १३ अ।

अपरत्व—काल २ ८३ अ, परत्वापरत्व ३ १२ अ।

अपरम—परम ३ १२ ब।

अपर विदेह—१ ११८ ब, निषध व नील पर्वत का कूट-निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४। गजदन्त का कूट-निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४। विदेहक्षेत्र का पश्चिम भाग—निर्देश ३ ४४६ ब, विस्तार ३ ४७९, ३.४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, इसके १६ देश व नगरियाँ ३ ४६० अ, ३ ४७० ब।

अपर व्यवहार—१ ११८ ब।

अपर संग्रह—१ ११८ ब, नय २ ५३४ अ।

अपर संग्रहाभास—नय २ ५३४ ब।

अपर सामान्य—सामान्य ४ ४१२ अ।

अपराजित—१ ११८ ब। आचार्य—मूलसघ (अगधर) १ ३१६। इतिहास—प्रथम १ ३२८ अ, द्वितीय १ ३२९ अ, तृतीय १ ३२९ ब, १ ३४१ ब। कूट—रुचकवर पर्वत का कूट-निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६८। जगती—जम्बूद्वीप की जगती का द्वार— निर्देश ३ ४४४ ब, विस्तार ३ ४८४, अकन ३ ४४४, रक्षक देव ३ ६१३। नाम—गणधर २ १२२ ब, ग्रह २ २७४ अ, तीर्थंकर पद्मप्रभ व सुपार्श्वनाथ २ ३७८, बलदेव ४ १८ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ, हरिवंश १ ३४० अ।

अपराजित संघ—१ ११९ अ।

अपराजित (स्वर्ग)—अनुत्तर विमान—निर्देश ४ ५१९ अ, विमान ४ ५१४ ब, श्रेणीबद्ध ४ ५१८, अकन ४ ५१७, कल्पातीत ४ ५१०। इस विमान के देव—निर्देश ४ ५१० ब, अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६९, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १ २५८ अ।

अपराजिता—१.१११ अ। दिक्कुमारी (रुचक पर्वत)—निर्देश ३ ४७६ अ, ब, अकन ३ ४६८। नन्दीश्वर द्वीप वापी—निर्देश ३ ४६३ ब, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४९१ अंकन ३ ४६५। विदेहनगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

अपराजिता (नाम)—१ ११९ अ, तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ २ ३७९, बलदेव ४ १७ ब, रघुवश १ ३३८ अ।

अपराह्ण—१ ११९ अ।

अपराध—१.११९ अ, चारित्र २ २८८ ब, धर्म २ ४७० अ, राग ३ ५५८ ब।

अपरिगृहीता—१ ११९ अ।

अपरिग्रह—अहिसा १ २१७ अ। विशेष दे० परिग्रह-त्याग।

अपरिणत—१ ११९ अ, आहारदोष १ २९१ ब।

अपरिमित ज्ञान—केवलज्ञान २ १४९ ब।

अपरिवर्तमान परिणाम—परिणाम ३ ३१ ब।

अपरिशेष प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३ १३१ ब।

अपरिस्पन्दात्मक पर्याय—पर्याय ३ ४७ अ।

अपरिस्रविता—१ ११९ अ।

अपरीत वर्गणा—वर्गणा ३ ५१४ ब।

अपर्याप्त—अवधिज्ञान १ १९५ ब, आयु १ २६४ अ, आहारक काययोग १ २९८ अ, काय २ ४४, कार्मण-काययोग २ ७६ ब, केवली २ १६८ अ, जीवसमास २ ३४३, तिर्यचगति २ ३६७, नरक गति ३ ५७५ अ, निगोद ३ ५१०, पर्याप्ति ३ ४० ब, प्राण ३ १५३ ब, मन ३ ३८० अ, मनुष्य गति ३ २७३, वचनयोग ३ ३८० अ, सयम १ २९८ ब, सहनानी २ २१९ अ।

अपर्याप्त काल—३ ४२५ अ, विशुद्धि ३ ५७० अ।

अपर्याप्तनाम—कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६६, अनुभाग १ ९५ ब, प्रदेश ३ १३७। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५ अ, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७८ सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४, सक्रमण ४ ८५ अ। अल्पबहुत्व १ १६८।

अपर्याप्त योग—३ ६०४ अ।

अपर्याप्ति—३ ४० ब।

अपवर्ग—१ ११९ ब, नैयायिक दर्शन २ ६३३ ब।

अपवर्तन—१ ११९ ब, आयु १ २६१ अ, अल्पबहुत्व १ १६०, कदलीघात ३ २८५ ब, घात १ ११७ ब।

अपवर्तना घात—अपवर्तन १.११९ ब, काण्डकघात १ ११७ ब।

अपवर्तनोद्वर्तन—अपवकर्ण करण १ २०४ अ।
अपवर्त्य—१ ११९ ब।
अपवाद—१ ११९ ब, पद्धति ३ ९ ब, पर्याय ३ ४५ ब।
अपवाद-मार्ग—अपवाद १ १२०-१२३ अ, ब। कृतिकर्म २ १३७ अ. शुभोपयोग १ ४३३ ब।
अपवाद लिंग—३ ४१७ अ, ३ ४१९ अ, ब।
अपशब्द-खंडन—१ १२३ ब।
अपसरण—अपकर्षण १ ११५ अ।
अपसिद्धान्त—१ १२३ ब, कर्ता कर्म २ २२ ब।
अपहृत—अन्तर्मुहूर्त १ ३० अ।
अपहृत संयम—अपवाद-मार्ग १ १२० ब, चारित्र २ २८५ अ, २ २९२ अ, शुभोपयोग १ ४३३ अ-ब, संयम ४ २३७ ब।
अपाचय—१ १२३ ब।
अपात्र—१ १२३ ब, उपदेश १ ४२५ ब, ४ ७५ अ, दान २ ४२६ ब, पात्र ३ ५२ अ, ब।
अपादान कारक—१ १२३ ब कारक २ ४९ अ।
अपादान-शक्ति—१ १२४ अ।
अपान—१ १२४ अ।
अपाप—१ १२४ अ, तीर्थंकर २ ३७१।
अपाय—१ १२४ अ, अवाय १ २०२ अ, ध्येय २ ५०० अ, भावना १ २१४ ब, १ २१६ अ।
अपायविचय—१ १२४ अ, उपायविचय २ ४७९ अ, धर्मध्यान २ ४८२ ब।
अपार्थक—१ १२४ अ।
अपुनरागमन—३ ३२४ ब।
अपुनरुक्त अक्षर—१ २२८ ब।
अपूर्वकरण—१ १२४ अ। अध प्रवृत्तिकरण २ १३ अ, अनिवृत्तिकरण २ १४ अ, आरोहण-अवरोहण २ २४७ अ, उपशम १ ४४१ अ, उपशामक ४ ३४३ अ, करण दशक २ ६ अ, कषाय २.४० ब, काय २ ४५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१, क्षपक ४.३४३ अ, चारित्रमोह क्षपणा २ १८० ब, परिणाम २ ११-१३, परिषह ३ ३४ अ, बन्धक ३ १८० अ, सूक्ष्मसाम्पराय ४ ८६ अ।
अपूर्वकरण (प्ररूपणा)—बन्ध ३ ९७, बन्धक ३ १७९ अ, बन्धस्थान ३ ११० ३ १११, प्रदेशनिर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४, उदय १ ३७५ ब, उदयस्थान १.३९२ अ, उदीरणा १.४११, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८९, ४.३०४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ अ। सत ४ १६३, संख्या ४.९४, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ १००, अन्तर १.७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३।
अपूर्वकृष्टि—२ १४१ अ।
अपूर्व चैत्यक्रिया—२ १३८ ब।
अपूर्व स्पर्धक—कृष्टि २ १४० ब, २ १४१ ब, चारित्रमोह क्षपणा २ १८० ब, सूक्ष्मसाम्पराय ४ ४४१ ब, स्पर्धक ४ ४७३ ब।
अपूर्वार्थ—१ १२५ ब।
अपेक्षा—अनेकान्त १ १०८ ब, १ १०९ अ, १ ११० अ, अभाव ४ ५०७ अ, एकान्त १ ४६१-४६३ अ, जीव कर्म सम्बन्ध २ ७० ब, स्वभाव २ ६० अ, स्याद्वाद ४ ४९८ अ।
अपेक्षाकृत—४ ५०७ अ।
अपोह—१ १२५ ब।
अपोहरूपता—१.१२५ ब।
अपोहा—ऊहा १.४४५ ब।
अपोही—१ १२५ ब।
अपौरुषेय—१ १२५ ब, १ २३८ ब।
अप्पय दीक्षित—३ ५९५ ब।
अप्रकाश—४ ३८९ अ।
अप्रणतिवाक्—३ ४९७ ब।
अप्रतिकर्म—१ १२५ ब।
अप्रतिक्रमण—अमृतकुम्भ २ २८८ ब, अशुभोपयोग १.४३३ ब, प्रतिक्रमण ३.११६ ब।
अप्रतिघात—१ १२६ अ, १ २२३ ब, ऋद्धि १ ४४७, १ ४५१ ब, सूक्ष्म ४ ४३९ ब।
अप्रतिचक्रेश्वरी—१ १२६ अ, पद्मप्रभनाथ २ ३७९।
अप्रतिपक्ष प्रकृति—३ ९१ अ।
अप्रतिपत्ति—१ १२६ अ, व्यक्ति ३ ६१६ अ।
अप्रतिपातिकी—३ २६७ ब।
अप्रतिपाती—१ १२६ अ, अवधिज्ञान १ १८८ ब, १ १९४ अ।
अप्रतिबुद्ध—१ १२६ अ।
अप्रतिभा—१ १२६ अ।
अप्रतियोगी—१ १२६ अ।
अप्रतिष्ठान—१ १२६ अ।
अप्रतिष्ठित—१ १२६ अ।
अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति—निर्देश ३ ५०६ ब, जीवसमास २ ३४३, आयु १.२६४ अ। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ उदीरणा स्थान

१ ४१२, सत्त्व ४ २८२ सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ २०९, सख्या ४ १०१, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४.४८४, काल २ १०७, अन्तर १ १२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४६।

अप्रत्यवेक्षित—१ १२६ अ, उत्सर्ग १ ३६३ अ, निक्षेप १ ५० अ।

अप्रत्याख्यान—१ १२६ अ, क्रिया २.१७४ ब।

अप्रत्याख्यानावरण (कर्मप्रकृति)—१ १२६ अ, कषाय २ ३५ ब, २ ३८ अ, २ ३९ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३.३४४ अ, स्थिति ४ ४६१, स्थितिसत्त्व ४ ३०८, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६, बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८ सत्त्वस्थान ४ २९५, सत्त्व स्थान अल्पबहुत्व १ १६५ ब, त्रिसंयोगी भग १ ४०१, सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

अप्रदेश—अनन्त १ ५५ ब, असंख्यात १ २०६ अ, परमाणु ३ १८ अ।

अप्रदेशी—१ १२६ ब, द्रव्य २ ४५५ ब, परमाणु ३ १८ अ।

अप्रमत्तसंयत—असत्य मनोयोग ३ ३८० अ, अहिसक १ २१६ अ, आरोहण-अवरोहण २ २४७, उपशम १ ४३९ ब, करण दशक २ ६ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब, क्षीणकषाय २ ४७ ब, प्रमत्त (सयत) ४ १३० अ, सज्ञा ४ १२२ ब, सयत ४ १३० अ, ४ १३१ ब, समुद्घात ४ ३४३ अ।

अप्रमत्तसंयत (प्ररूपणा)—बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०, प्रदेश निर्जरा अल्पबहुत्व १ १७४, उदय १ ३७५ ब, उदयस्थान १ ३९२ अ, उदीरणा १ ४११, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, स्थितिसत्त्व का अल्पबहुत्व १ १७४, सत्त्वस्थान ४ २८८, ४ ३०४, त्रिसयोगी भग १ ४०६ अ। सत् ४ १६३, सख्या ४.९४, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ ९९, अन्तर १.७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३।

अप्रमाण—अवग्रह १ १८२ ब, उपचार १ ४२२ अ, युक्ति विरुद्ध १ २३६ ब।

अप्रमाद—प्रमाद ३ १४६ अ।

अप्रमार्जित—उत्सर्ग १ ३६३ अ।

अप्रयत—हिंसा ४ ५३५ ब।

अप्रशस्त—१ १२६ ब, उपशम १ ४३७ अ, ध्यान २ ४९ अ, निदान २ ६० अ, नोआगम ३ १५६ ब, मोह ३ ३४० ब, राग (उपयोग) १ ४३३ ब, राग ३ ३९५ अ, वेद ३ ५८८ ब, वेद्य ३ ५९२ अ।

अप्रशस्त विहायोगति—३ ५७३ ब। प्ररूणाएँ—प्रकृति ३ ८८, ३ ५७३ ब, स्थिति ४ ४६६, अनुभाग १.९५ ब, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११, सत्त्व ४ २७९, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४, सक्रमण ४ ८५, अल्पबहुत्व १ १६७।

अप्रसिद्ध—३.२ ब।

अप्राप्त काल—१ १२६ ब।

अप्राप्यकारी—१ १२६ ब, इन्द्रिय १ ३०३-३०४, ३ २५८ अ, अवग्रह १ १८३ ब।

अप्रासुक—३ २०४ ब।

अप्रिय—४ २७२ ब, वचन ३ ४९७ ब।

अप्रेरक—कारण २ ६१२ अ।

अबंध—१ १२६ ब, आयुकर्म १ २६३ अ, ज्ञानी ४ ३७५ ब, ४ ३७६ ब, बन्ध ३ १७२ अ।

अबद्ध—१ १२७ अ, कारण २ ५६ ब।

अबद्धायुष्क—जन्म २ ३१३ ब, बन्ध-उदय-सत्त्वस्थान १ ४००।

अबध्यदेश—सुबाहु २ ३९२।

अबब—सख्या प्रमाण २ २१४ ब।

अबला—४ ४५० अ।

अबाधित—३ २ ब।

अबुद्धिपूर्वक—निर्जरा १ ७५ ब, २ ६२२ ब, बुद्धि ३ १८४ ब, राग ३ ३९६ अ।

अब्बहुल भाग—१ १२७ अ, विस्तार ३ ३८९ ब, बिलो का प्रमाण २ ५७, अकन ३ ४४१, चित्र ३.३८९।

अब्बुद—सख्या प्रमाण २ २१४ ब।

अब्भोब्भव—१ १२७ अ, वसतिका दोष ३ ५३८ ब।

अब्रह्म—१ १२७ अ, ब्रह्मचर्य ३ १९२ ब, हिंसा १.२१७ अ, ४ ५३२ ब।

अभक्ष्य—३ २०२ अ।

अभयकर—१ १२७ अ, ग्रह २ २६३ अ।

अभय—१ १२७ अ, अनुत्तरोपपादिक १ ७० ब, मूलसंघ १ ३१६।

अभयकीर्ति—नन्दिसघ १ ३२३ ब, काष्ठासघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३३४ अ।

अभयकुमार—१ १२७ अ, मगधदेश १ ३१० ब।

अभयचन्द्र—१ १२७ अ, काष्ठासघ १ ३२७ अ, नन्दिसंघ १ ३२३ ब। इतिहास—प्रथम १.३३२ अ, १.३४५ अ। द्वितीय १ ३३२ अ, १.३४५।

अभयदान—२ ४२ अ, २ ४२ ब।
अभयदेव (सूरि)—१.१२७ अ, इतिहास—१ ३३० अ, १ ३३१ अ, १ ३४२ अ।
अभयनन्दि—१ १२७ अ, इन्द्रनन्दि १.२९९ ब, देशीय गण १ ३२४ ब, १ ३२५। इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ ब।
अभयसेन—१ १२७ ब, काष्ठासघ १ ३२७ अ, पुन्नाट सघ १ ३२७ अ।
अभयानन्द—श्रेयांसनाथ २ ३७।
अभव्य—जीव २ ३३३ ब, राशि १ ५९ अ, बन्धापसरण १.११६ अ, सापेक्ष धर्म १ १०९ अ, ४ ३२३ ब। समान भव्य ३ २१२ अ, सिद्ध ३ २११ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०७, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८४, उदयस्थान १ ३९२, उदीरणा १ ४११, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०२, त्रिसंयोगी भग १ ४०८ अ। सत् ४ २५४, सख्या ४ १०८, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४ ४९२, काल २.११७, अन्तर १ २०, भाव ३ २२२ अ, अल्पबहुत्व १ १४२ ब, १ १५२ अ।
अभव्यत्व—३ २१२ अ।
अभाव—१.१२७ ब, उत्पादादि १ ३६१ अ, नय २ ५२४ अ, प्रमाण २ १५० ब, भाव ३ २२४ अ, शक्ति ३ २२४ अ, सापेक्ष धर्म ४ ३१९ ब, ४ ३२० अ।
अभाव भावशक्ति—३.२२४ अ।
अभाववाद—अभाव १ १२८ ब, एकान्त १ १२९ ब, १.४६५ अ।
अभाषा—३ २२६ अ। शब्द ४.३ अ।
अभिगमन—३ ५४९ अ।
अभिगृहीत—३.३०१ अ।
अभिग्रह—१ २०० अ।
अभिघट—१ १२९ ब, आहारदोष १ २९० ब, उद्दिष्टदोष १ ४१३ अ, वसतिकादोष ३ ५२९ अ।
अभिघातगति—२ २३५ अ।
अभिचन्द्र—१ १२९ ब, कुलकर ४.२३, यदुवश १ ३३७, हरिवंश १ ३४० अ।
अभिजित—१ १२९ ब, तीर्थंकर २ ३८५, ब्रह्मा २.५०४ ब।
अभिधान—१ १२९ ब।
अभिधान चिन्तामणि कोष—इतिहास १ ३४३ ब।
अभिधान निबन्धन नाम—१ १२९ ब, २.५८२ ब।
अभिधान मल—३.२८८ ब।
अभिधेय—१.१२९ ब।
अभिनन्दन—१.१२९ ब, पूर्वभव २ ३७९-३९१।
अभिनिबोध—१ १२९ ब, ज्ञान १ १३० अ।
अभिनिवेश—१ १३० अ।
अभिन्न—१ १३० अ, सन्धि २,२७४ अ।
अभिन्नपूर्वी—१ १३० अ, ऋद्धि १ ४४८, दशपूर्वी ४ ५५ अ।
अभिप्राय—तर्क ३ ९ ब, वक्ता १.४२५ ब, २ ५१३ ब, स्याद्वाद ४ ५०० ब।
अभिप्रेत—पक्ष ३ २ ब।
अभिमन्यु—१ १३० अ, कुरुवश १ ३३६ अ।
अभिमान—१ १३० अ, हिंसा ४ ५३३ ब।
अभियोग (देव)—१ १३० अ, ज्योतिषी २.३४६ अ, भवनवासी ३ २०९ अ, आयु १ २६५, विजयार्धवासी ३ ४४८ अ, वैमानिक देवी ४ ५१३, देव आयु १.२६९, देवी आयु १ २७०, व्यन्तर ३ ६११ ब, आयु १.२६४ ब।
अभियोगी भावना—१.१३० ब।
अभिलाप—१ १३० ब।
अभिलाप्य—श्रुतज्ञान १ २२८ ब।
अभिलाषा—१ १३० ब, निःकाक्षित २ ५८५ ब, (दे इच्छा, मूर्च्छा, आकांक्षा, कामना, तृष्णा, आशा, राग)। परिग्रह ३ २७ ब, पुण्य ३ ६६ ब, ब्रह्मचर्य ३ १८९ अ, संज्ञा ४ १२० ब।
अभिवृद्धि—उत्तराभाद्र २ ५०४ ब।
अभिव्यक्ति—कर्म २ २९ अ, व्यक्ति ३ ६१६ अ।
अभिव्यापक आधार—१ २४६ अ।
अभिषव—१ १३७ ब।
अभिषेक—१ १३० ब, पूजा ३ ७८ ब, वन्दना २ १३८ ब।
अभिषेक पुर—ज्योतिषी देवों के प्रासाद २.३५१ अ।
अभिषेक वन्दना क्रिया—२.१३८ ब।
अभिसारिका—२ ४७० अ।
अभीक्ष्णज्ञानोपयुक्तता—१ १३० ब।
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग—१ १३० ब।
अभूतार्थ—१ १३१ अ। नय २ ५६७ ब।
अभूतोद्भावन वचन—असत्य १ २०८ ब।
अभेद—१ १३१ अ, उत्पादादि १ ३५९ ब १ ३६० ब, उपचार १.१३१ अ, १ ४१९ अ, ४.५०१ ब, २ ५५६ ब, कर्ता कर्म २.१७-२४, कारण कार्य २ ५५ अ, कारक २.४९ अ, २.४८६, ज्ञान २ २६१ ब, अज्ञान २.२६७ ब, चारित्र ४ ४१९ ब, द्रव्य २.४५९ ब, भोग ३.२३८ अ, रत्नत्रय ३.३३५ अ, वृत्ति १.१३१ अ, ४ ५०१ ब, सयम ४.४१९ ब, सापेक्षधर्म १.१०९ अ, स्वभाव १.१३१ अ।

अभेदोपचार—१ १३१ अ, उपचार १ ४१९ अ, नय २ ५५६ ब स्याद्वाद ४ ५०१ ब।
अभेद्य—१ १३१ अ, भरत चक्रवर्ती ४ १५ अ।
अभोक्ता—राग २ ३९९ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७६ अ।
अभोक्तृत्व शक्ति—१ १३१ अ।
अभोज्य—३ ५२५ ब, गृहप्रवेश १ २९ अ।
अभोज्य गृहप्रवेश—आहारान्तराय १ २९ अ।
अभ्यंगस्नान—४ ४७१ ब।
अभ्यंतर—१ १३१ अ, उपाधि १ ४२७ अ, ३ ६२३ ब, करण २ ६११ ब, कषाय २ ३५ ब, ग्रन्थ ३ २८ अ, तप २ ३५९ अ, २ ३६१, तप.कर्म २ २६ अ, त्याग ३ २९ ब, नेत्र २ ४६८ ब, धर्मध्यान २ ४८१ अ, परिग्रह १ ४२७ अ, ३.२८ अ, ३.६२३ ब, परिषद ३ ५६ अ, प्रत्यय ३ १२५ ब, प्रत्यय कषाय २ ३५ ब, मल ३.२८८ अ, व्यास २.२२३ ब, व्युत्सर्ग ३.६२३ ब, सल्लेखना ४ ३८२३ अ, ४.३८३ अ, सूची २ २३३ ब, हेतु २.५४ अ, २ ६२ अ, ब, २ ७२ ब।
अभ्यन्तरोपधि व्युत्सर्ग—३ ६२३ ब।
अभ्यस्त—१.१३१ अ, गणित २ २२२ ब।
अभ्याख्यान—१.१३१ अ।
अभ्यागत—१.१३१ अ।
अभ्यास—१ १३१ अ, जिनागम ४.५२५ अ, सस्कार ४.१४९ ब।
अभ्युत्थान—१.१३१ ब, विनय ३ ५५२ अ, ब, ३.५५३ अ।
अभ्युदय—१.१३२ अ, सुख ४.५२४ अ।
अभ्युपगम सिद्धान्त—१.१३२ अ, ४.४२७ ब, नैयायिक दर्शन २ ६३३ ब।
अभ्र—१.१३२ अ, स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४ ५१९ ब। देव—आयु १.२६७।
अभ्रावकाश—योग का अतिचार २.४८ अ, शय्यासन तप २.४७ ब।
अमनस्क—४.१२२ अ।
अमनोज्ञ—३.२६ ब।
अमम—१.१३२ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ।
अममांग—१.१३२ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ।
अमर—सुमतिनाथ २ ३८७। हरिवंश १.३४० अ।
अमरकीर्ति गणी—इतिहास १.३३२ अ, १.३४४ ब।
अमरकोष टीका—आशाधर १.२८० ब, इतिहास (क्रिया-कलाप) १.३४४ अ।
अमरप्रभ—१.१३२ अ, वानरवंश १.३३८ ब।
अमर-रक्ष—राक्षसवश १ ३३८ अ।
अमरसेनचरिउ—इतिहास १.३४६ ब।
अमरावती—४ ४४५ अ।
अमरेन्द्रकीर्ति—नन्दिसघ १ ३२४ अ।
अमर्यादित (भोजन)—१.१३२ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब।
अमलप्रभ—१ १३२ अ, तीर्थंकर २ ३७७।
अमात्य—१ १३२ अ।
अमावस्या—१ १३२ अ, चन्द्र की गतिविधि २ ३५१ अ। लवणसागर पर प्रभाव ३ ४६०।
अमित—कुबेर का यान ४.५१३ अ।
अमितगति—१.१३२ अ, माथुर संघ प्र० १ ३२७ ब, द्वि० १ ३२७ ब, यदुवश १ ३३७। इतिहास—प्र० १ ३३० अ, १ ३४२ ब, द्वि० १.३३० ब, १ ३४३ अ।
अमितगति (देव)—दिक्कुमारेन्द्र ३.२०८ ब, परिवार ३ २०९ अ, निवास ३ २०९ ब, आयु १.२६५।
अमितगति श्रावकाचार—१.१३२ अ, इतिहास १ ३४३ अ।
अमित तेज—१.१३२ ब।
अमितप्रभ—यदुवश १ ३३७।
अमितमति—४ २३।
अमितवाहन (देव)—दिक्कुमारेन्द्र ३ २०८ ब, परिवार ३ २०९ अ, निवास ३ २०९ ब, आयु १.२६५।
अमितसेन—१ १३२ ब. पुन्नाट सघ १ ३२७ अ, इतिहास १.३२९ ब।
अमितांग—४ १० अ।
अमुख मंगल—१.१३२ ब, अमुख्य मगल ३ २४१ ब।
अमूढदृष्टि—१.१३२ ब।
अमूर्त—१.१३३ अ, गुण २ २४४ ब, द्रव्य २.४५६ अ, सापेक्ष धर्म १.१०९ अ, ४ ३२३ ब, बन्ध ३.१७३ अ, मन.पर्यय ज्ञान ३.२६३ अ, मूर्त ३.३१६ अ, स्पर्श ४.४७६ ब।
अमूर्तत्व—३ ३१६ अ, शक्ति ३ ३१६ ब।
अमृत—अनुभाग १.९० ब, कुम्भ २.२८८ ब, भरत चक्रवर्ती ४.१५ ब, सदृश ४ २७० ब।
अमृतकल्प—४ १५ ब।
अमृतकुम्भ—अप्रतिक्रमण २.२८८ ब।
अमृतगर्भ—४.१५ ब।
अमृतचन्द्र—१ १३३ अ, इतिहास १ ३३० अ, १.३४२ अ।
अमृतधारा—१.१३३ अ, ३.५४५ ब।
अमृतप्रभ—यदुवश १.३३७।
अमृत बल—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ।
अमृतरस—ऋद्धि १.४५६ अ।

अमृतरसायन—१.१३३ अ।
अमृतवेग—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
अमृतसर—४.१६ ब।
अमृतस्रावी—ऋद्धि १.१३३ अ, १ ४८७, १ ४५६ अ।
अमृताशीति—१.१३३ अ, इतिहास १ ३४१ अ।
अमेचक—१.१३३ अ।
अमेध्य—(आहारान्तराय) १.२९ अ।
अमोघ—१ १३३ ब, बाण ४ १५ ब, नारायण ४ १८ अ।
अमोघ (स्वर्गपटल)—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४ ५१५। देव-आयु १ २६८।
अमोघ (पर्वतीय कूट)—मानुषोत्तर—निर्देश ३.४७५ अ, अंकन ३ ४६४। रुचकवर—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८, ४६९।
अमोघमुखी शक्ति—४.१९ ब।
अमोघवर्ष—१.१३३ ब, राष्ट्रकूटवंश १.३१५ अ, ब, अकालवर्ष १ ३१ अ।
अयत्न—कर्मावस्था २ ६८ अ।
अयत्नाचारी—४ ५३५ ब।
अयथाकाल—उदय १.३६८ अ।
अयथार्थ—३ ३०२ ब।
अयन—१ १३३ ब, कालप्रमाण २.२१६ अ, ब, सूर्य चन्द्र की गतिविधि २ ३५१ अ, कायक्लेश २.४७ अ।
अयश कीर्ति—१.१३३ ब, नामकर्म ३ ९६ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २.५८३ अ, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १ ९५ ब, प्रदेश ३ १३६ ब। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १.३९९ ब, संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६७ अ, १ १७२ ब।
अयस्थूल—३.६०५ अ।
अयुत—कालप्रमाण २.२१६ अ।
अयुतसिद्ध—१.१३३ ब, ४ ३३४ अ, द्रव्य २ ४५४ अ।
अयुतांग—कालप्रमाण २ २१६ अ।
अयोग—१ १३३ ब, योग ३ ३७६ ब।
अयोगकेवली—अयोगी ३ ५०६ अ, अर्हन्त १ १३८ अ, कर्मक्षय २ १५८ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब, केवली २ १५७ ब, २.१५८ अ, निगोद ३ ५०५ ब, प्राण ३ १५३ ब, समुद्घात ४.३४३ अ। आरोहण क्रम २.२४७, दश करण २.६, परिषह ३.३४, प्रदेश निर्जरा अल्पबहुत्व १.१७४ अ।
अयोगकेवली (प्ररूपणा)—बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७५ ब, उदयस्थान १ ३९० अ, १.३९६, १ ३९७, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७९, सत्त्वस्थान ४ २९३, त्रिसंयोगी भंग १ ४०९ अ। सत् ४ १६४, संख्या ४ ९४, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४.४७७, काल २.१००, अन्तर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३।
अयोगव्यवच्छेद—१ १३३ ब।
अयोगी—दे० अयोगकेवली।
अयोध्य—४ १५ अ।
अयोध्या—१ १३३ ब, नारायण ४.१८ ब, तीर्थंकर ऋषभ अजित अभिनन्दन सुमति अनन्त पार्श्व २ ३७८-३७९, भरतक्षेत्र की राजधानी—निर्देश ३ ४४६ अ, अंकन ३.४४४, ३ ४४७, विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।
अयोनिज—३ १९५ अ।
अर—चक्रवर्ती ४ १० अ, २.३७७। (दे० अरनाथ)
अरक्षा भय—१.१३३ ब, भय ३ २०६ अ।
अरजस्का—१ १३३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
अरजा—१.१३३ ब। विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नाम ३ ४७० ब, विस्तार २ ४७९-४८०-४८१, अंकन ३ ४४४, ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ। नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ ब, नाम ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४९१, अंकन ३ ४६५।
अरण्य—१.१३३ ब।
अरति—कषाय १ १३३ ब, २ ३५ ब, परीषह १ १३४ अ, ३ ३३ ब, ३.३४ अ, रति ३.३८८ ब, रागद्वेष २ ३९ अ, शोक ४.४२ ब।
अरति परीषह—१ १३४ अ, ३ ३३ ब, ३ ३४ अ।
अरति प्रकृति—१ १३४ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३.३४४ अ, स्थिति ४.४६१, स्थिति सत्त्वस्थान ४ ३०८, स्थिति सत्त्वस्थान का अल्पबहुत्व १ १६५ ब, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३.१३६, बन्ध ३ ९७, बन्ध काल का अल्पबहुत्व १.१६१ ब, बन्धस्थान ३ १०९, उदय १.३७५ ब, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९५ त्रिसंयोगी भंग १.४०१ ब, अल्पबहुत्व १.१६८, ४.८५ अ।
अरति वाक्—१.१३४ अ, वचन ३ ४९७।
अरति वेदनीय—३.३४४ ब।
अरनाथ—१.१३४ अ, भावि तीर्थंकर २.३७७, पूर्व भव

२ ३७९-३९१, कुरुवश १ ३३५ ब, तीर्थंकर १ ३३६ अ।

अरत्न सागर—उत्तरकुरु १ ३५६ अ।

अरविंद—कुरुवश १ ३३६ अ।

अराग—सवर १ ४३२ ब।

अरिंजय—१.१३४ अ, विद्याधर वश १ ३३९ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

अरिदम—अजित सुपार्श्व चन्द्रप्रभ नाथ २.३७८, विद्याधर वश १ ३३९ अ।

अरि—१ १३४ अ, मोहनीय कर्म ३ ३४२ अ।

अरिकेसरी—१ १३४ अ।

अरिमर्दन—राक्षसवश १ ३३८ अ।

अरिष्ट—१ १३४ अ, अनन्तनाथ २.३८७, भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ, यम देवो का यान ४.५१३, लौकान्तिक देव ३ ४९३ ब, ब्रह्म युगल स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अकन ४ ५१५, देव आयु १ २६७।

अरिष्टनेमि—यदुवश १ ३३७, हरिवश १ ३३९ ब।

अरिष्टपुर—१ १३४ अ, विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नाम ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३.४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

अरिष्टसम्भवा—१ १३४अ, आकाशोपपन्न देव २ ४४५ब।

अरिष्टसेन—चक्रवर्ती ४ २५ अ, धर्मनाथ २ ३८७।

अरिष्टा—१.१३४ ब, विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नाम ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३ ४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, ३ ४३० अ। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३.४८७ अकन ३.४६८-४६९।

अरिष्टा (नरक पृथिवी)—नरक निर्देश २ ५७६ अ, विस्तार २ ५७६, २ ५७८, पटल इन्द्रक श्रेणी बद्ध २.५७८, २ ५८० अ, अकन ३,४४१। नारकी अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८ आयु १.२६३।

अरिष्टा पृथिवी (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३ ११३ उदय १.५७६, उदय स्थान १.३९२, उदीरणा १.४११, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ अ। सत् ४ १७०, संख्या ४ ९५, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन, ४.४७९, काल २.१०१, अन्तर १ ८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

अरिसत्रास—राक्षस वंश १.३३८ अ।

अरुचि—उपदेश १ ४२५ अ, राग ३.३९७ ब, ३ ३९९ ब, श्रद्धान ४ ४५ ब।

अरुण—१ १३४ ब लौकान्तिक देव ३,४९३ ब, अरुणवर द्वीप का रक्षक देव ३ ६१४, विजयवान नाभिगिरि का रक्षक देव ३ ४७१ अ। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१९ ब। देव आयु १.२६६।

अरुणप्रभ—१ १३४ ब, अरुणवर द्वीप का रक्षक देव ३ ६१४।

अरुणमणि १ १३४ ब, इतिहास १.३३४ अ।

अरुणवर—१ १३४ ब।

अरुणा—१ १३४ ब, नदी ३.२७५ ब।

अरुणाभास—दशम द्वीप सागर—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४, अंकन ३ ४४३।

अरुणी—१.१३४ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

अरुणीवर—१ १३४ ब, नवम द्वीप—सागर—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४, अंकन ३ ४४३।

अरूपत्व—१ १३४ ब।

अरूपी—१ १३४ ब, मूर्त ३१६ अ।

अर्क—हरिवश १.३४० अ। सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६६।

अर्ककीर्ति—१ १३४ ब, अकम्पन १ ३० ब, इक्ष्वाकु वश मे भरत चक्री का पुत्र १.३३५ अ, सूर्यवश १.३३९ ब।

अर्कचूड—विद्याधर वंश १.३३९ अ।

अर्कमूल—१ १३४ ब, विद्याधर ३.५४५ ब।

अर्घ—३.७९ अ।

अर्चट—१ १३४ ब, इतिहास १ ३२९ ब।

अर्चन—१ १३४ ब, पूजा ३ ८१ अ।

अर्चि—अनुदिश स्वर्ग का श्रेणीबद्ध—निर्देश ४ ५१९ अ, ४ ५१५, ५१८। देव आयु १.२६९।

अर्चिनिका—वैमानिक इन्द्रो की देवी ४.५१३ ब।

अर्चिमालिनी—अनुदिश स्वर्ग का श्रेणीबद्ध—निर्देश ४ ५१९ अ, अकन ४.५१५, ५१७। देव आयु १ २६९। सूर्य चन्द्र की पट्ट देवी, २.३४६ अ।

अर्जुणी—३ ५४५ ब।

अर्जुन—१.१३४ ब, कुरुवश १.३३६ अ, एक कवि

१.३२८ अ।
अर्जुनवर्मा—१ १३४ ब, भोजवंश १.३१० अ।
अर्जुनी – १.१३४ ब।
अर्णव—४ १६ ब।
अर्थ – १.१३४ ब, अग्र १.३९ अ, अनन्तता १.२३४ अ, अन्वयी १.११२ ब, अवग्रह १.१८१ ब १.१८३, आगम १ २२९ ब, काल १ २३४ अ, देश १ २३४ अ, द्रव्य २.४५४ ब, ध्येय २.५०० अ, नय २.५१४ ब, २ ५४३ अ, निरीक्षण २ ५९२ अ, नैयायिक दर्शन २ ६३३ ब, पंचविध १.२३० अ, प्रमाण १ २३३ अ, शब्द १ २३२ ब, शुक्लध्यान ४ ३३ अ, ब, शुद्धि १ १३५ब, सप्तभंगी ४ ३२४ अ, ४.३२५ ब।
अर्थकथा—कथा २.३ ब।
अर्थक्रियाकारित्व—३.५३० ब।
अर्थदर्शनार्य—आर्य १ २७५ अ।
अर्थनय—१.१३५ ब, नय २.५१४ ब, २ ५२० ब, २ ५२६ अ, ब, २ ५४३ अ।
अर्थनिपुर—कालप्रमाण २.२१६ अ।
अर्थनिपुरांग—कालप्रमाण २ २१६ अ।
अर्थनिबन्धन—२.५८२ ब।
अर्थनिमित्तक विनय—३.५४८ ब।
अर्थपद—१.१३५ ब, ३.४ अ, ब, श्रुतज्ञान ४.६५ अ।
अर्थपरंपरा—आगमार्थ १ २३० ब।
अर्थपर्याय—१ १३५ ब, पर्याय ३ ४५ ब, ३ ४७ ब, सप्तभंगी ४.३ २२ ब।
अर्थपर्याय नैगम नय—२ ५३१ अ।
अर्थपर्यायनैगमाभास—२ ५३१ ब।
अर्थपुनरुक्ति—१ १३५ ब।
अर्थपुरुषार्थ—१ १३५ ब, कथा २ ३ ब, कारण ३ ७० अ।
अर्थपौरुषी—१ ५२ अ।
अर्थभेद—नय २.५४१ अ, मतिज्ञान ३,२५४ अ, शब्दभेद ३ २५४ अ, २ ५३९ ब।
अर्थमल—१ १३५ ब, मल ३ २८८ ब।
अर्थरुचि—४ ३४८ ब।
अर्थलिंगज श्रुतज्ञान—अनुमान ४ ५९ अ, श्रुतज्ञान ४.६० ब, ४.६४ अ।
अर्थवाक्य—वाक्य ३.५३१ अ।
अर्थवाद—१ १३५ ब।
अर्थविकल्प ज्ञान—३.५३७ ब।
अर्थव्यंजन पर्याय नैगम—२.५३१ अ।
अर्थव्यंजन पर्याय नैगमाभास—२ ५३१ ब।
अर्थशुद्धि—१ १३५ ब, उभय शुद्धि १.४४४ ब।
अर्थसंक्रान्ति—४.९१ अ।
अर्थसंग्रह—आगमार्थ १ २३२ अ, मीमांसादर्शन ३.२११ अ।
अर्थसंदृष्टि—१ १३५ ब, इतिहास १ ३४८ अ।
अर्थसम—१ १३६ अ, अर्थ १ १३५ अ, निक्षेप २ १३६ अ २ ६०२ अ।
अर्थसमय—१ १३६ अ, ज्ञान २ २६९ अ, समय ४ २८ अ।
अर्थसम्यक्त्व—१ १३६ अ, सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।
अर्थसम्यक्त्वार्य—आर्य १ २७५ अ।
अर्थाधिकार—उपक्रम १ ४१६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६७ ब।
अर्थाधिगम – १ १३६ अ। अधिगम १ ५० ब।
अर्थांतर—१ १३६ अ।
अर्थापत्ति—१ १३६ अ, केवलज्ञान २ १५० ब।
अर्थापत्ति समा जाति—१.१३६ अ।
अर्थापदत्व—१.१३६ अ।
अर्थावग्रह—१ १४६ अ। अवग्रह १.१८३ अ।
अर्दन—१.२७२ ब।
अर्द्ध कथानक—१ १३६ ब, इतिहास १.३४७ ब।
अर्द्धक्रम—१ १३६ ब।
अर्द्धगोलक—१.१३६ ब।
अर्द्धचन्द्र—चन्द्रप्रभ २ ३७९।
अर्द्धच्छेदक—१ १३६ ब, गणित २.२२५ अ, राशि २ २२९ अ। सहनानी २ २१९ ब।
अर्द्धनाराच—१.१३६ ब, सहनन ४.१५५ अ, ब।
अर्द्धपुद्गलपरावर्तन—१ १३६ ब, श्रुतज्ञान १.५८ ब।
अर्द्धफालक—१ १३६ ब।
अर्द्धमंडलीक—१ १३६ ब, राजा ३.४०० ब, ३.४०१ अ।
अर्द्धेन्द्रा—१ १३६ ब।
अर्धकंस—तौल का प्रमाण २.२१५ अ।
अर्धकथानक—१ १३६ ब, इतिहास १ ३४७ ब।
अर्धकांड—इतिहास १ ३४३ ब।
अर्धचिता—३.२६२ अ।
अर्धच्छेदराशि—१ १३६ ब, गणित २.२२५ अ, राशि २ २२९ अ, सहनानी २.२१९ ब।
अर्धनाराचसंहनन—(नामकर्म प्रकृति) प्ररूपणा—प्रकृति ३.७९, २ ५८३ अ, स्थिति ४.४६५, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३.१३६। बंध ३.९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १.४०४। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६७, १.१६९।

अर्धपर्यंकासन—कायक्लेश २.४७ ब।
अर्धफालक संघ—४ ७७ अ, १ परिशिष्ट २ २।
अर्धमंडलीक ३ ४०१ अ, राजा ३ ४०० ब, ३.४०१ अ।
अर्धस्वर्गोत्कृष्ट—राक्षस वंश १.३३८ अ।
अर्धानशन—१ ६५ अ।
अर्पित—१.१३६ ब।
अर्यमा—उत्तराफाल्गुन २.५०४ ब।
अर्वाचीन पुरुष—आगम १ २३६ ब।
अर्हंत—१ १३६ ब, अवर्णवाद १ २०१ अ, आप्त (१८ दोष रहित) १ २४८ अ, ओम् १ ४६९ ब, केवलज्ञान २ १५२ ब, गुरु २ २५१ ब, ध्येय २ ५०१ अ, नमस्कार मंत्र ३ २४८ अ, निषद्यका (व्युत्सर्ग तप) ३ ६२१ अ, पिंडस्थ ध्यान ३ ५७ ब, भक्ति ३ १३८ ब, ३ १९८ ब, मोक्ष (सिद्ध) ३ ३२४ अ, विहार ३ ५७५ अ, सामायिक ४ ४१७ ब।
अर्हं—१ १३८ ब, सल्लेखना ४ ३९० ब।
अर्हत्—अर्हंत १ १३६ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ अ।
अर्हत्पासा केवली—१ १३८ ब, इतिहास १ ३४८ अ।
अर्हत्प्रवचन—इतिहास १.३४२ ब।
अर्हत्सेन—१ १३८ ब, सेनसंघ १ ३२६ अ, इतिहास १ ३२८ ब, १.३२९ अ।
अर्हद्दत्त—१ १३८ ब, मूलसंघ (श्रुतकेवली) १ ३१७, १ परि०-२ ६, इतिहास १.३२८ ब।
अर्हद्दत्त (सेठ)—१.१३८ ब।
अर्हद्दास (कवि)—इतिहास १ ३३२ ब, १.३४५ अ।
अर्हद्बली—१.१३८ ब, मूलसंघ १ ३१७, १.३२२ ब, १ परि०-२ ८, नंदिसंघ १ परि०-४.२, पुनाट संघ १ ३२६ ब, इतिहास १ ३२८ ब।
अर्हद्भक्ति—१,१३८ ब, ३ १९८ ब।
अर्हन्मंडलयंत्र—यंत्र ३ ३४९।
अलंकारचिंतामणि—इतिहास १.३४५।
अलंकारोदय—१ १३८ ब।
अलंबुष—यदुवंश १.३३७।
अलंबुसा—वैमानिक गणिका ४ ५१४ अ।
अलंबु—वैमानिक महत्तरिका ४.५१३ ब।
अलंभूषा—१.१३८ ब। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३ ४६८-४६९।
अलक—१ १३८ ब, ग्रह २ २७४ अ।
अलका—१ १३८ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
अलकापुरी—संजात २.३९२।
अलाभ—१.१३९ अ, परीषह १.१३९ अ, ३.३३ ब, ३.३४ ब, लाभ ३.४१६ अ।
अलीक वचन—असत्य १.२०८ ब।
अलेवड—१ १३९ अ।
अलेश्या—३ ४२३ ब।
अलोक—१ १३९ अ, आकाश १ २२० ब, विभाग २.४८८ ब, २ ४९० अ, हानि २ ४९० अ, वर्तना २.८५ ब,
अलोकाकाश—१.२३९ अ, आकाश १ २२० ब, विभाग २ ४८८ ब, २.४९० अ, वर्तना २ ८५ ब, अल्पबहुत्व १ १४३ अ। हानि २.४९० अ।
अलौकिक—१ १३९ अ, लोकोत्तर ३ ४९२ ब। गणना १ १३९ अ, ३ १४४ ब, सुख ४.४३१ अ, शुचि १.१३९ अ, ४.४३८ अ।
अल्पकालिक प्रत्याख्यान—३.१३३ अ।
अल्पतर बंध—१.१३९ अ, प्रकृतिबंध ३ ८९ अ।
अल्प-पूर्ण उपचार—१.४२० ब।
अल्पबहुत्व—१ १३९ अ, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, प्ररूपणायें—जीवसामान्य ओघ १.१४३, आदेश १.१४४-१५४, सिद्ध या मुक्तजीव १.१५३, पंच शरीरों के स्वामी १ १५७ ब-१६० अ। स्थिति बंध स्थान सामान्य १.१६४ ब, स्थिति सत्त्वस्थान मोहनीय १ १६५, अनुभाग सत्त्वस्थान सामान्य १.१६६-१७०, प्रदेशबंध सामान्य १.१७१-१७३, उदीरण व उदीरणास्थान ओघ १.४१२, आयु का अपकर्ष काल १.१७३-१७४, अष्टकर्म निर्जरा १,१७४। अवगाहना १.१५४, १ १५७, योगस्थान १.१६१ ब१-६४, विशुद्धि व संक्लेशस्थान १.१६० अ, ज्ञान व चारित्र के भेदों का अवस्थान काल १ १६० ब। २३ वर्गणाएँ १.१५५, पंचशरीर वर्गणा १ १५६ ब। स्वामित्व सन्निकर्ष—बंध १ १८२, ४ ४७०, ४.५२८, बंधस्थान ४ ५२७, उदय आदि १ १७५। अध प्रवृत्तकरण २.१० अ।
अल्पर्द्धि देव—आयु के बंध योग्यपरिणाम १.२५८ अ, ब।
अल्पविद्या—३ ५४४ अ।
अल्पसावद्य—१.१७६ अ, सावद्य ४ ४२१ अ।
अल्पसावद्य कर्मार्य—निर्देश ४.४२१ ब, लक्षण ४.४२१ अ, आर्य १.२७५ अ।
अल्पावधिक—३ १३३ अ।
अल्लीवण बंध—३.१७० ब।
अल्हू—(कवि) इतिहास १ ३३३ अ।
अवंतिकामा—१ १७६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
अवंतिवर्मा—१ १७६ ब।
अवंती—१ १७६ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, मागध वंश

१.३१० ब, १ ३१२ यदुवश १ ३३७, अवंतीवश इतिहास १ ३१२।

अवंतीवंश – इतिहास १.३१२।

अवकाशदान—आकाश १ २२० अ।

अवक्तव्य—१.१७६ ब, तत्त्व १.२२९ अ, भग ४ ३२४ ब, सापेक्ष धर्म ४.३२४ ब, नय १ १७७ अ, २ ५२२ ब, प्रकृतिबध ३.८९ अ।

अवक्तव्यता –४ ३१४ ब।

अवक्तव्यवाद—१.१७७ अ, एकान्त १.४६५ अ।

अवक्रान्त—१.१७७ अ। नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

अवगम — २ २७० व।

अवगाढ—१ १७७ अ। दर्शनार्य १ २७४ ब, सम्यक्त्वार्य १.२७४ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब, रुचि ४ ३४८ ब।

अवगाह—१ १७७ अ। क्षेत्र २ २०९ अ, दान १ १२० अ।

अवगाहन—१.१७७ अ, गति २.२३५ अ।

अवगाहनत्व—१ १७७ ब, ३ ३२६ अ।

अवगाहना—१ १७७ ब, आकाश गुण १.११२ अ, इन्द्रिय १ ३०५ ब, औदारिक शरीर अल्पबहुत्व १ १५८, मुक्ति ३ ३२८ अ, वर्गणा अल्पबहुत्व १ १५६ ब, सिद्ध अल्पबहुत्व १ १५४ अ, जघन्य अवगाहना से श्रेणी माडने वालो की सख्या ४ ९४, षट्कालिक वृद्धि हानि २ ९३।

अवग्रह—१ १८१ अ, ईहा ज्ञान १ ३५१ ब, दर्शन २ ४०९ अ, प्रामाण्य १.१८२ ब, मतिज्ञान ३.२५३ अ। ज्ञान की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब।

अवग्रहकाल—३.२२८ ब।

अवग्रहतप—कायक्लेश २.४७ अ।

अवग्रहावरणीय कर्म—बीजबुद्धि ऋद्धि १.४४८ ब।

अवच्छिन्न — १.१८४ ब।

अवच्छेदक—१.१८४ ब।

अवतंस—१ १८४ ब। उत्तर कुरु का दिग्गजेन्द्र—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४।

अवतंसा—व्यंतर वल्लभिका ३.६११ ब।

अवतंसिका—४.१५ अ।

अवतारक—१.१८४ ब।

अवतारक्रिया—४.१५२ अ।

अवदान—१.१८४ ब।

अवद्य – १.१८४ ब।

अवद्यभावना—अस्तेय १.२१४ ब, अहिंसा २.११६ अ।

अवधा—१ १८४ ब।

अवधारणा—१ १८४ ब।

अवधि—१ १८४ ब, अवधिज्ञान १ १८८ ब, जन्म २ ३२२ अ।

अवधिज्ञान—१.१८४ ब, उपक्रम १.४१६ ब, ऋद्धि १.४४८, स्वामित्व २ २६१, सम्मूर्च्छिम ४.१२७ अ। प्ररूपणा – बध ३ १०५, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३९२, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्व स्थान ४ ३००, त्रिसयोगी भंग १ ४०८ अ, सत् ४.२३७, संख्या ४ १०६, क्षेत्र ३ २०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २ ११३, अन्तर १ १५, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १५० अ। सिद्धो का अल्पबहुत्व १.१५४ अ।

अवधिज्ञानावरण—१ १९९ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ २७१ ब, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश २ १३६। बध ३ ९७, बधस्थान ३.१०९, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १.४११, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसयोगी भग १.३९९, सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८।

अवधिज्ञानी—कल्की २.३१ ब, गुणित श्रेणी ४.५२४ अ, तीर्थंकर २.३८६।

अवधिजिन—१.१९९ ब, जिनकल्प २.३२९ अ।

अवधिदर्शन—१.१९९ ब, दर्शन २.४१३ अ, ब। प्ररूपणा—बंध ३ १०६, बधस्थान ३.११३, उदय १.३८४, उदयस्थान १ ३९३, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १.४०६ अ। सत् ४.२४१, सख्या ४.१०७, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४ ४९०, काल २ ११५, अन्तर १.१७, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१।

अवधिदर्शनावरण—१.१९९ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २.४२० अ, स्थिति ४.४६० अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३.१३६। बध ३.९७, बधस्थान ३ १०९, उदय १.३७५, उदय स्थान १.३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसंयोगी भग १.३९९, सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८।

अवधिमरण — १.१९९ ब, मरण ३ २८१ ब।

अवधिस्थान—१ १९९ ब। नरक पटल—निर्देश २ ५८० अ, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध २ ५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।

अवधृत काल अनशन—१ ६५ ब, १ २०० अ।
अवध्या—विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३ ४६० अ नाम ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने (चित्र स० ३७), चित्र ३ ४६० अ।
अवध्याधिकार—३ १९६ अ।
अवनति—कृतिकर्म २ १३३ ब, त्रिबार २ २६ अ।
अवनमन—२ ५०६ अ।
अवना—लवणा देवी ३ ६१४ अ।
अवनिपाल—१ २०० अ।
अवनीत—१ २०० अ।
अवपीडक—१ २०० अ।
अवबोध—२ २७० ब।
अवमान—१ २०० अ, प्रमाण ३ १४५ अ।
अवमौदर्य—१ २०० अ।
अवयव—१ २०० ब, अनुमान १ ९८ ब, उपदेश १ ४२५ अ, ब, नैयायिक दर्शन २ ६३३ अ, गुण २ २४१, ३ ३१० अ, परमाणु ३ १८ ब, पर्याय ३ ४७ अ, शरीर १ २०० ब, सम्यक्त्व ३ ३१० अ।
अवयवपद—उपक्रम १ ४१६ ब।
अवरोहक—१ २०० ब, अवतारक १ १८४ ब, अवतारक १ १८४ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ अ।
अवरोहण—गुणस्थान २ २४७ अ।
अवर्णवाद—१ २०० ब, असुर देव १ २१० ब।
अवर्ण्यसमा—२०१ अ।
अवलंब—१ २०१ अ।
अवलंबना—१ २०१ अ।
अवलंबनाकरण—१ २०१ अ।
अवलंब ब्रह्मचारी—१ २०१ ब, ३ १९४ अ।
अवव—काल प्रमाण २ २१६ अ।
अववाग—काल प्रमाण २ २१६ अ।
अवश—१ २०१ ब, आवश्यक १ २७९ ब।
अवश्य—आवश्यक १ २८० अ।
अवष्टम्भ—कर्मोदय २ ७१ ब।
अवसन्न—१ २०१ ब, मरण ३ २८१ ब।
अवसन्नासन्न—१ २०१ ब, परमाणु-समूह १ २२४ अ, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ अ।
अवसर्पिणी—१ २०१ ब, अवगाहना १ १८०, आयु १ २६४, आर्यखंड १ २७५ अ, काल २ ८८, कालपरावर्तन २ ८९, क्षेत्र २ ९२, वृद्धि-हानि २ ९१, समवसरण ४ ३३१ ब, सिद्धों का अल्पबहुत्व १ १५३।
अवसाय—१ २०१ ब, व्यवसाय ३ ६१७ अ।
अवस्था—१.२०१ ब, पर्याय ३ ४५ ब, व्यवस्था ३ ६१७ अ।
अवस्थात्याग—व्यय १ ३५७ ब।
अवस्थान—१ २०२ अ, अस्तित्व १ २२१ ब, उत्पादादि १ ३५९ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, लोकाकाश १ २२२-२२४, विहार ३ ५७४ अ, स्थान ४ ४५२ ब।
अवस्था प्राप्ति—उत्पाद १ ३५७ अ।
अवस्थित—१ २०२ अ, परमाणु ३ १६ अ।
अवस्थित अवधिज्ञान—१ २०२ अ, अवधिज्ञान १ १८८ अ, १ १९३ ब।
अवस्थित उग्र ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७ १ ४५३ ब।
अवस्थित गुणश्रेणी आयाम—१ २०२ अ, श्रेणी ४ ८९ ब।
अवस्थित बंध—१ २०२ अ, बंध ३ ८९ अ।
अवस्थित भागाहार—अनुयोगद्वार १ १०२ ब।
अवस्थित संख्या—संख्या ४ ९२ अ।
अवहार—अनुयोगद्वार १ १०२ अ।
अवहार काल—अंतर्मुहूर्त १ ३० अ, काल २ ८१ ब।
अवाक् शय्यासन तप—कायक्लेश २ ४७ ब।
अवाक्—१ २०२ अ।
अवाच्य—सापेक्षधर्म १ १०९ अ, ४ ३२३ ब।
अवान्तरसत्ता—अस्तित्व १ २१२ ब, द्रव्य २ ४५५ अ, सापेक्षधर्म १ १०९ अ, ४ ३२३ अ।
अवाय—१ २०२ अ, अवग्रह ज्ञान १ १८४ अ, धारणा ज्ञान २ ४९१ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०, मतिज्ञान ३ २५३ अ।
अविकल्प—१ २०२ ब, ३ ५३७ अ, नय २.५२३ अ।
अविकृतिकरण—१ २०२ ब, आलोचना १ २७७ अ।
अविज्ञातार्थ—१ २०२ ब।
अविग्रह गति—३ ५४१ अ।
अविचलस्थिति—चारित्र २ २८४ अ, निजस्वरूप २ २८४ अ।
अविचार—१.२०२ ब, भक्त प्रत्याख्यान ४ ३८८ ब।
अवितथ—१ २०२ ब, ३ ५४३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।
अविद्धकरण—१ २०२ ब।
अविद्या—मिथ्यादृष्टि ३ ३०४ अ, संस्कार ४ १५० अ।
अविध्वंस—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ।
अविनाभाव—१ २०२ ब, व्याप्ति ३ ६१८ अ।
अविनाभावित्व—४ ५३८ अ।
अविनाभावी सम्बन्ध—उपचार १ ४२२ ब।
अविनेय—१.२०२ ब।
अविपाक—१ २०३ अ, विपाक ३ ५५६ ब।
अविपाक प्रत्यधिक—उदय १ ३६५ ब, उपशम १ ४४२ अ,

निर्जरा १ ७५ ब, २ ६२२ अ, भावबध ३ १७१ ब, ३ १७२ अ।

अविभक्ति—३.५५६ ब।

अविभाग प्रतिच्छेद—१ २०३ अ, अपूर्वकरण २ १२ अ, उदय १ ३६६ ब, खड कल्पना २ २४१ अ, गुण २ २४१ अ, ब, योग मे अल्पबहुत्व १.१६२ ब, योग वर्गणा ३ ३८३ अ, स्पर्धक ४ ४७२ अ, ब।

अविभागी—द्रव्य १ २२१ ब। परमाणु ३ १६ ब।

अविरत—काय २ ४५ ब, दर्शन प्रतिमा २ ४१८ अ, सम्यग्दृष्टि २ २१२ अ।

अविरतसम्यग्दृष्टि—१ २०३ अ। आरोहण-अवरोहण ७ २४७, करण दशक २ ६, गर्हण २ २३८ ब, दर्शन प्रतिमा २ ४१८ अ, निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१४१ ब, परिषह ३ ३४, वेदक सम्यक्त्व २ १८५, विशेष दे० 'सम्यग्दृष्टि'।

अविरतसम्यग्दृष्टि (प्ररूपणा)—बध ३ ९७, बधस्थान ३.१०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९२ अ, उदीरणा १ ४११ अ उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८८, त्रिसयोगी भग १ ४०६ अ। सत् ४.१६२, सख्या ४ ९४, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४.४७७, काल २ ९९, अतर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३।

अविरति—१ २०३ अ, उपयोग (शुभ) १.४३३ ब, कषाय ३ १२७ अ, प्रत्यय ३.१२६ अ-३ २३०। प्रमाद ३.१२६ ब, बध ३ १७५ अ, ३ १७८ ब।

अविरुद्ध—१ २०३ ब।

अविरुद्धोपलब्धि (हेतु)—२ २०३ ब, ४ ५३८।

अविरोध—अनेकान्त १.१०९ ब, प्रामाणिकता १.२३६ अ।

अविवक्षित—४ ५०२ ब।

अविवेक—कर्ता कर्म २ २२ ब।

अविशद—१.२०३ ब, अवग्रह १ १८१ ब, १८३ अ।

अविशेष समा जाति—१ २०३ ब।

अविष्वग्भाव—१ २०३ ब।

अविसंवाद—अस्तेय १.२१४ अ।

अविहत—४.६० अ।

अवीचार—४ ३४ ब।

अवृद्धिक दोष—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ।

अवृद्धिक प्रामृष्य दोष—आहार १ ७९० ब।

अव्यक्त—१.२०३ ब, आलोचना ९ २७७ ब, निवृत्त्यक्षर १.३२ ब, बाल ३ २८१ अ, मन पर्यय ३ ७६४ अ, राग ३.३९६ अ।

अव्यय—४.४३२ ब।

अव्यवस्था—१ २०३ ब, व्यवस्था ३.६१७ अ।

अव्याघात—१ २०३ ब, अपकर्षण १ ११३ ब, उत्कर्षण १ ३५३ ब, सूक्ष्म ४ ४३९ ब।

अव्याप्त—१.२०३ ब, लक्षणाभास ३ ४०९ ब।

अव्याबाध—१ २०३ ब, मोक्ष ३ ३२५ ब, ३ ३२६ अ, लौकान्तिक देव ३ ४९३ ब, सुख ४ ४३१ ब, ४ ४३२ ब।

अव्युत्पन्न श्रोता—४ ७४ अ, ब, उपदेश १ ४२६ अ।

अव्रत—(दे० अविरत सम्यग्दृष्टि)।

अव्रतीगृहस्थ—मूल गुण ४ ५१ अ।

अशन—१.२०३ ब, आहार १ २८५ अ।

अशन दोष—आहार १ २८९ ब, १ २९१ ब।

अशनिघोष—१ २०३ ब, मानुषोत्तर के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अकन ३ ४६४।

अशनिजव—१ २०३ ब, महोरग देव ३ २९३ अ।

अशब्द—परमाणु ३ १५ ब।

अशय्याशयिनी—१ २०३ ब, विद्या ३.५४४ अ।

अशरण—१ २०३ ब, अनुप्रेक्षा १ ७३ अ, ७९ अ।

अशरीर—३ ३२५ ब।

अशुचि—१ २०३ ब, अनुप्रेक्षा १ ७३ ब, १ ७९ ब, आहारान्तराय १ २९ अ, पिशाच ३ ५८ ब।

अशुद्ध—१ २०३ ब, आत्मा २.३३८ अ, आत्मानुभव १.८४ अ, १.८६ ब, उद्दिष्ट १.४१३ ब, उपयोग ८ ४३० ब, १.४३१ ब, १ ४३२ अ, १ ४३४ अ, चेतना २.२९७ अ, नय २.५५१ अ, पर्याय ३ ४९ ब, शुद्ध ४.३८ अ, सापेक्ष धर्म (अनेकान्त) १.१०९ अ (सप्तभंगी ४ ३२३, ब।

अशुद्ध अर्थपर्याय-नैगम—नय २ ५३१ ब।

अशुद्धता—१ २०४ अ।

अशुद्धद्रव्य अर्थपर्याय नैगम—नयाभास २ ५३२।

अशुद्धद्रव्य नैगम—नय २ ५३१ अ, नयाभास २ ५३२।

अशुद्धद्रव्यव्यञ्जनपर्याय नैगम नय २.५३१ ब, नयाभास २ ५३२ अ।

अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय—१.२०४ अ, नय २.५४४ अ, नैगम नय २ ५३२ अ, व्यवहार नय २.५५९ अ।

अशुद्धनिश्चय नय—१.२०४ अ, नय २.५५१ अ, २.५५४ अ।

अशुद्धपर्याय—पर्याय ३.४९ ब।

अशुद्धपर्यायार्थिक नय—नय २.५५१ अ।

अशुद्धपारिणामिक भाव—३.५५ अ।

अशुद्धसद्भूत—२.५६० ब।

अशुद्धोपयोग—१.२०४ अ, १.४३० ब, १.४३१ ब,

१.४३४ अ, परिग्रह २.२९ अ, विषकुम्भ १.४३४ अ, शुभाशुभ १ ४३३ ब, हिंसा २ २१६ ब, १ २१६ ब, ४ ५३३ अ, ४ ५३४ ब।

अशुभ—३ ३७७ अ, आस्रव ४ २८२ ब उपयोग १ ४३० ब, १ ४३३ ब, उपशम ४ ४३७ अ, करण चिन्ह १ १९२ अ, शुभ ४ ४१ ब, तैजस शरीर २ ३९५ ब, तैजस समुद्घात २ ३९८ ब, नामकर्मप्रकृति १.२०४ अ, ३ ५३ ब, परिणाम १ ४३१ अ, ३ ३१ अ, २ ६२१ अ, निरोध २ ४७२ ब, प्रणिधान ३ ११५ अ, मोह ३ ३४० ब, योग १ २०४ अ, २ ४६ ब, ३ २७७ ब, ३ ३७५ ब, ३ ४१८ ब, ४ १४२ ब, राग ३ ३९६ अ, लेश्या २.४९३ अ, ३.४२२ ब, स्वप्न ४ ५०४ अ।

अशुभनामकर्मप्रकृति—१ २०४ अ, शुभ ४ ४४१ अ, पाप ३.५३ ब, प्ररूपणा-प्रकृति। ३.८८, २.५८३ अ, स्थिति ४ ४६, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३.४७, बन्ध स्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदय स्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्व स्थान ४ ३०३, त्रिसयोग भंग १ ४०४, संक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८।

अशुभपरिणाम—उपयोग १.४३० ब, १ ४३१ अ ब, परिणाम ३ ३१ अ, व्युत्सर्ग ३ ६२१ अ।

अशुभयोग—१ २०४ अ, काययोग २ ४६ ब, मनोयोग ३ ३७७ ब, योग ३ ३७५ ब, वचनयोग ३ ४१८ ब, संवर ४ १४२ ब।

अशुभलेश्या—३ ४२२ ब, ध्याता ३ ४९३।

अशुभोपयोग—१ २०४ अ, उपयोग १ ४३० ब, १.४३१ अ, १ ४३३ ब, अशुद्धोपयोग १ ४३४ अ, गुणस्थान १ ४३४ अ।

अशून्यता—२.३३३ अ।

अशून्य नय—१ २०४ अ, नय २ ५२३ अ।

अशोक—१.२०४ अ, ग्रह २ २७४ अ, मल्लिनाथ २.३८३, मौर्यवंश १.३९३, १ ३१६, विद्याधर ३ ५४५ ब, व्यन्तरदेव ३ ६१३ ब।

अशोकरोहिणी व्रत—१ २०४ अ, रोहिणी व्रत ३.४०७ अ।

अशोकवन—भावन लोक में ३ २१० ब, व्यन्तर लोक में ३.६१२ ब, नन्दीश्वर द्वीप में ३.४६६ अ।

अशोकवृक्ष—१-२०४ अ वृक्ष ३ ५७९ ब, ३.५८० अ, प्रातिहार्य १.१३७ ब।

अशोक संस्थान—१ २०४ अ, ग्रह २.२७४ अ।

अशोका—१.२०४ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ अ, नाम ३.४७५ अ, विस्तार ३ ४९१ अंकन ३.४६५।

अशौच—४ ४४ ब।

अश्मक—१ २०४ अ, मनुष्य लोक ३ २७५ अ।

अश्मगर्भ—मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३.५७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अंकन ३ ४६४।

अश्रद्धा—४.४६ अ।

अश्रद्धान—तत्त्व ३ ३०० अ, मिथ्यादर्शन ३ ३०० अ, श्रद्धान ४ ४५ ब।

अश्रुपात—आहारान्तराय १ २९ अ।

अश्रेणी—गुणस्थान २ २४७ अ।

अश्व—१ २०४ अ, चक्रवर्ती का वैभव ४ १३ अ, ग्रह २ २७४ अ, अश्विनी नक्षत्र २ ५०४ ब, माहेन्द्रदेव का यान ४ ५११ ब, लौकान्तिकदेव ३.४९३ ब, सम्भवनाथ का चिन्ह २ ३७९।

अश्वकंठ—४ २६ अ।

अश्वकर्ण करण—१ २०४ अ, कृष्टि २ १४० ब, २ १४२ अ, स्पर्धक ४ ४७३ ब।

अश्वग्रीव—१ २०४ ब, प्रतिनारायण २ ३९१ ब, ४ ३० अ, ४.२६ अ।

अश्वत्थ—१ २०४ ब, अनन्तनाथ व पार्श्वनाथ २ ३८३।

अश्वत्थामा—१ २०४, ब।

अश्वधर्मा—विद्याधर वंश १ ३३९ अ।

अश्वध्वज—विद्याधर वंश १ ३३९ अ।

अश्वपति—१ २०४ ब।

अश्वपुरी—१ २०४ ब, विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नगरी ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

अश्वमेधदत्त—१ २०४ ब, अर्जुन १ १३४ अ।

अश्वलायन—क्रियापादी १ ४६५ अ।

अश्ववन—पार्श्वनाथ २ ३८३।

अश्वसेन—यदुवंश १ ३३७।

अश्वसेना—यदुवंश १ ३३७।

अश्वस्थान—२ २७४ अ।

अश्वायु—विद्याधर वंश १.३३९ अ।

अश्विनी—१ २०४ ब, नक्षत्र २ ५०४ ब, मल्लिनाथ नमिनाथ २ ३८०।

अश्विनी व्रत—१ २०४ ब।

अष्ट—१ २०४ ब, अंग २ २६३ अ, ३५० ब, ४ ३५१ अ, ४ ३५८ ब, अंगधर १ ३६७, आयु के अपकर्ष काल १ २५९ अ, १ २६७, आयतन १ २५१ अ, कर्म ३ ९२ अ, ३ ३२६, कर्मप्रदेश ४ ११६ ब, कर्म वर्गणा ३ ५१७ अ, गुण (सिद्ध) ३ ३२५ ब, ज्ञान के

अग १ २६३ अ, दिक् १ २०४ ब, द्रव्य (पूजा) ३ ७८ अ, पाहुड १ ३४० ब, १ ३४८ अ, ३ ५७ अ, पुत्र (अन्तकृत केवली) १ २ ब, पृथिवी २ ५७६ ब, प्रवचनमाता ३ १४८ अ, प्रातिहार्य १.१३७ ब, भक्त (तेला) ३ १६४ ब, मगल द्रव्य २ ३०२ अ, २ ३०३ अ, ४ ३३१ अ, मद ४ ३६१ ब, मध्यरुचक प्रदेश ३ ३७६ ब, मूलगुण १,२०५ अ, ४ ५० ब, शुद्धि ४.३८ ब, सम्यग्दर्शन के अग ४ ३५० ब, ४ ३५१ अ, स्थान ३ ११० अ।

अष्टकर्म—प्रकृति ३ ९२ अ, उदय-उदीरणा आदि का अल्पबहुत्व १ १७५, अनुभाग अल्पबहुत्व १ १६६, बद्ध प्रदेश ४ ११६ ब, अबाधा १ २४९, गुणावरोधक शक्तियाँ ३ ३२६।

अष्टचत्वारिंशत्—मोहनीय की प्रकृतियाँ ३ ३४२, ३ ३४३।

अष्टदिगवलोकन—१ २०४ ब, व्युत्सर्ग ३ ६२२ अ।

अष्टद्रव्य—१ २०४ ब, पूजा ३ ७८ अ, मंगल द्रव्य २ ३०२ अ, ४ ३३१ अ।

अष्टम—पृथिवी १ २०५ अ, ३ ३२३ ब, ४ ४२५ अ, भक्त १ २०५ अ, २ ४७ अ, भूमि ३ २३४, ३ ३२४ अ।

अष्टमध्यप्रदेश—१ २०५ अ, जीव २ ३३९ अ, लोक ३ ४४० ब।

अष्टमी क्रिया—२ १३८ ब।

अष्टमी व्रत—१ २०५ अ।

अष्टशती—१ २०५ अ, इतिहास १ ३४१ ब।

अष्टसहस्री—१ २०५ अ, अकलंक १ ३१ अ, १ ३१ अ। इतिहास १ ३४१ ब।

अष्टांक—१ २०५ अ।

अष्टांग—देहावयव १ ११ ब, निमित्तज्ञान १ २०५ अ, २ ६१२ ब, १ ४८१।

अष्टांगहृदयोद्योत—१ २०५ अ, आशाधर १ २८१ अ, इतिहास १ ३४४ ब।

अष्टादश—दोषराहित्य १ १३७ अ, १२४८ अ, एकट्ठी की सहनानी २ २१८ ब, श्रेणी ४ ७२ अ।

अष्टापद—१ २०५ ब।

अष्टाविंशति—कर्म प्रकृति ४ ८७ ब, ४ २७६ अ, मूलगुण ४ ४०४ अ।

अष्टाह्निक—क्रिया (कृतिकर्म) २ १३८ ब, पूजा १ २०५ अ, ३ ७५ ब, व्रत १ २०५ ब।

अष्टोत्तरसहस्र—अर्हन्त भगवान के लक्षण १ १३८ अ।

असंकुचित विकासत्वशक्ति—१ २०५ ब।

असंकुट—२ ३३३ ब।

असंक्षेपाद्धा—१ २०५ ब, १४६ ब, आबाधा १ २५० ब।

असख्यात—१.२०५ ब, अणु वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३ ५१६ अ, अनन्त १ ५७ ब, असख्यात १ २०७ अ, कालाणु २ ८३ ब, २ ८५ ब, गणित प्रयोगविधि २.२१८ अ, गणित सहनानी २ २१९ अ, जघन्य उत्कृष्ट १ २०५ ब, गुणवृद्धि ४ ६६ अ, ज्ञानावरण २ २७१ अ, द्वीप २ ४६२ ब, भागवृद्धि ४ ६६ अ, लोक सहनानी २.२१९ अ, वर्षायुष्क १.२५४ अ, १ २६१ अ ब।

असंख्यातासख्यात—१ २०७ अ।

असंख्येय—१.२०७ अ, सख्या प्रमाण १ २०५ ब, अद्धा १ २५९ अ, १ २६० ब।

असंख्येयाद्धा—आयुबध १.२५९ अ, ब।

असंख्येयासंख्येय—१ २०७ अ, उपमा प्रमाण २ २१८ अ।

असग—यदुवश १.३३६।

असज्ञी—१ २०७ अ, आयु १.२६४, एकेन्द्रिय जीव १.३०७ अ, जीव २.२३३ ब, जीवसमास २ ३४३, देवगति की आयु १.३७३ ब पचेन्द्रिय ४ १२२ ब, प्राण ३.१५२ अ, वचनयोग ३.३८० ब, सक्लेश विशुद्धि स्थानो का अल्पबहुत्व १.१६०, सज्ञी ४.१२२ अ, ४.१२३ अ, सहनानी २.२१९ अ।

असज्ञी (प्ररूपणा)—बध ३ १०८, बधस्थान ३.११३, उदय १.३८५, उदयस्थान १.३९३, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०२, त्रिसयोगी भग १.४०८ अ। सत् ४ २६२, संख्या ४.१०९, क्षेत्र २.२०७, स्पर्शन ४ ४९३, काल २ ११९, अन्तर १.२१, भाव ३.३२ अ, अल्पबहुत्व १.१५२।

असंचार—१ २०७ अ, सचार ४.१२४ ब।

असंदिग्ध—१.२०७ अ, वचन ४ ३४० अ।

असप्राप्तसृपाटिकासंहनन—प्रकृति ३ ८९, २ ५८३, स्थिति ४ ४६५, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७, बध-स्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४, संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९।

असबद्धप्रलाप—१.२०७ ब, वचन ३.४९७ ब।

असंभव—१.२०७ ब, लक्षणाभास ३.४०९ ब।

असंभ्रांत—१.२०७ ब, नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

असंमोह—१.२०७ ब।

असयत—गुणस्थान ३.२४६ ब, संक्रमण ४.८६ अ,

समुद्रात ४ ३४३ अ, साधु ४ ४०७ अ।

असयतसम्यग्दृष्टि—१ २०७ ब, आरोहण अवरोहण २ २४७, करण दशक २ ६, गर्हण २ २३८ ब, दर्शन प्रतिमा २ ४१८ अ, निर्जरा का अल्पबहुत्व १ १४१ ब, परिषह ३ ३४, वेदकसम्यक्त्व २ १८५ ब, विशेष दे० 'सम्यग्दृष्टि'।

असंयतसम्यग्दृष्टि (प्ररूपणा)—बध ३.९७, बधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९२, उदीरणा १ ४११अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८८, त्रिसयोगी भग १ ४०६ अ। सत् ४ १६२, सख्या ४ ९४, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ ९९, अन्तर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३।

असयम—१.२०७ ब, आहारक शरीर १ २९६ अ। प्ररूपणाये—बंध ३ १०६, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १.३९३ अ, उदीरणा १.४११, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ ब। सत् ४ २३८, संख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४ ४८९, काल २.११४, अन्तर १.१७, भाव ३.२२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५१।

असस्सार—१ २०७ ब, अनुप्रेक्षा १ ७८ अ, संसार ४.१४६ ब।

असग—१.२०७ ब। इतिहास १ ३३० ब, १.३४३ अ।

असतोपोषकर्म—१ २०८ अ, सावद्य ४ ४२१ अ।

असत्—१ २०७ ब, अनेकान्त १ १०९, उत्पाद १.३५७ ब, १ ३५८ ब, ४ १५९ ब, उत्पादादि १ ३५८, १.३६०, कार्य १ ३६२, द्रव्यगुणपर्याय १ ३६१ ब—३६२ ब।

असत्ता—सापेक्षधर्म १ १०९ अ।

असत्य—१ २०८ अ, अनुभय ३ ३८० ब, असज्ञी ३ ३८० ब, उपदेश १ ४२५ अ, कर्ता कर्म २ २२ अ, मनोयोग (अप्रमत्त) ३ ३८० अ, मनोयोग (ध्यानस्थ) ३ ३८० अ, वचनयोग १ २०९ अ, ३ ४९७ ब, ४ २७३ अ, स्वप्न ४ ५०४ अ, हिंसा १ २१७ अ, ४ ५३२ अ।

असत्ययोग (प्ररूपणा)—बध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.२१२, सख्या ४.१०२ क्षेत्र २.२०२, स्पर्शन ४.४८४, काल २.१०८, अन्तर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४९।

असत्यार्थ उपचरित—१.४२० अ।

असत्यासत्य—सत्य ४.२७१ अ।

असत्योपचार—१.२०९ अ।

असत्व—विभाव ३ ५६२ अ, सापेक्षधर्म १.१०९।

असदृश उत्पाद—३ ३२ अ।

असद्भावस्थापना—१ २०९, अन्तर १ ३ ब, उपशम १.४३७ अ, कर्म २ २६ अ, काल २.८१ ब, निक्षेप २ ५१७ ब।

असद्भूत—१.२०९ अ, उपचार १.४१९ अ-ब, व्यवहार १ ४२३ अ, नय २ ५६१ अ।

असद्रूप—अनेकान्त १ १०९ अ।

असद्वेद्य—वेदनीय ३ ५९२ अ।

असन—अभिनन्दन नाथ २ ३८३।

असभ्य—४.३४० अ।

असमपर्यकासन तप—कायक्लेश २.४७ ब।

असमय फलोत्पत्ति—अर्हन्तातिशय १.१३७ ब।

असमवायी—१.२०९ अ, कारण ४.३३५ ब।

असमान जातीय द्रव्य पर्याय—३.४६ अ।

असमाधि (दोष)—सल्लेखना ४.३९१ ब।

असमीक्ष्याधिकरण—१.२०९ अ, अधिकरण १ ५० अ।

असम्यक्—उदाहरण १.२०९ अ।

असर्वगतत्व—१ २०९ अ, सर्वगतत्व ४ ३७९ ब, द्रव्य २ ४५७ अ, नय २ ५२३ अ, स्कन्ध ४.४४७ अ।

असवाल—इतिहास १ ३३३ अ, १.३४६ अ।

असहाय—केवलज्ञान २ १५१ अ।

असही—१.२०९ अ, साधु ४.४०४ ब।

असाता—दु ख २ ४३४ ब।

असाता वेदनीय प्रकृति—१.२०९ अ, केवली २ १६० ब, द्विस्थान बंधक ३.५६९ ब, बधयोग्य परिणाम ३ ५६८ ब, वेदनीय ३ ५९२ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ५९१, स्थिति ४.४६०, ४ ४६९, अनुभाग १ ९५, ४ ५२७, प्रदेश ३ १३६। बध ३.९७, बंध वेदना अल्पबहुत्व १ १७६, बधस्थान ३.१०८, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८७, त्रिसंयोगी भग १ ३५९। सक्रमण ४ ८५ अ। अल्पबहुत्व १.१६८।

असाधारण—१.२०९ ब, गुण २.२४० ब, २.२४३ ब, पारिणामिक ३ ५५ अ, साधारण ४ ४०२ अ, हेतु ४.५३९ अ, हेत्वाभास ४.४०२ अ।

असाम्प्रायादिक—बन्धक ३.१७९ अ।

असाम्यता—१.२०९ ब।

असारगल्ल—३.३९१ अ।

असावद्य कर्मार्य—आर्य १.२७५ अ।

असिकर्म—१.२०९ ब।

असिकर्मार्य—आर्य १.२७५ अ।
असिक्थ—१ २०९ ब।
असितपर्वत—१ २०९ ब, विद्याधर नगरी २ ५४५ अ।
असिद्ध—१ २०९ ब, पक्षाभास १.२०९ ब, हेत्वाभास १ २०९ ब।
असिपत्र—१ २१० ब, वन—निर्देश २ ५७२ ब, २ ५७३ अ, २ ५७७ अ। वैदिकाभिमत नरक ३ ४३३।
असुर—१ २१० ब, नरकों मे दु खदाता २.५७३ अ।
असुरकुमार—१ २१० ब, भावन देव—निर्देश ३.२०८ अ, इन्द्र ३ २०८ अ, शक्तिचिह्न आदि ३ २०८ ब, अवस्थान ३ २०९ ब, ३ ४७१, ३ ६१२-६१४। अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६५। भावन लोक ३ २१० ब।
असुरकुमार देव (प्ररूपणा)—बध ३ १०२, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदय स्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१८८, संख्या ४.९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।
असुर-धूपन—३ २७५ ब।
असुर-वनीपाल—१ २१० ब।
असूत्र—१ २१० ब, तर्कविरुद्ध १ २४६ ब, सूत्र १ २४९ अ।
असूनृत वचन—असत्य १ २०९ अ।
असेवक—मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, सम्यग्दृष्टि ३ ३९९ ब।
अस्ति—भग ४ ३१८ ब।
अस्तिकाय—१ २११ अ।
अस्तित्व—१ २१२ ब, अनेकान्त १ १०९ अ, नय २ ५२२ ब, २ ५२४ अ, सापेक्षधर्म १ १०९ अ, स्याद्वाद ४ ५२० ब।
अस्तित्व अवक्तव्य नय—२ ५२२ ब।
अस्तित्व नास्तित्व नय—२.५२२ ब, १ २१३ अ।
अस्तिनास्ति प्रवाद—१.२१३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६८ ब।
अस्तिनास्ति भंग—१ २१३ अ, सप्तभंगी ४ ३२१ अ।
अस्तेय—१.२१३ अ, अहिसा १.२१७ अ।
अस्थि—अनुभाग १ ९१ ब-९३ ब-९४ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ, मान २ ३८ अ।
अस्थित—२.३३९ अ।
अस्थिति—४ ४५६ अ।
अस्थिर—१.२१५ अ, स्थिर ४ ४७० ब।
अस्थिर नाम कर्मप्रकृति—३ ९६ अ, प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६७, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३.९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २८७, त्रिसंयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
अस्थूण—विनयवादी १ ४६५ अ।
अस्नात—४ ४७१ ब।
अस्नान—१ २१५ अ, कायक्लेश २ ४७ ब, मूलगुण ४ ४७१ अ।
अस्पृश्य—शूद्र ३ ५२५ ब।
अस्पृहा—उपेक्षा १ ४४४ ब।
अस्वभाव नय—२ ५२३ ब।
अहंकार—१ २१५ अ, कर्ताकर्म २ २२-२३, मार्दव ३ २९९ अ।
अहंक्रिया—१ २१५ ब, अध्यवसान १ ५२ ब।
अहंप्रत्यय—२.३३६ अ।
अहमिंद्र—१.२१५ ब, इन्द्र १ २९९ अ। कल्पातीत देव—अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १.२६८। प्ररूपणा—बंध ३ १०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान ३ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०३ ब। सत् ४.१८८, सख्या ४.९७, क्षेत्र २ १९१, स्पर्शन ४ ४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२०, अल्पबहुत्व १ १४५।
अहह—संख्या प्रमाण २.२१४ ब।
अहिंसक—अप्रमत्त १ २१६ अ, हिंसक १.२१७ अ, हिंसा १ ११६ अ।
अहिंसा—१.२१५ ब, हिसा १ २१६ अ, ब।
अहिंसाव्रत—अहिसा १ २१५ ब, १ २१६ ब, चारित्रशुद्धि २ २९४ ब, समिति ४ ३४२ ब।
अहित—१ २१७ ब, उपदेश १ ४२६ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब।
अहींद्र—१ २१० ब।
अहींद्रवर (द्वीप सागर)—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४, अंकन ३ ४४३।
अहेतुक—रागादि ३ ५६१ अ, सत् ४ १५९ ब, स्वभाव ४.५०७ अ।
अहेतुमत्—१.२१८ अ।

अहेतुवाद—३ ८ ब।
अहेतुसमा जाति—१ २१८ अ।
अहोरात्र—१ २१८ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ, ब।

आ

आंचलिक गच्छ—४ ७७ ब।
आँत—१ २१८ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।
आँतरा—१ २१८ अ।
आंदोलन करण—१ २१८ अ, अश्वकर्ण करण १ २०४ अ।
आंध्र—१ २१८ अ, मनुष्य लोक ३ २७५ ब।
आंध्र वंश—१ २१८ अ।
आंवली (आहार)—१ २१८ अ।
आसिक—१ २१८ ब, मनुष्य लोक ३ २७५ अ।
आ—१ २१८ अ।
आउ—कालप्रमाण २ २१६ अ।
आउ अंग—कालप्रमाण २ २१६ अ।
आकपित—१ २१८ अ, आलोचना १ २७७ ब।
आकर—१ २१८ अ।
आकर्षण—ध्यान २ ४६७ अ, मन्त्र ३ २४५ ब।
आकस्मिक—भय १ २१८ ब, ३.२०६ अ, भीति ३ २०६ ब।
आकांक्षा—अनुराग ३ ४८४ ब, अभिलाषा १ २१८ ब। १ १३० ब, उपदेश १ ४२४ ब, ममेद बुद्धि ३ ५३२ ब, सम्यग्दृष्टि ३ ४०० अ।
आकार—१ २१८ ब, इन्द्रिय १ ३०५ ब, औदारिक शरीर १ ४७१ ब, गुण २ २४२ ब, परमाणु ३ १७ ब, विग्रह गति १ २४७ अ।
आकाश—१ २१९ ब, अनुभाग १ ८८ अ, उत्पादादि १.३६२ ब, उपकार २ ६३ ब, गति ३ ५७३ ब, प्रदेश श्रेणी ४ ७२ ब, भूत १ २२४ ब, ३ २३४ अ, मण्डल १ २२० ब, स्वभाव ४ ५०६ ब, अल्पबहुत्व १.१४३ अ।
आकाशगता चूलिका—१.२२४ ब, श्रुतज्ञान ४ ६९ अ।
आकाश गमन—अर्हन्तातिशय १ १३७ ब।
आकाशगामित्व ऋद्धि—१.२२४ ब, ऋद्धि १.४४७, ४५१ ब, ४५२ अ।
आकाशचारण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५२ अ।
आकाशनैर्मल्य—अर्हन्तातिशय १.१३७ ब।
आकाशप्रदेशराशि—२ २१९ अ, श्रेणी ४.७२ ब।
आकाशोपपन्न देव—निर्देश २ ४४५ ब, आयु १ २६४ ब।
आकिञ्चन्य—धर्म १ २२४ ब, परिग्रह ३ २९ ब, शौच ४ ४३ अ।
आकृति—१ २२५ अ, गुण २ २४० अ।
आक्रन्दन—१ २२५ अ।
आक्रोश—१ २२५ अ, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ।
आक्षेपिणीकथा—१ २२५ अ, उपदेश १.४२५ अ, १ ४२६ अ, कथा २ २ ब।
आखेट—१ २२५ अ।
आगत—आगम प्रामाण्य १ २३५ ब।
आगम—१.२२५ ब, अनुयोग चतुष्टय १ ९९ ब, अभ्यास ४ ५२३ ब, अर्वाचीन पुरुष १.२३६ ब, अरपता १.२२८ ब, नय १ २३९ अ, निक्षेप २ ६०५ ब, पद्धति १ २३९ ब, ३ ८ ब, प्रामाण्य १.८२ ब, १.२३४ ब, भावना ३ ८ ब, सकलन १.२९९ ब, स्वाध्याय ४ ५२४ ब।
आगमज्ञ—श्रुतकेवली ४.५५ ब, ४.५७ अ।
आगमज्ञान—२.२६८ ब, अकिंचित्कर २ २६५, २.२६७ ब, आत्मज्ञान २.२६५, २ २६७ ब, केवलज्ञान २.१५० ब, सम्यग्ज्ञान २ २६८ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५४ ब, ४ ३५६ अ।
आगमचक्षु—१ ७८ अ, श्रुतज्ञान ४ ६३ अ, सासादन ४ ५२४ ब।
आगमद्रव्यनिक्षेप—अन्तर १.३ ब, अनन्त १ ५५ ब, उपशम १ ४३७ अ, काल २ ८१ ब, निक्षेप २.५९९ ब।
आगमन—१ २३९ ब।
आगम परपरा—इतिहास १ ३४०।
आगमप्रमाण—१.२३४ ब, अर्थ-शब्द सम्बन्ध १ २३३ अ, आचार्य वचन १.२३७ अ, आप्त वचन १ २३४ ब, छद्मस्थ ज्ञान १ २३७ ब, जिन वचन १.२३८ अ, तर्कसगत १.२३६ अ, परम्परा से आगत १.२३५ ब, पूर्वापर अविरुद्ध १ २३६ अ, पौरुषेय १.२३८ अ, प्रत्यक्ष ज्ञानी १ २३५ ब, वचन-वक्ता सम्बन्ध १.२३४ ब, वाच्य-वाचक सम्बन्ध १.२३३ अ, वीतराग वचन १ २३५ अ, शब्द-अर्थ सम्बन्ध १.२३४ अ, सूत्र वचन १ २३२ ब, सूत्र अविरुद्ध वचन १ २३८ अ, सूत्रसम वचन १ २३५ ब।
आगमबाधित—१ २३९ ब, बाधित ३.१९२ ब।
आगमभावनिक्षेप—अन्तर १ ३ ब, अनन्त १.५६ अ, उपशम १ ४३७ अ, कर्म २ २६ अ, जीव २ ६०५ ब,

बन्धक ३.१७९ अ, मंगल २.६०५ ब।
आगमाभास—१ २३९ ब, आगम १.२२८ अ।
आगमार्थ—१ २३०, आगम १.२३० ब।
आगमिक गच्छ—४.७७ ब।
आग्नेय—१ २३९ ब।
आग्नेयी धारणा—१ २३९ ब, अग्नि १ ३६ अ।
आचण्ण (कवि)—इतिहास १ ३३२ अ।
आचरण—वर्ण-व्यवस्था ३.५२४ ब।
आचरित—१.२३९ ब, वसतिका दोष ३.५२९ अ।
आचाम्ल (आहार)—१ २३९ ब, कायक्लेश २ ४७ अ, सल्लेखना ४ ३९२ ब-३९३ ब।
आचाम्लवर्धन—१.२३९ ब, सौवीर भुक्ति ४ ४४५ ब।
आचार—१ २४० अ, वर्णव्यवस्था ३ ५२४ ब, विनय ३ ५५० ब। शास्त्र ४ ३९४ ब।
आचारवर्द्धन व्रत—१ २४१ अ।
आचारसार—१ २४९ अ, इतिहास १ ३३१ ब, १.३४४ अ।
आचारांग—१ २४१ अ, श्रुतज्ञान ४ ६८ अ।
आचारांगधर—मूलसंघ १.३९६, १ परि०/२ २।
आचार्य—१.२४१ अ, आलोचना १ २७८ अ, उपकार १ ४९६ अ, उपाध्याय १ ४४४ अ, ओम् १ ४६९ ब, कृतिकर्म २ १३७-१३८ १३९ ब, क्षपक ४ ३९१ अ, गुरु २.२५१ ब, २५२ ब-२५३ ब-चैत्य (प्रतिमा) २ ३०१ अ, देवत्व २ ४४४ ब, ध्येय २.५०१ अ, निष्पक्षता १.२३६ अ, पदत्याग २ १३८ ब, ४ ३९१ अ, पापभीरु १.२३२ अ, पूजा ३.७७ अ, भक्ति ३ २०९ ब, वचन प्रामाण्य १.२३७ ब, साधु ४.४१० अ, स्वर्गवास ४.५२६ अ।
आचार्यपद-प्रतिष्ठापन-क्रिया—२.१३८ ब।
आचार्य परम्परा—इतिहास १ ३२८-३३४।
आचार्य भक्ति—इतिहास १.३४० ब।
आचार्य वन्दना—कृतिकर्म २.१३७ ब-१३८ ब-१३९ ब।
आचिन्न (दोष)—आहार १ २९० ब।
आचिन्न अभिघट्ट (दोष)—आहार १.२९० ब, उद्दिष्ट १.४९३ अ।
आचेलक्य—१.२४३ अ. अचेलकत्व १ ४० अ।
आच्छेद्य (दोष)—१ २४३ अ, आहार १.२९१ अ, उद्दिष्ट १.४१३ अ।
आजीव (दोष)—१.२४३ अ, आहार १ २९१ अ वसतिका ३.५२९ ब।
आजीवक—१.२४३ अ, एकात १.४६४ ब।
आजीविका—१ २४३ अ, साधु के लिए निषेध ३.२४५ ब।
आज्ञा—१.२३९ ब, ध्येय २.५०० अ, प्रमाण ४.४६ अ, रुचि ४.४६ अ, श्रद्धान ४.४४ ब, सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।
आज्ञा कनिष्ठता—१.२९६ अ।
आज्ञाचक्र—पदस्थध्यान (ललाट) ३.६ ब।
आज्ञापनी भाषा—१.२३९ ब, भाषा ३,२२७ अ।
आज्ञाविचय—१.२३९ ब, धर्मध्यान २.४७९ अ।
आज्ञाव्यापादिकी क्रिया—१ २३९ ब, क्रिया २ १७४ ब।
आज्ञा सम्यक्त्व—१ २३९ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब।
आज्ञा सम्यक्त्वार्य—१ २७५ अ।
आठवीं पृथिवी—१ २०५, भूमि ३ २३४, मोक्ष ३ ३२३ ब, ३.३२४ अ, समुद्घात ४.४२५ अ।
आढक—१ २४३ अ, तौल का प्रमाण १.४७२ अ, २ २१५।
आतप—१.२४३ अ, एकेन्द्रिय १ ३९३।
आतप (नामकर्म प्रकृति)—प्ररूपणाएँ—प्रकृति ३ ८९, २.५८३ अ, स्थिति ४.४६५, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९५ ब, ३.९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १.३७३, १.३७५, उदयस्थान १ ३९०, १.३९३, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व, ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१७१ ब।
आतपन—१.२४३ ब, नरक पटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।
आतापन योग—१.२४३ ब, अतिचार २.४७ ब, कायक्लेश २ ४६ ब, २.४७ अ-ब, २.४८ अ।
आत्म—१.२४३ ब।
आत्मख्याति—अमृतचन्द्र १.१३३ अ, इतिहास १.३४२ अ।
आत्मज्ञ—श्रुतकेवली ४ ५५ ब, ४.५७ अ।
आत्मज्ञान—आगमज्ञान २.२६५ ब, २.२६७ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५४ ब, ४.३५६ अ-ब।
आत्मघात—दे० आत्महत्या।
आत्मतत्त्व—ज्ञान २.६२ ब, श्रद्धान २.२६२ ब।
आत्मदर्शन—मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, समाधि १ ८३ ब।
आत्मद्रव्य—१ २४३ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, जीव २.३३२ अ।
आत्मध्यान—अनुभव १.८४-८५, प्रतीति ३.३३६ अ, प्रत्यक्ष १ ८१ ब-८६, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५, शुद्धोपयोग १.४३१ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३५१ ब। संविति ३.३३६ अ।
आत्मनिन्दन—उपयोग १.४३४, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ ब।
आत्मनिष्ठ—३.३०५ ब, ३.३३६ ब।
आत्मपरिणाम—(दे० जीवपरिणाम)।

आत्मप्रतीति—३ ३३६ अ।
आत्मप्रत्यक्ष—१ ८१ ब-८६।
आत्मप्रदेश—परिस्पन्दन ३.३७५ अ, मन ३ २७१ अ, शरीर मे बाहर निर्गमन ४.३४२ ब।
आत्मप्रभावना—३.१३९ ब।
आत्मप्रवाद—१ २४३ ब, श्रुतज्ञान ४ ६९ अ।
आत्मप्रशंसा—२.५८७ ब।
आत्मभूत—१ २४३ ब, कारण २ ५४ अ, लक्षण ३ ४०९ ब।
आत्ममुख (हेत्वाभास)—१.२४३ ब।
आत्मयज्ञ—१.३५ ब, ३.३६९ ब।
आत्मरक्ष—१ २४३ ब। ज्योतिषी देव—निर्देश २ ३४६ अ। भवनवासी देव—निर्देश ३ २०९ अ, जम्बू शाल्मली वृक्ष-स्थल मे ३.४५८-४५९, पद्म आदि ह्रदो मे ३ ४५३-४५४, आयु १ २६५, व्यन्तर—निर्देश ३.६१३ ब, आयु १.२६४, वैमानिक—निर्देश ४.५१२, सुमेरु पर्वत की पुष्करिणियो मे ३ ४५०-४५१, आयु १.२६९। देवी—गणना ४ ५१३, आयु १ २७०।
आत्मरक्षित—३ ४९३ ब।
आत्मरूप—सप्तभगी ४.३२४ ब, ४ ३२५ ब।
आत्मवश—४ ५२२ अ।
आत्मवाद—१ २४३ ब, एकान्त १.४६५ अ।
आत्मव्यवहार—१ २४४ अ, मिथ्यादृष्टि ३.३०४ अ।
आत्मश्रद्धान—मिथ्यादृष्टि ३.३०५ अ।
आत्मसबोधन—इतिहास १ ३४६ अ।
आत्मसंविति—३.३३६ अ।
आत्मसंस्कार—१.२४४ अ, उपकार १.४१५ ब, काल २ ८० ब, सस्कार ४.१४९ ब।
आत्मसमाधि—१ ८३ ब।
आत्मसमुत्थ (दोष)—भिक्षा ३.२३३ अ।
आत्मसात्—२ २७४ अ।
अत्मसुख—अनुभव १.८१-८५ अ।
आत्मस्वभाव—स्थैर्य ४.४१५ ब।
आत्मस्वरूप—अनुभव ४ ४३४ अ, प्राप्ति ३.३३६ अ, लीनता ४ ४१५ ब।
आत्महत्या—१ २४४ अ, आयु-अपवर्तन १.११७ ब, १ २६१, दोष (सल्लेखना) ४ ३८२ ब, सल्लेखना ४.३८२ ब, ४.३८३ ब।
आत्महनन—कषाय २.३५ अ।
आत्महित—४.५३७ अ।
आत्मांगुल—१.२४४ अ, उपमा प्रमाण २ २१८ अ, क्षेत्र प्रमाण २.२१५ अ।
आत्मांजन—१ २४४ अ। वक्षार गिरि—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५-अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७५। इस पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३.४४४।
आत्मा—१ २४४ अ, अग्र १ ३९ अ, आस्रव २ ४६१ अ, ईश्वर ३.२० ब, कर्ता १.४३४ ब, गुरु २ २५२ अ, ज्ञान २.२६५, २ २६७ अ-ब, जीव २.३३२ अ, २.३३३ अ, २ ३३५ अ, तल्लीनता ३ ३३६ अ, ४.४१५ अ, द्रव्यास्रव २.४६१ अ, ध्यान ३ ५७ ब, ध्येय २.५०१ ब, नैयायिक दर्शन २ ६३३ ब, पच परमेष्ठी ३.२३ अ, परमात्मा ३ २० अ, प्रभु ३ १४० अ, प्रामाण्य ३ १४२ अ, श्रमण २ ८६ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।
आत्माधीनता—२४५ अ, कर्म २ २६ अ, कृति-कर्म २ १३६ ब, वदना ३ ४९५ ब।
आत्मानुभव—१ २४५ अ, अनुभव १ ८६ अ, १.८१ ब-८७ अ, अनुभूति १.८१-८७ अ, उपलब्धि १.४३५ अ, ज्ञान १.८४ ब, ४.३५२ ब, तत्त्वश्रद्धान १.८२ ब, प्रतीति ३ ३३६ अ, प्रत्यक्ष १.८१-८७ अ, बोधि १ ८७ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ अ, शुद्धोपयोग १ ४३१ अ, श्रद्धान १ ८२ ब, सवित्ति ३.३३६ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३५३ अ-ब, सुख ४ ४३१ ब।
आत्मानुशासन—१ २४५ अ, इतिहास १ ३४१-३४२ अ।
आत्माश्रय (दोष)—१ २४५ अ।
आत्मिक सुख—४.४३१ ब, ४.४३३ ब।
आत्मीय स्वरूप ४ ३२४ अ।
आत्मोत्पन्न—४.४२९ ब।
आत्मोपलब्धि—१.४३५ अ।
आत्रेय—१ २४५ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ, वेदान्त ३.५९५ ब।
आदर—१ २४५ अ, विनय ३.५५२ ब, जम्बूवृक्ष का देव—निर्देश ३ ४५८ अ, ३.६१३, ३.६१४।
आदाननिक्षेपण—१ २४५ अ, अहिंसा १ २१६ अ, समिति ४ ३४१ अ।
आदानपद—उपक्रम १.४१६ ब, पद ३ ५ अ।
आदि—१.२४५ अ, परमाणु ३.१६ ब, श्रेणी गणित २.२२९ ब, २.२३० ब।
आदितीर्थ—कृतिकर्म २ १३४ ब, प्रतिक्रमण ३.११७ अ।
आदित्य—१.२४५ अ, लौकान्तिक देव ३.४९३ ब, विद्या ३ ५४४ अ। अनुदिश स्वर्ग का इन्द्रक—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४.५१५-५१७।

आदित्यगति—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
आदित्यनगर—१.२४५ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।
आदित्यप्रभ—१ २४५ अ।
आदिधन—१.२४५ अ, श्रेणी गणित २.२२९ ब।
आदिनाथ—१ २४५ ब, तीर्थंकर २ ३७८, केशलौंच २ १७० अ, ऋषभनाथ १ ४५७ ब।
आदिनाथ जयन्ती व्रत—१.२४५ ब।
आदिनाथ निर्वाणोत्सव व्रत—१ २४५ ब।
आदिनाथ शासन जयन्ती व्रत—१.२४५ ब।
आदिपुराण—१ २४५ ब। इतिहास—प्र० १.३४३ अ, द्वि० १.३४५ ब, तृ० १ ३३४ अ।
आदिपुरुष—१.२४५ ब, ऋषभनाथ १ ४५७ ब।
आदिब्रह्मा—१.२४५ ब, ऋषभनाथ १ ४५७ ब।
आदिमान—३.३१ ब।
आदिलिंगव्यभिचार—शब्दनय २ ५३७ ब।
आदेयनाम कर्मप्रकृति—१.२४५ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३ अ, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३.९६ अ, ३ ९७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २८७, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
आदेश—१.२४५ ब, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, उद्दिष्ट १.४१३ अ, उपदेश १.४२४ ब, साधु ४ ४०६ ब।
आदेशकषाय—कषाय २.३५ ब, २.३६ अ, ब, स्थापना कषाय २ ३७ ब।
आदेशप्ररूपणा—अनुयोगद्वार १.१०३ ब। जीव सामान्य—सत् ४.१६५, संख्या ४.९५, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४.४७९, काल २.१०१, अन्तर १ ८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४, भागाभाग ४ ११०। शरीर स्वामित्व—सत् ४ ७, क्षेत्र २.२०८, स्पर्शन ४ ४९४, भाव ३.२२३, अल्पबहुत्व १.१५९। संघातन परिशातन कृति—सत् ४.२६९, संख्या ४.११६, क्षेत्र २.३०८, स्पर्शन ४.४९४, भाव ३ २२३, षट् कर्म स्वामित्व ४.२६९, बंधप्रत्यय स्वामित्व ३ १२८ अ।
आदेशप्ररूपणा (बंध-उदय सत्त्व)—बंध ३ १००, बंधस्थान १.४३८, ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३९२ ब, सत्त्व ४.२८१, ४.२८५, सत्त्वस्थान ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। अनुभाग अल्पबहुत्व १.१६७।
आदेशप्ररूपणा (स्वामित्व सन्निकर्ष)—प्रकृति-स्थिति-अनुभाग-प्रदेश ३.११४-४.३१०, ४.५२७-५२८-५२९। बन्ध, उदय, सत्त्व तथा इनके स्थान—१ ८ ३ ११४, ४.३१०, ४.५२७-५२८-५२९, संख्या ४.११७, क्षेत्र २ २०८, स्पर्शन ४.४९४, काल २ १२१-१२२-१२३, ४.५२७, अन्तर १.२३, भाव ३ २२३, अल्पबहुत्व १ ७५, ४ ४६९, ४ ५२७, भागाभाग ३ २१५ ४ ११७, ४ ५२७।
आद्धा—१.२४६ अ।
आद्यन्तमरण—१ २४६ अ, मरण ३ २८१ ब।
आधाकम्म (दोष)—आहार १.२८७ ब, २९० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ।
आधान क्रिया—४.१५१ अ।
आधार—१ २४६ अ, आकाश १.२२१ अ।
आधार आधेयसम्बन्ध—उपचार १.४२० ब, कारक २.५० अ, सम्बन्ध ४ १२६ अ।
आधारवत्व—१.२४६ अ।
आधिकारिणी क्रिया—२.१७४ ब।
आधी मागधी भाषा—२.४३२ अ।
आधुनिक भूगोल—निर्देश ३.४३५ ब।
आधेय-आधार सम्बन्ध—उपचार १.४२० ब, कारक २.५० अ, सम्बन्ध ४.१२६ अ।
आध्यात्मिक—धर्मध्यान २ ४७९ अ, १.४८१ अ, नास्तिक्य २.५८५ ब, शुक्लध्यान ४ ३२ ब, सुख ४.४३१ ब।
आध्यान—१ २४६ अ, अपध्यान १.११८ ब, ध्यान २ ४९६ अ।
आनंद—१.२४६ अ, अनुत्तरोपपादक दशांग १.५०, आत्मानुभव १.८१ ब-८५, पार्श्वनाथ ३ ३७८, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ, सुख ४.३३१ ब-४३२ ब।
आनंद (कूट)—गन्धमादन गजदन्त—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४, ३.४५७।
आनंद पाहुड—३ १५६ ब।
आनंदपुर—४ १६ ब।
आनंदबोध—३ ५९५ ब।
आनंदवती—४.१८ ब।
आनंदवर्धन—१.२४६ ब।
आनंदा—१.२४ ब, नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नाम ३.४७५ ब, विस्तार ३.४९१ अंकन ३ ४६५। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३.४६८।
आनंदिता—१.२४६ ब। व्यन्तर वल्लभिका ३ ६११ ब, व्यन्तर गणिका ३.६११ ब, नन्दन वन की दिक्कुमारी ३.४७३।
आनंदिनी—४.१५ ब।

आनत (देव)—देव—निर्देश ४.५१० ब, अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १.२६८, आयुबन्ध के योग्य रिणाम १ २५८ अ। इन्द्र—निर्देश ४ ५१० ब, दक्षिणेन्द्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, चिन्ह आदि ४.५११ ब, अवस्थान ४.५२० ब, विमान नगर व भवन ४ ५२०-५२१।

आनत (देवप्ररूपणा)—बध ३.१०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०१। सत् ४.१९२, सख्या ४ ९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०६, भाव ३.२२७ ब, अल्पबहुत्व १.१४५ अ।

आनत (स्वर्ग)—स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ ब, पटल इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४.५१८, ४.५२०, दक्षिण विभाग ४.५२० ब, अकन ४.५१५। इसी स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अकन ४ ५१५।

आनपान—१ २४६ ब, उच्छ्वास १ ३५२ ब, काल का प्रमाण २ २१६ अ, प्राण ३ १५३ अ।

आनपान पर्याप्ति—३ ४१ अ, काल २ ८१ अ।

आनयन—१.२४६ ब।

आनर्थक्य—१ २४६ ब।

आनुपूर्वी—१.२४६ ब, उपक्रम १ ४१६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६७ ब।

आनुपूर्वी नामकर्म प्रकृति—१ २४७ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३ अ, स्थिति ४ ४६५, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ९७, बधस्थान ३ ११०, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७२ ब, १ ३७३ ब, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्व स्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १.४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८, १ १७६।

आपात (अतिचार)—१ २४७ ब, अतिचार १.४३ ब।

आपृच्छना—१.२४७ ब। समाचार ४ ३३६ ब-३३७ अ।

आपृच्छा—समाचार ४.३३६ ब-३३७ अ।

आपेक्षिक—गुण १ २४७ ब, सूक्ष्मत्व ४.४३८ ब, ४ ४३९ अ, स्वभाव ४ ५०६।

आप्त—१.२४७ ब, आगम १ २३५ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ।

आप्तपरीक्षा—१.२४८ अ, इतिहास १.३४१ ब।

आप्तमीमांसा—१.२४८ अ, इतिहास १ ३४० ब।

आप्तमीमांसा टीका—इतिहास १.३४१ ब।

आप्तमीमांसा वचनिका—इतिहास १ ३४८ अ।

आप्तमीमांसा विवृत्ति—इतिहास १ ३२९ ब।

आप्तवचन—प्रामाण्य १.२३५ ब। सूत्र १.२३९ अ।

आप्ताज्ञा—आगम १ २२७ ब।

आबाधा—१ २४८ अ। मूलोत्तर प्रकृति १ २४९ अ, ४.४६०, अल्पबहुत्व १ १७६। काण्डक १ २४८ ब, काल १ २४८ अ, स्थान १.२४८ ब।

आबिद्धकरण—देशीयगण १ ३२५।

आभिनिबोधिक ज्ञान—१ १३० अ, उपक्रम १ ४१६ ब।

आभियोग्य (देव)—निर्देश २ ४४५ ब, मध्यलोक मे ३ ६१३ अ, आयुबध योग्य परिणाम १.२५८ अ।

आभीर—३.२७५ अ।

आभ्यंतर—उपाधि १ ४२७ अ, ३ ६२३ ब, करण (निमित्त) २.६११ ब, कषाय २ ३५ ब, कारण २.५४ अ, २.६२ अ-ब, २.७२ ब, ग्रन्थ (परिग्रह) ३.२८ अ, तप २ ३५९ अ, २ ३६१, तपःकर्म २ २६ अ, त्याग ३.२९ ब, धर्मध्यान २ ४८१ अ, निमित्त ३ ६०२ ब, नेत्र (उपयोग) २ ४६८ ब, परिग्रह ३.२८ अ, १.४२७ अ, ३.६२३ ब, पारिषद देव ३ ५६ अ, प्रत्यय ३ १२५ ब, मल ३ २८८ अ, व्यास २ २२२ ब, व्युत्सर्ग ३ ६२३ ब, सल्लेखना ४ ३८२ अ, ४.३८३ अ, सूची २ २३३ ब, हेतु (कारण) २ ५४ अ, २.६२ अ-ब, २.७२ ब।

आमंत्रणी—१.२५० ब, भाषा ३ २२७ अ।

आमर्षौषध—१ २५० ब, ऋद्धि १.४४७, १.४५५ अ।

आमाशय—औदारिक शरीर १ ४७२ अ।

आमुंडा—१ २५० ब।

आम्नाय—१.२५१ अ।

आम्र—अरनाथ २.३८३।

आम्रवन—शान्तिनाथ २.३८३, भावन लोक ३.२१० ब, व्यन्तर लोक ३.६१२ ब, नन्दीश्वर द्वीप ३ ४६६ अ।

आय—१ २५१ अ, गुणस्थान ३ १९७ ब, वर्गीकरण २.४२८ अ, सामायिक ४.४१४ ब, ४.४१५ अ।

आय-ज्ञान—इतिहास १.३४२ ब।

आयत—१ २५१ अ। विशेष ३.४७ अ, सामान्य २.१७२ ब, २ ४५४ अ।

आयतन—१.२५१ अ।

आयापाय दर्शनोद्योत—आचार्य १.२४२ अ, आयोपाय १ २७० अ।

आयाम—१.२५१ ब, उदय १.३७१ अ, गुण हानि २.२३१ ब, काण्डक २ ४१ ब, निर्वर्गण २.६२६ अ।

आयु—१.२५१ ब, अकालमृत्यु (मरण) ३.२८५ अ,

अपकर्षकाल का अल्पबहुत्व १ १७३ अ, करण दशक २ ६ अ, मरण ३ २८२ अ, ब ।

आयुकर्म प्रकृति—अपकर्षकाल का अल्पबहुत्व, १.१७३ अ, आबाधा १.२४९ अ, १ २५० अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, १ २५३, स्थिति ४ ४६२, स्थितिघात १.११७ अ, अनुभाग १ ९५, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १६६ ब, प्रदेश ३.१३६, बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ १०८, उदय १.३७५, उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदय की विशेषता १ ३७२ ब, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसयोगी भंग १ ४०१ । संक्रमण ४.८५ अ, ४.८६ अ, अल्पबहुत्व १ १६९ ।

आयुध—नरक २ ५७४ अ ।

आयुधशाला—चक्रवर्ती ४ १५ ब ।

आयुष्य—१ २५३ अ ।

आयोधन—हरिवंश १.३३९ ब ।

आयोध्य – ४ १३ अ ।

आयोपाय—१ २७० अ ।

आरंभ—१ २७० ब, उपदेश १ ६३ अ, अधःकर्म १.४८ अ, कर्म २.२६ अ, ब । क्रिया १ २७० ब, त्याग १.२७० ब, दोष २.२६ ब ।

आरंभकोपदेश—अनर्थदण्ड १.६३ अ ।

आरंभत्याग प्रतिमा—१.२७० ब ।

आर—१ २७१ अ । नरक-पटल—निर्देश २.५७१ ब, विस्तार २ ५७१ ब, अंकन ३ ४४१, नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३ ।

आरट्ट—१ २७१ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

आरण (देव)—१ २७१ अ, देव—निर्देश ४ ५१० ब, अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १.२६८, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५८ ब । इन्द्र – निर्देश ४ ५१० ब, दक्षिणेन्द्र ४ ५११ अ, परिवार ४ ५१२-५१३, चिह्न आदि ४ ५११ ब, अवस्थान ४ ५२० ब, विमान नगर व भवन ४ ५२०-५२१ ।

आरण (देव प्ररूपणा)—बंध ३ १०२, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३६८, उदयस्थान१ ३९२ ब । उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब । सत् ४ १९२, संख्या ४.९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्प-बहुत्व १ १४५ अ ।

आरण (स्वर्ग)—स्वर्ग—निर्देश ४ ५१४ ब, पटल इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४.५१८, ४ ५२०, दक्षिण विभाग ४ ५२० ब, अंकन ४ ४१५ । इसी स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५८८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४ ५१५ ।

आरा—नरक पटल – निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ । नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३ ।

आरातीय—१.२७१ अ, वक्ता ३ ४९६ ब ।

आराधक—१ २७१ ब ।

आराधना—१ २७१ अ, भक्ति ३.१९७ ब, सल्लेखना ४.३८५ ब, ३८६ अ, ३८९ अ, ३९४ अ ।

आराधना—इतिहास १.३४३ अ, १.३४६ अ ।

आराधना कथाकोष—१ ३७१ ब, कथाकोष २ ३ ब, इतिहास १ ३४६ ब ।

आराधना पंजिका—१.२७१ ब ।

आराधना-संग्रह—१ २७१ ब ।

आराधना सार—१.२७१ ब । इतिहास १ ३४२ ब ।

आराधना सार समुच्चय—इतिहास १.३४४ ब ।

आराधित—१ २७१ अ ।

आराम—३ ५२८ अ ।

आरोग्य— ३ ४९२ ब ।

आरोप—उपचार १.४१९ ब ।

आरोहक—१ २७२ अ, श्रेणी के कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ ब ।

आरोहण—गुणस्थान २ २४७ अ ।

आर्जव—१ २७२ अ, माया ४.१३१ ब, शुभोपयोग १.४३४ ब ।

आर्त्त—१ २७२ ब, अतिचार १.४३ ब, १.२७२ ब, ध्यान १.२७२ ब ।

आर्त्तध्यान—१.२७२ ब, अशुभोपयोग १.४३३ ब, त्याग ४.४१७ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७६ अ, ४ ३७७ ब, ध्यान २ ४९७ अ, साधु ४.१३२ अ ।

आर्त्त परिणाम – १ २७४ ब, आर्त्तध्यान १.२७२ ब ।

आर्द्रा—नक्षत्र १ २७४ ब, रुद्र २.५०४ ब ।

आर्य—१.२७४ ब, भोगभूमि ३.५२२ अ, मनुष्य ३ २७३ ब, वर्ण व्यवस्था ३ ५२२ ब, विद्या ३.५४४ अ, विद्याधर १.३३९ अ, सत्प्ररूपणा ४.१८४, हरिवंश का राजा १ ३३९ ब ।

आर्यक—मगधदेश का राजा १.३१२ ।

आर्य कूष्मांड देवी—१.२७५ अ, विद्या ३.५४४ अ ।

आर्यखंड—१.२७५ अ, निर्देश ३.४४६ अ, विदेहस्थ ३ ४६० अ, गणना ३.४४५ अ, अंकन ३.४५७, ३.४६४ के सामने । काल-विभाग २.९२ अ, २.९३ ।

आर्यनंदि—१ २७५ ब, पचस्तूप सघ १.३२६ ब, इतिहास १.३२९ ब।
आर्यमंक्षु—१ २७५ ब, मूलसघ १ ३३२ ब, १. परि०/२-१, ३ १-३। इतिहास १.३२८ ब।
आर्यवती—१ २७५ ब, विद्या ३.५४४ अ।
आर्यसेन—सेनसघ १.३२६ अ।
आर्यिका—१.२७५ ब, उपवार १.४१६ अ, कल्की २ ३१ ब, गुरु २ २५३ ब, तीर्थंकर संघ २ ३८७, महाव्रत ३.५८९ ब, लिग ३.४१७ अ, वस्त्र १ ४० ब, सगति ४.११९ ब. साधु ४.१२० अ।
आर्यिका संघ—कल्की २.३१ ब, तीर्थंकर सघ २.३८८।
आर्षयज्ञ— ३.३६९ ब।
आर्ष वचन—आगम परम्परा १ २३४ ब।
आर्हन्त्य क्रिया—संस्कार ४.१५२ अ, ४.१५३ अ।
आलब्ध—१.२७६ अ, व्युत्सर्ग दोष १.६२३ अ।
आलय—१.२७६ अ।
आलयांग— १ २७६ अ, कल्पवृक्ष ३ ५७८ अ।
आलाप—१.२७६ अ, अक्षसचार गणित .२२६ अ।
आलापन बध—१.२७६ अ, नोकर्म बंध ३.१७० ब।
आलाप पद्धति—१.२७६ अ, इतिहास १.३४२ ब।
आलुच्छन—१.२७६ अ, आलोचना १ २७६ ब।
आलेखित—२.४९९ ब।
आलेख्याकार—केवलज्ञान २ १४६ ब।
आलेपन—१.२७६ ब, बध ३ १७० अ।
आलोक—१.२७६ ब।
आलोकन वृत्ति—२.४०६ ब।
आलोकितपान भोजन—अहिंसा १.२१६ अ, रात्रिभोजन ३.४०२ ब।
आलोचन—आलोचना १.२७६ ब, दर्शन १ ४६ ब, २.४०६ ब।
आलोचना—१ २७६ ब, प्रतिक्रमण ३.११७ अ, प्रायश्चित ३ १५९ ब, १६० ब, वन्दना ३.४९५ ब, शुद्धि ४.४१ अ, सल्लेखना ४.३९० ब, ४.३९१ ब।
आवरण—१ २७८ ब, ज्ञान २.२७२ ब।
आवर्जित करण—१.२७८ ब।
आवर्त—१.२७९ अ, कर्म २.२६ अ, कृतिकर्म २ १३३ ब, २.१३४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, राक्षसवश। १.३३८ अ, वदना ३.४९४ ब, सामायिक ४ ४१६ ब।
आवर्तपुर—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
आवर्ता—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३. ४८२-३.४८५-३.४८६, अकन ३.४४४।
आवली—१.२७९ अ, अन्तर्मुहूर्त १.३० अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ अ-ब, सहनानी २.२२० अ। राक्षसवश १.३३८ अ।
आवश्यक—१ २७९ ब, अध प्रवृत्तकरण २.११ अ, अनिवृत्तिकरण २.१४ अ, अपूर्वकरण २.१२ ब, कृतिकर्म २.१३३ ब, गुणित कर्मांशिक २ १७७ अ, शुद्धि ४ ४० ब, श्रावक ४.५१ ब।
आवश्यकापरिहाणि—१,२८० अ।
आवास—१ २८० अ। भावन लोक ३.२१० अ, वनस्पति ३.५०६ ब, ३.५१० अ। व्यन्तरलोक—निर्देश ३ ६१२ अ, बनावट ३.६१२ ब, विस्तार ३.६१५ अ, संख्या ३.६१२ ब।
आवासक—आवश्यक १ २८० अ।
आविद्धकरण—१.२८० ब, नन्दिसघ देशीयगण १.३२५ अ, पद्मनन्दि १ ३३० अ, १ ३३१ अ, इतिहास १.३२९ ब।
आविष्कार—१ २८० ब।
आवीचिका मरण—१ २८० ब, मरण ३.२८० अ। तृष्णा ३ ३९५ ब, ३.३९६ ब, दासत्व ३.३९८ अ, निराकरण ३ ३९८ अ। रुचक पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३ ४६८, ४६९।
आवृत्तकरण—१.२८० ब।
आवृष्ट—१.२८० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
आशंसा—१.२८० ब।
आशय—औदारिक शरीर १ ४७२ अ।
आशा—१.२८० ब, राग—गर्त ३.३९५ ब।
आशाधर—१ २८० ब, स्तोत्र ४ ४४९ ब, इतिहास १ ३३२ अ, १ ३४४ अ, १ ३४५ अ।
आशिष—१ २८१ अ।
आशीर्वाद—१ २८१ अ, नमस्कार २.५०६ ब।
आशीर्विष (वक्षार)—१.२८१ अ, विदेहस्थ पर्वत—निर्देश ३ ४६० अ, नाम ३.४७१ अ, वर्ण ३.४७७, विस्तार ३.४८२, ३.४८५. ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने। इस पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब।
आशीर्विष रसऋद्धि—१ २८१ अ, ऋद्धि १.४४७, १ ४५५ ब।
आश्चर्य—१.२८१ अ, पद्म आदि द्रहो के कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४५४।

आश्मरथ्य—३ ५९५ ब ।
आश्रम—१.२८१ अ ।
आश्रमकेस—पार्श्वनाथ २.३८४ ।
आश्रय—१ २८१ अ, आकाश १.२२१ अ, आधार १ २४६ अ, सापेक्षधर्म ४ ३२४ ब ।
आश्रय-आश्रयी सम्बन्ध—उपचार १.४२० ब, सम्बन्ध ४ १२६ अ ।
आश्रयासिद्ध—हेत्वाभास १.२१० अ ।
आश्लेषा—१.२८१ अ, नक्षत्र २ ५०४ ब ।
आश्वलायन—२.१७५ ब ।
आषाढ—१.२८१ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।
आसन—१ २८१ अ, कायक्लेश २.४६ ब, ४७ ब, कृतिकर्म २.१३३ ब, सामायिक ४.४१६ ब ।
आसनगृह—भवनवासी देवो के भवनों मे ३ २१० ब ।
आसन तप—कायक्लेश २.४७ ब ।
आसन्न भव्य—१.१८१ ब, भव्य ३.२११ ब ।
आसन्न मरण—१ २८१ ब, ३ २८० अ ।
आसव—३ २०३ अ ।
आसादन—१ २८१ ब, उपघात १.४१८ ब, सासादन ४ ४२३ अ ।
आसिका—१ २८१ ब, समाचार ४.३३६ ब ।
आसीधिका—असही १.२०९ अ ।
आसुर—भावन देव २.४४५ ब ।
आसुरि—साख्य दर्शन ४ ३९८ ब ।
आसुरी—१.२८१ ब ।
आस्तिक्य—१.२८१ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ ।
आस्यनिविष ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १.४५५ ब ।
आस्रव—१.२८२ अ, अनुप्रेक्षा १.७४ अ, १ ७८ अ, १ ७९ ब, धर्मध्यान २ ८८३ ब ।
आस्रव त्रिभगी—इतिहास १.३३३ अ, १ ३४५ अ ।
आस्रवानुप्रेक्षा—१ २८३ ब, अनुप्रेक्षा १.७४ अ, १ ७८ अ, १.७९ ब ।
आहत—जम्बू वृक्ष का देव ३.४५८ अ, ३.६१३, ३ ६१४ ।
आहवनीय—१.२८३ ब, अग्नि १ ३५ ब ।
आहार—१.२८३ ब, अधःकर्म १ ४८ अ, अनशन १.६६ अ, अतराय १.२८ अ, अहिंसा १.२१६ अ, काल १.२८६ अ, १.२८९ अ, गृद्धता निषेध १ २८८ ब, चर्या १ २८६ अ, २.१३७ ब, तीर्थंकर २.३७२ ब, त्याग (अथालद चारित्र) १.४६ अ, त्याग (सल्लेखना) ४.३९२ ब, ४.३९३ अ, देव २ ४४६ अ, दोष १.२८९-२९०, ४.३४१ अ, नरक २.५७२ ब, प्रमाण १.२८५ ब, १ २८९ अ, षट्कालिक हानि-वृद्धि २.९३, सल्लेखना १ ४६ अ, ४.३९२ ब, ४.३९३ अ ।
आहारक काययोग—१ २९७ ब, काययोग २.४६ अ, मरण ३ २८४ अ, वेद भाव ३.५८८ ब । प्ररूपणा—बध ३ १०४, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३८०, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४.२९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०७ । सत् ४.२२०, संख्या ४.१०३, क्षेत्र २.२०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २ १०८, अन्तर १ १३, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १.१४८ ।
आहारक चतुष्क—उदय १.३७४ ब ।
आहारक द्विक्—उदय १.३७४ ब ।
आहारक मार्गणा—१.२९४ ब, अनाहारक १.६६ ब, ऋजु गति (अनाहारक) १ ६६ ब, केवली २ १६४, केवली समुद्घात २ १६७ ब, पर्याप्ति ३.१४ अ, विग्रहगति ३ ५५० ब । प्ररूपणा—बध ३ १०९, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३८६, उदयस्थान १.३९३ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०२, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १.४०८ अ । सत् ४.२६४, संख्या ४.११०, क्षेत्र २ ३०७, स्पर्शन ४ ४९४, काल २ ११९, अन्तर १ २१, भाव ३ २२२ अ, अल्पबहुत्व १.१५२ ब ।
आहारकमिश्र काययोग—१.२९७ ब, काययोग २.४६ अ-ब, मरण ३.२८४ अ, वेदभाव ३.५८८ ब । प्ररूपणा—दे० आहारक काययोग ।
आहारकवर्गणा—१.२९८ ब, वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३.५१६ अ, शरीरवर्गणा ३ ५१४ ब ।
आहारकशरीर—आहारक १ २९५ ब, औदारिक शरीर १.४५७ अ, कथचित् प्रतिघाती (वैक्रियिक शरीर) ३ ६०३ ब, निगोद ३.५०६ ब, परिहारविशुद्धि सयत ३.३७ अ, प्रदेशो का अल्पबहुत्व १ १५६ ब, प्रमत्तसयत ३ ५०६ अ, वेदभाव ३ ५८८ ब, शुक्ल लेश्या ३ ४२५ ब ।
आहारकशरीर अंगोपांग—अगोपाग १ १ ब । प्ररूपणा—दे० आहारकशरीर नामकर्म ।
आहारकशरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३ अ, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.९५, अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६८, प्रदेश ३.१३६, प्रदेशो का अल्पबहुत्व १.१५६ ब । बंध ३.९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७३

अ. उदयस्थान १ ३९०, १ ३९६, १ ३९७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७५ ब ४ २७८ ४ २८१-२८२ सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४ ; संक्रमण ४.८४ ब, अल्प-बहुत्व १ १६८ ।

आहारकशरीर बंध—आहारक-आहार-बंध ३ १७० ब, आहारककार्मणबंध ३ १७० ब, आहारक-तैजस-बंध ३ १७० ब, आहारक-तैजस-कार्मण-बंध ३.१७० ब ।

आहारक समुद्घात—१ २९६ ब, केवली समुद्घात २ १६७ ब क्षेत्र २ १९६-२०७, परिहारविशुद्धि ३ ३७ अ, मारणान्तिक समुद्घात ४ ३४३ ब, समुद्घात ४.३४३ ब, स्पर्शन ४ ४७७-४९४ ।

आहार-काल—आहार १ २८५ ब, १ २८९ अ, भिक्षा ३ २२८ ब ।

आहार के अंतराय—अंतराय १ २८ अ ।

आहार के दोष—आहार १ २८९-२९०, समिति, ४ ३४१ अ ।

आहारचर्या—आहार १ २८६ अ, कृतिकर्म २ १३७ भिक्षा ३ २२८ ब ।

आहारत्याग—अधालद चारित्र १ ४६ अ, अनशन १ ६६ अ, प्रोषधोपवास ३ १६३ अ, सल्लेखना ४ ३९२ ब, ४ ३९३ अ ।

आहार-दान—अतिथिसंविभाग व्रत १.४४ ब, दान २ ४२२ ब, २ ४२४ ब, प्रोषधोपवास ३ १६३ ब ।

आहारपर्याप्ति—१ २९८ ब, पर्याप्ति ३.४१ अ ।

आहारविपर्यय—१ २९८ ब ।

आहारशुद्धि—अपवाद-मार्ग १ १२१ अ, आहार १.२८५ अ-ब, १ २८७ अ, १ २८९ अ ।

आहारसंज्ञा—१ २९८ ब, संज्ञा ४ १२० ब, ४ १२१ अ ।

आहित—अग्नि १ ३५ ब, ग्रह २ ७७४ अ ।

आहुति मंत्र—१ २९८ ब ।

आह्लाद—सुख ४ ४२९ ब ।

आह्वानन—पूजा ३ ८० ब ।

इ-ई

इंगाल—१.२९८ ब, भिक्षादोष ३ २३३ अ, वसतिका दोष ३.५३० अ ।

इंगिनी (मरण)—१.२७८ ब, सल्लेखना ४ ३८६ ब, ४ ३८७ अ, ४ ३८९ अ ।

इंद्र (देव)—१ २९८ ब, कल्याणक २ ३२ ब, श्वेताम्बर (गर्भ परिवर्तन) ४ ७६ ब, ४ ७८ अ । ज्योतिषी देवों के—निर्देश २ ३४५ ब, आयु १ २६६, नक्षत्र २ ५०४ ब, परिवार २ ३४६ अ, संख्या २ ३४५ ब । भवनवासी देवों के—निर्देश ४ २०८ अ, आयु १.२६५, परिवार ३.२०९ अ, संख्या ३ २०८ अ । वैमानिक देवों के—निर्देश ४ ५१० ब, आयु १ २६९, चिह्न—यान आदि ४ ५११, तीर्थंकर विशालप्रभ २.३९२, दक्षिण-उत्तर विभाग ४.५११ अ, देवियाँ ४.५१२, निवास ४.५२० ब, परिवार ४ ५१० ब, संख्या ४.५१० ब । व्यन्तर देवों के - निर्देश ३.६११ अ, आयु १ २६४ ब, परिवार ३.६११ ब, संख्या ३ ६११ ब ।

इंद्र (नाम)—१.२९९ अ, कल्की वंश १.३११ अ, १ ३१५ अ, राक्षस वंश १.३३८ अ, विद्याधर वंश १.३३९ अ ।

इंद्रक—१.२९९ अ । नरकेन्द्रक—निर्देश २ ५७६ ब, नाम निर्देश २ ५७९-५८०, विस्तार २ ५७८-५९०, अंकन ३.४४१, संख्या २.५७८-५८० । स्वर्गेन्द्रक—निर्देश ४ ५१६ अ, नामनिर्देश ४.५१६-५१८, विस्तार ४.५१६-५१८, अंकन ४.५१७, अवस्थान ४.५१४ ब, विमान ३ ५६३ अ, संख्या ४ ५१६, ४ ५२० ।

इंद्रगिरि—हरिवंश १.३४० अ ।

इंद्रजीत—१ २९९ ब, राक्षसवंश १.३३८ ब ।

इंद्र त्याग (क्रिया)—१.२९९ ब, संस्कार ४.१५२ अ ।

इंद्रद्युम्न—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ ।

इंद्रध्वज—१.२९९ ब ।

इंद्रनंदि संहिता—१ २९९ ब ।

इंद्रपथ—१ २९९ ब ।

इंद्रपुर—१ २९९ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

इंद्रप्रभ—राक्षसवंश १ ३३८ अ ।

इंद्रभूति—१ २९९ ब, गणधर २ २१३ अ, गौतम १ ३१६, वर्द्धमान प्रभु २.३८७ ।

इंद्रमत—वानरवंश २.३३८ ।

इंद्रराज—१ २९९ ब, राष्ट्रकूट वंश १.३१५ ब ।

इंद्रवीर्य—कुरुवंश १.३३५ ब ।

इंद्रसुत—कल्की २ ३० ब ।

इंद्रसेन—१ २९९ ब, सेनसंघ १.३२६ अ, इतिहास १.३२८ ब ।

इंद्राग्नि—नक्षत्र २.५०४ ब ।

इंद्राणी—ज्योतिषी देवों की २.३४६ अ । भवनवासी देवों

की—निर्देश ३ २०९ अ, आयु १ २६५। वैमानिक देवों की—निर्देश ४ ५१२; आयु १ २७०। व्यन्तर देवों की ३ ६११ ब।

इंद्राभिषेक (क्रिया)—१ २९९ ब, संस्कार ४ १५१ ब, ४ १५२ अ।

इंद्रायुध—१ २९९ ब।

इंद्रावतार (क्रिया)—१ ३०० अ, संस्कार ४ १५२ अ।

इंद्रिय—१ ३०० अ, अवगाहना का अल्पबहुत्व १ १५८, प्रदेशों का अल्पबहुत्व १ १५७, १ ३०१ ब, करण २ ५ ब, नैयायिक दर्शन २ ६२३ ब, प्राप्यकारी अप्राप्यकारी विभाग १ ३०३ अ, १.१८३ ब, मन ३ २७० ब, मुक्त जीव ३ ३७६ ब, शरीर ४ २ अ।

इंद्रियज सुख—सुख ४ ४२१ ब, ४ ४३४ अ।

इंद्रियज्ञान—१ ३०७ अ, उपयोग १ ४३३ अ, तप २ २६३ ब, संयम ४ १३६ ब, सल्लेखना ४ ३९६ अ, स्वाध्याय ४ ५३५ अ।

इंद्रियजय—१ ३०७ अ, उपयोग १ ४३३ अ, तप २ ३६३ ब, संयम ४ १३६ ब, सल्लेखना ४ ३९६ अ, स्वाध्याय ४ ५२५ अ।

इंद्रियपर्याप्ति—१ ३०७ अ, पर्याप्ति ३.४१ अ, ३ ४३ अ।

इंद्रियप्रमाण—१ ३०७ ब, परोक्ष ३ ३९ अ, प्रत्यक्ष ३.१२२ ब, ३ १२३ ब, २ १५० ब, प्रमाण ३ १४३ ब, श्रुतज्ञान ४ ६३ ब।

इंद्रियप्राण—पर्याप्ति ३ ४३ ब, प्राण ३ १५२ ब।

इंद्रियमार्गणा—निर्देश १ ३०६ ब, जीवसमास २.३४३, जीवों की अवगाहना १ १७९, जीवों की आयु १ २६३, १ २६४। प्ररूपणा—बंध ३ १०३, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, ४ २८५, ४ २९९, सत्त्व स्थान, ४ २९८, ४ ३०५, ४ ३०७, त्रिसंयोगी भंगी १.४०६। सत् ४ १९३, संख्या ४ ९९, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८२, काल २ १०६, अन्तर १ ११, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व—इन्द्रियमार्गणा १ १४५, १ १५५ अ, योगस्थान १ १६१ ब, शरीर स्वामित्व ४ ७, १.१५१, संक्लेशविशुद्धिस्थान १.१६० अ।

इंद्रियलोभ—लोभ ३ ४९२ ब।

इंद्रियविवेक—विवेक ३ ५६६ ब।

इंद्रियव्याधि—लिंग ३ ४१७ ब।

इंद्रियसंयम—१ २०७ ब, संयम ४ १३८ अ, ४ १३९ अ।

इंद्रियसुख—सुख ४ ४२१ ब, ४ ४३४ अ।

इंद्रोपपाद (क्रिया)—१ ३०७ ब, संस्कार ४ १५१ ब।

इक्कीस—स्वभाव ४ ५०६ ब।

इक्कीस गुणस्थान प्रकरण—१ ४५८ ब इतिहास १ ३४१ अ।

इक्षुपुष्प—असाधु की निन्दा २.५८९ अ।

इक्षुमती—१ ३०७ ब, मनुष्यलोक ३ २०५ ब।

इक्षुरस—१ ३०७ ब, रस ३ ३९२ ब।

इक्षुवर (सागर व द्वीप)—१ ३०७ ब निर्देश ३ ४७० अ विस्तार ३ ४७८, अकन ३ ४८३ जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब अधिपति देव ३ ६१४। वैदिकाभिमत क्षीरोद सागर—निर्देश ३ ४३१ ब, अकन ३ ४३२।

इक्ष्वाकुवंश—१ ३०७ ब, इतिहास १ ३३५ अ तीर्थंकर ऋषभ आदि २ ३८०, रघुवंश १ ३३८ अ सूर्यवंश १ ३३९ ब।

इच्छा—परिग्रह ३ २४ ब, ३ २९ अ अभिलाषा १ १३० ब लोकैषणा ३ ३९७ अ, अनाकांक्ष अनशन १ ९९ उपदेश १ ४२४ ब, तप २ ३५७ ब, २ ३६० अ धर्म २ २७५ अ, ध्याता २ ४९३ अ, ३ ३९५ ब, राग ३ ३९६ ब ३.३९७ अ, वाद ३ ४३५ अ, विनय ३ ५५२ ब विवेक ३ ५६६ अ, श्रद्धान ४ ३५९ अ, सल्लेखना ४.३८३ अ, साधु ४ ४०५ अ, स्वाध्याय ४ ५२३।

इच्छाकार—१ ३०७ ब, विनय ३ ५५१ ब ३ ५५२ समाचार ४ ३३६ ब, सल्लेखना ४ ३९७ अ।

इच्छादेवी—१ ३०७ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६८।

इच्छानिरोध—१ ३०७ ब, तप २ २५८ ब।

इच्छानुलोमा—१ ३०७ ब, भाषा ३.२२७ अ।

इच्छाराशि—१ ३०७ ब, गणित २.२२८ ब।

इच्छाविभाग (दोष)—१ ३०७ ब।

इज्या—१ ३०७ ब, पूजा ३.७४ अ।

इतरनिगोद—१ ३०८ अ, वनस्पति ३ ५०१ अ, मोक्ष ३ ३३१।

इतरेतराभाव—१ ३०८ अ, अभाव १ १२८ अ।

इतरेतराश्रय—कारण (जीवकर्म सम्बन्ध) २.७४ ब।

इति—१ ३०८ अ।

इतिवृत्त—१ ३०८ ब।

इतिहास—१ ३०८ ब।

इत्थं संस्थान—१ ३४८ अ, संस्थान ४.१५४ ब।

इत्वरिका—१ ३४८ अ।

इत्सिंग—१ ३४८ ब।

इभवाहन—कुरुवंश १ ३३५ ब।

इलंगोवडि—इतिहास १ ३२८ ब, १ ३४० अ।

इला—१.३४८ ब। हिमवान पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६८, ३.४७९।

इलावर्धन—१.३४८ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ, हरिवर्ष १.३४० अ।

इलावृत वर्ष—१.३४८ ब।

इषुगति—१ ३४८ ब, विग्रहगति ३ ५४० ब।

इष्ट—१ ३४८ ब, साध्य ३ २ ब।

इष्टमरण—आहारान्तराय १ २९ ब।

इष्टवियोगज—१ ३४८ ब, आर्तध्यान १ २७३ ब।

इष्टविषय—ब्रह्मचर्य ३ १८९ ब।

इष्टानिष्ट—मोह ३.५९४ ब, राग ३ ३९५ ब, रुचि ४ ४३० ब।

इष्टोपदेश—१.३४८ ब, इतिहास १ ३४१ अ।

इष्टोपदेश (टीका)—आशाधर १ २८० ब, इतिहास १.३४४ अ।

इष्वाकार—१ ३४८ ब। धातकी व पुष्करार्ध का पर्वत—निर्देश ३ ४६२ ब, ४६३ ब, विस्तार ३ ४८५, ३ ४८७, वर्ण ३.४७८, गणना ३ ४६३ अ, अकन ३ ४६४ के सामने।

इह लोक—अभिलाषा २ ५८५ ब, भय २ २०६ अ-ब।

ईर्या—१ ३४८ ब।

ईर्यापथ—आस्रव २ १५८ ब, उदय १ ३६७ ब, कर्म १ ३४८ ब, २.२६ अ-ब, २.२२७ अ, ४ २६९ अ, कायोत्सर्ग ३ ४९५ ब, क्रिया १ ३५० ब, २ १७४ ब, शुद्धि १.३५० ब, २ १३८ ब, ४ ३३९ ब, सल्लेखना ४ ३८७ ब।

ईर्यापथकर्म—१.२४८ ब, कर्म २.२६ अ-ब, २ २७ अ, सत् ४ २६९, संख्या ४ ११६ ब, क्षेत्र २.२०८, भाव ३ २२३।

ईर्यापथशुद्धि—१ ३५० ब, कृतिकर्म २.१३८ ब, समिति ४ ३३९ ब, सल्लेखना ४.३८७ ब।

ईर्यापथिक—आलोचना १ २७६ ब, प्रतिक्रमण ३ ११६ अ, बन्धक ३ १७९ अ।

ईर्या समिति—१ ३५० ब, अहिंसा १.२१६ अ, कायगुप्ति २ २५१ अ, शुद्धि २ १३८ ब, श्रावक ४ ५२ ब, समिति ४ ३३९ अ, सल्लेखना ४ ३८७ ब।

ईशान—१.३५० ब। स्वर्ग—निर्देश ४ ५९४ ब, पटल इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४.५१६, ४.५२०, उत्तरविभाग ४.५२० ब, अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४.५१५, चित्र ४.५१९ ब। देव—अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १.१९८ ब, आयु १.२६६, आयु के बन्धयोग्य परिणाम १.२५८ ब। इन्द्र—निर्देश ४ ५१० ब, परिवार ४ ५१२-५१३, उत्तरेन्द्र ४.५११ अ, अवस्थान ४ ५२० ब, चिह्न आदि ४ ५११ ब, विमान नगर और भवन ४ ५२०-५२१।

ईशानदेव (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२, उदीरणा १ ४११, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ अ। सत् ४ १९२, संख्या ४ ९८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।

ईशित्व ऋद्धि—१.३५० ब, ऋद्धि १ ४४७, १ ४५१ अ।

ईश्वर—१ ३५० ब, जैनदर्शन २ ३४४ ब, ३ २० ब, नियतिवाद २.६१९ अ, विदेहस्थ तीर्थंकर का नाम २ ३१२, वेदान्त ३ ६०८ अ।

ईश्वर अनिसृष्ट दोष—आहार १ २९१, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

ईश्वरकृष्ण—४.३९८ ब।

ईश्वरनय—१.३५० ब, नय २ ५२३ ब।

ईश्वरवाद—१.३५० ब, एकान्त १ ४६५ अ, परमात्मा ३.२१ ब।

ईश्वरसेन—१ ३५० ब, पुन्नाट संघ १ ३२७ अ।

ईषत्परोक्ष—१.१९० ब।

ईषत्प्राग्भार—१.३५० ब, भूमि ३ २३४ ब, मोक्ष ३ ३२३ ब, सासादन ४ ४२५ अ।

ईषत्संसार—४ १४६ ब।

ईसवी संवत्—१ ३५१ अ, इतिहास १ ३०९ अ-ब, १ ३१० अ।

ईहा—१ १५१ अ, अवग्रह १ १८२, ऊहा १ ४४५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०, धारणा २ ४९१ अ, प्रमाण १.३५१ अ, १ १८२ ब, मतिज्ञान ३ २५२ ब, ३.२५३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६२ ब, संशय १ १८२ ब।

ईहावरणीय कर्म—१ ४४९ ब।

उ-ऊ

उ—उत्कृष्ट २ २१८ ब, उर्वक १ ४४५ ब।

उक्त—१ ३५२ अ, मतिज्ञान ३ २५७ अ।

उग्र—अभिनंदन नाथ २ ३८३, पार्श्वनाथ २ ३८० ।
उग्रतप—१ ३५२ अ, ऋद्धि १ ४४७, १ ४५३ ब ।
उग्रवंश—१ ३५२ अ, भोजवंश १ ३३६ ब, विद्याधर वंश १ ३३८ ब ।
उग्रश्री—राक्षसवंश १ ३३८ अ ।
उग्रसेन—१ ३५२ अ, नेमिनाथ २ ३९१, यदुवंश १ ३३६, हरिवंश १ ३४० अ ।
उग्रादित्य—१ ३५२ अ, इतिहास १ ३३० अ, १.३४२ अ ।
अग्रोग्रतप—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५३ ब ।
उच्च—मोक्ष ३ ३२६ अ, मार्दव ३ २९८ ब ।
उच्चकुल—१ ३५२ अ, वर्ण-व्यवस्था ३.५२० ब ।
उच्चगोत्र—१ ३५२ अ, वर्ण-व्यवस्था ३ ५२० ब, ३.५२२ ब ।
उच्चगोत्र कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ५२०, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३७। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसयोगी भंग १ ३९९, सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ।
उच्चत्व—मार्दव ३ २९८ ब ।
उच्च-नीच व्यवहार से अतीत—मोक्ष ३ ३२६ अ, वर्ण व्यवस्था ३ ५२४ अ ।
उच्च पद—धर्म २ ४६६ ब ।
उच्चाटन—ध्यान २ ४९७ अ, मंत्र ३ २४५ ब ।
उच्चार—१ ३५२ अ, आहारातराय १ २९ अ, औदारिक, शरीर १ ४७२ अ ।
उच्चारण वृत्ति—१ ३५२ अ, कषायपाहुड २.४१ अ ।
उच्चारणाचार्य—१ ३५२ अ, तत्त्व ४.२७६ ब ।
उच्छादन—१.३५३ अ ।
उच्छिष्टावली—१.३५३ अ, आवली १.२७९ ब ।
उच्छ्वास—१.३५२ अ, काल प्रमाण २.२१६ अ, ब ।
उच्छ्वास नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३ अ, स्थिति ४ ४६५, अनुभाग १.९५ ब, प्रदेश ३ १३६ । बंध ३.९६ अ, ३.९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, १.३९७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भंग १ ४०४ । सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८ ।
उच्छ्वास-पर्याप्ति—१.३५२ ब, पर्याप्ति ३.४४ अ, पर्याप्तिकाल १ ३९३-३९७ ।
उज्ज्वलित—१ ३५३ अ, नरकपटल—निर्देश २ ५७९ अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१, अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३ ।
उज्जिह्वि—१ ३५३ अ । नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१ ।
उज्जैनी—इतिहास १ ३१० अ, मगधदेश १ ३१० ब, मूल संघ १ परि०/२ १-३, श्वेताम्बर संघ ४ ७७ ब ।
उज्झनशुद्धि—१ ३५३ अ, शुद्धि ४ ४० ब ।
उडण्डवशमी व्रत—१ ३५३ अ ।
उडुपालन—विद्याधर वंश १ ३३९ अ ।
उत्कट—राक्षस वंश १ ३३८ अ ।
उत्कर—भेद ३ २३७ अ ।
उत्करण काल—काण्डक २ ४२ अ ।
उत्करिकासन तप—कायक्लेश २ ४७ ब ।
उत्कर्षण—१ ३५३ अ, अतरकरण १ २६ अ-ब, आयु १ २६० ब, गुणस्थान २ ६ अ, दशकरण २ ६ ।
उत्कर्षण (दोष)—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ ।
उत्कर्षणप्राभृत (दोष)—आहार १ २९० ब ।
उत्कर्ष सभा—१ ३५५ ब ।
उत्कल—१ ३५५ ब ।
उत्कलिका—१ ३५५ ब, श्रुतज्ञान ४ ६७ ब ।
उत्कीरण काल—१ ३५५ ब, अतरकरण १ २५ ब, १ २६ अ, काल २ ८१ अ ।
उत्कीर्ण—अतरकरण १ २६ अ ।
उत्कृष्ट—अनत २ २१४ ब, २.२२९ अ, अनतानत २.२१८ ब, अनुत्कृष्ट ३ ११४, अनुभाग (क्षयोपशम) २.१८६ अ, अनुभाग (स्थितिबध) ४ ४५८ ब, ४.४५९ ब, अतरात्मा १ ३७ अ-ब, अवगाहना (सख्या) ४.९४ अ, असख्यात २.२१४ ब, २.२१९ अ, असख्यातासंख्यात २.२१८ अ, २ २१९ अ, आराधना (सल्लेखना) ४ ३८७ अ, कृष्टि २ १४३ अ, धर्मध्यान २.४७९ अ, पद (अनुयोग) १ १०२ ब, १ १०३ ब, परमाणु ३.१४ अ, परितानंत २ २१८ ब, २ २१९ अ, परितासख्यात २.२१८ ब-२१९ अ, युक्तानन्त २ २१८ ब, २.२१९ अ, युक्तासख्यात २ २१८ ब, २ २१९ अ, लब्धि ३ ४१५अ, विभक्ति (अनुयोगद्वार) १.१०३ अ ब, श्रावक(क्षुल्लक) २ १८८ ब, सख्यात २.२१४ ब, २.२१८ अ, समय-प्रबद्ध २ २१९ अ, सहनानी २.२१९ अ, स्थिति ४ ४५६ ब, ४ ४५८ ब, ४.२७६ ब ।
उत्तम—आकिंचन्य १.२३४ ब, आर्जव १ २७२ अ, क्षमा

२ १७७ अ, तप २ ३६३ ब, त्याग २ ३९७ ब, धर्मवश २ ४७६ अ, पात्र ३ ५२ ब, प्रोषधोपवास ३ १६४ अ, बालाग्र २ २१५ ब, ब्रह्मचर्य ३ १९० ब, मार्दव ३ २९८ अ, वर्ण १ ३५५ ब, ३ २७५ ब, शौच ४ ४२ ब, सहनन ४ १५५ ब, स्त्री सहनन ३ ५९० अ।

उत्तमा—व्यंतर बल्लभिका ३ ६११ ब।

उत्तमार्थ—काल १ ३५६ अ, २ ८० ब, त्याग (सल्लेखना) ४ ३८८ अ, प्रतिक्रमण ३ ११६ अ।

उत्तर—अयन २ ९१ ब, क्षण २ ५५ अ, गणित १ ३५६ अ, २ २२९ ब, ज्ञान २ ४०६ ब, देव (भावन) ३ ६१४, दिशा १ ३५६ अ, २ १३६ ब, २ ४३४ अ, ३ ६२० ब, ४ ३८९ ब।

उत्तरकल्प—स्वर्गों का उत्तर भाग ४ ५२० ब।

उत्तरकुमार—१ ३५६ अ।

उत्तरकुरु (कूट)—१ ३५६ अ। गजदंत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७।

उत्तरकुरु (देश)—१ ३५६ अ, चातुर्द्वीपिक भूगोल ३ ४३७ अ। जैनाभिमत—निर्देश ३ ४३१ ब, ३ ४५६ ब, ३ ४६२ ब, ३ ४६३ ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४५७, गणना ३ ४४५ अ। काल-व्यवस्था २ ९३, जीवों की अवगाहना १ १८०, जीवों की आयु १.२६३, १ २६४। बौद्धाभिमत ३ ४३६ अ, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब।

उत्तरकुरु (द्रह)—१ ३५६ अ, उत्तरकुरु में स्थित—निर्देश ३ ४५६ ब, नाम निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ४ ४९०, ३ ४९१, अंकन ३.४४४, ३.४५७, ३ ४६४ के सामने।

उत्तरगुण—१.३५६ अ, प्रत्याख्यान ३ १३३ अ, श्रावक ४.५० ब, ४ ५१ अ, साधु ४ ४०४ अ।

उत्तरचर हेतु—१ ३५६ अ, कारण कार्य २ ५६ ब।

उत्तरचूलिका—१ ३५६ अ, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२३ अ।

उत्तरदिशा—१ ३५६ अ, कृतिकर्म २ १३६ ब, कायोत्सर्ग ३.६२० ब, शुभकार्य २ ४३४ अ, सल्लेखना ४ ३८९ ब, सामायिक ४ ४१६ ब।

उत्तरधन—१ ३५६ अ, श्रेढी व्यवहार गणित २ २२९ ब, २.२३० ब।

उत्तरपुराण—१ ३५६ अ, इतिहास १ ३४२ अ, १ ३४५ ब।

उत्तरप्रकृति (कर्मप्रकृति)—प्ररूपणायें—प्रकृति ३ ८८, ३ ९७, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३.१०८, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८७, त्रिसंयोगी भंग १ ३९९। अल्पबहुत्व १ १६४ ब-१६६, १ १७६, संक्रमण ४ ८५ ब। स्वामित्व सन्निकर्ष—प्रकृति ३ ११४, सत्त्व ४ ३१०, स्वामित्व (प्रकृति-स्थिति-अनुभाग-प्रदेश) ४ ५२७-५२८। संख्या ४ ११७, क्षेत्र २ २०८, स्पर्शन ४ ४९४, काल २ १२१-१२२, अन्तर १ २३, भाव ३ २२३, अल्पबहुत्व १ १७५, ४ ४६९, ४ ५२७, भागाभाग ४ ११७।

उत्तरप्रकृति विपरिणमना—३ ५५५ ब।

उत्तरप्रतिपत्ति—१ ३५६ अ।

उत्तरभाद्रपदा—नक्षत्र ३ ५०४ ब, विमलनाथ २ ३८०।

उत्तरमीमांसा—१ २५६ ब, दर्शन २ ४०२ ब, मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ।

उत्तरमुख—कृतिकर्म २ १३६ ब, कायोत्सर्ग ३ ६२० ब, शुभ कर्म २ ४३४ अ, सल्लेखना ४.३८९ ब, सामायिक ४ ४१६ ब, केवलीसमुद्घात २ १६७ ब।

उत्तराध्ययन—१.३५६ ब, श्रुतज्ञान ४.६९ ब।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र—१ ३५६ ब, नक्षत्र २ ५०४ ब, तीर्थंकर २ ३८१।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र—१ ३५६ ब, नक्षत्र २ ५०४ ब।

उत्तराभिमुख—कृतिकर्म २ १३६ ब, कायोत्सर्ग ३ ६२० ब, शुभकार्य २ ४३४ अ, सल्लेखना ४ ४८९ ब, सामायिक ४ ४१६ ब, केवलीसमुद्घात २ १६७ ब।

उत्तरायन—२ ३५१।

उत्तरार्ध (कूट)—भरत ऐरावत विदेह देशों के विजयार्धों-पर स्थित—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३ ४८३, वर्ण ३ ४७७, अंकन ३ ४४४।

उत्तराषाढ नक्षत्र—४ १५६ ब, नक्षत्र २.५०४ ब, ऋषभ नेमिनाथ तथा वर्द्धमान २.३८०।

उत्तरित—१ ३५६ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६१२ अ।

उत्तरेन्द्र—व्यन्तर देव ३.६११ अ, स्वर्ग ४.५११ अ।

उत्तानशय्यासन तप—कायक्लेश २.४७ ब।

उत्थितनिविष्ट—व्युत्सर्ग दोष ३ ६१९ ब।

उत्थितोत्थित—व्युत्सर्ग दोष ३.६१९ ब।

उत्पत्ति—१ ३५६ ब, उत्पाद १ ३५७ अ, जन्म २.३१३ ब।

उत्पन्न—व्यन्तर देव—अत्यु १.२६४ ब।

उत्पन्न स्थान सत्त्व—१ ३५६ ब, सत्त्व ४.२७५ अ।

उत्पल—१ ३५६ ब, काल प्रमाण २ २१६ अ, नीलकमल (नमिनाथ) २ ३७८।

उत्पल (कूट)—पद्म आदि ह्रदों के कूट—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४५४।

उत्पलगुल्मा—सौमनस तथा नन्दन वन की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, विस्तार ३ ४९०-४९१, नाम ३ ४७३ ब अकन ३ ४५१, चित्र ३ ४५१ ।

उत्पला—१ ३५६ ब, व्यन्तर वल्लभिका ३ ६११ ब, सुमेरु पुष्करिणी – निर्देश ३ ४५३ ब, नाम ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अक ३ ४५१, चित्र ३ ४५१ ।

उत्पलांग—कालप्रमाण २ २१६ अ ।

उत्पलोज्ज्वला—१ ३५६ ब, सुमेरु पुष्करिणी—निर्देश ३ ४५३ ब, नाम ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४९०-४९१, अकन ३ ४५१, चित्र ३.४५१ ।

उत्पात—१ ३५६ ब, ग्रह २.२७४ अ, छेदना २ ३०६ ब, २ ३०७ अ ।

उत्पातिनी—१ ३५६ ब, विद्या ३.५४४ अ ।

उत्पाद—१.३५७ अ, गुण २.२४२ अ, द्रव्य २ ४५३ ब, निर्हेतुक २ ५५१ अ, सयमलब्धिस्थान ३.४१४ अ, स्व-पर-निमित्तक १.२२१ ब, पूर्व ४ ६८ ब ।

उत्पाद अनुच्छेद—१ ३६१ अ ।

उत्पादक—कर्ता-कर्म २.२१ अ, कारण-कार्य २ ५९ ब ।

उत्पादन (दोष)—१ ३५६ ब, आहार १ २८९ ब, वसतिका ३ ५२९ अ ।

उत्पाद-पूर्व—१ ३५६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६८ ब ।

उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य—१ ३५६ ब, अस्तित्व १ २१२ ब, द्रव्य २ ४५३ ब ।

उत्पाद-व्यय-सापेक्ष अशुद्ध-द्रव्यार्थिक नय—२ ५४५ अ ।

उत्पादानुच्छेद—१ ३६१ अ, व्युच्छित्ति ३ ६१८ ब ।

उत्पीलक—अवपीडक १ २०० अ ।

उत्प्रेक्षा—१ ३६३ अ ।

उत्संज्ञासंज्ञ—१ ३६३ अ ।

उत्सरण—१ ३६३ अ, उत्कर्षण १ ३५३ ब ।

उत्सर्ग—१ ३६३ अ, अपवाद १ १२२ अ, उपयोग १ ४३१ अ, कृतिकर्म २-१३७ अ, तप (व्युत्सर्ग) ३ ६१९, समिति ४ ३४१ ब ।

उत्सर्गपद्धति—पद्धति ३ ९ ब ।

उत्सर्गमार्ग—अपवाद मार्ग १ १२०-१२३ ।

उत्सर्गलिंग—लिंग ३ ४१७ अ ।

उत्सर्पिणी—१ ३६३ अ, अवगाहना १.१८०, आयु १ २६४, आर्यखण्ड १.२७५ अ, काल २ ८८, काल परिवर्तन २ ९०, काल का प्रमाण २ २१७ ब, क्षेत्र २.९२, वृद्धि हानि २.९१, सुख ४ ३३१ ब, सिद्धो का अल्पबहुत्व १.१५३ ब ।

उत्साह—१.३६३ अ, तीर्थंकर २ ३७७ ।

उत्सेध—१ ३६३ अ ।

उत्सेधांगुल—१ ३६३ अ, उपमा प्रमाण २ २१८ अ, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ ब ।

उदंडचर्या - १,४५ अ, अतिथि १ ४४ ब ।

उदंबरफल—१ ३६३ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ ब, श्रावक ४ ४९९ ।

उदक—१ १ ३६३ अ, तीर्थंकर २ ३७७ ।

उदक—१ ३६३ ब, राक्षस जातीय व्यन्तर देव ३ ३९३ ब, लवणसागर का पर्वत—निर्देश ३ ४६२ अ, नाम निर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४७९, अकन ३ ४६१, वर्ण ३ ४७८, इस पर्वत का देव ३ ४७४ ब ।

उदकवर्ण—१ ३६३ ब, ग्रह २ २७४ अ ।

उदकावास—१ ३६३ ब, लवणसागर का पर्वत—निर्देश ३ ४६२ अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४७९, अकन ३ ४६१, वर्ण ३ ४७८ । इस पर्वत का देव ३ ४७४ ब ।

उदधि—यदुवश १ ३३७ ।

उदधिकुमार—१ ३६३ ब, भावन देव—निर्देश ३ २०८ अ, अवस्थान २ २०९ ब, ३ ६१२-६१४, ३ ४७१, भवनो की सख्या ३ २१० ब, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६५ । इंद्र - निर्देश ३ २०८ ब, शक्तिचिह्न आदि ३ २०८ ब, अवस्थान २ २०९ ब ।

उदधिकुमार(प्ररूपणा) बन्ध ३ १०२,बन्ध स्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्व स्थान, ४ २९८, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत ४ १८८, सख्या ४.९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव २ २३१ ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

उदधिरक्ष—राक्षसवश १ ३३८ अ ।

उदय १ ३६३ ब, आयुकर्म १ २६२ ब, ईर्यापथ कर्म १ ३५० अ, उदीरणा १ ४०९ ब, १ ४१० अ, दशकरण २ ६ अ, गुणस्थान २ ६ अ, निमित्त १ ३६७, (जीव) परिणाम २.६७ ब, २ ७२ अ, २ ७४ अ, यत्नायत्न २.६७ अ, सक्रमण ४ ८६ ब । प्ररूपणा—उदय १ ३७५, १ ३८६, उदय-व्युच्छित्ति १ ३७५-३८६, उदय-व्युच्छित्ति प्रत्यय ३ १२७ ब, उदयस्थान १ ३८७ ब, त्रिसयोगी भग १ ४००-४ ०८ । स्थिति १.३८६, अनुभाग १ ३८६, प्रदेश १ ३८६ । काल २ १२२, अन्तर १ २३, अल्पबहुत्व १.१७५-१७६ ।

उदयकाल—उदयस्थान १ ३९७, कषाय २.३८, काल २.८१ अ ।

उदयचन्द्र—देशीयगण १.३२४ ब इतिहास १ ३३० अ १.३४४ अ।
उदयदेव—१ ४०९ अ।
उदयनाचार्य—१ ४०९ अ, एकान्त १ ४६५ अ, न्यायदर्शन २ ६३४ अ, वैशेषिक दर्शन २ ६१६ ब।
उदयपर्वत—१ ४०९ अ, विद्याधर नगरी २ ५४५ ब।
उदयप्रभ—तीर्थंकर २ ३७७।
उदय व्युच्छित्ति—१.३७५-३८६, प्रत्यय ३.१२७ ब।
उदयसेन—१ ४०९ अ। वाडवागड संघ—प्रथम १ ३२७ ब, इतिहास १ ३३१ अ। द्वितीय १ ३२७ ब।
उदयसेन मुनि—आशाधर १ २८० ब।
उदयस्थान—१ ३६६ अ, उदय १ ३८७-४०८, स्थान ४ ४५२ ब।
उदया—१ ४०९ अ।
उदयादित्य—१ ४०९ अ, भोजवंश १ ३१० अ।
उदयादित्य (कवि)—इतिहास १ ३३१ ब।
उदयाभाव—उदय १ ३६६ ब।
उदयाभावी क्षय—क्षय २ १७८ अ।
उदयावली—अन्तरकरण १ २५ ब, १ २६ ब, अपकर्षण १ ११४ ब, आवली १ २७९ ब।
उदयी—मगधनरेश १ ३१० ब, १ ३१२, १ ३१३।
उदयोपशमिक—क्षयोपशम २ १८४ अ, मिश्र ३ ३०९ ब।
उदरकृमि निर्गमन—आहारान्तराय १ २९ ब।
उदराग्नि—१ ३५ ब।
उदराग्नि प्रशमन वृत्ति—भिक्षा १ ३२९ ब।
उदार—औदारिक १ ४७२ अ।
उदासीन—अनीहित वृत्ति (ध्येय) २ ५०० ब त्याग विराग २ ३९६ ब।
उदासीन कारण—कारण २ ६५ ब, २ ७० अ, धर्माधर्म द्रव्य २ ४२९ अ, निमित्त २ ६१२ अ।
उदाहरण—१ ४०९ अ, दृष्टान्त, २ ४३७ ब, न्याय २ ६३३ ब, अष्टकर्मों के आठ उदाहरण ३ ९१ अ।
उदितपराक्रम—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ।
उदीच्य—१.४०९ अ।
उदीरक—उदीरणा १ ४१० अ।
उदीरणा—१.४०९, आबाधा १ २५० अ, आयुकर्म २६१ अ, ईर्यापथ कर्म १ ३५० अ, उदय १ ३६७ अ, गुणस्थान २ ६ अ, दशकरण २ ६। प्ररूपणा—उदीरणा १.४१० ब, १ ४११, उदीरणा स्थान १.४१२, त्रिसंयोगी भंग १.४०० अ, १ ४०९ ब, काल १.४१२, अन्तर १.४१२, अल्पबहुत्व १ ४१२। स्वामित्व प्ररूपणा—उदीरणा ४ ५२९, उदीरणा-स्थान ४.५२१, काल २.१२१, अन्तर १.२३, अल्पबहुत्व १ १७५।
उदीर्ण—१ ४१३ अ।
उदुंबरी—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
उद्गम दोष—१ ४१३ अ, आहार १ ३८९ अ, वसतिका ३ ५२८ अ।
उद्दावण—१.४१३ अ।
उद्दिष्ट—१ ४१३, अ, आहार १ २८७, वसतिका ३ ५२८ ब।
उद्दिष्ट त्यागप्रतिमा—१ ४१३ ब।
उद्देश—१ ४१३ ब।
उद्देशिक—१ ४१३ ब, आहार १.२८७ ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ, वसतिका ३ ५२८ ब।
उद्देश्य—१ ४१३, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।
उद्देश्यता—१ ४१३ ब।
उद्देश्यतावच्छेदक—१.४१३ ब।
उद्धारक—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
उद्धार देव—१ ४१४ अ, तीर्थंकर २ ३७७।
उद्धारपल्य—१ ४१४ अ, उपमाकाल प्रमाण २ २१७ ब, उपमा प्रमाण २ २१८ अ।
उद्धारसागर—१ ४१४ अ, कालप्रमाण २ २१० ब।
उद्धृत—१ ४१४ अ।
उदभव—यदुवंश १ ३३७।
उद्भाव—१ ४१४ अ।
उद्भिन्न दोष—१ ४१४ अ, आहार १.२९१ अ, उद्दिष्ट १ ४१३ अ, वसतिका ३.५२९ अ।
उद्भेदिज—२ ३३४ अ।
उद्भ्रान्त—१ ४१४ अ, नरक पटल निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।
उद्यवन—१ ४१४ अ।
उद्यानगृह—वसतिका ३ ५२७ ब।
उद्यापन—१ ४१४ अ, प्रोषधोपवास ३ १६६ ब।
उद्योत—१ ४१४ अ, एकेन्द्रिय १ ३९३, विकलेन्द्रिय १ ३९४, पंचेन्द्रिय १ ३९५।
उद्योतकर—२ ६३४ अ।
उद्योत नामकर्म प्रकृति—१ ४१४ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३ अ, स्थिति ४ ४६५, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६, बंध ३ ९७, बंध स्थान ३ ११०, उदय-१ ३७५, उदय की विशेषता १ ३७३ अ-ब, उदय स्थान १ ३९०, एकेन्द्रिय के उदयस्थान १.३९३,

विकलेन्द्रिय के उदयस्थान १ ३९४, पचेंद्रिय के उदय स्थान १ ३९५, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्प-बहुत्व १ १७१ ब।

उद्योतन—१ ४१४ अ।

उद्योतनसूरि—१ ४१४ ब, इतिहास १ ३२९ ब।

उद्वर्तन – ३.२८२ अ।

उद्वेग —१ ४१४ ब, सुख-दु ख ४.४३० अ।

उद्वेध—१ ४१४ ब।

उद्वेलनसंक्रमण—उपशमसम्यक्त्व ४.३६९ अ, प्रदेश अल्प-बहुत्व १ १७४ ब, सक्रमण ४ ८४ अ, सत्त्व व्युच्छित्ति ४ २८१-२८२। एकेन्द्रियो मे सत्त्व ४ २८२।

उद्वेलना—उपशमसम्यक्त्व ४ ३६८ ब, एकेन्द्रिय मे सत्त्व ४ २८२, सक्रमण ४.८४ ब, ४ ८६ ब।

उद्वेल्लिम—१ ४१४ ब, निक्षेप २ ६०२ ब।

उनचास—सहनानी २ २१९ ब।

उन्नीस—अवधिज्ञान काण्डक १ १९९ ब।

उन्मग्नजला नदी—४ १५ ब।

उन्मग्ना—१ ४१४ ब, विजयार्ध की गुफाओ मे स्थित नदी— निर्देश ३ ४४८ अ, अंकन ३ ४४८ अ, चक्रवर्ती ३ ४ १५ ब।

उन्मत्त – १ ४१४ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।

उन्मत्तजला—१.४१४ ब, विभगा नदी—निर्देश ३.४६०अ, नाम ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४८९, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने।

उन्मान—१.४१४ ब, प्रमाण ३.१४५ अ, हीनाधिक मानोन्मान ४ ५३८ ब।

उन्मार्ग—अशुभोपयोग १ ४३३ ब।

उन्मिश्रदोष—१.४१४ ब, आहार १.२९१ ब, वसतिका ३.५२९ ब।

उन्मुड—यदुवश १ ३३७।

उन्मुख – नारद ४ २१ अ।

उपकरण—१ ४१४ ब, इन्द्रिय १.३०१ ब, जिनलिंग ३ २६ अ, निक्षेपाधिकरण १.५० अ, परिग्रह ३ २६ अ, १ ४१ अ, श्वेताम्बर ४ ७९ ब, बकुश ३ १८० अ, विवेक ३ ५६७ अ, शुद्धि ४.४१ अ, सयोजनाधिकरण १ ५० अ।

उपकल्कि—२.३१ अ।

उपकार – १.४१४ ब, उपदेश १ ४२५ अ, १ ४२६ ब, द्रव्य षटक २ ६३ ब, २ ६५ अ, निमित्त २ ६१२ अ, भेदाभेद ४ ३२४ ब, मिथ्यात्व २ २३ अ, शरीर ४ ८ अ।

उपकारक—शरीर ४ ८ अ।

उपकारी—निमित्त २ ६१२ अ।

उपकार्य-उपकारक संबध—षट्द्रव्य २ ६३ ब, सम्बन्ध ४ १२६ अ।

उपकेशगच्छ—श्वेताम्बर ४ ७७ ब।

उपक्रम—१ ४१६ ब, आयुष्क १ २५९ अ।

उपगूहन—१ ४१६ ब।

उपग्रह—१ ४१७ ब, उपकार १ ४१४ ब, व्यभिचार (शब्द नय) १ ४१७ ब, २ ५३८ अ।

उपघात—१ ४१७ ब।

उपघात नामकर्म प्रकृति – १ ४१७ ब, असातावेदनीय ३ ५९३ ब, परघात नामकर्म ३ ९५ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६५, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, बधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९ ब।

उपचरित—१ ४१८ अ, सापेक्षधर्म १ १०९ अ, ४ ३२३ ब।

उपचरित-असद्भूतव्यवहार नय—उपचार १.४१९ अ, १ ४२० अ, १ ४२३ अ, नय २ ५६२ अ।

उपचरित नय –नय २ ५६० ब।

उपचरित स्वभाव—स्वभाव १.४१८ अ, ४.५०६ ब।

उपचार—१.४१८ अ, अतिचार १.४३ ब, अभेदोपचार १ ४२३ ब, कर्ता-कर्म २.२१-२४, कार्य-कारण २.६६ अ, धर्मध्यान २.४७९ अ, भेदोपचार (नय) २ ५६० ब, व्यवहार नय २ ५६२ ब।

उपचारकथन—कथन २ २२ अ।

उपचारछल—४ ४२३ ब, छल २.३०६ अ,

उपचार नय—१.४२३ अ।

उपचार विनय—१ ४२३ ब, विनय ३ ५४९ ब, ३.५५१ ब।

उपचितावयव पद—पद ३ ५ अ।

उपदेश—१.४२३ ब, आदेश १ २४६ अ, उपयोग १.४२९ ब, रुचि सम्यक्त्व ४ ३४८ ब, वचन ३.४९६ ब, सल्लेखना ४ ३९६ अ, साधु ४.४०६ ब।

उपदेशदर्शनार्य—आर्य १ २७५ अ।

उपदेशसम्यक्त्वार्य—आर्य १ २७५ अ, ४.३४८।

उपद्रवण—१.४८ अ।

उपद्रावण कर्म—२.२६ अ।

उपधातु—१.४२६ ब, औदारिक शरीर १.४७१ ब।

उपधान—१ ४२६ ब।
उपधि—१ ४२७ अ, अचेलक १ ४० अ, अपवाद मार्ग १ १२२ ब, परिग्रह ३ २५ ब, ३ २९ अ, माया ३.२९६ अ, वचन ३ ४९७ ब, वाक् १ ४२७ अ, ३ ४९७ अ, सल्लेखना ४ ३९० ब।
उपनदन—नदन वन का खंड ३ ४५० अ।
उपनय—१ ४२७ अ, अनुमान अवयव १ ९८ ब, नय २ ५५९ अ, न्याय २ ६३३ ब, ब्रह्मचारी १ ४२७ ब, ३ ४८८ अ, स्याद्वाद ४ ५०० अ।
उपनयाभास—१ ४२७ ब।
उपनिषद् भाष्य—वेदान्त ३ ५९५ ब।
उपनीति—१ ४२७ ब, संस्कार ४ १५१ ब, १५२ ब।
उपनीतिक्रिया—संस्कार ४ १५१ अ, ४ १५२ ब, मन्त्र ३ २४७ अ।
उपन्यास—१ ४२७ ब।
उपपत्तिसमा—१ ४२७ ब।
उपपाण्डुक—पाण्डुक वन का खण्ड ३ ४५० ब।
उपपाद—१ ४२७ ब, जन्म २ ३१७ अ, लब्धिप्राप्त वैक्रियिक शरीर ३ ६०३ ब, षट्कालगत वृद्धि हानि २ ९३, संयमलब्धि स्थान ३ ४१४ अ।
उपपादक्षेत्र—१ ४२७ ब, क्षेत्र २ १९२ अ, २ १९७-२०७, २ ३१७।
उपपादगृह—१ ४२७ ब, देव-भवनों में २ ३५१, ३ २१० ब।
उपपादज—जन्म २ ३१२ ब, २ ३१७ अ।
उपपादयोग स्थान—योगस्थान ३ ३८१ ब, ३ ३८२।
उपपादसभा—चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ, स्वर्ग विमान ४ ५२१ अ।
उपपार्श्वसभा—व्यन्तर देवों के भवन ३ ६१२ ब।
उपबृंहक—उपगूहन १ ४१७ ब।
उपबृंहण—१ ४२८ अ, उपगूहन १ ४१७ अ।
उपभोग—१ ४२८ अ, परिग्रह ३ २७ ब, भोग ३ २३७ ब।
उपभोगपरिभोग—अनुभव १ ८१ अ, अनर्थदंड १ ६४ ब, सुख ४ ४३० अ।
उपभोग-परिभोग-परिमाण व्रत—अनर्थदण्ड १ ६४ ब, सचित्तत्याग प्रतिमा ४ १५८ अ।
उपभोगपरिभोगानर्थक्य—१ ६४ ब।
उपभोग लोभ—लोभ ३ ४९२ ब।
उपभोगान्तराय कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, १ २७ ब, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३७। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसंयोगी भंग १ ३९९। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९ ब।
उपमाकाल—गणित २ २१७ ब।
उपमान—१ ४२८ अ, केवलज्ञान २ १५० ब, प्रमाण ३ १४४ ब।
उपमान-उपमेय संबंध—मतिज्ञान ३ २५६ ब।
उपमा प्रमाण—१ ४२८ अ, गणित २ २१८ अ।
उपमा मान—१ ४२८ अ।
उपमा सत्य—१ ४२८ अ, सत्य ४ २७१ ब।
उपमिति भवप्रपंच कथा—इतिहास १ ३४२ अ।
उपयुक्तदोष—१ ४२८ अ।
उपयुक्त नोआगम भाव मंगल—२ ६०५ ब।
उपयोग—१ ४२८ अ, अनुभव १ ८४ ब, १ ८५ अ, १ ८६ अ, अपवाद मार्ग १ १२० ब, आकार १ २१८ ब, इन्द्रिय १ ३०२ ब, केवली २ १६५ ब, २ १६६ अ, पाप-पुण्य १ ४३३-४३५ अ, मार्गणा ३ २९८ अ, योग ३ ३७७ अ, शुद्धाशुद्ध तथा शुभाशुभ १ ८५ अ, १ ८६ अ, १ १२० ब, श्रुतज्ञान ४ ६२ ब।
उपयोगिता क्रिया—संस्कार ४ १५२ ब।
उपरतबंध—१ ४३५ अ, आयुकर्म १-२६३ अ-ब, बंध ३ १७२ अ।
उपराग—अशुद्धोपयोग १ ४३३ ब।
उपरितन कृष्टि—१ ४३५ अ, कृष्टि २ १४१ अ।
उपरितन स्थिति—१ ४३५ अ, उपशम १ ४३८ ब, स्थिति ४ ४५७ अ।
उपरिम कृष्टि—कृष्टि २.१४१ अ।
उपरिमग्रैवेयक—४ ५१८-५२०।
उपरिम द्वीप—१ ४३५ अ।
उपलब्धि—१ ४३५ अ, अनुभव १ ८२ ब, जीव २ ३३२ अ, बुद्धि ३ १८४ ब, मतिज्ञान ४ ६२ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५७ अ, हेतु ४ ५३९।
उपलब्धिसमा जाति—१ ४३५ ब।
उपवन भूमि—१ ४३५ ब, समवसरण ४ ४३० ब।
उपवर्ष—वेदान्त ३ ५९५ ब।
उपवर्ष—मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ।
उपवास—१ ४३५ ब, प्रोषधोपवास ३ १६३ अ, ३ १६४ ब, शुभोपयोग १ ४३४ ब, सावद्य कर्म ४ ४२१ ब।
उपविष्टोत्थित—व्युत्सर्ग ३ ६१९ ब।
उपविष्टोपविष्ट—व्युत्सर्ग ३ ६१९ ब।

उपवेल्लन—१.४३५ ब, निक्षेप २.६०२ ब।

उपवेशन—आहारान्तराय १ २९ ब

उपशम—१ ४३५ ब, करण (अन्तर) १.२५-२६, करण (दश) २ ६, क्षपक श्रेणी ४ ७२ ब, ४ ९२ ब, गुणस्थान २ ६ अ, यत्नायत्न २ ६७ अ, सख्या ४ ९२ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ।

उपशमकरण—उपशम १ ४३८ ब, निषेक १ ३७१ ब।

उपशमकाल—अल्पबहुत्व १ १६१ अ, काल २ ८१ अ।

उपशमचारित्र—१ ४४२ ब, उपशम १ ४३९ ब।

उपशमना—अल्पबहुत्व १ १७५।

उपशमश्रेणी—१ ४४२ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ अ, परिहार विशुद्धि ३ ३७ अ, प्रवेशको की सख्या ४ ९४, बद्धायुष्क १ २६२ ब, मरण ३ २८३ अ, श्रेणी ४ ७३ अ, समुद्घात ४ ३४३ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३६९ अ।

उपशमश्रेणी (प्ररूपणा)—बध २ १००, बंधस्थान ३ ११०, ३ १११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९२, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७७ ब, सत्त्वस्थान ४.२८९, ४ ३०४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ अ। सत् ४ १६३, सख्या ४ ९४, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ १००, अतर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३।

उपशमसम्यग्दर्शन—उपशम १ ४३७-४३९, करणत्रिक २ ६-१४, देव (अपर्याप्त) २ ४४७ ब, पचलब्धि ३ ४१२ अ, परिहारविशुद्धि ३ ३७ अ, मनपर्यय ३ २६९ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३६६ ब। प्ररूपणा—बंध ३ १०७, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८५, उदय स्थान १ ३९३, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७१, ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ २८९ ४ ३०४, त्रिसयोगी भग १ ४०८ अ। सत् ४ २५५, सख्या ४.१०८ क्षेत्र २ २०६, स्पर्शन ४ ४९२, काल २ ११७, अंतर १ २०१, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५२, भागाभाग ४ ११४।

उपशमसम्यग्दृष्टि—उपशातकषाय ४ ३१२ ब, जीव ४ ३१२ ब, सख्या ४ ८७ अ।

उपशांतकर्म—१ ४४२ ब।

उपशांतकषाय—१ ४४२ ब, अवधिज्ञानी ४ ३१२ ब, आरोह अवरोहण २ २४७ अ, अवरोहण का कारण ४ ७३ अ, उपशम १ ४३६ ब, करण (दश) २.६ अ, क्षायिक सम्यग्दृष्टि ४ ३१२ ब, परिषह ३.३४ अ, मनुष्य ४ ३१२ ब, वीतराग छद्मस्थ १ ४४२ ब, संक्लेश विशुद्धि ४ ७३ अ।

उपशांतकषाय (प्ररूपणा)—बंध ३ ९८, बंधस्थान ३ ११०-१११, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३९२ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २८९-३०४, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१७४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ अ। सत् ४ १६४, संख्या ४.९४, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २.१००, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ अ, अंतर १ ७, भाव ३.२२२ ब अल्पबहुत्व १ १४३।

उपशांतद्रव्य—उपशम १ ४४१ अ।

उपशांतमोह—कषाय २ ४० ब, काय २.४५ ब, दशकरण २ ६ अ।

उपशामक—१ ४४३ अ, अपूर्वकरण १.१२५ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब, दशकरण २.६ अ, परिहार विशुद्धि ३ ३७ अ, बधक ३ १७९ अ, बद्धायुष्क १ २६२ ब, मरण ३ २८३ अ, श्रेणी ४.७३ अ, समुद्घात ४ ३४३ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६९ अ।

उपशामक (प्ररूपणा)—बध ३.९७, बधस्थान ३ ११०-१११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३९२, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२७८ ब, सत्त्वस्थान ४.२८९, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ अ। सत् ४.१६३, संख्या ४.९४ क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४.४७७, काल २ १००, अतर १.७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३।

उपसंयत—१ ४४[illegible] ब, समाचार ४.३३६ ब, ३३७ अ।

उपसंपदा—१ ४४[illegible] ब, सल्लेखना ४.३९० ब।

उपसमद्र—१ ४४३ [illegible]।

उपसर्ग—१ ४४३ ब, [illegible]न्तातिशय१ १३७ ब, आहारान्तराय १ २९ अ, केवली २ १५७ अ, तीर्थंकर २.३७२ ब, सामायिक ४.४१ ब।

उपसौमनस—सौमनस [illegible]न का खड ३ ४५० अ।

उपस्था (इन्द्रिय)—१ ४३ ब, प्रधानता ४.१३९ अ, सयम ४ १३९ अ।

उपस्थापना—१ ४४[illegible] ब, प्रायश्चित्त ३ १५८ ब, ३ १६२ अ।

उपांग—शरीर १ [illegible] ब, १ २ अ।

उपात्त—१.४४३ ब [illegible] आकिंचन्य धर्म १.२२४ ब।

उपादान—१ ४४३ ब, असमर्थता २ ६२ ब, २.६९ ब, २ ७३ ब, का[illegible] २.५४ अ, २ ६० अ, २ ६१, २.६२, निमित्त २.६ अ, २ ७२ अ, परतंत्रता २ ६२ ब, २.६९ ब, २ [illegible] ब, प्रधानता २.६२ अ, स्वतन्त्रता २.६० अ।

उपादान-उपादेय संबंध – कारण-कार्य २ ७३ अ, सम्बन्ध ४ १२६ अ।
उपादेयबुद्धि – सम्यग्दर्शन ४ ३५६ ब।
उपाधि—१ ४४३ ब, अतिचार १ ४३ ब, साधु ४ ४१० ब।
उपाध्याय – १ ४४४ अ, ओम् १ ४६९ ब, गुरु २ २५१ ब, देवत्व २.४४४ ब, ध्येय २ ५०१ अ, पूजा ३ ७७ अ, प्रतिमा २ ३०१ अ, साधु ४ ४१० अ।
उपाय-उपेयभाव – कारण-कार्य २ ५४ ब, सम्बन्ध ३ ४३३ ब।
उपायविचय—१ ४४४ ब, धर्मध्यान २ ४७९ अ।
उपालभ – १ ४४४ ब।
उपासकाध्ययन – १ ४४४ ब, श्रुतज्ञान ४ ६८ अ।
उपासना – १ ४४४ ब, विनय ३ ५५१ ब।
उपेंद्र – १ ४४४ ब।
उपेक्षा—१ ४४४ ब, ध्यान २ ४९५ अ, सामायिक ४ ५१४ ब।
उपेक्षा संयम – १.४४४ ब, उत्सर्ग मार्ग १.१२१ अ, शुद्धोपयोग १ ४३१ अ, १ ४३३ ब, संयम ४ १३७ ब।
उपेय-उपाय संबंध—कारण-कार्य २ ५४ ब, सम्बन्ध ४ १२६ अ।
उपोद्घात—१ ४४४ ब, उपक्रम १ ४१६ ब।
उप्पल—संख्या प्रमाण २ २१४ ब।
उभयदूषण—१ ४४४ ब।
उभयद्रव्य—१ ४४४ ब, कृष्टि २ १४१ ब।
उभय प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त ३ १५८ अ, ब।
उभयबध—बन्ध ३ १७१ अ।
उभयबंधी प्रकृति—प्रकृति बंध ३ ८८ ब।
उभय मन-वचन-योग – मनोयोग ३ २७७ ब, वचनयोग ३ ४९८ अ। प्ररूपणा-बध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ २१३, ४ २१४, संख्या ४ १०२, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४ ४८५, काल २ १०८, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४८ अ।
उभयमोहिनी—सासादन ४ ४२४ ब।
उभयशुद्धि – १ ४४४ ब।
उभयसारी ऋद्धि—१ ४४५ अ, ऋद्धि १ ४४८-४४९ ब।
उभयातिचार – प्रायश्चित्त ३ १५८ ब।
उभयानंत—अनंत १.५५ ब।
उभयानंद—शीतलनाथ २ ३७८।
उभयासंख्यात—१ ४४५ अ, असंख्यात १ २०६ अ।
उभयोदयबंधी प्रकृति—१ ३९८ अ, प्रकृतिबंध ३ ८८ ब, ३ ८९ ब।
उमा – तीर्थंकर (महाभद्र) २ ३९२।
उमास्वामी – १ ४४५ अ, निर्देश १ परि०/४ २ ४, मूलसघ १ ३२२ ब, नन्दिसघ १ ३१८ ब, देशीयगण १ ३१९ अ, इतिहास १ ३२८ ब, १ ३४० ब।
उरग – निर्देश २ ३६७ ब, आयु १ २६३।
उराल—औदारिक १ ४७१ अ।
उरुकुल गण – १.४४५ ब, द्रविड सघ १ ३२० ब।
उरु बिल्व—१ ४४५ ब।
उर्मिमान—यदुवंश १ ३३५।
उर्मिमालिनी – १ ४४५ ब, विभंगा नदी – निर्देश ३ ४६० अ, नाम ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४८९, ३.४९०, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने।
उर्वक – १ ४४५ ब।
उलूक – अक्रियावादी १ ३२ अ, एकान्त मत १ ४६५ अ, वैशेषिक दर्शन ३ ६०७ ब, स्वप्न ४.५०५ अ।
उल्का – सुविधिनाथ २ ३८२।
उल्कापात – अजितनाथ आदि तीर्थंकर २.३८२।
उवधि – उपधि अतिचार १.४३ ब।
उशीनर – १ ४४५ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
उषित अन्त—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०२ ब।
उष्ट्रकूट—१.४४५ ब, कृष्टिकरण २ १४१ ब।
उष्ण—परिषह १ ४४५ ब, ३.३३ ब, ३.३४ अ। योनि १.४४५ ब, ३.३८७ अ।
उष्मगर्भकूट—१.४४५ ब, मानुषोत्तर पर्वत – निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अंकन ३ ४६४ के सामने।
उष्माहार – १ ४४५ ब, आहार २ ९९ अ।
ऊमर – भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब, श्रावक ४.५० ब।
ऊर्जयंत – १ ४४५ नेमिनाथ ब, २ ३८४ अ।
ऊर्ध्वक्रम – १ ४४५ ब, २ १७२ अ।
ऊर्ध्वगच्छ – श्रेढी व्यवहार गणित २.२३२ अ।
ऊर्ध्वगति – १ ४४५ ब, गति २ २३५ अ, जीव २.३३५ ब, मोक्ष ३ ३२८ ब।
ऊर्ध्वगमन – गति २.२३५ अ, जीव २.३३५ ब, मुक्ति ३ ३२८ ब।
ऊर्ध्वगुरुत्व—गुरुत्व २ २५३ ब।
ऊर्ध्वगौरव धर्म—जीवगमन २.२३५ अ।
ऊर्ध्वग्रैवेयक—स्वर्ग ४.५१८-५२०।
ऊर्ध्वचय—श्रेढी व्यवहार गणित २ २३२ अ।
ऊर्ध्वप्रचय—१ ४४५ ब, क्रम २ १७२ अ।

ऊर्ध्वलोक—१.४४५ ब, क्षेत्र २ १९१ ब, स्वर्ग—निर्देश ३ ४४० ब-४४४ अ, ४ ५१४, चित्र ४ ५१५। सिद्ध (अल्पबहुत्व) १ १५३ अ।

ऊर्ध्वता सामान्य—क्रम २ १७२ अ-ब, सामान्य ४ ४१२ अ।

ऊर्ध्वसामान्य—क्रम २ १७२ अ-ब, सामान्य ४ ४१२ अ।

ऊर्ध्वसूर्य तप—कायक्लेश २ ४७ अ।

ऊर्ध्वांश—गुण २.२४१ ब।

ऊह—काल का प्रमाण २.२१६ अ।

ऊहांग—काल का प्रमाण २ २१६ अ।

ऊहा—१ ४४५ ब।

ऊहापोह—हेतु ४ ५४० ब।

ऋ

ऋक्षराज—१.४४६ अ, वानर वंश १.३३८ ब।

ऋक्षवान—मनुष्य लोक ३ २७५ ब।

ऋजु—मनःपर्यय ३ २६४ अ।

ऋजुकायकृतार्थज्ञ—मनःपर्यय ३ २६४ ब।

ऋजुकूला—वर्द्धमान २.३८४।

ऋजुगति—उपपाद १ ४२७ ब, विग्रह गति ३ ५४० ब।

ऋजुत्व—मनःपर्यय ज्ञान ३.२६४ अ।

ऋजुमति—१ ४४६ अ, मनःपर्यय ३.२६४ ब।

ऋजुमनस्कृतार्थज्ञ—मनःपर्यय ३ २६४ ब।

ऋजुवाक्कृतार्थज्ञ—मनःपर्यय ३.२६४ ब।

ऋजुसूत्र नय—१.४४६ अ, उपक्रम १ ४१६ ब, उपचार १ ४२३ अ, कषाय २ ३९ अ-ब, नय २ ५२७ ब, ५२८ अ, ५३४ ब, निक्षेप २.५९५ अ-ब, सप्तभंगी ४ ३१८ ब, ४ ३२३ ब।

ऋजुसूत्राभास—नय २ ५३५ अ।

ऋण—१.४४६ अ, गणित २ २२२ ब।

ऋत—१.२७२ ब, वचन १.२०८ अ।

ऋतु—१.४४६ अ, कालप्रमाण २.२१६ ब, परिवर्तन (तीर्थंकर) २.३८२, स्वर्ग पटल ४ ५१६।

ऋतु (स्वर्गपटल)—सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४.५१९ ब। देव—आयु १.२६६।

ऋतुकाल—स्त्री (विवाह) ३.५६५ ब।

ऋतुविहीन फलोत्पत्ति—अर्हन्तातिशय १.१३७ ब।

ऋद्धि—१.४४६ अ, आर्य १.४५७ अ, १.२७४ ब, कुन्दकुन्द २ १२७ अ, गणधर २ २१२ अ।

ऋद्धिगौरव (दोष)—१ ४४६ अ, गारव (भिक्षा) २ २३९ अ, व्युत्सर्ग ३ ६२२ ब।

ऋद्धिप्राप्त आर्य—१ ४५७ अ, आर्य १ २७४ ब। ऋद्धि १ ४४७।

ऋद्धिमद—१ ४५७ अ, मद ३ २५२ ब।

ऋद्धीश—१ ४५७ ब, सौधर्म पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अंकन ४ ५१९ ब। देव आयु १ २६६।

ऋषभ—तीर्थंकर ऋषभ का चिह्न २ ३७९, तीर्थंकर सीमन्धर का चिह्न २ ३९२, स्वर १ ४५७ ब, ४ ५०८ ब।

ऋषभजयन्ती व्रत—१ २४५ ब।

ऋषभनाथ—१ ४५७ ब, अच्युत स्वर्ग १.४१ अ, इक्ष्वाकु वंश १ ३३५ अ, कुरुवंश १ ३३५ ब, कुलकर ४ २३, केशलोच २ १७० अ, पूर्व भव २ ३७९-३९१, भरत चक्री ४ ११ ब, ४ १६ ब, भोजवंश १ ३३६ ब, राज्यवंश १ ३३५ ब, विद्याधरवंश १ ३३८ ब, सोमवंश १ ३३९ ब।

ऋषभशासनजयन्तीव्रत—१ २४५ ब।

ऋषभसेन—ऋषभनाथ २ ३८७।

ऋषभानन—तीर्थंकर २ ३९२।

ऋषि—१ ४५७ ब, अनगार १ ६२ अ।

ऋषिकेश—१ ४५७ ब।

ऋषिदास—१ ४५७ ब, अनुत्तरोपपादक १ ७० ब।

ऋषिपंचमी व्रत—१ ४५८ अ।

ऋषिपुत्र—१ ४५८ अ, इतिहास १ ३२९ अ।

ऋषिमंडल यंत्र—१ ४५८ अ, यंत्र ३ ३४९।

ऋषिवंश—१ ४५८ अ, इतिहास १ ३३५ ब, सोमवंश १ ३३९ ब।

ऋष्यमूक—मनुष्यलोक का पर्वत ३ २७५ ब।

ए-औ

ए—एकेंद्रिय की सहनानी २.२१९ अ।

एक—१.४५८ अ, एक अंश २.४८६ अ, एक अजीव कर्म २.२६ अ, एक अजीव कषाय २.३५ ब, एक क्षेत्रावधि-ज्ञान १.१८८ ब, एक क्षेत्र स्पर्श ४.४७५ ब, गणित

२.२१४ ब, गृहीत द्रव्य २.२१९ अ, एक जीवानुयोग द्वार १ १०२ अ, एक जीवकर्म २.२६ अ, एक जीव एक अजीव कर्म २.२६ अ, एक जीव नाना अजीव कर्म २.२६ अ, एक जीव कषाय २ ३५ ब, एक जीव एक अजीव कषाय २ ३५ ब, एक जीव नाना अजीव कषाय २ ३५ ब, एक द्रव्य २.४५६ ब, एक नय २.५२४ अ, एक प्रदेशत्व १ १०९ अ, एक प्रदेशी २ ८३ ब, ४.३२३ ब, एक भक्त उपवास १.४५८ ब, ३ १६४ ब, एक-भुक्ति (साधु का गुण) २.१८९ अ, एक विषयक मतिज्ञान ३ २५५ ब, एक यम २ ३०८ ब, सख्या का मान २ २१४ ब।

एक अंगधर—मूलसंघ १.३१७।

एक-अशग्राही ज्ञान—नय २ ५१४ अ।

एक अग्र—धर्मध्यान २.४८६ अ।

एक-अजीव कर्म—२ २६ अ।

एक-अजीव कषाय—२.३५ ब।

एक-अनत—१ ४६६ अ, अनन्त १ ५६ अ।

एक-असंख्यात—१ ४६६ ब, असख्यात १ २०६ अ।

एक-आसन विहार—अर्हत ३ ५७५ ब।

एक-एकसंगति—१ ४५१ अ।

एक-कर्वटनिद्रा—२ ६०१ ब, कायक्लेश २.४७ ब।

एकक्षेत्र—अवधिज्ञान १.१८८ ब, स्पर्श ४.४७५ ब।

एकगृहभोजी—क्षुल्लक २.१८९ अ।

एकज्ञान सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५४।

एकचारित्र सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३।

एकचूड—विद्याधर वश १ ३३९ अ।

एकजटि—१ ४५८ अ, ग्रह २.२७४ अ।

एकजीव—अनुयोगद्वार १ १०२ अ।

एकजीव एक अजीव कर्म—२ २६ अ।

एकजीव-एक अजीव कषाय—२.३५ ब।

एकजीव कर्म—२ २६ अ।

एकजीव कषाय—२ ३५ ब।

एक-जीव नाना-अजीव कर्म—२.२६ अ।

एक जीव नाना अजीव कषाय—२ ३५ ब।

एकट्ठी—१ ४५८ अ। सख्या २.२१४ ब।

एकत्व—१ ४५८ अ, अभ्यास २.५० ब, अन्यत्व १ ७८ अ, उपचार १ ४२१ अ, ज्ञान २ ५४६ अ, २.५४९, बुद्धि ४ ४११ ब, व्यवहार २.५५८ ब, सापेक्ष धर्म १.१०९ अ, १.१११ अ ४.३२३ ब।

एकत्वप्रत्यभिज्ञान—१.४५८ अ, प्रत्यभिज्ञान ३.१२५ अ।

एकत्व भावना—१.४५८ अ, अनुप्रेक्षा १.७४ ब, १ ७९ ब, भावना ३ २२४ ब।

एकत्वविक्रिया—१ ४५८ अ, विक्रिया ३ ६०२ अ।

एकत्ववितर्क अविचार—शुक्लध्यान ४ ३४ अ-ब, ३६ अ, धर्मध्यान २.४८३ ब, प्रतिपत्ति ४.३५ ब, केवली २ १६५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६७।

एकत्वसप्ततिका—इतिहास १.३४३ ब।

एकत्वस्थिति—४.४३२ ब।

एकत्वानुप्रेक्षा—१.४५८ अ, १ ७४ ब, १.७९ ब, अन्यत्व १.७९ ब।

एकदिशात्मक—१.४५८ अ।

एकदेश—१.४५८ अ। अभिघट दोष (आहार) १.२९० ब, अभिघट दोष (उद्दिष्ट) १.४१३ अ, ज्ञान (नय) २.५१३ ब, जिन २.३२८ ब, त्याग (अपवाद मार्ग) १ १२० ब, न्याय (नय) २ ४५० ब, परित्याग (शुभोपयोग) १.४३३ ब, विरक्त (व्रत) ३ ६२७ ब, शुद्ध निश्चय नय २.५५३ ब, हेत्वाभास १.२१० अ।

एकद्रव्य—२ ४५६ ब।

एकनय—२.५२४ अ।

एकनासा—१ ४५८ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३.४६८।

एकपदार्थस्थित्व—सापेक्षधर्म १.१०९ अ।

एकपर्यायमयत्व—सापेक्ष धर्म १ १०९ अ।

एकपर्वा—१.४५८ ब, विद्या ३ ५४४ अ।

एकपादतप—कायक्लेश २.४७ अ।

एकपार्श्वशय्यासन—कायक्लेश २ ४७ ब, निद्रा २.६०९ ब।

एकप्रदेशत्व—सापेक्ष धर्म १ १०९ अ, ४ ३२३ ब।

एकप्रदेशी—काल द्रव्य २ ८३ ब।

एकभक्त—१.४५८ ब, प्रोषधोपवास ३.१६४ ब।

एकभुक्ति—क्षुल्लक २ १८९ अ।

एकयम—सामायिक (छेदोपस्थापना) २.३०८ ब।

एकरात्रिप्रतिमा—१.४५८ ब।

एकरूपत्व—सापेक्ष धर्म १ १०९ अ।

एकलठाणा—१.४५८ ब।

एकलविहारी—१.४५८ ब, साधु ४ ४०३ ब।

एकलव्य—१ ४५८ ब।

एकविंशति—स्वभाव ४.५०६ ब।

एकविंशति-गुणस्थान-प्रकरण—१.४५८ ब, इतिहास १.३४१ अ।

एकविध—१ ४५८ ब, मतिज्ञान ३ २५५ ब।

एकशैल—१ ४५८ ब, विदेह वक्षार—निर्देश ३.४६० अ,

नाम ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३.४८६, वर्ण ३.४७७, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने। इस पर्वत का कूट तथा देव ३.४७२ ब।

एकश्रेणिवर्गणा—१ ४५८ ब, अल्पबहुत्व १ १५५।

एकसंख्या—१ ४५८ ब।

एकसंग्रह – सल्लेखना ४.३९० ब।

एकसस्थान—१.४५८ ब, ग्रह २ २७४ अ।

एक सौ उन्हत्तर—शलाकापुरुष ४ ९ ब।

एकस्थान उपवास—कायक्लेश २ ४७ अ।

एकस्थानीय—अनुभाग १ ९१ ब।

एकस्पर्धक वर्गणा—सहनानी २ २१९ अ।

एक हजार आठ—अर्हन्त के लक्षण १ १३८ अ।

एकांग—नमस्कार २ ५०६ अ।

एकांत—१ ४५९ अ, अनेकान्त १.१०७ अ, ४ ३१७ ब, आगमार्थ १.२३० ब, आलोचना १ २७८, नय १ १०७ ब, २ ५१६ ब, निषेध १ २३१ ब, मिथ्यात्व १ ४६४ अ। विविक्त शय्यासन ३.५६५ ब, सप्तभंगी ४ ३१७ ब, सापेक्ष धर्म १.१०९ अ, ४.३१७ ब।

एकांत स्थान—कृतिकर्म २ १३६ ब, व्युत्सर्ग ३ ६२० ब।

एकांतानुवृद्धि—उपशम १ ४३९ ब, योग १ ५०३ अ, योगस्थान ३ ३८१ ब, १.४६५ ब।

एकातिक—१ ४६५ ब।

एकाकी—विहार ३ ५७३ ब, साधु ४ ४०६ अ।

एकाग्र—१ ४६५ ब, धर्मध्यान २ २८५ अ, ध्यान २ ४९५ अ-ब, २ ४९६ ब, प्राणायाम ३ १५६ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, स्वाध्याय ४ ५२४ ब।

एकादश—रुद्र ४ २२ अ, प्रतिमा (श्रावक) ४ ४९ ब, व्रत (श्रावक) ४ ४७ ब, सयमस्थान (श्रावक) ४ ४८ ब।

एकादश अंगधर—मूलसघ १.३१६, १ ३२२। श्रुतकेवली ४ ५६ अ।

एकानंत—१.४६६ अ, अनत १ ५५ ब।

एकावली व्रत—१.४६६ अ।

एकासंख्यात—१.४६६ ब, असख्यात १ २१५ अ।

एकीभावस्तोत्र—१ ४६६ ब, स्तोत्र ४ ४४९ ब, इतिहास १.३४३ अ।

एकेंद्रिय—१.४६६ ब, अंगोपाग नामकर्म १.३७४ अ, अवगाहना १ १७९, असज्ञी ४.१२१ ब, इन्द्रिय १ ३०६ ब, आयु १.२६३-२६४, काययोग ३ ५८७ अ, जीव समास २ ३४३, तिर्यञ्च २.३६७, मन ४ १२२ ब, वेद ३.५८७ ब, संक्लेश-विशुद्धि स्थान अल्पबहुत्व १ १६०, सहनानी २.२१९ अ, स्थावर ४ ४५४ अ।

एकेंद्रिय (जीव)—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०३, बन्धस्थान ३ ११३ उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १९३, सख्या ४ ९९, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८३, काल २ १०६, अन्तर १ ११, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

एकेंद्रिय जाति नामकर्म—१ ४६६ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३ त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६९।

एकोनपंचाशत—रज्जु प्रतर २ २१९ ब।

एकोनविंशति—अवधिज्ञान के काण्डक १ १९९ ब।

एतिकायन—१ ४६६ ब, अज्ञानवादी १ ३८ ब, एकान्त मिथ्यात्वी १ ४६५ अ।

एर—१ ४६६ ब।

एरा—चक्रवर्ती ४ ११ ब, शान्तिनाथ २ ३८०।

एरिगित्तर गण—१ ४६६ ब, इतिहास १ ३२२ अ।

एलाचार्य—१ ४६६ ब, आचार्य १ २४२ ब, कुन्दकुन्द २ १२६ ब, १२७ अ, इतिहास १ ३२९ ब।

एलापुत्र व्यास—१ ४६६ ब, एकान्त १.४६५ ब, वैनयिक ३.६०५ अ।

एलेय—१ ४६६ ब, वैनयिक ३ ६०५ अ, हरिवश १ ३३९ ब।

एवंभूत नय—१ ४६६ ब, उपक्रम १ ४१६ ब, नय २ ५२८ अ-ब, २.५४० ब, निक्षेप २.५९५ ब, सप्तभंगी ४.२२३ ब।

एवंभूत नयाभास—२.५४२ अ।

एवकार—१.४६६ ब. अपेक्षा १.४६१ अ, एकान्त १.४६० अ, १.४६२ ब, नय ४.३१७ अ, स्यात् ४.४९६ अ, ४ ५०२ अ, स्याद्वाद ४.५०१ अ।

एशान—१.४६७ ब। स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ ब, पटल द्वक श्रेणीबद्ध ४ ५१६-५२०, उत्तर विभाग ४.५२० ब, अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४.५१५, चित्र ४ ५१९ ब। देव—अवगाहना १.१८० ब, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६६, आयु के बन्धयोग्य परिणाम १.२५८ अ। इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, परिवार

४५१२-५१३, उत्तरेन्द्र ४५११ अ, अवस्थान ४५२० ब, चिह्न आदि ४५११ ब, विमान, नगर व भवन ४५२०-५२१।

एशानदेव (प्ररूपणा)—बंध ३.१०२, बधस्थान ३११३, उदय १३७८, उदयस्थान १३९२ ब, उदीरणा १४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४३०५, त्रिसंयोगी भग १४०६ ब। सत् ४१९२, संख्या ४९८, क्षेत्र २२००, स्पर्शन ४४८१, काल २१०४, अन्तर ११०, भाव ३२२० अ, अल्पबहुत्व ११४५।

एषणा—१४६७ ब, दोष (वसतिका) ३.५२९ ब।

एषणाशुद्धि—१४६७ ब, आहार १२८५ ब, भक्ति ३.१९९ अ।

एषणासमिति—१४६७ ब, समिति ४३४१ अ।

एसोदसव्रत—१.४६८ अ।

एसोनवव्रत—१४६८ अ।

ऐंद्रदत्त—१४५८ अ, वैनयिक ३६०५ अ, विनयवादी १४६५ अ।

ऐंद्रध्वज—पूजा ३७४ अ।

ऐंद्रिय दुःख—सुख ४४३० ब।

ऐंद्रिय सुख—सुख ४.४३० ब।

ऐतिह्य—१.४६८ अ, इतिहास १३०९ अ।

ऐरावत (क्षेत्र)—१.४६८ अ, निर्देश ३४४६ अ, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३४४४, ३.४६४ के सामने, कर्मभूमि ३२३५ ब, काल विभाग २.९२ अ, २९३, अवगाहना ११८०, आयु १२६३-२६४। सत प्ररूपणा ४१८४।

ऐरावत (द्रह व कूट)—१४६८ अ, उत्तरकुरु का द्रह—निर्देश ३४५६ ब, नाम ३४७४ अ, विस्तार ३४९०-४९१, अंकन ३४४४, ४५७, ४६४४ के सामने। कूट—पद्म आदि द्रह—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३४८३, अंकन ३.४५४। शिखरी पर्वत का—निर्देश ३४६२ ब, विस्तार ३४८३, अंकन ३४४४। ऐरावत विजयार्ध का—निर्देश ३४७१ ब, विस्तार ३४८३, अंकन ३.४४४।

ऐरावत (हाथी)—१.४६८ अ।

ऐरावती—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

ऐरेगित्तर गण—द्रविडसंघ १३२० ब, १.३२२ अ।

ऐलक—१.४६८ ब, क्षुल्लक २.१९० अ।

ऐशान—विद्याधर नगरी ३५४५ ब, स्वर्ग तथा उसकी प्ररूपणा—दे० एशान।

ऐश्वर्य मद—१.४६९ अ, मद ३.२५९ ब।

ऐहिक फलानपेक्षा—१४६९ अ।

ऐहिक सुख—सुख ४४३१ ब।

ओं—३७ अ।

ओखली—पचसून २२६ ब।

ओघ—१४६९ अ, अनुयोगद्वार ११०२ अ, आदेश १२५६ अ-ब, आलोचना १४६९ ब, १२७६ ब। प्ररूपणा—अनुयोग द्वार ११०३ ब, प्रत्यय ३१२७ ब, प्रकृति ३९७, स्थिति ४४६०, अनुभाग १९५, प्रदेश ३१३७। बध ३९७, बधस्थान ३.१०८, उदय १३७५, उदयस्थान १३८८ अ, उदीरणा १४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४२७८, सत्त्व स्थान ४२८७, त्रिसंयोगी भंग १३९९-४००। सत् ४१६१, संख्या ४९४, क्षेत्र २१९७, स्पर्शन ४४७७, काल २९९, अन्तर १७, भाव ३२१९ ब, ३२२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३, भागाभाग ४११५।

ओडय्य देव—इतिहास १३३२ अ।

ओज—१४६९ ब, अनुयोगद्वार ११०२ ब, औदारिक शरीर १४७२ अ, पद ११०२ ब।

ओजाहार—१४६९ ब, आहार १२८५ अ, आहारक १.२९५ अ।

ओद्दारण—१४६९ ब।

ओम्—११०२ ब, १४६९ ब, पद ३४ अ।

ओलगशाला—चैत्यवृक्ष ३५८० अ, भवनवासी देवो के भवन ३२१० ब।

ओलिक—१४७० अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

ओसण्ण मरण—मरण ३२८० अ।

औंड्र—१४७० अ, मनुष्यलोक ३२७५ ब।

औघिक—समाचार ४३३६ अ।

औडुलोमि—वेदान्त ३५९५ ब।

औत्पत्तिकी—ऋद्धि १४४८, १४५० अ-ब।

औत्सर्गिक लिंग—३४१७ अ।

औदयिक—अज्ञान १३७ अ, असिद्धत्व २२१८ ब, उदय १४०८ ब, क्षयोपशम २१८४ अ, पौदगलिक ३३१८ ब, मिश्र सम्यक्त्व ३.३१० ब, योग ३३७८ अ, वेदक सम्यक्त्व २१८३ ब, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब।

औदारिक—१.४७० अ।

औदारिक काययोग—१.४७२ अ, काययोग २४६ ब, केवली समुद्घात २.१६७ ब। प्ररूपणा—बध ३१०४, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३८०, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान

१ ४१२, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०७ अ। सत् ४ २१७, सख्या ४ १०३, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४ ४८५, काल २ १०८, अंतर १ १३, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४८।

औदारिक चतुष्क—१ ३७४ ब।

औदारिक द्विक—उदय १ ३७४ ब, १ ३७५ ब।

औदारिक-मिश्र-काययोग—१ ४७२ अ, काययोग २ ४६ ब, अवस्थान काल २ ९६ ब। प्ररूपणा—दे० औदारिक काययोग।

औदारिक शरीर—१ ४७१ अ अवगाहना का अल्पबहुत्व १ १५८, प्रदेशों का अल्पबहुत्व १ १५७।

औदारिक शरीर अंगोपांग—अगोपांग १ १ ब।

औदारिक शरीर अगोपांग नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—दे० आगे औदारिक शरीर नाम कर्म प्रकृति।

औदारिक शरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा-प्रकृति ३ ८८, २ ५८३ अ, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९६-३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १ ३७३ ब, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ। अल्पबहुत्व १.१६९ अ।

औदारिक शरीर-बंध—औदारिक औदारिक, औदारिक कार्मण, औदारिक तैजस, औदारिक तैजस कार्मण ३ १७० ब। औदारिक वैक्रियिक ३ ६०३ अ।

औदारिक शरीर वर्गणा—वर्गणा ३ ५१४ अ।

औदार्य चिंतामणि—१ ४७२ ब, इतिहास १ ३४६ अ।

औदि ध्यावाहन—पूरन कश्यप ३.८२ अ।

औद्देशिक—१ ४७३ अ, आहार १ २८७ ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

औद्र—१ ४७३ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

औपदेशिक—१ ४७३ अ, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

औपपादिक—१.४७३ अ, जन्म २ ३१२ ब।

औपमन्यु—१ ४७३ अ, विनयवादी १ ४६५ अ वैनयिक ३ ६०५ अ।

औपशमिक चारित्र—उपशम १ ४३९ अ, चारित्र २ २८५ ब।

औपशमिक भाव—१ ४७३ अ, अपूर्वकरण १ १२५ ब, उपशम १ ४४२ अ, क्षयोपशम २ १८४ अ, पौद्गलिक ३ ३१८ ब, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब।

औपशमिक सम्यक्त्व—सम्यग्दर्शन ४ ३६६ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०८, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८५, उदयस्थान १ ३९३ ब, उदीरणा १,४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४ ३०२, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०८ अ। सत् ४ २५८, सख्या ४ १०९, क्षेत्र २ १०६, स्पर्शन ४ ४९२, काल २ ११८, अन्तर १ २० भाव ३ २२२ अ, अल्पबहुत्व १ १५२।

औपश्लेषिक आधार—१ २४६ अ।

औलूक्य—वैशेषिक आचार्य ३ ६०७ ब।

औषध—विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नाम ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९-४८०-४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

औषधवाहिनी—१ ४७३ ब, विभगा नदी—निर्देश ३ ४६० अ, नाम ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४८९-४९०, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने।

औषधि—१ ४७३ अ, आहार १ २९३ अ, उदम्बर फल १ ३६३ ब, ऋद्धि १ ४७३ ब, १ ४४७, १ ४५५ अ, दान २ ४२३ अ, २ ४२५ अ-ब, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०१अ, मधु ३ २६० अ, मंत्र ३ २४५ ब, वचन ३ ४०३ अ।

औषधि—विद्याधर वंश १ ३३९ अ।

औषधि कल्प—१ ४७३ ब, इन्द्रनन्दि १ २९९ ब।

औस्तुभास—१ ४७३ ब।

क

कंकेलि—मल्लिनाथ २ ३८४।

कंचन—२ १ अ, सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अंकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६६।

कंचनकामिनी—सम्यग्दृष्टि ४ ३७६ अ।

कंचनप्रभा—व्यन्तरेन्द्र-वल्लभिका ३ ६११ ब।

कंजा—२.१ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

कंजिक व्रत—२ १ अ।

कटकर्ह तप—२ १ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

कंठस्थ कमल—पदस्थ ध्यान ३ ६ ब।

कंडक—२ १ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।

कंडरा—२.१ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।

कदक—२.१ अ।

कंदबीज—वनस्पति ३ ५०२ ब, ३ ५०६ अ।

कंदमूल—२ १ अ, ३.५०२ ब, ३ ५०६ अ। भक्ष्याभक्ष्य ३.१२४ अ।

कदरा – वसतिका ३ ५२८ अ।

कंदर्प—२ १ अ, तीर्थंकर २ ३७७, नीच देव—निर्देश २ १ अ, २ ४४५ ब, आयुबन्ध योग्य परिणाम १ २५८ अ।

कंबल – अचेलकत्व १ ४० ब, मनुष्य लोक ३ २७५ ब।

कस—२ १ अ, उग्रसेन १ ३५२ अ, ग्रह २ २७४ अ, तौल का प्रमाण २ २१५ अ, यदुवंश १ ३३६।

कंस (आचार्य)—मूलसंघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ।

कसकवर्ण— २.१ ब, ग्रह २ २७४ अ।

ककुत्थ—इक्ष्वाकु वंश १ ३३५ ब।

ककेली—तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३८४।

कच्छ—२.१ ब, गणधर २.२१३ अ, मनुष्य-लोक ३.२७५ ब।

कच्छ (कूट)—गजदन्त का कूट व देव—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३ ४५७।

कच्छउड—अण्डर १.२ अ, आवास १.२८० ब, पुलवी ३.७१ ब।

कच्छ परिंगित—२ १ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ ब।

कच्छवद—२ १ ब।

कच्छविजय—२.१ ब।

कच्छा—विदेह की नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नाम ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७९-४८०-४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ। वक्षार गिरि का कूट तथा देव ३ ४७२ ब।

कच्छावती—विदेह की नगरी—निर्देश ३.४६०, नाम ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८०-४८१ अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने। वक्षारगिरि का कूट तथा देव ३.४७२ ब।

कछुआ - इन्द्रिय (प्रत्याहार) ३.१३४ अ। मुनिसुव्रतनाथ २.३७९।

कज्जलप्रभा – सुमेरु के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नाम ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४९०-४९१, अंकन ३.४५१, चित्र ३ ४५१।

कज्जला—२.१ ब, सुमेरु के वनों की पुष्करिणी —निर्देश ३.४५३ ब, नाम ३.४७३ ब, विस्तार ३.४९०-४९१, अंकन ३ ४५१, चित्र ३ ४५१।

कज्जलाभा—२.१ ब, सुमेरु के वनो की पुष्करिणी —निर्देश ३.४५३ ब, नाम ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४९०-४९१, अंकन ३ ४५१, चित्र ३ ४५१।

कज्जली—२.१ ब, ग्रह २ २७४ अ।

कटक—२.१ ब।

कटप्रू—सर्वायुध तीर्थंकर २.३७७।

कटुवचन—२ १ ब, गुरु २.२५३ अ, सत्य ४ २७२ ब, ४ २७३ अ, समिति ४ ३४० ब।

कट्ठ—२.१ ब।

कठूमर—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब, श्रावक ४ ५० ब।

कठोर वचन – उपदेश १ ४२५ अ, गुरु २ २५३ अ, सत्य ४ २७२ ब, ४ २७३ अ, समिति ४ ३४० ब।

कडछी—२ २६ ब।

कणभक्ष—एकान्त (कणाद) १ ४६५ अ, परवाद ३ २३ अ, वैशेषिक दर्शन ३ ६०७ ब, ३ ६०८ अ।

कणाद—एकान्त असत्कार्यवादी १ ४६५ अ, परवाद ३ २३ अ, वैशेषिक दर्शन ३ ६०७ ब, ३ ६०८ अ।

कणाद रहस्य—वैशेषिक दर्शन ३ ६०८ अ।

कण्व—२ १ ब, अज्ञानवादी १ ३८ ब, एकान्ती १ ४६५ अ।

कथंचित्—२ १ ब, नय २.५२५ अ, स्यात् ४ ४९६ अ, स्याद्वाद ४ ४९७ ब, ४ ५०० ब।

कथन पद्धति—उपदेश १.४२५ अ।

कथा—२ २ अ।

कथाकोष—२.३ ब, इतिहास—बृहत्कथाकोष १ ३४२ ब, १.३४३ ब, पुण्यास्रव १.३४५ अ। देवेन्द्रकीर्ति कृत १.३४७ ब, १.३३३ ब।

कथान—संख्या प्रमाण २ २१४ ब।

कथा-विचार—इतिहास १ ३४४ ब।

कदंब—२ ४ अ, गन्धर्व २ २११ अ, वासुपूज्यनाथ २ ३८३। लवणसागर का पर्वत—निर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४७८, अंकन ३ ४६१।

कदंबवंश—२ ४ अ।

कदलीगृह—भवनवासी देवो के भवनो मे ३ २१० ब।

कदलीघात—२ ४ अ, अपवर्तन १ ११९ ब, आयु १ २६१ अ, मरण ३ २८४ अ।

कनक—२ ४ अ, कुलकर ४ २५ अ, ग्रह २ २७४ अ, अजितवीर्य तीर्थंकर २ ३९२। व्यन्तर देव—क्षोद्रवर द्वीप का रक्षक ३ ६१४, घृतवरसागर का ३ ६१४।

कनक (कूट)—२ ४ अ, सौमनस गजदत का—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४५७, ३.४४४। मानुषोत्तर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६ अंकन ३ ४६४। कुंडलवर पर्वत का—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन

३ ४६७। रुचकवर पर्वत का ३ ४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६८-४६९।

कनकचित्रा—२ ४ अ रुचकवर के कूट की देवी—निर्देश ३.४७६ ब, अकन ३.४६८, ३ ४६९।

कनकध्वज—२ ४ अ, कुलकर ४ २५ अ।

कनकनन्दि—२.४ अ, नन्दिसघ देशीय गण १ ३२५। इतिहास—प्र १ ३३० ब, १ ३४२ ब, द्वि. १ ३३१ब।

कनकपगत्व—कुलकर ४ २५ अ।

कनकपाद—कदर्प तीर्थंकर २ ३७७।

कनकपाषाण—भव्य ३.२१२ अ।

कनकपुख—कुलकर ४ २५ अ।

कनकपुजश्री—विद्याधर वंश १ ३३९ अ।

कनकप्रभ—२ ४ अ, कुमकर ४ २५ अ, घृतवर सागर का देव ३ ६१४। कुडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६७।

कनकमजरी—विद्याधर वश १ ३३९ अ।

कनकमाला—असुरेन्द्र की अग्रदेवी ३ २०९ अ, वैमानिक दक्षिणेन्द्रो की वल्लभिका ४ ५१३ ब।

कनकराज—कुलकर ४ २५ अ।

कनकश्री—असुरेन्द्र की अग्रदेवी ३ २०९ अ।

कनकसंस्थान—ग्रह २ २७४ अ।

कनकसेन—२ ४ अ, इतिहास १ ३२९ ब, १ ३३० ब।

कनका—२ ४ अ, रुचकवर पर्वत की देवी—निर्देश ३ ४७६ अ-ब, अंकन ३ ४६८-४६९।

कनकाभ—२ ४ अ, चक्रवर्ती ४ १० अ, क्षौद्रवर द्वीप का देव ३ ६१४, घृतवर सागर का देव ३ ६१४।

कनकामर—इतिहास १ ३३० ब, २.३४२ ब।

कनकावली व्रत—२ ४ अ।

कनकोज्ज्वल—२ ४ अ।

कनिष्क—२ ४ अ, इतिहास १ ३१४।

कन्नौज—२ ४ ब।

कन्या अलीक—सत्य ४ २७३ ब।

कपट—आर्जव १ २७२ अ।

कपाटसमुद्घात—२ ४ ब, केवली २ १६६ ब, लेश्या ३ ४२५ ब, ३ ४२८ ब।

कपिकेतु—वानर वश १ ३३८ ब।

कपित्थमुष्टि—२ ४ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।

कपिल—२ ४ ब, अक्रियावादी १.३२ अ, एकान्त मती १ ४६५ अ, परवाद ३ २३ अ, सांख्यदर्शन ४ ३९८ ब।

कपिल—यदुवंश १ ३३७।

कपिला—यदुवंश १ ३३७।

कपिशा—२.४ ब।

कपीवती—२ ४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कपोत लेश्या—दे० कापोत लेश्या।

कफ—२.४ ब, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।

कमंडलु—अथालन्द चारित्र १ ४६ अ, अपवाद मार्ग १ १२२ ब, निक्षेपाधिकरण १ ४९ ब, समिति ४ ३४१ अ, सल्लेखना १ ४६ अ।

कमठ—२ ४ ब।

कमल—२ ४ ब, अर्हन्तातिशय १ १३७ ब, काल-प्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ अ, तीर्थंकर २ ३६९, २ ३९१, मन्त्र ३ ६ अ, स्थापना ३ ६ अ।

कमल (द्रहों में)—कुलाचल के द्रहो मे—निर्देश ३ ४४६ ब, पृथिवीकाय ३ ५७८ ब, गणना ३ ४४६ अ, विस्तार ३ ४९१, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४५१, ३ ४५४, चित्र ३ ४५४।

कमलकीर्ति—काष्ठा सघ १ ३२७ अ।

कमलगुल्म—चक्रवर्ती ४ १० ब।

कमलप्रभा—व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ५ ६११ ब।

कमलबन्धु—इक्ष्वाकु वश १ ३३५ ब।

कमलभद्र—सेनसघ १ ३२६ अ।

कमलभव २ ४ ब, इतिहास १ ३३२ ब।

कमलांग—२ ४ ब, काल-प्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ अ।

कमला—व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ३ ६११ ब।

कमेकुर—२ ४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

करकंडुचरित्र—२.४ ब, इतिहास १ ३३३ ब।

करण—२.४ ब, उपशम १ ४३७ अ, क्षयोपशम २ १८६ अ, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व १ १८५ अ, निमित्त कारण २ ६११ अ, शरीर ४ ६ ब, संयम तथा संयमासंयम २ १८५ ब।

करणकारक—कर्ता कर्म २ १७-१८, कर्म २ १७ ब, कारक २ ४८ ब, कारण-कार्य २ ५६ ब।

करणचिह्न—अवधिज्ञान १ १९१ ब, १ १९२ अ-ब।

करणलब्धि—२ ६-१४, उपशम १.४३८ अ, लब्धि ३.४१२ ब, ३ ४१३ ब, सम्यग्दर्शन ४.३६२ ब।

करणानुयोग—१ ९९-१ ०१ अ, स्वाध्याय ४ ५२३ ब।

करभवेदिनी—२ १४ ब, मनुष्यलोक ३ २.७५ ब।

करीरी—२१४ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।

करुणा—२.१४ ब, अनुकंपा १ ६९ अ, जीवकरुणा २.१५ अ।

करुणादत्ति—दान २.४२२ ब, २ ४२७ ब।

करेण किंचिद्ग्रहण—आहारान्तराय १ २९ ब।

करोत क्रिया—२ १५ ब, चेतना २.२९९ अ।

कर्कराज—२.१५ ब, राष्ट्रकूटवश १ ३१५ ब।
कर्कोटक—२ १५ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, यदुवश १ ३३७।
कर्ण—२ १५ ब, कुरुवश १ ३३६ अ।
कर्णगोभि—२ १५ ब।
कर्णपार्य—इतिहास १ ३३१ ब।
कर्णविधि—२ १५ ब।
कर्णसुवर्ण—२.१५ ब।
कर्तव्य—२ १५ ब, धर्म २ ४७१ ब, श्रावक ४ ५१ अ।
कर्ता—२ १५ ब, आत्मा १ ४३४ ज्ञान २ २६१ ब, चेतना २ २९८ अ-३००, द्रव्य २ ४५७ अ, सत् ४ १६० अ।
कर्ताकारक—कर्ता-कर्म २ १६-२४, कर्म २ १७ ब, कारक २ ४८ ब।
कर्ताबुद्धि—अज्ञानी (चेतना) २ २९९ ब।
कर्तावाद—२ २४ ब, परमात्मा (ईश्वर) ३ २० ब।
कर्तृत्व—२ २४ ब, उपकार १ ४१५ अ, कर्ता २ २४ अ, ज्ञान २ २६१ ब।
कर्तृत्वनय—२ ५२३ ब, २ ५२४ अ।
कर्तृसमवायिनी क्रिया—क्रिया २ १७३ अ।
कर्त्रन्वादि क्रिया—सस्कार ४ १५२ ब।
कर्नाटक—२ २५ अ।
कर्बुक—२ २५ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
कर्म—२ २५ अ, ईश्वरत्व ३ २१ ब, ईश्वर-कर्तृत्व ३.२१ ब, गमन ३७३ अ, ज्ञानी २ ६८ अ, नय १ ५५९ ब, नियति-पुरुषार्थ २.६१९ अ, पौद्गलिकत्व ३ ३१७ अ, बन्ध ३ १७३ अ, मिथ्यादृष्टि २ २९७ ब, मूर्तत्व ३ ३१७ अ, यत्न २ ६८ अ, वर्ण-व्यवस्था ३ ५२४ ब, श्रावक ४.५१ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७७ ब, स्कन्ध ४ ४४७ ब।
कर्मकांड—इतिहास १ ३३३ ब।
कर्मकारक—कर्ता-कर्म २ १६-२४, करण कारक २ १७ ब, कारक २ ४८ ब।
कर्मक्षपणा—मिथ्यादृष्टि तथा सम्यग्दृष्टि ३.३०७ अ, हेतु (मोक्षमार्ग) ३ ३३६ अ।
कर्मक्षयव्रत—२ २९ ब।
कर्मज्ञान मंत्री—उपयोग १.४३२ अ, ज्ञान २ २६१ ब।
कर्मचूर व्रत—२.२९ ब।
कर्मचेतना—चेतना २ २९७ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७६ अ।
कर्मजस्वभाव—स्वभाव ४.५०६ ब।
कर्मजा ऋद्धि—१ ४५० अ।
कर्म तद्व्यतिरिक्त नोआगम—अनन्त १.५५ ब, द्रव्य-निक्षेप २.६०० ब।
कर्मत्व—२ २९ ब।
कर्मदहन यत्र—३.३५०।
कर्मनारकी—१ ५७२ अ।
कर्मनिर्जरा व्रत—२.२९ ब।
कर्मनोआगम—उपशम १.४३७।
कर्मप्रकृति—अनेक रूप से परिणमन ३ ९१ ब, करण दशक २ ५ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १ ९५, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १६६, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३९७, बन्धस्थान ३ १०८, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, आबाधा १.२४९ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८७ त्रिसंयोगी भग १ ३९९। सक्रमण ४ ८५ अ, अतर १ २३, अल्पबहुत्व १.१६८। चूर्णी २ ६३८ अ।
कर्मप्रकृति (शास्त्र)—इतिहास १.३२९ अ, १.३३२ अ। १ ३४५ अ।
कर्मप्रकृति टीका—इतिहास १ ३३३ ब।
कर्मप्रकृतिरहस्य—२ २९ ब, अभयनन्दि १ १२७ अ, इतिहास १ ३४२ ब।
कर्मप्रकृतिविधान—२ २९ ब।
कर्मप्रकृतिसंग्रहिणी—इतिहास १ ३४१ अ।
कर्मप्रवाद—२ २९ ब, श्रुतज्ञान ४ ६९ ब।
कर्मप्राभृतटीका—२.२९ ब, इतिहास १.३४० अ।
कर्मफल—उदय १ ३६७ अ, कर्म २ २७ ब, जीव परिणाम २ ७४ अ।
कर्मफलचेतना—चेतना २ २९७ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७६ अ, ४ ३७७ ब।
कर्मबन्ध—उपयोग १ ४३१ ब, जीवकर्म कारण-कार्य सम्बन्ध २ ६७ अ, २ ७० अ, २ ७१ ब, २.७२ अ, २ ७४ अ, बन्ध ३ १७० अ, ३.१७२ ब, ३ १७७ अ, विभाव ३ ५५९ ब, ३ ५६१ अ, शुद्ध परिणाम १.४३४ ब, समयप्रबद्ध ४.३२८ ब।
कर्मबधक—बन्ध ३.१७९ अ, सख्या तथा भागाभाग ४ ११७ अ।
कर्मभाव—कारण २ ६७ अ-ब।
कर्मभूमि—निर्देश ३.२३५ अ, गणना ३.४४५ अ, जीवसमास २ ३४३ अ, मनुष्य ३.२७३ ब, म्लेच्छ ३.३४५ ब, षट्काल व्यवस्था २ ९३। अवगाहना १.१८०, आयु १ २६१ ब, २६२ अ-२.६३-२६४ ब, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५५ अ-ब, आहार प्रमाण १ २८५ ब, कर्म का उदय १.३७६, १.३७७, कर्म की स्थिति ४ ४६२, वेदभाव ३.५८७ अ, सत

प्ररूपणा ४.१८४-१८५, सम्यक्त्वादि गुण ३ २३५ ब।
कर्ममीमांसा—दर्शन २.४०२ ब, ४०३ ब।
कर्मयोग—चेतना २ २९८ अ।
कर्मवर्गणा—कर्म २ २७ अ-ब, वर्गणा ३ ५१२ ब।
कर्मविपाक—उदय १ ३६६ अ, इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ अ, १.३४५ ब।
कर्मविस्रसोपचय—लेश्या ३ ४२५ अ।
कर्मव्यक्ति—कर्म २ २९ अ।
कर्मव्युच्छित्ति—मोक्ष ३ ३३१ अ।
कर्मशक्ति—२ ३० अ।
कर्मश्लेष—कषाय २.३५ अ।
कर्मसमवायिनी क्रिया—क्रिया २.१७३ अ।
कर्मस्कंध—कर्म २ २७ ब।
कर्मस्तव—२.३० अ, इतिहास १ ३४१ ब, १ ३४५ अ, २.६३७ अ।
कर्मस्पर्श—स्पर्श ४ ४७६ अ।
कर्माधीन—कारण (यत्न) २ ७१ ब।
कर्मार्य—आर्य १ २७४ ब।
कर्मावस्था—कारण (यत्न) २ ६७ अ।
कर्माहार—आहार १ २८५ अ, आहारक १ २९५ अ।
कर्मोदय—अध्यवसान १ ५३ अ, उदय १ ३६६ अ। कर्म जीव का कारण-कार्य भाव—जीव परिणाम २.६७ ब, २ ७० अ, २ ७२ अ, २ ७४ अ, मोक्ष २ ७४ ब, मोक्ष-मार्ग २ ७४ ब। विभाव (ज्ञानी ३ ५६० ब।
कर्मोपाधिनिरपेक्ष-सापेक्ष नय—२.३० अ, शुद्ध द्रव्यार्थिक नय २.५४४ ब, अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय २.५४५ अ, २ ५५२ अ।
कर्वट—२ ३० अ, निद्रा २ ६०१ ब, बलदेव ४.१७ ब।
कर्षण—कषाय २ ३५ अ।
कलकल पृथिवी (आठवीं)—नरक २ ५७६ ब।
कलधौतनन्दि—देशीयगण १ ३२४ ब, इतिहास १ ३३० अ।
कलश—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ, तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३७९, यापनीय सघी साधु १ ३१९ ब, समयसार १ ३४२ अ, स्वप्न ४ ५०४ ब।
कलह—२.३० अ।
कलहपाहुड—प्राभृत ३.१५६ ब।
कला—२.३० अ, कालप्रमाण २.२१७ अ, व्यन्तरेन्द्र गणिका ३ ६११ ब, सुखांश ४.४३४ ब।
कलिंग—२ ३० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ-ब, वैदिकाभिमत देश ३ ४३१ ब।
कलि ओज राशि—ओज १.४६९ ब।
कलिकाल—कल्की २.३१ अ, कुन्दकुन्द (सर्वज्ञ) २.१२८ अ, धर्मध्यान ३ ४६८ अ, प्रव्रज्या ३ १५० अ।
कलिकालसर्वज्ञ—कुन्दकुन्द २ १२८ अ।
कलिकुडदंडयंत्र—यंत्र ३ ३५०।
कलिचतुर्दशी व्रत—२.३० अ।
कलुषता—कषाय २ ३५ अ।
कलेवर—२ ३० अ, ग्रह २ २७४ अ।
कल्की—२ ३० अ, इतिहास १.३११ अ, १ ३१५ अ।
कल्प—२ ३१ ब, स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१० अ, पटल ४ ५१४ ब, दक्षिण-उत्तर विभाग ४.५२० ब।
कल्पकाल—निर्देश २.८८, आर्यखण्ड १ २७५ अ।
कल्पदशक—२ ३१ ब, साधु ४ ४०४ ब।
कल्पद्रुम—पूजा ३ ७४ अ।
कल्पपुर—२ ३१ ब, मनुष्यलोक ३ २७१ अ।
कल्पभूमि—२.३१ ब, समवसरण ४.३३० ब।
कल्पवासी देव—निर्देश २ ४४५ ब, ४ ५१० ब, चैत्य-चैत्यालय मे—२ ३०३ अ, २ ३०४ अ। अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१९८ ब, आयु १ २६६-२६८। प्ररूपणा—बध ३,१०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदय स्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ १९२, सख्या ४ ९८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।
कल्पवृक्ष—२ ३१ ब, वृक्ष ३.५७८ ब, स्वप्न ४ ५०५ अ।
कल्पव्यवहार—२ ३१ ब, श्रुतज्ञान ४ ६९ ब।
कल्पशास्त्र—शास्त्र ४ २८ अ, सल्लेखना ४.३९४ ब।
कल्पाकल्प—२.३१ ब, श्रुतज्ञान ४ ६९ ब।
कल्पातीत विभाग—निर्देश ४ ५१० अ, पटल व विमान ४.५१४ ब। देव—अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १.२६८-२६९। प्ररूपणा—बध ३ १०२, बधस्थान ३ ११२, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ १९२, संख्या ४ ९८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।
कल्पोपपन्न देव—निर्देश ४.५१० अ, अवगाहना १ १८० अ, अवधिज्ञान १.१९८ ब, आयु १ २६६-२६८।
कल्प्यव्यवहार—२ ३१ ब, श्रुतज्ञान ४ ६९ ब।
कल्प्याकल्प्य—२.३१ ब, श्रुतज्ञान ४.६९ ब।
कल्याण—२.३१ ब, श्रुतज्ञान ४.७० अ, यापनीय सघ १.३१९ ब।

कल्याणक—२ ३१ ब, तीर्थंकर २.३७३ अ-ब, सुमेरु पर्वत ३.४५० ब।
कल्याणकव्रत—२ ३३ अ।
कल्याणकारण—उग्रादित्य १.३५२ अ, इतिहास १.३४२ अ।
कल्याणकीर्ति—इतिहास १ ३३३ अ।
कल्याणत्रैलोक्यसार यन्त्र—यन्त्र ३.३५१।
कल्याणमंदिरस्तोत्र—२ ३३ ब, स्तोत्र ४.४४९ अ, इतिहास १ ३४१ अ।
कल्याणमाला—२ ३३ ब।
कल्याणवाद पूर्व—श्रुतज्ञान ४.६९ अ।
कल्ली—२.३३ ब, मनुष्यलोक ३.२७५।
कल्लोल—ध्येय २ ५०० अ।
क्लेशवणिज्या—अनर्थदण्ड १.६३ अ।
कवच—सल्लेखना ४.३९० ब, ४.३९२ अ, ४ ३९६ अ।
कवयव—१ ३३ ब, ग्रह २.२७४ अ।
कवल—आहार १ २८५ ब।
कवल चन्द्रायण व्रत—२.३३ ब।
कवलाहार—२ ३३ ब, आहार १.२८५ अ, आहारक १.२९५ अ, केवली २.१५९ अ।
कवाटक—२.३३ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
कश्मीर हून वंश १ ३११ ब।
कश्यप—राज्यवंश १.३३५ अ।
कषना—कषाय २ ३५ अ।
कषाय—२ ३३ ब, अध्यवसाय स्थान १ ५३ अ-ब, अशुभोपयोग १ ४३३ ब, अजीव द्रव्य २ ३७ ब, आयु-बंध स्थान १.२५९ अ, उपयोग १.४३२ ब, कषाय (जीव द्रव्य) २ ३७ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, जन्म २ ३१८ अ, परिग्रह ३.२९ अ, प्रत्यय (अविरति) ३ १२७ अ, प्रत्यय (प्रमाद) ३ १२६ अ, प्रत्यय (उदय व्युच्छित्ति) ३.१२७-१३०, बंध ३ १७५ अ, ३ १७८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ, मोहनीय ३.३४४ अ, लेश्या ३.४२२ ब, ४ ४३७ अ-ब, विभाव ३.५५८ ब, शक्ति २ ३८ अ, संक्रमण ४.८६ अ, संयम ४.१२६ ब, ४.१३९ अ, संस्कार ४ १५० अ, सल्लेखना ४ ३८२ अ, ४.३८३ अ, ४ ३९६ अ, साधु ४ ४०८ ब, सामायिक ४.४१५ ब, सासादन ४ ५२५ अ, हिंसा १.२२६ अ, २१७ ब, ४ ५३४ अ।
कषायकालक—अल्पबहुत्व १ १६१ अ।
कषायकुशील—कुशील साधु २.१३१ अ, श्रुतकेवली ४.५५ ब।
कषायविग्रह—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, संयम ४.१३६ ब, १.१३९ अ, सल्लेखना ४.३८२ अ, ४.३८३ अ, ४ ३९६ अ, सामायिक ४ ४१५ ब।
कषायपाहुड—२ ४१ अ, इतिहास १.३४० अ-ब, टीका १ ३४१ ब।
कषायप्रत्यय—अविरति ३ १२७ अ, प्रमाद ३ १२६ अ, उदय व्युच्छिति ३ १२७ – १३०।
कषायप्रवृत्ति—लेश्या ३ ४२२ ब, ३ ४२४ अ, ३ ४२४ ब।
कषायप्राभृत—उच्चारणाचार्य १ ३५२ अ।
कषायमार्गणा—कषाय २ ३५ ब, काल २.९७ अ, प्ररूपणा—बन्ध ३ १०५, बन्धस्थान ३.११३, आयुबन्ध के स्थान १.२५९ अ, उदय १.३८२, उदयस्थान १ ३९३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ १८३, सत्त्व स्थान ४.२८७, ४.३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०७ अ। सत् ४.२२८, संख्या ४.१०५, भागाभाग ४.११७, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २.११२, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०-१६१, अंतर १.१५, भाव ३.२२१, अल्पबहुत्व १.१४९। स्वामित्व—पंच शरीर ४ ७, अल्पबहुत्व १ १५९, षट्कर्म ४.२६९।
कषायशक्ति—कषाय २.३८ अ।
कषायसमुद्घात—निर्देश ४.३४३, कषाय २.४० ब, क्षेत्र २.१९७-२०७, सत् ४.३४३, स्पर्शन ४.४७७-४९४।
कसेरू—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
कहाण छप्पय—२.४१ ब।
कांगधुनी—२.४२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
कांचन—द्वीप सागर २.४१ ब, राक्षस वंश १.३३८ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, स्वर्ग पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४ ५१९ ब, देव की आयु १ २६६।
कांचन (कूट)—२ ४१ ब, रुक्मि पर्वत—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४४४। रुचकवर पर्वत—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८-४६९। शिखरी पर्वत—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४। सौमनस गजदन्त—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ ३ ४५७।
कांचन (गिरि)—२ ४१ ब, देव तथा उत्तर कुरु में स्थित पर्वत—निर्देश ३.४५३ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ४८६, वर्ण ३.४७७, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४५३ अ।
कांचन (देव)—२.४१ ब, कांचनगिरि का देव ३.४५३ अ, ३.६१३ अ।
कांचन (द्वीप, सागर)—२.४१ ब, निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४४३, जल का रस

३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

कांचनपुर—२ ४१ ब। मनुष्यलोक ३ २७६ अ।

कांचना (कानना)—रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६८, ३ ४६९।

कांचीपुर—२ ४१ ब।

कांजी आहार—२.४१ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ ब, सल्लेखना ४ ३९३ ब।

कांजी बारस व्रत—२.४१ ब।

कांजीर—अनुभाग १ ९० ब।

कांटा—कायक्लेश २ ४७ ब।

कांडक—२ ४१ ब, अपकर्षण १.११७ अ, आबाधा १.२४८ ब, द्रव्य २ ४१ ब, सक्रमण ४ ८४ अ।

कांडक आयाम—२ ४१ ब।

कांडक घात—अनिवृत्तिकरण २ १३ ब, अपकर्षण १ ११६ ब, अपवर्तन १.११७ ब, अपसरण १ ११७ अ, अल्पबहुत्व १ १७६, बन्धापसरण १.११७ अ।

कांडक द्रव्य—२ ४१ ब।

कांडक सक्रमण—सक्रमण ४ ८४ अ।

कांडकोत्करण काल—२ ४२ अ।

कांतमाला—कुलकर ४ २३।

कांपिल्य—विमलनाथ २ ३७९।

कांबोज—२ ४२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ-ब।

कांकंदी—सुविधिनाथ २.३७९।

काक—आहारान्तराय १.२९ अ।

काकतालीय न्याय—२.४२ अ, नियति २ ६१५ ब।

काकवर्ण—मगधदेश १.३१२।

काकादिपिंडहरण—आहारान्तराय १.२९ अ।

काकावलोकन—२.४२ अ, व्युत्सर्ग ३ ६२१ ब।

काकिणी—२ ४२ अ, चक्रवर्ती का रत्न ४ १३ अ, ४ १५ ब।

काकुस्थ चारित्र—२.४२ अ।

काक्षी—२ ४२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

काणभिक्षु—इतिहास १.३२९ ब।

काणोविद्ध—२ ४२ अ, एकान्त मती १.४६५ अ, क्रियावादी २ १७५ ब।

काण्ह—२ ४२ अ।

कातन्त्ररूपमाला—इतिहास १ ३४४ ब।

कानना—२ ४२ अ, रुचक पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३ ४६९।

कान्यकुब्ज—२ ४२ ब।

कापिष्ठ—यदुवंश १ ३३७। स्वर्ग—२ ४२, निर्देश ४ ५१४ ब, पटल इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१८-५२०, उत्तर विभाग ४.५२१ अ, अवस्थान ४ ५१४ ब, अंकन ४ ५१५। इन्द्र—निर्देश ४ ५१० ब, उत्तरेन्द्र ४ ५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, अवस्थान ४ ५२० ब, चिह्न आदि ४ ५११ ब, विमान नगर व भवन ४ ५२०-५२१।

कापिष्ठ (देव)—अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १.१९८ ब, आयु १ २६७, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १ २५८ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्ध स्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ १९२, सख्या ४ ९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १ १०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५।

कापोत लेश्या—२ ४२ ब, लेश्या ३ ४२३ अ, आयुबन्ध १.२५९ अ। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०७, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८४, उदयस्थान १.३९३ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०७ ब। सत् ४ २४४, संख्या ४ १०७, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४.४९०, काल २ ११५, अतर १ १८, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१।

काम—२ ४२ ब, इन्द्रिय १ ३०६ अ, ध्यान २ ४९९ अ, पुरुषार्थ ३.७० अ, भोग ३.२३८ अ, विवाह ३ ५६५ ब, शलाकापुरुष ४.२६ अ, हिंसा ४ ५३३ ब।

कामकथा—२.३ ब।

कामचर—लौकान्तिक ३.४९३ ब।

कामचांडाली कल्प—इतिहास १ ३४३ ब।

कामतंत्र—विनय ३.५४८ ब।

कामतत्त्व—२ ४२ ब, काम २.४२ ब।

कामद—शलाकापुरुष ४ २६ अ।

कामदेव—गणधर २ २१३ अ, प्रतिमा २ ३०३ ब, नारद ४.२२ ब।

कामना—दे० अभिलाषा, इच्छा, आकांक्षा, राग।

कामपुरुषार्थ—कथा २.३ ब, पुरुषार्थ ३.७० अ।

कामपुष्प—२.४३ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

कामराज—२.४३ अ।

कामरूप—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कामरूपित्व ऋद्धि १ ४४७, १.४५१ ब।

कामरूप्य—२ ४३ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

कामवृष्टि—चक्रवर्ती के रत्न आदि ४ १३ अ, ४ १५ अ।

कामा—महत्तरिका ४ ५१३ ब, गणिका ४ ५१४ अ।

कामाग्नि—१ २५ ब।

कामिनिका—महत्तरिका देवी ३ ५१३ ब।

कामिनी—गणिका ४.५१४ अ।

काम्य मंत्र—३ २४६ अ।

काय—२.४३ अ, अस्तिकाय १.२११ अ, भाव २.२५० अ।

कायकर्म—२.२६ अ।

कायक्लेश—२ ४५ ब, श्रावक २ ४८ अ, सम्यकत्व व ज्ञान २ ३६० ब।

कायक्रिया—गुप्ति २.२५० अ।

कायक्रोधविवेक—विवेक ३ ५६७ अ।

कायगुप्ति—अतिचार २.२५० अ, निश्चय लक्षण ६ २४८ ब, व्यवहार लक्षण २ २४९ अ।

कायत्व—अस्तिकाय १.२११ अ-ब।

कायपरावर्तन—कृतिकर्म १ २७९ अ।

कायप्रतिमा—२ ३०० ब।

कायप्रत्याख्यान—३.१३२ अ।

कायप्राण—२ १५३ अ, ३ १५४ ब।

कायबल—ऋद्धि १ ४४७, १.४५५ ब, पर्याप्ति ३ ४४ अ, प्राण ३.१५३ अ, ३ १५४ ब, योग ३.३८० अ।

कायमार्गणा—निर्देश २ ४४ ब, अवगाहना १ १७९, आयु १.२६४, जीवसमास २ ३४३। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान, १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२-२८५, सत्त्वस्थान ४.२१९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१९९, सख्या ४ १००, भागाभाग ४ १११-११५, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८३, काल २ १०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५। पचशरीर स्वामित्व ४.७, अल्पबहुत्व १ १५९।

काययोग—निर्देश २ ४६ अ, ३ ३७९ ब, कार्मण काय योग २ ४४ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८०, उदयस्थान १.३९२ ब। उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.२९९-३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ। सत् ४.२१४ सख्या ४.१०१, क्षेत्र २.२०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २.१०८, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, अन्तर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४७।

कायवंदना—३ ४९४ ब, २ ५०६ अ।

कायविवेक—भक्तपान, माया, लोभ, वसति, सस्तर वैयावृत्य, शरीर ३ ५६७ अ।

कायशुद्धि—भक्ति ३ १९९ अ, शुद्धि ४ ३९ अ।

कायस्थिति—४ ४५७ ब।

कायिक—आस्रव १ २८२ ब, विनय ३.५४५ ब, ३ ५४९ ब।

कायिकी—क्रिया २.१७४ ब, हिसा ४ ५३३ अ।

कायोत्सर्ग—कृतिकर्म २.१३४ अ, २ १३५ अ, गुप्त २.२५० अ, तप २ ३६१ ब, धर्मध्यान २ ४८२ ब, प्रतिक्रमण ३ ११७ ब, भक्ति १ २०० ब, व्युत्सर्ग ३.६१९ अ, सामायिक ४ ४१६ व ४.४१७ ब।

कारक—कर्ताकर्म २ १६-२४, भेदाभेद कारक २.४८-५०।

कारण—२ ५१ अ, अनुमान लिगी १ ९७ ब। अन्तरग २ ७२ ब, कारण २ ५४ अ, कार्य २ ७२ अ, ज्ञान १ २६१ ब, न्याय २ ६३३ अ, परमात्मा ३ २० अ, चतुष्टय २.२७८ अ।

कारण-कार्य-संबध—२ ५१ अ, अभेद २.५४ अ, उपचार १ ४२० अ, विभाव ३.५५९ अ।

कारण-परमतत्त्व—३ १९ अ।

कारण-परमाणु—३.१४ अ।

कारणपरमात्मा—३ १९ अ।

कारणप्रत्यय—४.३६४ अ।

कारणविपर्यास—३ ३५६ ल। सम्यग्ज्ञान २ २६४ ब।

कारण विरुद्ध व अविरुद्ध उपलब्धि—४ ५३८।

कारणशुद्ध जीव—२ ३३४ अ।

कारणशुद्ध पर्याय—३ ४६ ब।

कारण समयसार—मोक्ष ३.३२५ अ, समयसार ४ ३२९ अ।

कारणस्वभावज्ञान—उपयोग १.४३० अ।

कारणस्वभावदर्शन—उपयोग १ ४३० अ।

कारित—२ ७५ अ।

कार्तिकेय—२ ७५ अ, अनुत्तरोपपादक १.७० ब, इतिहास (कुमारस्वामी) १ ३२८ ब, १ ३४० ब।

कार्तिकेयानुप्रेक्षा—२.७५ अ, इतिहास १.३२८ ब, १.३४० ब।

कार्तिकेयानुप्रेक्षा टीका—इतिहास १.३४७ अ।

कार्तिकेयानुप्रेक्षा वचनिका—इतिहास १ ३४८ अ।

कार्मण काययोग—२ ७६ अ, आहारक १.२९५ अ, काय २ ४४ ब, पर्याप्तिक २ ४६ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०३, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८१, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८३

सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसगयोगी भग १ ४०७ अ। सत् ४ २२१, सख्या ४.१०३, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४ ४८७, काल २.१०८, अन्तर १ १३, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४८।

कार्मण काल—उदयस्थान १ ३९३-३९७, काल २ ८१ अ।

कार्मण वर्गणा—वर्गणा ३ ५१३ अ, ३ ५१५ ब, ३ ५१६ अ।

कार्मण शरीर—२ ७५ ब, अनादि २ ३९५ अ, अवगाहना २ ३९५ अ, निरुपभोग २ ३९५ अ, पौद्गलिक ३ ३१७ अ, प्रदेश अल्पबहुत्व १ १५६, स्वामित्व २ ३०५ अ।

कार्मण शरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७, बधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, १ ३९७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६९।

कार्मण शरीर बध—कार्मण कार्मण, कार्मण तैजस, औदारिक कार्मण, वैक्रियिक कार्मण, आहारक कार्मण ३ १७० ब।

कार्य—अनुमान लिंगी १.९८ अ, कारण २ ७२ अ-ब, निमित्त २ ७० अ, पर्याय २ ५४ ब, २ ५५ अ, वर्ण-व्यवस्था ३ ५२४ ब, सदसत् १ ३६२ अ, समय (परमात्मा) ३ २० अ।

कार्य-कारण संबंध—अनुमान १ ९८ अ, उत्पत्ति २ ५५० ब, उपचार १ ४२० अ, उपयोग १ ४३० अ, नय २ ५५० ब, न्याय २ ६३३ अ, भेदाभेद २ ५५ अ। विभाव ३ ५५९ ब।

कार्यचतुष्टय—३ २७८ अ।

कार्यपरमाणु—३ १४ अ।

कार्यपरमात्मा—३ १९ ब।

कार्य विरुद्ध व अविरुद्ध हेतु—४ ५३८।

कार्यशुद्ध जीव—२ ३३४ अ।

कार्यशुद्धपर्याय—३ ४६ ब।

कार्य-समयसार—४ ३२९ अ-३३५ अ।

कार्य-समा जाति—२ ७७ अ।

कार्यस्वभाव—ज्ञानोपयोग १ ४३० अ, दर्शनोपयोग १ ४३० अ।

कार्ष्णाजिन—वेदान्त ३ ५९५ ब।

काल—२ ७७ अ, अनन्तानुबन्धी का १ ६१ ब, अन्तरकरण १ २६ ब, अन्तर प्ररूपणा १ ३ ब, १ ५ अ, उपक्रम १ ४१६ ब, अध प्रवृत्तकरण २ ७ ब, अनवधृत अनशन १ ६५ ब, अनशन १ ६५ ब, अनिवृत्तिकरण २ १३ अ, अनुयोगद्वार १ १०२ अ, अपकर्ष १ १७३ अ, अपूर्वकरण २ १२ अ, अप्रत्याख्यानावरण का १ १२६ ब, अप्राप्त १ १२६ ब, अवधि व मन.पर्यय ज्ञान १ १८९ ब, १ १९७ ब, आगमार्थ १ २३४ अ, आबाधा १ २४८ अ, आयुबध १ २५९ अ, उदय (पच उदय काल) १ ३९७, उदीरणा १ ४१२ उपकार २ ६३ ब, उपशमन १ १६१ अ, कषायोदय २ ३८ ब, काण्डकोत्करण २ ४२ अ, काल प्रमाण २ २१५ ब, कालवाद ३ १२ अ, ग्रह २ २७४ अ, चक्रवर्ती ४ १४ ब, छेदोपस्थापना (देश काल का प्रभाव) २ ३०९ अ, नारद ४ २१ अ, निमित्त २ ६४ अ, नियतकाल अनशन १ ६५ ब, नियति २ ६१९ अ, निर्जरा १ ७५ ब, १ १७४ अ, प्रमाण ३ १४५ अ, मरण ६ २८२ अ, मुक्ति ३ ३२७ अ, मोहनीय का ३ ५४४ अ, यव मध्य १ १६१ ब, विद्याधर जाति १ ३३८ ब, वेदनीय का ३.५९२ ब, सख्या ४ ९२ अ, सप्तभंगी ४ ३२० अ, ४ ३२४ अ-ब, ४ ३२५ ब, सम्यग्ज्ञान का अग २ ८२ अ, स्व चतुष्टय २ २६७ ब,

काल (अनुयोगद्वार)—१ १०२ अ, २ ९४ अ, ओघ प्ररूपणा २ ९९, आदेश प्ररूपणा २ १०१, उदीरणा १ ४१२।

काल (अल्पबहुत्व)—१ १४२ ब, अपकर्ष काल १ १७३ अ, उपशमन क्षपण १ १६१ अ, प्रदेश निर्जरा १.१७४ अ, यवमध्यकाल १ १६१ ब।

काल (व्यन्तरेन्द्र)—निर्देश ३ ६११ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब।

काल (षट्काल)—निर्देश २.८८, परावर्तन ३ २३५, परावर्तन योग्य २ ९२, अवगाहना १.१८०, आयु १.२६४ ब, आर्यखण्ड १ २७५ अ, द्वीप सागर २ ९२ ब।

कालक—२ १२४ अ, ग्रह २ २७४ अ, विद्या १ ३३९ अ।

कालकूट—२ १२४ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

कालकेतु—२ १२४ अ, ग्रह २ २७४ अ।

कालकेशपुर—२ १२४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

कालक्रम—२ १७१ ब, २ १७२ अ।

काललोया—२ १२४ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

कालदेश—उपदेश १ ४२६ अ, छेदोपस्थापना चारित्र पर प्रभाव २ ३०९ अ।

कालद्रव्य—२ ८२ ब, अनुभाग १ ८८ ब, अस्तिकाय १ २११ ब, उत्पादादि १ ३६० ब, १ ३६२ ब, प्रदेश १ २२१ अ, निमित्तता १ ३६७ अ-३६८ अ।

कालनय—२ ५२३ ब।
कालनिबन्धन—२.६१० ब।
कालनिमित्तक—कर्मोदय १.३६७ अ, १.३६८ अ।
कालपरिवर्तन—ससार ४ १४८ अ।
कालप्रदेश— २ १२४ अ।
कालप्रतिक्रमण – ३ ११६ ब।
कालप्रत्याख्यान—३ १३२ अ।
कालप्रमाण—२.२१५ ब, ३.१४५, आहार का १ २८५ ब, १ २८९ अ, सहनानी २ २१९ अ।
कालमंगल – ३ २४१ अ।
कालमही—२ १२४ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
कालमुखी—२ १२४ अ, विद्याधर विद्या ३ ५४४ अ।
कालयवन – हरिवश १ ३४० अ।
कालयुति—३ ३७३ ब।
काललब्धि—नियति २.६१४ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३६२ ब, ४ ३६३ अ।
कालवर्गणा—३ ५१२ ब।
कालवाद—२ १२४ अ, एकान्त १ ४६५ अ, परतन्त्रवाद ३ १२ अ।
कालव्यभिचार—२ ५३८ अ।
कालशुद्धि—४ ३९ ब, सम्यग्ज्ञान का अग १ २२८ अ, स्वाध्याय ४ ५२६ अ।
काल श्वपाकज—विद्याधर १ ३३९ अ।
कालसयोग पद—३ ५ अ।
कालसंवर—२ १२४ अ।
कालसंसार—४ १४७ अ।
काललमय राशि—सहनानी २.२१९ अ।
कालसामायिक—४ ४१६ अ।
कालस्तव—३ २०० ब।
कालस्पर्शन—४ ४७६ अ।
कालातीत – २ ६३३ ब।
कालात्ययपदिष्ट—हेत्वाभास २ १२४ अ, २ ६३३ ब।
कालापेक्षा—व्यतिक्रम ३ ६२२ अ।
कालासोक—मगधदेश १ ३१८।
कालिंदी—इन्द्रो की ज्येष्ठ देवी ४ ५१४ अ।
काली—२ १२४ ब, तीर्थंकर पुष्पदन्त २ ३७९, विद्या ३ ५४४ अ।
कालीघट्टपुरी - २.१२४ ब।
कालीदास – २.१२४ अ।
कालुष्य – २.१२४ ब, कषाय २ ३५ अ।
कालेयक—२ १२४ ब, औदारिक शरीर १.४७२ अ।
कालोद सागर—२.१२४ ब। निर्देश ३.४६३ अ, नाम निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अकन ३ ४४३, ३ ४६४ के सामने, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २ ३४८ ब, अधिपतिदेव ३ ६१४। अन्तर्द्वीपज मनुष्य निर्देश ३ ३४६, अवगाहना १ १७९ ब, जलचर जीव २ ३७० ब।
कालोद सिंधु—अल्पबहुत्व १.१५३।
कालोल—नरक पटल – निर्देश २ १२४ ब, २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।
काव्यानुशासन—२ १२४ ब, इतिहास १.३४४ अ, १ ३४५ अ।
काव्यालंकार टीका—२ १२४ ब, आशाधर १ २९४ ब, इतिहास १.३४४ अ।
काशमीर—२.१२४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
काशिका– ३.३११ अ।
काशी—२ १२४ ब, अकम्पन १ ३० ब, चक्रवर्ती ४.१० ब, चन्द्रप्रभ २ ३७८, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
काष्टा—कालप्रमाण २ २१७ अ।
काष्ठ – आसन २ १३५ ब, मान कषाय २.३८ अ।
काष्ठकर्म—२.२६ अ, कषाय २.३५ ब, निक्षेप २ ५९८ अ।
काष्ठा - २.१२४ ब, काल प्रमाण २ २१७ अ।
काष्ठा संघ—२ १२४ ब, जैनाभासी १ ३१९ अ, ब, १ ३२० ब, १ ३२७ अ।
काष्ठी—ग्रह २.२७४ अ।
कासकृत्स्न—३ ५९५ ब।
किंकर—हरिदेव ४ ५३० अ।
किंचिदून—चरम देह ३.३२९ ब।
किंचिद् ग्रहण—आहारान्तराय १.२९ ब।
किंपुरुष (देव)—व्यन्तरदेव २ १२४ ब, २ १२५ अ, निर्देश ३ ६१० ब, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६४ ब, शक्ति आदि ३ ६१०-६११, वर्ण व चैत्यालय ३ ६११ अ, अवस्थान ३ ६१२-६१४, 3 ४७१। इन्द्र—निर्देश ३ ६१९ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६१२ ब।
किंपुरुष (देव) – प्ररूपणा – बध ३ १०२, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ २८८, संख्या ३ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४.४८१,

काल २ १०४, अन्तर १ १०, ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

किंपुरुष (यक्ष)—धर्मनाथ का यक्ष २.३७९।

किंपुरुष वर्ष—२ १२५ अ, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब।

किन्नर—व्यन्तर देव २.१२४ ब, २.१२५ अ, निर्देश ३ ६१० ब, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६४ ब, इन्द्र—निर्देश ३ ६११ अ, संख्या ३.६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, शक्ति आदि ३ ६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३ ६११ अ, अवस्थान ३ ६१२-६१४, ३ ४७१।

किन्नर (देव)—प्ररूपणा—बंध ३ १०२, बंधस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

किन्नर (यक्ष)—२ १२५ अ, अनन्तनाथ का यक्ष २ ३७९।

किन्नर कांत – ३ ६१२ ब।

किन्नर-किन्नर—२ १२४ ब।

किन्नरगीत - २ १२५ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

किन्नरप्रभ—किन्नर देवों का नगर ३ ६१२ ब।

किन्नरमध्य - किन्नर देवों का नगर ३ ६१२ ब।

किन्नरावर्त—किन्नर देवों का नगर ३ ६१२ ब।

किन्नरोत्तम—२ १२४ ब।

किन्नरोद्गीत—२ १२५ अ। विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

किन्नामित—२ १२५ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

किरण—चन्द्र सूर्य आदि की २.३४८ ब।

किरणावली—वैशेषिक दर्शन का ग्रन्थ ३ ६०७।

किरमजी—लोभ २ ३८ अ।

किलकिल—२ १२५ अ। विद्याधर नगरी २ ५४५ ब।

किल्विषक देव—२ १२५ अ, आयु बंध के योग्य परिणाम १ २५८ अ। ज्योतिष देव—निर्देश २ ३४६ अ, आयु १ २६४ ब, भवनवासी—निर्देश २ ४४५ ब, आयु १ २६५। वैमानिक—निर्देश २ ४४५ ब, आयु १.२६९, १.२७०, देवियाँ ४.५१३। व्यन्तर—निर्देश ३.६११ ब, आयु १.२६४।

किल्विषी भावना—२.१२५ ब।

किशनसिंह—इतिहास १.३३४ अ, १ ३४८ अ।

किष्किंध २.१२५ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, वानर वंश ३ ३३८ ब।

किष्किंविल—२.१२५ ब, अंतकृत् केवली १ २ ब।

किष्कु—२.१२५ ब, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ अ। वानरवंश का निवास पर्वत १ ३३८ ब।

किष्कुपुर—वानरवंशी नगर १ ३३८ ब।

कीचक—२ १२५ ब।

कीचड—लोभ २ ३८ अ।

कीर्तन—नमस्कार २.५०६ अ, पूजा ३ ७५ अ।

कीर्ति—कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, शुद्धि ४ ३९ अ।

कीर्ति (देवी)—२ १२५ ब, नीलपर्वत ३ ४७२ अ, केसरीह्रद ३ ४५३ ब। अवस्थान ३ ६१४ अ, आयु १ २६५ ब, परिवार ३ ६१२ अ।

कीर्तिकूट—२ १२५ ब।

कीर्तिधर—२ १२५ ब, इतिहास १ ३४१ अ। इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।

कीर्तिधवल - २ १२५ ब, राक्षसवंश १ ३३८ ब।

कीर्तिध्वज—वानरवंश १ ३३८ ब।

कीर्तिमती—२.१२५ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६९।

कीर्तिमान—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।

कीर्तिवर्मा—२ १२५ ब, इतिहास १ ३३१ अ।

कीर्तिवीर्य—चक्रवर्ती ४ ११ ब।

कीर्तिषेण या कीर्तिसेन—२ १२५ ब, काष्ठा संघ १ ३२७ अ, पुन्नाट संघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३२९ ब।

कीलकसंहनन नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३ अ, स्थिति ४ ४६५, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भंग १ ४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

कुंचित—२ १२६ अ, व्युत्सर्ग का दोष ३ ६२३ अ।

कुंजरावर्त—२ १२६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ, हरिवंश १ ३४० अ।

कुंड—२ १२६ अ, अग्नि के तीन कुंड १ ३५ ब, शलाका आदि तीन कुंड १ २०६ ब। गंगा आदि नदियों के कुंड—निर्देश ३.४५५ अ, गणना ४४३ अ, विस्तार ३.४९०, अंकन ३.४४४, तद्वर्ती द्वीप व कूट ३.४५३ अ।

कुंडल—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६६।

कुडलक—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ३६८।
कुडलगिरि—२ १२६ अ।
कुडलपुर—तीर्थंकर वर्द्धमान २ ३७९।
कुडलवर द्वीप सागर—२ १२६ अ। निर्देश ३ ४६६ अ नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अकन ३ ४४३, चित्र ३ ४६७। जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४। चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ।
कुडलवर पर्वत—नामनिर्देश ३ ४६६ अ, विस्तार ३ ४८७, कूट तथा देवो के नाम ३.४७५ ब, कूटों का विस्तार ३ ४८७, वर्ण ३ ४७८, चित्र ३ ४६७।
कुडला—२ २१६ अ। विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नाम ४ ३७० ब, विस्तार ३.४७९-४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।
कुंडिनपुर—२ १२६ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।
कुंतल—२ १२६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
कुंती—२ १२६ अ, कुटुम्ब १ ३० अ, कुरुवंश १ ३३६ अ, यदुवंश १ ३३७।
कुथनाथ—२ १२६ अ, कुरुवंश—तीर्थंकर १.३३५ ब, पूर्वभव २ ३७९-३९१।
कुंथु—चक्रवर्ती ४ १० अ, अरनाथ आदि तीर्थंकर २ ३८७।
कुंथु भक्ति—इक्ष्वाकुवश १.३३५ ब।
कुंथु सेना—अरनाथ २ ३८८।
कुंद—२ १२६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
कुंदकीर्ति—काष्ठा सघ १ ३२७ अ।
कुंदकुंद—२ १२६ अ-ब। देशीय गण १.३२४, इतिहास १ ३२८ ब, १ ३४० ब, मूलसघ १ ३२२ ब।
कुंदा—व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका २ ६११ ब।
कुंभ—२ १२८ ब, गणधर २.२१२ ब, तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३८०, तीर्थंकर अरनाथ २ ३८७।
कुंभक—२ १२८ ब, प्राणायाम ३ १५५ अ।
कुंभकटक द्वीप—२ १२८ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
कुभकर्ण—२ १२८ ब, राक्षसवश १ ३३८ ब।
कुंभज—२ १२८ ब।
कुबरपान—इतिहास १ ३३४ अ।
कुगुरु—२ १२८ ब, विनय ३ ५५३ ब, अमूढदृष्टि १ १३३ अ, मूढता ३.३१५ ब।
कुटिल अवलोकन—चैत्य-चैत्यालय २.३०२ ब।
कुटिलता—माया ३ २९६ अ।
कुटीचर—वेदान्त ३ ५९५ ब।
कुट्टक—२.१२८ ब।
कुडइ—२ १२८ ब।
कुडव—तौल का प्रमाण २.२१५ अ।
कुड्याश्रित—२ १२८ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२१ ब।
कुणिक—२ १२८ ब, मगधदेश १.३१० ब, १ ३१२।
कुणिम—हरिवंश १.३३९ ब, १ ३४० अ।
कुणीयान—२ १२८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
कुत्ता—श्वान ४.५०५ अ।
कुत्सा—२ ३४४ अ।
कुत्सित—देव ३ ५५३ ब, धर्म ३ ५५३ ब, लिग ३ ५५३ ब।
कुथित—३ २०२ ब।
कुथुमि—२ १२९ अ, अज्ञानवादी १.३८ ब, एकान्ती १ ४६५ अ।
कुदेव—२.१२९ अ, अमूढदृष्टि १ १३३ अ, निन्दा २ ५८८ ब, मूढता ३ ३१५ ब, विनय ३ ५५३ अ।
कुधर्म—२ १२९ अ, अमूढदृष्टि १.१३३ अ।
कुधर्माकांक्षा—२ ५८५ ब।
कुध्यान—२ ४९७ अ।
कुनाल—मगधदेश १ ३१० ब, १ ३१३। शान्तिनाथ २ ३९१।
कुपात्र—पात्र २ ५२ ब, दान २ ४२६ अ।
कुप्य—२ १२९ अ।
कुबेर—२ १२९ अ। अरनाथ का यक्ष २ ३७९, लोकपाल देव ३ ४९१ ब, स्वर्गलोक मे ४.५१३ अ, मध्यलोक मे ३.६१३ अ, सुमेरु पर्वत के वनो मे ३ ४५० अ-ब, ऋद्धि शक्ति आदि ४ ५१३ अ, आयु १ २६९।
कुबेरकान्त—४ १५ अ।
कुबेरदत्त—इक्ष्वाकुवश १.३३५ ब।
कुब्जक-संस्थान नामकर्म—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६४, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९८, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदय-स्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
कुब्जा—२.१२९ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ, अजितनाथ तीर्थंकर २ ३८८।
कुभानु—हरिवंश १.३४० अ।
कुभाषा—दिव्यध्वनि २.४३२ ब, भाषा ३.२२६ ब।
कुभोगभूमि—निर्देश ३ २७३, अवगाहना १.१८०, आयु १ २६३, १ २६४, आयु के बन्धयोग्य परिणाम १ २५६ ब, षट्काल व्यवस्था २ ९३, सम्यक्त्व आदि

गुण ३.२३६। वैदिक अभिमत भूगोल ३ ४३१ ब।
कुमत—विनय ३ ५५३ ब।
कुमतिज्ञान—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०५, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३९३, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४.३००, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०७ अ। सत ४ २३४, सख्या ४ १०५, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११३. अन्तर १ १५, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १ १५०।
कुमानुष—निर्देश ३.३४६, आयु बन्धयोग्य परिणाम १ २५६ ब, पापं ३ ५४ अ।
कुमानुष द्वीप—निर्देश ३ ३४६ अ-ब, ३ ४६२ ब, ३ ४६३ ब, विस्तार ३ ४७९, अकन ३.४४४, ३ ४६१, ३ ४६४ के सामने।
कुमार—२.१२९ अ, भवनवासी देव ३ २०८ अ, श्रेयासनाथ का यक्ष २ ३७९।
कुमारगुप्त—२.१२९ ब, गुप्तवंश १ ३११ अ-ब, १ ३१५।
कुमारनन्दि—२ १२८ अ-१२९ अ, नन्दिसंघ १ ३२३ अ, इतिहास १ ३२८ ब, १ ३२९ अ-ब, १ ३४१ ब।
कुमारश्रमण—वासुपूज्य आदि तीर्थंकर २ ३८९।
कुमारसेन—२ १२९ अ, काष्ठा संघ १.३२१ अ, १.३२७ अ, पचस्तूप सघ १ ३२६ ब, सेन सघ १ ३२६ अ, इतिहास १ ३२९ ब, १ ३३० अ।
कुमारस्वामी (कार्तिकेय)—२ ७५ अ, इतिहास १ ३२८ ब, १ ३४० ब, २.१२९ अ।
कुमारिल भट्ट—२ १२९ ब, मीमासा दर्शन ३ ३११ अ।
कुमारी—४ ४५० अ।
कुमार्ग—अमूढदृष्टि १ १३२ ब, ध्यान २.४९७ अ।
कुमुद—२ १२९ ब, कालप्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ अ, सख्याप्रमाण २ २१४ ब, आरण इन्द्र का यान ४ ५११ ब, लोकपाल ३ ४९१ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
कुमुद (पर्वत तथा कूट)—देवकुरु का दिग्गजेन्द्र—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५-४८६, अंकन ३ ४४४। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६८-४६९।
कुमुदप्रभा—२ १२९ ब, सुमेरु की पुष्करिणी निर्देश ३.४५३ ब, नाम ३.४७३ ब, विस्तार, ३.४९०-४९१, अंकन ३.४५१, चित्र ३.४५१।
कुमुदवती—२ १२९ब।—
कुमुदशैल—२ १२९ ब।
कुमुदांग—२ १२९ ब, कालप्रमाण २ २१६ अ, २.२१७ अ, संख्या प्रमाण २.२१४ ब।
कुमुदा—२ १२९ ब। विदेहक्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नाम ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८०-४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। सुमेरु की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नाम ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४९०-४९१, अकन ३.४५१, चित्र ३ ४५१। नन्दीश्वर द्वीप की वापी ३ ४६३ अ, नाम ३.४७५ ब, विस्तार ३.४९१, अकन ३ ४६५।
कुमुदेंदु—इतिहास १ ३३२ ब।
कुरल काव्य—२ १२९ ब।
कुरला—अपवाद मार्ग १ १२१ ब।
कुरु—२.१२९ ब, कुरुवश १ ३३५ ब, १.३३६ अ, कुन्थुनाथ धर्मनाथ २.३८०, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
कुरुक्षेत्र—उत्तरकुरु ३.४४५ अ।
कुरुचंद्र—कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ।
कुरुजांगल देश—मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
कुरुपांचाल—वैदिकाभिमत ३ ४३३ अ।
कुरुवश—२ १२९ ब, ऐतिहासिक राजवश १ ३१० ब, पौराणिक राजवश १.३३५ अ-ब।
कुर्युधर—२ १२९ ब।
कुल—२.१३० अ, प्रव्रज्या ३.१५० अ भिक्षा ३ २३१ ब, वर्ण-व्यवस्था ३ ५२० ब।
कुलकर—२ १३० ब, शलाकापुरुष ४.२३ अ, ४ २५ अ।
कुलकीर्ति—कुरुवश १.३३५ ब।
कुलकुंड पार्श्वनाथ विधान—२.१३० ब।
कुलक्रिया—श्रावक ४.५० अ।
कुलचंद्र—२.१३० ब, कुरुवश १.३३६ अ, नन्दिसंघ देशीय गण १ ३२५।
कुलचर्या क्रिया—सस्कार ४ १५१ ब, ४ १५२ ब।
कुलटा—४.४५० ब।
कुलदेवता—श्वेताम्बर ४ ७७ अ।
कुलधर—२.१३० ब, शलाकापुरुष ४.२५ अ।
कुलपर्वत—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ।
कुलपुत्र—तीर्थंकर २.३७७।
कुलभद्र—२.१३० ब, इतिहास १.३३० ब, १.३४२ ब।
कुलभूषण—२.१३० ब, देशीय गण १.३२५, इतिहास १.३३१ अ। अग्निप्रभ देव १ ३६ ब।
कुलमद—३.२५९ ब।

कुलयंत्र—३ ३५१।

कुलविद्या—३ ५४४ अ।

कुलसुत—२.१३० ब, तीर्थंकर २ ३७७।

कुलाचल – पर्वत—निर्देश ३ ४४६ ब, ३.४६२ ब, ३ ४६३ ब, गणना ३ ४४५ अ, विस्तार ३.४८२, ३ ४८६, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७।

कुलावधि—३ १९६ अ।

कुलिंग—मूढता ३.३१५ ब, विजय ३ ५५३ अ।

कुलोत्तुग चोल—२ १३० ब।

कुवलयमाला—२.१३० ब, उद्योतन सूरि १.४१४ ब।

कुविचार—अशुभोपयोग १ ४३३ ब।

कुश—२ १३० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

कुशद्यदेश—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

कुशपुर— २ १३० ब।

कुशलमूला निर्जरा—१ ७५ ब, २ ६२२ ब।

कुशवर द्वीप सागर—नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३.४७८, जल का रस ३ ४७० अ, अधिपति देव ३. ६१४, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अकन ३ ४४३।

कुशसेन—४ १० ब।

कुशाग्रपुर—मनुष्यलोक ३ २७५ अ, मुनिसुव्रतनाथ २ ३७९, बलदेव ४ १८ अ।

कुशान वश—२.१३० ब, इतिहास १ ३१० ब, १ ३१४।

कुशास्त्र—विनय ३.५५३ ब, सम्यग्ज्ञान २ २६५ ब।

कुशील—हिंसा ४.५३२ ब।

कुशीलसगति—२ १३१ अ, सगति ४ ११९ अ-ब।

कुशील साधु—२ १३१ अ, श्रुतकेवली ४ ५५ ब, सगति ४ ११९ अ-ब, साधु ४ ८०८ अ-ब।

कुश्रुतज्ञान— प्ररूपणा—वध ३ १०५, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३९३, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ। सत् ४ २३३, सख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११३, अन्तर १ १५, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५०।

कुश्रुति—अशुभोपयोग १.४३३ ब।

कुष्मांड—२ १३१ अ, पिशाच जातीय व्यन्तर देव—निर्देश ३ ५८ ब, आयु १ २६४ ब।

कुष्मांड गणमाता—विद्या ३.५४४ अ।

कुसंगति—अशुभोपयोग १.४३३ ब, ४ ११८ ब।

कुसंसर्ग—संगति ४ ११८ ब।

कुसुम—२.१३१ अ।

कुसुमवती—३.२७५ ब, ३.२७६ अ।

कुहा—२ १३१ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कूट—२.१३१ अ-ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कूट—कुण्डलवर पर्वत—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३ ४८७ अकन ३.४६७। कुलाचल पर्वत—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४। गंगा कुण्ड आदि—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४८४, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन २ ४५७। गजदन्त पर्वत—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ३.४४७। जम्बू शाल्मली वृक्षस्थल—निर्देश ३.४५८ ब, अकन ३.४५९। पद्मादि ह्रद—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३ ४५४। मानुषोत्तर पर्वत—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३ ४६४। रुचकवर पर्वत—निर्देश ३ ४७६ अ-ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६८-४-६९। विजयार्ध—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४। सुमेरु पर्वत के वन—निर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३.४५१।

कूट मातंगपुर—२ १३१ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

कूटलेख क्रिया—२.१७४ ब।

कूटस्थ अलोक—४.२७३ ब।

कूटाचल—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

कूर्च—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ।

कूर्म—इन्द्रिय प्रत्याहार ३.१३४ अ, मुनिसुव्रतनाथ २.३७९।

कूर्मचक्र यंत्र—३.३५१।

कूर्मोन्नत योनि—३.३८७ अ।

कूष्माण्डी देवी—नेमिनाथ २ ३७९।

कृत—२.१३१ ब।

कृतक—२.१३१ ब।

कृतकृत्य—२.१३१ ब, पुरुषार्थ ३ ७० ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब।

कृतकृत्य छद्मस्थ—२.३०५ ब।

कृतकृत्यवेदक—जन्म २ १३४ ब, दर्शनमोह क्षपण २.१७९ अ, मरण ३ २८३ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३७० ब, ४.३७२ अ।

कृतनाश हेत्वाभास—२.१३१ ब।

कृतमाल—२.१३१ ब, विजयार्ध का देव ३.४७१ ब।

कृतमाला—२.१३१ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कृतवर्मा—विमलनाथ २.३८०।

कृतसूय—सर्वायुध तीर्थंकर २ ३७७।

कृतांतवक्र—२ १३१ ब।
कृति—२ १३२ अ, कर्म २ २७ अ, गणित २ २२३ अ।
कृतिकर्म—२ १३२ अ, २ १३३ ब, कर्म २ २६ अ-ब, २ २७ अ, श्रुतज्ञान ४ ६९ ब।
कृतिकार्य—२.१४० अ, क्षत्रिय २ १७६ अ।
कृतिधारा—गणित २ २२९ अ।
कृतिमातृकधारा—गणित २ २२९ अ।
कृतिमूल—२ १४० अ, गणित २.२२३ अ।
कृत्—२ १३१ ब।
कृत्तिका—२.१४० अ, नक्षत्र २ २०३ अ।
कृत्स्न—२.१४० अ।
कृपा—अनुकम्पा १ ६९ अ।
कृमिनिर्गमन—आहारान्तराय १.२९ ब।
कृश—उपकार १ ४१५ अ, सल्लेखना ४ ३८२ अ।
कृशीकरण—कायक्लेश २ ४७ अ।
कृषि—कर्मार्य १.२७५ अ, व्यवसाय २ १४० अ।
कृष्टि—२ १४० अ।
कृष्टिकरण—२.१४० अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ अ, स्पर्धक ४ ४७३ ब।
कृष्टिवेदन—२.१४२ अ।
कृष्ट्यन्तर—२ १४१ अ।
कृष्ण—२.१४३ अ, उग्रसेन १ ३५२ अ, नारायण ४ १८ अ, तीर्थंकर निर्मन २ ३७७, तीर्थंकर नेमिनाथ १ ३३६ ब, २ ३९१, यदुवंश १.३३७। राष्ट्रकूट वंश १.३१ अ, हरिदेव ४ ५३० अ।
कृष्णगंगा—२ १४३ अ।
कृष्णगिरि—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
कृष्णदास—२ १४३ ब, इतिहास १ ३३४ ब, १.३४७ ब।
कृष्णपंचमी व्रत—२.१४३ ब।
कृष्णपक्ष—लवणसागर ३.४६० ब।
कृष्णप्रभ—३ ४९१ ब।
कृष्णमती—२ १४३ ब, तीर्थंकर २ ३७७।
कृष्णराज—२ १४३ ब, राष्ट्रकूट वंश १.३१५ ब।
कृष्णलेश्या—आयुबंध १ २५९ अ, लेश्या ३.४२२ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०७, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३८४, उदयस्थान १ ३९३ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६, त्रिसयोगी भंग १.४३८। सत् ४.२४२, सख्या ४.१०७, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४ ४९०, काल २.११५, अन्तर १.१८, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५१।
कृष्णवर्णा—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
कृष्णवर्मा—२.१४३ ब।
कृष्णा—असुरेन्द्र की अग्रदेवी ३ २०९ अ।
केंद्रवर्ती वृत—२ १४३ ब।
केंद्रित—चित्तवृत्ति १ ४६६ अ।
के—उ० अनन्त की सहनानी २.२१९ अ।
केकय—२ १४३ ब।
केकयी—२.१४३ ब रघुवंश १ ३३८ अ।
केतवा—२ १४३ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।
केतु—२ १४३ ब, ग्रह २ २७४ अ, ज्योतिष लोक—निर्देश २.३४८ अ, इन्द्र २ ३४५ ब, सूर्यग्रहण २ ३५१ अ। विमान—आकार २.३४८, विस्तार २ ३५१ ब, २ग व वाहक देव २ ३४८ अ, चित्र २ ३४८।
केतुभद्र—२.१४३ ब।
केतुमती—२.१४३ ब, व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ३.६११ ब।
केतुमाल—२ १४३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
केतुमाला—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
केरल—२ १४४ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
के० मू० १—केवलज्ञान का प्रथम मूल २.२१९ अ।
के० मू० २—केवलज्ञान का द्वि० मूल २.२१९ अ।
केवल—२ १४४ अ।
केवलज्ञान—२.१४४ अ, आत्मानुभव १ ८३ अ-ब, उपक्रम १.४१६ ब, ऋद्धि १ ४४८, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब, गति-अगति २.३२२ अ, गुणस्थान २.२६१, ज्ञान २ २६० ब, छद्मस्थ २.२५९ ब, दर्शन २.४१३ ब, मतिज्ञान २ २५९ ब-२६०, मोक्ष ३ ३२६ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, विकल्प ३ ५३८ ब, श्रुतज्ञान ४ ६३ अ, सहनानी २.२१९ अ। सिद्धो का अल्पबहुत्व १ १५४ अ, सुख ४ ४३२ अ।
केवलज्ञान (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०६, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १.३९३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४.३००, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०७ अ। सत् ४.२३६, सख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २ ११३, अन्तर १.१५, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५०।
केवलज्ञानातिशय—अर्हन्त १.१३७ ब।
केवलज्ञानावरण—ज्ञानावरण २ २७१ ब, सर्वघाती अनुभाग १ ९२ ब। प्ररूपणा—प्रकृति २ २७० ब, ३.८८, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९७ बन्धस्थान ३.१०९, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८७ ब, १ ३९६, १ ३९७,

उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २७८. सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसयोगी भग १ ३९९। सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८।

केवलज्ञानी—दिव्यध्वनि २.४३० ब।

केवलदर्शन—कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब, दर्शनोपयोग २.४१३ अ, मोक्ष ३ ३२६ अ। प्ररूपणा-बन्ध ३ १०६, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८४, उदयस्थान १ ३९३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०७ ब। सत् ४ २४२, सख्या ४.१०७, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४.४९०, काल २ ११५, अन्तर १.१७, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१।

केवलदर्शनावरण—२ ४२० अ। प्ररूपणा—प्रकृति २ ४२०, ३ ८८, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसयोगी भग १ ३९९। सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८।

केवललब्धि—नव लब्धि ३ ४१२ अ।

केवलव्यतिरेकी—४.५४० ब।

केवलान्वयी—४ ५४० अ।

केवलिभुक्ति प्रकरण—इतिहास १ ३४२ अ।

केवली—२.१५५ अ, अनुभव (श्रुतज्ञानी) १ ८३ अ, अर्हन्त (सयोगी अयोगी) १ १३८ अ, अवर्णवाद १ २०९ अ, इतिहास १ ३१६, नामकर्म उदयस्थान १ ३९६-३९७, तीर्थंकर सघ २ ३८६, निगोद ३.५०५ ब, बन्ध ३ १७९ अ, मोक्ष ३ ३२८ ब।

केवलीसमुद्घात—२ १६६ अ, ४ ३४३, अनुभागबन्ध ४ ४६९, उदयस्थान (नामकर्म) १ ३९३ ब, १ ३९६-३९७, क्षेत्रप्ररूपणा २ १९७-२०७, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४, सत्त्व ४ ३४३, स्थिति बन्ध ४ ३४३, स्पर्शन प्ररूपणा ४ ४७७-४९४।

केश—२.१६९ ब, ग्रह २.२७४ अ।

केशरिन—यदुवश १.३३७।

केशलोंच—२ १६९ ब, कायक्लेश २.४७ ब, क्षुल्लक २.१८९ अ, तप २.३६३ ब, परिषह ३ ३४ ब, स्वाध्याय ४.५२६ अ।

केशव—२ १७० ब।

केशवचन्द्र—नन्दिसघ १ ३२३ ब।

केशवराज—इतिहास १.३३२ अ।

केशववर्णी—२.१७० ब, इतिहास १.३३२ ब, १.३४५ ब।

केशवसेन—२.१७० ब, इतिहास १ ३३४ अ।

केशवाणिज्य—खरकर्म ४ ४२१ ब।

केशाग्र—२ १७० ब।

केशवापक्रिया—संस्कार ४ १५१ अ।

केसरिसेन—अजितनाथ २.३८७।

केसरी ह्रद—२ १७० ब। नील पर्वत का ह्रद—निर्देश ३.४४६ ब, विस्तार ३ ४९०-४९१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४५४।

कैकय—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

कैकेयी—बलदेव ४ १८ ब।

कैटभ—२ १७० ब।

कैप्सियन—उत्तरकुरु १ ३५६ अ।

कैरल—२ १४४ अ।

कैलाश पर्वत—२.१७० ब, ऋषभ २ ३८५, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, विद्याधर नगरी २.५४५ ब।

कैल्विष—नीच जातीय देव २ ४४५ ब।

कोकण—२.१७० ब।

को—कोटि २ २१८ ब।

कोका—२ १७० ब।

कोकिल—शतारेन्द्र का यान ४.५११ ब।

कोकिल पचमी व्रत—२.१७० ब।

को० को०—कोडाकोडी २ २१८ ब।

कोट—२ १७१ अ।

कोटर—३.५२८ अ।

कोटि—संख्या प्रमाण २ २१४ ब, सहनानी २ २१८ ब। ५ कोटि या ९ कोटि शुद्ध आहार १ १२१ अ।

कोटिप्पकोटि—सख्या प्रमाण २ २१४ ब।

कोटिवीर—४.८० अ।

कोटिशिला—२.१७१ अ, ४.२० अ।

कोटि सहित—३.१३१ ब।

कोटेश्वर—२.१७१ अ, इतिहास १.३३३ अ।

कोडा कोडी—सख्या ४ ९२ अ, सहनानी २ २१८ ब।

कोत्किल—२.१७१ अ।

कोप्पण—२ १७६ अ।

कोरव्य—२ २१० ब।

कोलाहल—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

कोश—२ १७१ अ, क्षेत्र प्रमाण २.२१५ अ।

कोशल—मनुष्यलोक ३.२७५ अ-ब।

कोशिनी—बलदेव ४.१८ ब।

कोष्ठबुद्धि—ऋद्धि १.४४८, १.४४९ अ, गणधर २ २१२ ब।

कोष्ठा—२.१७१ अ, धारणा २ ४९१ अ।

कोसल—२ १७१ अ।
कोसियारुव्व—३ ५३१ अ।
कौंडकुण्डपुर—२ १२६ अ-ब।
कौंडिन्य—४ ८० अ।
कौत्कल—२ १७५ ब, क्रियावादी एकान्ती १ ४६५ अ।
कौत्कुच्य—२ १७१ अ।
कौमार देव—कुमार २ १२९ ब, सैद्धान्तिक १ ३२५।
कौमार सप्तमी व्रत—२.१७१ अ।
कौमुदी—नारायण ४ १९ ब। बलदेव ४ १८ अ।
कौरव—२ १७१ अ।
कौशल देश—मनुष्यलोक ३ २७५ अ-ब।
कौशांबी—२.१७१ ब, नारायण ४.१८ ब, नमिनाथ २ ३७८, पद्मप्रभ २ ३७९।
कौशिक—२ १७१ ब, एकान्ती १ ४६५ अ, क्रियावादी २ १७५ ब, विद्याधर ३ ५४४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, विद्याधर वश १ ३३९ अ।
कौशिकी—२ १७१ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, विद्या १.३३९ अ।
कौस्तुभ—२ १७१ ब, नारायण ४ १९ ब। लवण सागर का पर्वत—निर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४७९, वर्ण ३ ४७८, अवस्थान ३ ४६२ अ, अंकन ३ ४६१।
कौस्तुभाभास—२ १७१ ब। लवण सागर का पर्वत—निर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४७९, वर्ण ३ ४७८, अवस्थान ३ ४६२ अ, अंकन ३ ४६१।
क्रतु—२ १७१ ब, पूजा ३ ७४ अ।
क्रम—२ १७१ ब, अनेकान्त १ १०५ ब, निर्वाण ३ ३९६ ब, मुक्ति २ ४८४ अ, योगवर्गणा ३ ३८३ ब।
क्रमकरण—२ १७३ अ, अपकर्षक १ ११६ अ, उपशम १ ४४० ब-४४१ अ, क्षय २ १८० अ।
क्रमण—२ १७३ अ, मानुषोत्तर के कूट का देव—३ ४७५ अ, अंकन ३ ४६४।
क्रमप्रवृत्त—गुण २.२४२ ब, द्रव्य २.४५४ अ।
क्रमबद्ध नियति २ ६१३ अ।
क्रमभाव—अभिनाभाव १ २०२ ब।
क्रमभावी—द्रव्य (पर्याय) २.४५४ अ, पर्याय ३.४५ ब, ३.४७ अ।
क्रमभू—गुण २ २४२ ब।
क्रमवर्तित्व—२.१७२ अ।
क्रमवर्ती—२ १७२ ब, ध्येय (पर्याय) २.५०० अ, विकल्प ३ ५३८ ब।
क्रमानेकान्त—२ १७२ ब।
क्रियमाण—२ २९८ अ।
क्रियांतर निवृत्ति—मोक्षमार्ग ३.३३६ ब।
क्रिया—कर्ता-कर्म २ १७ अ, काल २.८३ अ, क्रिया २ १७३ अ-१७४ अ, ज्ञान २ २९८ अ, पर्याय ३.४७ अ, पुरुषार्थ २ ६१९ अ, शुक्लध्यान ४ ३५ अ, श्रावक ४ ५१ ब, ४ ५२, सावद्य ४ ४२१, हिंसा ४.५३२ अ।
क्रियाऋद्धि—२.१७५ अ, ऋद्धि १ ४४७, १.४५१ ब।
क्रियाकर्म—कर्म २ २६ अ-ब, कृतिकर्म २.१३३ ब, क्षेत्र-प्ररूपणा २.२०८, नित्य-नैमित्तिक (सामायिक) ४ ४१५ ब, भाव ३ २२३, संख्या ४.११६, सत् ४ २६९ अ।
क्रियाकलाप—२ १७५ अ, आशाधर १.२८० ब, इतिहास १ ३४४ अ, टीका १ ३४३ अ।
क्रियाकोश—२ १७५ अ, इतिहास १.३४८ अ।
क्रियाधिकरणी—हिंसा ४ ५३२ अ।
क्रियानय—२ ५२३ ब, ज्ञाननय २ २९९ ब विज्ञानवाद ३ ५४० अ।
क्रियानिमित्तक—उत्पाद १ ३६२ ब, नाम २ ५८२ ब।
क्रियानिरोध—चारित्र २.२८३ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ ब।
क्रियान्तर निवृत्ति—मोक्षमार्ग ३.३३६ ब।
क्रियामंत्र—३ २४६ ब।
क्रियावती शक्ति—२ १७३ ब।
क्रियावाची—२ ५८२ ब।
क्रियावाद—२ १७५ अ।
क्रियावान—काल २.८६ अ, द्रव्य २ ४५६ अ।
क्रियाविशाल—२.१७५ ब, श्रुतज्ञान ४ ६९ अ।
क्रियाशक्ति—२ १७३ ब।
क्रियाहीन ज्ञान—३.३३३ ब।
क्रीडापर्वत—२ १७५ ब।
क्रीडाशाला—ज्योतिष देवो के प्रासादो मे २.३५१।
क्रीतदोष—२ १७५ ब, आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।
क्रूर—यदुवश १ ३३७।
क्रोध—२ १७५ ब, कषाय २ ३५ ब, २ ३६ अ, क्षमा २.१७७ अ, जीव २ ३७ अ, दोष ३ ५२९ ब, द्वेष २.३९ अ, शक्ति २ ३८ अ, हिंसा ४.५३३ ब। प्ररूपणा—बध ३ १०५, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८२, उदयस्थान १.३९३ अ, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०७ अ। सत् ४ २२८, संख्या ४ १०५, ४ ११७, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २.११२, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०-१६१ अ,

अन्तर १ १५, भाव ३ २२१ अ, ३ २२३, अल्पबहुत्व ४.१५३, भागाभाग ४.११७।

क्रोधकांडक—२.४२ अ।

क्रोधकर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४४, स्थिति ४.४६१, अनुभाग १.९४ ब; प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३.१०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३८९, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२९५, त्रिसयोगी भग १ ४०१ ब। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

क्रोधशक्ति—कषाय २.३८ अ।

क्रोधाग्नि—१.३५ ब।

क्रोधी—आहार दोष १.२९१ अ, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब।

क्रौंच—२.१७६ अ। ब्रह्मोत्तर यान ४.५११ ब।

क्रौंचवर द्वीप सागर—नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, जल का रस ३.४७० अ, अधिपति देव ३.६१४, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अंकन ३ ४४३।

क्लिश्यमान—२ १७६ अ।

क्लेश—२.१७६ अ, २.४७० अ।

क्वाथतोय—२ १७६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

क्षण—प्रतिबुद्धता ३.११९ ब।

क्षणभंगसिद्धि—अर्चट १ १३४ ब।

क्षणभेद या अभेद—उत्पादादि १.३६०।

क्षणयोगनिद्रा—२ ६१० अ।

क्षणलवप्रतिबुद्धता—३ ११९ ब।

क्षणिक—उपादान १ ४४३ ब।

क्षणिकत्व—उत्पादादि १.३५८ ब।

क्षतौजा—मगधदेश १.३१२।

क्षत्रवती—२ १७६ अ, मनुष्यलोक (नदी) ३ २७५ ब।

क्षत्रिय—२ १७६ अ, जयदेव तीर्थंकर २.३७७, श्रुतधर १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ।

क्षत्रिय वंश—३ ५२३ ब।

क्षत्रिय वर्ण—३ ५२३ ब, ३ ५२४ अ।

क्षपक—२.१७६ अ, अपवाद मार्ग १ १२१ ब, अपूर्वकरण १.१२५ अ, अवपीडक १.२०० अ, आचार्य (सल्लेखना) ४.३९१ अ, आराधना १.२७१ ब, सल्लेखना ४.३८३ ब, ४ ३८८ अ-३९१ अ-३९२ अ-ब।

क्षपकश्रेणी—४ ७२ ब, ४ ७३ अ, आबाधा १ २५० अ, उपशम ४.९२ ब, करण दशक २.६ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब, बन्धक ३.१७९ अ, समुद्घात ४ ३४३ अ।

क्षपकश्रेणी (प्ररूपणा)—बन्ध ३ ९७, बन्धक ३.१७९ अ, बन्धस्थान ३ ११०-१११, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३९२ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२७८-२७९, सत्त्वस्थान ४.६८९, ४ ३०४, त्रिसंयोगीभग १ ४०६ अ। सत् ४.१६३, सख्या ४.९४ ब, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २.१००, कालावधिका अल्पबहुत्व १.१६१, अन्तर १.७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३।

क्षपण—२.१७६ ब, चारित्रमोह (अन्तरकरण) १.२६ ब।

क्षपण काल—अल्पबहुत्व १.१६१ अ।

क्षपणसार—२ १७६ ब, इतिहास १.३४२ ब, टीका १.३४४ ब, १ ३४८ अ।

क्षपणा—४ ३९० ब, ४.३९२ अ।

क्षपित कर्मांशिक—२.१७६ ब।

क्षमण—४.३९० ब।

क्षमणा—४ ३९० ब।

क्षमा—२.१७७ अ, क्षमणा ४.३९१ अ, शुभोपयोग १ ४३४ ब, सयम ४.१३९ ब।

क्षमा-धर्म—२.१७७ अ।

क्षमावणी व्रत—२ १७८ अ।

क्षमा-श्रमण—२.१७८ अ, देवर्धि १.३२९ अ।

क्षय—२.१७८ अ, विसंयोजना ३.५७१ ब।

क्षयदेश—२.१७८ अ।

क्षयोपशम—२ १८१ ब, करण चिह्न (अवधिज्ञान १.१९२ अ-ब, त्रिकरण २.१८५ अ, भवप्रत्यय अवधिज्ञान १.१९३ अ, लब्धि ३.४१२ अ, सम्यक्त्व २.१८५ अ, ४ ३७० ब।

क्षांति—२ १८६ अ।

क्षायिक चारित्र—२ २८५ ब।

क्षायिकदान—२ ४२३ अ।

क्षायिक भाव—अपूर्वकरण, १ १२५ ब, औदयिकत्व १ ४०८ ब, केवली २.१५८ अ, क्षय २ १८१ अ, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब।

क्षायिक भोग व उपभोग—३ २३७ ब।

क्षायिक लब्धि—३ ४११ ब।

क्षायिक लाभ—३.४११ अ।

क्षायिक वीर्य—३ ५७७ अ।

क्षायिकसम्यक्त्व—४.३६६ ब, ४ ३७२ अ, अढाई द्वीप २ ३६९ ब, अनन्तानुबन्धी विसंयोजना १ ४३९ ब, तिर्यंच २ ३६८ ब, भवनत्रिक देव २.४४९ अ। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०७, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८५, उदयस्थान १ ३९३ ब, उदीरणा १ ४११ अ,

संक्रमण ४.८७ अ, सत्त्व ४ ३७८, २८४, सत्त्वस्थान ४ २८९, ३०१, ३०६ त्रिसंयोगी भंग १.४०८ अ। सत् ४ २५५, सख्या ४.१०८, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४ ४९२, काल २.११८, अन्तर १ २०; भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५२।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि—अप्रशस्त वेद ३.५८८ अ, उपशान्त कषाय ४ ३१२ ब, क्षीण कषाय ४.३१२ ब, दर्शमोह क्षपणा २ १७९ ब, संक्रमण ४ ८७ अ, सयतासंयत २.३६८ ब।

क्षायोपशमिक भाव—अज्ञान १ ३७ अ, अज्ञानी २ २६६ ब, गुणस्थान ३ २०९ अ, चारित्र २ २८५ ब, पौद्गलिकत्व ३ ३१८ ब, योग ३.३७७ ब, सयम ४ १३१ ब, सयमासयम ४ १३५ अ, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब।

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व—४.३६६ ब, ४ ३७० ब, २ १८४ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०७, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३८५, उदयस्थान १.३९३, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १.४०८ अ। सत् ४.२५७, सख्या ४.१०९, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४.४९२, काल २.११८, अन्तर १.२०, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५२।

क्षारराशि—२.१८६ ब, ग्रह २.२७४ अ।

क्षितिशयन—२.१८६ ब, निद्रा २.६०९ ब।

क्षितिसार—४.१५ अ।

क्षिप्रमतिज्ञान—मतिज्ञान ३.२५६ अ।

क्षिप्रमतिज्ञानावरण—१ ४४९ ब।

क्षीणकषाय—२ १८६ ब, आरोहण २.२४७ अ, करण दशक २.६ अ, परिषह ३.३४ अ, बन्धक ३.१७९ अ, वीतराग २ १८६ ब, वीतराग छद्मस्थ २.१८६ ब, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब, समुद्घात ४.३४३ अ।

क्षीणमोह—करण दशक २.६ अ, कषाय २.४० ब, काय २ ४५ ब, परिषह ३ ३४ अ, बन्धक २ १७९ अ, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब, समुद्घात४ ३४३ अ।

क्षीणमोह (प्ररूपणा)—बन्ध ३ ९८, बन्धस्थान ३ ११०-१११, बन्धक ३ १७९ अ, उदय १ ३७५, उदय-स्थान १.३९२ अ, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२७९, सत्त्वस्थान ४ २८९, २९६, ३०४, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ अ। प्रदेशनिर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४। सत् ४ १६४, सख्या ४.९४, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४.४७७, काल २ १००, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१ अ, अन्तर १.७, भाव ३.२२२ब, अल्प-बहुत्व १.१४३।

क्षीरकदंब—२ १८७ ब।

क्षीरफल—उदम्बर १ ३६३ ब।

क्षीररस—२ १८७ ब, ग्रह २.२७४ अ।

क्षीरवर द्वीप सागर—२.१८७ ब, नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, जल का रस ३ ४७० अ, अधिपति देव ३.६१४, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अंकन ३,४४३।

क्षीरस्रावी ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १ ४५६ ब।

क्षीरोदधि—नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, जल का रस ३ ४७० अ, अधिपति देव ३ ६१४, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अक ३ ४४३। वैदिकाभिमत ३.४३१ ब।

क्षीरोदा—२.१८७ ब, विभगा नदी—निर्देश ३.४६० अ, नाम ३.४७४ ब, विस्तार ३ ४८९, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने।

क्षुद्रध्वजा—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ।

क्षुद्रभव—२ १८७ ब, आयु १.२६४, कालावधि का अल्प-बहुत्व १ १६१ अ।

क्षुद्रहिमवान्—पद्म आदि द्रहो का कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४५४।

क्षुधा—२.१८७ ब, परिषह ३ ३३ ब, ३.३४ अ।

क्षुल्लक—२ १८८ अ, स्पर्श्य शूद्र ३ ५२५ ब।

क्षुल्लक दीक्षा—स्पृश्य शूद्र ३ ५२५ ब।

क्षुल्लक भव—३.२०७ ब।

क्षेत्र—२.१९० अ, अनुयोगद्वार १ १०२ अ, अन्तर १ ३ ब, अवधिज्ञान १ १८८ ब, १.१९६ अ, आगमार्थ १ २३४ अ, उपक्रम १ ४१६ ब, कर्मोदय १ ३६७ अ, कायोत्सर्ग ३ ६२० ब, गणना ४ ९२ ब, निमित्त २ ६४ अ, प्रमाण २ २१५ अ, ३ १४५ अ, प्ररूपणा २ १९७, बध ३ ८९ ब, मुक्ति ३ ३२६ ब, वसतिका ३ ५२७ अ, सप्तभगी ४ ३२० अ, स्वचतुष्टय २ २७७ ब।

क्षेत्र (भौगोलिक)—चातुर्द्वीपिक भूगोल ३ ४३७ अ, बौद्धाभिमत भूगोल ३ ४३४ अ, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब। जैनाभिमत—निर्देश ३ ४४६ अ, विस्तार ३ ४७९-४८०-४८१, अंकन ३ ४४४, ४६४ के सामने। जैनाभिमत विदेह के ३२ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नाम २ ४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८०, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४५० अ।

क्षेत्र—भरतादि क्षेत्रो की चूलिका, गणित २ २३३ अ।

क्षेत्रऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५६ ब।

क्षेत्रज्ञ – २ २०९ अ, जीव २ १९१ ब, २.३३३ अ-ब।
क्षेत्रधर्म—मगध देश १.३१२।
क्षेत्रनिबंधन –२ ६१० ब।
क्षेत्रपरिवर्तन—४ १४७ ब।
क्षेत्रपाल—मूढता ३.३१५ ब।
क्षेत्रप्रत्याख्यान – ३ १३२ अ।
क्षेत्रप्रदेश —२ २०९ अ।
क्षेत्रप्रमाण—२ २०९ अ, २.२१५ अ, ३.१४५ अ, क्षेत्र की अपेक्षा गणना ४ ९२ ब।
क्षेत्रप्रयोग—२ २०९ अ।
क्षेत्रप्ररूपणा—२ १९७, स्वर्गन ४.४७४ ब।
क्षेत्रफल—२.२०९ अ। गणित—सामान्य विधि २ २३२ ब, चतुरस्र २ २३२ ब, धनुषाकार २ २३३ अ, बेलनाकार २.२३४ अ, मृदंगाकार २.२३४ अ, वलयाकार २ २३३ ब, वृत्ताकार २.२३२ ब, शखाकार २ २३४ अ।
क्षेत्रभवाननुगामी—अवधिज्ञान १.१८८ ब।
क्षेत्रभवानुगामी —अवधिज्ञान १.१८८ ब।
क्षेत्रमंगल—३ २४१ अ।
क्षेत्रमिति—२ २०९ अ।
क्षेत्रयुति—३ ३७३ ब।
क्षेत्रलोक ~ २.१९२ अ।
क्षेत्रवर्गणा — ३ ५१२ ब।
क्षेत्रवान—२ २०९ अ, द्रव्य २.४५६ ब।
क्षेत्रशुद्धि—ज्ञान १ २२८ अ, शुद्धि ४ ३९ ब, स्वाध्याय ४.५२६ अ।
क्षेत्रसयोग पद – ३ ५ अ।
क्षेत्रससार—४ १४७ अ।
क्षेत्रसमास बृ०—इतिहास १ ३४१ अ।
क्षेत्र सामायिक—४.४१६ अ।
क्षेत्रस्तव—३ २०० ब।
क्षेत्रस्पर्शन —४.४७६ अ।
क्षेत्रादिग्रंथ—२ २७३ अ।
क्षेत्रानुगम —१ १०२ ब, २.१९१ अ।
क्षेत्रार्य—आर्य १.२७५ अ।
क्षेत्रोपसपत—४.३३७ अ।
क्षेप—२ २०९ अ।
क्षेपंकर —२ २०९ अ, कुलकर ४ २३, ग्रह २ २७४ अ, लौकान्तिक देव ३ ४९३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
क्षेमधर – २.२०९ अ, कुलकर ४.२३, इतिहास १ ३३१ अ।
क्षेम—२ २०९ अ, ग्रह २.२७४ अ।
क्षेमकीर्ति—२.२०९ अ, काष्ठा सघ १.३२७ अ, १.३३१ अ, १.३३३ ब।
क्षेमचंद्र—२.२०९ ब, इतिहास १ ३३३ ब।
क्षेमचरी—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
क्षेमपुर—२.२०९ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
क्षेमपुरी—२ २०९ ब, विदेह नगरी – निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८०-४८१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। तीर्थंकर अरनाथ २.३७८।
क्षेमा—२ २०९ ब, बलदेव ४ १६ ब, विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८१, अंकन ३.४४४, ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।
क्षेमेंद्रकीर्ति—नन्दिसंघ १.३२३ ब।
क्षोभ—२.२०९ ब, अनुभव १.८५ ब।
क्षौद्रवर द्वीप सागर—नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८, जल का रस ३ ४७० अ, अधिपति देव ३.६१४, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अकन ३.४४३।
क्ष्वेलौषधऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५५ अ।

ख

खड—२.२०९ ब, अधःप्रवृत्तिकरण २ ८ अ, २.१० अ, भेद ३ २३७ अ।
खंडकल्पना—अभिभागी प्रतिच्छेद २ २४१ अ, आकाश १ २२१ अ।
खंडदेव—मीमासदार्शन ३.३११ अ।
खंडनखंडखाद्य—वेदान्त ३ ५९५ ब।
खडप्रपात—२ २०९ ब, चक्रवर्ती ४.१५ ब, विजयार्ध पर्वत की गुफा—निर्देश ३.४४८ अ, ३.४५५ अ-ब, ३ ४६२ ब, विस्तार ३.४८२, अकन ३.४४४, विदेहस्थ विजयार्धों की गुफा मे—निर्देश ३ ४६० अ, विस्तार ३ ४८२, अकन ३ ४६० अ। विजयार्ध पर्वतों के कूट—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३.४८३, वर्ण ३ ४७७, अंकन ३ ४४४, ३ ४४८।
खंडशलाका—२ २०९ ब।
खडिका—२ २०९ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
खंडित—२ २०९ ब, गणित २.२२३ अ।

खंडोत्कीर्ण काल—अन्तरकरण १ २६ ब।
ख—२ २०९ ब, अनन्त की सहनानी २.२२१ अ।
१६ ख—पुद्गल राशि २.२१९ अ।
१६ ख ख—कालसमयराशि २.२१९ अ।
१६ ख ख ख—आकाशप्रदेशराशि २ २१९ अ।
खगपुर—बलदेव ४.१७ अ, ४ १८ अ।
खचर—२.२०९ ब, विद्याधर ३.५४४ ब, ३.४४८ अ।
खटोलना गीत—इतिहास १ ३४७ ब।
खड—२.२०९ ब। नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।
खडखड—२.२०९ ब। नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १ २६३।
खडा—२.२०९ ब। नरक पटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।
खडिका—२ २०९ ब। नरक पटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।
खड्ग—२.२०९ ब, चक्रवर्ती ४ १३ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ, विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नाम निर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९-४८१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।
खड्गपुरी—२ २०९ ब, विदेहनगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८१, अकन ३ ४४४, ३.४६० अ, ३ ४६४ के सामने।
खड्गसेन—२ २०९ ब, इतिहास १.३३४ अ।
खड्गा—२.२०९ ब, विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८१, अकन ३ ४४४, ४६४ के सामने, चित्र ३.४६०अ।
खदिरसार—२ २०९ ब।
खरकर्म—२ २०९ ब, सावद्य ४.४२१ ब।
खरतरगच्छ—श्वेताम्बर गच्छ ४.७७ ब।
खरदूषण—२.२१० अ।
खरभाग—२.२१० अ, भावन लोक—निर्देश ३ ३८९ ब, १६ पटल ३.३८९ ब, विस्तार ३.३८९ ब, अंकन ३.२१० अ, ३ ३८९, ३.४३९, ३ ४४१, चित्र ३ २१० अ। भावन लोक ३.२०९ ब, भवनो की सख्या ३.२१०, तेज-अप्कायिक जीव २ ४५ ब।
खर्वट—चक्रवर्ती ४ १३ ब।
खलीनित—२.२१० अ, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२१ ब।
खांड—शुभ अनुभाग १ ९० ब।
खांसना—कायक्लेश २ ४७ ब।
खातिका—२ २१० अ, समवसरण ४ ३३० ब।
खाद्य—२ २१० अ, आहार १ २८५ अ।
खारवेल—२ २१० अ।
खारी—२ २१० अ, तौल का प्रमाण २ २१५ अ।
खुजली—कायक्लेश २ ४७ ब।
खुरपा—माया कषाय २ ३८ अ।
खुशालचंद—२ २१० अ, इतिहास १ ३३४ अ।
खेचर जीव—अवगाहना १ १७९, आयु १ २६३, इन्द्रिय १ ३०६ ब, जीवसमास २ ३४३, नभचर २ ३६७।
खेचरानंद—वानरवश १ ३३८ ब।
खेट—२ २१० अ, चक्रवर्ती ४ १३ ब।
खेटक—बलदेव ४ १७ ब।
खेद—२ २१० अ।
खेलमल्लक—श्वेताम्बर ४ ८० अ।
खोह—वसतिका ३ ५२८ अ।
ख्यातिपूजा लाभ—अनाकाक्ष अनशन १ ६५-६६, उपदेश १ ४२४ ब, तप २ ३५८ ब, २ ३६० अ, धर्म २ ४७६ अ, ध्याता २ ४९३ अ, राग ३ ३९६ ब, ३ ३९७ अ, वाद ३ ५३३ अ, विनय ३.५५२ ब, विवेक ३ ५६६ अ, सल्लेखना ४ ३८३ अ, साधु ४ ४०५ अ, स्वाध्याय ४.५२३।

ग

गंग—इतिहास—मूलसघ १ ३१६।
गगकीर्ति—नन्दिसघ १ ३२३ ब।
गगदेव—२.२१० अ, इतिहास १.३२८ अ, कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, नारायण ४.१८ अ, मूल संघ १ ३१६।
गंगराज—२ २१० अ।
गंगा—२ २१० अ, चक्रवर्ती ४ १५ ब, तीर्थंकर २ ३९२। नदी—निर्देश ३ ४५५ अ, विदेहस्थ नदी—निर्देश ३.४६० अ, विस्तार ३.४८९, जल का रंग ३.४७८

अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४४७। बौद्धाभिमत ३ ४३४ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, स्नान ४ ४२ ब, ४ ४७१ ब।

गंगाकुंड—२ २१०, निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४८३, ४९०, अकन ३ ४४४, ४४७, इसकी देवी ३ ४७२ अ।

गंगाकूट—२ २१० अ, नदी कुण्ड मे स्थित—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४८४, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४७। हिमवान पर्वत पर—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४।

गंगातट— नारायण ४.२० अ।

गंगादास—इतिहास १ ३३४ अ।

गगादेवी—२ २१० अ।

गगास्नान—४ ४२ ब, ४ ४७१ ब।

गंडरादित्य—३ २१० ब।

गडविमुक्त देव—२ २१० ब, नन्दिसघ, देशीयगण १ ३२५, इतिहास १ ३३१ ब, १ ३३२ अ।

गध—१ २१० ब, आहारान्तराय १ २८ ब, ईर्यापथ कर्म १ ३४९ ब, गुण २ २१० ब, निक्षेप २ ६०२ ब, पूजा ३ ७८ ब, व्यन्तर देव २ २११ अ।

गंधअष्टमी व्रत—२ २११ अ।

गंधकुटी—२ २११ अ, समवसरण ४ ३३१ ब, ४ ३३४ ब।

गंधकूट—२ २११ अ, शिखरी पर्वत—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४।

गंधदेव—नन्दीश्वर द्वीप तथा क्षौद्रवर का रक्षक देव ३ ६१४, आयु १ २६४ ब।

गंधमादन—२ २११ अ, यदुवश १ ३३७, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।

गंधमादन (कूट)—गजदन्त—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४, ३ ४५७।

गंधमादन(पर्वत)—२.२११ अ। गजदन्त—निर्देश ३.४५६ ब, नाम निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५-४८६, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४, ४५७, ४६४ के सामने। चित्र ३ ४५२ ब, इसके कूट व देव ३.४७२। नाभिगिरि—निर्देश ३ ४५२ ब, विस्तार ३ ४८३, ४८५-४८६, वर्ण ३ ४७७, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, अंकन ३ ४४, ३ ४६४ के समाने, चित्र ३ ४५२ ब।

गंधमालिनी—२ २११ अ। गजदन्त कूट—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४, ३ ४५७। विदेह क्षेत्र—निर्देश ३ ४६०, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९-४८०-४८१, अंकन ३ ४४४, ४६४ के समाने, चित्र ३ ४६० अ। वक्षार का कूट तथा देवी, ३ ४७२ ब।

गधमाली—२ २११ अ।

गंधयंत्र ३ ३५२।

गधर्व—२ २११ अ, कुन्थुनाथ का यक्ष २ ३७९, गुफा २ २११ अ, विद्याधर ३ ५४४ अ, सुमेरु के वन मे देव भवन—निर्देश ३ ४५० अ, अकन ३ ४५१। शक वश १ ३१४।

गंधर्वदेव—व्यन्तर देव—निर्देश ३ ६१० ब, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १.२६४ ब। इन्द्र की शक्ति आदि ३ ६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३ ६११ अ, अवस्थान ३ ६१२-६१४, ३ ४७१।

गंधर्वदेव (प्ररूपणा)—बध ३ १०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१८८, सख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १ १०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

गंधर्वनगर—अभिनन्दन नाथ २ ३८२, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

गंधर्वपुर—२ २११ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब,

गंधर्व विवाह—३ ५६५ ब।

गंधर्वसेन—२ २११ अ, शक वश १ ३१४।

गंधवती—नाभिगिरि—निर्देश ३.४५२ ब, नाम निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५-४८६, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४५२ अ।

गंधवती (कूट)—शिखरी पर्वत का—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४।

गधवान—२ २११ ब, नभिगिरि—निर्देश ३ ४५२ ब, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५-४८६, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४, ४६४ के सामने, चित्र ३ ४५२ ब।

गंधव्यास—गजदन्त का कूट—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४, ३ ४५७।

गंधसमृद्ध—२ २११ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

गंधहस्ती महाभाष्य—२.२११ ब, इतिहास १.३४० ब।

गंधा—२.२११ ब। विदेहस्थ देश—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७०, विस्तार ३.४७९-४८०, ४८१, अंकन ३ ४४४, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५-४८६, अकन ३.४४४।

गधारी – कुरुवश १.३३६ अ।

गंधिला—२ २११ ब। विदेहस्थ देश—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४८९, ३ ४८०, ३.४८१, अकन ३ ४४४, चित्र ३ ४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, अकन ३.४४४।

गंधोदक वृष्टि—अर्हन्तातिशय १ १३७ ब।

गंभीर—२ २११ ब, चैत्य-चैत्यालय ३ २९३ अ, यदुवश १ ३३७।

गंभीर मालिनी—२ २११ ब, विभगा नदी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४८९-४९०, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने।

गंभीरा—२ २११ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

गंभीरावर्त—चक्रवर्ती ४ १५ ब।

गगनखंड—ज्योतिषचक्र २ ३५०।

गगनचरी—२ २११ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

गगननंदन—२.२११ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

गगनमंडल—२ २११ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

गगनवल्लभ—२ २११ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

गगनानंद—वानरवश १ ३३८ ब।

गच्छ—२ २११ ब, गणित २ २२९ ब, २ २३० अ, जैनाभासी सघ १ ३१९ अ, श्वेताम्बर ४ ७७ ब।

गच्छपद—२.२११ ब।

गच्छ प्रतिबद्ध—सल्लेखना १ ४६ अ।

गच्छ विनिर्गति—सल्लेखना १ ४६ अ।

गज—२ २११ ब, एकान्त १.४६३ ब, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब, चक्रवर्ती ४ १३ अ, तीर्थंकर अजितनाथ २.३७९, सौधर्मेन्द्र व ईशानेन्द्र यान ४ ५११ ब। स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४ ५१९ ब, देव की आयु १ २६७।

गजकुमार—२ २११ ब।

गजदंत—२ २११ ब, गजदन्त पर्वत—निर्देश ३ ४५६ ब, नामनिर्देश ३ ४७१ ब, गणना ३ ४४५ अ, विस्तार ३ ४८२, ४८५-४८६, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४, ४५७, ४६४ के सामने, चित्र ३ ४५२ ब।

गजपुर—२ २११ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।

गजवती—२ २११ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, ३.२७६ अ।

गजवाहन—कुरुवश १.३३६ अ।

गजस्नान—सम्यग्दृष्टि ४.३७७ ब।

गजाधर लाल—२.२११ ब, इतिहास १ ३३४ ब।

गड्डी—२.२१२ अ।

गण—२.२१२ अ, सघ ४ १२४ अ।

गणग्रहणक्रिया—संस्कार ४ १५२ ब।

गणधर—२ २१२ अ, अग्निकुण्ड १ ३५ ब, इन्द्रभूति १.२९९ ब, तीर्थंकर सघ २ ३८६, मोक्ष ३ ३२८ ब।

गणधरकीर्ति—इतिहास १ ३३१ ब।

गणधरवलययंत्र—३ ३५२।

गणना—२ २१३ अ, प्रमाण ३.१४४ ब-१४५ अ।

गणनानत—२.२१३ अ, अनन्त १ ५५ ब।

गणना प्रमाण—३ १४४ ब-१४५ अ, २ २१४ ब।

गणना संख्यात—असख्यात १ २०६ अ।

गणपोषण काल—२ ८० ब।

गणिका—व्यन्तरेन्द्र—निर्देश ३ ६११ ब, भवन-विस्तार ३ ६१५। स्वर्गेन्द्र—निर्देश ४ ५१४ अ।

गणित—२ २१३ अ।

गणितज्ञ—२ २३४ अ।

गणितशास्त्र—२.२३४ अ।

गणितसारसग्रह—२.२३४ अ, इतिहास १ ३२९ ब, १ ३३० अ, १ ३४२ अ।

गणी—२ २३४ अ.

गणोपग्रहण क्रिया—सस्कार ४ १५१ ब।

गतभ्रम—राक्षसवश १ ३३८ अ।

गति—२ २२४ अ, काल द्रव्य २ ८४ ब, धर्म द्रव्य २.४८८ ब, २ ४९०, परिस्पन्दन ३.३७६ अ।

गति-अगति (सामान्य)—तिर्यच—कर्मभूमि भोगभूमि २ ३१९, पर्याप्तापर्याप्त २ ३२०, पृथिवी आदि पच स्थावर विकलत्रय २ ३२०, सज्ञी असज्ञी २ ३१९, सरीसृप व पक्षी २.३१९, देवगति व नरकगति—२ ३२०। मनुष्यगति—कर्मभूमि भोगभूमि २.३१९, दश व चतुर्दश पूर्वी २ ३१९, साधु परिव्राजक व तापस २.३१९, स्त्री पुरुष २ ३१९। षट्लेश्या व षट् सस्थान २ ३२१।

गति-अगति (गुण प्राप्ति)—तिर्यचगति कर्मभूमिज भोगभूमिज २ ३२२, देवगति २ ३२२, नरकगति २ ३२२, मनुष्यगति २.३२२। पचज्ञान-प्राप्ति २ ३२२, तीर्थंकरत्व मोक्ष व शलाकापुरुषत्व २ ३२२, सयम-सयमासयम व सम्यक्त्व २ ३२२।

गति-अगति (गुणस्थानप्राप्ति)—चतुर्गति सामान्य २ ३१८, मिथ्यादृष्टि से प्रमत्तसयत २ ३१८-३२०।

गति-अगति चूलिका—जन्म २ ३१८ ब।

गति द्विक—३ ९६ ब।

गति नामकर्म प्रकृति—२.२३६ ब, आयुकर्म १.२५४ अ,

१ २६२ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६२, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ९५ अ, ३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १ ३७२ ब, १ ३७३ ब, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

गतिप्रायोग्यानुपूर्वी—१ २४७ अ।

गति-भ्रमण काल—इन्द्रियमार्गणा २ ९५ अ।

गतिमार्गणा—२ २३४ अ, अवगाहना १ १७८, १ १८०, आयु १ २६२ अ, कषाय २ ३८ अ, २ ४० अ, मार्गणता ४ ६० अ, मोक्ष ३ ३२७ ब, सिद्धो का अल्पबहुत्व १ १५३।

गतिमार्गणा (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १००, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२. सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी स्थान भग १ ४०६ ब, आयुकर्म विषयक त्रिसयोगी स्थान १ ४०१। सत् ४ १६५, सख्या ४ ९५, क्षेत्र २ १९४,२ १९७, स्पर्शन ४ ४७९, काल २ ८३ अ, २ १०१, अन्तर १ ५, १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४३ ब, भागाभाग ४ ११०। पचशरीर स्वामित्व ४ ७, इसका अल्पबहुत्व १ १५९।

गदा—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

गद्यकथाकोष—२ ३ ब, इतिहास १ ३४२ ब।

गद्यचिन्तामणि—२ २३८ अ, इतिहास १ ३४१ ब।

गमन—गति २ २३५ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब धर्म द्रव्य २ ४८९ अ, विग्रहगति १ २४७ ब।

गमनहेतुत्व—धर्म द्रव्य २ ४८८ ब।

गमनागमन तप—कायक्लेश २ ४७ अ।

गया—बुद्ध गया (उरु बिल्व) १ ४४५ ब।

गरिमा—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५१ अ।

गरिष्ठ रस—३ ३९३ अ।

गरुड—२ २३८ अ, तीर्थंकर शान्तिनाथ का यक्ष २ ३७९, ध्यान २ ४९९ अ। सहस्रारेन्द्र तथा आनतेन्द्र का यान ४ ५११ ब। सानत्कुमार स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४ ५१५, देवायु १ २६७।

गरुडध्वज—२ २३८ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

गरुडपंचमीव्रत—२.२३८ अ।

गरुडेंद्र—२ २३८ अ।

गर्गर्षि—इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ अ, २ ६३९ ब।

गर्तपूर्ण वृत्ति—२ २३८ अ, भिक्षा ३ २२९ ब।

गर्दतोय—२ २३८ अ, लौकान्तिक ३ ४९३ ब।

गर्दभिल्ल २ २३८ अ, शकवश १ ३१४।

गर्भ—२ २३८ ब, ब्रह्मचर्य ३ १९३ अ।

गर्भकल्याणक—२ १३९ अ, कल्याणक २ ३२ अ।

गर्भगृह—भवनवासी देवो के भवनो मे ३ २१० ब।

गर्भज—जन्म २ ३१२ ब, २ ३१४, जीवसमास २ ३४३, तिर्यंच २ ३६७ मनुष्य अल्पबहुत्व १ १४६।

गर्भसंचार—४ ७६ ब।

गर्भाधान क्रिया—मन्त्र ३ २४६ ब, संस्कार ४ १५१ अ।

गर्भान्वयक्रिया—सस्कार ४ १५० ब।

गर्व—मानकषाय ३ २९४ ब।

गर्हण—२ २३८ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७८ ब।

गर्हा—२ २३८ ब, विषकुम्भ १ ४३४ अ, समिति ४ ४४२ अ, सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ।

गर्हित वचन—वचन ३ ४९७ ब।

गलसेन—तीर्थंकर २ ३९२।

गलितावशेष—२ २३८ ब, गुणश्रेणीसक्रमण ४ ८९ अ।

गवेषणा—२ २३८ ब, ऊहा १ ४४५ ब।

गव्यूति—२ २३८ ब।

गांगेय—२ २३८ ब, कुरुवश १ ३३६ अ।

गांधर्व विवाह—३ १९१ ब।

गांधार—२ २३८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ, यदुवश १ ३३७, विद्याधर वश १ ३३९ अ, विद्या ३ ५४४ अ, स्वर ४ ५०८ ब।

गाधार (कूट)—शिखरी पर्वत का—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४।

गांधारी—२ २३९ अ, विद्या ३.५४४ अ, विमलनाथ की यक्षिणी २ ३७९, हरिवश १ ३४० अ।

गाय—श्रोता ४ ७४ ब।

गारव—२ २३९ अ, विनय ३ ५५३ ब।

गारुड तत्त्व—२ २३८ अ।

गारुडी विद्या—२ ४९९ अ।

गार्ग्य—२ २३९ अ, १ ३२ अ, अक्रियावादी १ ४६५ अ।

गार्हपत्य—अग्नि १ ३५ ब।

गिरि—यदुवश १ ३३७, हरिवंश १ ३३९ ब।

गिरिकूट—२ २३९ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

गिरिकूटक—चक्रवर्ती ४ १५ अ।

गिरिनदन—वानरवश १ ३३८ ब।

गिरिनार—२ २३९ अ, नेमिनाथ २.३८४, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

गिरिवज्र—२ २३९ अ।

गिरिशिखर—२ २३९ अ, विद्याधर लोक ३ ५४६ अ, वसतिका ३ ५२८ अ।

गीतरति—२ २३९ अ, गन्धर्व जातीय व्यन्तरेन्द्र—निर्देश २ २२९ अ, ३ ६११ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब।

गीतरस—२ २३९ अ, गन्धर्व जातीय व्यन्तरेन्द्र—निर्देश २ २११ अ, ३ ६११ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब।

गीतवीतराग—इतिहास १ ३४७ म।

गुंजाफल—२ २३९ अ, तौल का प्रमाण २ २१५ अ।

गुड—शुभ अनुभाग १ ९० ब।

गुण—२ २३९ अ, २ २४० अ, अचेतन २ २४४ ब, अनन्त २ २४४ अ, अन्यदृष्टिप्रशसा १ ११२, अनुजीवी, २ २४३ ब, अमूर्त २ २४४ ब, अर्हन्त १ १३७ अ, अविभाग प्रतिच्छेद १ २०३ अ, २ २४१ अ, आचार्य १ २४२ अ, उत्पादादि १ ३६१ ब, उपचार १ ४१९-४२१, उपशम १ ४३७ अ, उपाध्याय १ ४४४ अ, कारण कार्य २ ५५ ब, चेतन २ २४४ ब, जीव २ ३३७ अ, धर्म २ ३३७ अ, परद्रव्य ४ ३२१ ब, पर्याय ४ ३२१ ब, पुद्गल ३ ६७ ब, प्रतिजीवी २ २४३ ब, भाव ३ २१७ ब, मूर्त २ २४४ ब, वर्णव्यवस्था ३ ५२४ ब, सदसत् १ ३६१ ब, स्वद्रव्य ४ ३२१ ब, स्वभाव ४ ५०७ ब।

गुणक—२ २४४ ब, गणित २ २२२ ब।

गुणकार—२ २४४ ब, अनुयोगद्वार १ १०२ ब, गणित २ २२२ ब, २ २२४ अ।

गुणकीर्ति—२ २४४ ब, द्राविड सघ १ ३२० ब, नन्दिसघ १ ३२३ ब, १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३० ब, १ ३३३ ब।

गुणगुरु—नमस्कार २ ५०५ ब।

गुणचंद्र—नन्दिसघ १ ३२३ ब, देशीय गण १ ३२४ ब, इतिहास १ ३३३ ब, १ ३४७ अ।

गुणत्व—२ २४४ ब।

गुणदोष—सल्लेखना ४ ३९० ब।

गुणधर—२ २४४ ब, यदुवंश १ ३३६। मूलसघ १.३१७ ब, १ ३२२ ब, गुणधर संघ १ परि०/३ १, इतिहास १ ३२८ अ, १ ३४० अ, १ परि०/२ १-२, १ परि०/३.१-२।

गुणधरकीर्ति—इतिहास १.३३१ ब।

गुणनन्दि—२ २४४ ब, नन्दिसंघ १ ३२३ अ, १.३२४ ब, देशीयगण १ ३२४ ब, इतिहास १ ३२९ अ, १ ३३० अ।

गुणन—२.२४५ अ, गणित २ २२२ ब, २.२२९ ब।

गुणनिमित्तक नाम—२ ५८२ ब।

गुणपरावर्तन—२ ९६ अ।

गुणपर्याय—पर्याय ३ ४६ ब, ३ ४८ अ।

गुणपर्याय आरोप—उपचार १.४२१ अ।

गुणप्रत्यय—अवधिज्ञान १ १७८ ब, १.१९२-१९९, करण चिन्ह १.१९१ ब।

गुणप्रत्यासत्ति—४ १४१ अ।

गुणभद्र—२ २४५ अ, उत्तरपुराण १ ३५६ अ, पंचस्तूप सघ १ ३२६ ब, सेनसघ १.३२६ ब, इतिहास प्र० १ ३३० अ, १ ३४२ अ, द्वि० १ ३३२ अ, १.३४४ ब, तृ० १ ३३३ अ।

गुणयोग—३ ३७६ अ।

गुणवती—२.२४५ अ।

गुणवर्म—२ २४५ अ, इतिहास १.३३२, १.३४५ अ।

गुणव्रत—२.२४५।

गुणश्रेणी—गणित २ २२८ ब, सक्रमण ४ ८८ ब।

गुणश्रेणी आयाम—सक्रमण ४ ८९ अ।

गुणश्रेणी निक्षेपण—संक्रमण ४.८९ ब।

गुणश्रेणी निर्जरा—अनिवृत्तिकरण २ १४ ब, प्रदेश निर्जरा अल्पबहुत्व १ १७४ अ, व्यवहारचारित्र २ २९१ अ, सक्रमण ४ ८९ अ।

गुणश्रेणीशीर्ष—संक्रमण ४ ८९ अ।

गुणसंक्रमण—४ ८४ अ, ४ ८८ अ, प्रदेशनिर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४ ब।

गुणसमुदाय—द्रव्य २ ४५३ ब।

गुणसेन—२ २४५ ब, काष्ठा संघ १.३२७ अ, लाडबागड सघ १ ३२७ ब, सेन सघ १ ३२६ अ, इतिहास १ ३३१ अ-ब।

गुणस्थान—२ २४५ ब, २ ३१८ ब, अनिवृत्तिकरण १.६७ अ, अन्तरकरण १ ५ अ, आत्मानुभव १.८४-८६ अ, आद्य चार गुणस्थान ४.४२४ ब, आर्य ३.२९७ ब, आरोहण अवरोहण क्रम २ २४७, आर्त्तध्यान १ २७४ अ, इन्द्रिय मार्गणा १ ३०७ अ, ईर्यापथ कर्म उपयोग १ ४३४ अ, उपशम श्रेणी १.४४२ अ, १ ३४९ अ, उपशान्तकषाय १ ४४२ ब, करण दशक २ ६ अ, कषाय २.४० ब, काय मार्गणा २.४५ अ, काल २.९६,

अ, क्षपक श्रेणी ४ ७२ ब, गोत्र ३ ५२२ ब छेदोपस्थापना चारित्र ३ ३६ ब, तिर्यञ्च २ ३६८ अ, त्रस २.३९८ ब, दर्शन मार्गणा २ ४१६ ब, दशकरण २ ६ अ, देव गति २ ४४७ अ, धर्मध्यान १ ८५ अ-ब, २ ४८१ ब, नरकगति २.५०४ ब, परिषह ३ ३४ अ, बद्धायुष्क १.२६२ अ, भव्यत्व मार्गणा ३ २१२ ब, भोगभूमि ३ २३५ ब, मरण ३.२८२ ब, मिथ्या नय ३ ३०७ ब, म्लेच्छ ३ ३४६ ब, ३ ३४७ अ, यथाख्यातचारित्र ३ ३७० ब, योगमार्गणा ३ ३७९ अ, रौद्रध्यान ३ ४०८ ब, लेश्यामार्गणा ३ ४२७ अ, वेदमार्गणा ३ ५८८ अ, शुक्लध्यान ४ ३६ अ, सज्ञा ४ १२१ ब, सज्ञी मार्गणा ४ १२२ ब, सामान्य २ ३१८ ब, सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती ध्यान ४ ३६ ब, सासादन ४ ४२४ ब, स्थान ४.४५२ ब।

गुणहानि—२ २४७ ब, उदय १ ३७१ अ-ब। गणित—निर्देश २ २३१ अ-ब, द्रव्य २.२३२ अ, चय २ २३२ अ, मध्यधन २.२३२ अ, अनुकृष्टि चय २ २३२ अ।

गुणांश—२ २४१ ब, मिश्र गुणस्थान ३.२१० अ।

गुणा—२ २४७ ब।

गुणाधिक—२.२४७ ब, सगति ३ ११९ अ।

गुणानुराग—शुभोपयोग १.४३४ ब, सगति ४.११९ अ।

गुणारोपण—प्रतिष्ठा विधान ३ १२० ब।

गुणार्थिक नय—२ २४७ ब, नय २ ५१५ ब

गुणित—२ २४७ ब, गणित २ २२२ ब।

गुणित कर्मांशिक—२ १७६ ब।

गुणित क्षपित घोलमान—२ १७७ अ।

गुणिदेश—२ २४७ ब, सप्तभगी ४ ३२४ अ-ब, ४ ३२५ ब।

गुणीनय—२ ५२३ ब।

गुणोतर श्रेणी—२ २४७ ब।

गुणोपचार—१ ४२१ ब।

गुण्य—२ २४७ ब, गणित २.२२२ ब।

गुप्तफल्गु—गणधर २ २१३ अ।

गुप्तयज्ञ—गणधर २ २१२ ब।

गुप्तवश—इतिहास १ ३११ अ-ब, १ ३१५।

गुप्तसंघ—१ ३१७ ब।

गुप्तसवत्—१.३०९ ब, १ ३१० अ।

गुप्ति—२.२४८ अ, अहिसा व्रत भावना १ २१६ अ, चारित्र २ २९४ ब, शुभोपयोग १ ४३३ अ, १ ४३४ ब, सयम ४.१३८ ब, सामायिक चारित्र ४.४२० अ, सूक्ष्मसाम्पराय चारित्र ४.४४१ ब।

गुप्तिऋद्धि—२ २५१ ब, पुन्नाट सघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३२८ अ।

गुप्तिगुप्त—२ २५१ ब, मूलसघ १ परि०/२ ३, ७-९, नन्दि सघ १ ३२३ अ, १ परि०/४ २, भद्रबाहु ३ २०५ ब, इतिहास १ ३२८ ब।

गुप्तिमान्—धर्मनाथ २.३७८।

गुप्तिवान्—सामायिक ४ ४१५ ब।

गुप्तिश्रुति—२ २५१ ब, पुन्नाट संघ १.३२७ अ, इतिहास १ ३२८ अ।

गुफा—गजदन्त पर्वत ३.४५३ अ, भरत एरावत विजयार्ध पर्वत—निर्देश ३.४१८ अ, गणना ३.४५ अ, विस्तार ३.४८२, अकन ३.४५८। विदेह विजयार्ध—निर्देश ३ ४६० अ, अकन ३.४६० अ। सुमेरु पर्वत के वन ३.४५० अ। वसतिका ३ ५२७ ब।

गुमानी राम—२ २५१ ब, इतिहास १ ३३४ ब।

गुरु—२ २५१ ब, अर्हन्त २.२५१ ब, आचार्य २.२५१ ब, आत्मा २.२५२ ब, आलोचना १ २७८ अ, उपाध्याय २.२५१ ब, निर्यापक २.६१४ ब, मिथ्यादृष्टि ३.४९६ ब, विनय ३ ५५१ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५६ अ, साधु २ २५१ ब।

गुरुडांक—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ।

गुरुतत्त्वविनिश्चय—२.२५३ ब।

गुरुत्व—२ २५३ ब।

गुरुत्वगति—२.२३५ अ।

गुरुपरम्परा—आगम १.२२८ अ, इतिहास १.३१६-३१७।

गुरुपूजन क्रिया—सस्कार ४.१५२ अ।

गुरुपूजा—शुभोपयोग १ ४३४ ब।

गुरुमत—मीमासक ३ ३११ अ।

गुरुमूढता—३ ३१५ ब।

गुरुवन्दना—३ ४९५ ब।

गुरुसाक्षी—व्रत ३ ६२६ अ।

गुरुस्थानाभ्युपगमन क्रिया—सस्कार ४.१५१ ब।

गुर्जर नरेन्द्र—२ २५३ ब।

गुल्म—२ २५३ ब। सेना ४.४४४ अ।

गुहिलराज—२.२५३ ब।

गुह्य—समयसार ४ ३२९ अ।

गुह्यक—२ २५४ अ। वर्द्धमान का यक्ष २.३७८।

गूगा—भाषा समिति ४ ४३० ब।

गूढ क्षुल्लक—२ १९० अ।

गूढदंत—कुलकर ४.२५।

गूढब्रह्मचारी—३.१९४ ब।

गृद्धता—आहार १ २८८ ब।
गृद्धपिच्छ—२.२५४ अ, कुन्दकुन्द २ १२६ब-१२७ अ, मूलसघ १.३२२ ब, नन्दिसंघ १ ३२४ अ, देशीय गण १.३२४ ब, इतिहास १ ३२८ ब।
गृद्धपृष्ठ—मरण ३.२८२ अ।
गृद्धि—लोभ ३.४९२ ब।
गृह—२ २५४ अ।
गृहकर्म—कर्म २ २६ अ, निक्षेप २ ५९८ अ।
गृहकूटक—चक्रवर्ती ४ १५ अ।
गृहक्षोभ—राक्षसवश १ ३३८ ब।
गृहत्याग-क्रिया—सस्कार ४ १५१ ब, ४ १५२ ब।
गृहपति—२ २५४ अ, अकम्पन १ ३० ब, चक्रवर्ती ४ १३ अ।
गृहस्थ—आत्मानुभव १ ८५-८६ अ। कायक्लेश तप २ ४८ अ।
गृहस्थ आश्रम—१.२८१ अ, वर्ण व्यवस्था ३ ५२४ ब।
गृहस्थधर्म—उपदेश १.४२४ ब, धर्म २ ४७३ अ, प्रत्याख्यान ३ १३२ ब, व्रत ३.६२८ अ, श्रावक ४.४८ ब।
गृहस्थाचार्य—आचार्य १.२४२ ब।
गृहस्थापित दोष—वसतिका ३.५२८ ब।
गृहीतग्रहण—ईहा ज्ञान १ ३५१ अ।
गृहीत द्रव्य—सहनानी २ २१९ अ।
गृहीतमिथ्यात्व—३ १७८ ब।
गृहीता—स्त्री ४ ४५० ब।
गृहीशिता क्रिया—सस्कार ४ १५१ ब, ४ १५२ ब।
गेंडा—श्रेयासनाथ २ ३७९।
गो—तीर्थंकर चन्द्रानन २ ३९२।
गो अलीक—सत्य ४ २७३ ब।
गोकुलेश—वैशेषिक दर्शन ३ ६०९ अ।
गोक्षीर फेन—२ २५४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।
गोचरी प्रतिक्रमण—व्युत्सर्ग ३ ६२१ अ।
गोचरी वृत्ति—भिक्षा ३ २२९ ब।
गोणसेन—२.२५४ अ, द्राविड सघ १ ३२० ब।
गोतमी पुत्र—इतिहास १ ३१४।
गोत्र—वर्ण व्यवस्था ३ ५२० ब।
गोत्रकर्म प्रकृति—प्ररूपणा ३ ८८, ३ ५२० ब, स्थिति ४.४६७, अनुभाग १ ९५, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १६७ अ, प्रदेश ३ १३७। बन्ध ३ ९३ ब, ३.९७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदय की विशेषता १.३७३ ब, आबाधा १ २४९ अ, उदयस्थान १ ३८७ उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसयोगी भंग १ ३९९। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।
गोदावरी—२.२५४ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, ३ २७६ अ।
गोदोहन आसन—कायक्लेश २ ४७ ब।
गोपसेन—२ २५४ अ, लाडबागड़ सघ १ ३२७ ब, इतिहास १ ३३० ब।
गोपुच्छ—काष्ठा सघ १ ३२० ब, योगवर्गणा ३.३८३ ब।
गोपुच्छक—२.२५४ अ। जैनाभासी संघ १ ३१९ अ।
गोपुच्छा—२ २५४ अ, कृष्टि २.१४२ अ, २ १४३ अ।
गोपुर—२ २५४ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब, व्यन्तरो के नगरो मे ३ ६१२ ब।
गोप्य संघ—२ २५४ अ, जैनाभासी सघ १ ३१९ अ, यापनीय सघ १.३१९ ब।
गोमती—२.२५४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
गोमूत्र—माया कषाय २ ३८ अ।
गोमूत्रिका गति—विग्रहगति ३.५४० ब।
गोमेदक—रत्नप्रभा पृथिवी ३ ३९१ अ।
गोमेध—२ २५४ ब, नमिनाथ का यक्ष २ ३७९।
गोम्मट—२ २७९ ब।
गोम्मटसार—२ २५४ अ, २.२८० अ, इतिहास १ ३३० ब, १ ३४२ ब। टीका—अभयचन्द्र व अभयनन्दि १ १२७ अ, इतिहास १ ३३२ ब, १ ३३३ ब, १ ३३४ ब, १ ३४५ अ-ब, १.३४६ ब, १ ३४८ अ।
गोम्मटसार पूजा—२.२५४ ब, इतिहास १ ३४८ अ।
गोम्मटेश्वर—२.२८० अ।
गोरस—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ अ, रस ३ ३९२ ब।
गोलाचार्य—२ २५४ ब, देशीय गण १.३२४ ब, इतिहास १ ३३० अ, नन्दिसघ १ ३२४ ब।
गोवदन—२.२५४ ब, ऋषभदेव का यक्ष २.३७९।
गोवर्द्धन—२.२५४ ब, मूलसघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ।
गोवर्द्धनदास—२.२५४ ब, इतिहास १ ३३४ अ।
गोविंद—२.२५४ ब। राष्ट्रकूट वश—द्वि० १.३१५ ब, तृ० १ ३१५ ब, चतु० १.३१५ ब। वेदान्ताचार्य ३ ५९५ ब। इतिहास १ ३३१ ब।
गोशय्यासन तप—कायक्लेश २.४७ ब।
गोशाल—२ २५४ ब, पूर्णकश्यप ३ ८२ अ।
गोशीर्ष—२.२५५ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
गोसर्ग काल—२.२५५ अ।

गौड—२ २५५ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
गौडपाद—२ २५५ अ, वेदान्ताचार्य ३ ५९५ ब, साख्याचार्य ४ ३९८ ब।
गौडिया—वैष्णव दर्शन ३ ६०९ अ।
गौण—२ २५५ अ, अनर्पित १ ६४ ब, मुख्य १ २३२ अ, सुख ४ ४३१ अ, स्याद्वाद ४ ४९९ अ।
गौणसेन—इतिहास १.३३० ब।
गौण्यनामपद—उपक्रम १ ४१६ ब, उपशम १ ४३७ अ, पद ३ ५ अ।
गौतम—२ २५५ अ, अन्धकवृष्णि १ ३० अ, असत्कार्यवादी १ ४६५ अ, गुणधर—मूलसघ १.३१६, इतिहास १ ३२८ अ। यदुवंश १ ३३७, श्वेताम्बर ४.७८ अ, ऋषि २ ६३४ अ।
गौतमद्वीप—लवण तथा कालोद सागर—निर्देश ३ ४६२ ब, ४६३ अ, विस्तार ३ ४७९, ३ ४६३ अ, अकन ३ ४४४ ३.४६१, ३.४६४ के सामने।
गौरव—अतिचार १ ४३ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ ब, गारव २ २३९ अ।
गौरिक—विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, विद्याधर वश १ ३३९ अ।
गौरिकूट—२ २५५ अ।
गौरी—२ २५५ अ, वासुपूज्यनाथ की यक्षिणी २.३७९, विद्या ३ ५४४ अ, १ ३३९ अ।
गौरीकूट—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
गौरीविद्या—विद्याधर वश १ ३३९ अ।
ग्यारह—अंगधर १ ३१६, १ ३२३, ४ ५६ अ, देशव्रत ४ ४७ ब, नारद ४ २२ अ, प्रतिमा ४ ४९ ब, श्रावकस्थान ४ ४४८ ब-४९ ब, सगम-स्थान ४ ४८ ब।
ग्रंथ—२ २७३ अ, अध्यात्मग्रंथ ३ ८ ब, परिग्रह ३ २८ अ, व्युत्सर्ग ३ ६२१ अ।
ग्रंथकर्ता—गणधर २ २१२ ब।
ग्रंथसम—२ २७४ अ, निक्षेप २ ६०२ अ।
ग्रंथि—२ २७४ अ, साधु ४ ४०६ ब।
ग्रंथिम—२.२७४ अ, निक्षेप २ ६०२ अ।
ग्रह—२ २७४ अ, ज्योतिष देव—निर्देश २ ३४५ ब, २ ३४८ अ, इन्द्र का नाम-निर्देश २ ३४५ ब, भद २ २७४ अ, किरणे तथा शक्ति २ ३४८ अ, परिवार २.३४६ अ, अवस्थान २ ३४६ ब, विमान-संख्या २ ३४८ अ, विमान विस्तार २ ३५१, अकन २ ३४८। चार क्षेत्र (गतिविधि) २ ३४९-३५०। वीथियाँ २ ३४९ ब। अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १.२६६। ज्योतिषलोक २.३४९ ब।
ग्रह (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ १८८, सख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।
ग्रहण—२ २७४ अ, आहारान्तराय १ २९ ब, चन्द्रग्रहण २.३५१ अ, सूर्यग्रहण २ ३५१ अ।
ग्रहण—अतीतग्रहणत्याग ३.३०५ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब।
ग्रहणकाल—काल २ ८१ अ।
ग्रहणप्रायोग्य वर्गणा—३.५१३ ब।
ग्रहण विधि—व्रत ३ ६२५ ब।
ग्रहावती—२ २७४ अ।
ग्राम—२ २७४ ब।
ग्रामदाह—आहारान्तराय १ २९ ब।
ग्रास—२ २७४ ब, आहार प्रमाण १ २८६ अ।
ग्राहवती—विभगा नदी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४८९-४९०, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने।
ग्राह्य—२ २७४ ब।
ग्राह्य-ग्राहक भाव—आगम १ २३३ अ, नय २ ५५० अ, सम्बन्ध ४ १२६ अ।
ग्राह्यवर्गणा—३ ५१३ ब।
ग्रीवाधोनयन—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।
ग्रीवावनमन—२ २७४ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।
ग्रीवोन्नमन—२ २७४ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।
ग्रीवोर्ध्व नयन—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।
ग्रैवेयक देव—निर्देश ४ ५१४ ब, अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६८, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५८ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५; त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ १९२, सख्या ४ ९८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।
ग्रैवेयक स्वर्ग—२ २७४ ब, निर्देश ४.५१० अ, ४.५१४ ब, पटल इद्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४ ५२०, अकन ४ ५१५, कल्पातीत ४.५१० अ, ४.५१४ ब, चक्रवर्ती ४.१० ब।

ग्लान—२.२७४ ब।

ग्लानि—२ २७४ ब, जुगुप्सा २ ३४४ अ, निर्विचिकित्सा २.६२६ ब।

घ

घंटा—पूजा ३.७८ ब।

घ—घनांगुल की सहनानी २ २१९ ब।

घटस्थानोपयोगी यन्त्र—यन्त्र ३.३५२।

घटा—२ २७४ ब, नरक पटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४३८। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

घटिका—२ २७४ ब, काल-प्रमाण २ २१७ अ।

घडी—२ २७४ ब, काल-प्रमाण २ २१७ अ।

घन—२ २७४ ब, गणित २ २२३ अ, २ २२४ अ, शब्द ४.३ अ।

घनधारा—२ २७४ ब, गणित २ २२९ अ।

घनफल—२ २७४ ब, गणित २.२३२ ब।

घनमातृक धारा—गणित २ २२९ अ।

घनमूल—२.२७४ ब, गणित २.२२३ अ, २.२२४ अ।

घनरथ—कुन्थुनाथ २ ३७८।

घनरव—अरहनाथ २ ३७८।

घनलोक—२ २७५ अ, क्षेत्रप्रमाण २.२१५ ब, सहनानी २ २१९ ब।

घनवात—२ २७५ अ, ३ ५३२ अ, लोक ३ ४४० अ, अकन ३ ४३९।

घनांगुल—क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब, सहनानी २ २१९ ब।

घनाकार—२ २७५ अ।

घनाघन—२ २७५ अ, गणित २ २२९ अ।

घनोदधि—३ ५३२ अ, लोक ३ ४४० अ, अकन ३ ४३९।

घम्मा—२ २७५ अ। प्रथम नरक—निर्देश २.५७६ अ, २ ५७८-५७९, विस्तार २ ५७६, २ ५७८, अकन ३ ४४१, चित्र ३.३८९। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधि ज्ञान १ १९८ अ, आयु १ २६३।

घम्मा नरक (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १००, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१६८, सख्या ४.९५, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४.४७९, काल २ १०१, अन्तर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

घर—३ २३१ ब।

घाट—नरक पटल निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८ अ, आयु १ २६३।

घाटा—२ २७५ अ। नरक पटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ ७८, अवधिज्ञान १ १९८ अ, आयु १ २६३।

घात—नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८ अ, आयु १ २६३।

घात—२ २७५ अ, अपवर्तना १ ११९ ब, आयु १ २६२ अ, काण्डक १ ११६ ब, गणित २ २२२ ब, सावद्य ४ ४२२ अ, हिंसा ४.५३२ अ।

घातकृष्टि—२ १४२ अ।

घातांक—२ २७५ अ, गणित २ २२३ ब।

घातायुष्क—आयुबध १ २६२ अ, भवनवासी देव १ २६५, व्यन्तर देव १ २६४ ब, ज्योतिषी देव १ २६६, वैमानिक देव १ २६९ मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ अ।

घाती—२ २७५ अ, अनुभाग १ ९० ब।

घाती कर्मप्रकृति—अनुभाग १ ९०।

घुटुक—२ २७५ अ, कुरुवश १ ३३६ अ।

घुना अन्न—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ।

घृतवर द्वीप सागर—२ २७५ अ, निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८ अकन ३ ४४३। अधिपतिदेव ३ ६१४, जल का रस २ ४८७ अ, ज्योतिष चक्र २ ३४८ ब।

घृणा—२ २७५ अ, निर्विचिकित्सा २ ६२६ ब।

घोटकपाद—२ २७५ अ, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२१ ब।

घोटमान—योगस्थान ३ ३८२ अ, क्षपित कर्मांशिक २ १७७ अ।

घोड़ा—मगल—३ २४४ अ, स्वप्न ४ ५०५ अ।

घोर गुण—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५४ अ।

घोर तप—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५३ ब।

घोर पराक्रम—ऋद्धि १.४४७, १ ४५४ अ।

घोर ब्रह्मचर्य—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५४ अ।

घोलमान २ २७५ अ, क्षपित कर्मांशिक २ १७७ अ, योगस्थान ३ ३८२।

घोष—२.२७५ अ, शब्द ४.३ अ। स्तनिक कुमारेन्द्र

निर्देश ३ २०८ ब, परिवार ३ २०९ अ, निवास ३ २०९ ब, अवगाहना १ १८० अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६५।

घोषसम—निक्षेप २ ६०२ अ।

घोषसेन—नारायण ४ १८ ब।

घोषा—सुविधिनाथ सघ की आर्यिका २ ३८८।

घोषार्या—सुविधिनाथ सघ की आर्यिका २ ३८८।

घ्नत—२.२७५ ब, गणित २ २२२।

घ्राण—अवगाहना का अल्पबहुत्व १.१५७, आहारान्तराय १ २८ ब, इन्द्रिय १ ३०२ अ, ज्ञान की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १५७।

च

चंगदेव—हरिदेव ४ ५३० अ।

चंचत् (चचु)—२ २७५ ब, सौधर्म स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४ ५१९ ब। देवायु १ २६६।

चचल—सौधर्म स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४.५१९ ब। देवायु १.२६६।

चड—२ २७५ ब, राक्षसवश १.३३८ अ।

चंडवेग—चक्रवर्ती ४ १५ अ।

चंडवेगा—२.२७५ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, ३.२७६ अ।

चंडशासन—२ २७५ ब, प्रतिनारायण ४ २० ब।

चंडिका—मूढता ३ ३१५ ब।

चंद—२.२७५ ब।

चदन—पूजा ३ ७८ ब, चित्रा पृथिवी ३.३९१ अ।

चदन कथा—२ २७५ ब, इतिहास १.३४६ ब।

चंदनछट्ठी कहा—इतिहास १.३४४ ब।

चदनषष्ठी व्रत—२ २७५ ब।

चंदना—२.२७५ ब, वर्द्धमान २ ३८८।

चंदनाचारित्र—इतिहास १.३४६ ब।

चंदप्पहचरिउ—इतिहास १ ३४३ ब, १ ३४४ ब।

चंद्र—२ २७५ ब, अरुणवर द्वीप का रक्षक देव ३.६१४, यदुवश १ २३६, १ ३३७, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, विद्याधर वश १.३३९ अ।

चंद्र (स्वर्ग पटल)—२.२७५ ब, सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१९, देव आयु १ २६६।

चंद्रर्षि महत्तर—इतिहास १ ३३० अ, २ ६४० अ।

चंद्रकान्त—यदुवश १ ३३७।

चंद्रकीर्ति—२ २७५ ब, नन्दिसंघ देशीय गण १ ३२४ ब। इतिहास १ ३३९ अ, १ ३३३ ब, १ ३४७ ब। नन्दिसघ भट्टारक १ ३२३ ब।

चंद्रकूट—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ। विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६८, ३ ४६९। वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४।

चद्रगिरि—२ २७६ अ। वक्षारगिरि—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५-४८६, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७।

चंद्रगुप्त—२ २७६ अ, गुप्तवंश १ ३१५, मौर्यवश १ ३१० ब, १ ३१३, जैनत्व १ ३१० ब।

चंद्रग्रहण—२ २७४ अ, ज्योतिष लोक २ ३५१ अ।

चंद्रचिह्न—कुरुवशी राजा १ ३३६ अ, तीर्थंकर चन्द्रप्रभ २ ३७९, तीर्थंकर स्वयप्रभ का चिह्न २ ३९२।

चंद्रचूड—विद्याधर वंश १.३३९ अ।

चद्रचूल—२ २१३ अ।

चद्रदेव—देव—अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६६। इन्द्र—निर्देश २ ३४५ ब, शक्ति आदि २ ३४८, अवस्थान २ ३४६ ब, परिवार २ ३४६ अ, विमान सख्या २ ३४८ अ।

चंद्रदेव (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

चद्रद्रह—२ २७६ अ, उत्तरकुरु का द्रह—निर्देश ३ ४५६ ब, नामनिर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अकन ३ ४४४, ३ ४५७।

चंद्रद्वीप—लवणसागर मे स्थित—निर्देश ३ ४६२ ब, विस्तार ३ ४७९, अकन ३.४६१।

चंद्रधर—कुलकर ४ २५ ब।

चंद्रनंदि—२ २७६ अ, इतिहास १ ३२८ अ, १ ३२९ ब।

चंद्रनखा—२.२७६ अ, राक्षसवश १ ३३८ ब।

चंद्रपर्वत—२.२७६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
चंद्रपुर—२ २७६ अ, तीर्थंकर चन्द्रप्रभ २ ३७९, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ।
चंद्रप्रज्ञप्ति—२ २७६ ब, अमितगति १.१३२ अ। इतिहास १ ३४१ अ, १ ३४३ अ। श्रुतज्ञान ४.६८ ब।
चंद्रप्रभ—२ २७६ ब, इतिहास १ ३३१ ब।
चंद्रप्रभु—२ २७६ ब, तीर्थंकर २.३७९-३९१।
चंद्रप्रभचरित—२.२७६ ब, इतिहास १.३४२ ब, १ ३४६ ब।
चंद्रप्रभसूरि—इतिहास १ ३४४ अ।
चंद्रबाहु—तीर्थंकर २.३९२।
चंद्रभ—इतिहास १ ३३४ अ।
चंद्रभागा—२.२७६ ब।
चंद्रमा—निर्देश २ ३४५ ब, विशेष दे० आगे चन्द्रविमान।
चंद्रमाल—ऋक्षारगिरि—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३.४८६, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७। इस पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४।
चंद्ररथ—विद्याधर वंश १ ३३९ अ।
चंद्रवंश—१.३३६ ब, इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ, ऋषिवंश १ ३३५ ब, सूर्यवंश १ ३३९ ब।
चंद्रवर्मा—यदुवंश १.३३७।
चंद्रविमान—निर्देश २ ३४५, विस्तार २.३५१, किरणे तथा वाहक देव २ ३४८ अ, अकन २ ३४८, चित्र २ ३४८। वलय २ ३४८, चार क्षेत्र २ ३४९ अ, वीथियाँ २ ३४९ ब, गतिविधि २ ३५० अ, गगनखण्ड २ ३५० अ, चन्द्रग्रहण २ २७४ अ, २.३५१। आधुनिक मत ३.४३६ अ, बौद्धाभिमत ३ ४३४ ब। वैदिकाभिमत ३ ४३३। कुलकरो के काल मे दर्शन ४.२५ ब, स्वप्न ४ ५०४ ब।
चंद्रशेखर—२ २७६ ब, विद्याधर वंश १ ३३९ अ।
चंद्रसेन—२.२७६ ब, पचस्तूप संघ १ ३२६ ब, इतिहास १ ३२९ ब।
चंद्रानन—तीर्थंकर २ ३९२।
चंद्राभ—२ २७६ ब, कुलकर ४ २३, यदुवंश १ ३३७, लौकान्तिक देव ३.४९२ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
चंद्राभा—चन्द्रमा की अग्रदेवी २ ३४६ अ।
चंद्रावर्त—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
चंद्रोदय—२.२७६ ब, इतिहास १.३४२ अ।
चंपक वन—तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ २.३८३, नन्दीश्वर द्वीप मे ३ ४६६ अ, भवनवासी देवो के नगरो मे ३.२१० ब, व्यन्तर देवो के नगरो मे ३ ६१२ ब।
चंपा—२ २७६ ब, तीर्थंकर वासुपूज्यनाथ २ ३७९, २ ३८५, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
चंपापुर—तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ २ ३७८, तीर्थंकर वासुपूज्यनाथ २ ३७९, २.३८५।
चंवर—चैत्य-चैत्यालय २.३०२ अ। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारियाँ—निर्देश ३ ४६६ ब, अकन ३ ४६८, ३.४६९।
चकवा—तीर्थंकर सुमतिनाथ २.३७९।
चकार—एकान्त १.४६१ अ, राक्षसवंश १ ३३८ अ।
चक्र—३.२७६ ब, कीली २ ८२ ब, चक्रवर्ती ४ १३ अ। पदस्थ ध्यान के योग्य षट्चक्र ३ ६ ब। स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४.५१५, देव आयु १ २६७।
चक्रक—२ २७६ ब।
चक्रधर—कुलकर ४ २५ ब।
चक्रधर्मा—विद्याधर वंश १.३३९ अ।
चक्रध्वज—विद्याधर वंश १.३३९ अ।
चक्रपुर—२ २७६ ब, नारायण ४ १८ अ, ४ २० ब, प्रतिनारायण ४.२० ब, बलदेव ४.१७ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
चक्रपुरी—२ २७६ ब, विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।
चक्रमल—लोभ कषाय २ ३८ अ।
चक्रलाभक्रिया—सस्कार ४ १५२ अ।
चक्रवर्ती—२,२७६ ब, तीर्थंकर अर-शान्ति-कुन्थुनाथ २ ३८९, २ ३९१, शलाकापुरुष ४ १० अ-ब।
चक्रवर्ती की माता—स्वप्न ४ ५०४ ब।
चक्रवाक—शुक्रेन्द्र का यान ४ ५११ ब।
चक्रवान—२ २७६ ब।
चक्रवाल—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
चक्राभिषेक क्रिया—सस्कार ४ १५२ अ।
चक्रायुध—२ २७७ अ, तीर्थंकर शान्तिनाथ ३ २७५, विद्याधर वंश १.३३९ अ।
चक्री—राजा ३ ४०० ब।
चक्रेश्वरी—२.२७७ अ, ऋषभदेव की यक्षिणी २.३७९।
चक्षु—मानुषोत्तर पर्वत का देव ३.६१४।

चक्षु इन्द्रिय—२ २७७ अ, अप्राप्यकारी १.३०३ अ, अवगाहना का अल्पबहुत्व १ १५८ ब, आहारान्तराय १ २८ ब, इन्द्रिय १ ३०२ अ, ज्ञान की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब, ज्ञानार्थक १ ३०६ ब, पर्यायार्थिक नय २ ५४१ ब, २ ५४६ ब, सूक्ष्म ग्रहण ४ ४३९ ब।

चक्षुदर्शन—कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब, दर्शनोपयोग २ ४१३ अ। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०६, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३९३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसयोगी भंग १.४०७ ब। सत् ४ २३९, संख्या ४.१०७, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४८९, काल २ ११५, अन्तर १ १७, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१।

चक्षुदर्शनावरण—२.४२० अ। प्ररूपणा—प्रकृति २ ४२०, ३ ८८, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ९१ ब, १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९८, बधस्थान ३ १०८, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १.४११, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२८७, त्रिसंयोगी भग १.३९९। सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८।

चक्षुमित्र—शक वश १.३१४।

चक्षुष्मान—२.२७७ अ, कुलकर ४.२३, पुष्करार्ध का रक्षक देव ३ ६१४।

चतुः—२ २८० अ, अनुभाग स्थान १ ९०-९१, अनुयोग १.९९ ब, ४ ५२३ ब, असंख्यातासख्यात की सहनानी २.२१९ अ, आवश्यक २ ११ अ, २.१२ ब, २ १४ अ, आश्रम १.२८१ अ, ३ ५२४ ब, कषाय २.३५ ब, कृति की सहनानी २.२८० अ, गति २.२३६ ब, जल्प के अग २.३२६ अ, प्रतरागुल की सहनानी २ २१९ ब, युक्तासख्यात की सहनानी २.२१९ अ, वर्ण (वर्णव्यवस्था) ३.५२३ ब, ३ ५२४ अ, शिरोनति २ २६ अ, २ २७७ ब, २.५०६ ब, सघ २.३१ ब।

चतुरंक—२.२७७ अ।

चतुरंग—२.५०६ अ।

चतुरस्र—क्षेत्रफल २.२३२ ब।

चतुरावश्यक—अधःप्रवृत्तकरण २.११ अ, अनिवृत्तिकरण २.१४ अ, अपूर्वकरण २.१२ ब।

चतुराश्रम—१.२८१ अ, ३.५२४ ब।

चतुरिंद्रिय जातिनाम कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३.१३६। बध ३.९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०४, सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६९ अ।

चतुरिंद्रिय (जीव)—२.२७७ अ, २.३३३ ब, अवगाहना १.१७९, इन्द्रिय १.३०६-३०७, आयु १ २६३-२६४, जीवसमास २ ३४३, त्रस २.३९८, सक्लेश-विशुद्धि स्थानो का अल्पबहुत्व १.१६०। प्ररूपणा—बध ३ १०३, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१९६, सख्या ४.९९, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४.४८३, काल २.१०६, अन्तर १.११, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

चतुर्गति—आयुबंध १ २६२ अ, कषाय २ ३८ अ, २ ४० अ, निगोद ३ १८३, सिद्ध (अल्पबहुत्व) १.१५३।

चतुर्गति-निगोद—वनस्पति ३ ५०३ ब।

चतुर्ज्ञान-सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४ अ।

चतुर्थकाल—२ ९२, वीर निर्वाण १ ३०९ अ।

चतुर्थच्छेद—२ २७७ अ, गणित २ २२५ अ।

चतुर्थ-भक्त—२.२७७ अ, अनशन १ ६५ ब, कायक्लेश २ ४७ अ, प्रोषधोपवास ३ १६४ ब।

चतुर्दश—२ २७७ अ, गुणस्थान २ २४६, जीवसमास २.३४१, पूर्व ४ ६८ ब, पूर्वधर ४ ५५ अ, मलदोष १ २८९ ब, मार्गणा ३ २९७ अ, रत्न ४ १३।

चतुर्दश पूर्व—श्रुतज्ञान ४ ६८ ब।

चतुर्दश पूर्वधर—मूल सघ १.३१६, शुक्लध्यान ४ ३६ अ-ब, श्रुतकेवली ४ ५५ अ।

चतुर्दश पूर्वित्व—ऋद्धि १ ४४८, श्रुतकेवली ४.५५ अ।

चतुर्दशी क्रिया—कृतिकर्म २ १३८ ब।

चतुर्दशी व्रत—२ २७७ ब।

चतुर्दिक् मुखदर्शन—अर्हतातिशय १.१३७ ब।

चतुर्द्वीप—२ २७७ ब।

चतुर्दोष—आहार के संयोजनादोष १ २९२ अ।

चतुर्थभुक्त—अनशन १ ६५ ब, कायक्लेश २ ४७ अ, प्रोषधोपवास ३ १६४ ब।

चतुर्दश गुणस्थान—मनुष्यणी ३ ५८१ ब।

चतुर्भुज—२ २७७ ब, इतिहास १ ३३४ अ।

चतुर्भुज समलम्ब—२ २७७ ब।

चतुर्मास—२ २७७ ब।

चतुर्मासिक प्रतिक्रमण—३.११६ अ, ३.६२१ अ।

चतुर्मुख—२ २७७ ब, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ ब, कल्किवश १ ३११ अ, १ ३१५ अ, २ ३० ब, नारद ४ २१ अ, पूजा ३ ७४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
चतुर्मुख देव—२ २७७ ब, इतिहास १ ३२९ ब।
चतुर्मुखी—२.२७७ ब।
चतुर्विंशति—२ २७७ ब, कामदेव ४ २२ ब, तीर्थंकर ४ १ ब, २ ३७६, प्राकृतिक स्थान ४ २७६ अ।
चतुर्विंशति पूजाविधान—इतिहास १ ३४८ अ।
चतुर्विंशति मडल यंत्र—३ ३५३।
चतुर्विंशतिसधान काव्य—इतिहास १.३४७ ब।
चतुर्विंशतिस्तव—भक्ति ३.२०० अ, श्रुतज्ञान ४ ६९ ब।
चतुर्विध उदय—१.३८६।
चतुर्विध सघ—उपकार १ ४१६ अ।
चतुश्चारित्रसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब।
चतु षष्ठि—चमर १ १३७ ब।
चतु.षष्ठि स्थानीय अल्पबहुत्व—१ १६६ अ।
चतुष्टय—२ २७७ ब, अर्हन्त १ १३७ ब, विरोधी धर्म युग्म १ १०८ ब।
चतुष्पाद—ग्रह २ २७४ अ, पथ-निर्देश २ ३६७, आयु १ २६३।
चतुस्त्रिशत्—अतिशय १ १३७ ब, २.३०४ ब, बधापसरण १ ११५ अ।
चमकदशमी व्रत—२ २७८ ब।
चमत्कार—२.२७८ ब, प्रभावना ३.१३९ ब।
चमर—२.२७८ ब। असुरेन्द्र—निर्देश ३ २०८ अ, परिवार ३ २०९ अ, अवस्थान ३ २०९ ब, आयु १ २६५। अर्हन्त प्रतिहार्य (चौसठ चमर) १.१३७ ब, तीर्थंकर सुमति व पद्मप्रभ २ ३८७, मगल द्रव्य ३.२४४ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
चमरेंद्र—२.२७८ ब। असुरेन्द्र—निर्देश ३ २०८ अ, परिवार ३ २०९ अ, अवस्थान ३.२०९ ब, आयु १ २६५।
चमू—२ २७८ ब, सेना ४ ४४४ अ।
चय—२ २७८ ब, उदय १ ३७१ अ, गणित २ २२९ ब, २ २३० अ।
चयधन—गणित २ २२९ ब, २ २३० ब।
चर ज्योतिष-लोक—निर्देश २ ३४९, गतिविधि २.३५० अ, वीथियाँ २ ३४९ ब, चार क्षेत्र २ ३४९ अ, गगनखण्ड २ ३५० अ।
चरण—चारण ऋद्धि १.४५१ ब, चारित्र २.२८३ ब।
चरणसार—२.२७८ ब, इतिहास १ ३४३ ब।
चरणानुयोग—अनुयोग १ ९९-१०१ ब, स्वाध्याय ४.५२३ ब।
चरम—हरिवंश १.३३९ ब।
चरमदेह—मोक्ष (किंचिदून आकार) ३ ३२९ ब।
चरमशरीरी—अवधिज्ञान १ १९५ अ, आयु-अपवर्तन १ २६१ अ, मरण (अकाल मृत्यु) ३ २८४ ब।
चरमावली—१ ४४१ ब।
चरमोत्तम देह—२ २७८ ब, अवधिज्ञान १ १९५ अ, आयु-अपवर्तन १ २६१ अ, मरण (अकाल मृत्यु) ३ २८४ ब, मोक्ष (किंचिदून आकार) ३ ३२१ ब।
चरविमान—ज्योतिष विमान—निर्देश २ ३४६ ब, गगन-खड २ ३५० अ, गतिविधि २.३५० अ, चार क्षेत्र २ ३४९ अ।
चरु—पूजा ३ ७८ ब।
चर्चा—२ २७९ अ। नरक पटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४३८। नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १ १९८ अ, आयु १ २६३।
चर्चिका—२ २७९ अ।
चर्म—२ २७९ अ, औदारिक शरीर १ ४७१ ब, चक्रवर्ती का रत्न ४ १३ अ, ४ १५ ब।
चर्मज—वस्त्र ३ ५३१ अ।
चर्मण्वती—२ २७९ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
चर्मनिक्षिप्त—भक्ष्याभक्ष्य ३ २९३ ब।
चर्मरत्न—चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४ १५ ब।
चर्या—२ २७९ अ।
चर्या परिषह—२ २७९ अ, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ।
चर्याश्रावक—४ ४८ ब।
चल—२.२७९ ब, जीवप्रदेश १ ३०२ ब, २ ३३९ अ, सम्यग्दर्शन का दोष ४ ३७० ब।
चलनी—४ ७४ ब।
चलप्रदेश—इन्द्रिय १.३०२ ब, जीव २.३३९ अ।
चलप्रभ—वरुण देव का यान ४ ५१३ अ।
चलबिम्ब-प्रतिष्ठा—कृतिकर्म २.१३९ अ, प्रतिष्ठा ३.१२० ब।
चलशव—साधु-निन्दा २ ५८१ अ।
चलशील—२ २७९ ब।
चल-संख्या—२ २७९ ब।
चलाचल—जीवप्रदेश २.३३९ अ।
चलित—परमाणु ३ १६ अ, रस २ २६ ब, ३.२०३ ब, स्कन्ध ३ १६ अ।
चलितरस—कर्म (पचसून) २ २६ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३ २०२ ब।
चलितस्कध—परमाणु ३.१६ अ।

चल्लितदोष—व्युत्सर्ग ३ ६२३ अ।
चल्लितापि—२ २७९ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
चांडाल—आहारान्तराय १ १२९ अ। किल्विष देव २ २१५ अ, भिक्षा ३ २३२ ब, स्पर्श १ २९ ब।
चाँदराय—२.२७९ ब।
चाक की कील—काल २ ८२ ब।
चाक्षुष—सूदम ४ ४३९ अ, स्कन्ध ४ ४४७ अ।
चाक्षुष स्कन्ध—४ ४४७ अ।
चाणक्य—मगधदेश १ ३१० ब।
चातुर्दीपिक भूगोल—निर्देश ३ ४३७ अ।
चातुर्मास—२.२७७ ब।
चातुर्मासिक प्रतिक्रमण—३ ११६ अ, ३.६२१ अ।
चाप—२.२७९ ब।
चामत्कारिक—२ २७८ ब, ३ १३९ ब।
चामर—पद्मप्रभ २ ३८७।
चामुंड—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
चामुंडराय—२ २७९ ब, २ २८० अ, इतिहास १ ३३० ब, १ ३४३ अ।
चामुंडराय पुराण—२ २८० अ, इतिहास १ ३४३ अ। ३-५२४ ब, कषाय २ ३५ ब, कृति की सहनानी २ २८० अ, गति २ २३६ ब, जल्प के अंग २ ३२६ अ, प्रतरागुल की सहनानी २ २१९ ब, युक्तासख्यात की सहनानी २ २१९ अ, वर्ण (वर्ण व्यवस्था) ३.५२३ ब, ३ ५२४ अ, शिरोनति २.२६ अ, २ २७७ ब, २ ५०६ ब, सत्र २.३१ ब।
चार—२.२८० अ, अनुभाग स्थान १.९०-९३, अनुयोग १ ९९ अ, ४.५२३ ब, असख्यातासख्यात की सहनानी २ २१९ अ, आवश्यक २ ११ अ, २ १२ ब, २ १४ अ, आश्रम १ २८१ अ।
चारण क्षेत्र—२ २८० अ, ज्योतिष लोक २ ३४९ अ।
चारण—नाभिगिरि का रक्षक देव ३ ४७१ अ, ३.६१३ अ।
चारण ऋद्धि—१.४४७, १ ४५० ब, १ ४५१ ब।
चारणकूट व गुफा—२ २८० अ।
चारणा—श्रेयासनाथ २ ३८८।
चारित्र—२.२८० अ, अनन्तानुबंधी १ ६० ब, अनुप्रेक्षा १ ७८ ब, अपवाद मार्ग १.१२० ब, अभ्यास १ १३१ ब, अल्पबहुत्व १.१६०, अवधिज्ञान १.१९४ अ, १ १९५ अ, आत्मा ३ ३३७ अ, उत्सर्गमार्ग १ १२० ब, उद्योत १.४१४ अ, उपदेश १.४२६ ब, उपयोग (शुभ या शुद्ध) १.४३० ब, १ ४३२ अ, १ ४३३ अ, १ ४३४ ब, उपशम १.४३९ अ, करणत्रिक २.६-१४, करणलब्धि ३ ४१४ अ, कषाय १.४३२ ब, ३ ५५८ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१, चरण १ ४५१ ब, तप २.३५१ ब, त्याग २ २८३ अ, त्रिकरण २ ६-१४, भोगभूमि ३ २३६ अ, मनुष्यणी ३ ५८९ ब, मोक्ष ३ ३२७ ब, मोक्षमार्ग (आत्मा) ३ ३३७ अ, मोहनीय कर्म ३.३४३ ब, ३ ३४४ अ, योग (उपयोग) १.४३२ अ, लब्धि (करण) ३ ४१४ अ, विभाव (कषाय) ३ ५५८ ब, शुभ भाव (अनुप्रेक्षा) १ ७८ ब, शुभोपयोग १ ४३४ ब, श्रद्धान ४ ४३ ब, सयम ४ १३७ अ, ४ १३८ ब, सम्यक्त्व ४.३५४ अ, साधु ४ ४०७ अ, स्वरूपाचरण १ ८५ अ।
चारित्रपडित—३.२८१ अ।
चारित्रपाहुड—२ २९४ अ, इतिहास १.३४० ब।
चारित्रबाल—३ २८१ अ।
चारित्रभक्ति—इतिहास १.३४० ब।
चारित्रभूषण—२ २९४ अ, इतिहास १ ३२९ ब।
चारित्रमोहनीय कर्म—निर्देश ३ ३४३ ब, उदय की विशेषता १.३७२ अ-ब, १ ३७३ ब, उपशम १ २६ अ, १.४४० अ, उपशम काल की अवधि का अल्पबहुत्व १ १६१, क्षपण १.२६ ब, २ १७९ ब, क्षपणकाल की अवधि का अल्पबहुत्व १ १६१, चारित्र २ २९४ अ।
चारित्रमोहनीय कर्म (प्ररूपणा)—प्रकृति ३ ८८, ३ ३४३ ब, स्थिति ४ ४६१, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३.१०९, उदय १ ३७५, उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदय की विशेषता १ ३७२ अ-ब, १.३७३ ब, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९५, त्रिसंयोगी भंग १.४०१ ब। सक्रमण ४.८६ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
चारित्रमोह उपशामक—अन्तरकरण १.२६ अ, उपशम १.४४० अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१७४, मरण ३.२८३ अ, समुद्घात ४.३४३ अ, सम्यग्दर्शन ४.३७६ अ।
चारित्रमोह क्षपक—क्षपणा १.२६, अ-ब, २ १७९ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१७४।
चारित्रवाद—एकान्त १.४६५ ब।
चारित्रविनय—३ ५४८ ब, ३.५५० ब।
चारित्रवृद्ध—विनय ३ ५५२ ब।
चारित्रशुद्धि—शुद्धि ४.४० ब।
चारित्रशुद्धि व्रत—२.२९४ ब।
चारित्रसार—२ २९४ ब, इतिहास १ ३४३ अ।

चारित्रसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।
चारित्राचरण—मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ ब।
चारित्राचार—२.२८९ ब, आचार १ २४० ब, विनय ३ ५५० ब।
चारित्राराधना—आराधना १ २७१ ब, चारित्र २.२८६ अ।
चारित्रार्य—१ २७५ अ।
चारु—कुरुवंश १ ३३५ ब।
चारुकीर्ति—नन्दिसंघ १.३२३ ब, इतिहास १ ३३३ ब, १.३४७ अ।
चारुकृष्ण—यदुवंश १ ३३७।
चारुदत्त—२ २९४ ब, यदुवंश १.३३७, सम्भवनाथ २ ३८७।
चारुदत्त चरित्र—२ २९४ ब, इतिहास १.३४६ अ।
चारुपद्म—कुरुवंश १ ३३५ ब।
चारुपाद—विमलनाथ २ ३७७।
चारुरूप—कुरुवंश १ ३३५ ब।
चारुसेन—सम्भवनाथ २ ३८७।
चार्वाक—२.२९४ ब, एकान्त १ ४६५ ब, जीव २ ३३६ ब, परवाद ३.२३ अ।
चालनी—श्रोता १.४२५ ब।
चालिसिय—२ २९५ अ।
चालुक्य जयसिंह—२ २९५ अ।
चालुक्य वंश—अरिकेसरी १ १३४ अ।
चित—चक्रवर्ती ४ १० अ।
चितवन—वासुपूज्यनाथ २ ३८२।
चिंता—२ २९५ अ, एकाग्रता १ ४६६ अ, धर्मध्यान २ ४८२ अ, २ ४८४ ब, मन.पर्यय ज्ञान ३.२६२ अ, शुक्लध्यान ४ ३३ अ।
चितागति—२.२९५ ब, राक्षस वंश १ ३३८ अ।
चिताजननी—चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४ १५ अ।
चितानिरोध—२ ४९५ ब।
चितामणि—मूलसंघ १.३२२ ब।
चिंतामणि यन्त्र—३.३५३।
चितारक्ष—शान्तिनाथ २.३७८।
चिकित्सादोष—२.२९५ ब, आहार १ २९१ अ, वसतिका ३.५२९ ब।
चितिकर्म—२ २९५ ब।
चितुकर्म—२ २९५ ब, कर्म २.२६ ब, कृतिकर्म २.१३३ ब।
चित्त—२ २९५ ब, अध्यवसान १ ५२ अ, परद्रव्य ३ १२ अ।
चित्तनिरोध—उपयोग (शुद्ध) १.४३१ अ, एकाग्रता १ ४६६ अ, ध्यान २.४९५ अ-ब, सामायिक ४.४१५ ब।
चित्तप्रसाद—उपयोग (शुभ) १ ४३३ अ, १.४३४ ब।
चित्तविकार—३ २१७ ब।
चित्तवृत्ति—एकाग्रता १ ४६६ अ, ध्यान २ ४९५ अ-ब, सामायिक ४ ४१५ ब।
चित्तरक्ष—धर्मनाथ २ ३७८।
चित्प्रकाश २ २९५ ब, दर्शनोपयोग २ ४०६ ब।
चित्र—२ २९५ ब, नमिनाथ ३ ३८४, यमकगिरि का रक्षक देव ३ ४५३ अ, सुमेरु के वन में कुबेर भवन—निर्देश ३ ४५० अ, अंकन ३ ४५१।
चित्रक—सुमेरु के वनों में कूट—निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४५१।
चित्रकर्म—कर्म २ २६ अ, कषाय २.३५ ब, निक्षेप २ ५९८ अ।
चित्रकारपुर—२ २९५ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।
चित्रकूट—२ २९५ ब, यमकगिरि—निर्देश ३.४५३ अ, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८३, ३.४८५, ३ ४८६, वर्ण ३ ४७७, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ४६४ के सामने, चित्र ३ ४५३ अ। वक्षार पर्वत—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७९, विस्तार ३.४८२; ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३.४४४, ४६४ के सामने। इस पर्वत का कूट तथा देव ३.४७२ ब। विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
चित्रगुप्त—२.२९६ अ, तीर्थंकर २ ३७७।
चित्रगुप्ता—२ २९६ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८।
चित्रगुप्ति—तीर्थंकर २ ३७७।
चित्रगृह—भवनवासी देव—भवनों में ३ २१० ब।
चित्रप्रभा—सौधर्म स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४.५१७, अंकन ४ ५१९ ब। देवायु ४ २७८।
चित्रभवन—२.२९६ अ।
चित्रमती—चक्रवर्ती ४ ११ ब।
चित्ररथ—कुरुवंश १ ३३५ ब।
चित्रलाचरण—४ १२९ ब।
चित्रवती—२.२९६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
चित्रवसु—हरिवंश १.३४० अ।
चित्रवाहन—कुलकर ४.२५ अ।
चित्रविचित्र—कुरुवंश १ ३३५ ब।
चित्रांगदा—२ २९६ अ।
चित्रा—२ २९६ अ, त्वष्टानक्षत्र २ ५०४ ब, पद्मप्रभ २ ३८०, रुचकवर पर्वत की देवी—निर्देश ३.४७६ ब, अंकन ३.४६९।

चित्रा पृथिवी—मध्यलोक ३ ४४२ अ, रत्नप्रभा—निर्देश ३ ३८९ ब, विस्तार ३ ३९० अ, वैचित्र्य ३ ३८९ ब, अकन ३.३८९ ब, ३ ४३९, ३ ४४१, चित्र ३ २१० अ।

चित्सुखाचार्य—वेदान्त ३ ५९५ ब।

चित्सुखी—वेदान्त ३ ५९५ ब।

चिदानंद—अनुभव १ ८५ ब।

चिद्विलास—२ २९६ अ। इतिहास १ ३४७ ब।

चिरकाल स्थायी—पर्याय ३ ४८ अ।

चिलात—२ २९६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

चिलातपुत्र—२.२९६ अ, अनुत्तरोपपदक १ ७० ब।

चिह्न—२.२९६ अ, प्रतिमा ३ ७८ अ, मातग विद्याधर १ ३३६ ब, विद्याधर १.३३९ अ, वृत्तिपरिसख्यान ३ ५८० अ, स्वप्न ४ ५०४ अ।

चिह्न (निमित्त ज्ञान)—२ ६१३ अ, ऋद्धि १ ४४८।

चुगलखोर—३.८५ अ।

चुलुलित—२ २९६ अ।

चूड़ादेवी—चक्रवर्ती ४.११ ब।

चूडामणि—२.२९६ अ, चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४.१५ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ, विद्याधर वश १ ३३९ अ, मूल सघ १ ३२२ ब, इतिहास (तुम्बूलाचार्य) १ ३४७ ब।

चूर्ण—२.२९६ अ, आहार का दोष १.२९१ ब, निक्षेप २.६०२ ब, भेद ३.२३७ अ।

चूर्णसूत्र—कषायपाहुड २ ४१ अ।

चूर्णसूत्रवृत्ति—उच्चारणाचार्य १.३५२ अ।

चूर्णि—२ २९६ अ, कर्मप्रकृति १ ३४१ अ, कषायपाहुड १ ३४० अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ, शतक १ ३४१ अ, सप्ततिका १ ३४२ अ, २ परि-/१।

चूर्णिका—भेद ३ २३७ अ।

चूर्णोपजीवन—२ २९६ अ।

चूला—चक्रवर्ती ४ ११ ब।

चूलिक—सुमेरु ४ ४३७ अ।

चूलिकांग—कालप्रमाण २ २१६ ब।

चूलिका—२.२९६ अ, कालप्रमाण २ २१६ ब, गणित (क्षेत्रफल विधि) २ २३३ अ, श्रुतज्ञान ४.६७ ब। सुमेरु—निर्देश ३.४४८ ब, विस्तार ३ ४८३, ३.४८५ ३.४८६, अकन ३ ४५० ब, चित्र ३.४४९, चार चैत्यालय ३ ४५० ब, पाण्डुक आदि चार शिलाएँ ३.४५० ब।

चूलित—काल प्रमाण २ २१६ अ।

चूलितांग—काल प्रमाण २.२१६ अ।

चूली—कर्म (पञ्चसून) २.२६ ब।

चेटक—२ २९६ ब।

चेटी—स्त्री ४.४५० ब।

चेतन—२ २९६ ब, गुण २.२४४ ब, द्रव्य २.४५५ ब, भाव ३ २१७ ब, सापेक्ष धर्म ४.३२३ ब।

चेतनपुद्गल धमाल—इतिहास १ ३४७ अ।

चेतना—२.२९६ ब, अनुभव १.८२ अ, उपलब्धि १.४४५ अ, ज्ञान १ ८२ अ, जीव २.३३२ अ।

चेदि—२ ३०० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, ३.२७६ अ।

चेर—२ ३०० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

चेलना—२ ३०० अ।

चेला-चेली—परिग्रह ३.२५ ब।

चेष्टा—२.३०० अ।

चैतन्य—अनेकान्त (सापेक्ष धर्म) १ १०९ अ, जीव (प्राण) २ ३३२ अ, जीवत्व २.३४० ब, मोक्षमार्ग (दर्शन) ३ ३३८ अ।

चैतन्यप्राणरक्षा—अहिंसा १ २१७ ब।

चैतन्यानुविधायी—उपयोग १.४२९ अ।

चैत्य—अवर्णवाद १ २०१ अ।

चैत्यगृह—२ ३०२ ब।

चैत्यचैत्यालय—२.३०० अ।

चैत्यप्रासादभूमि—२ ३०४ ब, समवसरण ४.३३० ब।

चैत्यभक्ति—३ ७८ अ।

चैत्यभूमि—२.३०३ अ।

चैत्यवन्दना—३ ४९५ ब।

चैत्यवासी—४ ७७ ब।

चैत्यवृक्ष—२ ३०३ अ, भावनलोक ३ २०८ ब, वृक्ष ३ ५८१ अ, वैमानिक लोक ४.५२१ अ। व्यन्तर लोक ३ ६११ अ, समवसरण ४ ३३४ अ।

चैत्यालय—२ ३०२ ब, कुण्डलवर पर्वत ३ ४६६ अ, ३ ४६७, त्रिभुवन-चूडामणि ३ ४५८ अ, नन्दीश्वर द्वीप ३ ४६५, ३ ४६६ अ, पद्म आदि द्रह ३ ४५४, ३ ४७४ अ, मानुषोत्तर पर्वत ३ ४६३ ब, ३ ४६४, रुचकवर पर्वत ३ ४६६, ३ ४६८, ३ ४६९, सिद्धायत—निर्देश ३ ४७१ ब, जम्बूद्वीप मे गणना ३.४४५ ब, अकन ३ ४४४, ३ ४४७, ३ ४६२, ३ ४६४, ३ ४६९। सुमेरु पर्वत पर ३.४५०, ३ ४५१।

चैत्र—नमिनाथ २ ३८३।

चैत्रोद्यान—नमिनाथ २ ३८३।

चोरकथा—२.३ ब

चोरी—अस्तेय १ २१३-२१५, श्रावक ४.५० ब, स्तेन-प्रयोग ४.४४९ अ, हिंसा १ २१७ अ, ४ ५३२ ब।
चोल—२ ३०४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
चौइन्द्रिय—३ १५३ अ।
चौका विधान—आहारशुद्धि १ २८५ अ, १ २८७ ब।
चौंतीस—अतिशय १.१३७ ब, अतिशय व्रत २ ३०४ ब, बन्धापसरण १ ११५ अ।
चौथा काल—२ ३१७ अ।
चौदह—२ २७७ अ, गुणस्थान २.२४६, जीवसमास २ ३४१, पूर्व ४.६८ ब, पूर्वधर ४ ५४ अ, मलदोष १ २८९ ब, मार्गणा ३.२९७ अ, रत्न (चक्रवर्ती) ४ १३-१४।
चौबीस—२ २७७ ब, कामदेव ४ २२ ब, तीर्थंकर ४ ९ ब, २ ३७७, प्रकृति सत्त्वस्थान ४ २७६ अ।
चौबीसी पूजा—इतिहास १ ३४८ अ।
चौर्यानंद—३ ४०८ अ।
चौल क्रिया—मन्त्र ३ २४७ अ।
चौंसठ—चमर १ १३७ ब, अल्पबहुत्व के स्थान १ १६६ अ, १ १६८, १ १६९ ब, १ १७० अ।
च्यवन कल्प—२ ३०५ अ।
च्यावित शरीर—निक्षेप २.६०० अ।
च्युतशरीर—निक्षेप २ ६०० अ।
च्युति—मरण ३ २८२ अ।

छ

छंदन—समाचार ४ ३३६ ब, ४ ३३७ अ।
छंदबद्ध चिट्ठी—२ ३०५ अ।
छंदशतक—२ ३०५ अ, १.३४८ अ।
छंदशास्त्र—२ ३०५, १ ३४० अ, १ ३४७ अ।
छंदानुशासन—इतिहास १.३४५ अ।
छंदोबिंदु—इतिहास १ ३४३ अ।
छक्कमुवएस—इतिहास १ ३४४ ब।
छठा अणुव्रत—रात्रिभोजन त्याग ३.४०३ अ।
छत्तीस—आचार्य के गुण १.२४२ अ।
छत्र—२.३०५ अ, चक्रवर्ती ४.१३ अ, ४.१५ ब, चैत्य चैत्यालय २.३०२ अ, पूजा ३ ७८ ब, प्रातिहार्य १ १३७ ब, रत्न ४ १३ अ, ४ १५ ब, रुचक पर्वत की दिक्कुमारी ३ ४६६, ३.४६८-४६९।
छत्रचूडामणि—२ ३०५ अ, इतिहास १ ३४१ ब।
छत्रत्रय—प्रातिहार्य १ १३७ ब।
छत्रपति—२ ३०५ अ, इतिहास १ ३३४ ब।
छत्रपुर—वर्द्धमान प्रभु २ ३७८।
छत्रसेन—सेन संघ १ ३२६ अ, ब, इतिहास १ ३३४ अ।
छद्म—२ ३०५ अ।
छद्मस्थ—२ ३०५ अ, आगम १.२३७ ब, आत्मानुभव १ ८४-८६ अ, गुणस्थान २ २४६ ब, प्रामाण्य १ १४३ अ, बन्धक ३ १७९ अ, शुद्धाशुद्ध ज्ञान १ ८६ ब।
छद्मस्थविहित वस्तु—गुरु २ २५३ ब।
छद्मस्थ वीतराग—उपशान्त कषाय १ ४४२ ब, क्षीणकषाय २ १८६ ब।
छन्ना—जल-गालन २ ३२५ ब।
छब्बीस—प्रकृतिसत्त्व ४ ८७ ब, ४ २७६ अ।
छयालीस—अर्हन्त के गुण १ १३७ अ, आहार के दोष १ २८७ अ, १ २८९ अ, वसतिका के दोष ३ ५२८ अ।
छर्दि—आहारान्तराय १ २९ अ।
छल—२ ३०५ ब, अनेकान्त १ १०५ ब, न्याय २ ६३३ अ माया ३ २९६ अ, वाद-विवाद ३.५३३ अ, विद्या ३ ५४३ अ।
छलना—जल-गालन २ ३२५ ब।
छलनी—श्रोता १ ४२५ ब।
छह—अनायतन १ २५१ अ, आवश्यक कर्म (श्रावक) ४.५१ ब, आवश्यक कर्म (साधु) १ २७९ ब, आहार १ २८५ अ, कर्त्तव्य (श्रावक) ४.५१ ब, कर्म (असि, मसि आदि) ४.२४, ४.४२० ब, कारक २ ४८, खड ४.८१ अ, घनागुल की सहनानी २ २१९ ब, दर्शन (एकान्त मत) १.४६५ अ, द्रव्य २ ४५५ ब, पर्याप्ति ३ ४०, रस ३ ३९३ अ, हानि-वृद्धि ४.८१ अ।
छहढाला—इतिहास १ ३४८ अ।
छहारदशमी व्रत—२.३०६ अ।
छांग—कुन्थुनाथ २ ३७९।
छाया—२.३०६ अ।
छायाराहित्य—अर्हन्तातिशय १.१३७ ब।
छायावत्—मोक्ष ३.३२९ ब।
छाया-व्याख्या टीका—योगदर्शन ३.३८४ अ।
छाया-संक्रामिणी—विद्या ३.५४४ अ।
छिद्र (घटछिद्र) श्रोता ४ ७४ ब।

छिन्नगति—२ २३५ अ।
छिन्न निमित्त ज्ञान—२.६१३ अ, ऋद्धि १ ४४८।
छीक—कायक्लेश २ ४७ ब।
छुआछूत—२ ३०६ अ।
छे छे—सूच्यांगुल की अर्द्धच्छेद राशि २ २१९ ब।
छे छे^{2}—प्रतरांगुल की अर्द्धच्छेद राशि २ २१९ ब।
छे छे^{3}—घनांगुल की अर्द्धच्छेद राशि २ २१९ ब।
छे छे छे^{4}—जगत्प्रतर की अर्द्धच्छेद राशि २ २१९ ब।
छे छे छे^{6}—घनलोक की अर्द्धच्छेद राशि २ २१९ ब, जगत् श्रेणी की अर्द्धच्छेद राशि २ २१९ ब।
छेद—२ ३०६ अ, अहिंसा व्रतातिचार १.२१६ अ, गणित प्रक्रिया २ २२३ ब, पर्याय ३ ४५ ब, प्रायश्चित ३.१६१ अ, व्रतभंग १ २१६ ब, हिंसा ४ ५३३ ब।
छेदगणित—२.३०६ ब।
छेदना—२ ३०६ ब।
छेदपिंड—इतिहास १.३४३ अ।
छेदप्रायश्चित—२ ३०७ अ, आहार १.२८६ ब।
छेद-भागाहार—अनुयोगद्वार १ १०२ ब
छेदविधि—२ ३०७ अ, छेदोपस्थापना २ ३०७ ब।
छेदोपस्थापक—२ ३०७ अ।
छेदोपस्थापना (चारित्र)—२ ३०७ ब, निर्यापक २.६२५ ब, परिहारविशुद्धि ३ ३६ ब, भाव ४ १३२ अ, लब्धिस्थान अल्पबहुत्व १ १६०, सिद्धो का अल्पबहुत्व १ १५३। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०६, बन्धस्थान ३ ११३ उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३९३, उदीरणा १ ४११ सत्त्व ४ २८३, मोहस्थितिसत्त्व ४.३०९ अ, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६ त्रिसयोगी भंग १.४०७ ब। सत् ४.२३७, संख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४८९, काल २ ११४, अन्तर १ १६, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१।

ज

जंगम-प्रतिमा—२ ३०० अ-ब।
जंघा-चारण ऋद्धि—१.४४७, १.४५१ ब।
जंतु—२ ३०९ ब, जीव २.३३३ अ-ब।
जंबुद्दीवपण्णत्ति—२.३०९ ब, इतिहास १.३४२ ब।
जंबुद्दीव संघायणी—२ ३०९ ब, इतिहास १ ३४१ अ।
जंबूद्वीप—२ ३०९ ब। चातुर्द्वीपिक—निर्देश ३.४३७ अ, अकन ३ ४३७ ब। बौद्धाभिमत - निर्देश ३ ४३४ ब, अकन ३ ४३५। वैदिकाभिमत—निर्देश ३ ४३१ ब, अकन ३ ४३२।
जंबूद्वीप (जैनाभिमत)—निर्देश ३ ४४४ अ, नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४४२ अ, ३.४७८, अकन ३ ४४३, चित्र ३ ४४४, ज्योतिष चक्र २ ३४८, अधिपति देव ३ ६१४। इस क्षेत्र के पर्वत नदी आदि—निर्देश ३ ४४४ ब, गणना ३.४४५।
जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति—२ ३०९ ब, अमितगति १.१३६ अ, इतिहास १ ३४१ अ, १ ३४३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६८ ब।
जंबूद्वीपसमास—२ ३१० अ, इतिहास १ ३४० ब।
जंबूद्वीपसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ अ।
जंबूमती—२ ३१० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
जंबूवृक्ष—२.३१० अ, निर्देश ३ ४५८-४५९, विस्तार ३ ४५८ अ, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४, ३.४५७, चित्र ३ ४५८ अ, देव प्रासादो का विस्तार ३ ६१५। बौद्धाभिमत ३ ४३४ ब, वैदिकाभिमत ३ ४४१ ब।
जंबूवृक्ष—विमलनाथ २ ३८३, वृक्ष ३ ५७८ ब।
जंबूवृक्षस्थल—निर्देश ३ ४५८ अ, विस्तार ३.४५८ अ, अकन ३ ४५५, चित्र ३ ४५८, ३ ४५९।
जंबूशंकुपुर—२ ३१० अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
जंबूसामिचरिउ—इतिहास १ ३४३ ब।
जंबूस्वामी—२.३१० अ, मूलसंघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ, श्वेताम्बर ४ ७८ अ।
जंबूस्वामीचरित्र—२ ३१० अ, इतिहास १.३४३ ब, १ ३४५ ब, १ ३४७ अ।
जंभाई—कायक्लेश २ ४७ ब।
ज—जगश्रेणी २ २१९ ब, जघन्य २.२१८ ब।
ज—जघन्य को आदि लेकर अन्य भी २ २१८ ब।
ज^{2}—जगत्प्रतर, लोकप्रतर २ २१९ ब।
ज^{3}—घनलोक २ २१९ ब।
ज. जु अ—जघन्य युक्तानन्त २ २१९ अ।
ज. जु अ^{10}—उत्तम परीतानन्त, २ २१९ ब।
ज. जु अ ब—जघन्य अनन्तानन्त २ २१९ अ।
जगच्चंद्र सूरि—इतिहास १ ३३२ अ।
जगजीवन—२ ३१० अ, इतिहास १ ३३४ अ।
जगती—निर्देश ३.४४४ ब, ३ ४६२ ब, ३.४६३ ब, विस्तार ३ ४८४, वर्ण ३ ७७, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने।
जगतुंग—२.३१० अ, राष्ट्रकूट वंश १.३१५ ब।

जगत्—२ ३१० अ।
जगत्कीर्ति—काष्ठासघ १ ३२७ अ, नन्दिसघ १.३२३ ब।
जगत्कुसुम—२ ३१० अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६९।
जगत्-घन—२ ३१०अ, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब।
जगत्प्रतर—२ ३१० अ, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब, सहनानी २ २१९ ब।
जगत्श्रेणी—२ ३१० अ, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब, सहनानी २ २१९ ब।
जगत्सुंदरी प्रयोगमाला—२ ३१० अ, इतिहास १ ३४५ अ।
जगत्स्रष्टा—कर्म २ २८ अ।
जगदीश भट्टाचार्य—वैशेषिक दर्शन ३ ६०७ ब।
जगदेकमल्ल—२.३१० अ।
जगन्नाथ—इतिहास १ ३३४ अ, १ ३४७ ब।
जगमोहन दास—२ ३१० अ, इतिहास १ ३३४ ब।
ज० ज्ञा०—जघन्य ज्ञान २ २१८ ब।
जघन्य-अंतरात्मा—१ २७ अ-ब।
जघन्य अजघन्य—प्ररूपणाएँ ३ ११४।
जघन्य अनन्तानन्त—प्रमाण १ ५६ ब, २ २१४ ब, २ २१८ ब, सहनानी २ २१९ अ।
जघन्य अनुभाग—१ ८९ अ।
जघन्य अंतरात्मा—१ २७ अ-ब।
जघन्य अवगाहना—सख्या ४ ९४ ब।
जघन्य असख्यात—प्रमाण १ २०५ ब, सहनानी २ २१९ अ।
जघन्य असख्येयासंख्येय—२ २१८ अ।
जघन्य आराधना—सल्लेखना ४ ३८७ ब।
जघन्य कषायांश—बंध ३ १७५ ब।
जघन्य कृष्टि—२ १४३ अ।
जघन्यगुण—गुण २ २४१ अ-ब, स्कन्ध ४ ४४८ अ।
जघन्य ज्ञान—बंध ३ १७५ ब, सहनानी २ २१८ अ।
जघन्य धर्मध्यान—२ ४७९ अ।
जघन्य नक्षत्र—सल्लेखना ४ ३९७ ब।
जघन्य निर्वृत्यपर्याप्त—३ ४२ अ।
जघन्य पद—अनुयोग १ १०२ ब, १ १०३ ब।
जघन्य परमाणु—३ १४ अ।
जघन्य परीतानन्त—प्रमाण १ ५६ अ, २ २१४ ब, सहनानी २ २१९ अ।
जघन्य परीतासंख्यात—प्रमाण १.२०६ अ, २.२१४ ब, सहनानी २.२१९ अ।
जघन्य पात्र—३ ५२ ब।
जघन्य प्रोषधोपवास—३ १६४ ब।
जघन्य भाव—बंध ३ १७५ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७७ अ।
जघन्य युक्तानन्त—उपमाकाल २ २१८ अ, प्रमाण १ ५६ ब, २ २१४ ब, सहनानी २ २१९ अ।
जघन्य युक्तासंख्यात—उपमाकाल २ २१८ अ, प्रमाण १.२०६ ब, २ २१५ ब, सहनानी २ २१९ अ।
जघन्य योगस्थान—३ ३८१ अ।
जघन्यलब्धि—३ ४१५ अ।
जघन्य वर्ग—३ ५११ ब।
जघन्य वर्गणा—सहनानी २ २१९ अ।
जघन्य विभक्ति—अनुयोगद्वार १ १०३ ब।
जघन्य संख्यात—उपमा प्रमाण २ २१४ अ, ४ ९२ अ।
जघन्य स्थितिबंध—४ ४५८ ब।
जघन्य स्थितिसत्त्व—४ २७६ ब, सम्यग्मिथ्यादृष्टि ४ २७७ अ।
जघन्य स्पर्धक—४ ४७२ ब।
जटामुकुट—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब।
जटायु—२ ३१० ब।
जटासिंहनंदि—२ ३१० ब, इतिहास १ ३२९ ब।
जटिल—२.३१० ब।
जठराग्नि—अग्नि १ ३५ ब।
जड़—२.३१० ब, २ ३३२ ब।
जतुकर्ण—२.३१० ब, एकान्ती १ ४६५ ब, विनयवादी ३ ६०५ अ।
जनक—२.३१० ब, उग्रसेन १.३५२ अ, हरिवश १ ३४० अ।
जनकपुरी—२.३१० ब।
जननाशौच—४.४४२ ब।
जनपद—२ ३१० ब।
जनपद सत्य—४.२७१ ब।
जनसंसर्ग—४ ११८ अ।
जनार्दन—इतिहास १ ३३४ ब।
जन्नाचार्य—२ ३१० ब, १ ३३२ अ।
जन्म—२ ३१० ब, २ ३१२ अ, योनि ३.३८८ अ, वर्ण-व्यवस्था ३ ५२५ अ।
जन्मकल्याणक—२ ३२ अ।
जन्मकल्याणक-वन्दना—२ १३९ अ।
जन्मदत्त—४.२५ अ।
जन्मभूमि—नारकियो का जन्मस्थान—निर्देश २ ५७७ अ, रचना २ ५७७ अ, विस्तार २.५७७ अ।

जन्मसाहित्य—मोक्ष ३ ३२६ अ।
जन्मशाला—भवनवासी देवभवन ३ २१० ब।
जन्मसंस्कार क्रियामंत्र—मंत्र ३ २४६ ब।
जन्मसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ अ।
जन्मांध—एकान्त १ ४६३ ब।
जन्मातिशय—अर्हन्त १ १३७ ब।
जन्माभिषेक—सुमेरु पर चार शिलायें ३ ४५० ब।
जन्मेजय—२ ३२३ अ, कुरुवंश १ ३१० ब।
जन्यजनक भाव—१ २३३ अ।
जह्नु—इक्ष्वाकु वंश १ ३३५ अ।
जप—ध्यान २ ४८३ ब।
जमाली—श्वेताम्बर ४ ७९ ब।
जयंत (कूट)—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन २ ४६८।
जयंत (द्वार)—जम्बूद्वीप की जगती का द्वार—निर्देश ३ ४४४ ब, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३ ४४४ के सामने, इसका रक्षक देव ३ ६१३।
जयंत (नगरी)—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
जयंत (स्वर्ग)—२ ३२३ अ, अनुत्तर स्वर्ग—निर्देश ४ ५१९ अ, अंकन ४ ५१५, ५१७। देव—निर्देश ४ ५१० ब, आयु के बन्धयोग्य परिणाम १ २५८ ब। चक्रवर्ती ४ १० ब।
जयंतभट्ट—२ ३२३ अ।
जयंता—विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९-४८१, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६६ अ। नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३ ४९१, अंकन ३ ४६५। रुचकवर पर्वतवासिनी देवी—निर्देश ३ ४७६ अ-ब, अंकन ३.४६८, ३ ४६९।
जयंतिकी—२.३२३ अ।
जयंती—२ ३२३ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ, विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ। विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८०-४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।
जय—२ ३२३ अ, आचार्य १ ३१६, गणधर २ २१३ अ, चक्रवर्ती ४.१० अ, तीर्थंकर २ ३७७, मूलसंघ १.३१६, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ, ३ ५४६ अ, विमल-अनन्त नाथ २.३८७।
जयकीर्ति—२.३२३ अ, काष्ठासंघ १.३२७ अ, तीर्थंकर २.३७७।
जयकुमार—२ ३२३ अ, अकम्पन १ ३० ब, कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ।
जयचंद छाबड़ा—२ ३२३ अ, इतिहास १ ३३४ ब, १ ३४८ अ।
जयतिलक सूरि—इतिहास १ ३३२ ब।
जयदेव—तीर्थंकर २ ३७७।
जयद्रथ—२ ३२३ ब।
जयधवला—२ ३२३ ब, इतिहास १ ३४१ ब।
जयनंदि—२ ३२३ ब, नन्दिसंघ १ ३२३ अ, इतिहास १.३२९ अ।
जयनाथ—तीर्थंकर २ ३७७।
जयपराजय—न्याय २ ६३४ ब, वितण्डा ३ ५४३ अ।
जयपाल—२ ३२३ ब, मूलसंघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ।
जयपुर—२ ३२३ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।
जयपुरी—२ ३२३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
जयबाहु—२ ३२३ ब, मूलसंघ १.३१६।
जयमित्र—२ ३२३ ब, सप्तऋषि ४ ३१३ अ।
जयमित्रहल—इतिहास १ ३३३ अ, १ ३४५ ब।
जयराज—कुरुवंश १ ३३५ ब।
जयरामा—सुविधिनाथ २ ३८०।
जयराशि—२ ३२३ ब, इतिहास १ ३२९ ब।
जयवती—बलदेव ४.१७ ब।
जयवन्ती—बलदेव ४ १७ ब।
जयवराह—२ ३२३ ब।
जयवर्मा—२.३२३ ब।
जयवान्—२ ३२३ ब।
जयविलास—२.३२३ ब, इतिहास १.३४७ ब।
जयश्यामा—अनन्तनाथ विमलनाथ २ ३८०।
जयसागर—इतिहास १ ३३४ अ।
जयसिंह—२.३२३ ब, भोजवंश १ ३१० अ।
जयसेन (आचार्य)—२.३२४ अ, मूलसंघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ। काष्ठासंघ १ ३२७ अ। पंचस्तूपसंघ—निर्देश १ ३२६ ब, इतिहास १ ३२९ ब। पुन्नाट संघ—निर्देश १ ३२७ अ, इतिहास १.३२९ ब। लाडबागड संघ—निर्देश १ ३२७ ब, इतिहास १ ३३१ अ, १ ३४३ अ। पंचम—इतिहास १ ३३१ ब। षष्टम—इतिहास १.३३१ ब। सप्तम—इतिहास १.३४४ अ।
जयसेन (राजा)—चक्रवर्ती २.३९१, ४.१० अ, यदुवंश १.३३७।
जयसेना—उत्तरेन्द्र की ज्येष्ठा देवी ४ ५१४ अ।

जया—२.३२४ अ, अरनाथ की यक्षिणी २.३७९, विद्या ३ ५४४ अ।
जयावती—वासुपूज्यनाथ २.३८०।
जयावह—२.३२४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ।
जया वाचना—३ ५३१ ब।
जरत्कुमार—२.३२४ अ, यदुवश १.३३७।
जरा—२ ३२४ ब, यदुवश १ ३३७।
जरापल्ली पार्श्वनाथ—२ ३२४ ब।
जरापल्ली पार्श्वनाथ स्तोत्र—४ ४४९ ब।
जरायु—२.३२४ ब।
जरासंध—२ ३२४ ब, हरिवंश १.३४० अ, प्रतिनारायण ४.२० अ, नेमिनाथ २ ३९१, कुटुम्ब १ ११९ अ।
जल—२ ३२४ ब, अर्हन्तातिशय (निर्मल सुगन्धित जल-वृष्टि) १ १३७ ब, नक्षत्र (पूर्वाषाढ) २ ५०४ ब, पूजा ३ ७८ ब, मण्डल (अपमडल) २ ३२४ ब, ३ ४३४, वर्ण (लेश्या) ३ ४२५ अ, विहार ३ ५७६ ब।
जलकांत—उदधिकुमारेन्द्र—निर्देश ३ २०८ अ, परिवार ३ २०९ अ, अवस्थान ३ २०९ ब, आयु १ २६५।
जलकायिक (जीव)—निर्देश २ ४४, २ ३२४। अप्रतिष्ठित शरीर ३ ५०६ अ, अवगाहना १ १७९, अवस्थान २ ४६ अ, आयु १ २६४, जीवसमास २ ३४३, वर्ण ३ ४२५ अ, स्थावर ४ ४५४ ब।
जलकायिक (मार्गणा)—प्ररूपणा—बध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २०२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ २०२, सख्या ४ १००, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८३, काल २ १०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।
जलकेतु—२ ३२५ अ, ग्रह २ २७४ अ।
जलगता चूलिका—२ ३२५ अ, श्रुतज्ञान ४ ७९ अ।
जलगति—२ ३२५ अ, विद्या ३ ५४४ अ।
जलगालन—२ ३२५ अ-ब, श्रावक ४ ५० ब।
जलचर—२ ३६७, अवगाहना १ १७९, आयु १.२६३, इन्द्रिय १ ३०६ ब, जीवसमास २ ३४३।
जलचारण—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५२ ब।
जलधि—यदुवश १.३३७।
जलपथ—२ ३२६ अ।
जलप्रभ—उदधिकुमारेन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, अवस्थान ३ २०९ ब, परिवार ३ २०९ अ, आयु १ २६५।
जलमडल—धारणा २ ३२४ ब, लोक ३.४३४ अ।
जलमंडल यंत्र—३ ३५३।
जलरेखा—क्रोध कषाय २.३८ अ।
जलादिवासन यंत्र—३ ३५३।
जलावर्त—२.३२६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
जलाशय—स्नान ४ ४७१ ब।
जलौषधऋद्धि—१ ४४७, १ ४५५ अ।
जल्प—२ ३२६ अ, २.६३३ अ, २ ६३३ ब, वाद ३ ५३३ ब।
जल्पनिर्णय—२.३२६ ब, इतिहास १ ३२९ ब, १ ३४१ ब।
जल्पवितंडा—वाद ३ ५४२ ब।
जल्हिगले—इतिहास १.३३२ ब।
जसहरचरिउ—इतिहास १ ३३० ब, १ ३४२ ब,।
जह्नु—इक्ष्वाकु वश १ ३३५ अ।
जांबूनद—सुमेरु परिधि ३ ४४९ ब।
जांबूनदा—२.३२६ ब, विद्या ३ ५४४ अ।
जागृति—ज्ञानी ४ ३७८ अ, निद्रा २ ६०९ अ।
जातकतिलक—इतिहास १ ३४२।
जाति—२ ३२६ ब, आकृति १ २२५ अ, कुल २.१३० अ, न्याय २ ३२७ ब, २ ६३३ अ, वर्णव्यवस्था ३ ५२४ ब, ३ ५२५ ब, विद्या ३ ५४३ अ, विवाद ३ ५३३ अ, शुक्लध्यान ३ ५३४ ब।
जाति नामकर्म प्रकृति—२ ३२६ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९५ अ, ३ ९८, बधस्थान ३ १११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५, अल्पबहुत्व १ १६८, १ १७६।
जातिपदगत भग—३ १९७ अ।
जातिमंत्र—३ २४६ अ।
जातिमद—३ २५९ ब।
जातिवाचक नाम—२ ५८२ ब।
जातिविद्या—३ ५४४ अ।
जातिस्मरण—सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति मे निमित्त ४.३६३ अ, सुमति-पद्मप्रभ आदि तीर्थंकर २ ३८२।
जात्यतर—अनुगम १ ७० ब, सामान्य ४ ४१२ ब।
जात्यतर ज्ञान—मिश्र गुणस्थान ३ ३०८ अ-ब।
जात्यंतर भाव—अनेकान्त १ १०५ अ।
जात्यंतर श्रद्धान—मिश्र गुणस्थान ३ ३०७ ब।
जात्यार्थ—आर्य १ २७५ अ।

जानूपरि व्यतिक्रम—आहारान्तराय १.२९ अ।
जान्वधःपरामर्श—आहारान्तराय १.२९ अ।
जाप—पदस्थध्यान ३ ५ ब, पूजा ३.७५ अ, व्युत्सर्ग ३.६२० ब, सामायिक ४ ४१७ अ।
जामन—(दही का जामन) भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ।
जाल—२ ३२८ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ।
जालंधर—२ ३२८ अ।
जिज्ञासा—२ ३२८ अ, ऊहा १.४४५ ब।
जिणयत्तकहा—इतिहास १ ३४४ ब।
जिणरत्ति कहा—इतिहास १ ३४६ अ।
जिणरत्तिविहाणकहा—इतिहास १ ३४५ अ।
जित—निक्षेप २ ६०१ ब।
जितकषाय—२ ३२८ अ।
जितदंड—२ ३२८ अ, पुन्नाट संघ १ ३२७ अ।
जितनाभि—नारद ४ २२ अ।
जितमोह—२ ३२८ अ।
जितशत्रु—२ ३२८ अ, इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ। अजितनाथ २ ३८०, २ ३९१, नारद ४ २२ अ, यदुवंश १ ३३७, रुद्र (अजितनाथ का) २.३९१।
जितारि—यदुवंश १ ३३७।
जितेंद्रिय—२ ३२८ अ।
जिन—२ ३२८ ब।
जिनकल्प—२ ३२९ अ, २.१३६ ब, श्वेताम्बर ४ ७८ ब, ४ ७९ अ-ब।
जिनकूट—पद्म आदि द्रहो के कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४।
जिनगुणसंपत्ति व्रत—२ ३२९ अ।
जिनगुणस्तुति—पात्रकेसरी स्तोत्र, इतिहास १ ३४१ अ।
जिनचतुर्विंशति स्तोत्र—इतिहास १ ३४६ अ।
जिनचंद्र—२ ३२९ अ, कुन्दकुन्द के गुरु २ १२६ ब, २ १२८ अ, मूलसंघ १ ३२२ ब, नन्दिसंघ १ ३२३ अ, १ ३२४ अ, १ परि०/२ ३, १ परि०/४ ३, इतिहास १ ३३८ ब, १.३३१ ब, १ ३३२ ब, १ ३३३ अ, १ ३४६ अ। श्वेताम्बर ४.७७ अ-ब।
जिनदत्तचरित—२ ३२९ ब, इतिहास १ ३४२ अ।
जिनदत्ता—दक्षिणेन्द्रो की वल्लभिका ४ ५१३ ब।
जिनदास—२ ३२९ ब, इतिहास १ ३३२ ब, १ ३३४ ब।
जिनदासी—उत्तरेन्द्रो की वल्लभिका देवी ४ ५१३ ब।
जिनदीक्षी—प्रव्रज्या ३ १४९ ब, भरत चक्रवर्ती ३ ४१९ अ।
जिननंदि—२ ३२९ ब, इतिहास १ ३२८ अ।
जिनपालित—२.३२९ ब।
जिनपुर—भवनवासी देवो के नगरों में जिनचैत्यालय २.३०३ ब, व्यन्तर देवो के नगरो मे जिनचैत्यालय ३.६१२ ब।
जिनपूजा पुरन्दर व्रत—२ ३२९ ब।
जिनबिंब—पूजा ३ ७७ अ, सामायिक ४ ४१७ अ।
जिनबिंब दर्शन—४ ३६३ अ।
जिनभद्रगणी—२ ३२९ ब, इतिहास १.३२९ अ, १ ३४१ अ।
जिनभवन—चैत्यालयो मे रति-कामदेव की मूर्ति २ ३०३ ब भवन ३ २१० ब।
जिनभास्कर—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
जिनमहिमा दर्शन—सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति मे निमित्त ४ ३६३ अ।
जिनमुखावलोकन व्रत—२ ३२९ ब।
जिनमुद्रा—२ १३५ अ, कृतिकर्म ३ ३१३ ब।
जिनयज्ञ कल्प—इतिहास १ ३४४ ब।
जिनयज्ञ काव्य—आशाधर १ २८१ अ।
जिनराज—इतिहास १ ३३३ ब।
जिनरात्रि व्रत—२ ३३० अ।
जिनरूपता क्रिया—संस्कार ४.१५१ ब, ४ १५२ ब।
जिनवचन—स्वाध्याय ४.५२५ अ।
जिनवन्दना—पूजा ३ ७६ ब।
जिनवर—२ ३३० अ।
जिनवर वृषभ—२.३३० अ।
जिनवल्लभ गणी—इतिहास १ ३३१ अ, १ ३४३ ब।
जिनशतक—इतिहास १ ३३४ ब।
जिनशतक स्तोत्र—४.४४९ ब।
जिनशासन—आगम १ २२७ ब।
जिनसंहिता—२ ३३० अ।
जिनसहस्रनाम—२ ३३० अ।
जिनसहस्रनाम स्तोत्र—आशाधर १ २८१ अ, स्तोत्र ४.४४९ ब।
जिनसागर—२ ३३० अ, इतिहास १ ३३४ ब, १ ३४७ ब।
जिनसेन—२ २३० अ, उत्तरपुराण १ ३५६ अ। इतिहास—कवि १ ३३४ ब, द्रविड संघ १.३२० अ, पंचस्तूप संघ १ ३२६ ब, पुन्नाट संघ १.३२७ अ, इतिहास १.३३० अ, १.३४१ ब, १ ३४२ अ, भट्टारक १ ३२६ ब, सेन संघ १ ३१८ ब, १.३२६ ब।
जिनस्तुति शतक—२.३३० अ, स्तोत्र ४ ४४९ अ।
जिनायतन—प्रत्येक पर्वत पर स्थित—निर्देश ३ ४७१-

४७३, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चैत्य-चैत्यालय २.३०४ अ।

जिनालय वन्दना—पूजा ३ ७६ ब।

जिनेंद्रबुद्धि—२.३३० अ, मूलसंघ १.३२२ ब, पूज्यपाद ३ ८२ अ, नन्दिसघ (देवनन्दि) १.३२३ अ, इतिहास १ ३२९ अ।

जिवानी—२ २३० ब, जलगालन २.३२५ ब।

जिह्व—नरक पटल—निर्देश २ ५७१ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १.२६३।

जिह्वक—नरक पटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।

जिह्वा—२ ३३० ब, आहारान्तराय १.२८ ब, इन्द्रिय १ ३०२ अ, प्रदेश तथा अवगाहना का अल्पबहुत्व १ १५७, रस ज्ञान की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०, संयम (प्रधानता) ४.१३९ अ।

जिह्वा—नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अकन ३ ४४१, नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३।

जिह्विक—२ ३३० ब। नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३ ४४१, नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३।

जीतशास्त्र—४.३९४ ब।

जीतहार—न्याय २.६३४ ब, वितण्डा ३.५४५ अ।

जीमूत—चक्रवर्ती ४ १५ अ।

जीरापल्ली पार्श्वनाथ स्तोत्र—इतिहास १ ३४५ ब।

जीवंधर—२ ३३० ब, ब्रह्म जीवधर १ ३३३ अ।

जीवंधर चम्पू—२ ३३० ब। इतिहास १ ३४२ अ।

जीवंधरचरित्र—२ ३३० ब। इतिहास १ ३४१ ब।

जीवंधरपुराण—२ ३३० ब। इतिहास १ ३४७ ब।

जीवंधर (ब्रह्म)—इतिहास १ ३३३ अ।

जीवंधर शतपदी—२ ३३० ब।

जीव—२ ३३० ब, अजीव १.४१ ब, अप्रतिघाती १ २२३ ब, अवगाहना १ १७७-१ १८०, अवस्थान १ २२२ ब, आयु १ २६३, आहारक १ २९४ ब, उपकार २ ६३ ब, उपादेयता (तत्त्व) २ ३५५ ब, कर्मसयोग (कारण कार्य) २ ६७ अ, २ ७० अ, २ ७१ ब, २ ७२ अ, २ ७४ अ, काय २ ४४ ब, गति (गमन) २ २३५ अ, ब, गुण २ २४४ अ, जन्म २ ३१२ ब, पुद्गल सयोग ३ ३७३ ब, ३ ५६१ अ, पुद्गल मोक्ष ३ ३२२ ब, प्रासुक ३ १६२ अ, भावकर्म २ २८ ब, मूर्तबन्ध ३ १७३ अ, लोकाकाश मे अवस्थान १ २२२ ब, विग्रह गति १ २४७ अ-ब, ३ ५४१ अ, विभाव ३ ५५९ ब, ३ ५६१ अ, शरीराकार १ ४७१ ब, शुद्ध २ ३३८ अ, श्रेष्ठता २ ३५५ ब, सकोच-विस्तार-शक्ति २ ४६ ब, २ ३३८ ब, स्वभाव २ १५ अ, (करुणा) ४ ५०६ ब, भाव आस्रव १ २८२ अ, तत्त्व २ ३५३ ब।

जीव (प्ररूपणा)

	विषय	बंध	बंधस्थान	उदय	उदयस्थान	उदीरणा	सत्त्व	सत्त्वस्थान	त्रिसयोगी	सक्रमण
	ओघ प्ररूपणा	३.९७	३ १०८	१ ३७५	१ ३८८	१.४११अ	४ २७८	४ २८७	१ ४००	४ ८ ७
	आदेश प्ररूपणा	३.१००	३ ११३	१ ३७६	१.१९२	१ ४११	४ २८१	४ २९८	१ ४०६	४.८७
१.	गतिमार्गणा	३ १००	३ ११३	१ ३७६	१ ३९२	१.४११	४ २८१	४ २९८	१ ४०६	४ ८७
२.	इन्द्रिय ,,	३ १०३	३ ११३	१ ३७८	१ ३९२	१ ४११	४ २८२	४ २९९	१ ४०६	४ ८७
३.	काय ,,	३.१०४	३ ११३	१ ३७९	१ ३९२	१ ४११	४ २८२	४ २९९	१ ४०६	४ ८७
४	योग ,,	३ १०४	३.११३	१ ३७९	१ ३९२	१ ४११	४ २८३	४ २९९	१ ४०६	४ ८७
५	वेद ,,	३ १०५	३.११३	१ ३८१	१ ३९२	१ ४११	४ २८३	४ ३००	१ ४०७	४ ८७
६.	कषाय ,,	३ १०५	३.११३	१.३८२	१.३९३	१.४११	४ २८३	४ ३००	१ ४०७	४ ८७
७.	ज्ञान ,,	३ १०५	३ ११३	१ ३८३	१.३९३	१ ४११	४.२८३	४ ३००	१ ४०७	४ ८७
८	सयम ,,	३.१०६	३ ११३	१ ३८३	१.३९३	१ ४११	४.२८३	४ ३०१	१ ४०७	४ ८७
९.	दर्शन ,,	३.१०६	३.११३	१.३८३	१.३९३	१ ४११	४ २८४	४ ३०१	१ ४०७	४ ८७
१०.	लेश्या ,,	३.१०७	३.११३	१ ३८४	१ ३९३	१ ४११	४ २८४	४ ३०१	१ ४०७	४.८७
११	भव्यत्व ,,	३ १०७	३.११३	१ ३८४	१.३९३	१.४११	४.२८४	४ ३०२	१ ४०८	४ ८७
१२	सम्यक्त्व ,,	३.१०७	३.११३	१.३८५	१.३९३	१.४११	४ २८४	४.३०२	१ ४०८	४ ८७
१३.	सज्ञित्व ,,	३.१०८	३.११३	१.३८५	१ ३९३	१.४११	४.२८४	४ ३०२	१ ४४८	४ ८७
१४.	आहारकत्व ,,	३.१०८	३.११३	१ ३८६	१ ३९३	१.४११	४.२८४	४ ३०२	१ ४०८	४ ८७

	विषय	सत्	सख्या	क्षेत्र	स्पर्शन	काल	अन्तर	भाव	अल्पबहुत्व	भागाभाग
	ओघ प्ररूपणा	४ १६१	४ ९४	२ १९७	४ ४७७	२.९९	१ ७	३ २१९	१ १४२	४ ११५
	आदेश प्ररूपणा	४.१६५	४ ९५	२ १९७	४.४७९	२.१०१	१ ८	३ २२०	१ १४२	४ ११०
१	गतिमार्गणा	४ १६५	४ ९५	२ १९७	४ ४७९	२ १०१	१ ८	३ २२०	१ १४३	४ ११०
२	इन्द्रिय ,,	४.१९३	४ ९९	२ २००	४ ४८३	२.१०६	१ ११	३ २२०	१ १४५	४ ११०
३.	काय ,,	४ १९९	४ १०१	२ २०१	४ ४८३	२ १०६	१ १२	३ २२०	१ १४५	४ १११
४.	योग ,,	४ २११	४ १०२	२ २०२	४ ४८५	२ १०७	१ १२	३ २२१	१.१४७	४ १११
५	वेद ,,	४ २२२	४ १०४	२.२०३	४ ४८७	२ १११	१ १४	३ २२१	१ १४८	४ ११२
६.	कषाय ,,	४ २२८	४ १०५	२ २०४	४ ४८८	२ ११२	१ १५	३ २२१	१ १४९	४.११२
७	ज्ञान ,,	४ २३३	४ १०५	२ २०४	४ ४८८	२ ११३	१ १५	३ २२१	१ १५०	४ ११३
८.	सयम ,,	४ २३६	४ १०६	२ २०५	४ ४८९	२ ११४	१ १६	३ २२१	१ १५०	४.११३
९.	दर्शन ,,	४ २३९	४ १०७	२ २०५	४.४९०	२ ११५	१ १७	३ २२१	१ १५१	४ ११३
१०.	लेश्या ,,	४ २४२	४ १०७	२ २०५	४ ४९०	२ ११५	१ १८	३ २२१	१ १५१	४ ११३
११	भव्यत्व ,,	४ २५४	४ १०८	२ २०६	४ ४९२	२ ११७	१ २०	३ २२१	१ १५२	४ ११४
१२	सम्यक्त्व ,,	४ २५५	४ १०९	२ २०६	४ ४९२	२ ११७	१ २०	३ २२१	१.१५२	४ ११४
१३.	सज्ञित्व ,,	४ २६०	४ ११०	२.२०७	४ ४९३	२.११९	१ २१	३ २२२	१ १५२	४ ११४
१४.	आहारकत्व ,,	४ २६३	४ ११०	२ २०७	४ ४९३	२ ११९	१ २१	३ २२२	१ १५२	४ ११४

जीव-अनुभाग – १ ८८ अ ।

जीवकचिन्तामणि – इतिहास १.३४१ ब ।

जीवकर्म—२ २७ अ-ब ।

जीवकषाय—२ ३७ अ ।

जीवक्रोध—३ ३७ अ ।

जीवगति (गमन)—ऊर्ध्व २.२३५ अ-ब, दिगन्तर २ २३५ ब, विभावगति २ २३५ ब, विग्रहगति १ २४७ ब, ३ ५४१ अ ।

जीवघात—हिंसा ४ ५३४ अ ।

जीवतत्त्वप्रदीपिका—२ ३४० ब ।

जीवत्व—२ ३४० ब ।

जीवदशा—२ ३४१ अ ।

जीवन—२.३४१ अ ।

जीवनलोभ—३ ४९२ ब ।

जीवन्धर – २ ३३० ब, ब्रह्म जीवन्धर १ ३३३ अ ।

जीवन्धरचम्पू—२ ३३० ब, इतिहास १ ३४२ अ ।

जीवन्धरचरित्र – २ ३३० ब, इतिहास १.३४१ ब ।

जीवन्धरपुराण—२ ३३० ब, इतिहास १.३४७ ब ।

जीवन्धर ब्रह्म—इतिहास १ ३३३ अ ।

जीवन्धर शतपदी – २ ३३० ब ।

जीवन्मुक्त—अनुप्रक्षा १ ७८ अ, मोक्ष ३ ३२३, सम्यग्दृष्टि ४ ३७६ ब ।

जीवन्मुक्तिविवेक—३ ५९५ ब ।

जीवपरिणाम – अनुभागोदय २ ६७ ब, २ ७२ अ, कर्मोदय २ ७२ अ, मोक्षमार्ग २ ६८ अ ।

जीवपुद्गल—मोक्ष ३.३२२ ब, यति (सयोग) २ ३७३ ब, विभाग ३ ५६१ अ ।

जीवप्रदेश—इन्द्रिय १ ३०२ ब, योग ३.३८३ ब, संकोच-विस्तार २ ४६ ब, २ ३३८ ब, समुद्घात ३ ५९१ अ ।

जीवबंध—३ १७० ब, उपशम १ ४४२ अ ।

जीवमोक्ष—३ ३२२ ब ।

जीवयुति—३ ३७३ ब ।

जीवरक्षा—हिंसा ४ ५३४ ब ।

जीवराशि—सख्या प्रमाण ४ ९४, मोक्ष ३ ३३१ ब ।

जीवविचय—धर्मध्यान २ ४८० अ ।

जीवविपाकी प्रकृति – अनुभाग १ ९० ब, प्रकृतिबंध ३ ८९ ब ।

जीवसंपात—आहारान्तराय १ २९ अ ।

जीवसंस्थान – विग्रह गति १.२४७ अ ।

जीवसमास—२.३४१ ब, काय २ ४४ ब, मार्गणा ३ २९८ अ, योग ३ ३७९ ब । योगस्थान ३.३८२ अ ।

जीवसमुदाहार अनुयोगद्वार १ १०२ ब ।

जीवसिद्धि—२ ३४३ ब, इतिहास १.३४० अ ।

जीवा—२ ३४३ ब, गणित २ २३३ अ ।

जीवाराम—२ ३४२ ब ।

जीवाधिकरण—१ ४९ अ ।

जीविका – २.३४३ ब ।

जीवित – जीवन २ ३४१ अ ।

जीवितपूर्व—२.३३४ ब।

जीवितावधिक प्रत्याख्यान—३.१३३ अ।

जुगुप्सा—२.३४४ अ, कषाय २.३५ ब, निर्विचिकित्सा २.६२६ ब, रागद्वेष (कषाय) २.३९ अ, सूतक ४.४४२ अ, हिंसा ४.५३३ ब।

जुगुप्सा कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४४, स्थिति ४.४६१, स्थितिसत्त्व ४.३०८, स्थिति-स्थान अल्पबहुत्व १.१६५ ब, अनुभाग १.९४ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३.१०९, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८९ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्व-स्थान ४.२९६, त्रिसंयोगी भंग १.४०१ ब। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

जुगुप्सा वेदनीय—३.३४४ ब।

जूं—२.३४४ अ, क्षेत्रप्रमाण २.२१५ अ।

जैतुगिदेव—२.३४४ अ। भोजवंश १.३१० अ।

जैन—२.३४४ अ, चन्द्रगुप्त १.३१० ब।

जैनतर्क—२.३४४ ब, इतिहास १.३४७ ब।

जैनतर्कवार्तिक—२.३४४ ब, इतिहास १.३४३ अ।

जैनदर्शन—२.३४४ ब, एकान्त १.४६५ अ।

जैनशतक—२.३४४ ब, इतिहास १.३४७ ब।

जैनश्रावक—ब्राह्मण ३.१९५ ब।

जैनसंगीति—अर्हद्बली १.१३८ ब।

जैनसंघ—इतिहास १.३१८ अ, कल्की २.३१ ब।

जैनाभासी संघ—१.३१९ अ, एकान्त १.४६५।

जैनाभिमत भूगोल—निर्देश ३.४३१ अ।

जैनेंद्र व्याकरण—इतिहास १.३४० ब।

जैबलि प्रवाहण—कुरुवंश १.३१० ब।

जैमिनी—२.३४५ अ, अज्ञान मिथ्यात्व १.३७ अ, अज्ञान-वादी १.३८ ब, एकान्त १.४६५ ब, परवाद ३.२३ अ, मीमांसक १.४६५ ब, ३.३११ अ, वेदान्त ३.५१५ ब।

जोंक—श्रोता १.४२५ ब, ४.७४ ब।

जोगपरिवत्तीए—२.९५ ब।

जोगाविभाग पडिच्छेदा—३.८८३ ब।

जोड़—२.३४५ अ।

जोणीपाहुड—इतिहास १.३४० अ।

जोधराज गोदी—२.३४५ अ, इतिहास १.३३४ अ, १.३४६ ब।

जोनशाह—२.३४५ अ।

ज्ञ—२.२५५ अ, जीव २.२३३ अ।

ज्ञप्तिक्रिया—अध्यवसान १.५२ ब, कर्ता-कर्म २.१८ ब, चेतना २.२९९ अ।

ज्ञप्ति-परिवर्तन—कर्म २.२९ अ।

ज्ञात—२.२५५।

ज्ञाता—अकर्ता २.२९९ अ।

ज्ञातृकथांग—२.२५५ अ।

ज्ञातृतत्त्व—३.३३६ ब।

ज्ञातृधर्मकथा—४.६८ अ।

ज्ञान—२.२५५ अ, अधिगमज १.५१ ब, अनुभव १.८१-८६, अभ्यास १.१३१ ब, आगमज्ञान १.२२८ अ, आत्मा ३.३३७ अ, उपयोग १.४२९ ब—१.४३१ ब, उपलब्धि १.४३५ अ, कषाय १.४३२ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, क्रिया २.९८ अ, क्रिया नय ३.५४० अ, गति-अगति २.३२२ अ, चारित्र २.२८६ अ-ब, तप २.३६० ब, दर्शन २.४०९ ब, धर्म २.४६९ ब, ध्यान २.४९५ ब, २.४९६ ब, ध्येय २.५०० अ, निश्चय व्यवहार २.२७० ब, निसर्गज १.५१ ब, प्रज्ञा १.८७ अ, प्रज्ञाश्रमण १.४५० ब, प्रत्याख्यान ३.१३२ ब, प्रमाण २.२५८ ब, २.५२६ अ, ३.१४१ ब, बुद्धि ३.१८४ ब, मिथ्या (अज्ञान) १.३७ अ, मिथ्यात्व २.२६४ ब, मिश्रज्ञान ३.३०८ अ, मोक्षमार्ग ३.३२८ अ-ब, ३.३३३ ब, ३.३३७ अ, ३.३३८ ब, योग १.४३२ ब, राग ३.३९५ अ, विशुद्धि ३.५७० अ, शुद्धाशुद्ध उपयोग १.४३२ अ, १.४३४, श्रुतकेवली ४.५५ ब, श्रुतज्ञान १.२२९ ब, ४.५९ ब, सम्यग्ज्ञान २.२६२ अ, २.२६५ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५३ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७५ ब, ४.३७६ ब। सविकल्प ३.५३७ ब, सविशेष १.२१९ अ, साकार १.२१९ अ, सिद्धों का अल्पबहुत्व १.१५४, सुख ४.४३२ अ, स्वसंवेदन १.८१-८७ अ।

ज्ञान (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०५, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १.३९३, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८३, ४.२८६, सत्त्वस्थान ४.३००, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०७। सत् ४.२३३, संख्या ४.१०५, भागाभाग ४.११३, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २.११३, अन्तर १.१५, भाव ३.२२१, अल्प-बहुत्व १.१५०। पंचशरीरस्वामित्व—निर्देश ४.७, अल्पबहुत्व १.१५९। षट्कर्म-स्वामित्व ४.२६९।

ज्ञानकल्याणक—कल्याणक २.३२ ब।
ज्ञानकल्याणक वन्दना—कृतिकर्म २ १३९ अ।
ज्ञानकीर्ति—इतिहास १ ३३४ अ, १.३४७ ब।
ज्ञानक्रिया—कर्ता-कर्म २.१८ ब, चेतना २ २९८ अ।
ज्ञानज्ञेय नय—अद्वैतवाद १.४७ ब।
ज्ञानचन्द्र—२ २७० अ, इतिहास १ ३३४ अ।
ज्ञानचक्षु—इन्द्रिय १ ३०६ ब।
ज्ञानचेतना—अनुभव १ ८२ अ, उपलब्धि १ ४३५ अ, चेतना २.२९७-२९८, सम्यग्दर्शन ४.३५३ ब, ४ ३६१ ब, ४ ३७६ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३७७ ब।
ज्ञानदर्शनचारित्र (एकत्व)—चारित्र २ २८३ ब।
ज्ञानदान—उपदेश १.४२५ ब, दान ४.४२३ अ-ब।
ज्ञानदीपक—२ २७० अ।
ज्ञानदीपिका—२.२७० अ, आशाधर १.२८१ अ, इतिहास १.३४४ अ।
ज्ञाननंदि—नदिसंघ १ ३२३ ब।
ज्ञाननय—२ ५१४ ब, २.५२० ब, २.५२३ ब, २ ५२६ ब, २ ५४३ अ, चेतना (क्रिया नय) २ २९९ ब।
ज्ञानपंचमी—२.२७० अ।
ज्ञानपंडित—३.२८१ अ।
ज्ञानपच्चीसी व्रत—२.२७० अ।
ज्ञानपर्याय—३.३३६ ब।
ज्ञानप्रवाद—२ २७० अ, श्रुतज्ञान ४.६८ ब।
ज्ञानबाल—३.२८१ अ।
ज्ञानभूषण—२ २७० अ, नन्दिसंघ १.३२४ अ, भट्टारक १.३२४ अ, इतिहास १ ३३३ अ, १ ३३३ ब, १.३४६ अ, १ ३४७ अ।
ज्ञानमती—२.२७० अ, तीर्थंकर २.३७७।
ज्ञानमद—३ २५९ ब।
ज्ञानमार्गणा—(दे० ज्ञानप्ररूपणा)।
ज्ञानमीमांसा—दर्शन (सम्प्रदाय) २ ४०२ ब, २.४०३ अ।
ज्ञानमूढ (साधु)—निन्दा २.५८९ अ।
ज्ञानयोग—२.२९८ अ।
ज्ञानविनय—विनय ३.५४८ ब, ३.५५० ब।
ज्ञानवृद्ध—विनय ३.५५२ ब, सगति ४.११९ अ।
ज्ञानशक्ति—२.२७० अ।
ज्ञानशल्य—४ २६ ब।
ज्ञानशुद्धि—४.४० ब।
ज्ञानसंस्कार—४ १४९।
ज्ञानसमय—निश्चयज्ञान २.२६९ अ, समय ४ ३२८ अ।
ज्ञानसागर—२ २७० ब, इतिहास १ ३३४ अ।
ज्ञानसार—२ २७० ब, इतिहास १ ३४२ ब, १ ३४३ ब।
ज्ञानसूर्योदय नाटक—इतिहास १ ३४७ अ।
ज्ञानाकार—अनेकान्त १.१०९ ब, आत्मा (मोक्षमार्ग) ३.३३६ अ, केवलज्ञान २ १५३ ब।
ज्ञानाचरण—मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ ब।
ज्ञानाचार—आचार १.२४० अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ ब, विनय ३ ५५० ब।
ज्ञानातिशय—अर्हन्त १ १३७ ब।
ज्ञानाराधना—आराधना—१ २७१ ब।
ज्ञानार्णव—२ २७० ब, इतिहास १ ३४३ अ, टीका १ ३४६ ब, वचनिका १ ३४८ अ।
ज्ञानावरण—२.२७० ब, २ २७२ अ, मोहनीय ३.३४२ अ, वर्गणा ३.५१७ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २.२७० ब, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ९४, ब, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १६६ अ, प्रदेश ३ १३६ ब। बन्ध ३ ९३, ३.९७, बन्धस्थान ३.१०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान २.३८७ ब, उदय के निमित्त १.३६७ ब, आबाधा १ २४९ अ, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसयोगी भग १.३९९। संक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८ ब।
ज्ञानी—२.२७३ अ, आत्मानुभव १.८४ ब, कर्म (अकिंचित्कर) २.६८ अ, कर्मोदय ३ ५६० ब, चेतना (अकर्ता) २.२९८ ब, २ २९९ अ, जीव (नाम-विवक्षा) २ ३३३ अ, तप २.३६० ब, तीर्थंकर २.२७३ अ, निर्जरा २.६२३ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३७ अ, विभाव ३.५६० ब, सम्यग्ज्ञान २.२६५ अ, सम्यग्दृष्टि ४ ३७५ ब, ४ ३७६ अ-ब, हिंसा ४.५३५ अ।
ज्ञानेश्वर—२.२७३ अ, तीर्थंकर २.३७७।
ज्ञानोद्योतन—१.४१४ अ।
ज्ञानोपकरण—१.१२२ ब, समिति ४.३४१ अ।
ज्ञानोपयोग—(दे० ज्ञान), अल्पबहुत्व १.१६०।
ज्ञायक—२.२७३ अ।
ज्ञायक नोआगम द्रव्य—अन्तर १.३ ब।
ज्ञायक शरीर—निक्षेप ६ ५९९ अ-ब, २.६०० ब।
ज्ञायक-शरीर-आगम—उपशम १.४३७ अ।
ज्ञायक-शरीर-नोआगम—अनन्त १.५५ ब।

ज्ञायक शरीर भूत-भावी—उपशम १ ४३७ अ।
ज्ञेय—२ २७३ अ।
ज्ञेय-ज्ञायक-सबंध—४ १२६ अ।
ज्ञेय तत्त्व—मोक्षमार्ग ३ ३३६ ब।
ज्ञेयाकार—अनेकान्त १ १०९ ब, केवलज्ञान २ १५३ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
ज्ञेयाकार परिणमन—केवलज्ञान २ १५३ ब।
ज्ञेयार्थ (परिणमन)—२ २७३ अ, परिणाम ३ ३० अ।
ज्यामिति—२ ३४५ अ।
ज्येष्ठ—२.३४५ अ, किन्नरदेव २ १२४ ब।
ज्येष्ठ-जिनवर व्रत—२ ३४५ अ।
ज्येष्ठ-स्थितिकल्प—२ ३४५ अ।
ज्येष्ठा—२ ३४५ अ, नक्षत्र २ ५०४ ब, तीर्थंकर २ ३८१।
ज्योति—३ ३४५ अ।
ज्योतिरस—३ ३९१ अ।
ज्योतिर्ज्ञान विधि—इतिहास १.३४२ अ।
ज्योतिषकरड—२ ३४५ ब, इतिहास १ ३४१ अ।
ज्योतिषचारण ऋद्धि—१ ४४७, १.४५३ अ।
ज्योतिष देव—२ ४४५ ब, निर्देश २ ३४५ ब, शक्ति आदि २ ३४५ ब, अवस्थान २ ३४६ ब। अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६६। इन्द्र—निर्देश २ ३४५ ब, देवी २ ३४६ अ, विमान २ ३५१ ब। आयुबन्ध के योग्य परिणाम १.२५७ अ, १ २५८ अ, काल २ ८७ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ ब, लेश्या ३.४२५ ब।
ज्योतिष देव—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.१८७, सख्या ४ ९७, क्षेत्र २.१८९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १ १०, भाव २ २३१ अ, अल्पबहुत्व १.१४५।
ज्योतिषलोक—२ ३४६ अ।
ज्योतिष-विद्या—२ ३५१ ब।
ज्योतिष्माण—ग्रह २.२७४ अ।
ज्वलन—यदुवंश १ ३३७।
ज्वाला—तीर्थंकर प्ररूपणा २.३९२।
ज्वालामालिनी—विद्या ३ ५४४ अ, शीतलनाथ की यक्षिणी २ ३७९।
ज्वालामालिनी कल्प—२ ३५१ ब, इतिहास १.३४२ ब।
ज्वालिनीकल्प—२.३५१ ब, इतिहास १ ३४३ ब।

झ

झंझावात—२ ३५२ अ, वायु ३ ५३४ ब।
झरन उदय १ ३६६ ब।
झल्लरी (मृदग)—नरकलोक की जन्मभूमि का आकार २ ५७७ अ, वैराग्य (लोक का आकार) ३ ६०७ ब।
झष—२ ३५२ अ। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३।
झषक—नरक पटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।
झषका—नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।
झांझ—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ।
झारी—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी द्वारा अवधृत ३ ४६६ ब, अकन ३ ४६८-४६९।
झालर—नरकलोक की जन्मभूमि का आकार २ ५७७ अ।
झावदशमी व्रत—२ ३५२ अ।
झूठ—श्रावक ४ ५० ब।

ट-ण

टंक—२ ३५२ अ, वेदान्त ३ ५९५ ब।
टंकण—२ ३५२ अ।
टंकणद्वीप—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
टंकोत्कीर्ण—२ ३५२ अ, केवलज्ञान २.१४६ ब।
टडाणा गीत—इतिहास १ ३४७ अ।
टिप्पणी—२ ३५२ अ।
टीका—२ ३५२ अ।
टोडरमल—२ ३५२ अ। इतिहास १.३३४ ब, १.३४८ अ।
ठकाप्पा (कवि)—इतिहास १.३३४ ब।
डड्ढा—२ ३५२ अ।

डांस—श्रोता ४.७४ ब।
डामर—पार्श्वनाथ २ ३७८।
ड्योढ गुणहानि—गणित २ २३१ ब, उदय १ ३७१ अ।
ढड्ढा—इतिहास १.३३१ अ, १ ३४३ अ।
ढूंढियापंथ—निन्दा २.५८८ ब, श्वेताम्बर ४ ८० ब।
णमोकार मंत्र २ ३५२ ब, मंत्र ३.२४७ अ।
णमोकार यंत्र—३.३५३।
णायकुमारचरिउ—इतिहास १ ३४२ ब।
णिक्खोदिम—निक्षेप २ ६०२ ब।
णेमिणाहचरिउ—इतिहास १ ३४४ ब, १ ३४५ अ-ब।

त

तंदुल—सिक्थ ४ १२८ अ।
ततुचारण ऋद्धि—१ ४४७, १.४५२ ब।
तंत्र—मन्त्र ३.२४५ अ।
तंत्ररत्न—मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ।
तंत्रवार्तिक—मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ।
तंत्रवार्तिक टीका—मीमांसा दर्शन ३.३११ अ।
तंत्रसिद्धांत—२ ३५२ ब।
तक्षशिला—२ ३५२ ब।
तट—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
तटछेदना—२ ३०६ ब, २ ३०७ अ।
तडित्प्रभ—देवकुरु का ह्रद—निर्देश ३ ४५६ ब, नाम-निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४९०, ३.४९१, अकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने।
तडिद—चन्द्रप्रभ, मल्लिनाथ २.३८२।
तंडुल—सिक्थ ४ १२८ अ।
ततक—२.३५२ ब।
तत्—२ ३५२ ब, उपचार १.४२० ब, शब्द ४ ३ अ, सापेक्ष धर्म १.१०९ अ, १.१११ अ-ब, ४ ३२३ ब।
तत्त्व—२ ३५२ ब, अतीत नय पक्ष २ ५१८ अ, अवक्तव्य १.२२८ ब, अश्रद्धान (मिथ्यादृष्टि) ३ ३०० अ, नय पक्षातीत २.५१८ अ, परमभाव ३.१३ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०२ ब, श्रद्धान (सम्यग्दर्शन) ४.३५६ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ, समयसार ४.३२९ अ।
तत्त्व—नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।
तत्त्वकर्तृत्व—३ ३०५ ब।
तत्त्वज्ञानतरंगिनी—२ ३५६ अ, इतिहास १.३४६ अ।
तत्त्वज्ञानी २ २७३ अ।
तत्त्वचिंतन—शुभोपयोग १ ४३४ ब।
तत्त्वत्रयप्रकाशिका—२ ३५६ अ, इतिहास १ ३४६ ब।
तत्त्वदीपिका—२ ३५६ अ, इतिहास १ ३४३ ब।
तत्त्वनिर्णय—२ ३५६ अ. इतिहास १ ३४६ ब।
तत्त्वप्रकाशिका—२ ३५६ अ, इतिहास १ ३४१ अ।
तत्त्वप्रदीपिका २ ३५६ अ, अमृतचन्द्र १ १३३ अ, इतिहास १ ३४२।
तत्त्ववती धारणा—२ ३५६ अ, पिण्डस्थ-ध्यान ३ ५८ अ।
तत्त्वविचार—मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ अ।
तत्त्ववैशारदी—३ ३८४ अ।
तत्त्वशक्ति—२ ३५६ ब।
तत्त्वश्रद्धान—अनुभव १.८२ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०२ ब, ३ ३०५ अ, सम्यग्दर्शन ३ ३३९ ब, ४.३५४ अ, ४ ३५६ अ-ब, ४ ३५७ ब, साधु ४.४०६ ब।
तत्त्वसंतति—१ ८२ ब।
तत्त्वसमास—४.३९८ ब।
तत्त्वसमीक्षा—३ ५९५ ब।
तत्त्वसार—२ ३५६ ब, इतिहास १ ३४२ ब।
तत्त्वातीत—१ ८२ ब।
तत्त्वानुशासन—२ ३५६ ब, इतिहास १.३४० ब, १ ३४३ ब।
तत्त्वार्थ—२.३५३ ब।
तत्त्वार्थबोध—२.३५६ ब, इतिहास १.३४८ अ।
तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—इतिहास १.३४६ अ।
तत्त्वार्थराजवार्तिक—अकलंक १.३१ अ।
तत्त्वार्थवृत्ति—इतिहास १ ३४२ ब, १ ३४६ ब।
तत्त्वार्थश्रद्धान—अनुभाव १ ८२ ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०२ ब, ३ ३०५ अ, सम्यग्दर्शन ४.३४९ ब, ४.३५४ अ, ४ ३५६ अ-ब, ४ ३५७ ब, साधु ४.४०६ ब।
तत्त्वार्थसार—२.३५६ ब; अमृतचन्द्र १ १३३ अ, इतिहास १ ३४२ अ।
तत्त्वार्थसार दीपक—२.३५६ ब, इतिहास १ ३४५ ब।
तत्त्वार्थसूत्र—२ ३५६ ब, इतिहास १ ३४० ब।
तत्त्वार्थसूत्र लघु—इतिहास १.३४१ ब।
तत्त्वार्थसूत्रटीका—अभयनन्दि १ १२७ अ, इतिहास १ ३३३ ब।

तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—इतिहास १.३३२ ब, १.३४४ अ, १.३४५ अ।
तत्त्वार्थसूत्र वृत्तिपद—इतिहास १.३४२ ब।
तत्त्वार्थाधिगम भाष्य—इतिहास १.३४० ब, टीका १.३२९ ब।
तत्त्वोपलब्धि—आत्मानुभव १ ८२ ब।
तत्परिणत-नोआगमभाव मंगल—२ ६०६ अ।
तत्प्रतियोगी—प्रत्यभिज्ञान ३.१२५ अ।
तत्प्रदोष—२ ३५७ अ।
तत्प्रमाण—प्रमाण ३ १४४ ब।
तत्सेवी—आलोचना १.२७८ अ।
तथाकार—समाचार ४ ३३६ ब।
तथाविधत्व—२ ३५७ अ।
तदभाव—१.१२८ ब।
तदाहृतादान—२.३५७ अ, अस्तेय १.२१३ ब।
तदिंद्रियालोचन—ब्रह्मचर्य ३.१८९ अ।
तदुभय उपक्रम—१ ४१६ ब।
तदुभय प्रत्ययिक अजीवबध—३ १७२ अ।
तदुभय प्रत्ययिक जीवबंध—३.१७२ अ।
तदुभय प्रतिक्रमण—३.११६ ब।
तदुभय प्रायश्चित्त—३.११७ अ, ३.१६० ब।
तदुभय वक्तव्यता—३.४९६ अ।
तदुभयसारी ऋद्धि—१.४४८, १.४४९ ब।
तदुभयाधिकरण—१.४९ अ।
तद्भव मरण—३ २८० अ।
तद्भवस्थ केवली—२.१५७ अ।
तद्भाव—सामान्य ४ ४१२ ब।
तद्भाव तदुपचार—१.४२० ब।
तद्विलक्षण—प्रत्यभिज्ञान ३ १२४ ब।
तद्व्यतिरिक्त आगम उपशम १ ४३७ अ।
तद्व्यतिरिक्त नोआगम—अनन्त १ ५५ ब, विक्षेप २.५९९ ब।
तद्व्यतिरिक्त नोआगम द्रव्य—अन्तर १.३ ब, कषाय २ ३५ ब, काल २.८१ ब, दोष २.४६३ अ, निक्षेप २.६०० ब, बन्धक ३ १७९ अ, संयम ३.४१४ ब, सल्लेखना ३ ७६ अ।
तनक—२ ३५७ अ। नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८; अवधिज्ञान १.१९८; आयु १.२६३।
तनुवात—३ ५३२ अ, ३.४४० अ, अकन ३.४३९।
तन्तुचारण ऋद्धि—१.४४७; १.४५२ ब।
तप—२.३५७ अ अनशन १.६५ अ, कुलकर ४.२५ अ, क्षुल्लक २ २८९ अ, चारित्र २.२८६ अ, ध्याता २.४९३ अ, निर्जरा २ ६२३ अ, प्रायश्चित्त ३ १६१ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ ब, शुभोपयोग १ ४३३ अ, संवर २ ३६२ अ, सम्यक्त्व २ ३६० ब।
तप-उद्योतन—१ ४१४ अ।
तपऋद्धि—१.४४७, १ ४५३ ब।
तप कर्म—निर्देश २.२६ अ-ब; सत् ४ २६९ अ, संख्या ४.११६ ब, क्षेत्र २.२०८, भाव ३ २२३।
तपकल्याणक—२ ३२ अ, आहारक शरीर १ २९६ ब। कृतिकर्म २ १३९ अ।
तपकल्याणक वन्दना—कृतिकर्म २ १३९ अ।
तपगुरु—नमस्कार २ ५०५ ब।
तपन—२ ३६४ अ, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ। नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३.४४१, नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३।
तपन (कूट)—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६८। विद्युत्प्रभ गजदन्त का कूट—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अकम ३ ४४४, ३ ४५७।
तपनतापि—२ ३६४ अ, आकाशोपपन्न देव २ ४४५ ब।
तपनीय—२ ३६४ अ, सौधर्म स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४ ५१९ ब। देव-आयु १ २६६।
तपनीय (कूट)—मानुषोत्तर पर्वत का—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३ ४८६ अकन ३.४६४।
तपनीयमयी—सुमेरु की परिधि ३ ४४९ ब।
तपप्रायश्चित—२.३६४ अ।
तपभावना—३ २२४ ब।
तपमद—३.२५९ ब।
तपविद्या—३ ५४४ अ।
तपविनय—३ ५४८ ब।
तपशुद्धि—४ ४० ब।
तपस्वी—२ ३६४ अ।
तपागच्छ—श्वेताम्बर ४ ७७ ब।
तपश्चरण—मिथ्यादृष्टि ३.३०३ ब।
तपाचार—१ २४० ब।
तपाराधना—१.२७१ ब।
तप्ति—२ ३६४ अ, नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब,

विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८. अवधिज्ञान १ १९५, आयु १ २६३।

तपोद्योत—१ ४१४ अ।

तपोनिधिव्रत—२.३६४ अ।

तपोवृद्ध—सगति ४.११९ अ।

तपोशुद्धिव्रत—२.३६४ ब।

तप्त—२.३६४ ब, नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३.४३९, ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८; अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३। वैदिकाभिमत नरक ३ ४३३।

तप्त-ऋद्धि—१ ४४७; १ ४५४ ब।

तप्तजला—२ ३६४ ब, विभंगा नदी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४८९, ३ ४९०, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने।

तम प्रभा—२ ३६४ ब। नरक पृथिवी—निर्देश २.५७६ अ, विस्तार २.५७६, २ ५७८, अकन ३ ४४१, पटलो के नाम २ ५८० अ, नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३। वैदिकाभिमत नरक 'तमस' ३ ४३३।

तमःप्रभा (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब; उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४.१७० सख्या ४ ९५, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४.४७९, काल २ १०१, अन्तर १ ८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

तम—२ ३६४ ब। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८; अकन ३.४४१। वैदिकाभिमत नरक ३ ४३३।

तमक—२.३६४ ब। नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।

तमका—२ ३६५ अ। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १.२६३।

तमकी—नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।

तमसा—२ ३६५ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

तमालपत्र—कर्मसंयोग २.७१ ब।

तमिल वेद—२.३६५ ब।

तमिस्र—२ ३६५ अ। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१।

तमिस्रा—२ ३६५ अ, चक्रवर्ती द्वारा गुफा का भंग ४.१५ ब।

तमो—२ ३६५ अ। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।

तमोरदशमी व्रत—२.३६५ अ।

तरक—नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।

तरुण—वृद्ध ३.५८१ अ।

तरुणसंसर्ग—संगति ४ ११८ ब।

तरेप्पन—श्रावक की क्रियाये ४ ५१ ब।

तरेप्पन क्रिया व्रत—२ ४०१ अ।

तरेसठ—शलाकापुरुष ४.९ ब।

तरेसठ शलाकापुरुष चरित्र—२ ४०१ अ।

तर्क—२.३६५ अ, अनुभव (प्रामाण्य) १ ८२ ब, अविनाभाव १ २०२ ब, आगम (प्रामाण्य) १ २३६ अ, ऊहा १ ४४५ ब, न्याय २ ६३३ अ-ब, पद्धति (अभिप्राय) ३ ९ ब, मतिज्ञान ३ २५४ ब, स्वभाव ४ ५०७ अ।

तर्ककौमुदी—३ ६०८ अ।

तर्कविरुद्ध—आगम (अप्रामाण्य) १ २३६ ब।

तर्कसंगति—आगम (प्रामाण्य) १ २३६ अ।

तर्कसग्रह—वैशेषिक दर्शन ३ ६०८ अ।

तर्कातीत—अनुभव १ ८१ ब, आगम १ २३७ ब।

तर्कामृत—वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ।

तर्जित—२ ३६५ ब। व्युत्सर्ग का द्वेष ३.६२३ अ।

तलवर—२.३६५ ब। सम्यग्दृष्टि (तस्कर) ४.३७८ ब।

तस्कर—सम्यग्दृष्टि ४ ३७८ ब।

तात्पर्यवृत्ति—२.३६५ ब, अभयनन्दि १ १२७ अ, इतिहास १.३४४ अ।

तादात्म्य संबंध—२.३६५ ब, समवाय ४.३३४ अ।

ताप—२.३६५ ब, सुख (तृष्णादु.ख) ४.४३० अ।

तापन—२.३६५ ब। नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८; अवधिज्ञान १.१९८ आयु १.२६३।

तापस—२.३६५ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ, विनयवादी एकान्ती १ ४६५ ब।

तापी—२.३६५ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।

तामस दान—२ ४२३ अ।

तामिल वेद—२ ३६५ ब।

ताम्रलिप्ति—२ ३६५ ब।

ताम्रा—२ ३६५ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

तार—२.३६५ ब। नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १.२६३।

तारक—२.२६६ अ, पिशाच व्यन्तर देव ३ ५८ ब, प्रतिनारायण ४ २० अ, वासुपूज्यनाथ २.३९१।

तारणस्वामी—इतिहास १ ३३३ अ।

तारा—चक्रवर्ती ४.११ ब, व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ३.६११ ब। नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १.२६३।

तारा (ज्योतिष देव)—देव—अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १.२६६। इन्द्र—निर्देश २ ३४६ ब, किरणे तथा शक्ति आदि २ ३४८। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२ सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।

तारा (ज्योतिषविमान)—२ ३६६ अ, निर्देश २ ३४६ ब, विस्तार २ ३५१ ब, आकार २.३४८, किरणें तथा वाहक देव २ ३४८ अ, अकन २.३४८, चित्र २.३४८। अवस्थान २ ३४७ ब, सख्या २.३४८ अ-ब, वीथियाँ २ ३४९ ब, चार क्षेत्र तथा गतिविधि २ ३४९-३५०, अंकन २.३४९। वैदिकाभिमत सप्त ऋषि व ध्रुव तारे ३.४३३।

तारादेवी—अकलक भट्ट १.३१ अ।

ताल—२.३६६ अ।

तालप्रलंब—२ ३६६ अ, अचेलकत्व १.३९ ब।

तालाब—स्वप्न ४ ५०५ अ।

तिगिंछ—२ ३६६ अ। निषधपर्वत का ह्रद—निर्देश ३ ४४६ ब, ३ ४६३ ब, विस्तार ३.४९०, ३ ४९१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६१।

तिलिणदा—२.३६६ अ, अतिचार १.४३ ब।

तिथि—चन्द्रमा २ ३५१ अ।

तिमिंगिल—संमूर्च्छिम ४ १२७ ब।

तिमिस्रगुहा (कूट)—विजयार्ध पर्वतों पर स्थिति—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४, वर्ण ३ ४७७।

तिमिस्र (गुफा)—२ ३६६ अ। विजयार्धपर्वत की गुफा—भरत ऐरावत में—निर्देश ३.४४८ अ, ३ ४५५ अ-ब, विस्तार ३ ४८२, अकन ३ ४४८। विदेह क्षेत्रो मे निर्देश ३.४६० अ, विस्तार ३ ४८२, अकन ३ ४६० अ। धातुक व पुष्करार्धद्वीपो मे—निर्देश ३ ४६२ ब, विस्तार ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४६४ के सामने।

तिमिस्र (नरक)—नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।

तिमिस्रका—नरकपटल-निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।

तिरस्कारिणी—२ ३६६ अ, विद्या ३ ५४४ अ।

तिरुतक्कतेवर—२.३६६ अ, इतिहास १.३२९ अ, १.३४१ ब।

तिरोधान—कर्मोदय २.७१ ब।

तिर्यंचगति (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०१, आयुबन्ध १.२६५ ब, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८१, उद्वेलना युक्त मे सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १७०, सख्या ४ ९५, क्षेत्र २ १९८, स्पर्शन ४ ७९, काल २.१०१, अन्तर १.८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

तिर्यंचगति नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १.३७६, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, उद्वेलना युक्त में सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९।

तिर्यंच (जीव)—२.३६७ अ, अवगाहना १.१७९, अवधिज्ञान १.१९४ ब, आयु १.२६३, आयुबध के योग्य

परिणाम १.२५५ अ, कषाय २.३८ ब, गति-अगति २ ३१९ अ, २ ३२२ अ, जीव २.३३३ ब, दु.ख २.४३५ अ, देवगति में जन्म २.३१९ अ, लेश्या ३ ४२९ अ, वैक्रियिक शरीर ३.६०३ अ।

तिर्यंच (पचेंद्रिय)—दे० पचेंद्रिय।

तिर्यंचलोक—२ ३७० अ।

तिर्यंचलोक सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३।

तिर्यंचायु कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, १.२५३, स्थिति ४ ४६२, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३७। बन्ध ३ ९७, १ १६५ ब, बन्धस्थान ३ १०८, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, उद्वेलनायुक्त मे सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६९।

तिर्यंचिनी—योनिमति तिर्यंच २ ३६७, ३ ३८८ अ, वेद ३.५८५ ब। प्ररूपणा—बध ३ १०१, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १७०, सख्या ४.९५, क्षेत्र २.१९८, स्पर्शन ४.४७९, काल २ १०१, अन्तर १ ८, भाव ३ २२०, अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

तिर्यक्—३ ९६ ब।

तिर्यक् आयत चतुरस्र—२.३७१ अ।

तिर्यक् गच्छ—२.३७१ अ, गणित २ २३२ अ।

तिर्यक् चतुष्टय—१ ३७४ ब।

तिर्यक् द्विक—१.३७४ ब।

तिर्यक् प्रचय—२ १७२ अ।

तिर्यक् प्रतर—२ ३७१ अ।

तिर्यक् लोक—२.३७० अ।

तिर्यक् लोकसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।

तिर्यक् सामान्य—अभेद १ १३१ अ, क्रम २ १७२ अ-ब, सामान्य ४ ४१२ अ।

तिर्यक् सूर्यतप—कायक्लेश २ ४७ अ।

तिर्यगा—निन्दनीय साधु २.५८९ अ।

तिर्यगेकादश—१ ३७४ ब।

तिर्यग्गति—(दे० ऊपर तिर्यंचगति तथा तिर्यंचगति नामकर्म)।

तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी—आनुपूर्वी १.२४७ अ, नामकर्म २.५८३ ब।

तिर्यग्त्रिक—.१३७४ ब।

तिर्यग्योनि—निन्दनीय साधु २.५८९ अ।

तिर्यग्वणिज्या—अनर्थदण्ड १.६३ ब।

तिल—२.३७१ अ, ग्रह २.२७४ अ।

तिलक—२ ३७१ अ, कुन्थुनाथ २.३८३, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

तिलका—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

तिलपुच्छ—२ ३७१ अ, ग्रह २ २७४ अ।

तिल्लोयपण्णत्ति—२ ३७१ अ, इतिहास १ ३४० ब।

तीन—२.३७१ अ, अग्नि १ ३५ अ, करण २.६ ब, काल २ १४९ ब, गुप्ति २ २४८ ब, नति २ १३३ ब, योग ३ ३७५ अ, रत्नत्रय ३ ३३५ ब, लिग ३ ४१६ ब, लोक ३ ४४० ब, ३ ५७ ब, वर्ग २ ४०० ब, विशुद्धि (सम्यग्दर्शन) ४ ३६३ अ, वेद ३ ५८३ ब, शुद्धि ४.३९ अ-ब। सहनानी—सिद्ध जीवराशि २ २१९ अ।

तीन-चौबीसी व्रत—२.३७१ अ।

तीन सौ तेतालीस—रज्जूघन की सहनानी २ २१९ ब।

तीर्णकर्ण—२ ३७१ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

तीर्थंकर—२ ३७१ ब, अग्नि १.३५ ब, अभिषेक ३ ४५० ब, अल्पबहुत्व १ १५३, अवधिज्ञान १ १९४ अ, आहारक ४ २७५ ब, उच्चगोत्र ३ ५२१ ब, चक्रवर्ती ४ १० अ, चारित्र २ २९१ अ, जन्मक्रिया (कृतिकर्म) २ १३८ ब, तप २ ३६१ ब, निगोद ३ ५०५ ब, पिटारे (सुधर्मा सभा) ४ ४४५ ब, भरत चक्रवर्ती २ २९१ अ, माता (स्वप्न) ४ ५०४ अ, मोक्ष ३ ३२८ ब, रत्नवृष्टि २.३२ ब, विदेह ४.३३१ ब, श्रेणिप्रवेश सख्या ४.९४ अ, सत्त्व ४.२७५ ब, स्त्री ३ ५९० अ।

तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, उच्चगोत्र ३ ५२१ ब, स्थिति ४ ४५९ अ, ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६, बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ १११, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १ ३९४ ब, उदयस्थान १.३९०, १.३९६, १ ३९७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भंग १ ४०४। अल्पबहुत्व १ १५३, १ १६८।

तीर्थंकर बेला व्रत—२ ३९३ अ।

तीर्थंकर भक्ति—इतिहास १ ३४० ब।

तीर्थंकर व्रत—२ ३९३ अ।

तीर्थ—२ ३९३ अ, महावीर १.२ ब, १ ७१ ब।

तीर्थकाल—मोक्ष ३ ३२७ अ।

तीर्थदर्शन—सम्यग्दर्शन ४ ३६४ ब।

तीर्थयात्रा—श्रावक ४ ५२ अ।

तीर्थविहार—उपकार १ ४१६ अ।

तीर्थव्युच्छेद—आगम १ २२९ ब।
तीर्थस्नान—शौच ४ ४३ अ, स्नान ४.४७१ ब।
तीव्र—२ ३९३ ब, कषाय २ ३६ अ, २ ३९ अ, परिणाम (उदीरणा) १.४१० अ, ३ ३२ अ।
तीसरी भूमिका—अमृतकुम्भ (चेतना) २ २८९ अ, चारित्र २ २८८ ब, चेतना २ २८९ अ, धर्म २ ४६८ ब।
तीसिय—२ ३९३ ब।
तुंगवरक—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
तुंबर—२ ३९३ ब, गन्धर्वदेव २.२११ अ, श्रेयासनाथ २ ३८३।
तुंबुरव—२ ३९३ ब, गन्धर्वदेव २ २११ अ, सुमतिनाथ का यक्ष २.३७९।
तुंबुलूर—२.३९३ ब।
तुंबूलाचार्य—इतिहास १.३४७ ब।
तुच्छाभाव—अनुभव १ ८२ अ।
तुषटीका—मीमासा दर्शन ३ ३११ अ।
तुरुष्क—२ ३९३ ब।
तुर्किस्तान—उत्तरकुरु १ ३५६ अ।
तुलसीदास—२ ३९३ ब।
तुला—२ ३९३ ब, तौल का प्रमाण २ २१५ अ।
तुलिंग—२ ३९३ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
तुल्य—२ ३९३ ब।
तुल्यबल-विरोध—विरोध ३ ५६५ अ।
तुषित—२.३९३ ब, लौकान्तिक ३.४९३ ब।
तूर्यांग—२.३९३ ब, कल्पवृक्ष ३.५७८ अ।
तूष्णीक—२ ३९३ ब, कारण ३ ५८ ब।
तृणफल—२ ३९४ अ।
तृणमय आसन—कृतिकर्म २.१३५ ब।
तृणसंस्तर—४ १५३ ब।
तृणस्पर्श—२ ३९४ अ, परिषह ३.३३ ब, ३ ३४ अ।
तृतीय गुण—गुणाश २ २४१ अ।
तृतीय भूमिका—अमृतकुम्भ २ २८९ अ, उपयोग १ ४३४ अ, चारित्र २.२८८ ब, चेतना २ २८९ अ, धर्म २.४६८ ब।
तृतीयमूल—गणित २.२२३ अ।
तृषा—क्षुधा २.१८७ ब, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ, पिपासा ३.५८ ब।
तृष्णा—ताप ४ ४३० अ, परिग्रह ३.२६ अ, ३ २९ ब, राग ३ ३९५ अ-ब, ३ ३९८ अ, शरीर ४.८ अ, सुख (ताप) ४.४३० अ।
तृष्णा-वशीकरण—राग ३.३९८ अ।
तेदु—श्रेयासनाथ २ ३८३।
तेईस—वर्गणा ३ ५१३ अ।
तेईस वर्गणा—निर्देश ३ ५१३ अ, अल्पबहुत्व १ १५५।
तेईस सिंह—स्वप्न ४ ५०५ अ।
तेज—२ ३९४ अ, जीव २ ३३३ ब, तैजस २ ३९४ ब। लोक मे अवस्थान २ ४५ ब, २ ४६ अ, वनस्पति ३ ५०५ ब, वैक्रियिक ३ ६०२ ब।
तेजकायिक—अग्नि १ ३५, १ ३६ ब, अवगाहना १ १७९, आयु १ २६४, काय २ ४४, जीवसमास २ ३४३, वनस्पति ३ ५०५ ब, वैक्रियिक शरीर ३ ६०२ ब स्थावर ४ ४५३। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्ध-स्थान ३ ११३, उदय १ ३७९, उदय की विशेषता १ ३७३ ब, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ २०३, सख्या ४ १०१, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८३, काल २.१०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।
तेजपाल (कवि)—इतिहास १ ३३३ अ, १ ३४६ अ।
तेजसेन—यदुवश १ ३३७।
तेजस्वी—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ।
तेजांग—कल्पवृक्ष ३ ५७८ अ।
तेजोजराशि—ओज १ ४६९ ब, गणधर २ २१३ अ।
तेतीस—त्रायस्त्रिंश देव २ ३९९ ब, सागर (आयु) १ २६३, १ २६९।
तेरह—क्रिया (साधु) ४ ४०४ ब, चारित्र के अग २ २८२ अ। ससारी जीवराशि की सहनानो २.२१९ अ।
तेरहपथ श्वेताम्बर ४ ८० ब।
तेला व्रत—२.३९४ अ।
तैजस-द्रव्य-वर्गणा—३ ५१३ अ, ३ ५१५ ब, ३ ५१६ अ।
तैजस-शरीर—२ ३९४ अ, प्रदेशो का अल्पबहुत्व १ २५७।
तैजस-शरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९७, प्रदेश ३ १३६, प्रदेशो का अल्पबहुत्व १ १६३। बन्ध ३.९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४। सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१४८, १ १६८।
तैजस-शरीर-बंध—औदारिक तैजस, वैक्रियिक तैजस, आहारक तैजस, तैजस तैजस, तैजस कार्मण ३ १७० ब।

तैजस समुद्घात—२ ३९५ ब, ४.३४३, क्षेत्र २ १९७-२०७, परिहारविशुद्धि ३ ३७ अ, सत्त्व ४ ३४३, स्पर्शन ४ ४७७-४९४।

तैतिल—२ ३९६ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

तैरश्चिक—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

तैलमर्दन—अपवाद मार्ग १ १२१ ब।

तैला—२ ३९६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

तैलिपदेव—२ ३९६ ब।

तोता—शुक्रेन्द्र का यान ४ ५११ ब, श्रोता ४ ४५२ ब।

तोयधरा—२ ३९६ ब, सुमेरु के वनो की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७३ ब, अकन ३ ४५१।

तोय—राक्षसवश १ ३३८ अ।

तोरण—२ ३९६ ब।

तोरणद्वार—समवसरण ४ ३३० ब।

तोरणाचार्य—२ ३९६ ब।

तोरमाण—२ ३९६ ब, हूनवश १ ३११ ब, १ ३१५ अ।

तोलामुलितेवर—इतिहास १ ३२९ अ।

तौल—द्रव्यप्रमाण २ २१५ अ।

त्यक्त—आहार का दोष १ २९२ अ।

त्यक्तज्ञायक शरीर—२ ५९९ अ, उपशम १ ४३७ अ।

त्यक्तदोष—आहार १ २९२ अ।

त्यक्तशरीर २ ६०० अ।

त्यक्तावास—अस्तेय १ २१४ अ।

त्याग—२ ३९६ ब, अतीत-त्याग ३.३०५ ब, अपवाद मार्ग (एकदेश-त्याग) १ १२० ब, उत्सर्ग मार्ग (पूर्ण त्याग) १ १२० ब, आहारान्तराय १ २८-२९, चारित्र २ ३८३ अ, दान २ ४२२ ब, परिग्रह-परिमाण ३ ६२८ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, वासुपूज्यनाथ आदि तीर्थंकर २ ३८९। व्युत्सर्ग ३ ६२४ ब।

त्यागधर्म—२ ३९७ अ, व्युत्सर्ग तप ३.६२४ अ, शौच ४ ४३ अ।

त्रयात्मक द्रव्य—उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य १.३६१ ब।

त्रयोदश चारित्र के अग २ २८२ अ, साधु की क्रियाएँ ४ ४०४ ब। ससारी जीवराशि की सहनानी २ २१९ अ।

त्रयोविंशति वर्गणा ३ ५१३ अ।

त्रसकाय—२ ३९८ अ, अवगाहना १ १७९, काय २ ४४, जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २.३४३, प्राण ३.१५३ अ, स्थावर (अग्निवायु) ४.४५४ ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ २१०, सख्या ४ ९९, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८४, काल २ १०६, अन्तर १ १२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

त्रसचतुष्क—१ ३७४ ब।

त्रसत्व—स्थावर ४ ४५४ ब।

त्रसदशक—१ ३७४ ब।

त्रसनामकर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६६, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२ ब, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३ त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८।

त्रसनाडी—२ ३९९ ब।

त्रसरेणु (त्रटरेणु)—२ ३९१ ब, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ अ।

त्रसलोक—२ ३९९ अ।

त्रसित—२ ३९९ ब। नरकपटल—निर्देश २ ५७८ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १.२६३।

त्रस्त २ ३९९ ब, ग्रह २ २७४ अ। नरकपटल—निर्देश २ ५७८ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।

त्रायस्त्रिंश—२ ३९९ ब, भवनवासी—भावन लोक मे ३.२०९ अ, जम्बू शाल्मली-वृक्ष स्थल ३ ४५८, ३.४५९, पद्म आदि ह्रदो मे ३ ४५३-४५४, श्री आदि देवियो के परिवार मे ३ ६१२ अ, आयु १ २६५, वैमानिक—स्वर्गों मे ४.५१२, सुमेरु पर्वत की पुष्करिणियो मे ३ ४५०-४५१, आयु १ २६९। इनकी देवियाँ ४ ५१२, आयु १ २७०।

त्रायस्त्रिंश—बौद्धाभिमत स्वर्ग ३.४३५।

त्रि—२ ३७१ अ, अग्नि १.३५ अ, वरण २ ६ ब, काल २ १४८ ब, गुप्ति २ २४८ ब, नति २ १३३ ब, योग ३ ३७५ ब, रत्नमय ३.३३३ अ, लिग ३.४१६ ब, लोक ३ ४४० ब, ३ ५७ ब, कर्म २ ४०० ब, विशुद्धि (सम्यग्दर्शन) ४ ३६३ अ, वेद ३.५८३ ब, शुद्धि ४.३९ अ-ब। सहनानी—सिद्ध जीवराशि २ २१९ अ, अपर्याप्त जीवराशि २ २१९ अ।

त्रिकच्छेद—२.४०० अ, गणित २ २२५ अ।

त्रिकरण—२ ४०० अ, २.६ ब, दर्शनमोहक्षपण २.१७९ अ।
त्रिकलिंग—२ ४०० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
त्रिकाल—२ ४०० अ।
त्रिकालज्ञता—२ ४०० अ, अवधिज्ञान १ १९७, केवलज्ञान २ १४८ ब, २ १४९ ब, २ १५१ ब, मनःपर्ययज्ञान ३ २६३ अ, श्रुतज्ञान ४.६० ब।
त्रिकाल वंदना—३ ४९५ अ।
त्रिकाल सामायिक—४ ४१७ ब।
त्रिकाली पर्याय—२.४५४ अ, २ ४५५ अ।
त्रिकूट—मनुष्यलोक ३ २७५ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ। विदेह वक्षार—निर्देश ३ ४६० अ, नाम-निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने। पर्वत का कूट तथा देव ३ ४७२ ब।
त्रिकृति—२ ४०० अ, कर्म २ २६ अ, कृतिकर्म २ १३३ ब, वंदना ३ ४९५ अ।
त्रिकोणरचना—उदय १ ३६९, १ ३७१ अ, स्थिति ४ ४५८ अ।
त्रिखंड—२ ४०० अ।
त्रिखंडाधिपति—३ ४०० ब।
त्रिगर्त—२.४०० अ। मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
त्रिगुणसार व्रत—२.४०० अ।
त्रिगुप्ति—अनन्तनाथ २ ३७८, गुप्ति २ २४८ अ।
त्रिगुप्तिगुप्त—२.२४८ अ।
त्रिचारित्रसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३।
त्रिचूड विद्याधरवंश १.३३९ अ।
त्रिजट—राक्षसवंश १.३३८ अ।
त्रिज्ञानसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४।
त्रिज्या—२ ४०० अ।
त्रिदशंजय—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ।
त्रिधाकरण—मिथ्यात्व १ ४३८ ब।
त्रिपंचाशत—श्रावक की त्रेपन क्रियाएँ ४ ५१ ब।
त्रिपर्वा—२ ४०० अ। विद्या ३ ५४४ अ।
त्रिपातिनी—२.४०० अ, विद्या ३.५४४ अ।
त्रिपुर—२ ४०० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
त्रिपृष्ठ—२.४०० अ, नारायण ४.१८ अ, शलाकापुरुष ४ २६ अ, श्रेयांसनाथ २ ३९१।
त्रिप्रदक्षिणा—कर्म २.२६ अ।
त्रिबार सामायिक—४ ४१८ अ।
त्रिभंगीसार—२.४०० अ, इतिहास १.३४५ अ।
त्रिभुवनकीर्ति—काष्ठासंघ १.३२७ अ, नंदिसंघ १.३२४ अ।
त्रिभुवनचंद्र—काष्ठासंघ १ ३२७ अ।
त्रिभुवनचूडामणि—२ ४०० अ, देवकुरु व उत्तरकुरु के चैत्यालय—निर्देश ३ ४५८ अ, अकन ३ ४५७।
त्रिभुवनस्वयंभू—इतिहास १ ३३० अ।
त्रिमुख—२ ४०० अ, संभवनाथ का यक्ष २ ३७९।
त्रिलक्षण कदर्थन—२ ४०० अ। इतिहास १ ३४१ अ।
त्रिलक्षणत्व—उत्पादादि १ ३६१ ब, परिणाम ३.३२ ब, सापेक्षधर्म १ १०९ अ।
त्रिलोक—ओम् १.४७० अ, लोक ३ ४४० ब।
त्रिलोकगुरु—गुरु २.२५१ ब।
त्रिलोकतीज व्रत—२.४०० ब।
त्रिलोकबिंदुसार—२ ४०० ब।
त्रिलोकमंडन—२.४०० ब।
त्रिलोकव्याप्त—केवलीसमुद्घात २ १६६ ब।
त्रिलोकसार—२.४०० ब, इतिहास १ ३४२ ब।
त्रिलोकसार टीका—इतिहास १ ३४२ अ।
त्रिलोकसार व्रत—२.४०० ब।
त्रिलोकीय—नेमिनाथ २.३७८।
त्रिवर्ग—२.४०० ब।
त्रिवर्गगतवाद—एकान्त १ ४६५ ब।
त्रिवर्ग महेंद्र-मातलि जल्प—२ ४०० ब, इतिहास १ ३४२ ब।
त्रिवर्गवाद—२ ४०० ब।
त्रिवर्ण—प्रव्रज्या २ १४९ ब, वर्णव्यवस्था ३ ५२३ ब, ३ ५२४ ब।
त्रिवर्णाचार—२ ४०० ब, इतिहास १ ३४७ ब।
त्रिवलित—२ ४०१ अ, व्युत्सर्ग का दोष ३.६२३ अ।
त्रिविध—प्रतिक्रमण ३ २१६ अ।
त्रिवेदसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।
त्रिशिरा—२ ४०१ अ, कुण्डलवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७५ ब, अकन ३ ४६७। रुचकवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७६ ब, अकन ३ ४६८।
त्रिषष्ठि—शलाकापुरुष ४.९ ब।
त्रिषष्ठिशलाकापुरुष चरित्र—२ ४०१ अ।
त्रिषष्ठिस्मृतिशास्त्र—आशाधर १ २८१ अ, इतिहास १.३४४ ब, १ ३४५ अ।
त्रिसंयोगीस्थान प्ररूपणा—उदय १ ४०:-४०८, आयु १.४०१, नामकर्म १ ४०४ मूलोत्तरप्रकृति १ ४००, मोहनीय १.४०१ ब, नामकर्म ओघ १.४०५ ब, नामकर्म आदेश १ ४०६ ब।
त्रिस्थानी—अनुभाग १ ९१ ब।

त्रीद्रिय—२ ४०१ अ, अवगाहना १.१७९, आयु १ २६३-२६४, इन्द्रिय १ ३०६, १ ३०७ अ, **जीव**—२ ३३३ ब, जीवसमास २ ३४३. प्राण ३ १५३ अ, सक्लेश-विशुद्धिस्थान (अल्पबहुत्व) १ १६०, त्रस २ ३९८।

त्रींद्रिय-जातिनामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३.११०. उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३ त्रिसयोगी भग १ ४०४ ब, **सक्रमण**—४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८।

त्रींद्रिय जीव—प्ररूपणा—बध ३ १०३, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८२, उद्वेलनायुक्त सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसगयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१९५, सख्या ४ ९९, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८३, काल २.१०६, अन्तर १ ११, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

त्रुटरेणु—क्षेत्रप्रमाण २.२१५ अ।

त्रुटित—२ ४०१ अ, कालप्रमाण २ २१६ अ, २.२१७ अ।

त्रुटितांग—कालप्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ अ।

त्रेपनक्रियाव्रत—२ ४०१ अ।

त्रैकाल्ययोगी—२ ४०१ अ, नन्दिसंघ देशीय गण १ ३२४ब, इतिहास १ ३३० अ।

त्रैराशिक २ ४०१ अ, अनुपात १ ७१ अ, गणित २ २२८ अ।

त्रैराशिकवाद—२ ४०१ अ, एकान्त १ ४६४ ब, १ ४६५ अ-ब।

त्रैलिंग—२ ४०१ अ।

त्रैलोक्य दीपक—इतिहास १ ३४५ अ।

त्रैविद्यदेव—२ ४०१ अ, नन्दिसंघ १ ३२५।

त्रैविद्य विश्वेश्वर—द्रविडसंघ १ ३२० अ।

त्र्यंग नमस्कार—२ ५०१ अ।

त्वक्स्पर्श—४.४७६ अ।

त्वचा—२ ४०१ ब, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।

त्वष्टा—चित्रा नक्षत्र २.५०४ ब।

थ

थलचर—निर्देश २ ३६७, अवगाहना १ १७९, आयु १.२६३, इन्द्रिय १.३०६ ब, जीवसमास २ ३४३।

थावर प्रतिमा—२ ३०० ब।

थिउक्क—सक्रमण ४ ९१ अ।

थियानसान पर्वत—उत्तरकुरु १ ३५६ अ।

थूकना—कायक्लेश २ ४७ ब।

थोस्सामिदंडक—वदना ३ ४९५ ब।

द

दड—२ ४०१ ब, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ अ, योग ३ ३७५ ब, रत्न (चक्रवर्ती) ४ १३ अ, सयम ४ १३६ ब।

दड-दंडी संबंध—द्रव्य २ ४६० अ, सबध ४ १२६ अ।

दडनायक—नन्दिसघ १ ३२५।

दंडपति—२.४०१ ब।

दंडभूत सहस्रक—२.४०१ ब, विद्या ३.५४४ अ।

दडरत्न—चक्रवर्ती ४ १५ ब।

दड-समुद्घात—२ १६६ ब।

दडाध्यक्षगण २ ४०१ ब, विद्या ३ ५४४ अ।

दंडासन तप—कायक्लेश तप २ ४७ ब।

दंत—अनगार १ ६२ अ।

दंतकर्म—कर्म २ २६ अ, निक्षेप २ ५९१ ब।

दंतवाणिज्य—सावद्य ४ ४२१ ब।

दंशमशक-परिषह—२ ४०१ ब, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ।

दंसण-कहरयण-करंडु—इतिहास १ ३४३ ब।

दक—लवणसागर का पर्वत—निर्देश ३ ४६२ अ, नाम-निर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४७९. वर्ण ३ ४७८, अकन ३ ४६१।

दकवास—लवणसागर का पर्वत—निर्देश ३.४६२ अ, नाम-निर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४७९, वर्ण ३.४७८, अंकन ३ ४६१।

दक्ष—२ ४०२ अ, हरिवश १ ३३९ ब, १ ३४० अ।

दक्षिण—अग्नि १ ३५ ब, अयन २ ९१ ब, २.३५१। **इन्द्र** (दे० इद्र)।

दक्षिणकल्प—स्वर्गपटलो का दक्षिण भाग ४ ५२० ब।

दक्षिणप्रतिपत्ति—२ ४०२ अ।

दक्षिणाग्नि—१.३५।

दक्षिणायन—२ ९१ ब, उत्पत्ति २ ३५१।

दक्षिणार्ध—विजयार्ध कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३ ४८३, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४४४।
दक्षिणेंद्र—व्यन्तर देव ३ ६११ अ, स्वर्ग ४ ५११ अ।
दत्त—२.४०२ अ, चन्द्रप्रभ २ ३८७, नारायण ४.१८ अ।
दत्तक—चन्द्रप्रभ २ ३८७।
दत्तावधान बुद्धि—श्रद्धान ४ ४३ ब।
दधिपर्ण—धर्मनाथ २.३८३।
दधिमुख—२.४०२ अ, नन्दीश्वर द्वीप का पर्वत—निर्देश ३ ४६६ अ, विस्तार ३ ४८७, वर्ण ३ ४७८, अकन ३ ४६५।
दमवर—बलदेव ४ १६ ब।
दमितारि—२ ४०२ अ।
दया—अनुकंपा १.६९ अ, करुणा २ १५ अ, हिंसा ४ ५३५ अ।
दयादत्ति—२.४२२ ब।
दयापाल—द्रविडसंघ १.३२० अ।
दयाभाव—२ १४ ब।
दयार्द्र—१ ६९ अ।
दयालु—२ १५ अ।
दयावती—तीर्थंकर चन्द्रानन २ ३९२।
दयासागर (कवि)—१ ३३४ ब।
दयासागरसूरि—२ ४०२ ब, इतिहास १ ३४६ अ।
दर्प—२ ४०२ ब।
दर्पण—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ, मंगल ३ २४४ अ। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी द्वारा अवधृत—निर्देश ३ ४६६ ब, अकन ३ ४६८, ३ ४६९। शान्तिनाथ २ ३८२।
दर्पणतुल्य भूमि—अर्हन्तातिशय १.१३७ ब।
दर्शक—मगधदेश १ ३१२।
दर्शन (उपयोग)—आकार १.२१९ अ, उपयोग १ ४२९-४३० ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०, दर्शन २ ४०५ ब, २ ४०६ अ, निर्विकल्प ३ ५३७ ब, मति-ज्ञान ३ २५१ अ, विशुद्धि ३ ५७० अ। प्ररूपणा—बंध ३ १०६, बंधस्थान ३.११३, उदय १ ३८३, उदय-स्थान १ ३९३, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रियोगी भंग १ ४०७। सत् ४.२३९, संख्या ४.१०७, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४९०, काल २.११५, अन्तर १.१७, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१, भागाभाग ४ ११३।
दर्शन (चाक्षुष ज्ञान)—आहारान्तराय १ २८ ब, १ २९ अ।
दर्शन (नाम)—मध्यलोकवासी एक व्यन्तर ३ ६१४ अ।
दर्शन (सांप्रदायिक सिद्धांत)—आध्यात्मिक अर्थ २ ४०५ ब, उद्योत १.४१४ अ, एकान्त १.४६४ ब, वैदिक आदि २.४०२ ब, २ ४०३ अ।
दर्शन (सम्यग्दर्शन)—अदर्शन परिषह १.४६ ब, उद्योत १ ४१४ अ, कषाय १ ४३२ ब, मोक्षमार्ग ४.३४९ ब, योग १ ४३२ ब, श्रद्धा १.४६ ब, ४ ३४९ ब।
दर्शनकथा—२ ४१७ अ, इतिहास १ ३४८ अ।
दर्शनक्रिया—२ १७४ ब।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र—आत्मा ३ ३३६ ब, मोक्षमार्ग ३.३३३ अ, रत्नत्रय ३.३३५ ब।
दर्शन-चतुष्क—१.३७४ ब।
दर्शनपंडित—३.२८१ अ।
दर्शनपाहुड—२ ४१७ अ, इतिहास १ ३४० ब, वचनिका १ ३४८ अ।
दर्शनप्रतिमा—२.४१७ अ।
दर्शन-बाल—३ २८१ अ।
दर्शनमोह—उपशम—निर्देश १ ४३७ ब, १.४३९ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, प्रदेशनिर्जरा का अल्पबहुत्व १.१७४, सम्मूर्च्छिमों में अभाव ४ १२७ ब। क्षपण—निर्देश २ १७८ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१, प्रदेशनिर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४, प्रस्थापक ४.३७३ अ।
दर्शनमोहनीयकर्म—३ ३४२ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ३४२, स्थिति ४ ४६१, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३७। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयनिमित्त १.३६७ ब, उदय की विशेषता १ ३७२ अ, १.३७३ ब, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २९५, त्रिसंयोगी भंग १.४०१ ब। संक्रमण ४ ८६ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
दर्शनवाद—एकान्त १ ४६५ ब, श्रद्धान ४ ४६ अ।
दर्शनविनय—३ ५४८ ब, ३ ५५० ब।
दर्शनविशुद्धि—२ ४१८ ब।
दर्शनविशुद्धि व्रत—२ ४१९ ब।
दर्शनशुद्धि (शास्त्र)—२.४१९ ब।
दर्शनश्रावक—२.४१७ अ।
दर्शनसार २ ४१९ ब, इतिहास १.३४२ ब।
दर्शनाचरण—मिथ्यादृष्टि ३.३०३ ब।
दर्शनाचार—१ २४० अ, मिथ्यादृष्टि ३.३०३ ब, विनय ३.५५० ब।
दर्शनाराधना—१.२७१ ब।
दर्शनार्य—१ २७४ ब।

दर्शनावरण—२ ४१९ ब, आस्रव (ज्ञानावरण) २ २७१ ब, ज्ञानावरण २ २७१ ब, २.२७२ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३४९ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ९२ ब, २.४२०, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ९४ ब, अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६६ अ, प्रदेश ३.१३६। बध ३ ९७, बधस्थान ३ १०८, उदय १ ३७५, उदय के निमित्त १ ३६७ ब, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसयोगी भग १.३९९। सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८।

दल—२ ४२० ब, गणित २ २२५ अ।

दश—२ २१४ ब, आहार के दोष १ २९१ ब, कल्प (साधु) २ ३१ ब, ४ ४०४ ब, करण २ ५ ब, द्वार (प्राणायाम) ३ १५५ ब, धर्म २ ४७६ अ, पूर्वधर ४ ३६ अ, प्राण ३.१५२ ब, विकार (काम) २ ४२ ब, स्थान (ध्यान) २ ४९८ अ, स्थितिकल्प (साधु) २ ३१ ब, ४.४०४ ब।

दश—गणना प्रमाण २ २१४ ब, √ १० २.२१९ ब।

दश-अशन दोष—आहार १.२९१ ब।

दश करण—२ ५ ब।

दश द्वार—प्राणायाम ३ १५५ ब।

दश धर्म—२ ४७६ अ।

दश पर्वा—२.४२० ब, विद्या ३.५४४ अ।

दशपुर—२ ४२० ब।

दशपूर्वित्व ऋद्धि—१ ४४८।

दशपूर्वी—इतिहास (मूलसघ) १.३१६, शुक्लध्यान ४ ३६ अ-ब, श्रुतकेवली ४ ५५ अ।

दश प्राण—३.१५२ ब।

दशभक्ति—२ ४२० ब, इतिहास १.३४० ब।

दशम द्वार—प्राणायाम २ १५५ ब।

दशम भक्त—२.४२० ब।

दशमलव—२ ४२० ब।

दशम शब्द—३.१६४ ब।

दशमान—२ ४२० ब।

दश मिनिमानी व्रत—२.४२० ब।

दशरथ २ ४२१ अ, धर्मनाथ २.३७७, पचस्तूपी आचार्य १ ३२६ ब, १ ३३० अ, बलदेव ४ १७ अ, ४.१८ अ, यदुवश १ ३३७, रघुवंश १ ३३८ अ।

दशलक्षण व्रत—२ ४२१ अ।

दशलाक्षणिक धर्म चक्रोद्धार यत्र—३.३५४।

दशवर्ष—काल का प्रमाण २ २१६ अ।

दशवर्षसहस्र—काल का प्रमाण २ २१६ अ।

देश विकार—काम २.४२ ब।

दशवैकालिक—२ ४२१ अ, श्रुतज्ञान ४ ६९ ब।

दशशतसहस्र—गणना प्रमाण २ २१४ ब।

दशसहस्र—गणना प्रमाण २ २१४ ब।

दशस्थान—ध्यान २ ४९८ अ।

दशस्थितिकल्प—कल्प २ ३१ ब, साधु ४.४०४ ब।

दशानन—प्रतिनारायण ४.२० अ, राक्षसवश १ ३३८ ब।

दशार्ण—२ ४२१ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

दशार्णक—२.४२१ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

दशार्णा—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

दशेरुक—मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

दशोक्त—२ ४२१ अ।

दस—२ २१४ ब, आहार के अशन (दोष १ २९१ ब, कल्प (साधु) २ ३१ ब, ४ ४०५ ब, करण २ ५ ब, द्वार (प्राणायाम) ३ १५५ ब, धर्म २ ४७६ अ, पूर्वधर ४.३६ अ, प्राण ३ १५२ ब, विकार (काम) २.४२ ब, स्थान (ध्यान) २ ४९८ अ स्थितिकल्प (साधु) २.३१ ब, ४ ४०४ ब।

दही—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ।

दांडीक—२ ४२१ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

दांत—२ ४२१ अ, औदारिक शरीर १.४७२ ब।

दाता—२ ४२१ अ, आहार १ २९२ अ।

दातार—आहार १ २९२ अ।

दातार दोष—आहार १ २९२ अ, उद्दिष्ट १.४१३ अ।

दातृ—२.४२१ अ।

दान—२ ४२१ अ, त्याग २ ३९७ ब, दान २.४२७ ब, भोजन २ ४२३ ब, शुभोपयोग १ ४३४ ब।

दानकथा—२ ४२८ ब, इतिहास १ ३४८ अ।

दानवीर्य—सुपार्श्वनाथ २ ३९१।

दानांतराय—१ २७ ब।

दानांतराय कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, १.२७, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३७। बंध ३ ९७, बधस्थान ३ १०८, ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसंयोगी भंग १.३९९। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

दामनंदि—२.४२८ ब, देशीय गण १ ३२४ ब, इतिहास १.३३० ब, १.३४२ ब।

दामर—पार्श्वनाथ २ ३७८।

दामोदर (कवि)—इतिहास १.३३२ अ, १.३४५ अ।

दामोदर (ब्रह्म)—इतिहास १.३३३ ब, १.३४४ अ।
दायक दोष—२.४२८ ब, आहार १ २९१ ब, वसतिका ३.५२९ ब, सूतक ४.४४२ ब, ४.४४३ अ।
दारिका—३ १९२ अ।
दारु—अनुभाग शक्ति १.९१ ब, १.९३ ब, १.९४ अ, मान कषाय २.३८ अ, यदुवंश १ ३३७।
दारुक—यदुवश १.३३७।
दारुवेणि—२ ४२८ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।
दार्शनिक श्रावक—दर्शन प्रतिमा २ ४१७ ब, श्रावक ४ ४९ ब।
दासत्व—वात्सल्य ३ ५३२ ब।
दासी—२ ४२८ ब, ब्रह्मचर्य ३.१९२ अ, स्त्री ४ ४५० ब।
दिक्—२ ४२८ ब।
दिक् इंद्र—१.२९९ अ।
दिक्कुमार (देव)—२ ४२८ ब। भवनवासी देव—निर्देश ३ २१० ब, नाम निर्देश ३ २०८ अ, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६५, अवस्थान ३.२०९ ब, ३.४७१, ३.६१२, ३ ६१४। इंद्र—निर्देश ३ २०८ अ, शक्ति आदि ३ २०८ ब, परिवार ३ २०९ अ।
दिक्कुमार देव—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२ बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३ २३१ अ, अल्पबहुत्व १.१४५।
दिक्कुमारी—२ ४२८ ब, मध्यलोक में अवस्थान ३.६१४ अ, रुचकवर पर्वत पर—निर्देश ३.४६६ ब, नाम ३ ४७६ अ, अंकन ३.४६८, ३ ४६९। सुमेरु पर्वत पर—निर्देश ३.४५० अ, नाम ३.४७३ ब, अकन ३ ४५१।
दिक् वास—२ ४२८ ब, ३.४७४ ब।
दिक् स्वस्तिक—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६९।
दिगंतरक्षित—२.४२८ ब, लौकान्तिक ३.४९३ ब।
दिगंतर गति—जीव की २.२३५ ब।
दिगंबर—२.४२८ ब, अचेलकत्व १.३९ ब, चैत्य चैत्यालय (प्रतिमा) २.३०१ ब, श्वेताबर ४.७८ अ, ४.७९ अ, ४.८० अ।
दिगंबर संघ—जैन १.३१५ ब, १.३१८ अ, जैनाभासी १.३१९ अ।
दिगवलोकन—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ।
दिगिंद्र—इन्द्र १.२९९ अ।
दिग्गजेंद्र—२.४२८ ब, मध्यलोकवासी देव ३.६१३ ब, देवकुरु उत्तरकुरु के पर्वत—निर्देश ३.४४५ अ, ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३ ४८७, वर्ण ३ ४७७, गणना ३ ४४५ अ, अकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने। रुचकवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४६६ ब, ३ ४७१, अकन ३ ४६८, ३ ४६९।
दिग्नाग—२ ४२८ ब।
दिग्पट चौरासी—२ ४२९ अ, इतिहास १.३४७ ब।
दिग्वसतिका—चक्रवर्ती ४ १५ अ।
दिग्वास—श्वेताम्बर ४ ७८ अ।
दिग्वासी देव—व्यन्तर देव—आयु १ २६४ ब।
दिग्विजय—२ ४२९ अ, चक्रवर्ती ४ १५ ब, नारायण ४ २० अ।
दिग्व्रत—२ ४२९ अ, देशव्रत २ ४५१ अ।
दिन—२.४२९ ब, कालप्रमाण २ २१६ अ, उत्पत्ति का कारण सूर्य की गति २ ३५१ अ, रात्रिभोज (दिवा-मैथुन त्याग) ३ ४०३ अ।
दिनकर—हस्त नक्षत्र २ ५०४ ब।
दिनप्रतिमा—कायक्लेश २ ४८ अ।
दिवस—कालप्रमाण २ २१६ अ, उत्पत्ति का कारण सूर्य की गति २ ३५१ अ, मैथुनत्याग ३ ४०३ अ।
दिवाकरनंदि—२ ४२९ ब, देशीय गण १ ३२४ ब।
दिवाकर सेन—२ ४३० अ, सेनसघ १ ३२६ अ, इतिहास १ ३२८ ब, १ ३२९ अ।
दिवा-भोजन—रात्रि-भोजन ३ ४०२ ब।
दिवा-मैथुन-त्याग—रात्रि भोजन ३ ४०३ अ।
दिव्य—अनुदिश स्वर्ग का विमान—निर्देश ४.५१९ अ, अंकन ४ ५१५, ४ ५१७ देव की आयु १ २६९।
दिव्यकला—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
दिव्यतिलक २ ४३० अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
दिव्यध्वनि—२.४३० अ, अर्हन्तातिशय १.१३७ ब, ओम् १.४६९ ब, आगम १ २२८ ब, श्रुतकेवली (प्रतिपाद्य) ४.५६ अ।
दिव्यपाद—तीर्थंकर ३ ३७७।
दिव्ययोजन—२ ४३३ ब, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब।
दिव्यवाद—तीर्थंकर २.३७७।
दिव्या—जाति २ ३२६ ब।
दिव्यौषध—२ ४३३ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

दिश-संस्थित – २ ४३३ ब, ग्रह २ २७४ अ।
दिशांजय क्रिया—संस्कार ४ १५२ अ।
दिशा—२ ४३३ ब, कृतिकर्म २ १३६ ब, सल्लेखना ४ ३९० ब।
दिशामंत्य—२ ४३४ अ, सुमेरु का नाम ४.४३७ अ।
दिशामादि – २ ४३४ अ, सुमेरु का नाम ४ ४३७ अ।
दिशामुत्तर—२ ४३४ अ, सुमेरु का नाम ४ ४३७ अ।
दीक्षा—प्रव्रज्या ३ १४९, भरत चक्रवर्ती ३ ४१९ अ, संस्कार ४.१५२ अ।
दीक्षाकाल—२ ८० ब।
दीक्षागुरु—२ २५३ अ।
दीक्षाद्यक्रिया—संस्कार ४.१५१ ब, ४ १५२ ब।
दीक्षाचार्य—आचार्य १ २४२ ब।
दीक्षान्वय क्रिया—संस्कार ४ १५२ अ।
दीक्षाविधि—कृतिकर्म २ १३८ ब।
दीतिदेवी—२ ४३४ अ, पुनर्वसु नक्षत्र २ ५०४ ब, विद्याधर वंश १ ३३९ अ।
दीप—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ, पूजा ३ ७८ ब।
दीपचंद शाह—२.४३४ अ, इतिहास १.३३४ ब, १ ३४७ ब।
दीपदशमी व्रत—२ ४३४ अ।
दीपन—हरिवंश १ ३४० अ।
दीपमालिका व्रत—२.४३४ अ।
दीपसेन—२ ४३४ अ, पुन्नाट संघ १ ३२७ अ।
दीपांग—२.४३४ अ, कल्पवृक्ष ३ ५७८ अ।
दीप्त ऋद्धि—१.४४७, १.४५४ ब।
दीप्ति – इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।
दीर्घ अक्षर—१ ३३ अ।
दीर्घदंत—कुलकर ४ २५ अ।
दीर्घबाहु—हरिवंश १ ३४० अ।
दुःख—२ ४३४ ब, इन्द्रियज सुख ४.४३० अ, देवगति २ ४४६ अ, धर्म २.४७० अ, नरक २ ५७२ अ, नैयायिक दर्शन २.६३३ ब, परिग्रह ३.२९ अ, पुण्य ३ ६२ अ, वेदनीय कर्म ३.५९४ अ, सुखाभाव ४.४३२ ब, ४ ४३३ अ।
दुःखमा काल—दे० दुषमा काल।
दुःखहरण व्रत—२ ४३६ अ।
दुःपक्व आहार—२ ४३६ अ, भोगोपभोग ३.२३९ अ।
दुःप्रणिधान—२ ४३६ ब, प्रणिधान ३ ११५ ब, स्मृत्यनुपस्थान ४.४९५ ब।
दुःप्रमाण—मिथ्यादृष्टि ३.३०५ अ।
दुःशासन—२.४३६ अ।
दुःश्रुति - २.४३६ अ, अनर्थदण्ड १ ६४ अ।
दुःस्वर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८ अ, २ ५८३, स्थिति ४.४६६, अनुभाग १ ९५ ब, प्रदेश ३ १३६, बन्ध ३.९६, ३ ९७, बन्धस्थान ३ १११, उदय १ ३७४, १ ३७५, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८ सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भंग १ ४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
दुग्ध—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ, दुग्धरसी व्रत २.४३६ ब।
दुन्दुभक (दुन्दुभि)—ग्रह २ २७४ अ।
दुन्दुभीनाद—प्रातिहार्य १ १३७ ब।
दुराग्रही श्रोता—उपदेश १ ४२६ अ।
दुर्गंधा—२ ४३६ ब।
दुर्ग—२ ४३६. मनुष्यलोक ३ २७५ अ-ब, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।
दुर्गदेव—इतिहास १ ३३१ अ, १.३४३ ब।
दुर्गाटवी—२ ४३६ ब।
दुर्ग्रह—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
दुर्जन—संगति ४ ११८ अ।
दुर्दर—२ ४३६ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, व्युत्सर्ग का दोष ३ ६२३ अ।
दुर्दर्श—यदुवंश १ ३३७।
दुर्द्धर—२ ४३६ ब, यदुवंश १ ३३६, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।
दुर्नय—३.३०५ अ।
दुर्भग-नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३ ९६, २ ५८३, स्थिति ४ ४६६। अनुभाग १ ९५ ब, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९६ अ, ३.९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भंग १.४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
दुर्भाषा—३ २२६ ब।
दुर्भिक्ष—भद्रबाहु स्वामी १. परि०/२.१-३।
दुर्मुख—२ ४३६ ब, नारद ४ २१ अ। यदुवंश १.३३७।
दुर्योधन—२ ४३६ ब, कुरुवंश १.३३६ अ।
दुर्लभसेन—सेनसंघ १.३२६ अ।
दुर्विनीत—२.४३६ ब।
दुश्शासन—२.४३६ अ।
दुश्श्रुति—२ ४३६ अ, अनर्थदण्ड १.६४ अ।
दुषमा काल—२.४३६ अ-ब, उपमा काल २ २१७ ब, निर्देश २ ८८, परिचय २ ९३, कुछ विशेषताएँ २ ९२

प्रमाण २ ९० । अवगाहना १.१८०, अवसर्पिणी २.८९, आयु १.२६४, आर्यखण्ड १ २७५ अ, उत्सर्पिणी २.९० कर्मभूमि ३ २३५, कल्कि २ ३१ अ, क्षेत्र २ ९२, दर्शनमोह क्षपणा २ १७८ ब, धर्मध्यान २ ४८४ ब ।

दुषमा-दुषमा काल—उपमा काल २ २१७ ब, निर्देश २ ८८, परिचय २ ९३, प्रमाण २.९० । अवगाहना १ १८०, अवसर्पिणी २ ९०, आयु १ २६४, आर्यखण्ड १ २७५ अ, उत्सर्पिणी २.९०, कर्मभूमि ३.२३५, क्षेत्र २ ९२, दर्शनमोह क्षपणा २ १७८ ब ।

दुषमा-सुषमा काल—उपमा काल २ २१ ब, निर्देश २ ८८, परिचय २ ९३, कुछ विशेषताएँ २ ९२, प्रमाण २.९० । अवगाहना १.१८०, अवसर्पिणी २.८९, आयु १.२६४, आर्यखण्ड १.२७५ अ, उत्सर्पिणी २ ९०, कर्मभूमि ३ २३५, क्षेत्र २ ९२, चरमशरीरी तथा तीर्थंकरों आदि का जन्म २.९२, २ ३१७ अ, ३ २३५, विदेह ३.५४३ ब, विद्याधर लोक ३.२३५ ।

दुष्ट-प्रमृष्ट निक्षेप—१ ५० अ ।

दुष्पक्व आहार—२ ४३६ ब, भोगोपभोग ३ २३९ अ ।

दुष्पूर—यदुवंश १ ३३७ ।

दुष्प्रणिधान—२.४३६ ब, प्रणिधान ३.११५ अ, स्मृत्यनुपस्थान ४ ४९५ ब ।

दुष्प्रमाण—मिथ्यादृष्टि ३.३०५ अ ।

दुष्प्रयुक्त निक्षेप—१.५० अ ।

दुस्स्वर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ९६ अ, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३.१३६ । बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३.१११, उदय १ ३७४, १.३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भंग १.४०४ । सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

दूत—२.४३६ ब ।

दूतकर्म—वसतिका का दोष ३ ५२९ अ ।

दूध—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ अ ।

दूरघ्राणत्व ऋद्धि—१ ४५० अ ।

दूरदर्शित्व ऋद्धि—१ ४५० अ ।

दूरभव्य—३.२११ ब ।

दूरवर्ती—४ ४५ अ ।

दूरश्रवणत्व ऋद्धि—१.४५० अ ।

दूरस्पर्शत्व ऋद्धि—१.४५० अ ।

दूराच्छ्रवण ऋद्धि—१ ४४८, १ ४५० अ ।

दूरास्स्पर्श ऋद्धि—१ ४४८, १.४५० अ ।

दूराद्घ्राण ऋद्धि—१.४४८, १.४५० अ ।

दूरादास्वादन ऋद्धि—१ ४४८, १ ४५० अ ।

दूरादर्शन ऋद्धि—१ ४४८, १.४५० अ ।

दूरापकृष्टि—२ ४३७ अ ।

दूरार्थ—२ ४३७ अ ।

दूरास्वादित्व ऋद्धि—१ ४५० अ ।

दूषण—उभय १.४४४ ब ।

दूष्य क्षेत्र—२ ४३७ अ ।

दृढचर्याक्रिया—सस्कार ४ १५२ ब ।

दृढनेमि—यदुवंश १ ३३७ ।

दृढमुष्टि—यदुवंश १ ३३७ ।

दृढरथ—२ ४३७ अ, गणधर २ २१२ ब, विद्याधर वंश १ ३३९ अ, शान्तिनाथ २ ३७८, शीतलनाथ २ ३८०, हरिवंश १ ३४० अ ।

दृढराज्य—सम्भवनाथ २ ३८० ।

दृढव्रत—यदुवश १.३३७ ।

दृश्यकर्म—२ ४३७ अ ।

दृश्यमान द्रव्य—२.४३७ अ, कृष्टि २.१४१ ब ।

दृष्ट—२ ४३७ अ ।

दृष्टांत—२ ४३७ अ-ब, अनुमानावयव १.९८ ब, न्याय २ ६३३ अ-ब, षट्लेश्या ३ ४२६ अ ।

दृष्टि—आहारान्तराय १ २८ ब, चैत्य-चैत्यालय (प्रतिमा) २ ३०१ अ, मिथ्यादृष्टि (रुचि) ३ ३०२ ब, रुचि ३ ४०४ ब ।

दृष्टिनिर्विष ऋद्धि—१ ४४७ १ ४५५ ब ।

दृष्टिप्रवाद—२ ४४० अ, श्रुतज्ञान ४ ६८ अ ।

दृष्टिभेद—२ ४४० अ ।

दृष्टिवाद—श्रुतज्ञान ४ ६७ अ, ४ ६८ अ ।

दृष्टिविषऋद्धि—१.४४७, १ ४५६ अ ।

दृष्टिशक्ति—२.४४३ अ ।

देय—२.४४३ अ, गणित २ २२३ ब ।

देयक्रम—२ ४४३ अ ।

देयद्रव्य—२ ४४३ अ ।

देव—२ ४४३ अ, २.४४४ अ, पूजा (शास्त्र व प्रतिमा) ३ ७७ अ-ब । देवगति (दे० आगे) ।

देव—मूलसघ १ ३१६ ।

देवऋद्धि—२ ४४९ अ ।

देव ऋद्धिदर्शन—सम्यक्त्वोत्पत्तिका कारण ४ ३६३ अ,ब ।

देवकृत अतिशय—अर्हन्त १ १३७ ब ।

देवकी—नारायण ४ १८ ब, यदुवश १ ३३६, १ ३३७ ।

देवकीर्ति—२.४४९ अ, देशीय गण १ ३२५, इतिहास द्वि० १ ३३० ब, तृ. १ ३३१ ब, चतु. १ ३३२ अ, द्राविड सघ १ ३२० ब ।

देवकुरु—२ ४४९ अ-ब । लोकविभाग—निर्देश ३.४५६

ब, ३.४६२ ब, ३ ४६३ अ, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, गणना ३ ४४५ अ, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने (चित्र ३७), चित्र ३ ४५७। उत्तम भोगभूमि—निर्देश ३ २३५ ब, अवगाहना १ १८०, आयु तिर्यंच १ २६३, आयुमनुष्य १ २६४, काल विभाग २ ९२ ब, सुषमा-सुषमा काल २ ९३।

देवकुरु (द्रहकूट आदि)—देवकुरु का द्रह—निर्देश ३ ४५६ ब, नामनिर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४५७, ३ ४६४ सामने। गजदन्त के कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ के ब, ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७।

देवकूट—२ ४४९ ब।

देवगति (देवसामान्य)—२.४४५ अ, अकालमृत्यु ३ २८४ अ, अनीक १ ६८ ब, अवगाहना १ १८० अ, अवधिज्ञान १ १९४ अ, १ १९८, अवर्णवाद १.२०१ अ, १ २१० ब, आत्मरक्ष १.२४३ ब, आयु १ २६५, आयुबन्ध १ २६२ अ, आयु का अपकर्ष काल १ २५९ ब, उद्योत प्रकृति १ ३७३ ब, कषाय २ ३८ अ, कषाय की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१, कल्याणक २ ३२ ब, काल (केवल सुषमा-सुषमा) २ ९३, गति अगति (मर कर कहाँ जन्मे) २ ३२२ अ, जीव २ ३३३ ब, दुख २ ४३५ अ, पचकल्याणक २ ३२ ब, ब्राह्मण ३ १९५ अ, मरण ३ २८४ अ, लिंग ३ ५८७ अ, लेश्या (द्रव्य) ३ ४२५ ब, लेश्या (भाव) ३.४२८ ब, लोकपाल ३ ४९१ अ, वनस्पति ३ ५०६ अ, वेदभाव ३ ५८७ अ, वैक्रियिक ३ ६०२ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ।

देवगति (चतुर्निकाय)—

विषय	भवनवासी	व्यन्तर	ज्योतिषी	वैमानिक
कोशखण्ड सं०	खण्ड ३	खण्ड ३	खण्ड २	खण्ड ४
निर्देश	२०७ ब	६१० ब	३४५ ब	५१० अ
भेद	२०८ अ	,,	,,	५१० ब
शक्ति आदि	२०८ ब	६१०-६११	,,	५११
निवास	[२०९ ६१३ ४४२]	[६१२ अ ४४२]	३४६ ब	५१४ ब
विमान	—	—	—	५११ ब
अवगाहना	१ १८०	१ १८०	१ १८०	१ १८०
आयु	१.२६५	१ २६४	१ २६६	१.२६६
इन्द्र—				
निर्देश	२०८—२१०	६११ अ	३४५ ब	५१० ब
परिवार देवियाँ	२०९ अ ,,	६११ ब ,,	३४६ अ ,,	५१२ ,,

देवगति (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उद्योतप्रकृति का उदय १ ३७३ ब, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८२, उद्वेलनायुक्त सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १८५, संख्या ४.९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ ६, १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।

देवगति-नामकर्म-प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ १११, उदय १ ३७५, उद्योत प्रकृति का उदय १ ३७३ ब, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, उद्वेलनायुक्त सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी—नामनिर्देश २.५८३ ब, लक्षण १.२४७ अ। प्ररूपणा—दे० गति नामकर्म प्ररूपणा।

देवगर्भ—हरिवश १ ३४० अ।

देवचंद्र—२ ४४९ ब, मत्रवादी—देशीयगण १ ३२५, इतिहास १.३३१ ब। पण्डित आशाधर १ २८० ब।

देवचतुष्क—१.३७४ ब।

देवच्छद—चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ।

देवजी—२ ४४९ ब।

देवता—२ ४४९ ब, व्रत की साक्षी ३.६२६ अ, अग्नि १ ३५ ब।

देवत्रिक—१ ३७४ ब।

देवत्व—ईर्यापथ कर्म १ ३५० ब।

देवदत्त—यदुवंश १ ३३७, हरिवंश १.३४० अ। भट्टारक इतिहास १ ३३० ब।

देवदारु—पार्श्वनाथ २ ३८३।

देवदेव—तीर्थंकर २ ३७७।

देवद्विक—१ ३७४ ब।

देवद्विज—३ १९५ अ।

देवनंद—यदुवश १.३३७।

देवनंदि—२ ४४९ ब, नन्दिसंघ १.३२३ अ, द्रविडसंघ १.३२० अ, इतिहास १ ३२९ अ, १.३२९ ब।

देवपाल—२ ४४९ ब, तीर्थंकर २.३७७, भोजवंश १.३१० अ, यदुवंश १ ३३७।

देवपुत्र—तीर्थंकर २ ३७७।

देवपूजा—शुभोपयोग १.४३४ ब। (वि० दे० पूजा)।

देवभद्र—भट्टारक १ २८० ब।

देवभवन—चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ ब।

देवभाव—गणधर २ २१२ ब।

देवमंत्री – पुष्य नक्षत्र २ ५०४ ब।

देवमाल—२ ४४९ ब। वक्षार-गिरि—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, वर्ण ३ ४७७, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने। इस पर्वत का कूट तथा देव ३ ४७२ ब।

देवमूढता —अमूढदृष्टि १ १३३ ब, मूढता ३ ३१५ अ, ३ ३१५ ब सम्यग्दर्शन ४ ३६१ ब।

देवयज्ञ—३ ३६९ ब।

देवयश—२ ३९२।

देवरमण —भद्रशाल वन का भाग—निर्देश ३ ४५० अ, विस्तार ३ ४८८, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने (चित्र स० ३७)।

देवरम्या—चक्रवर्ती ४ १५ अ।

देवराज—तीर्थंकर २ ३९२।

देवराय— २ ४४९ ब।

देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण—श्वेताम्बराचार्य ४ ७८ अ, इतिहास १ ३२९ अ।

देवर्षि –ऋषि १ ४५७ ब, लौकान्तिक ३ ४९३ अ।

देवल—साख्यदर्शन ४.३९८ ब।

देवलोक—२ ४४९ ब, धर्म (क्लेश का कारण) २ ४७० अ।

देववदना—कृतिकर्म २ १३७ ब, वदना ३ ४९५ ब।

देववर (द्वीप, सागर)—२ ४४९ ब, नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, जल का रस ३ ४७० अ, अंकन ३.४४३, ज्योतिष चक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

देवविमान—२.४१० अ, स्वप्न ४ ५०४ ब।

देवशर्मा—२ २१२ ब।

देवसंघ—१ ३१९ अ।

देवसत्य—२ २१२ ब।

देवसमिति—स्वर्गपटल-निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४ ५१५, देव-आयु १ २६७।

देवसुत – २ ४५० अ, तीर्थंकर २.३७७।

देवसेन २ ४५० अ, सजात तीर्थंकर २ ३९२, यदुवंश १ ३३६, हरिवंश १.३४० अ।

देवसेन—प्रथम—पचस्तूप संघ १ ३२६ ब, इतिहास १ ३३० अ, १.३४३ अ। द्वितीय—माथुरसंघ १ ३२७ब, इतिहास १.३३० अ, १.३४२ ब। तृतीय—सेनसंघ १.३२६ अ, इतिहास १.३३१ अ।

देवागम स्तोत्र—४.४४९ अ।

देवाग्नि – २.२१२ ब।

देवायु कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, १.२५३, स्थिति ४ ४६२, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३.१०८, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९४ निसयोगी भग १ ४०१। अल्पबहुत्व १ १६८, विस्तार ३.४८७, ३ ४८८, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने।

देवी—मध्यलोक मे आवास ३ ६१४, उदय प्ररूपणा १ ३७८, अल्पबहुत्व १ १४४ अ, १ १४७ अ। परिवार—अनीक १.६८ ब, आत्मरक्ष १ २४३ ब। इन्द्रो की प्रधान देवियाँ—

विषय	भवनवासी	व्यन्तर	ज्योतिषी	वैमानिक
कोश खण्ड →	खण्ड ३	खण्ड ३	खण्ड २	खण्ड ४
नाम निर्देश	२०९ अ	६११ ब	३४६ अ	५१३ ब
विक्रिया	२०९ अ			५१२
सख्या	२०९ अ	६११ ब	३४६ अ	५१२-५१३
परिवार	२०९ ब	६१२ अ	३४६ अ	५१२
विकास	६१२ अ	६१४	३४६ अ	५१३
आयु	१ २६५	१.२६४	१ २६६	१ २६६

नोट – वैमानिक देवियाँ सौधर्म ऐशान मे ही होती है ४.५१४ अ।

देवीदयाल—इतिहास १ ३४८।

देवीदास—२.४५० अ।

देवेंद्रकीर्ति – २ ४५० अ। प्रथम—नन्दिसघ १ ३२३ ब, १ ३२४ अ, इतिहास १.३३३ अ, १ ३४७ ब। द्वितीय—इतिहास १ ३३३ ब। तृतीय—काष्ठासघ १.३२७ अ, इतिहास १ ३३४ ब, भट्टारक १.३३२ ब।

देवेंद्रमुनि—सेनसघ १.३२६ अ, इतिहास १.३३२ अ।

देवेंद्र सूरि—इतिहास १ ३३२ ब, १ ३४५ अ।

देवेंद्र सैद्धांतिक—२ ४५० अ, देशीयगण १ ३२४ ब, इतिहास १.३३० ब।

देश—२.४५० ब, आहार दोष, १.२९० ब, अतिचार १.४२ ब, १ ४३ ब, स्कन्ध ४ ४४६ अ।

देशकरण—उपशम १ ४३७ अ।

देशकाल—आगमार्थ १.२३४ अ, उपदेश १.४२६ अ।

देशक्रम—२.१७१ ब, २ १७२ अ।

देशघाती प्रकृति—निर्देश १.९१-९३, उदय १.३७१ ब, अल्पबहुत्व १.१७१ अ।

देशघाती स्पर्धक—४.४७३ अ, चारित्रमोह क्षपणा २.१८० अ।

देशजिन—३.७७ अ।

देशत्याग—शुभोपयोग १ ४३३ ब ।
देशना—३ ४१३ अ ।
देशनालब्धि—३ ४१३ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६२ ब ।
देशप्रकृति विपरिणमना—३ ५५५ ब ।
देशप्रत्यक्ष—३ १२२ ब ।
देशप्रत्यासत्ति—४.१४१ अ ।
देशभूषण—२ ४५० ब, अग्निप्रभदेव १ ३६ ब, नन्दिसंघ १ ३२३ ब ।
देशविरत—४ १३४ अ । प्ररूपणा-बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०-१११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९२ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७८ सत्त्वस्थान ४.२८८, ४ २९६, ४ ३०४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ अ । सत् ४ १६२, सख्या ४ ९४, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ ९९, अन्तर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३ । वि० दे० सयतासयत ।
देशव्रत—२ ४५० ब, व्रत ३ ६२८ अ ।
देशव्रती—दे० सयतासयत ।
देशसयत—काय २ ४५ ब । वि० दे० सयतासयत ।
देशसंयम—२ ३७३ ब । वि० दे० सयतासयत ।
देशसत्य—४ २७१ ब ।
देशस्पर्श—४ ४७५ ब ।
देशांश—गुण २ २४१ ब ।
देशातिचार—देशव्रत २ ४५१ अ ।
देशात्मवाद—बहिरात्मा ३ १८१ ब ।
देशावकाशिक व्रत—देशव्रत २ ४५१ अ ।
देशावधि—१ १८७ ब, १ १९८-१९९ करण चिह्न १.१५१ ब, गुणप्रत्यय १ १९३ ब, भवप्रत्यय १ १९३ ब, विषय १.१९८-१९९ । शब्दकोष ४.४ ब ।
देशी नाममाला—इतिहास १ ३४४ अ ।
देशीय गण—२.४५१ ब, मूलसघ १ ३२२ अ, नन्दिसघ १.३१९ अ, पट्टावली १.३२४ ब ।
देशोपशम—सम्यग्दर्शन ४.३६८ ब ।
देह—२.४५१ ब, पिडस्थ ध्यान ३ ५८ ब, विशेष देखिए—शरीर ।
देहदेवालय—पूजा ३.७७ ब ।
देहप्रमाणत्व शक्ति—शक्ति ४.६ ब ।
देहरहितता—मोक्ष ३.३३० अ ।
दैत्य—विद्या ३.५४४ अ ।
दैव—नियति २.६१६ ब, २.६१९ अ ।
दैवनय—२ ५२३ ब ।
दैववाद—एकान्त—१.४६३ ब, नियति २.६१६ ब ।
दैवसिक—आलोचना १ २७६ ब, प्रतिक्रमण—कृतिकर्म २.१३७ ब, व्युत्सर्ग ३ ६२६ अ ।
दैवी मीमासा—दर्शन २ ४०२ ब ।
दो—२ ४५१ ब । सहनानी—जघन्य असख्यात, जघन्य सख्यात, जघन्य युक्तासख्यात; उत्कृष्ट परीतासख्यात तथा पर्याप्त २ २९९ अ । सूच्यगुल २ २१९ ब ।
दोगुणहानि—गणित २.२३१ ब ।
दोग्रंतिक पाहुड—पाहुड ३.१५६ ब ।
दोड्डय्य (कवि)—इतिहास १ ३३३ अ-ब, १ ३४६ ब ।
दोलायित—२.४५१ ब, व्युत्सर्गदोष ३.६२२ ब ।
दोष—२.४५१ ब, अष्टादशदोष १ १३७ अ, आप्त १.२४८ अ, आहार १.२८७ अ, १.२८९ अ, उभय १ ४४४ ब, चल २ २७९ ब, देव (मिथ्यादृष्टि) ३.३०४ अ, द्वेष २ ४६३ अ, न्याय २ ६३३ ब, सम्यग्दर्शन (चल) २.२७९ ब ।
दो सौ छप्पन—सहनानी—उत्कृष्ट असख्यातासख्यात, जघन्य परीतानन्त; ध्रुव राशि २ २१९ अ ।
दोहापाहुड—२ ४५२ ब, इतिहास १ २४१ अ, १.३४३ अ ।
दौर्भाग्य—सुभग-दुर्भग ४.४३६ अ ।
दौलतराम—२.४५१ ब, इतिहास—१.३३४ अ, १ ३४८ अ, द्वितीय १.३३४ ब, १.३४८ अ ।
द्यानतराय—२ ४५१ ब, इतिहास १ ३३४ अ ।
द्यूतक्रीडा—२ ४५१ ब ।
द्युति—२ ४५१ ब, सूर्य की अग्निदेवी २ ३४६ अ ।
द्युतिलक—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।
द्युतिश्रुति—सूर्य की अग्निदेवी २.३४६ अ ।
द्योत्यद्योतक भाव—सम्बन्ध ४.१२६ अ ।
द्रमिल—२ ४५२ अ ।
द्रविड़देश—२.४५२ अ ।
द्रविड संघ—२ ४५२ अ, जैनाभासी सघ १ ४६५, इतिहास १ ३२० अ-ब ।
द्रविडाचार्य—वेदान्त ३ ५९५ ब ।
द्रव्य—२.४५२ अ, अनन्त गुण २.२४४ अ, अल्पबहुत्व १.१४२, अवधिज्ञान के विषय १ १९७ ब, अवस्थान १.२२३ अ, १.२२४ अ, अविभागी अश (क्षेत्र का प्रमाण) २.२१५ अ, उपकार्य-उपकारक भाव २.६३ ब, उत्पादादि १.३६१, उपचार (गुण-पर्याय आरोप) १.४२१ अ, कर्मोदय के निमित्त १.३६७ ब, कारण-कार्य भाव २ ५४ ब, २.५५ ब, २ ६३ ब, दानोपयोगी २.४२७ अ, पर-चतुष्टय २.२७८ अ, ४.३१९ अ, भेदाभेद (कारक) २ ५० ब, लोकाकाश में १.२२४ अ, विकल्पातीत ४.३२० अ, सदसत् १.३६१ ब,

सम्यग्दर्शन के निमित्त ४.३६२ ब, सामान्य विशेष ४.३२२ ब, ४.३२३ अ, स्व-चतुष्टय २ २७७, ब, २ २७८ अ, ४ ३१९ अ, स्वतन्त्रता २.६० अ, २ ७३ अ, स्वभाव ४.५०६ ब।

द्रव्य-अनंत—१ ५५ ब।

द्रव्य-अनुयोग—१ ९९ ब-१०१ ब, स्वाध्याय ४ ५२३ ब।

द्रव्य-अंतर—१ ३ ब।

द्रव्य-अप्रतिक्रमण—३ ११७ अ।

द्रव्य-अप्रत्याख्यान—१ १२६ अ।

द्रव्य-अवसन्न—१.२०१ ब।

द्रव्य-आरोप—१ ४१९ ब—१ ४२१ ब।

द्रव्य-आस्रव—१ १८२ ब।

द्रव्य-इंद्रिय—१ ३०१ ब, १ ३०५ ब, केवली २ १६२ अ।

द्रव्य-उदय—१ ३६५ ब।

द्रव्य-उपक्रम—१ ४१६ ब।

द्रव्य-उपचार—१ ४१९ ब-१ ४२१ ब, पर्यायारोप १ ४२१ अ-ब।

द्रव्य-उपशम १.४३७ अ।

द्रव्य कर्म—२.२६ अ, २ २७ अ-ब, २ २८ ब, भावकर्म २ २७ अ, षट्द्रव्य २ २८ ब, उदय १ ३६५ ब।

द्रव्य-कषाय—२ ३५ ब, २ ३७ अ।

द्रव्य-क्रीत (दोष)—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

द्रव्य-छेदना—२ ३०६ ब।

द्रव्यत्व २.४६१ अ।

द्रव्य-तीर्थ—२ ३९३ ब।

द्रव्य-दोष—आहार १ २९० ब।

द्रव्य-ध्येय—२ ५०० अ।

द्रव्य-नपुंसक—२ ५०५ ब।

द्रव्य-नमस्कार—२ ५०६ ब।

द्रव्य-नय—२ ५१४ ब, २ ५२१ ब, निक्षेप नय २ ५२३ अ, सप्तभंगी नय २ ५२२ ब।

द्रव्य-निक्षेप—द्रव्य २ ५९९ अ, भाव २ ६०६ अ।

द्रव्य-निबंधन—२ ६१० ब।

द्रव्य-निमित्त—२ ६४ अ।

द्रव्य-निमित्तक—कर्मोदय १ ३६७ अ, नाम २ ५८२ ब, सम्यग्दर्शन ४.३६३ ब।

द्रव्य-निर्जरा—२.६२२ अ-ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७७ अ।

द्रव्य-निर्विचिकित्सा—२.६२६ ब।

द्रव्य-परमाणु—ध्येय २ ५०१ ब, परमाणु ३ १४ ब, शुक्ल-ध्यान ४ ३३ ब।

द्रव्य-परिवर्तन—ससार ४ १४७ ब।

द्रव्य-पर्याय—३ ४६ अ।

द्रव्य-पर्याय-आरोप—उपचार १.४२१ अ।

द्रव्य पुण्य—३ ६० अ।

द्रव्य-पुरुष—३ ६९ ब।

द्रव्य-पूजा—३.७४ ब, ३ ८० अ।

द्रव्य-प्रतिक्रमण—३.११६ ब।

द्रव्य-प्रत्याख्यान—३ १३२ अ।

द्रव्य-प्रमाण—अनुयोग २ १०२ अ, प्रमाण ३.१५६ अ।

द्रव्य-प्राण—३ १५२ ब।

द्रव्य-बंध—बध ३ १७१ अ, ३ १७२ अ, स्कध ४ ४४७ ब।

द्रव्य-मन—अनुभव १ ८१ ब, मन ३ २७० अ, मन.पर्यय ३.२६७ ब, मूर्त ३ ३१८ अ।

द्रव्य-मल-२ २९९ अ।

द्रव्य-मोक्ष—३ ३२२ ब।

द्रव्य-मोह—३ ३४० अ।

द्रव्य-युति—३ ३७३ ब।

द्रव्य-योग—३ ३७५ ब।

द्रव्य-लिंग—चारित्र २ २९१ ब, धर्म २ ४७० अ, लिग ३ ४१६ ब, ३ ४२०, विनय ३ ५५३ ब, वेदभाव ३.५८३ ब, साधु ४ ४०७ ब।

द्रव्य-लेश्या—द्रव्य ३ ४२२ ब, भाव ३ ४२५ अ, ३ ४२६ अ, वर्ण नाम कर्मोदय ३ ४२६ ब।

द्रव्य-वचन—मूर्त ३ ३१७ ब।

द्रव्यवाद—साख्यदर्शन एकान्त १ ४६५ ब।

द्रव्यविचिकित्सा—निर्विचिकित्सा २ ६२६ ब।

द्रव्य-शल्य—४ २६ ब।

द्रव्यशुद्धि—अतिचार (ज्ञान) १ २२८ अ, शुद्धि ४ ३९ ब, स्वाध्याय ४ ५२६ अ।

द्रव्यश्रुत—४ ५९ ब, अक्षर १ २२८ अ, आगम (ज्ञान) १.२२९ ब, आगम (सूत्र) १ २३८ ब, आत्मा १ २४४ अ, गौणता (ध्याता) २ ४९२ ब, गौणता (श्रुतज्ञान) ४ ६१ अ, ग्रन्थ २.२७३ अ, श्रुतकेवली ४ ५६ अ, स्वाध्याय ४ ५२५ अ।

द्रव्यसंग्रह—२ ४६१ ब, इतिहास १ ३४३ ब, टीका १ ४४३ ब। वचनिका १ ३४८ अ। वृत्ति १.३४३ ब।

द्रव्य-संयोगपद—शरीर ३.५ अ।

द्रव्य-संवर—४ १४१ ब।

द्रव्य-संसार—४ १४७ अ।

द्रव्य-सल्लेखना—४ ३८२ ब।

द्रव्य-सामायिक—४ ४१५ ब।

द्रव्य-सूत्र—यज्ञोपवीत ३.३६९ ब।

द्रव्य-स्त्री—४ ४५० अ।
द्रव्यस्तव—भक्ति ३.२०० ब।
द्रव्यस्पर्श—४ ४७५ ब।
द्रव्य-स्वभाव—तत्त्व २ ३५३ अ, परमाणु ३ १३ अ।
द्रव्यांश—उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य १.३६१ ब।
द्रव्यानंत—१ ५५ ब।
द्रव्यानुयोग—अनुयोगद्वार १ ९९ ब-१०१ ब, स्वाध्याय ४.५२३ ब।
द्रव्यारोप—उपचार १ ४१९ ब-१ ४२१ ब।
द्रव्यार्थता—कर्म २.२६ ब।
द्रव्यार्थिक—निर्देश २.५१४ ब, २.५१५ अ, २ ५४२ अ, ऋजुसूत्र २ ५३४ ब, एकान्त (चक्षु) १ ४६२ ब, द्रव्य २ ४६१ ब, निक्षेप २ ५९३ ब, निश्चय २ ५५४ ब, पर्यायार्थिक २ ५३५ ब, सम्यक्मिथ्या २.५२६ ब, स्याद्वाद ४.४९८ अ।
द्रव्याश्रय—द्रव्य २ ४६० अ।
द्रव्येंद्रिय—१ ३०१ ब, १ ३०५ ब, केवली २ १६२ अ।
द्रव्योदय—उदय १ ३६५ ब।
द्रव्योपचार—उपचार १ ४२१ अ, पर्यायारोप १ ४२१ ब।
द्रव्योपशम—१.४३७ अ।
द्रह—२ ४६१ ब, ह्रद ४ ५३८ अ, देवकुरु उत्तरकुरु—निर्देश ३ ४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३ ४९०, ३.४९१, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने। वर्षधर पर्वत पर—निर्देश ३.४४६ ब, ३ ४५३ ब, ३ ४६३ अ-ब, विस्तार ३ ४९०-४९१, गणना ३ ४४५ अ, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने इनके कूट ३ ४७४ अ।
द्रहवती—२ ४६१ ब, निभंगा नदी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४८९-४९०, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने।
द्रुमसेन—नारायण ४ १८ ब।
द्रोण—२ ४६१ ब, तौल का प्रमाण २.२१५ अ।
द्रोणमुख—२ ४६१ ब, चक्रवर्ती ४ १३ ब, बलदेव ४ १७ ब।
द्रोणाचार्य—२ ४६१ ब।
द्रौपदी—२.४६२ अ।
द्वंद्व—२ ४६२ अ।
द्व्यंग नमस्कार—२.५०६ अ।
द्वात्रिंशतिका—२.४६२ अ, इतिहास १ ३४१ अ, १ ३४३ अ, १ ३४४ अ।
द्वादश—अंग (श्रुतज्ञान) ४.६७ ब, अनुप्रेक्षा १ ७९ अ, आयतन (बौद्ध) १ २५१ अ, आवर्त (कृतिकर्म) १ २७९ अ, २ १३३ ब, चक्रवर्ती ४ १० ब, तप २.३५९ अ, भावना १ ७८ ब, भिक्षु प्रतिमा ४.३९२ ब।
द्वादशवर्षी दुर्भिक्ष—१ परि०/२ १-३।
द्वादशांग—आगम १.२२८ ब, आत्मा १.२४४ अ, गणधर से उत्पत्ति २ २१२ ब, श्रुतकेवली ४.५६ अ, श्रुतज्ञान ४ ६७ अ-ब।
द्वादशांगपूजा—इतिहास १ ३४७ अ।
द्वादशानुप्रेक्षा—शुभोपयोग १ ४३४ ब।
द्वादशी व्रत—२ ४६२ अ।
द्वापुरी—नारायण ४ १८ अ।
द्वार—जगती के द्वार—निर्देश ३ ४४४ ब, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने।
द्वारवंग—२ ४६२ अ।
द्वारावती—नारायण ४ १८ अ, नेमिनाथ २ ३७९, बलदेव ४ १७ अ।
द्विकावली व्रत—२ ४६२ अ।
द्विगुण क्रम—२.४६२ अ।
द्विज्ञानसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४।
द्विचत्वारिंशत—बादाल संख्या की सहनानी २ २१८ ब।
द्विचरम देह—चरम २ २७८ ब।
द्विचरम देही—लौकान्तिक आदि देव ४.५१० ब।
द्विचरमावली—उपशम १ ४४१ ब।
द्विचारित्रसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३।
द्विचूड—विद्याधर वंश १ ३३९ अ।
द्विज—ब्राह्मण ३.१९५ अ, वर्णव्यवस्था ३ ५२३ अ-ब, संस्कार ४.१५३ अ।
द्विजपति—हरिदेव ४ ५३० अ।
द्वितीयगुण—गुणांश २ २४१ अ।
द्वितीय-गुण-हानि—गणित २ २३१ ब।
द्वितीय मूल—गणित २ २२३ अ।
द्वितीय वर्ग—गणित २ २२३ अ।
द्वितीय स्थिति—अन्तरकरण १ २५ अ, १.२६ अ, गुण-श्रेणी संक्रमण ४ ८९ ब, स्थिति ४.४५७ अ।
द्वितीयावली—आवली १.२७९ ब।
द्वितीयोपशम सम्यक्त्व—२.४६२ ब, अन्तरकरण १ २५ ब, उपशम १.४३९ अ, करणत्रिक २ ६-१४, श्रेणी ४ ७४ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३६९ ब, सासादन ४ ४२६ अ। प्ररूपणा—बंध ३.१०८, बंधस्थान ३ ११२, उदय १ ३८५, उदयस्थान १ ३८७, १ ३८९, १ ३९२, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान

४.२८९, ४.२९६, त्रिसंयोगी भंग १ ४०० । सत् ४ १५८, संख्या ४ १०९, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४.४९३, काल २.११८, अन्तर १.४ अ, अल्पबहुत्व १.१४३ ।

द्विदल—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब ।

द्विपर्वा—२.४६२ ब, विद्या ३.५४४ अ।

द्विपृष्ठ—२.४६२ ब, नारायण ४ १८ अ, वासुपूज्यनाथ २.३९१, भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ ।

द्विरदरथ—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब ।

द्विरूप—घनधारा, घनाघनधारा, वर्गधारा २.२२९ अ।

द्विविस्तारात्मक—२ ४६२ ब ।

द्विशत षट्पंचाशत—उत्कृष्ट असख्यातासंख्यात की सहनानी २ २१९ अ, जघन्य परीतानन्त की सहनानी २.२१९ अ, ध्रुवराशि की सहनानी २.२१९ अ ।

द्विसंधान महाकाव्य—इतिहास १.३४२ अ ।

द्विस्थानीय—अनुभाग १.९१ ब ।

द्वीन्द्रिय जाति नामकर्म—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६, बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ । सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८ ।

द्वीन्द्रिय जीव—अवगाहना १.१७९, आयु १.२६३, १.२६४, इन्द्रिय १ ३०६ ब, जीव २.३३३ ब, जीवसमास २.३४३, त्रस २.३९८, प्राण ३ १५४ अ, संक्लेश विशुद्धि स्थानों का अल्पबहुत्व १ १६० । प्ररूपणा—बन्ध ३.१०३, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब । सत् ४ १९५, संख्या ४ ९९, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४ ४८३, काल २ १०६, अन्तर १.११, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

द्वीप—२.४६२ ब, कुरुवंश १.३३५ ब, गणित (परिधि, सूची, व्यास तथा क्षेत्रफल) २.२३३ ब, चक्रवर्ती का वैभव ४.१३ अ, चातुर्द्वीपिक भूगोल ३.४३७ अ, बलदेव का वैभव ४.१८ अ, बौद्धाभिमत ३.४३४ ब, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब ।

द्वीप—जैनाभिमत द्वीप सागर—नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, संख्या. ३ ४४२ अ, अंकन ३.४४३ । गगा आदि कुण्डों मे स्थित—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४८४, वर्ण ३.४७७, अंकन ३ ४४७ । लवण सागर मे स्थित—निर्देश ३ ४६२ अ, विस्तार ३ ४७९, अंकन ३ ४६१ ।

द्वीपकुमार—२ ४६२ ब, भवनवासी देव—निर्देश ३ २१० ब, नामनिर्देश ३ २०८ अ, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८, अवस्थान ३ २०९ ब, ३ ६१२-६१४, ३ ४७१, आयु १.२६५ । इन्द्र—निर्देश ३ २०८ अ, शक्ति आदि ३ २०८ ब, परिवार ३ २०९ अ ।

द्वीपकुमार प्ररूपणा—बध ३.१०२, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२, उदीरणा १.४११, अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब । सत् ४.१८८, सख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४ अन्तर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

द्वीपवाह—राक्षसवश १ ३३८ अ ।

द्वीपसागरप्रज्ञप्ति—२.४६२ ब, श्रुतज्ञान ४ ६८ ।

द्वीपसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ।

द्वीपायन—कुरुवंश १ ३३५ ब, तीर्थंकर २ ३७७ ।

द्वेष—२ ४६२, अतीत द्वेष ३ ३१८ ब, अशुभोपयोग १ ४३३ ब, उपयोग १ ४३३ अ, प्रत्यय ३ १२६ ब, कषाय २ ३९ अ, त्याग ३.३९७ ब, मूर्त ३ ३१८ ब; राग ३ ३९५ अ, ३.३९७ ब, विभाव ३ ५५८ ब, सत्त्व ४ ५२८, सम्यग्दृष्टि ४ ३५१ ब, हिसा १.२१६ अ, १.२१७ ब ।

द्वेषिकी क्रिया—हिंसा ४.५३२ अ ।

द्वेषोदय—सम्यग्दर्शन ४.३५१ ब ।

द्वैत—२ ४६३ अ, द्रव्य २.४५८ ब ।

द्वैतदर्शन—वेदान्त ३.५९६ अ ।

द्वैतनय—अद्वैतनय १.४७ अ, नय २ ५२३ अ ।

द्वैतपक्ष—द्रव्य २.४५८ अ ।

द्वैतवाद—वेदान्त ३ ५९९ अ ।

द्वैताद्वैत—वेदान्त ३.५९७ अ ।

द्वैताद्वैत नय—अद्वैतनय १.४७ अ ।

द्वैताद्वैतवाद—वेदान्त ३ ५९८ ब ।

द्वैपायन—२.४६३ अ, तीर्थंकर २.३७७ ।

द्व्यर्धगुणहानि—उदय १.३७१, गणित २.२३१ ब ।

द्व्याश्रय महाकाव्य—२.४६३ ब, इतिहास १.३४४ अ ।

ध

धण्णकुमारचरिउ—इतिहास १.३४५ ब।
धन—२ ४६३ ब, गणित २ २२२ ब, पदधन-सर्वधन आदि २ २२९ ब, दान २ ४२४ अ।
धनकुमारचरित्र—२.४६४ अ, इतिहास १ ३४४ ब, १.३४६ अ।
धनंजय—२ ४६३ ब, कवि—इतिहास १.३२९ ब, १ ३४२ अ, यदुवश १.३३७, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ, विद्याधरवश १.३३९ अ।
धनंजय निघण्टु—इतिहास १.३४२ अ।
धनद—लोकपाल कुबेर ३ ४९१ ब।
धनद-कलश-व्रत—२ ४६३ ब।
धनदेव—२.४६३ ब।
धनपति—२.४६३ ब, अरहनाथ २.३७८।
धनपाल—२ ४६३ ब, कवि—इतिहास १.३३० अ, १ ३४२ अ। द्वितीय—इतिहास १ ३३२ ब, १.३४५ ब, यक्ष ३.३६९ अ।
धनपालक—गणधर २ २१३ अ।
धनप्रभ—राक्षसवश १.३३८ ब।
धनमित्र—नारायण ४ १८ अ।
धनराशि—२.४६३ ब।
धनानद—२.४५३ ब, नन्दवश १.३१० ब, १.३१३।
धनिष्ठा—२.४६३ ब, तीर्थंकर २.३८५, वसु नक्षत्र २.५०४ ब।
धनुष—२.४६३ ब, क्षेत्रप्रमाण २ २१५ अ, जीवा, बाण आदि का क्षेत्रफल २ २३३ अ।
धनुषपृष्ठ—२ ४६४ अ, क्षेत्रफल आदि २.२३३ अ।
धन्य—२ ४६४ अ, अनुत्तरोपपादिक १.७० ब।
धन्यकुमारचरित्र—२ ४६४ अ, इतिहास १ ३४४ ब, १ ३४६ अ।
धम्मपरिक्खा—इतिहास १ ३४३ अ, १.३४६ ब।
धम्मरसायण—२ ४६४ अ, इतिहास १ ३४२ ब।
धर—यदुवंश १.३३६।
धरण—२.४६४ अ, तौल का प्रमाण २.२१५ अ, पद्मप्रभनाथ २.३८०।
धरणा—शीतलनाथ २.३८८।
धरणानंद—नागकुमारेन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, आयु १.२६५, परिवार ३.२०९ अ, निवास ३.२०९ ब।
धरणी—२.४६४ अ, धारणा २.४९१ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।
धरणीतिलक—२.४६४ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।
धरणीधर—२ ४६४ अ।
धरणीवराह—२.४६४ अ, महीपाल ३.२९२ ब।
धरणेंद्र—२ ४६४ अ, विद्याधरवश १ ३३८ ब।
धरसेन—२ ४६४ अ। मूलसंघ १ ३१७, १परि०/२ १,२,७,८, १ परि०/१०। मूलसघ विभाजन १ ३२२ ब। इतिहास १ ३२८ ब, १ ३४० अ। पुन्नाट सघ—१ ३२७ अ, इतिहास १ ३२९ अ। सेनसघ—१ ३२६ अ, इतिहास १.३३२ ब, १ ३४५ अ।
धराधर—२.४६४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५६३ अ।
धर्म (नाम)—बलदेव ४.१६ अ, वासुपूज्य श्रेयासनाथ २.३८७, विमलनाथ २ ३९१; श्रुतकेवली १.३१६।
धर्म (न्याय)—पक्ष ३.३ अ।
धर्म (पुरुषार्थ)—२.४६४ अ, अनुकंपा १.६९ ब, अनुभव १ ८५ ब, अभिप्राय मिथ्यादृष्टि ३ ३०६ ब, अवर्णवाद १.२०१ अ, उपदेश १ ४२४ अ, उपयोग १ ४३४ अ, १.४३५ अ, करुणा २ १५ अ, कल्कि २.३१ अ, गुप्ति २ २५० ब, चारित्र २.२८५ ब, २.२८९ अ, चिदानन्द १ ८५ ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०१ अ, निश्चय १ ८५ ब, २ ४७१ अ, पुण्य १.४३५ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ अ, ३ ३०४ अ, ३ ३०५ अ, वैराग्य (मिथ्यादृष्टि) ३ ३०३ अ, व्यवहार २ ४७१ अ, शुभोपयोग १ ४३५ अ, श्रावक ४ ५१ अ, समिति २ २५० ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ, सुख ४.४३१ ब।
धर्म (स्वभाव)—अनन्त २ २४४ ब, अनेकात १ १०८ ब-१११, एकान्त १ ४६० ब, १.४६२ ब, १ ४६३ अ, गुण २ २४० अ, २ २४४ ब, २ ३३७ अ, जीव २ ३३७ अ, सप्तभगी (सर्वथा) ४ ३२५ अ, सापेक्ष १ १०९, ४.३२२ ब, ४ ४९८ ब, स्याद्वाद ४ ४९८ ब, स्वभाव ४.५०६ अ-ब, ४ ५०७ ब।
धर्म-अनुप्रेक्षा—१ ७५ अ, १ ७९ ब।
धर्मकथा—उपयोग १ ४२९ ब, कथा २ २ अ।
धर्मकीर्ति—२ ४७६ अ, नन्दिसघ १ ३२३ ब, इतिहास १ ३३३ ब। बौद्धाचार्य—इतिहास १.३२९ अ।
धर्मचंद्र—२ ४७६ अ, नन्दिसंघ भट्टारक १ ३३४ अ, १ ३२३ ब, इतिहास १ ३३४ ब।
धर्मचक्र—२.४७६ ब, समवसरण ४.३३१ अ।
धर्मचक्र व्रत—२.४७६ ब।
धर्मदत्तचरित्र—२.४७६ ब, इतिहास १ ३४६ अ।
धर्मद्रव्य—अनुभाग १.८८ अ, उत्पादादि १.३६२ ब, उप-

कार २.६३ ब, २.६५ अ, काल २.८५ अ, द्रव्य २.४८७ ब।
धर्मधर—२ ४७६ ब, इतिहास १ ३३३ अ, १ ३४६ अ।
धर्मध्यान—२ ४७६ ब, अनुप्रेक्षा १ ७९ अ, अनुभव १ ८५ अ-ब, अनुभव (गुणस्थान) १.८५ ब, ध्याता २ ४९२ अ, २.४९३ अ, प्रतिक्रमण ३ ११७ ब, बाह्य धर्मध्यान २ ४८१ अ, शुभोपभोग १ ४३१ ब।
धर्मनदि—नन्दिसघ भट्टारक १ ३२३ ब।
धर्मनाथ—२.४८७ अ, पूर्वभव आदि २ ३७९-३९१, वज्र २ ३७९।
धर्मपत्नी—स्त्री ४ ४५० ब।
धर्मपरीक्षा—२.४८७ अ, अमितगति १ १३२ अ, इतिहास १ ३४३ अ, १ ३४४ अ।
धर्मपाल—२ ४८७ अ।
धर्मपुरुषार्थ—३ ७० अ, (विशेष दे० धर्म)।
धर्मभूषण—२ ४८७ अ। इतिहास—प्रथम १ ३३२ ब, द्वितीय १.३३२ ब, १ ३४५ ब, तृतीय १ ३३२ ब।
धर्ममूढता—मूढता ३ ३१५ ब।
धर्मयुगल—अनेकान्त १ १०९ अ।
धर्मरत्नाकर—२ ४८७ अ, इतिहास १ ३४३ अ।
धर्मरसिक—इतिहास १ ३४७ ब।
धर्मरुचि—चक्रवर्ती ४ १० अ।
धर्मविलास—२ ४८७ अ।
धर्मवीर्य—पद्मप्रभनाथ २ ३९१।
धर्मशर्माभ्युदय—२.४८७ अ, इतिहास १ ३४३ अ।
धर्मश्रवण—सम्यग्दर्शन का निमित्त ४.३६३ अ।
धर्मश्री—सम्भवनाथ २.३८८।
धर्मसंग्रह—२.४८७ अ, इतिहास १ ३४६ अ।
धर्मसागर—इतिहास १ ३३४ ब।
धर्मसूरि—२ ४८७ अ।
धर्मसेन—२ ४८७ अ, मूलसघ १.३१६, लाडबागड सघ १ ३२७ ब। इतिहास—प्रथम १.३२८ अ, १ ३२९ ब, द्वितीय १.३३० अ।
धर्माकर दत्त—२.४८७ ब, अर्चट १ १३४ ब।
धर्माधर्म (द्रव्य)—२ ४८७ ब।
धर्मानुप्रेक्षा—१ ७५ अ, १.७९ ब।
धर्मानुराग—शुभोपयोग १.४३४ अ, १ ४३५ अ, राग ३ ३९५ अ।
धर्मामृत—२.४९० ब, इतिहास १ ३४४ अ।
धर्मार्या—सम्भवनाथ २.३८८।
धर्मास्तिकाय—दे० धर्मद्रव्य।
धर्मोत्तर—२.४९० ब।
धर्मोपदेश—उपदेश १.४२४ अ, उपयोग १.४३० अ।
धर्मोपदेशपीयूषवर्षा श्रावकाचार—इतिहास १ ३४६ ब।
धर्मोपदेष्टा—वक्ता ३ ४९६ ब।
धर्म्य—धर्मध्यान २.४७८ अ।
धव—पार्श्वनाथ २ ३८३।
धवल (कवि)—२.४९१ अ, इतिहास १.३४३ ब।
धवल रुधिर—अर्हन्त १ १३७ ब।
धवल सेठ—२ ४९१ अ।
धवला—२.४९१ अ, इतिहास १.३४१ ब।
धवलाचार्य—२.४९१ अ, इतिहास १ ३३१ अ।
धातकीखंड—२ ४९१ अ। निर्देश ३ ४६२ ब, नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अकन ३ ४४३, चित्र (सं० ३७) ३.४६४, ज्योतिष चक्र २ ३४८, अधिपति देव ३ ६१४। द्वितीय धातकीखण्ड ३ ४७० अ। वैदिकाभिमत ३.४३२ ब।
धातकीखंडसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।
धातकी वृक्ष—३ ५७८ ब, निर्देश ३.४६३ अ, विस्तार ३.४५८ अ, वर्ण ३ ४७७, अकन ३ ४६३।
धातु—२.४९१ अ, औदारिक शरीर १ ४७१ ब।
धात्री दोष—२.४९१ अ, आहार १ २९१ अ, वसतिका ३.५२९ अ।
धान्यमाष फल—तौल का प्रमाण २.२१५ अ।
धान्यपुर—चक्रवर्ती ४ १० ब।
धान्यरस—रस ३ ३९२ ब।
धायदोष—आहार १.२९१ अ, वसतिका ३ ५२९ अ।
धारण—कुरुवश १ ३३५ ब, यदुवश १ ३३७, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।
धारणा—२ ४९१ अ, आग्नेयी आदि १ ३६ अ, ईहा ज्ञान १.३५१ ब, उपयोग १.४३४ अ, ज्ञानत्व १ ३५१ ब, ध्यान २ ४९६ अ, ध्रुवज्ञान ३.२५८ ब, प्रोषधोपवास ३.१६३ ब, मतिज्ञान ३.२५३ अ, ३ २५८ ब, विषकुम्भ १.४३४ अ।
धारणा (नाम)—श्रेयासनाथ २ ३८८, सुमेरु पर्वत के वनो मे देव भवन—निर्देश ३.४५० अ, अकन ३ ४५१।
धारणावरणी कर्म—ऋद्धि १ ४४९ अ।
धारणी—२.४९१ ब, विद्या ३ ५४४ अ।
धारा—२ ४९१ ब, गणित २ २२९ अ।
धारागृह—चक्रवर्ती ४ १५ अ।
धाराचारण ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५३ अ।
धारा नगरी—२.४९१ ब।

धारावाहिक ज्ञान—श्रुतज्ञान ४.५९ ब।
धारिणी—२.४९१ ब, कुलकर ४.२३, विद्या ३.५४४ अ।
धार्मिक क्रिया—क्रिया २ १७३ अ।
धीमान्—यदुवंश १ ३३७।
धीर—२ ४९१ ब, मल्लिनाथ २ ३७८, यदुवंश १ ३३७
धृतरथ—कुरुवंश १.३३५ ब।
धूप—पूजा ३ ७८ ब।
धूपघट—समवसरण ४ ३३० ब, ४.४३१ अ।
धूपदशमी व्रत—२ ४९१ ब।
धूपनी—चैत्यालय २ ३०२ अ।
धूम—ग्रह २.२७४ अ।
धूमकेतु—२ ४९१ ब, ग्रह २ २७४ अ।
धूमचारणऋद्धि—१ ४५२ ब।
धूमदोष—२ ४९२ अ, आहार १.२९२ अ, वसतिका ३ ५३० अ।
धूमप्रभा—२ ४९२ अ। पंचम नरक पृथिवी—निर्देश २.५७६ अ, पटल २ ५७९, इन्द्रक श्रेणीबद्ध २ ५७८, ५८०, विस्तार २.५७६, २ ५७८, अंकन ३.४५७। नारकी - अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १ १९८ अ, आयु १.२६३।
धूमप्रभा—प्ररूपणा—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ १७०, सख्या ४.९५, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४.४७९, काल २ १०१, अन्तर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।
धूलिरेखा—क्रोध २ ३८ अ।
धूलिशाल—२.४९२ अ, शीतलनाथ २.३८४, समवसरण ४ ३३० ब।
धृत—कुरुवंश १ ३३५ ब, निषध पर्वत का कूट तथा देव - निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४।
धृततेज—कुरुवंश १.३३५ ब।
धृतधर्मा—कुरुवंश १ ३३५ ब।
धृतपद्म—कुरुवंश १ ३३५ ब।
धृतमान—कुरुवंश १.३३५ ब।
धृतयश—कुरुवंश १ ३३५ ब।
धृतराज—कुरुवंश १.३३६ अ।
धृतराष्ट्र—२.४९२ अ, कुरुवंश १.३३६ अ-ब।
धृतवीर्य—कुरुवंश १.३३५ ब।
धृतव्यास—कुरुवंश १ ३३५ ब।
धृतिकूट—निषध पर्वत—निर्देश ३ ४७२, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४। रुचकवर पर्वत—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६९।
धृतिक्रिया—सस्कार ४ १५१ अ।
धृतिक्रिया मन्त्र—मन्त्र ४ २४६ ब।
धृतिकर—कुरुवंश १ ३३५ ब, १.३३६ अ।
धृतिक्षेम—कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ।
धृतिदृष्टि—कुरुवंश १ ३३५ ब।
धृतिदेव—कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ।
धृतिदेवी—२ ४९२ अ, तिगिच्छ ह्रदवासिनी—निर्देश ३ ४५३ ब, अवस्थान ३ ६१४ अ, भवन-विस्तार ३ ६१५, परिवार ३ ६१२ अ, आयु १ २६५। निषध पर्वतवासिनी ३ ४५३ ब। रुचकपर्वतवासिनी ३.४७६ अ, अंकन ३ ४६९।
धृतिभावना—३ २२४ ब।
धृतिमित्र—कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ।
धृतिषेण—२.४९२ अ, मूलसघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ।
धृतेन्द्र—कुरुवंश १ ३३५ ब।
धृतोदय—कुरुवंश १ ३३५ ब।
धैर्या—२ ४९२ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।
धैवत—स्वर ४ ५०८ ब।
ध्याता—२ ४९२ अ।
ध्यान—२ ४९४ अ, अनुभव १ ८५ ब, अभ्यास १ १३१ ब, आत्मा ३ ७ ब, उपयोग १ ४३१ अ, एकाग्र १ ४६५ ब, कृतिकर्म २ १३६ अ, केवली २ १६५ अ, चिन्तानिरोध १ ४६५ ब, धर्म-ध्यान २ ४८१ अ, ध्याता २.४९३ अ, निश्चय १ ८५ ब, पदस्थ ३.६ ब, ३ ७ ब, पूजा ३.७५ अ, प्रशस्त ३ १५१ ब, प्राणायाम ३ १५५ ब, ३ १५६ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, भावना २.३४६ ब, योग ३ ३७५ अ, वर्णमातृका ३.६ ब, शुभोपयोग १४ ३१ अ, संहनन ४ १५५ ब, सल्लेखना ४.३९० ब, ४ ३९२ अ, सामायिक ४ ४१७ ब।
ध्यानशुद्धि—४ ४० ब।
ध्यानस्तव (शास्त्र)—इतिहास १ ३४५ अ।
ध्यानस्थ—योग ३.३८० अ।
ध्यानस्थ पुरुष—केवली २ १५५ अ।
ध्येय—तत्त्व २ ३५३ अ, ध्यान २ ४९९ ब, पदस्थ ध्यान ३ ५ ब, ३.६ ब, परम भाव ३ १३ अ, परमेष्ठी ३.३०६ ब, भाव ३ ३०६ ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०६ ब मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, समयसार ४ ३२९ अ, सामायिक ४.४१७ अ, शुद्धोपयोग १ ४३१ अ।

ध्रुव—अनुभाग १.८१ अ, उत्पादादि १.३५८ अ, ध्येय २ ५०२ ब, पर्याय (उत्पादादि) १ ३६२ अ, प्ररूपणा —३.११४, मतिज्ञान३.२५८ अ, यदुवंश १.३३७, स्थान ४.४५३ अ।

ध्रुवपद—१ १०२ ब, १.१०३ ब।

ध्रुवबन्धी प्रकृति— ३ ८८ अ, ३.९१ अ, ३.९२ अ।

ध्रुवराज—२ ५०३ अ, अकालवर्ष १.३१ अ।

ध्रुवराशि—सहनानी २ २१९ अ।

ध्रुवशून्य वर्गणा—३ ५१३ अ-ब।

ध्रुवसेन—२ ५०३ अ, इतिहास १ ३२८ अ।

ध्रुवस्कंध वर्गणा—३.५१३ अ, ब, ३ ५१५ ब, ३ ५१६ अ।

ध्रुवोदयी प्रकृति—उदय १ ३६६ ब, १.३७४ ब।

ध्रौव्य—अस्तित्व १ २१२ ब, उत्पादादि १.३५८ अ, पर्याय (उत्पादादि) १.३६१ ब।

ध्वजभूमि—२ ५०३ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०३, समवसरण ४.३३० ब।

ध्वजमाल—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

ध्वजा—चैत्य-चैत्यालयं २.३०२ अ, २.३०३ अ।

ध्वनि—ओम् (ऊँकार) १.४६९ ब, स्फोट ४.४९५ अ।

ध्वान—२ ५०३ अ।

न

नंद—२ ५०३ अ, तीर्थंकर २.३७७, नमिनाथ व वर्द्धमान २ ३७८, शान्तिनाथ २ ३८३, साख्यदर्शन ४.३९८ ब। मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अकन ३ ४६४।

नंदन—२ ५०३ अ, अनुत्तरोपपादक १ ७० ब, गणधर २.२१२ ब, चक्रवर्ती ४ १० ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ, तीर्थंकर २.३७७, नन्दन वन का खण्ड ३ ४५० अ, यदुवश १ ३३७, वर्द्धमान २ ३७८, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

नंदन (कूट)—रुचकवर पर्वत का कूट - निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६९। सुमेरु पर्वत के वन का कूट निर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४५१।

नंदन (देव)—मानुषोत्तर पर्वत के कूट का—निर्देश ३.४७५ अ, अकन ३.४६४।

नदन (स्वर्गपटल)—सौधर्म स्वर्ग का पटल - निर्देश ४.५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४.५१९ ब। देव-आयु १ २६६।

नंदनपुर—प्रतिनारायण ४.२० ब।

नंदनवन—चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ, सुमेरु पर्वत का वन—निर्देश ३.४५० अ, विस्तार ३.४८८, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३.४६४ के सामने। (चित्र सं. ३७), चित्र ३.४५१।

नदपुरी—बलदेव ४.१६ ब।

नंदवश—२ ५०३ अ, इतिहास १.३१३।

नंदवती—नंदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ ब, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४९१, अकन ३.४६५। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३.४६८।

नंदसप्तमी व्रत—२.५०३ अ।

नंदा—२.५०३ ब, इन्द्रों की वल्लभिका देवी ४.५१३ ब। नन्दीश्वर द्वीप की वापी ३ ४६३ ब, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४९१, अकन ३.४६५। मनुष्यलोक ३ २७५ ब। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३.४६८, ३ ४६९। वाचना ३ ५३१ ब, शीतलनाथ २.३८०।

नदावती—२.५०३ ब।

नदि—२ ५०३ ब, मूलसघ १.३१६। नन्दीश्वर द्वीप व सागर का रक्षक देव ३ ६१४।

नदि-अन्वय—द्रविडसघ १ ३२० ब।

नंदिघोषा—२ ५०३ ब, नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ ब, नामनिर्देश३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४९१, अकन ३ ४६५।

नंदितट गच्छ—काष्ठासघ १ ३२१ अ, जैनाभासी सघ १ ४६५ अ।

नदितटग्राम - काष्ठासंघ १ ३२१ अ।

नंदिन—भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।

नंदिनी—२ ५०३ ब, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ, व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ३.६११ ब।

नंदिप्रभ—२ ५०३ ब, नन्दीश्वर द्वीप सागर का रक्षक देव ३ ६१४।

नंदिभूति—भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।

नंदिभूतिक—भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ।

नंदिमित्र—२ ५०३ ब, आचार्य—मूलसंघ १.३१६, इतिहास १.३२८ अ, गणधर २ २१३ अ, बलदेव २ ३९१, ४.१६ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।

नंदिवर्द्धन—२.५०३ ब, मगधदेश १.३१० ब, १ ३१२, १ ३१३।

नंदिवर्द्धना—२ ५०३ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ. अकन ३.४६९।

नंदिवृक्ष—नन्दि संघ १. परि०/२.९, १ परि०/४.१।

नंदिषेण—२ ५०३ ब, अच्युत १ ४१ अ, तीर्थंकर चन्द्रप्रभु तथा सुपार्श्वनाथ २.३७८, पुन्नाटसंघी आचार्य १ ३२७ अ, बलदेव ४.१६ अ, शलाकापुरुष ४.२६ अ।

नंदिषेणा—रुचक पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६८।

नंदिसंघ—२.५०३ ब, इतिहास १.३१८ ब, मूलसंघ १ ३२२ ब, १, परि०/२ ३, माघनन्दि १. परि०/२.९, विशेष परिचय १ ३१८ ब, १ परि०/२ १,३,५,७, १. परि०/४.१,२। देशीय गण १ ३२४ ब, १ ३२५, बलात्कार गण १.३२३ अ, ब।

नंदि—गणधर २.२१३ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ, मल्लिनाथ २ ३९१, शान्तिनाथ २.३८४।

नंदीश्वर कथा—२ ५०३ ब।

नंदीश्वर द्वीप—२.५०४ अ, चैत्यचैत्यालय २.३०३ अ, निर्देश ३.४६३ ब नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अकन ३ ४४३, चित्र ३.४६५, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

नंदीश्वरपंक्ति व्रत—२ ५०४ अ।

नंदीश्वर पूजा—३ ७५ ब।

नंदीश्वर सागर—२ ५०४ अ, नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८ जल का रस ३ ४७० अ, अकन ३.४४३, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४।

नंदीसूत्र—२ ५०४ अ।

नंदोत्तर—मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अकन ३ ४६४। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३.४६८, ३,४६९।

नंदोत्तरा—२ ५०४ अ। नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ ब, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४९१। अंकन ३ ४६५। रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९।

नंद्यावर्त—चक्रवर्ती ४ १५ अ, शान्तिनाथ २ ३८३, सुपार्श्वनाथ २ ३७९।

नंद्यावर्त—२ ५०४ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६९। सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४.५१७, अंकन ४.५१९ ब, देव-आयु १ २६७।

नकुल—२.५०४ अ, कुरुवंश १ ३३६ अ।

नक्रचक्रा—२.५०४ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

नक्षत्र—२ ५०४ अ, मूलसंघ १ ३१६, इतिहास १.३२८ अ।

नक्षत्र (ज्योतिषलोक)—निर्देश २ ३४९ ब, २.३५० ब, विमानों का विस्तार २ ३५१, किरणें तथा वाहक देव २ ३४७, गगनखंड २ ३५० ब, वीथियाँ २ ३४९, गतिविधि २.३५० ब, चार क्षेत्र २ ३४९ अ, अकन २ ३४८, २८ भेद २ ५०४ ब, उत्कृष्ट नक्षत्र (सल्लेखना) ४ ३९७ ब, वैदिकाभिमत ३.४३३।

नक्षत्र (ज्योतिषदेव)—नामनिर्देश २ ३४५ ब, २८ भेद २ ५०४ ब, इन्द्र नामनिर्देश २.३४५ ब, किरणें तथा शक्ति २.३४७, अवस्थान २.३४६ ब, परिवार २.३४६ अ, विमान संख्या २ ३४८ अ। देव—अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १.२६६।

नक्षत्रदेव (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११, अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

नक्षत्रदम—राक्षसवंश १ ३३८ ब।

नक्षत्रमाला व्रत—२ ५०५ अ।

नख—औदारिक शरीर १.४७२ अ।

नख समानता—अर्हंतातिशय १ १३७ ब।

नग—यदुवंश १ ३३७।

नगनत्व—अचेलकत्व १ ४० ब, निर्ग्रंथ २ ६२१ ब, लिंग ३.४१७ अ, ३.४१९ अ, परिषह १ ३९ ब, ३ ३३ ब, ३ ३४ अ, साधु ४.४०८ अ, ४.४०९ अ।

नगर—२.५०५ अ। भवनवासी देवों के—निर्देश ३.२०७ ब ३ २१० अ। व्यन्तर देवों के—निर्देश ३.६१२ ब, बनावट ३ ६१२ ब, विस्तार ३ ६१५ अ, संख्या ३ ६१२ ब, विजयदेव की नगरी ३.६१२ ब। ज्योतिष देवों की—निर्देश २ ३५१। वैमानिक देवों की—निर्देश ४.५२१ ब, विस्तार ४ ५२१ ब। लवणसागर में ३ ४६२, अकन ३.४६१।

नगरनायिका—ब्रह्मचर्य ३ १९२ ब।

नगरी—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, प्रत्येक महाक्षेत्र की राजधानी—निर्देश ३.४४६ अ, अंकन ३.४४४,

३ ४४७। विदेह क्षेत्रो की राजधानी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, अकन ३ ४४४, ३ ४६०, ३.४६४ के सामने (चि. स. ३७)।

नघुष—२.५०५ अ, इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।

नति—नमस्कार २.५०६ अ।

नतित्रय—कर्म २ २६ अ, कृतिकर्म २.१३३ ब, सामायिक ४ ४१६ ब।

नथमल विलाल (कवि)—इतिहास १ ३३४ ब।

नदी—२.५०५ अ, चातुर्द्वीपिक भूगोल मे ३ ४३७ ब, बौद्धाभिमत ३.४३४ ब, विहार काल में नदी का उल्लघन ३ ५७४ ब। जैनाभिमत भूगोल के अनुसार प्रत्येक क्षेत्र की महानदी, विदेह की महानदी तथा विभंगा नदी—निर्देश ३ ४५५ अ, ३ ४६० अ, विभगा नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ४ ४८९, ३ ४९०, अकन ३ ४४४, ३ ४४७, ३ ४६४ के सामने जल का वर्ण ३ ४७८, गणना ३ ४४५ ब।

नदीस्रोतन्याय—२ ५०५ अ।

नन्नराज—२ ५०५ अ।

नपुसकवेद—२ ५०५ अ, आहारक काययोग १ २९७ ब, कषाय २.३५ ब, नरकगति ३.५८६ ब, पुरुषवेद ३.५८६ अ, राग कषाय २ ३९ अ, सगति ४.११९ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ ब।

नपुंसक-वेद-कर्मप्रकृति—निर्देश ३ ३४४ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३.३४४ अ, स्थिति ४.४६१, स्थिति सत्त्व ४.३०८, स्थितिसत्त्व का अल्पहुत्व १ १६५ ब, अनुभाग १ ९५ अ, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ १०९, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १ ३७३ ब, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २९५, त्रिसयोगी भग १.४०१ ब। सक्रमण ४ ८५अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

नपुसक-वेद-मार्गणा—प्ररूपणा—बन्ध ३.१०५, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३८२,उदय की विशेषता १ ३७३ ब, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्व ४.२८३, सत्वस्थान ४.३००, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०७ अ, सत् ४.२२६, सख्या ४.९४ ब, ४.१०४, क्षेत्र २.२०३, स्पर्शन ४ ४८७, काल २.१११, अन्तर १.१४, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १.१४९।

नपुसक-वेद-सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ ब।

नभःसेन—शकवश १ ३१४, नरवाहन २.५८० ब।

नभ—२.५०५ ब, ग्रह २ २७४ अ, निमित्त ज्ञान २.६१२ ब।

नभचर जीव—निर्देश २ ३६७, अवगाहना १.१७९, आयु १.२६३, इन्द्रिय १.३०६ ब, जीव समास २.३४३।

नभसेन—हरिवश १ ३४०, अ।

नभस्तिलक—२ ५०५ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

नमस्कार—२.५०५ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ ब, मत्र ३ २४८ अ, विनय ३ ५५२ अ, ३ ५५४ अ, शुभोपयोग १.४३३ अ।

नमस्क्रिया—२.५०६ ब।

नमि—२.५०७ अ, अन्तकृत् केवली १ २ ब, उग्रवंश १ ३३५ ब, गणधर २.२१३ अ, भोजवश १ ३३६ ब, विद्याधरवश १ ३३८ ब, १ ३३९ अ।

नमिनाथ—२.५०७ ब।

नमिष—२ ५०७ ब।

नमुचि—२.५०७ ब।

नमोऽस्तु—विनय ३ ५४९ अ।

नय—२.५०७ ब, अनुभव १.८१ ब, १ ८३ ब, अनेकान्त १ १०६-१०८ ब, आगम १ २३४ अ, १.२३७ ब, उपक्रम १ ४१६ ब, उपचार १.४२३ अ, एकान्त १ १०७ ब, निक्षेप २.५९२ अ, २.५९३ ब, पक्ष निषेध १ ८१ ब, १ ८२ अ-ब, २ ५१८ अ, प्रतिपक्ष का सग्रह १ २३७ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३१६ अ, लोप ४.४९९ अ, शब्द प्रामाण्य १ २३४ अ, सप्तभंगी ४.३१५ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७८ अ, स्याद्वाद ४.४९९ अ।

नयकीर्ति—२.५७० अ, नन्दिसघ देशीय गण १ ३२४ ब, इतिहास १.३३१ ब।

नयचक्र—२.५७० अ, इतिहास—द्वादशार १ ३२९ अ, १ ३४० अ, लघु १ ३४२ ब।

नयदृष्टि—सम्यग्दर्शन ४.३५८ ब।

नयनदि—२ ५७० अ, नन्दिसंघ १.३२३ ब, देशीयगण १.३२५, इतिहास १.३३१ अ, १.३४३ ब।

नयनसुख (कवि)—२.५७० अ, इतिहास १.३३४ ब।

नयनोन्मीलनयंत्र—३.३५४।

नयप्रमाण—प्रमाण ३.१४५ अ।

नयवाद—एकान्त १ ४६५ अ, परतन्त्रवाद ३.१२ अ, श्रुतज्ञान ४.६० अ।

नयविधि—श्रुतज्ञान, ४.६० अ।

नयविवरण—२ ५७० अ, इतिहास १.३४१ ब।

नयसेन—२.५७० अ, काष्ठासंघ १.३२७ अ, इतिहास १.३३१ ब, १ ३४४ अ।

नयांतरविधि—श्रुतज्ञान ४.६० अ।

नयाधिपति—निश्चय नय २.५५६ अ।

नयार्थ—आगमार्थ १ २३० अ, कर्ताकर्म २.२४ ब।

नयुत—काल का प्रमाण २.२१६ अ।

नयुतांग—काल का प्रमाण २ २१६ अ।

नर—२ ५७० अ।

नरकगति—निर्देश २ ५७१ ब, २ ५७२ अ, अधःकर्म १ ४८ ब, अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १ १९४, १ १९८ अ, असुरकुमार १ २१० ब, आयु १ २६३, आयुबन्ध १ २६२ अ, आयुबन्ध के अपकर्ष काल १ २५९ ब, ईर्यापथ कर्म १ ३४९ अ, कषाय २ ३८ अ, क्रोधादि की कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, गति (जन्म-मरण तथा गुणप्राप्ति) २.३१३ अ, २.३१९ ब, २ ३२१ ब, २.३२२ अ, गुणस्थान २ ५७४ ब, तीर्थंकर प्रकृति २.३७६ ब, दुःख २.४३४ ब, २ ५७२ अ, भवधारण सीमा २ ३२१ ब, मृत्यु अकाल ३.२८४ अ, लेश्या ३ ४२८ ब, वनस्पति ३ ५०६ अ, शरीर २ ५७३ ब, ३ ६०२ ब, सम्यक्त्व २.५७१ ब।

नरकगति (प्ररूपणा)—बन्ध ३.१००, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयसत्त्व १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १६५, सख्या ४.९५, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४.४७९, काल २.१०१, अन्तर १ ६, १ ८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

नरकगति नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, उद्वेलना युक्त मे सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भंग १ ४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

नरकगत्यानुपूर्वी नामकर्म प्रकृति—आनुपूर्वी १.२४७ अ, प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९७, बन्ध स्थान ३ ११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १.४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

नरकचतुष्क—१ ३७४ ब।

नरकत्रिक—१.३७४ ब।

नरकद्विक—१.३७४ ब।

नरकप्रस्तर—निर्देश २.५७६ ब, नामनिर्देश २ ५७९ अ, विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३.४४१।

नरकबिल—इन्द्रक श्रेणी बद्ध प्रकीर्णक २ ५७८-५७९, चित्र ३ ४४१।

नरकमुख—२ ५८० अ। नारद ४ २१ अ।

नरकलोक—निर्देश २ ५७६ अ, अकन ३ ४३९, चित्र ३.४४१।

नरकलोक सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।

नरकांता कुड—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३.४९०, अकन ३ ४४७।

नरकांता कूट—२ ५८० अ, नरकान्ता कुंड में स्थित—निर्देश ३ ४५६ अ, विस्तार ३ ४८४, वर्ण ३ ४७७, अंकन ३.४४४, नील पर्वत का—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४। रुक्मि पर्वत का—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४।

नरकांता देवी—२ ५८० अ। नरकान्ता नदी के कुण्ड की देवी ३.४५५ अ, नील पर्वत के कूट की देवी ३.४७२ अ, रुक्मि पर्वत के कूट की देवी ३ ४७२ ब।

नरकांता नदी—२ ५८० अ, रम्यक क्षेत्र की महानदी—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४८९, ३ ४९०, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३ ४७८।

नरकायु कर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, १ २५३, स्थिति ४ ४६२, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ९७, बन्ध योग्य परिणाम १ २५४ ब, बन्धस्थान ३ १०८, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्व स्थान ४ २९४, त्रिसयोगी भग १ ४०१। अल्पबहुत्व १.१६८।

नरकेंद्रक—निर्देश २ ५७६ ब, नाम निर्देश २.५७९-५८०, विस्तार २ ५७८-५८०, अकन ३.४४१, संख्या २.५७८-५८०।

नरगीत—.२५८० अ, विद्याधर ३.५४५ अ।

नरचंद्र—नन्दिसघ १ ३२३ ब।

नरतगति—२ ५७१ ब, विशेष दे० नरक गति।

नरगीत—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

नरदेव—प्रतिनारायण ४.२० ब। यदुवश १.३३७।

नरधर्मा—भोजवश १.३१० अ।

नरपति—२.५८० ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, यदुवश १ ३३६।

नरमद—२.५८० ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

नरवक्त्र—नारद ४.२१ अ।
नरवर्मा—२ ५८० ब।
नरवाहन—२ ५८० ब, शकवंश १ ३२० ब, १ ३१४।
नर-वृषभ—२ ५८० ब।
नरसेन—२ ५८० ब। इतिहास १ ३३२ ब, १ ३४५ अ।
नरहरि—कुरुवंश १ ३३५ ब।
नरेंद्रकीर्ति—नन्दिसघ १ ३२३ ब।
नरेंद्रसेन—२.५८० ब, सेनसंघ १.३२६ ब, लाडबागड सघ १ ३२७ ब। इतिहास १ ३३१ ब, १ ३४३ ब। द्वितीय १ ३३४ ब, १ ३४८ अ।
नर्मदा—२ ५८० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
नल—२ ५८० ब। वानरवंश १ ३३८ ब।
नलकूबर—२.५८० ब।
नलगच्छ—आशाधर १ २८० ब।
नलदियार—२ ५८० ब।
नलिन—२ ५८१ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ, २ २१७ अ, भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ। विदेह क्षेत्र ३ ४७० ब। रुक्मवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६८, ३ ४६९। सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६६।
नलिन कूट—वक्षार पर्वत—निर्देश ३ ४६० अ, नाम निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७। इस पर्वत का कूट तथा देव ३ ४७२ ब।
नलिनगुल्म—तीर्थंकर श्रेयाननाथ तथा विमलनाथ २ ३७८।
नलिनगुल्मा—सुमेरु के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अकन ३ ४५१, चित्र ३ ४५१।
नलिनध्वज—भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ।
नलिनपुख—भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ।
नलिनपुगव—भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ।
नलिनप्रभ—२.५८१ अ, भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ, श्रेयासनाथ २ ३७८।
नलिनराज—भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ।
नलिनांग—२ ५८१ अ, कालप्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ अ।
नलिना—२.५८१ अ, सुमेरु के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३ ४५३ ब, नामनिर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३.४९०, ३.४९१, अकन ३ ४५१, चित्र ३ ४५१।
नलिनावर्त—२ ५८१ अ। वक्षारगिरि—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, वर्ण ३ ४७७। इस पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४।
नलिनी—२ ५८१ अ, पुष्करिणी—निर्देश ३ ४५० ब, ३ ४५३ ब, नामनिर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अकन ३ ४५१ चित्र ३ ४५० ब। विदेहक्षेत्र—३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने चित्र ३ ४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देव ३.४७२ ब।
नव—असख्यात लोक की सहनानी २ २१९ अ, अनुदिश ४ ५१० अ, केवललब्धि ३ ४१२ अ, कोटिशुद्ध आहार १.१२१ अ, १ २१२ ब, (नव) कोटिशुद्ध ब्रह्मचर्य ३.१८९ ब, ग्रैवेयक ४.५१० अ, तत्त्व ३.३३७ अ, ४.३५९ ब, देवता २.४४४ ब, नारद ४.२१ अ, नारायण ४ १८ अ। निधि—चक्रवर्ती ३ १४ ब, समवसरण ४ ३३० ब, ४ ३३१ अ। पदार्थ ३ ८ अ, ३ २१८ अ, ४.३६० अ, पूर्वधर ४.३६ अ-ब, प्रतिनारायण ४ २० अ, बलदेव ४ १६ अ। स्पर्धक शलाका की सहनानी २ २१९ अ।
नव अनुदिश—स्वर्ग—निर्देश ४ ५१० अ, इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४ ५२०, कल्पातीत ४ ५१० अ, अहमिन्द्र ४ ५१० अ, अकन ४ ५१५, चित्र ४ ५१७। देव—निर्देश २ ४४५ ब, अवगाहना १ २८१ ब, अवधिज्ञान १ १९८ ब आयु १ २६९, आयु बन्ध के योग्य परिणाम १ २५८ ब, सम्यक्त्व २ ४४८ अ।
नव अनुदिश (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १९२, सख्या ४ ९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।
नवक प्रबद्ध—उपशम १.४४१ अ, समयप्रबद्ध ४ ३२८ ब।
नवक समयप्रबद्ध—४.३२८ ब, उपशम १ ४४१ अ।
नवकारमंत्र—३ २४७ अ।
नवकार व्रत—२ ५८१ अ।
नवकार श्रावकाचार—२ ६३१ अ, इतिहास १ २४१ अ।
नवकेवल-लब्धि—लब्धि ३.४१२ अ।

नवकोटिशुद्ध—आहार १.१२१ अ, १.२८६ ब, १ २९२ ब, ब्रह्मचर्य ३ १८९ ब।

नवग्रैवेयक—स्वर्ग—निर्देश ४ ५१० अ, पटल ४.५१८, इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४.५२०, कल्पातीत ४ ५१० अ, अहमिन्द्र ४ ५१० अ, अंकन ४ ५१५। देव—निर्देश २ ४४५ ब, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६८, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १ २५८ ब।

नवग्रैवेयक (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १९२, सख्या ४ ९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २.१०४, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

नवतत्त्व—मोक्षमार्ग ३ ३३७ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५९ ब, ४ ३६० अ।

नवदेवता—२ ४४४ ब, कृतिकर्म २ १३४ अ।

नवधा-त्याग—२ ५८१ अ, त्याग २ २९६ अ।

नवधाभक्ति—२ ५८१ अ, आहार १ २८६ ब, भक्ति ३ १९९ अ।

नवनद—मगधदेश इतिहास १ ३१३।

नवनारद—४ २१ अ।

नवनारायण—४ १८ अ।

नवनिधि—चक्रवर्ती ४ १४ ब, समवसरण ४.३३० ब, ४ ३३१ अ।

नवनीत—२ ५८१ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३ २०२ ब।

नवपदार्थ—पद्धति ३ ८ अ, भाव ३ २१८ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३६० अ।

नवपूर्वधर—शुक्लध्यान ४ ३६ अ-ब।

नवप्रतिनारायण—४ २० अ।

नव बलदेव—४.१६ अ।

नवमिका—२ ५८१ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६९।

नवमी—रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८। वैमानिक इन्द्र की देवी ४ ५१३ ब, व्यन्तरेन्द्र की वल्लभिका ३ ६११ ब।

नवराष्ट्र—२ ५८१ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

नवविधि व्रत—२ ५८१ अ।

नवीन-अवस्थाप्राप्ति—उत्पाद १ ३५७ अ।

नवीन-पर्यायप्राप्ति—उत्पाद १.३५७ अ।

नव्यन्याय—न्याय २ ६३४ अ।

नष्ट—२ ५८१ ब, आगम १ २२९ अ, अक्ष संचार-गणित-प्रक्रिया २ २२६ अ-ब, २ २२७ अ।

नहुत—सख्याप्रमाण २ २१४ ब।

नहुष—२ ५८१ ब।

नाग—२ ५८१ ब, आचार्य १ ३१६, तीर्थंकर सुविधिनाथ व चन्द्रप्रभ २ ३८३, २ ३८७। मनुष्यलोक ३ २७५ ब, लोकपाल ३ ४९१ ब। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४.५१५, देव-आयु १ २६७।

नागकुमार (देव)—२ ५८१ ब, भवनवासी देव—निर्देश ३ २०८ अ, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८ ब, अवस्थान ३ २०९ ब, ३.४७१, ३ ६१२-६१४, आयु १ २६५, इन्द्र ३.२०८ अ, शक्तिचिह्न आदि ३ २०८ ब, भवन ४.५०४ ब।

नागकुमार (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८ उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसगयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १४५।

नागकुमार काव्य—इतिहास १ ३४३ ब।

नागकुमारचरिउ—इतिहास १ ३४६ अ-ब।

नागगिरि—२ ५८१ ब, वक्षारगिरि—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७। इस पर्वत का कूट तथा देव ३.४७२ ब।

नागचन्द्र—२.५८१ ब, नन्दिसघ १ ३२३ ब, इतिहास १ ३३१ ब।

नागदत्त—२.५८१ ब।

नागदास—मगधदेश १ ३१० ब, १ ३१२।

नागदेव—२ ५८१ ब, हरिदेव ४ ५३० अ। कवि—इतिहास १ ३३२ ब।

नागनंदि—२ ५८१ ब।

नागन्य—अचेलकत्व १ ३९ ब, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ।

नागपुर—२ ५८१ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।

नागप्रिय—३ २७५ ब।

नागभट्ट—२ ५८१ ब।

नागमाल—वक्षारगिरि—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८१, ३.४८५, ३ ४८६,

अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७।

नागरमण—भद्रशाल वन का खण्ड—निर्देश ३.४५० अ, विस्तार ३.४८८, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने।

नागवर—२ ५८१ ब, षष्ठ द्वीप सागर—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३.४७८, अंकन ३ ४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

नागवर्म (कवि)—इतिहास १ ३३० ब, १ ३४३ अ, द्वितीय १ ३३१ ब।

नागश्री—२ ५८१ ब।

नागसेन—२.५८२ अ, मूलसघ १.३१६, इतिहास—प्रथम १ ३२८ अ। द्वितीय १ ३३१ अ।

नागहस्ती—२ ५८२ अ, मूलसघ १ ३२२ ब, १ परि०/२.१, १ परि०/३ १, ३, पुन्नाट सघ १ ३२७ अ। इतिहास १ ३२८ ब।

नागार्जुन—२.५८२ अ।

नागोजी भट्ट—३ ३८४ अ।

नागौर—आशाधर १.२८० ब।

नाटक—पूजा ३.८१ अ।

नाटक समयसार—इतिहास १.३३४ अ, टीका १ ३३४ ब।

नाट्यशाला—समवसरण ४ ३३० ब।

नाडी—२ ५८२ अ, उच्छ्वास १.३५२ ब, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ अ।

नाथ—वर्द्धमान २ ३८०, २ ३८३।

नाथवंश—१.३३५ अ, १.३३६ ब।

नादग्रह—भवनवासी देवो के भवनो मे ३.२१० ब।

नाना-अजीव—कर्म २.२६ अ, कषाय २ ३५ ब।

नाना-गुणहानि—गणित २ २३१ ब।

नाना-जीव—अनुयोगद्वार १.१०२ अ, कर्म २.२६ अ, कषाय २ ३५ ब।

नाना-जीव एक-अजीव—कर्म २ २६ अ, कषाय २.३५ ब।

नानाजीव नानाअजीव—कर्म २.२६ अ, कषाय २ ३५ ब।

नानाश्रेणी—प्रदेश अल्पबहुत्व १ १५५ ब, वर्गणा अल्पबहुत्व १ १५५ ब।

नाभांत—२ ५८२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

नाभिकमल—पदस्थ ध्यान ३.६ ब।

नाभिकीर्ति—नन्दिसंघ १.३२३ ब।

नाभिगिरि—क्षेत्रों के मध्यवर्ती गोल पर्वत—निर्देश ३ ४५२ ब, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने चित्र ३.४५२ ब, वर्ण ३.४७७।

नाभिराज—२ ५८२ अ, ऋषभनाथ २ ३८०, कुलकर ४ २३।

नाभ्यधोनिर्गमन—आहारान्तराय १.२९ अ।

नाम—२ ५८२ अ।

नाम-अग्रायणीपूर्व—श्रुतज्ञान १.६७ ब।

नाम-अनन्त—१ ५५ ब।

नाम-अंतर—१ ३ ब।

नाम-उपक्रम—१ ४१६ ब।

नाम-उपशम—१.४३७ अ।

नाम-कर्म—२ ५८३ अ, कर्म २ २६ अ।

नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३ अ, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १६६ ब, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३.९८, बध सबंधी नियम ३ ९३, ३ ९५ अ, बन्धस्थान ३.११० अ, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १ ३७२ ब, १ ३७३, उदय के निमित्त १ ३६७ ब, आबाधा १ २५९ ब, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भग १.४०४-४०८। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

नामकर्म-क्रिया—संस्कार ४ १५१ अ, मन्त्र ३ २४७ अ।

नाम-कषाय—२ ३५ ब।

नाम-काल—२ ८१ ब।

नाम-छेदना—२ ३०६ ब।

नामध्येय—२ ५०० अ।

नामनय—२ ५२२ ब।

नामनिक्षेप—२.५८४ ब, द्रव्यार्थिक नय २ ५९४ अ, स्थापना निक्षेप २ ५९८ ब।

नामनिबंधन—२ ५८२ अ।

नामपद—उपक्रम १ ४१६ ब, पद ३.५ अ।

नामप्रतिक्रमण—३.११६ ब।

नामप्रत्याख्यान—३.१३२ अ।

नाममंगल—३.२४१ अ।

नाममाला—२ ५८५ अ, इतिहास १ ३४७ ब।

नामसत्य—४.२७१ ब।

नामसम—२ ६०२ अ।

नामस्तव—भक्ति ३ २०० अ।

नारक—जीव २ ३३३ ब, नरक गति २.५७१ ब, विशेष दे. नरक गति। नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१।

नारकी—नरक गति २ ५७१ ब। विशेष दे. नरक गति।

नारत्र—नरक गति २.५७१ ब। विशेष दे. नरक गति।

नारद—२ ५८५ अ, गति-अगति २.३२१ ब, तीर्थंकर २ ३७७, यदुवंश १ ३३७, शलाकापुरुष ४.२१ अ।

नारसिंह—२ ५८५ अ।

नाराचसंहनन कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८,२ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा-स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भंग १ ४०४। अल्पबहुत्व १ १६८।

नारायण—२ ५८५ अ, अज्ञानवादी १ ३८ ब, १.४६५ ब, कुन्थुनाथ २ ३९१, कुरुवंश १ ३३५ ब, गति-अगति २ ३२१ ब, चक्रवर्ती ४ १० अ, शलाकापुरुष ४ १८ अ।

नारायण की माता—स्वप्न ४ ५०४ ब।

नारी—२ ५८५ अ, कुण्ड—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३ ४९०, अंकन ३.४४७। देवी—नारीकुण्डवासिनी ३ ४५५ अ, नीलपर्वतवासिनी ३ ४७२ अ, रुक्मि-पर्वतवासिनी ३.४७२ ब। नदी—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३ ४८९, ३ ४९०, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, जल का वर्ण ३ ४७८। स्त्री ४ ४५० अ।

नारीकूट—नारीकुण्ड मे स्थित—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३ ४४७, वर्ण ३.४७७। नील पर्वत का—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४। रुक्मि पर्वत का—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४।

नालिका—२ ५८५ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, मनुष्य-लोक ३ २७५ ब।

नाली—२ ५८५ अ, काल का प्रमाण २ २१२ अ।

नाश—व्यय १ ३५७ ब, १ ३५८ ब।

नासाग्र—कृतिकर्म २ १३४ ब, चैत्यप्रतिमा २ ३०१ अ, ध्यान २ ४९८ अ।

नासारिक—२.५८५ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

नास्ति भंग—४ ३१८ ब।

नास्तिक—एकान्त १ ४६५ ब, चार्वाक २ २९४ ब।

नास्तिक्य—२ ५८५ ब, नय २ ५२२ ब, मिथ्यादर्शन ३.३०० अ।

नास्तित्व—२ ५८५ ब, अनेकान्त (सापेक्ष धर्म) १ १०९ अ, नय २.५२२ ब, सप्तभंग ४.३१८ ब, सापेक्ष धर्म १.१०९ अ, स्याद्वाद ४ ५०० ब, स्वभाव ४.५०६ अ, २ ५८५ ब।

निःकल—ध्यान ३.३३६ अ, परमात्मा ३.२० अ।

निःकषाय—२ ५८५ ब, तीर्थंकर २ ३७७।

निःकांक्षित—२ ५८५ ब, २.५८६ अ, १.६६ अ, अनशन १.६५ ब, १ ६६ अ, उपदेश १.४२४ ब, तप २ ३५८ ब, २ ३६० अ, राग २ ३९७ अ।

निःकांचित्—करण २ ६, गुणस्थान २ ६ अ।

निःशंकित—२ ५८६ अ, सम्यग्दृष्टि ४ ३७८ ब।

निःशल्य—व्रती ३ ६२९ अ।

निःशल्य अष्टमी व्रत—२.५८७ अ।

निःश्रेयस—२ ५८७ अ।

निःश्वास—२ ५८७ ब।

निःसंगत्व—२ ५८७ ब, सल्लेखना ४.३९६ ब।

निःसंगत्व भावना क्रिया—संस्कार ४ १५१ ब।

निःसरणात्मक तैजस शरीर—२.५८७ ब, २ ३९५ ब।

निःसृत ज्ञान—२ ५८७ ब, मतिज्ञान ३ २५६ अ, ३ २५७ ब।

निंदन—२ ५८७ ब, शुभोपयोग १.४३४ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ ब।

निंदा—२ ५८७ ब, आहारान्तराय १.२९ ब, शुभोपयोग १ ४३४ अ, विषकुम्भ १.४३४ अ, सम्यग्दर्शन ४.३५१ ब, स्त्री ४ ४५१ अ।

निंब—अनुभाग १.९० ब।

निंबदेव २ ५८९ अ।

निंबार्क—वेदान्त ३ ५९८ ब, वैष्णव ३ ६०९ अ।

निकटावती—नाभिगिरि—निर्देश ३ ४५२ ब, नाम निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४५२ ब, वर्ण ३ ४७७।

निकल—२ ५८९ अ, ध्यान ३.३३६ अ, परमात्मा ३ २० अ।

निकांचित—२ ५८९ अ, करण २ ६।

निकाय—२ ५८९ ब।

निकुंदरी—२ ५८९ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

निकृति—२ ५८९ ब, माया ३ २९६ अ, वचन. ३ ४९७ ब।

निक्षिप्त—२ ५८९ ब, आहार दोष १.२९१ ब, वसतिका दोष ३ ५२९ ब।

निक्षेप—२.५८९ ब, अधिकरण १.४९ अ-ब, १ ५० अ, अन्तर १ ३ ब, अपकर्षण १ ११३ ब, आवली १.२७९ अ, उत्कर्षण १ ३५३-३५५, नय २ ५२२ ब।

निक्षेपण—अन्तरकरण १.२५ अ, १ २६ अ-ब।

निक्षेपाधिकरण—१.४९ अ-ब, १.५० अ।

निक्षेपार्थ—आगम १.२३० अ।

निखंडित—प्रत्याख्यान ३.१३१ ब।

निगमन—२.६०६ ब, अनुमानावयव १.१०१ अ, न्याय २.६३३ ब।

निगमनाभास—२.६०६ ब।

निगूढतर्क—२.६०६ ब।

निगोद—२.६०६ ब, निर्देश ३.५०३-५०५, ३.५०८-५१०, अप्रतिघाती १.२२३ ब, अवगाहना १.१७८, क्षीण कषायी का शरीर २.१८७ अ, जन्म २.३१७ ब, जीव समास २.३४२, देव शरीर २.४४६ अ, नारकी शरीर २.५७३ ब, मरण ३.२८०, मोक्ष २.३१७ ब ३.३२५ अ, वनस्पति ३.५०३ ब, ३.५०५, ३.५०६ ब, ३.५०९ अ, ३.५१० अ, वेदना ३.५९१ अ।

निग्रह—२.६०६ ब, उपकार १.४१५ ब, गुप्ति २.२५० ब।

निग्रहस्थान—२.६०६ ब, अज्ञान १.३८ अ, न्याय २.६३४ ब, ३.६३५ अ, प्रयोज्य २.६३४ ब, वितण्डा ३.५४३ अ।

निघंटु—२.६०७ अ।

निचली कृष्टि—२.१४१ अ।

निज—अनुकम्पा १.६९ अ, उपकार १.४१४ ब, १.४१५, अहिंसा १.२१६ ब, तत्त्व ३.१२ ब।

निजगणानुपस्थापना—परिहार प्रायश्चित ३.३५ ब।

निजात्मज्ञान विमुखता—मिथ्याज्ञान २.२६३ अ।

निजात्माष्टक—२.६०७ अ।

निजाष्टक—२.६०७ अ, इतिहास १.३४१ अ।

नित्य—२.६०७ अ, आगम १.२३८ ब, उपादान १.४४३ ब, द्रव्य २.४५६ ब, पदार्थप्राप्ति (मोक्षमार्ग) ३.३३६ अ, व्युत्सर्ग ३.६२३ ब, सापेक्षधर्म १.१०९ अ, ४.३२३ ब, मरण ३.२८० अ।

नित्यक्रिया—२.१३८ अ।

नित्यत्व—उत्पादादि १.३५८ अ-ब, सापेक्षधर्म १.१०९ अ, १.१११ अ, ब, ४.३२३ ब, स्याद्वाद ४.४९८ अ।

नित्यनय—२.५२३ अ।

नित्यनिगोद—निर्देश ३.५०३, जीवसमास २.३४२।

नित्यमह—पूजा ३.७४ अ।

नित्यमहोद्योत—२.६०७ ब, इतिहास १.३४४ ब।

नित्यरसी व्रत—२.६०७ ब।

नित्यवाद—एकान्त १.४६५ ब।

नित्यवाहिनी—२.६०७ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

नित्यसमाजाति—२.३०८ अ।

नित्यानंद—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ।

नित्यानित्य—उत्पादादि १.३६१ ब।

नित्यालोक—२.६०८ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८, ३.४६९।

नित्योद्योत—२.६०८ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८, ३.४६९। विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

नित्योद्योतिनी—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

निदर्शन—२.६०८ अ।

निदाघ—२.६०८ अ। नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८ अवधिज्ञान १.१९८, आयु १.२६३।

निदान—२.६०८ अ, आर्त्तध्यान १.२७४ अ, नारायण ४.२० ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०६ अ, शल्य ४.२६ ब।

निद्रा—२.६०८ ब, कृतिकर्म (साधु) २.१३७ ब।

निद्रा कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.४२०, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३.१०९, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसंयोगी भंग १.३९९। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

निद्राद्विक—१.३७४ ब।

निद्रा-निद्रा—२.६०८ ब, दर्शनावरण २.४२० ब।

निद्रा-निद्रा-कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.४२०, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३.१०९, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९४ त्रिसंयोगी भंग १.३९९। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

निद्रापंचक—१.३७४ ब।

निधत्त—२.५८९ अ, दसकरण २.६, गुणस्थान २.६ अ।

निधि—२.६१० अ, गणित सहनानी २.२१८ ब, चक्रवर्ती ४.१२ अ, ४.१४ ब।

निधुरा—२.६१० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

निन्नहुत—संख्याप्रमाण २.२१४ अ।

निबंधन—२.६१० ब।

निबद्धमंगल—३.२४१ ब।

निमंत्रण—समाचार ४.३३६ ब, ४.३३७ अ।

निमग्ना—२.६१० ब, विजयार्ध की गुफा में नदी—निर्देश ३.४४८ अ, अंकन ३.४४८ अ।

निमित्त—२.६१० ब, अकिंचित्कर २.६६ ब, उपादान २.६९ अ, २.७२ अ, कर्ता-कर्म २.२० ब, २.२३ ब,

कल्पना २ ७३ अ। कारण-कार्य २ ५५ ब, २ ६० ब, २ ६१ ब, २ ६२ ब, २ ६४ ब, २ ६६ ब, २ ६७ अ, २.७० अ, २ ७२ अ, २ ७४ अ, गौणता २ ६५ अ, २ ६६ ब, द्रव्य-क्षेत्रादि २ ६४ अ, प्रधानता २ ६७ ब, २ ७३ अ-ब, वस्तु स्वतन्त्रता २ ७३ अ, विभाव २ ७४ ब।

निमित्तक उत्पाद – आकाश १.२२१ ब।

निमित्त कारण—२ ६१० ब।

निमित्त ज्ञान – २ ६१२ ब, ऋद्धि १ ४४८।

निमित्त दोष – आहार १.२९१ ब, ३ ५२९ अ।

निमित्त-नैमित्तिक संबंध—कारण-कार्य सबध २.५५ ब, २.६० ब, २.६१ ब, २.६२ ब, २ ६४ ब, २.६६ ब, २ ६७ अ, २.७० अ, २ ७२ अ, २ ७४ अ, सम्बन्ध ४.१२६ अ।

निमित्तवाद – एकान्त १ ४६५ ब।

निमित्तशास्त्र –शास्त्र ४.२८ अ, इतिहास १.३२९ अ।

निमिष विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

निमेष – २ ६१३ अ, उत्पत्ति २ ८७ अ, काल का प्रमाण २.२१६ ब, २ २१७ अ।

नियतकाल अनशन—१ ६५ ब।

नियतकाल सामायिक—४ ४१९ ब।

नियत प्रदेशत्व—२.६१३ अ।

नियत वृत्ति —२ ६१३ अ।

नियति—२ ६१३ अ।

नियति नय —२.५२३ अ।

नियतिवाद—२ ६१४ अ, नामनिर्देश ३.१२ अ, एकान्त १.४६५ अ-ब, सम्यग् मिथ्या २ ६१४ अ, पुरुषार्थ समन्वय २.६१८ अ।

नियम – २ ६२० अ, तप २ ३५९ अ, भोगोपभोग ३ २३९ अ।

नियमसार – २ ६२० ब, इतिहास १ ३४० ब।

नियमसार टीका—इतिहास १ ३४४ अ।

नियमित सान्द्र – २ ६३० ब।

नियुत —२ ६२० ब, कालप्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ ब।

नियुतांग—२ ६२० ब, कालप्रमाण २ २१६ अ।

नियोग—अनुयोग १ १०१ ब।

निरंजन – मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब।

निरंतर –२.६३० ब।

निरंतरबंधी प्रकृति—३.८८ ब, ३.९० ब, ३.९२ ब, नियम ३.९३-९४, त्रिसंयोगी प्ररूपणा १.३९९।

निरंतरसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३।

निरंतरस्थिति—४ ४५७ अ।

निरंश—परमाणु ३ १८ ब।

निरतगति—२.५७१ ब, विशेष दे० नरकगति।

निरतिचार –२ ६२० ब, सामायिक ४ ४१८ अ।

निरतिचारता –१ ४२ ब।

निरनुबंधा—२ ६२२ ब, निर्जरा अनुप्रेक्षा १ ७७ अ।

निरनुयोज्यानुप्रेक्षण—२ ६२१ अ।

निरन्वय –२.६२१ अ।

निरपराध—अपराध १ ११९, विभाव ३ ५५९ अ।

निरपेक्ष – एकान्त १ ४६२-४६३, स्याद्वाद ४ ४९८ अ, ४ ४९९ अ, स्वभाव ४.५०७ अ।

निरपेक्ष नय—नय २ ५२० अ, २ ५२५ ब।

निरब्बुद—सख्या प्रमाण २ २१४ ब।

निरय – २ ६२१ अ। नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

निरयगति – २ ५७२ अ। विशेष दे. नरक गति।

निरर्थक—२ ६२१ अ।

निरवद्यक्रिया—योग ३.३७५ अ।

निरवयव – आकाश १ २२१ ब, द्रव्य २ ४५९ अ, परमाणु ३ १६ ब।

निराकांक्ष—२.६२१ अ, २ ५८५ ब, तप २ ३५८ ब, २ ३६० अ।

निराकांक्ष अनशन—१ ६५ ब।

निराकार उपयोग – आकार १ २१९ ब।

निराकुलता - सुख ४ ४३१ अ।

निरागार—अनगार १ ६२ अ, सयम ४.१३७ अ।

निराभरण—चैत्य (प्रतिमा) २ ३०२ ब।

निरायुध—चैत्य (प्रतिमा) २.३०२ ब।

निरालंब ध्यान—शुक्लध्यान ४ ३३ अ।

निरावरण—कायक्लेश २.४६ ब।

निराशा—राग (नैराश्य) ३ ३९८ अ।

निरास्रव—सम्यग्दृष्टि ४ ३७६ ब, ४ ३७६ ब।

निराहारता—अर्हन्त १.१३७ ब।

निरीह—पुण्य ३ ६६ ब।

निरुद्ध-अविचार-भक्त-प्रत्याख्यान—सल्लेखना ४.३८८ ब, ४.३८९ अ।

निरुपक्रम आयुष्य—आयु १ २५९, १.२६० अ।

निरुपभोग – तैजस शरीर २ ३९५ अ।

निरूपणा – २ ६२१ अ, प्ररूपणा ३.१४७ अ।

निरोध—२ ६२१ अ, एकाग्रचिन्तानिरोध १ ४६६ अ, ध्यान २ ४९५ ब।

निर्गमन—२.६२१ अ।

निर्ग्रंथ—२.६२१ अ, परिग्रह ३ २६ ब, लिंग ३ ४२० अ, श्रुतकेवली ४.५५ ब, श्वे. ४ ७८ अ, साधु ४.४०६ अ, ४.४०८ ब, ४,४०९ अ-ब।

निर्ग्रंथ-श्वेतपट-महाश्रमण संघ—श्वेताम्बर ४ ७८ अ।

निर्जर पंचमी व्रत—२ ६२१ ब।

निर्जरा—२.६२१ ब, २ ६२३ अ, अल्पबहुत्व १ १४१ ब, अविपाक १ ७५ ब, ईर्यापथ कर्म १ ३४९ ब, उदय १ ३६६ ब, गुणश्रेणी अल्पबहुत्व १ १७४ अ, चारित्र २ २८६ अ, २.२९० अ, तप २ ३६२ अ, २ ३६३ अ, २ ६२३ अ, धर्म (व्यवहार) २.४७५ अ, धर्मध्यान २ ४८३ ब, २ ४८५ ब, प्रदेश निर्जरा अल्पबहुत्व १.१७४ अ, व्यवहार धर्म २.४७५ अ, शुभोपयोग २ २९० अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५३ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७५ ब, ४ ३७७ अ, सविपाक १.७५ ब।

निर्जरा अनुप्रेक्षा—१ ७५ ब, १.७८ अ, १ ७९ ब, सविपाक अविपाक १ ७५ ब।

निर्णय—२ ६२४ अ, आगमार्थ १ २३२, ब, न्याय २ ६३३ अ, ब।

निर्दंड—२ ६२४ अ।

निर्बुख—२.६२४ अ, ग्रह २ २७४।

निर्देश—२ ६२४ अ, अनुयोगद्वार १ १०२ अ, आगम (उद्देश्य) १.२३२ अ।

निर्दोष—२ ६२४ ब।

निर्द्वंद—२.६२४ ब।

निर्धूम अग्नि—स्वप्न ४.५०४ ब।

निर्नामिक—२ ६२४ ब।

निर्निमेष दृष्टि—अर्हन्त १ १३७ ब।

निर्भरानंद—अनुभव १ ८५ अ।

निर्मंत्र—ग्रह २ २७४ अ।

निर्मम—२ ६२४ ब।

निर्मल—२.६२४ ब, गणधर २ २१२ ब, तीर्थंकर २ ३७७, विशद ३ ५६७ ब, स्वरूप ३.३३५ ब।

निर्मल आकाश—अर्हन्तातिशय १ १३७ ब।

निर्मल जल—अर्हन्तातिशय १.१३७ ब।

निर्मल शरीर—अर्हन्तातिशय १ १३७ ब।

निर्माण नामकर्म प्रकृति—२ ६२४ ब, आनुपूर्वी नामकर्म १ २४७ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, २.६२४ ब, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३.९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १.४०४, संक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८।

निर्माणरज—२ ६२५ अ।

निर्माणरजस्—लौकान्तिक देव ३ ४९३ ब।

निर्माल्य द्रव्य—२ ६२५ अ, पूजा ३ ८० अ।

निर्मूढ—२ ६२५ अ।

निर्मोह—साधु ४ ४०६ अ।

निर्यापक—२ ६२५ अ, गुरु २.२५२ अ, सल्लेखना ४.३८५ ब, ४.३९० ब, ४.३९३ ब।

निर्युक्ति—आवश्यक १ २७९ ब।

निर्लेपन—२.६२५ ब।

निर्लोभ—शौच ४ ४३ ब।

निर्वर्ग—२ ६२५ ब।

निर्वज्ञशांवला—२.६२६ अ, विद्या ३ ५४४ अ।

निर्वर्गण—२ ६२५ ब।

निर्वर्गणा कांडक—२.६२६ अ, अधःप्रवृत्तकरण २ ८ ब, २ १० अ।

निर्वर्तना—अधिकरण १ ४९ ब।

निर्वस्त्र—अचेलकत्व १ ४० ब, निर्जरा २ ६२१ ब, लिंग ३ ४१७ अ, ३.४१९ अ, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ, साधु ४.४०८, अ, ४ ४०९ अ।

निर्वर्त्यकर्म—कर्ता २.१७ अ।

निर्वहण—२ ६२६ अ।

निर्वाण—२ ६२६ अ, तीर्थंकर २ ३७७।

निर्वाणकल्याणक—कल्याणक २ ३२ ब।

निर्वाणकल्याणक वन्दना—कृतिकर्म २ १३९ अ।

निर्वाणभक्ति—भक्ति ३ १९८ ब, शास्त्र इतिहास १.३४० ब, राक्षसवंश १ ३३८ अ।

निर्वाणभूमि—व्युत्सर्ग ३ ६२१ अ।

निर्वाणसंपत्ति यंत्र—३ ३५५।

निर्वाण संवत्—इतिहास १ ३०९ अ, १.३१० अ, १ ३१६।

निर्विकल्प—विकल्प ३ ५३७ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३६२ अ।

निर्विकल्पता—गुण २ २४२ ब, निश्चय नय २.५५४ ब।

निर्विकल्प ध्यान—पदस्थ ध्यान ३ ८ ब। मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।

निर्विकल्प समाधि—ज्ञान २.२७० अ।

निर्विकल्प सुख—४.४३१ ब, ४.४३२ ब।

निर्विकृति आहार—२ ६२६ अ, कायक्लेश २.४७ अ, सल्लेखना ४ ३९२ ब।

निर्विचिकित्सा—२.६२६ ब।

निर्विद्या—२ ६२६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
निर्वृत्ति—२ ६२७ ब, अक्षर १ ३२ ब, इन्द्रिय १ ३०१ ब, भक्ति ३ १९८ ब, विद्या ३ ५४४ अ।
निर्वृत्ति अक्षर—१ ३२ ब।
निर्वृत्त इंद्रिय—१ ३०१ ब।
निर्वृत्ति भक्ति—३ १९८ ब।
निर्वेगिनी कथा—कथा २ ३ अ।
निर्वेजनी कथा—कथा २ ३ अ।
निर्वेद—२ ६२७ ब, उपयोग १ ४३३ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ।
निर्वेदिनी कथा—उपदेश १ ४२५ अ, १ ४२६ अ, कथा २ ३ अ।
निर्वैर—सामायिक ४ ४१६ ब।
निर्व्याकुल चित्त—सुख ४ ४३३ ब।
निलय—२ ६२७ ब, ग्रह २ २७४ अ।
निवास—भवनवासी देव ३ २१० अ, ३ ६१३। व्यन्तरदेव—निर्देश ३ ६१२ अ, विस्तार ३ ६१५ अ, बनावट ३ ६१२ ब, सख्या ३ ६१२ ब। श्रावक ४.५० अ, साधु (मासैकवास) ३ २९९ ब।
निवृत्ति—२ ६२७ ब, अनिवृत्तिकरण १ ६७ ब, उपयोग १ ४३४ अ, चारित्र २ २८५ अ, राग ३ ३९८ अ, विष १ ४३४ अ, संवर ४.१४३ ब।
निवृत्त्यपर्याप्ति—जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २ ३४३, पर्याप्ति ३ ४१ ब, ३ ४२ अ।
निशिभोजन कथा—२ ६२७ ब, इतिहास १.३४८ अ।
निशुंभ—२.६२७ ब, तीर्थंकर धर्मनाथ २ ३९१, प्रतिनारायण ४.२० अ।
निश्चय—२ ६२८ अ, ग्रह २ २७४ अ।
निश्चय-अनशन—अनशन १ ६५ अ।
निश्चय-अनुप्रेक्षा—अनुप्रेक्षा १ ७२-७८।
निश्चय-अमूढदृष्टि—अमूढ दृष्टि १.१३२ ब।
निश्चय-अहिंसा—अहिंसा १ २१६ अ।
निश्चय-आचार—दे० निश्चयाचार।
निश्चय-आराधना—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
निश्चय-आलोचना—आलोचना १.२७६ ब।
निश्चय-उपगूहन—उपगूहन १.४१७ अ।
निश्चय-कर्ताकर्म—२ १९, २ २३ ब।
निश्चयकाल—काल २ ८२ ब।
निश्चयक्षमा—२ १७७ अ।
निश्चयगुप्ति—२ २४८ अ, ब।
निश्चयगुरु—२.२५२ अ।
निश्चयज्ञान—आचार १.२४० अ, ज्ञान २.२५९ अ, २.२६९ ब, सम्यग्ज्ञान २.२६७ अ, स्वसंवेदन २ २६२ ब।
निश्चयचारित्र—आचार १ ३४० ब, चारित्र २ २८३ अ, २ २८८ ब, (रत्नत्रय) २ २८९, २ २९१ अ।
निश्चय-तप—आचार १.२४१ अ।
निश्चय-दर्शन—आचार १ २४० अ।
निश्चय-धर्म—अनुभव १ ८५ ब, २ ४६६ ब, २ ४६८ ब, २.४७५।
निश्चय-ध्यान—अनुभव १ ८५ ब, धर्मध्यान २.४७९ अ, २ ४८५ अ, २ ४८६ अ।
निश्चय-नय—२.६२८ अ, उत्सर्ग मार्ग १.१२१ अ, नय २ ५१४ ब, २.५१५ अ, निश्चय-नय २ ५५२ अ, सम्यक् नय २ ५२३ ब, प्रत्याख्यान ३ १३१ ब, प्रायश्चित ३.१५७ ब, शुद्धोपयोग १ ४३१ अ।
निश्चय-निमित्त—२ ७३ अ।
निश्चय-निर्विचिकित्सा—२.६२७ अ।
निश्चय-पचाशत—इतिहास १ ३४३ ब।
निश्चय-पूजा—३ ७५ अ।
निश्चय-प्रतिक्रमण—३.११५ ब, ३.११६ अ।
निश्चय-प्रभावना—३.१३९ अ।
निश्चय-प्राण—अहिंसा १ २१७ ब, प्राण ३ १५२ ब, ३ १५४ अ।
निश्चय-प्रोषधोपवास—३ १६३ अ।
निश्चय-ब्रह्मचर्य—३ १८८ ब।
निश्चय-भक्ति—३ १९७ ब, ३ १९९ ब।
निश्चय-भोक्ता-भोग्यभाव—३.२३८ अ।
निश्चय-मोक्षमार्ग—३ ३३५ अ, ब, ३.३३६ अ, ३.३३८ ब, ३ ३३९ अ।
निश्चय-रक्षा—अहिंसा १ २१७ ब।
निश्चय-रत्नत्रय—उपयोग १ ४३४ ब, चारित्र २ २९९ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, संवर ४ १४३ ब।
निश्चय-वदना—३ ४९४ ब।
निश्चय-वात्सल्य—३ ५३२ ब।
निश्चय-विनय—३ ५४८ अ।
निश्चय-वीर्य—आचार १ २४१ अ।
निश्चय-व्रत—चारित्र २ २९२ अ, व्रत ३.६२५ अ।
निश्चय-श्रुतकेवली—४ ५५ ब।
निश्चय षडावश्यक—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ।
निश्चय-संयम—४ १३७ अ।
निश्चय-संवर—४ १४२ ब।
निश्चय समिति—४.३३९ अ, ४ ३४२ अ।
निश्चय-सम्यग्दर्शन—आचार १.२४० अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ-ब।

निश्चय-साधु—४ ४०६ अ।
निश्चय-स्तवन—३ १९९ ब।
निश्चय-स्थितीकरण—४.४७० अ।
निश्चय-स्वाध्याय—४.५२३ अ।
निश्चय-हिंसक—१.२१६ अ।
निश्चय-हिंसा—४ ५३२ अ, ब।
निश्चयाचार—ज्ञानाचार १ २४० ब, चारित्राचार १.२४० ब, तपाचार १.२४१ अ, दर्शनाचार १.२४० अ, वीर्याचार १.२४१ अ।
निश्चयावलबी—४ ४०६ अ।
निश्चल— २ ६२८ अ. ग्रह २ २७४ अ।
निश्चल चित्त—सामायिक ४ ४१५ ब।
निश्चित विपक्षवृत्ति—व्यभिचार ३ ६१६ ब।
निषण्ण-निषण्ण-व्युत्सर्ग -- ३ ६२० अ।
निषद्य—सल्लेखना ४ ३९६ ब।
निषद्यका—कृतिकर्म २ १३९ अ।
निषद्या-क्रिया—मन्त्र ३ २४७ अ, सस्कार ४.१५१ अ।
निषद्यापरिषह—२.६२८ अ, चर्या २.२७९ अ, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ।
निषध—निषध कूट का रक्षक देव २ ६२८ ब, यदुवश १.३३७।
निषधकूट—२.६२८ ब। तिगिंछ द्रह का—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३ ४५४। निषध पर्वत का—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४। सुमेर के वनो मे —निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४।
निषधद्रह—२ ६२८ ब। देवकुरु उत्तरकुरु—निर्देश ३ ४५६ ब, नाम निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने (चित्र सं० ३७)।
निषधपर्वत— २ ६२८ अ, निर्देश २ ४४६, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७।
निषाद—२ ६२८ ब, स्वर ४ ५०८ ब।
निषिक्त—२.६२८ ब।
निषिद्धिका— २ ६२८ ब, श्रुतज्ञान ४.६९ ब।
निषिधिका—२ ६२८ ब, सल्लेखना ४.३९७ अ।
निषेक - २.६२८ ब। रचना—उदय १.३६८-३७१, स्थिति ४.४५८ अ। अपकर्षण १.२६ ब, उदय १.३६६ अ। समयप्रबद्ध का अल्पबहुत्व १.१७१ अ, स्थितिबन्ध का अल्पबहुत्व १.१६५ ब।
निषेकहार—२ ६२९ अ, गणित २.२३० ब।
निषेध—२ ६२९ अ, अनेकान्त १ १०९ अ, गौणता ४.४९९ ब, निर्वेद २ ६२७ ब, सप्तभगी ४.३१८ ब, ४.३१९ ब, सापेक्ष धर्म १ १०९ अ, ४ ३१८ ब, स्याद्वाद ४ ४९८ अ, ४.४९९ ब, ४ ५०० ब।
निषेधसाधक हेतु—४ ५४० ब।
निषेधिका— समाचार ४ ३३६ ब, ४.३३७ अ।
निष्कंप—यदुवश १.३३७।
निष्कल— ध्यान ३ ३३६ अ, परमात्मा ३ २० अ।
निष्कषाय—२ ५८५ ब, तीर्थंकर २ ३७७।
निष्कांक्षित—२.५८५ ब, २ ५८६ अ, तप २ ३५७ ब, २.३६० अ, शास्त्रश्रवण ४.७५ ब।
निष्कांक्षित अनशन—१.६५ ब, १ ६६ अ।
निष्काम—(दे० निष्कांक्षित)।
निष्कुट क्षेत्र—क्षेत्र २ १९२ ब, विग्रहगति ३.५४१ ब।
निष्कांति क्रिया—सस्कार ४.१५२ अ।
निष्क्रिय परमाणु—३.१५ ब।
निष्क्रियत्व शक्ति—२ ६२९ अ।
निष्ठीवन—आहारान्तराय १.२९ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।
निष्ठुर—समिति ४ ३४० अ।
निष्पत्ति—२ ६२९ अ।
निष्पन्न योगी—धर्मध्यान २ ४९४ अ, योगी ३ ३८६ अ।
निष्परिग्रह—अचेलकत्व १ ४० अ, ब, अहिंसा १ २१७ अ, चारित्र २ २९४ ब।
निष्पाप—तीर्थंकर २ ३७७।
निष्पिच्छ संघ—२ ६२९ अ, जैनाभासी सघ १.३१९ अ, इतिहास १ ३२१ ब।
निसर्ग—२ ६२९ अ, अधिगम १ ५० ब।
निसर्ग क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।
निसर्गज—२ ६२९ ब, अधिकरण १ ४९ अ-ब, १ ५० अ, ज्ञान १ ५१ ब, सम्यग्दर्शन १ ५० ब।
निसर्गाधिकरण—१ ४९ अ-ब, १ ५० अ।
निसही—असही १ २०९ अ, साधु ४.४०४ ब।
निसीधिका—असही १ २०९ अ।
निस्तरण—२.६१९ ब।
निहत शत्रु—हरिवंश १ ३४० अ।
निहार—तीर्थंकर २.३७३ ब, देवगति २.४४६ अ।
नीच—२.६२९ ब।
नीचकुल—वर्णव्यवस्था ३.५२० ब।

नीचगोत्र—वर्णव्यवस्था ३.५२० ब।

नीचगोत्र कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३ ५२०; स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३७। बध ३ ९७, बधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसयोगी भग १ ३९९। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

नीचत्व—मार्दव ३ २९८ ब।

नीचदेव—आयुबन्ध के योग्य परिणाम १ २५७ ब।

नीचपद से उद्धार—धर्म २ ४६६ ब।

नीचैर्वृत्ति—२ ६२९ ब।

नीचोपपाद देव—व्यन्तरजातीय देव—आयु १.२६४ ब।

नीति—नय २ ५१३ ब।

नीतिक्रिया—न्याय २.६३१ अ।

नीतिवाक्यामृत—२ ६२९ ब, इतिहास १.३४२ ब।

नीतिसार—२ ६२९ ब, इन्द्र नन्दि १.२९९ ब, इतिहास १ ३४२ अ।

नीरस-आहार—आहार १ २८८ अ।

नीरा—मनुष्यलोक (नदी) ३.२७६ अ।

नील—२ ६२९ ब, ग्रह २.२७४ अ। दिग्गजेन्द्र पर्वत—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३.४४४। द्रह—निर्देश ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अकन ३.४४४, ३ ४५७ ३.४६४ के सामने। वर्षधर पर्वत—निर्देश ३.४४६ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने (चित्र सं ३७), वर्ण ३ ४७७।

नील (कूट)—उत्तरकुरु व देवकुरु का कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, अकन ३.४५७। केसरी द्रह का—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४५४। नील पर्वत का—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४४४। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३.४८७।

नील (नाम)—मुनिसुव्रतनाथ २ ३८३, वानरवश १.३३८ ब।

नीलकंठ भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ।

नीलकुमारी—मध्यलोकवासिनी देवी ३ ६१४।

नीलयशा—यदुवंश १ ३३७।

नीललेश्या—निर्देश ३ ४२३ अ, प्ररूपणा—बन्ध ३ १०७, बन्धस्थान ३ ११३, आयुबन्ध के स्थान १ २५९ अ, उदय १ ३८४, उदयस्थान १ ३९३ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४ ३०६, त्रिसंयोगी भग १ ४०७ ब। सत् ४ २४४, संख्या ४ १०७ क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४९०, काल २.११५, अन्तर १.१८, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१।

नीलांजना—ऋषभदेव २ ३८२।

नीलाभास—ग्रह २ २७४ अ।

नीलोत्पला—उतरेन्द्रो की वल्लभिका ४ ५१३ ब।

नीलोद्यान—मुनिसुव्रतनाथ २ ३८३।

नीहार—तीर्थंकर २.३७३ ब। देवगति २.४४६।

नीहारप्रायोपगमन—सल्लेखना ४.३९० अ।

नृत्यगान—पूजा ३ ८० ब।

नृत्यमडप—चैत्यालय २.३०३ अ।

नृत्यमाल—२.६२९ ब, विजयार्धखण्ड प्रपातकूट का देव ३.४७१ ब।

नृपतुग—२.६२९ ब।

नृपदत्त—२.६२९ ब, यदुवश १.३३७।

नृपनदि—२ ६३० अ।

नेत्र (चक्षु इंद्रिय)—२ २७७, अप्राप्यकारी १ ३०३ अ, अवगाहना का अल्पबहुत्व १ १५८, आहारान्तराय १ २८ ब, इन्द्रिय १ ३०२ अ, ज्ञान की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०, ज्ञानार्थक १.३०६ ब, पर्यायार्थिक नय २ ५४२ ब, २ ५४६ ब, सूक्ष्मग्रहण ४ ४३९ ब।

नेत्रोन्मीलन—२ ६३० अ प्रतिष्ठा विधान ३.१२० ब।

नेमिचंद्र—२.६३० अ, अभयनन्दि १.१२७ अ, इन्द्रनन्दि १ २९९ ब, नन्दिसघ १ ३२३ अ, देशीय गण १ ३२५, इतिहास १ ३२९ अ। इतिहास—द्वितीय १ ३३० ब, १ ३४२ ब, १ ३४३ ब। तृतीय १ ३३१ अ, १.३४३ ब। चतुर्थ १ ३३२ अ, १ ३४४ ब। पचम १ ३३२ अ, १ ३४६ ब। षष्ठ १ ३३२ ब। सप्तम १ ३३३ ब।

नेमिचंद्र भट्टारक—काष्ठासघ १.३२७ अ, नंदिसघ १.३२४ अ।

नेमिचंद्र श्वेतांबर—१ ३३१ अ, १ ३४३ ब।

नेमिचंद्रिका—२ ६३० अ।

नेमिदत्त—२ ६३० अ, नन्दिसघ १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३३ ब, १ ३४६ ब।

नेमिदेव—२ ६३० अ, इतिहास १ ३३० अ।

नेमिनंदि—नन्दिसघ भट्टारक १ ३२३ ब।

नेमिनाथ—२.६३० अ, हरिवंश १ ३४० अ, कुटुम्ब १ ३० ब, पूर्वभव १.१२२ ब, २ ३७९-३९१, राजुल (भोजवंश) १ ३३६ ब।

नेमिनाथपुराण—२.६३० ब, इतिहास १ ३४७ अ।
नेमिनाथ बारहमासा—इतिहास १.३४७ अ।
नेमिनाथ वसत—इतिहास १ ३४७ अ।
नेमिनिर्वाण काव्य—२ ६३० ब, इतिहास १ ३४३ ब।
नेमिप्रभु—तीर्थंकर २ ३९२।
नेमिषेण—२ ६३० ब माथुर सघ १ ३२७ ब। सेनसघ १ ३२६ अ-ब, इतिहास १ ३३० ब।
नैर्ऋति—२ ६३० ब, नक्षत्र २.५०४ ब।
नैगमनय—२ ५२७ ब, उपक्रम १ ४१६ ब, उपचार १.४२३ अ, नय २ ५२८ ब, निक्षेप २ ५९५ अ, रागद्वेष २ ३९ अ-ब।
नैगमाभास—नय २ ५३१ ब।
नैपाल—२ ६३० ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
नैपीरियन लॉग—अर्धच्छेद प्रक्रिया गणित २ २२५ अ।
नैमित्तिक—निमित्त-नैमित्तिक भाव—दे० निमित्त।
नैमित्तिक उत्पाद—उत्पाद-व्यय १ ३६२ ब।
नैमित्तिक क्रिया—कृतिकर्म २ १३८ अ।
नैमित्तिक दुःख—दुःख २ ४३४ ब।
नैमित्तिक व्युत्सर्ग व्युत्सर्ग ३ ६२३ ब।
नैमिष—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
नैमिष—२ ३६० ब।
नैयायिक दर्शन-एकान्त १.४६५ अ-ब। जीवविषयक मत २ ३३६ ब, दर्शन २ ४०३ अ।
नैवेद्य—पूजा ३ ७८ ब।
नैषध—२ ६३० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
नैष्कर्म्य—वेदान्त ३ ५९५ ब।
नैष्ठिक ब्रह्मचारी—३ १९४ ब।
नैष्ठिक श्रावक—२ ६३० ब, श्रावक ४ ४८ ब, ४ ५० अ।
नैसर्गिक मिथ्यात्व—एकान्त १ ४६४ अ, मिथ्यादर्शन ३.३०० ब, ३.३०१ अ।
नैसर्प—२ ६३० ब, चक्रवर्ती ४ १४ ब।
नो—२ ६३० ब।
नोआगम—२ ६३० ब, आगम १ २२८ अ, क्षेत्र २.१९२ ब, निक्षेप २.५९९ अ, २ ६०५ ब।
नोआगम द्रव्य—अनत १ ५५ ब, अन्तर १ ३ ब, उपशम १.४३७ अ, काल २ ८१ ब, निक्षेप २ ५९९ ब, सामायिक ४ ४१६ अ।
नो-आगम द्रव्य भाव—अनन्त १ ५५ ब, अन्तर १.३ ब, उपशम १.४३७ अ, कर्म २.२६ अ, काल २.८१ ब, जीव २.६०५ ब, पाहुड ३ १५६ ब, बधक ३ १७९ अ, भाव ३ २१८ ब, योग ३ ३७६ अ, वर्गणा ३ ५१३ अ, सामयिक ४ ४१६ अ।
नो-इद्रिय प्रणिधान—प्रणिधान ३ ११५ अ।
नो-ओम्—ओम् १ ४७० अ।
नो-ओम् नो-विशिष्ट—अनुयोग द्वार १ १०२ ब।
नोकर्म—आबाधा १ २५० ब, कर्म २ २७ ब, २ २८ अ, बन्ध ३ १७० अ, ३ १७९ अ, भाव २ २७ अ, सक्रमण (गुणश्रेणी) ४ ९० ब, स्कन्ध ४ ४४७ ब।
नोकर्म आहार—आहार १ २८५ अ, आहारक १ २९५ अ, केवली २ १५९ अ।
नोकर्म तद्व्यतिरिक्त—निक्षेप २.५९९ ब, २.६०० ब, मगल ३ २४१ अ।
नोकर्म नारकी—२ ५७२ अ।
नोकर्म नोआगम—उपशम १ ४३७ अ।
नोकर्म वर्गणा—कर्म २ २७ अ, वर्गणा ३ ५१२ ब।
नोकर्माहार—आहार १ २८५ अ, आहारक १ २९५ अ, केवली २ १५९ अ, केवलीसमुद्घात २ १५९ अ।
नोकषाय—२ ६३१ अ, कषाय २ ३५ ब, २ ३६ अ, बन्ध काल का अल्पबहुत्व १ १६१, सक्रमण ४.८६ अ, स्थितिसत्त्व स्थानो का अल्पबहुत्व १ १६५ ब।
नोक्षेत्र—क्षेत्र २ १९१ अ, २.१९२ अ
नोगौण्य नाम—उपशम १ ४३७ अ।
नोगौण्यपद—उपक्रम २.४१६ ब, पद ३ ५ अ।
नोजीव—२ ३३३ ब' २.३३४ अ।
नोत्वचा—२ ४०१ ब।
नोविशिष्ट—ओम १ ४७० अ।
नोससार—अनुप्रेक्षा १ ७८ अ, ससार ४ १४६ ब।
नोसर्वविभक्ति—अनुयोग द्वार १ १०३ ब।
नौ—अनुदिश ४ ५१० अ, केवललब्धि ३ ४१२ अ, कोटिशुद्ध आहार १ १२१ अ, १ २१२ ब, कोटिशुद्ध ब्रह्मचर्य ३ १८९ ब, ग्रैवेयक ४.५१० अ, तत्त्व २ ३५३ ब, ४ ३५९ ब, देवता २ ४४४ ब, नारद ४ २१ अ, नारायण ४.१८ अ, निधि—चक्रवर्ती ४ १४ ब, समवसरण ४ ३३१ अ। पदार्थ ३ ८ अ, ३.२१८ अ, ४.३६० अ, पूर्वधर ४ ३६ अ-ब, प्रतिनारायण ४ २० अ, बलदेव ४.१६ अ, सहनानी २ २१९ अ।
नौका—विहार (आरोहण) ३ ५७४ ब।
नौकार मन्त्र—३.२४७ अ।
नौकार श्रावकाचार—२ ६३१ अ, इतिहास १ ३४१ अ।
न्यग्रोधवृक्ष—ऋषभनाथ २.३८४, चैत्य-चैत्यालय २ २०३-३०४, पृथिवीस्वरूप ३ ५७८ ब।

न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान नामकर्म—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३ त्रिसयोगी भग १ ४०४ अ, सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

न्याय—२.६३१ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।

न्यायकंदली—वैशेषिक दर्शन ३ ६०७ ब, इतिहास १ ३३० ब।

न्यायकणिका—२ ६३५ अ।

न्यायकुमुदचद्रिका—२ ६३५ अ, इतिहास १ ३४३ अ।

न्यायचूलिका—२ ६३५ ब, अकलक १ ३१ अ, इतिहास १ ३४१ ब।

न्यायदीपावली—वेदान्त ३.५९५ ब।

न्यायदीपिका—२ ६३५ ब, इतिहास १ ३४४ ब, १ ३४५ ब।

न्यायभागमतसमुच्चय—२.६३५ब।

न्यायमकरद—वेदान्त ३ ५९५ ब।

न्यायमालाविस्तर—मीमासा दर्शन ३ ३११ अ।

न्यायरत्नमाला—मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ।

न्यायरत्नाकर—मीमासा दर्शन ३ ३११ अ।

न्यायविनिश्चय—२.६३५ ब, अकलंक १ ३१ अ, इतिहास १ ३४१ ब।

न्यायविनिश्चयविवरण—इतिहास १ ३४३ अ।

न्यायसुधा—मीमासा दर्शन ३ ३११ अ।

न्यायसूर्यावली—इतिह स १ ३४४ ब।

न्यायाभास—२ ६३१ ब।

न्यास—निक्षेप २ ५९० ब।

न्यासापहार—२ ६३५ ब।

न्यासालाप—सत्य ४ २७३ ब।

न्यून—२ ६३५ ब, गणित २ २२२ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।

न्योनदशमी व्रत—२ ६३५ ब।

प

पं—पंचेंद्रिय की सहनानी २ २१९ अ।

पंकजगंधा—महत्तरिका देवी ४.५१३ ब।

पंकजगुल्मा—वासुपूज्यनाथ २ ३७८।

पंकप्रभा—३ १ अ। चतुर्थ नरक—निर्देश २ ५७६ अ, विस्तार २ ५७६, ५७८, अकन ३ ४४१, पटल २ ५८०, इन्द्रक श्रेणीबद्ध २.५७८, ५८०। नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३। प्ररूपणा बन्ध ३ १०१, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १००, सख्या ४ ९५, क्षेत्र २ १९०, स्पर्शन ४ ४७९, काल २ १०१, अन्तर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

पंकभाग—३ १ अ, भावनलोक—निर्देश ३ ३८९ ब, ३.२०९ ब, विस्तार ३ ३८९ ब, अकन ३ २१० अ, ३ ३९०, ३.४३९, ३ ४४१। भवनो की सख्या ३ २१०, अप् तथा तेज कायिक जीव २ ४५ ब।

पंकावती—३ १ अ। विभगा नदी निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४८९, ३ ४९०, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ (चित्र स० ३७)।

पक्तिक्रिया—क्रिया २ १७५ अ।

पंगुश्रीश्राविका—कल्की २ ३१ ब।

पंच—अग्नि १ ३५ ब, अतिचार ३ ६२६ ब, अनुत्तर विमान ४ ५१४ ब, अनुमानावयव १ ९८ ब, अस्तिकाय १ २११ अ, आचार १ २४० अ, इन्द्रिय १ ३०१ ब, उदम्बर १ ३६३ अ, कल्याणक २ ३२ अ, क्षायिक लब्धि ३ ४११ ब, ज्ञान २ २५९ ब, चूलिका (श्रुतज्ञान) ४ ६९ अ, नमस्कार मन्त्र ३ २४७ अ, परमेष्ठी ३ २३ अ, परिवर्तन (ससार) ४ १४७ अ, पाप ४ ४१७ ब, भाव ३ २१८ ब, भावना ३.२२४ ब, मेरु (पूजा) ३.७५ ब, यम (महाव्रत) ३.६२७ ब, लब्धि ३.४१२ अ, व्रत ३ ६२७ ब, शरीर ४ ६ अ, समिति ४.३३९ अ, सूना २.२६ ब।

पच-अग्नि—३ २ अ, अग्नि १ ३५ ब, तप २.३५९ ब।

पंच-अतिचार—व्रत ३.६२६ ब।

पंच-अनुत्तर विमान—स्वर्ग ४.५१४ ब, प्ररूपणा दे. अनुत्तरदेव।

पंच-अनुदिश विमान—स्वर्ग ४.५१४ ब, प्ररूपणा दे. अनुदिश देव।

पंच-अनुमानावयव—अनुमान १.९८ ब।

पंच-अस्तिकाय—३ २ अ, अस्तिकाय १.२११ अ।

पंच-आचार—दे. पचाचार।

पंच-इंद्रिय — इंद्रिय १ ३०१ ब, सहनानी २ २१९ अ।

पंच-उदुंबर फल — उदम्बर १ ३६३ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ ब, श्रावक ४ ५० ब।

पंच-उदय काल — उदय १ ३९३।

पंचकल्याणक — अर्हन्त १.१३८ ब कल्याणक २ ३२ अ।

पंचकल्याणक वंदना — कृतिकर्म २ १३९ अ।

पंचकोटि शुद्ध आहार — अपवाद मार्ग १ १२१ अ।

पंचक्षायिक लब्धि — मोक्ष ३.३२६ अ, लब्धि ३ ४११ ब।

पंचगुरुभक्ति — इतिहास १ ३४० ब।

पंचज्ञान — अदर्शन परिषह १ ४६ ब, ज्ञान २ २५७ ब।

पंचचारित्रसिद्ध — अल्पबहुत्व १ १५३ ब।

पंचचूलिका — श्रुतज्ञान ४ ६९ अ।

पंचदश — उत्कृष्ट असंख्यात की सहनानी २ २१९ अ।

पंचधारणा — धारणा २ ४९१ ब, पिण्डस्थ ध्यान ३ ५८ अ।

पंचमद — ३.१ अ।

पंचनमस्कार मंत्र — मन्त्र ३ २४७ अ, सामायिक ४ ४१७ ब।

पंचनमस्कारमंत्रमाहात्म्य — ३ १ अ।

पंचनिद्रा दर्शन २ ४१२ अ।

पंचपद — वेदान्त ३.५९५ ब।

पंचपरमेष्ठी — ओम् १.४६९ ब, चैत्य (प्रतिमा) २ ३०१ अ, ध्येय २ ५०१ अ, परमेष्ठी ३ २३ अ, व्रत ३.६२६ अ, सामायिक ४.४१७ अ।

पंचपरिवर्तन — संसार ४.१४७ अ।

पंचपाप — सामायिक ४.४१७ ब।

पंचपौरिया व्रत — ३.१ अ।

पंचभाव — भाव ३ २१८ ब।

पंचभावना — ब्रह्मचर्य ३.१९० ब, भावना ३.२२४ ब, व्रत ३.६२६ ब।

पंचमकाल — अवधिज्ञान १ १८९ ब, कल्कि २ ३१ अ, काल (दुःखमा) २ ९२, धर्मध्यान २ ४८४ ब, प्रव्रज्या ३.१५० अ, मन पर्यय ज्ञान १ १८९ ब।

पंचमस्वर — स्वर ४ ५०८ ब।

पंचमी व्रत — ३ १ ब।

पंचमुष्ठी — ३ १ ब, नमस्कार २ ५०६ अ।

पंचमेरु - पूजा ३ ७५ ब।

पंच यम — छेदोपस्थापना २ ३०८ ब, व्रत ३.६२७ ब।

पंचरात्र — वैष्णव दर्शन ३.६०९ अ।

पंचलब्धि — उपशम १.४३८ अ, लब्धि ३.४११ ब, ३.४१२ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६२ ब, ४.३६९ ब।

पंचवर्ण — ३.१ ब, ग्रह २ २७४ अ।

पंचविंशति — उपाध्याय के गुण १ ४४४ अ, सम्यग्दर्शन के दोष ४.३५१ अ।

पंचविंशति कल्याण भावना व्रत — ३ १ ब।

पंचविंशतिका — १ ३३१ अ १ ३४३ ब।

पंचविंशिका - इतिहास १ ३३४ ब।

पंचव्रत — व्रत (अणु तथा महा) ३ ६२७ ब।

पंचशती — वेदान्त ३ ५९५ ब।

पंचशरीर — अल्पबहुत्व १ १४२ अ, १ १५८, शरीर ४.६ अ।

पंचशिख — साख्यदर्शन ४ ३९८ ब।

पंचशिखरी — ३.१ ब।

पंचशिरा — ३ १ ब, कुण्डलवर पर्वत के कूट का देव — निर्देश ३ ४७५ ब, अंकन ३ ४६७।

पंचश्रुतज्ञान व्रत — ३ १ ब।

पंचषष्ठि — पणट्ठी की सहनानी २ २१८ ब।

पंचसंग्रह — ३ १ ब, अमितगति १ १३२ अ। इतिहास — प्रथम १ ३४१ अ, द्वितीय १ ३४३ अ, तृतीय १.३४३ अ, ब।

पंचसंग्रह टीका — इतिहास १ ३४६ अ।

पंचसंग्रह वृत्ति — इतिहास २ ३४२ ब।

पंचसमवाय — नियति २ ६१९ अ।

पंचसमिति — समिति ४ ३३९ अ।

पंचसूनदोष — कर्म २ २६ ब।

पंचस्तूपसंघ — १ ३१७ ब, १ ३२६ ब।

पंचांक — ३ २ अ।

पंचांग — नमस्कार २ ५०६ अ।

पंचाग्नि — ३ २ अ, अग्नि १ ३५ ब, तप २.३५९ ब।

पंचाग्नितप — तप २ ३५९ ब।

पंचाचार — आचार १ २४० अ, चारित्र २ २९१ अ, दीक्षा धारण २ २९१ अ, मिथ्यादृष्टि ३.३१३ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।

पंचातिचार — व्रत ३ ६२६ ब।

पंचाध्यायी — ३ २ अ, इतिहास १ ३४७ अ।

पंचामृत अभिषेक — पूजा ३.७९ अ।

पंचास्तिकाय — ३ २ अ, अस्तिकाय १.२११ अ।

पंचास्तिकाय (शास्त्र) — ३ २ अ, इतिहास १.३४० अ।

पंचास्तिकाय टीका — अमृतचन्द्र १.१३३ अ। इतिहास १ ३३४ अ, १ ३४२ अ, ब, १ ३४४ अ।

पंचास्तिकायप्रदीप — इतिहास १ ३४२ ब।

पंचीकृत विचार — वेदान्त ३.५९७ अ।

पंचेंद्रिय (जीव)—१ ३०६, अवगाहना १.१७९, आयु १ २६३, १.२६४, इन्द्रिय १ ३०७ अ, केवली २ १६२ अ, ब, जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २ ३४३, तिर्यंच २ ३६७, त्रस २ ३९८ मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, सक्लेश विशुद्धि स्थान का अल्पबहुत्व १ १६० अ।

पचेंद्रिय जातिनाम कर्म—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९६ ब, ३ ९७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४, सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६९।

पंचेंद्रिय जीव—प्ररूपणा—बन्ध ३.१०१, बन्ध स्थान ३ ११३; उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१९७, सख्या ४ ९९, क्षेत्र २.१००, स्पर्शन ४ ४८३, काल २.१०६, अन्तर १ ११, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

पचेंद्रियत्व—केवली २ १६२ अ, ब।

पंचेंद्रिय तिर्यंच—प्ररूपणा—बन्ध ३.१०१, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१७२, सख्या ४ ९५, क्षेत्र २.१९८, स्पर्शन ४.४७९, काल २.१०१, अन्तर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

पंजाब—मगधदेश १ ३१० ब।

पंजिका—३.२ अ।

पंडित—३.२ ब।

पंडितपडितमरण—मरण ३ २८० ब।

पंडितमरण—मरण ३ २८० ब, सल्लेखना ४ ३९२ ब।

पंद्रह—उत्कृष्ट असख्यात की सहनानी २ २१९ अ।

पंप—३ २ ब।

पउमचरिउ—इतिहास १ ३४० ब, द्वितीय १ ३४१ ब, कवि रइधू वाला तृतीय १.३४५ ब।

पकोटि—सख्या प्रमाण २.२१४ ब।

पक्वाश्य—औदारिक शरीर १.४७२ अ।

पक्ष—३ २ ब, काल का प्रमाण २.२१६ अ, ब, वाद ३.५३३ अ, श्रावक ४.४८ अ।

पक्षपात—३ ३ ब, एकान्त १ ४६३ ब, नय २.५१८ अ, २.५२४ ब, मिथ्यादृष्टि (श्रद्धान) ४.४६ अ, श्रद्धान ४ ४६ अ, श्रोता १ ४२६ अ, सम्यग्दृष्टि ४ ३७७ ब।

पक्षपाती श्रोता—उपदेश १ ४२६ अ।

पक्षाभास—३ ३ अ।

पक्षेप—३ ३ ब।

पच्चीस—उपाध्याय के गुण १ ४४४ अ, सम्यग्दर्शन के दोष ४ ३५१ अ।

पज्जुण्णचरिउ—१ ३४४ ब।

पटच्चर—३ ३ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

पटदेवी—भवनवासी इन्द्र की ३.२०९ अ।

पटल—३.३ ब, प्रस्तर २ ५७६ ब। नरकपटल—निर्देश ३ ५७६ ब, नामनिर्देश २ ५७९ अ, विस्तार २.५७९ अ, अकन ३ ४४१। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१४ ब, नामनिर्देश ४ ५१६ अ, विस्तार ४.५१६ अ, अकन ४ ५१५ दक्षिण-उत्तर विभाग ४ ५१४ ब।

पट्टक शाला—सल्लेखना ४ ३९४ अ।

पट्टन—चक्रवर्ती ४.१३ ब।

पणट्ठी—३ ३ ब, सख्याप्रमाण २.२१४ ब, सहनानी २ २१८ ब।

पण्य भवन—३ ३ ब।

पण्हसवण—३ ३ ब।

पतंजलि—योगदर्शन ३ ३८४ अ।

पतझड़—सुपार्श्वनाथ श्रेयांसनाथ २ ३८२।

पतन—आहारान्तराय १ २९ अ।

पताका—पूजा ३ ७९ अ।

पति—स्त्री ४.४५१ ब, ४ ४५२ अ।

पतिव्रत—स्त्री ४ ४५१ ब।

पत्तन—३ ३ ब, बलदेव ४.१७ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

पत्ति—३ ३ ब, सेसा ४ ४४४ अ।

पत्रचारण ऋद्धि—१.४५३ अ।

पत्रजाति वनस्पति—३ ३ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३ २०४ ब।

पत्रपरीक्षा—३ ३ ब, इतिहास १.३४१ ब।

पत्रसमूह—स्वप्न ४ ५०५ अ।

पद—३ ३ ब, आगम (श्रुतज्ञान) १.२२८ ब।

पदगतभंग—३.१९७ अ।

पदज्ञान—श्रुतज्ञान ४.६५ अ।

पदधन—३ ५ ब, गणित २ २२९ ब।

पदनिक्षेप—३ ४ ब।

पदमीमांसा—अनुयोग १.१०२ ब।

पदविभागी—आलोचना १.२७७ अ, समाचार ४.३३६ ब।

पदसमास—श्रुतज्ञान ४.६५ अ।

पदसाहित्य—इतिहास १.३४७ ब।

पदस्थ ध्यान—३ ५ ब।

पदानुसारी ऋद्धि—१ ४४८, १ ४४९ ब, गणधर २.२१२ ब।

पदार्थ—३ ८ अ, गुण २ २४४ ब, द्रव्य २ ४६० अ, प्रमाण ३ १४२ अ।

पदार्थ श्रद्धान—मिथ्यादर्शन ३ ३०० अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०२ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ।

पदुम—सख्याप्रमाण २ २१४ ब।

पद्धति—३ ८ अ, उपदेश १ ४२५ अ।

पद्धतिटीका—इतिहास १.३४० ब।

पद्म—३ ९ ब, काल का प्रमाण २.२१६ अ, २ २१७ अ, कुरुवंश १ ३३५ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, ४ १४ ब, तीर्थंकर २ ३९१, तीर्थंकर चन्द्रप्रभ व पुष्पदन्त २ ३७८, बलदेव ४ १६ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ, यदुवंश १ ३३७, रघुवंश १ ३३८ अ।

पद्म (कूट)—कुण्डलवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६७। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३ ४६८-३ ४६९। विद्युत्प्रभ गजदन्तका—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८७, अक ३ ४६८, ३ ४६९। विद्युत्प्रभ गजदन्त का—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४५७।

पद्म (क्षेत्र)—विदेह का क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नाम-निर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

पद्म (देव)—कुण्डलवर के कूट का ३ ४७५ ब, नाभिगिरि का ३ ४७१ अ, पुष्करार्ध द्वीप का ३ ६१४।

पद्म (द्रह)—हिमवान पर्वत पर स्थित—निर्देश ३ ४४६ ब, ३ ४५३ ब, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४५४।

पद्म (नाभिगिरि)—रम्यक क्षेत्र का—निर्देश ३ ४५२ ब, नाम निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५ अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने चित्र ३ ४५२ ब, वर्ण ३ ४७७।

पद्म (स्वर्ण)—प्राणतेन्द्र का यान ४ ५११ ब। स्वर्ण-पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४ ५१९ ब, देवआयु १ २६७।

पद्मक—यदुवंश १.३३७।

पद्मकावती—विदेह का क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नाम निर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०-४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ। विजयवान वक्षार का कूट तथा देव ३.४७२ब।

पद्मकीर्ति—३.९ ब, नन्दि सघ १.३२३ ब, इतिहास १ ३३१ अ, १.३४२ ब, १ ३४३ ब।

पद्मकूट—३ ९ ब, विदेह वक्षार गिरि—निर्देश ३ ४६० अ, नाम निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ, वर्ण ३ ४७७। इस पर्वत का कूट तथा देव ३ ४७२ ब।

पद्मगंधा—वैमानिक गणिका ४ ५१४ अ।

पद्मगुल्म—३ ९ ब, शीतलनाथ २ ३७८।

पद्मगुल्मा—सुमेरु के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नाम निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१ अकन ३ ४५१, चित्र ३ ४५१।

पद्मदेव—३ १० अ, कुरुवश १ ३३५ ब।

पद्मनंदि—३ १० अ। प्रथम—नन्दिसघ १ ३२३ अ, देशीयगण १ ३२४ ब, कुन्दकुन्द ३ १२७ ब, इतिहास १ ३२८ ब। द्वितीय—(आबिद्धकरण पद्मनन्दि)देशीय गण १ ३२४ ब, १ ३२५, इतिहास १ ३३० अ। तृतीय—काष्ठासघ १.३२७ अ, इतिहास १ ३३० ब। चतुर्थ—नन्दिसघ देशीयगण १ ३२५, इतिहास १ ३३० ब, १ ३४२ ब। पचम—इतिहास १ ३३१ अ, १ ३४३ ब। अष्टम—(पद्मनन्दि लघु) नन्दिसघ भट्टारक १.३२३ ब, इतिहास १ ३३२ ब। नवम्—नन्दिसघ भट्टारक १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३२ ब, १ ३४५ ब।

पद्मनंदि पंचविंशतिका—३ १० ब, इतिहास १.३३१ अ, १ ३४३ ब।

पद्मनदि सैद्धांतिक—आबिद्धकरण पद्मनन्दि—देशीयगण १ ३२५।

पद्मनाभ (कवि)—३ १० ब, इतिहास १.३३३ अ-ब, १ ३४५ ब।

पद्मनाभ—३ १० ब, कुरुवश १ ३३६ अ, चक्रवर्ती ४ ११ ब, चन्द्रप्रभ २ ३७८।

पद्मनाभचरित्र ३ १० ब, इतिहास १ ३४६ ब।

पद्मनिभ—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

पद्मपाद—वेदान्त ३ ५९५ ब।

पद्मपुंख—भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ।

पद्मपुंगव—भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ।

पद्मपुराण—३ १० ब, इतिहास १ ३३३ ब।

पद्मप्रभ—३ १० ब, तीर्थंकर २.३७८-३९१, भावि शलाका-पुरुष ४ २५ अ।

पद्मप्रभ मलधारी देव—३.१० ब, इतिहास १.३३१ब, १ ३४४ अ।

पद्ममाल – ३ १० ब, कुरुवंश १ ३३५ अ। स्वर्गपटल – निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६७।

पद्ममालिनी—व्यतरेन्द्र गणिका ३ ६११ ब।

पद्ममाली—विद्याधर वश १ ३३९ अ।

पद्मरथ – ३.१० ब, अनन्तनाथ २ ३७८ ब, कुरुवंश १ ३३५ ब, १.३३६ अ, चक्रवर्ती ४ ११, धर्मनाथ २ ३७८, वज्रधर २.३९२, विद्याधरवश १.३३९ अ।

पद्मरागमयी—सुमेरु की परिधि ३ ४४९ अ-ब।

पद्मराज—भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ।

पद्मलेश्या—३ ४२३ ब, आयुबन्ध १ २५९ अ। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०७, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३८४, उदयस्थान, १ ३१३ ब, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रियोगी भग १ ४०७ ब। सत् ४ २४९, सख्या ४ १०८, क्षेत्र २ २०६ स्पर्शन ४ ४९०, काल २ ११६, अन्तर १ १८, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१।

पद्मवत्—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नाम निर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४, के सामने (चित्र न० ३७) चित्र ३ ४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देव ३ ४७२ ब।

पद्मवान्—३ ११ अ, रम्यक क्षेत्र का नाभिगिरि—निर्देश ३.४५२ ब, नामनिर्देश ३ ४७९ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३.४४४, ३ ४६४, (चित्र स० ३७) चित्र ३ ४५२ ब, वर्ण ३ ४७७।

पद्मश्री—चमरेन्द्र की अग्रदेवी ३.२०९ अ।

पद्मसिंह—३ ११ अ, इतिहास १ ३३१ अ।

पद्मसुन्दर—इतिहास १ ३३३ ब।

पद्मसेन—३ ११ अ, पचस्तूप सघ १ ३२६ ब, पुन्नाटसघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३३० अ, विमलनाथ २.३७८।

पद्महृद—३ ११ अ।

पद्मांग—३ ११ अ, काल का प्रमाण २ २१६ अ, २.२१७ अ।

पद्मा—३.११ अ, चमरेन्द्र की अग्रदेवी ३ २०९ अ। वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठ देवी ४ ५१३ ब, ४ ५१४ अ, वैमानिक इन्द्रो की वल्लभिका ४ ५१३ ब, व्यन्तरेन्द्र की वल्लभिका ३ ६११ ब, विमलनाथ २ ३८८। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी – निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३.४६८ सुमेरु के वनो की पुष्करिणी – निर्देश ३ ४५३ ब, नामनिर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३.४९०, ३.४९१, अकन ३.४५१, चित्र ३ ४५१।

पद्माल—३ ११ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

पद्मावत—३ ११ अ।

पद्मावती—३ ११ अ, पार्श्वनाथ २ ३७८, मुनिसुव्रतनाथ २.३८०। यदुवंश १.३३७। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६९। विदेह की नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ (चित्र स० ३७), चित्र ३ ४६० अ।

पद्मावती कल्प—३ ११ अ, इतिहास (भैरव पद्मावती कल्प) १ ३४३ ब।

पद्मासन—आसन १ २८१ अ, कृतिकर्म २.१३५ ब, विमलनाथ अनन्तनाथ २ ३७८।

पद्मोत्तर—३ ११ अ, उत्तरकुरु दिग्गजेंद्र—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अकन ३ ४४४। कुडलवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७५ ब, अकन ३ ४६७। रुचकवर पर्वत का दिग्गजेंद्र—निर्देश ३ ४७६ अ।

पद्मोत्तर (नाम)—वानरवशी विद्याधर १ ३३८ ब, वासुपूज्यनाथ तथा श्रेयासनाथ २ ३७८।

पद्य—साधु का स्थितकल्प ४ ४०४ ब।

पनसा—३ ११ अ, मनुष्यलोक (नदी) ३.२७५ ब।

पन्नग—विद्या ३.५४४ अ।

पन्नालाल—३ ११ अ, इतिहास १ ३३४ ब।

पब्भार—वसतिका (शिक्षागृह) ३ ५२८ अ।

परपरा ३ ११ ब, आगम १ २२८ अ, १ २३५ ब। आगमार्थ १ २३० ब, उत्तर प्रतिपत्ति १ ३५६ अ।

परंपरा-आगत—आगम की प्रामाणिकता १.२३५ ब।

परपरा-आगम – १ २२८ अ, १.२३५ ब।

परपरा-गुरु – १ ३२२-३२७।

परपरा-बध – ३ १७१ ब।

परपरा-मुक्ति – धर्मध्यान २ ४८६ ब।

परपरा-मोक्ष का कारण—उपयोग १.४३२ अ, चारित्र २२९१ अ, धर्म २.४७५ ब, धर्मध्यान २ ४८४ अ-ब, २ ४८६, ब, मोक्षमार्ग ३ ३३९ ब, सस्कार ४ १५० अ, स्वाध्याय ४ ३२४ अ।

परपरा-लब्धि—श्रुतज्ञान ४.६० अ।

परपराहेतु—स्वाध्याय ४.५२४ अ।

परंपरोपनिधा—अनुयोगद्वार १.१०२ ब, श्रेणी ४ ७२ अ।

पर—३ ११ ब, परत्वापरत्व ३ १२ अ, परम ३ १२ ब, ३.१३ अ, सम्यग्दर्शन (स्व-पर विभाग) ४.३४६ ब, सापेक्षधर्म १.१०९ अ।

पर-अहिंसा—अहिंसा १ २१६ ब।
पर-आकार—सप्तभंगी ४.३२२ अ।
पर-उपकार—उपकार १ ४१४ ब, १.४१५, उपदेश १.४२५ अ, १ ४२६ ब, कर्ता-कर्म २ २३ अ।
पर-काल—काल २ ८० अ, चतुष्टय २ २७८ अ, सप्तभंगी ४.३२२ अ।
पर-कृति—३ ११ ब।
पर क्षेत्र—क्षेत्र २ १९१ ब, २.१९२ अ, चतुष्टय २.२७८ अ, ससार ४ १४७ अ, ४ १४८ अ, सप्तभगी ४ ३२१ ब।
परगण चर्या सल्लेखना ४.३९० ब, ४.३९१ अ।
परगणानुपस्थापन—परिहार प्रायश्चित्त ३ ३५ ब।
पर-निरपेक्ष—स्वभाव ४ ५०७ अ।
पर-ग्राम-अभिघट्ट दोष—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।
परघात नामकर्म प्रकृति—३ ११ ब, प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६५, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३.१३७, बन्ध ३ ९७, बधस्थान ३.१११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४, सक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६९ ब।
पर-चतुष्टय—सप्तभंगी ४ ३१७ ब, ४ ३१९ ब, ४ ३२१ ब।
पर-चारित्र—चारित्र २.२८२ ब, २ २८३ अ।
परतत्रता—कारण-कार्य २ ६२ ब, २.७१ ब, २.७३ ब, कर्मोदय २.७१ ब।
परतत्रवाद—३ १२ अ।
परतत्रविवक्षा—स्याद्वाद ४ ४९८ अ।
परत्व—काल २ ८३ अ, पर ३.११ ब, परत्वापरत्व ३ १२ अ।
परत्वापरत्व—३ १२ अ।
परदेश-अभिघट दोष—आहार १.२९० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ।
परद्रव्य—३.१२ अ, चतुष्टय २ २७८ अ, सप्तभगी ४ ३२१ ब।
परद्रव्य-ग्राहक नय—नय २ ५४५ ब।
परद्रव्य-रत—मिथ्यादृष्टि ३ ३०२ ब।
परद्रव्य-विरत—उपदेश १.४२४ अ।
पर-निंदा—निंदा २.५८७ ब।
पर-निमित्तक उत्पाद—आकाश १.२२१ ब, उत्पाद १.३५७ ब।
पर-पक्षदूषक—हेतु ४ ५४१ अ।
पर-पर्याय—पर्याय ३.४६ ब।
पर-पुरुष—ब्रह्मचर्य ३ १९२ ब।
परप्रकाशक—ज्ञान २ २५८ ब, दर्शन २.४०६ अ।
पर-प्रत्यय उत्पाद—आकाश १ २२१ ब, उत्पाद १.३५७ ब।
पर-प्रशंसा—निंदा २ ५८८ अ।
पर-ब्रह्म—मोक्ष ३ ३२५ अ।
पर-भविक प्रत्यय—प्रकृतिबध ३ ८८ ब, ३ ९० अ।
पर-भाव—चतुष्टय २.२७८ अ, भाव ३ २१८ ब, ससार ४ १४७ अ, सप्तभगी ४ ३२२ ब, सापेक्ष धर्म १ १०९ ब।
परम—३ १२ ब, तत्त्व २ ३५३ अ, समयसार ४.३२९ अ।
परम अद्वैत—३.१३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परम एकत्व—३.१३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ।
परमऋषि—१ ४५७ ब।
परम गुरु—गुरु २.२५१ ब।
परम ज्ञान—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परम ज्योति—३.१३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परम तत्त्व—३ १३ अ, परम ३.१२ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परम तत्त्वज्ञान—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब।
परम धर्मध्यान—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परम ध्यान—३.१३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ।
परम निजस्वरूप—मोक्षमार्ग ३.३३५ ब।
परम निरुद्धमरण—सल्लेखना ४.३८९ अ।
परम-परम—तत्त्व २ ३५३ अ।
परम ब्रह्म—३ १३ अ, ओम् १.४६९ ब, ब्रह्म ३ १८८ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब।
परमभाव-ग्राहक नय—नय २ ५४५ ब।
परमभेदज्ञान—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परम विष्णु—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब।
परम वीतरागता—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परम समता—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ।
परमसमरसी भाव—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परम समाधि—३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परम सुख—सुख ४.४३२ ब।
परम स्वभाव—सुख ४.४२९ अ।
परम स्वरूप—३.१३ अ।
परम स्वाध्याय—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परम स्वास्थ्य—३.१३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ।

परमहंस —३ १३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, वेदात ३.५९५ ब।
परमा—जाति २ २२६ ब।
परमागम नेत्र—अनुप्रेक्षा १.७८ अ।
परमागमसार—इतिहास १.३४५ ब।
परमा जाति—जाति २ ३२६ ब।
परमाणु—३ १३ अ, आकाश मे अवस्थान १ २२३ अ, क्षेत्रप्रमाण २.२१५ अ, मूर्त ३.३१६ ब, वर्गणा ३ ५१५ अ स्कन्ध ४ ४४६ अ।
परमात्म ज्ञान—३ १८ ब।
परमात्म तत्त्व—३ १८ ब, तत्त्व २ ३५३ ब।
परमात्मदर्शन—३ १८ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब।
परमात्मप्रकाश—३ १८ ब, इतिहास १ ३४१ अ।
परमात्म भावना—३ १८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ।
परमात्मराजस्तोत्र—इतिहास १.३४५ ब।
परमात्मस्वरूप—३.१८ ब मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब।
परमात्मा—३.१९ अ, आत्मा १ २४४ ब, ज्ञानावरण २ २७० ब, जीव २.६३३ ब, ध्येय २.५०१ ब, भव्य ३ २१३ अ।
परमाध्यात्मतरंगिनी—३ २२ अ, अमृतचन्द्र १ १३३ अ, इतिहास १ ३४६ ब।
परमानंद—३ २२ ब, अनुभव १ ८५ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ ब।
परमानंदविलास—३ २२ ब, इतिहास १.३४८ अ।
परमानंद सूरि—इतिहास १ ३३१ ब।
परमार्थ—३ २२ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
परमार्थ गीत—इतिहास १ ३४७ ब।
परमार्थ तत्त्व—३ २२ ब, तत्त्व २.३५३ अ।
परमार्थ दोहा शतक—इतिहास १ ३४७ ब।
परमार्थ बाह्य—३.२२ ब।
परमार्थ सत्य—उपदेश १.४२४ ब।
परमावगाढ दर्शनार्य—आर्य १ २७५ अ, ४.३४८ अ।
परमावगाढ रुचि—सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।
परमावगाढ सम्यक्त्वार्य—१ २७५ अ।
परमावगाढ सम्यग्दर्शन—४.३४९ अ।
परमावधि—निर्देश १.१८७ ब, गुणप्रत्यय १ १९३ ब। देशावधि १ १९३ ब, विषय १ १९९ अ।
परमावस्था—मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब।
परमुख उदय—उदय १ ३६६ अ, १.३६७ अ, १.३७१ ब।
परमेश्वर—३.२२ ब, तीर्थंकर २ ३७७।
परमेश्वर तत्त्व—३ २२ ब।
परमेष्ठी—३ २२ ब, अनुभव १.८३ अ, ओम् १ ४६९ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ अ।
परमेष्ठी (कवि)—३.२२ ब, इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ अ।
परमेष्ठीगुण व्रत—३.२३ अ।
परमेष्ठीप्रकाशसार—इतिहास १.३४६ ब।
परमेष्ठीसहाय—इतिहास १ ३३४ ब।
परमोपेक्षा संयम—चारित्र २ २८५ अ, २ २९२ ब, शुद्धोपयोग १.४३१ अ, १ ४३३ ब।
परमौदारिक शरीर—अर्हत १ १३८ अ, केवली २ १५८ ब।
पर-रक्षा—अहिंसा १ २१६ ब।
पर-रूप से उदय—उदय १ ३६६ ब।
परलोक—३ २३ अ, निःकांक्षित २ ५८५ ब, भय ३ २०६ अ, मोक्ष ३ ३२४ ब।
परलोक-भय—भय ३ २०६ अ।
परवश-अतिचार—अतिचार १ ४३ ब।
पर-वात्सल्य—उपकार १.४१५ ब।
पर वाद—३ २३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।
पर व्यपदेश—३ २३ ब।
परशुराम—३ २३ ब।
पर-संग्रह नय—नय २.५३४ अ-ब।
पर-संग्रहाभास—३ ५३४ ब।
पर-संयोगी भंग—भंग ३ १९७ अ।
पर-समय—३ २३ ब, एकान्त १ ४६५ अ, चारित्र २.२८२ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०३ ब, ३ ३०४ अ, समय ४.३२८ अ।
पर-समय उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब।
पर-सामान्य—सामान्य ४ ४१२ अ।
परस्त्री—स्त्री ४ ४५० ब, ४ ४५२ अ।
परस्त्री-त्याग—ब्रह्मचर्य ३ १८९ ब, ३.१९२ अ, ३ १९३ ब।
परस्थान-अल्पबहुत्व—१ १४६, १ १५४, १.१५५, १.१५७, १ १६२, १ १६९, १.१७२।
परस्थान-गोपुच्छा—२.२५४ अ।
परस्थान-भागाभाग—४ ११५।
परस्थान-संक्रमण—४.८४ अ।
परस्थान-सन्निकर्ष—४ ३१२ अ।
परस्पर-परिहार-विरोध—विरोध ३ ५६५ अ।
परहिंसा—अहिंसा १ २१६ ब, हिंसा ४ ५३३ अ।
परहित—उपदेश १ ४२५ अ, हित ४.५३७ अ।
परांभोधि—नारायण ४.१८।
परा—३,२३ ब।

पराजय —३ २३ ब।
परात्मा—३.२३, सप्तभंगी ४ ३२१ ब।
परामर्शन—स्मृत्यन्तराधान ४ ४९५ ब।
परार्थप्रमाण— प्रमाण ३.१४१ अ।
परार्थाधिगम—१ ५० ब।
परार्थानुमान—१.९७ अ-९८ ब।
परावर्त—३ २३ ब।
परावर्तन— कृतिकर्म (आवर्त्त) १.२७९ अ, संसार (परिवर्तन) ४ १४७ अ।
पराशर—३ २३ ब, कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ।
परिंजा—३ २३ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
परिकर्म— ३ २३ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ ब।
परिकर्म (शास्त्र)—इतिहास १ ३४० ब।
परिकर्माष्टक—३ २३ ब, गणित २.२२२ अ।
परिगणित—३ २३ ब।
परिगृहीता—३.२३ ब।
परिग्रह—३ २३ ब, अचेलकत्व १.४० अ-ब, अपवाद मार्ग १ १२२ ब, उपधि १.४२७ अ, संज्ञा ४.१२०, ४.१२१ अ, हिंसा १.२१७ अ, ४ ५३२ ब।
परिग्रह-त्याग—अचेलकत्व १.४० अ-ब, अहिंसा १.२१७ अ, चारित्र २ २९४ अ, परिमाण ३ २६ अ, ३.२७।
परिग्रह-त्याग-अणुव्रत—परिग्रह ३ २६ अ, ३ २७।
परिग्रह-त्याग-प्रतिमा—परिग्रह ३.२६ अ, ३ २७।
परिग्रह-त्याग-महाव्रत—परिग्रह ३ २६ अ।
परिग्रह-त्याग व्रत—परिग्रह ३.२६ अ, व्युत्सर्ग ३ ६२४ अ।
परिग्रह-भाव—राग ३.३९९ ब।
परिचारक—३ ३० अ, सल्लेखना ४.३९२ अ, ४.३९४ ब।
परिचित—निक्षेप २ ६०२ अ।
परिच्छेद—अनुयोग १.१०२ अ, ज्ञानावरण २ २७० ब।
परिणमन—३ ३० अ, ३ ३१ अ, (अलोकाकाश) २ ८५ ब, उत्पादादि १.३५८ अ, १.३६१ ब, १ ३६२ ब, कर्ता-कर्म २ १६ ब, २ १८ अ, २.१९ अ-ब, २.२१ अ। कारणकार्य—निमित्त २.६८ अ, योग्यता २ ६१ अ, स्वतंत्रता २ ६० अ-ब, २.६६ ब, काल २.८५ अ, गुण २.२४१ ब, द्रव्य २ ४६० ब, धर्म-अधर्म द्रव्य २ ४८९ ब, भाव ३.२१७ ब, ३ २७७ ब, वस्तु ३ ५३० ब।
परिणाम (परिणमन)—३ ३० ब, उपादान १.४४३ ब, कर्ता-कर्म २.१६ ब, २ १८ अ, २.१९ अ-ब, २.२१ अ, कारण-कार्य २ ५५ अ, काल २.७९ अ, २.८२ अ, २.८३ अ, पर्याय ३.३१ अ, ३.४५ ब।
परिणाम परिणामक शक्ति— ३.३० ब।
परिणाम भाव—३ ३० ब, अध्यवसान १ ५२ अ, अन्तराय कर्म के बन्धयोग्य १.२८ अ, आयुकर्म के बन्धयोग्य १ २५४ अ, उदीरणा १ ४१० अ। उपयोग—१ ४२९ अ, कर्मबन्ध १ ४३४ ब, संयम १.४३४ अ, स्वभाव-विभाव १ ४२९ ब। करण—२ ५ ब, अधःप्रवृत्तकरण २.८-११, अनिवृत्तिकरण २ १३-१४, अपूर्वकरण २ १२ अ, २ १३ अ, करणत्रिक २ ७ अ, २ १४ अ, त्याग २ ३९६ ब, पारिणामिक ३ ५४ ब, प्रकृतिबन्ध ३.८८ ब, ३ ९० अ, प्रायश्चित्त ३ १६० अ, बन्ध ३ १७५ अ, भाव ३.२१७ ब, योगस्थान ३.३८२ अ, सल्लेखना ४ ३९० ब।
परिणाम-योगस्थान—३ ३८२ अ।
परिणाम-शक्ति - ३ ३२ ब।
परिणाम-शुद्धि—उदयाभाव १ ३६६ ब।
परिणामी—३.३२ ब, कर्ता-कर्म २ १८ अ, गुण २ २४१ ब, द्रव्य २ ४५६ ब, समयसार ४ ३२९ अ।
परितापन—अघ कर्म १.४८ अ।
परितापन कर्म—कर्म २.२६ अ।
परिदाहन—३ ३२ ब।
परिदेवन—३.३२ ब।
परिधि—३.३३ अ। गणित—क्षेत्रफल २.२३२ ब, वलय २ २३३ ब, वृत्त २ २३२ ब। सुमेरु की परिधियाँ ३ ४४९ अ।
परिनिवृत्ति क्रिया—संस्कार ४.१५३ अ।
परिनिष्क्रमण—आहारक शरीर १ २९६ ब।
परिपट्ट—व्युत्सर्ग दोष ३ ५२९ अ।
परिपीडित—३ ३३ अ, वसति का दोष ३ ६२२ ब।
परिभोग— भोग-परिभोग ३ २३७ ब।
परिभ्रमण—योग ३.३७५ अ, योग (जीवप्रदेश) ३.३७५ अ, संसार ४.१४६ ब।
परिमल्ल (कवि)—इतिहास १ ३४७ ब।
परिमह—३ ३३ अ।
परिमाण— ३ ३३ अ।
परिमाणगत प्रत्यय—३.१३१ ब।
परिमाणहीन—३.३३ अ।
परिमित - ३ ३३ अ, सत्य ४ २७० ब।
परियात्रा—मनुष्यलोक (पर्वत) ३.२७५ ब।
परिवर्त—३ ३३ अ, आहार दोष १ २९० ब, उद्दिष्ट दोष १ ४१३ अ।
परिवर्तन—३ ३३ अ, आर्यखण्ड १.२७५ अ, उत्पादादि १ ३६१ ब, कर्म २.२९ अ, गणित २ २२६ अ-ब, संसार ४.१४६ ब।

परिवर्तना—३ ३३ अ, उपयोग १ ४२९ ब।
परिवर्तमान परिणाम—परिणाम ३ ३१ ब।
परिवार-देवी—वैमानिक इन्द्र आदि की—आयु १ २७०।
परिवार-मंडप—समवसरण ४ ३३० अ।
परिशातन कृति—३ ३३ अ।
परिशेष-न्याय—३ ३३ अ।
परिषह—३ ३३ अ, कायक्लेश २ ४८ अ, केवली २.१६० ब, ध्यान २.४९३ ब, सामायिक ४.४१७ अ।
परिषह-जय—३.३३ ब।
परिसर्प—तिर्यंच निर्देश २.३६७ ब, आयु १.२६३।
परिस्पंद—३.३५ अ, क्रिया २.१७३ अ, योग ३ ३७६ अ।
परिस्पदन—उत्पादादि (धर्म आदि द्रव्य) १ ३६२ ब। गति २ २३५ अ। जीवप्रदेश २ ३३९ ब, योग ३.३७५ अ।
परिस्पंदात्मक क्रिया—३.४७ अ।
परिहार—३ ३५ अ, उपयोग (विषकुंभ) १ ४३४ अ, परिहारविशुद्धि ३.३६ अ।
परिहार प्रायश्चित—३ ३५ अ।
परिहार-विशुद्धिसंयम—३ ३६ अ, छेदोपस्थापना २.३०८ अ, लब्धिस्थान का अल्पबहुत्व १.१६०, वेदभाव ३ ५८८ ब, सिद्धो का अल्पबहुत्व १ १५३। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०६, बन्धस्थान ३ ११३। उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३९३, उदीरणा १.४११, सत्त्व ४.२८३। मोह-स्थितिसत्त्व ४.३०९ अ, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०७। सत् ४.२३८, सख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४ ४८९, काल २.११४, अन्तर १.१६, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५१।
परिहास—समिति ४ ३४० अ।
परीक्षा—३ ३८ अ, उपदेश १.४२५ ब, ऊहा १ ४४५ ब, निक्षेप २ ५९२ अ, न्याय २ ६३४ ब, विचय ३ ५४१ ब, विनय ३ ५५४ अ, श्रद्धान ४ ४४ अ, सल्लेखना ४.३९० ब।
परीक्षामुख—३.३८ अ, इतिहास १ ३४३ अ।
परीक्षित—३.३८ अ, कुरुवश १.३१० ब।
परीत—३.३८ अ, अनन्त व असख्यात २.२१४ ब। वर्गणा ३.५१४ ब।
परीतवर्गणा—३ ५१४ ब।
परीतानत—१ ५५ अ।
परीतासंख्यात—१ २०६ अ।
परीलेखा—३.३८ अ।
परुषवचन—असत्य १.२०८ अ।
परोक्ष—३ ३८ ब, अनुभव १.८३ ब, १ ८७ अ, अवधि-मन पर्यय १.१९० ब, प्रमाण ३ १४१ ब, मति-श्रुत १ ८३ ब, ४ ६३ ब, श्रुतज्ञान ४ ६३ ब, स्वाध्याय ४.५२४ अ।
परोक्षज्ञान—देशतः (प्रमाण) ३ १४१ ब।
परोक्षविनय—विनय ३ ५४९ ब।
परोक्षाभास—३ ३९ अ।
परोदय—३ ३९ ब, उदय १ ३६६ अ, १ ३६७ अ, १ ३७१ ब।
परोदयबंधी प्रकृति—१ ३९८ अ, बन्ध उदय सयोगी प्ररूपणा १ ३९९।
परोपकार—उपकार १.४१५ अ-ब, उपदेश १.४२५ अ, १ ४२६ ब, कर्ता-कर्म २ २३ अ।
परोपघात—हिंसा ४ ५३३ अ।
परोपदेशनिमित्तक मिथ्यादर्शन—मिथ्यादर्शन ३ ३०० ब, ३ ३०१ अ।
परोपरोधाकरण—अस्तेयव्रत १ २१४ अ।
पर्यंकासन—आसन १ २८१ ब, कायक्लेश २.४७ ब। कृति-कर्म २.१३४ ब, २ १३५ अ-ब।
पर्यंकासन तप—कायक्लेश २ ४७ ब।
पर्यनुयोज्योपेक्षण निग्रहस्थान—३.३९ ब।
पर्यवसन्न—३ ३९ ब।
पर्याप्त(जीव)—अकालमृत्यु ३ २८५ अ, आयु १.२६३, आहारक १.२९५ अ, आहारक काय योग १ २९८ अ, काय २.४४, काययोग २ ४६ ब, केवली समुद्घात २ १६८ अ, जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २.३४३, तिर्यंच २ ३६७, निगोद (वनस्पति) ३.५०९ अ, ३ ५१०, पर्याप्ति ३ ४० ब, प्राण ३ १५३ ब, मनुष्य ३ २७३, मरण ३ २८५ अ, मार्गणा ३ २९८ अ, मिश्रगुण-स्थान ३.३०८ ब, सहनानी २ २१९ अ।
पर्याप्ति—३ ३९ ब, निगोद (वनस्पति) ३.५०९ अ, ३ ५१०, योग (मन) ३.३८० अ।
पर्याप्तिकाल—नामकर्म उदयस्थान १.३९३-३९७।
पर्याप्तिनाम-कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६६, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३.१३६, बध ३ ९६, ३ ९७, बधस्थान ३ ११० उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, १ ३९७, उदीरणा १ ४११, उदीरणा-स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७९, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भंग १ ४०४, सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६७ अ।

पर्याय—३ ४४ ब, ३ ४५ ब। उपचार—गुणारोप १ ४२१ ब, द्रव्यारोप १ ४२१ अ, पर्यायारोप १ ४१९-४२१। उत्पादादि—१ ३५८ ब, १ ३६० ब, १ ३६१ अ-ब, १ ३६२ अ, उत्पाद १ ३५७, ध्रौव्य १ ३५८ अ, १ ३६२ अ,व्यय १ ३५७ ब, सदसत् १ ३५७ ब, कारण कार्य २ ५४ ब, २ ५५ अ, काल २ ७९ अ, भाव ३ २१७ ब, सप्तभंगी ४ ३२१ ब, ४ ३२२ ब।

पर्याय-ज्ञान—अक्षर १ ३२ ब, श्रुतज्ञान ४ ६४ ब, ४ ६५ ब।

पर्याय-नय—नय २ ५२३ अ।

पर्यायवत्त्व—३.५० ब।

पर्यायवाची शब्द—शब्दमय २ ५३६ ब, २ ५४० अ।

पर्यायवान्—द्रव्य २ ४५४ अ।

पर्यायसमास—श्रुतज्ञान ४ ६५ ब।

पर्यायसमास ज्ञान—श्रुतज्ञान ४ ६५ अ।

पर्यायांश—उत्पादादि १ ३६१ ब।

पर्यायार्थिक—नय २ ५१४ ब, २ ५१५ अ, २ ५२६ ब, निक्षेप २ ५९३ ब।

पर्यायार्थिक चक्षु—एकान्त १ ४६२ ब।

पर्यायार्थिक नय—नय २ ५४६ अ, २ ५५१ अ, २ ५५९ अ, पर्याय ३.५० ब, (व्यवहार) नय २ ५५९ अ, स्याद्वाद ४.४९८ अ।

पर्यायोपचार—उपचार १ ४२१ अ-ब।

पर्युदास अभाव—अभाव १ १२८ अ ब।

पर्व—३ ५० ब।

पर्वत (नाम)—नारायण ४ १८, विद्या ३ ५४४ अ। विद्याधर वश १.३३९ अ।

पर्वत—३ ५० ब, क्षेत्रफल २ २३३ अ, अन्यमत मान्य—आधुनिक ३ ४३६ अ। चातुर्द्वीपिक भूगोल ३.४३७ ब, चित्र ३ ४३७ ब। बौद्धाभिमत ३ ४३४ अ, चित्र ३ ४३५। वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब, चित्र ३ ४३२।

पर्वत (जैनमत मान्य)—काचनगिरि ३ ४५३ अ, ४५६ ब, गजदन्त ३ ४५२ ब, ३ ४५६ ब, दिग्गजेन्द्र ३ ४५३ अ, ३.४५६ अ, नाभिगिरि ३ ४४६ अ, यमकगिरि ३.४५३ अ, ३ ४५६ ब, वक्षारगिरि ३.४६० अ, वर्षधर ३ ४४६ ब, विजयार्ध ३ ४४८ अ, वृषभगिरि ३ ४४६ अ। लवणसागर मे स्थित—निर्देश ३.४६२ अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४७९, अकन ३ ४६१, वर्ण ३.४७७, ३ ४७८।

पर्वत-गुफा—वसतिका ३.५२७ ब।

पर्वबीज—वनस्पति ३ ५०२ ब, ३.५०६ अ।

पर्वोपवास—क्षुल्लक २ १८९ अ।

पल—३ ५० ब, काल का प्रमाण २ २१७ अ, तौल का प्रमाण २ २१५ अ।

पलाय-मरण—मरण ३.२८१ ब।

पलाशगिरि—३ ५० ब।

पलिकुंचन—३ ५० ब।

पल्यंकासन—आसन १ २८१ ब, कायक्लेश २.४७ ब, कृतिकर्म २.१३४ ब, २ १३५ अ-ब।

पल्यंकासन तप—कायक्लेश २.४७ ब।

पल्य—३ ५० ब, उपमाकाल प्रमाण २.२१७ ब।

पल्लव—३ ५० ब।

पल्लव-विधान व्रत—३ ५० ब।

पवनजय—३ ५१ अ, अंजना १ २ अ, चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४ १५ ब।

पवन—राक्षसवश १.३३८ अ, वायु ३ ५३४ ब।

पवनदूत—इतिहास १ ३४७ अ।

पवाइज्जमाण—३ ५१ अ।

पशु—३ ५१ अ, सगति ४.११९ ब।

पशुक्रदन—नेमिनाथ २ ३८२।

पश्चात्-आनुपूर्वी—आनुपूर्वी १ २४६ ब।

पश्चात् स्तुति दोष—३ ५१ अ, आहार १.२९१ ब, वसतिका ३ ५२९ ब।

पश्चात्ताप—प्रायश्चित्त ३ १५९ अ।

पश्चिमा—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

पश्यंती—भाषा ३.२२७ ब।

पाँच—अग्नि १ ३५ ब, अतिचार ३ ६२६ ब, अनुत्तर-विमान १ ५१०अ, ४ ५१४ ब, अनुमानावयव १ ९८ ब, अस्तिकाय १ २११ अ, आचार १ २४० अ, इन्द्रिय १ ३०१ ब, उदम्बर फल १ ३६३ अ, कल्याणक २ ३२ अ, क्षायिकलब्धि ३ ४११ ब, ज्ञान २.२५९ ब, चूलिका (श्रुतज्ञान) ४ ६९ अ, नमस्कारमन्त्र ३ २४७ अ, परमेष्ठी ३.२३ अ, परिवर्तन (ससार) ४.१४७ अ, पाप ४.४१७ ब, भाव ३ २१८ ब, भावना ३ २२४ ब, मेरु (पूजा) ३ ७५ ब, यम (महाव्रत) ३ ६२७ ब, लब्धि ३.४१२ अ, व्रत ३ ६२७ ब, शरीर ४ ६ अ, समिति ४ ३३९ अ, सूनादोष २.२६ ब।

पांचजन्य शंख—नारायण ४ १९ ब।

पांचाल—३ ५१ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ-ब।

पांडव—३.५१ अ।

पांडवपुराण—३.५१ ब, इतिहास—द्वितीय १ ३४६ अ, तृतीय १ ३४७ अ।

पांडु—३ ५१ ब, कुरुवंश १ ३३६ अ, चक्रवर्ती ४.१४ ब,

विद्या ३ ५४४ अ। श्रुतकेवली (मूलसघ) १.३१६, इतिहास १ ३२८ अ, विद्याधरवश १ ३३७।

पांडुकबला शिला—३ ५१ ब, पाण्डुकवन मे स्थित—निर्देश ३ ४५० ब, अकन ३ ४५० ब, वर्ण ३ ४७७।

पांडुक—३ ५१ ब, कुण्डलवर पर्वत का देव—निर्देश ३ ४७५ ब, अकन ३ ४६७ पाण्डुकवन का लोकपाल भवन ३.४५० ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, मातग वश १ ३३६ ब।

पांडुकवन—३.५१ ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ, सुमेरु, पर्वत—निर्देश ३ ४५० अ, विस्तार ३ ४८८, अकन ३ ४४९, चित्र ३ ४५० ब। पाण्डुक वन का भाग ३ ४५० ब।

पांडुक शिला—पाण्डुक वन मे स्थित—निर्देश ३ ४५० ब, विस्तार ३ ४८४, अकन ३.४५० ब, वर्ण ३.४७७।

पांडुकी विद्या—विद्याधर वश १ ३३९ अ।

पांडुकेय—विद्याधर वश १.३३९ अ।

पांडुर—३.५१ ब, कुण्डलवर पर्वत का देव—निर्देश ३ ४७५ ब, अकन ३ ४६७।

पांडुशिला—३ ५१ ब, पाण्डुवन मे स्थित—निर्देश ३ ४५० ब, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४५० ब, वर्ण ३ ४७७।

पांड्य—३.५२ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

पांड्य वाटक—३.५२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

पांशुतापि—३ ५२ अ, देव आकाशोपपन्न २ ४४५ ब।

पांशुमूल—३ ५२ अ, विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

पांशुमूलिक—विद्याधरवश १.३३९ अ।

पांशुमूलिक विद्या—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

पाकर फल—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब।

पाक्षिक आलोचना—आलोचना १ २७६ ब।

पाक्षिक प्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३ ११६ अ, व्युत्सर्ग ३ ६२१ अ।

पाक्षिक श्रावक—दर्शनप्रतिमा २ ४१८ अ, श्रावक ४ ४८ अ, ४ ४९ ब।

पाखडी—मूढता ३ ३१५ ब।

पाटला—तीर्थंकर वासुपूज्यनाथ २.३८३।

पाटलिका—चैत्यचैत्यालय २ ३०२ अ।

पाटलीपुत्र—३.५२ अ, इतिहास १ ३१० ब।

पाणिपात्र—आहार १ २८६ अ, क्षुल्लक २ १८९ अ।

पाणितः जंतुवध—आहारान्तराय १ २९ अ।

पाणितः पिंडपतन—आहारान्तराय १ २९ अ।

पाणिमुक्ता गति—विग्रहगति ३.५४० ब।

पातंजल भाष्यवार्तिक—साख्यदर्शन ४ ३९८ ब।

पातक—सूतक ४ ४४२ ब।

पाताल—३.५२ अ, तीर्थंकर विमलनाथ का यक्ष २ ३७९, यदुवश १.३३७। लवणसागर मे स्थित—निर्देश ३ ४६० ब, नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३ ४७९, अंकन ३ ४६१, चित्र ३ ४६२ अ।

पात्र—३ ५२ अ, अचेलकत्व १ ४० ब, पाणिपात्राहारी क्षुल्लक २.१८९ अ, पाणिपात्राहारी साधु १.२८६ अ, श्वेताम्बर ४ ७९ ब।

पात्र-अपात्र—उपदेश १ ४२५ ब, दान ३ ५२ अ, श्रावक धर्म ४.४९ अ, श्रोता ४ ७५ अ।

पात्रकेसरी—३ ५२ ब, मूलसघ १ ३२२ ब। इतिहास—१ ३२९ अ, १ ३४१ अ।

पात्रकेसरीस्तोत्र—३.५३ अ, इतिहास १ ३४१ अ।

पात्रग्रहण—अचेलकत्व १.४० ब, श्वेताबर ४ ७९ ब।

पात्रत्व-अधिकार—ब्राह्मण ३.१९६ अ।

पात्रदत्ति—दान २ ४२२ ब।

पात्रदान—दान २.४२४ अ।

पात्रदोष—आहार १ २९२ अ, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

पात्री—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ आ।

पाद—३ ५३ अ, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ अ, वर्गमूल २ २२३ अ।

पादतप—कायक्लेश २ ४७ अ।

पादपीठ—अर्हन्तातिशय १ १३७ ब।

पादानुसारी ऋद्धि—ऋद्धि १.४४९ ब, गणधर २.२१२ ब।

पादुकार—३.५३ अ।

पादेन किंचित् ग्रहण—आहारान्तराय १ २९ ब।

पादोपगमन—सल्लेखना ४ ३८७ अ।

पाद्यस्थितिकल्प—३ ५३ अ।

पान—३ ५३ अ, आहार १ २८५ अ।

पानक—३ ५३ अ।

पानकाहार—सल्लेखना ४ ३९३ ब।

पानदशमी व्रत—३.५३ ब।

पानभोजन—अहिंसा १ २१६ अ।

पानी छानना—जल-गालन २ ३२५ अ-ब, श्रावक ४.५० ब।

पाप—३.५३ ब, अन्तरंग भाव ३ ६० ब, उपयोग १ ४३४ अ, चारित्र २.२८३ अ, चारित्र मोहनीय ३ ३४३ ब, धर्म २ ४७० ब, पुज्य ३.६० ब, ३ ६१ अ, ३ ६४ अ, प्रकृति ३ ८९ अ-ब, मिथ्यादर्शन ३ ३०१ अ।

पाप-आस्रव—३.५३ ब।

पापकर्मैकसर्गता—व्युत्सर्ग ३ ६२२ अ।
पापक्रिया-निरोध—चारण ऋद्धि १.४५१ ब।
पापजीव—जीव २ ३३३ ब, २.३३४ अ, निन्दा (साधु) २ ५८९ अ।
पापप्रकृति—अनुभाग १.९० ब, प्रकृति ३ ८९ अ, ३.९१ अ।
पापभीरु—आगम १.२३७ अ, आचार्य १ २३२ अ, सल्लेखना ४ ३९१ ब।
पापभीरुता—एकान्त १ ४६३ ब।
पापमोहितमति—निन्दा (साधु) २ ५८९ अ।
पापश्रमण—निन्दा (साधु) २ ५८९ अ।
पापसवर—सवर ४ १४३ ब।
पापसूत्र—यज्ञोपवीत ३.३७० अ।
पापानुबंधी पुण्य—पुण्य ३ ६४ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०६ अ।
पापास्रव—३ ५३ ब।
पापी—धर्म २ ४६८ अ, मिथ्यादर्शन ३ ३०१ अ।
पापोपदेश—अनर्थदण्ड १ ६३ अ।
पामिच्छ—३ ५४ ब, वसति का दोष २ ५२९ अ।
पामीर—३ ५४ ब।
पारचिक-परिहार-प्रायश्चित्त—परिहार-प्रायश्चित ३ ३५ ब, प्रायश्चित्त ३ १६१ ब।
पारणा—प्रोषधोपवास ३.१६३ अ।
पारपरिमित—३.५४ ब।
पारमार्थिक—प्रत्यक्ष ३ १२३ अ।
पारमार्थिक ध्यान—ध्यान २.४९७ अ।
पारमार्थिक प्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष ३ १२२ ब।
पारमार्थिक सुख—सुख ४.४३० ब।
पारलौकिक भय—भय ३.२०६ ब।
पारा—३ ५४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, ३.२७६ अ।
पारामृष्य—३ ५४ ब।
पाराशर—३ ५४ ब, एकान्ती १ ४६५ ब, विनयवादी ३.६०५ अ।
पारिग्राहिकी क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।
पारिणामिक—३ ५४ ब।
पारिणामिक गति—२ २३५ अ।
परिणामिक परमाणु—स्कन्ध ४ ४४८ ब।
पारिणामिक भाव—३ ५५ अ। उत्पादादिक १.३५८ अ, गुण २ २४१ ब, २ २४२ ब, ध्येय २ ५०१ ब, परम ३ १२ ब, भव्य ३.२१४ अ, भाव ३ २१९ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, ३.३३७ ब, ३ ३३८ अ, योग ३.३७७ ब, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब, सासादन ४.४२४ अ।
पारिणामिक स्वभाव—उत्पादादि (ध्रौव्य) १.३५८ अ।
पारिणामिकी ऋद्धि—१ ४४८, १ ४५० अ।
पारितापिकी—हिंसा ४.५३२ अ।
पारितापिकी क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।
पारियात्र—३ ५६ अ।
पारिव्राज्य क्रिया—संस्कार ४ १५३ अ।
पारिषद—३.५६ अ।
पारिषददेव—ज्योतिषीदेव—२ ३४६ अ। भवनवासी देव—निर्देश ३.२०९ अ, जम्बू-शाल्मली वृक्षस्थल ३ ४५८-४५९, पद्म आदि ह्रद ३ ४५३-४५४, श्री ह्री आदि देवियो का परिवार ३ ६१२ अ, आयु १ २६५। वैमानिक देव—स्वर्गो मे ४ ५१२, सुमेरु पर्वत की पुष्करिणी ३ ४५०-४५१, आयु १ २६९। इनकी देवियाँ—निर्देश ४ ५१३, आयु १ २७०, व्यन्तर देवो के ३ ६११ ब।
पार्थसारथि मिश्र—मीमासादर्शन ३ ३११ अ।
पार्थिवी धारणा—पृथिवी ३ ८४ ब।
पार्वतेय—मातग-वश १ ३३६ ब, विद्याधरवंश १ ३३९ अ।
पार्श्व—३ ५६ ब, नेमिनाथ का यक्ष २ ३७९।
पार्श्वकृष्टि—कृष्टि २ १४१ अ।
पार्श्वचंद्र गच्छ—श्वेताबर ४ ७७ ब।
पार्श्वदेव—इतिहास १ ३३२ अ, १ ३४४ ब।
पार्श्वनाथ—३ ५६ ब, तीर्थंकर २ ३७९-३९१।
पार्श्वनाथ प्रतिमा (फण)—पूजा ३ ७८ अ।
पार्श्वनाथ काव्य पजिका—३ ५६ ब, इतिहास १ ३४६ ब।
पार्श्वनाथचरित्र—इतिहास १ ३४३ ब।
पार्श्वनाथ पुराण—१ ३३२ अ, १ ३३३ ब, १.३४५ ब, १ ३४७ ब।
पार्श्वनाथ स्तोत्र—इतिहास १ ३४४ अ।
पार्श्वपंडित—३ ५६ ब, इतिहास १ ३३२ अ।
पार्श्वपुराण—३ ५६ ब। इतिहास १ ३४२ ब, १ ३४७ अ-ब।
पार्श्वशय्याशन तप—कायक्लेश २.४७ ब।
पार्श्वस्थ (साधु)—३ ५६ ब, विनय ३ ५५३ अ, साधु ४ ४०८ अ।
पार्श्वाभ्युदय—३ ५७ अ, इतिहास १ ३४२ अ।
पालंब—३.५७ अ, अतकृत्केवली १.२ ब।
पालक—३ ५७ अ, मगधवश १ ३१० ब।
पालिकुंचन—अतिचार १ ४४ अ।
पाल्यकीर्ति—इतिहास १ ३३० अ, १.३४२ अ।

पावापुरी—वर्द्धमान तीर्थंकर २ ३८५।
पाविल—तीर्थंकर २ ३७७।
पाषाण—रत्नप्रभा (१६वी पृथिवी) ३.३९१ अ, श्रोता ४ ७४ ब।
पासणाहचरिउ—इतिहास १.३३१ अ-ब, १ ३३३ अ, १ ३४६ अ।
पासपुराण—इतिहास १.३४६ अ।
पाहुड—३ ५७ अ, इतिहास १ ३४० ब।
कुदकुद २.१२८ अ, प्राभृत ३ १५६ ब।
पाहुडदोहा—इतिहास १.३३३ अ, १ ३४६ ब।
पाहुडिक—३ ५७ अ, व्युत्सर्ग दोष ३ ५२८ ब।
पिंगल—३ ५७ अ, चक्रवर्ती ४ १४ ब, यदुवंश १ ३३७।
पिंगल (शास्त्र)—इतिहास १ ३४७ अ।
पिंजरा—३ ५७ अ।
पिंड—३.५७ ब।
पिंडपद भंग—भग ३ १९७ अ।
पिंडप्रकृति—नामकर्म २ ५८४ अ।
पिंडशुद्धि—आहार १ २८७ अ, १ २८९ अ।
पिंडस्थ-ध्यान—३ ५७ ब।
पिच्छ—सल्लेखना ४.३९२ अ।
पिच्छिका—३ ५८ अ, अथालन्दचारित्र १ ४६ अ, अधिकरण १ ४९ ब, अपवादमार्ग १ १२२ ब, क्षुल्लक (वस्त्र की) २ १८८ ब, विहार ३.५७४ ब। समिति ४ ३३९ ब, ४ ३४० अ, ४ ३४१ अ-ब, ४.३४२ अ, सल्लेखना ४ ३९२ अ, ४ ३९७ अ।
पिच्छिका निक्षेप—अधिकरण १.४९ ब, समिति ४ ३४०अ।
पिटारे—तीर्थंकर देव के वस्त्राभरण वाले—सुधर्म सभा ४.४४५ ब, स्वर्ग ४.५२१ अ।
पिठरपाक—३ ५८ ब, वैशेषिक दर्शन ३.६०८ ब।
पिता—मघा नक्षत्र २ ५०४ ब।
पितृकायिक—३.५८ ब, आकाशोपपन्न देव २.४४५ ब।
पितृघाती कुल—मगध वंश १ ३१० ब।
पित्त—३ ५८ ब, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।
पिपासा—३ ५८ ब, क्षुधा २.१८७ ब, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ।
पिलखन फल—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब।
पिशाच—३.५८ ब, व्युत्सर्ग ३ ६२२ अ।
पिशाच देव—३ ५८ ब। निर्देश ३ ६१० ब, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१९८ ब, आयु १.२६४ ब। इन्द्र—निर्देश ३ ६११ अ, शक्ति आदि ३.६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३ ६११ अ, अवस्थान ३ ६१२-६१४।
पिशाच देव—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१८८, सख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।
पिशुलि—३ ५९ अ।
पिष्टाक—स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४.५१७, अंकन ४ ५१९ ब। देव आयु १.२६७।
पिहित दोष—३ ५९ अ, आहार १.२९१ ब, वसतिका ३ ५२९ ब।
पिहितास्रव—३.५९ अ, पद्मप्रभ सुपार्श्वनाथ २ ३७८।
पीछी (पिच्छिका)—३ ५८ अ, अथालन्दचारित्र १ ४६, अधिकरण १.४९ ब, अपवादमार्ग १ १२२ ब, क्षुल्लक (वस्त्र की) २ १८८ ब, विहार ३ ५७४ ब। समिति ४ ३३९ ब, ४ ३४० अ, ४ ३४१ अ-ब, ४.३४२ अ, सल्लेखना ४.३९२ अ, ४ ३९७ अ।
पीठ—३ ५९ अ, कृतिकर्म २.१३५ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, यदुवश १.३३७, रुद्र ४ २२ अ, शान्तिनाथ का रुद्र २.३९१।
पीठयत्र—३ ३५५।
पीतलेश्या—निर्देश ३ ४२३ ब, प्ररूपणा—बन्ध ३ १०७ आयु बन्ध १ २५९ अ, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८४, उदयस्थान १ ३९३ ब, सत्त्व ४.२८४ सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसंयोगी भंग १ ४०७ ब। सत ४ २४६, सख्या ४.१०८, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४९०, काल २.११५, अन्तर १ १८, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१।
पीपल—तीर्थंकर अनन्तनाथ २ ३८३, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब।
पीलुपाक—वैशेषिक दर्शन ३.६०८ ब।
पुंजस्थल—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।
पुंडरीक—३ ५९ अ, तीर्थंकर २ ३९१, तीर्थंकर विमलनाथ का रुद्र २ ३९१, पुष्करार्ध का रक्षक देव ३.६१४, रुद्र ४ २२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ, श्रुतज्ञान ४.६१ ब, संख्या का प्रमाण २.२१४ ब। ह्रद—निर्देश ३ ५९ अ, ३.४४६ ब, ३ ४५३ ब, विस्तार ३ ४९० ३ ४९१, अंकन ३ ४४४ (चित्र सं. १३), ३.४६४ (चित्र सं. ३७), चित्र ३ ४५४।
पुंडरीकिनी (देवी तथा वापी)—३ ५९ अ, नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३, नामनिर्देश ३.४७५ ब,

विस्तार ३ ४९१, अंकन ३.४६५। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३.४६८, ३ ४६९। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४।

पुंडरीकनी नगरी—३ ५९ अ, चक्रवर्ती ४ १० ब, तीर्थंकर ऋषभदेव तथा शान्तिनाथ २ ३७८, तीर्थंकर चन्द्रानन आदि विदेहस्थ २ ३१२, बलदेव, ४ १६ ब। विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ (चित्र नं.३७), ३.४६० अ।

पुंड्र—३ ५९ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

पुंड्रवर्धन—३ ५९ अ, अर्हद्बली १ १३८ ब।

पुंवेद—मोहनीय ३ ३४४ ब, विशेष दे० पुरुषवेद।

पुण्य (तत्त्व)—३ ५९ अ, उपयोग १ ४३२ अ, १ ४३३ अ, १ ४३४ अ-ब, १ ४३५ अ, चारित्र २ २८३ अ, तत्त्व २ ३५४ ब, धर्म २ ४७४ ब, धर्मध्यान २.४८३ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०६ अ, शुभोपयोग १ ४३३ अ, १ ४३४ अ।

पुण्य (नाम)—क्षौद्रवर द्वीप का रक्षक देव ३ ६१४।

पुण्य-आस्रव—पुण्य ३ ६० ब।

पुण्यकर्म—पुण्यकर्म ३ ६० अ।

पुण्यचंद्र—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

पुण्यजीव—जीव २ ३३३ ब, २.३३४ अ, पुण्य ३ ६० अ।

पुण्यप्रकृति—निर्देश—३ ८९ ब, ३ ९१ अ, अनुभाग १ ९० ब, अनुभाग काण्डक घात १.११७ ब।

पुण्यप्रभ—३ ६६ ब, क्षौद्रवर द्वीप का देव ३ ६१४।

पुण्यमूर्ति—तीर्थंकर २ ३७७।

पुण्ययज्ञ क्रिया—संस्कार ४ १५२ ब।

पुण्यानुबंधी पुण्य—पुण्य ३ ६४ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०६ अ।

पुण्यास्रवकथाकोष—३ ६६ ब, इतिहास १ ३४५ अ।

पुतली—नरक में लोहे की पुतली २.५७२ ब।

पुद्गल—३ ६७ अ, अनुभाग १ ८८ ब, अल्पबहुत्व १.१४२ ब, अवस्थान (लोकाकाश) १ २२३ ब, अस्तिकाय १ २११ ब, आकाश में अवस्थान १ २२३ ब, उपकार (कारण) २ ६३ ब, कर्म (क्रिया) २ २८ ब, कारण-कार्य २ ६३ ब, गति (स्वभाव-विभाव) २ २३५ ब, जीव २ ३३३ ब, परमाणु ३ १५ अ, विभाव ३ ५६१ अ, विभावगति २.२३५ ब, स्कन्ध ४ ४४७ ब, ४ ४४८ अ, स्वभाव ४ ५०६ ब, स्वभाव गति २ २३५ ब।

पुद्गल-अनुभाग—१.८८ ब।

पुद्गल-अस्तिकाय—१ २११ ब।

पुद्गलक्षेप—३ ६८ ब।

पुद्गल-परमाणु—परमाणु ३.१५ अ।

पुद्गलबंध—स्कन्ध ४ ४४७ ब।

पुद्गलमोक्ष—मोक्ष ३ ३२२ ब।

पुद्गलयुति—युति ३ ३७३ ब।

पुद्गलराशि—गणित (संहनानी) २ २१९ अ।

पुद्गलविपाकी प्रकृति—प्रकृतिबंध ३ ८९ ब।

पुद्गलसंघात—अवगाहना १ २२३ ब।

पुद्गलस्कंध—४ ४४६ अ।

पुद्गलानुभाग—१ ८८ ब।

पुद्गलास्तिकाय—१ २११ ब।

पुनरुक्त निग्रहस्थान—३ ६८ ब।

पुनर्भव की सीमा—नरकगति २ ३२१।

पुनर्वसु—अभिनन्दननाथ २ ३८०, तीर्थंकर २ ३८१, निति नक्षत्र २ ५०४ ब, नारायण ४ १८ अ।

पुन्नाग—३ ६८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

पुन्नाट—३ ६९ अ।

पुन्नाटसंघ—इतिहास १ ३२६ ब।

पुमान—३ ६९ अ, जीव २ ३३३ अ।

पुरंजय—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

पुरंधर—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।

पुराकल्प—३ ६९ अ।

पुराण—३ ६९ अ।

पुराणसंग्रह—३ ६९ अ।

पुराणसार—३ ६९ अ, इतिहास १.३४६ ब।

पुराणसारसंग्रह—इतिहास १ ३३१ अ, १ ३४२ ब, १.३४३ अ, १ ३४५ ब।

पुरिमताल—ऋषभनाथ २ ३८४।

पुरु—३ ६९ अ, औदारिक शरीर १ ४७१ अ, किंपुरुष २ १२५ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।

पुरुद्रवंश—३ ६९ अ।

पुरुदेव—किंपुरुष २ १२५ अ।

पुरुदेवचंपू—इतिहास १ ३४५ अ।

पुरुरवा—३ ६९ अ।

पुरुष—३ ६९ अ, किंपुरुष जातीय व्यन्तर देव २ १२५ अ, जीव २ ३३३ अ, पुरुषार्थ के अर्थ में २ ६१९ अ, ३.१२ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ, शुक्लध्यान ४ ३३ अ।

पुरुषतत्त्व—३ ६९ ब।

पुरुषदत्ता—३ ६९ ब, विद्या ३ ५४४ अ, सुपार्श्वनाथ की यक्षिणी २ ३७९।

पुरुषदर्शिनी—व्यन्तरेंद्र की गणिका ३ ६११ ब।
पुरुषपुंडरीक अनंतनाथ २ ३९१, नारायण ४ १८ अ।
पुरुषपुर—३ ७० अ।
पुरुषप्रभ—३ ७० अ, किंपुरुष २ १२५ अ।
पुरुषर्षभ—बलदेव ४ १६ अ।
पुरुषवाद—एकान्त १ ४६५ अ परतंत्रवाद ३ १२ अ, नियतिवाद २ ६१९ अ, सांख्यदर्शन १ ४६५ ब।
पुरुषवेद कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ३४४ अ, स्थिति ४ ४६२, अनुभाग १ ९१ ब, १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९३, ३ ९४, ३ ९५ अ, ३ ९६ ब, ३ ९७, बन्ध की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ ब, बन्धस्थान ३ १०९, उदय १.३७४, ४ ९४ ब, उदय की विशेषता १ ३७३ अ, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १ ४११, उदीरणा-स्थान १ ४१२ सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९६, स्थितिसत्त्व स्थान का अल्पबहुत्व १ १६५ ब, त्रिसंयोगी भंग १ ४०१ ब। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ब।
पुरुषवेद (मार्गणा)—कषाय २.३५ ब, नपुंसकवेद ३ ५८६ अ, मनुष्य ३ ५८६ अ, राग कषाय २ ३९ अ, वेद ३ ५८३ ब, ३ ५८६। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०५, बन्ध की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ ब, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३८१, उदयस्थान १ ३९२ ब, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, त्रिसंयोगी भंग १.४०७ अ। सत् ४.२२४, संख्या ४ ९४, ४ ९६, ४ १०४, क्षेत्र २ २०३, स्पर्शन ४ ४८७, काल २ १११, अन्तर १ १४, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १ १४९।
पुरुषवेद सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब।
पुरुष-व्यभिचार—शब्दनय २ ५३६ ब।
पुरुषसिंह—३.७० अ, धर्मनाथ २ ३९१, नारायण ४ १२ अ।
पुरुषाकांता—व्यन्तरेंद्र की गणिका ३ ६११ ब।
पुरुषाकार—मोक्ष ३.३२९ ब।
पुरुषाकार नय—नय २ ५२३ ब।
पुरुषाद्वैत—अद्वैतवाद १ ४७ अ।
पुरुषार्थ—३ ७० अ, करणलब्धि ३ ४१३ ब, दैव २ ६१७ अ, नियति २ ६१८ अ।
पुरुषार्थ नय—३ ७१ ब।
पुरुषार्थवाद—३ ७१ ब, एकांत १ ४६५ अ-ब, दैववाद २ ६१७ अ, नियतिवाद २ ६१८ अ, परतंत्रवाद ३ १२ अ।
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—३ ७१ ब, अमृतचंद्र १.१३३ अ, इतिहास १ ३४२ अ।
पुरुषोत्तम—३.७१ब, किंपुरुष २ १२५ अ, तीर्थंकर अनन्तनाथ व विमलनाथ २ ३९१, नारायण ४ १८ अ।
पुरुहूत—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।
पुरोत्तम—३ ७१ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
पुरोहित—३ ७१ ब, चक्रवर्ती ४ १३ अ।
पुलवी—३ ७१ ब, वनस्पति ३.५०६, ३ ५०९, ब ३ ५१० अ।
पुलस्त्य—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।
पुलाक—३ ७२ अ, श्रुतकेवली ४ ५५ ब, साधु ४.४०८ ब।
पुलोम—हरिवंश १ ३३९ ब, १ ३४० अ।
प्लुत अक्षर—१.३३ अ।
पुष्कर ३ ७२ अ।
पुष्करद्वीप—३ ७२ अ, निर्देश ३ ४६३ ब, नामनिर्देश ३ ४७०, विस्तार ३ ४७८ अंकन ३ ४४३, चित्र ३ ४६४, ज्योतिष चक्र २.२४८, अधिपतिदेव ३ ६१४। तीर्थंकर पुष्पदंत, वासुपूज्य, शीतल तथा श्रेयांसनाथ २ ३७८। वैदिकाभिमत ३.०३१ ब।
पुष्करद्वीप सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ अ।
पुष्करवृक्ष—निर्देश ३ ४६३ ब, पृथिवीकायिक (वृक्ष) ३ ५७८ ब, विस्तार ३ ४५८ अ, अंकन ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७।
पुष्करवर सागर—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अंकन ३ ४४३, ज्योतिष चक्र २ ३४८, अधिपति देव ३.६१४, जल का रस ३ ४७० अ।
पुष्करावती—चक्रवर्ती ४.१५ अ।
पुष्करावर्त—३ ७२ अ।
पुष्करिणी—जम्बू शाल्मली वृक्षस्थली में—निर्देश ३ ४५८ ब, अंकन ३ ४५९। सुमेरु के वनों में—निर्देश ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३ ४७३ ब। विस्तार ३ ४९० ३ ४९१, अंकन ३ ४५०, ३ ४५१, चित्र ३ ४५१।
पुष्कल—३ ७२ अ।
पुष्कला—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३.४४४, २ ४६४ (चित्र स ३७), चित्र ३ ४६० अ। वक्षार पर्वत का कूट तथा देव ३ ४७२ ब।
पुष्कलावती—३ ७२ अ, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३.४८० ३.४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ (चित्र ३७), चित्र ३.४६० अ। वक्षार गिरिका कूट तथा देव ३ ४७२ ब।
पुष्कलावर्त—३.७२ अ।

पुष्प—३ ७२ अ, तीर्थंकर सुविधिनाथ २ ३८३, पूजा ३ ७८ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३ २०४ ब।

पुष्पक—३ ७२ अ, तीर्थंकर सुविधि २ ३८३, ईशान इन्द्र का यान ४ ५११ ब।

पुष्पक विमान—३ ७२ अ। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४ ५१५, देव आयु १ २६८।

पुष्पगंधी व्यन्तरेंद्र की वल्लभिका ३ ६११ ब।

पुष्पगिरि—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

पुष्पचारण ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १ ४५३ अ।

पुष्पचूड—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ।

पुष्पचूल—३ ७२ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

पुष्पदंत—३ ७२ ब, क्षीरवर द्वीप का देव ३ ६१४, लोकपाल ३ ४९१ ब।

पुष्पदंत (आचार्य)—मूलसंघ १ ३१७, १ ३२२ ब, १ परि०/२ २, कालावधि १. परि०/२ ७-८, विशेष विचार १ परि०/२ ११। इतिहास १ ३२८ ब।

पुष्पदंत (कवि)—इतिहास १ ३३० ब, १ ३४२ ब।

पुष्पदंत पुराण—३.७२ ब, इतिहास १ ३४५ अ।

पुष्पदंता—तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ २ ३८८।

पुष्पदत्त—तीर्थंकर २ ३९१।

पुष्पनंदि—३ ७२ ब।

पुष्पप्रकीर्णक विमान—विमान ३ ५६३ अ।

पुष्पमाल—३.७२ ब, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ।

पुष्पमाला—३ ७२ ब, सुमेरु के वनों की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७३ ब, अंकन ३ ४५१।

पुष्पवती—व्यन्तरेंद्र की वल्लभिका ३.६११ ब।

पुष्पवती स्त्री—स्त्री ४.४४३ अ।

पुष्पवृष्टि—प्रातिहार्य १ १३७ ब।

पुष्पसेन—३ ७२ ब, मूलसंघ १ ३२२ ब, इतिहास १ ३२९ ब।

पुष्पांजली—३.७३ अ, तीर्थंकर २ ३७७।

पुष्पांजली व्रत—३.७३ अ।

पुष्य—३ ७३ अ, तीर्थंकर २.३८१, नक्षत्र २ ५०४ ब।

पुष्यमित्र—३ ७३ अ, शकवंश १.३१० ब, १ ३१४।

पूजन—पूजा ३.८० ब।

पूजा—३.७३ अ, ३ ७४ अ, क्षुल्लक २ १९० अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०१ अ, पुण्य (उपयोग) १ ४३५ अ, शुभोपयोग १ ४३४ अ, सावद्य ४ ४२१ ब।

पूजाकर्म—कर्म २.२६ ब, कृतिकर्म २ १३३ ब।

पूजाकल्प—अभयनन्दि १.१२७ अ, इन्द्रनन्दि १.२९९ ब,

पूजाख्याति प्रतिष्ठा—अनाकांक्ष अनशन १.६६ अ, उपदेश १.४२४ ब। तप २ ३५८ ब, २ ३६० अ, धर्म २ ४७६ अ, ध्याता २ ४९३ अ, राग ३.३९६ ब, ३ ३९७ अ, वाद ३.५३३ अ, विनय ३ ५५२ ब। विवेक ३ ५६६ अ, सल्लेखना ४ ३८३ अ, साधु ४ ४०५ अ, स्वाध्याय ४ ५२३ अ।

पूजा-पाठ—पूजा ३ ८१ ब।

पूजायंत्र—३.३५६।

पूजामद—मद ३.२५९ ब।

पूजाराध्य क्रिया—संस्कार ४ १५२ अ।

पूजार्ह—राक्षसवंश १ ३३८ अ।

पूज्य—विनय ३ ५५२ ब, ३.५५३ ब।

पूज्यपाद—३ ८१ ब, इतिहास १ ३२९ अ, १.३४० ब।

पूति—३ ८२ अ, आहार का दोष १ २९० ब, उद्दिष्ट दोष १.४१३ अ।

पूतिक—३ ८२ अ, वसति का दोष ३.५२८ ब।

पूतिकर्म—कर्म २ २६ ब।

पूरक—३ ८२ अ, प्राणायाम ३ १५५ अ।

पूरण—३ ८२ अ, एकांत मत (मस्करीमत) १ ४६५ ब, यदुवंश १ ३३७।

पूरणकरण—अन्तरकरण १ २७ अ।

पूरणकाल—काल २ ८१ अ।

पूरणगलन—परमाणु ३ १५ अ, पुद्गल ३ ६७ अ।

पूरनकश्यप—३ ८२ अ, एकान्तमती १ ४६५ ब।

पूरिम—निक्षेप ३.६०२ ब।

पूर्ण—३.८२ ब। असुरेंद्र—निर्देश ३.२०८ अ, परिवार ३ २०९ अ, अवस्थान ३ २०९ ब। आयु १ २६५। क्षौद्रवर द्वीप का रक्षक देव ३.६१४।

पूर्ण-अल्प उपचार—उपचार १.४२० ब।

पूर्णकलश मंगल—मंगल ३ २४४ अ।

पूर्णघन—३.८२ ब, राक्षसवंश १ ३.८ अ, विद्याधरवंश १.३३९ ब।

पूर्णचंद्र—भावि शलाकापुरुष ४.२५ ब, विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

पूर्णप्रभ—३ ८२ ब।

पूर्णबुद्धि—तीर्थंकर २.३७७।

पूर्णभद्र (कूट)—३ ८२ ब, गजदंत का—निर्देश ३.४७२, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४५७। विजयार्ध का—निर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ (चित्र क्र० १३)।

पूर्णभद्र (देव)—३.८२ ब, ३ ८३ अ, क्षौद्रवर द्वीप का देव ३.६१४, गजदन्त के कूट का देव ३.४७३ अ, यक्ष देव ३.३६९ अ, विजयार्ध के कूट का देव ३.४७१ ब।

व्यन्तरेंद्र—निर्देश ३ ६११ अ, परिवार ३.६११ ब, संख्या ३ ६११ अ, आयु १ २६४ ब।

पूर्णांक— ३ ८३ अ।

पूर्णिमा—३ ८३ अ, उत्पत्ति का कारण चन्द्रमा की गति २ ३५१ अ, लवणसागर मे जवार ३ ४६० ब।

पूर्व—३ ८३ अ, कालप्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ, ४ ६४ ब।

पूर्वकृष्टि—कृष्टि २ १४१ अ।

पूर्वक्षण उपादान कारण २.५५ अ।

पूर्वगत—३ ८३ अ, श्रुतज्ञान ४.६७ ब।

पूर्वचर हेतु—कारण-कार्य २ ५६ ब।

पूर्व-जिनचैत्य-क्रिया—कृतिकर्म २ १३८ ब।

पूर्वतालका—तीर्थंकर ऋषभदेव २.३८४।

पूर्वदत्ता—तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ २ ३८८।

पूर्वदिशा—३ ८३ अ, कृतिकर्म २ १३६ ब, केवली २.१६७ अ-ब, दिशा २ ४३४ अ, व्युत्सर्ग ३ ६२० ब, सल्लेखना ४ ३८९ ब, सामायिक ४ ४१६ ब।

पूर्वधर—तीर्थंकरो के सघ मे २ ३८६, मूलसघ १ ३१६।

पूर्वपर्याय-त्याग—उत्पादादि १ ३५७ ब।

पूर्वप्रज्ञापन नय नय २ ५२१ ब, २.५२२ अ।

पूर्वभाव-प्रज्ञापन नय—नय २ ५२१ ब, २.५२२ अ।

पूर्वमीमांसा—दर्शन २ ४०२ ब, मीमासा दर्शन ३ ३११ अ।

पूर्वमुख—कृतिकर्म २ १३६ ब, केवली २.१६७ अ-ब, व्युत्सर्ग ३ ६२० ब, सल्लेखना ४ ३८९ ब, सामायिक ४ ४१६ ब।

पूर्ववत् अनुमान—अनुमान १ ९७ ब।

पूर्वविद्—३ ८३ अ, तीर्थंकरो के सघ मे २ ३८६। मूलसघ १ ३१७।

पूर्वविदेह—३ ८३ अ, विदेहक्षेत्र का पूर्वभाग—निर्देश ३ ४४६ ब, १६ क्षेत्र निर्देश ३ ४६० अ, ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ (चित्र स ३७)।

पूर्वविदेह (कूट)—निषध पर्वत—निर्देश ३ ४७२ अ, अकन ३ ४४४, गजदन्त पर्वत—निर्देश ३ ४७२ ब, अकन ३ ४४४ (चित्र स. १३)।

पूर्वसमास—श्रुतज्ञान ४.६४ ब।

पूर्वस्तुति—३ ८३ अ, आहार का दोष १ २९१ अ, वसति का का दोष ३.५२९ ब।

पूर्वस्थिति—उपशम १ ४३८ ब।

पूर्वस्पर्धक—कृष्टि २.१४० ब, २.१४१ ब, सूक्ष्मसाम्पराय ४.४४१ ब, स्पर्धक ४.४७३।

पूर्वांग—३ ८३ अ, काल-प्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ अ।

पूर्वातिपूर्व—श्रुतज्ञान ४ ६० अ।

पूर्वानुपूर्वी—आनुपूर्वी १ २४६ ब।

पूर्वापर अविरोध—आगम १ २३६ अ।

पूर्वापर विरोध—आगम १ २३७ अ।

पूर्वापर सबंध—आगम १ २३० ब, सम्बन्ध ४ १२६ अ।

पूर्वाफाल्गुनी—नक्षत्र २ ५०४ ब।

पूर्वाभाद्रपद—३ ८३ अ, तीर्थंकर २ ३८१, नक्षत्र २ ५०४ ब।

पूर्वाभिमुख—कृतिकर्म २.१३६ ब, केवल २ १६७ अ-ब, व्युत्सर्ग ३ ६२० ब, सल्लेखना ४ ३८९ ब, सामायिक ४ ४१६ ब।

पूर्वाषाढ—३ ८३ अ, तीर्थंकर शीतलनाथ २.३८०, नक्षत्र २ ५०४ ब।

पूषमाडी—३ ८३ अ।

पूषा—नक्षत्र (अधिपति देव) २ ५०४ ब।

पृच्छना—३ ८३ अ, उपयोग १ ४२९ ब।

पृच्छा—सल्लेखना ४ ३९० ब।

पृच्छा विधि—३ ८३ ब, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।

पृतना—३ ८३ ब, सेना ४ ४४४ अ।

पृथक्त्व—३ ८३ ब, शुक्लध्यान ४ ३३ ब।

पृथक्त्वविक्रिया—वैक्रियिक ३ ६०२ अ।

पृथक्त्ववितर्क—शुक्लध्यान (प्रतिपाती) ४ ३५ ब।

पृथक्त्व-वितर्क-वीचार—उपयोग १ ४३१ अ, १.४३२ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ अ, धर्मध्यान २ ४८३ अ, शुक्लध्यान ४ ३३ अ, ४ ३६ अ।

पृथक्त्व व्यवहार—नय २ ५५८ ब।

पृथिवी—३.८३ ब, (गुण) ३.६८ अ, जीव २ ३३३ ब, पुद्गल ३ ६८ अ, स्थावर ४ ४५४ ब, स्वप्न (पृथिवी ग्रसन) ४ ५०४ ब।

पृथिवी (नरक)—३.८३ ब, अष्टम पृथिवी १ ५७६ ब, कलकल २ ५७६ ब। नरक—निर्देश २ ५७६ अ, पटल निर्देश २ ५७९, विस्तार २ ५७६, २.५७८, अकन ३.४४१। वातवलयो के साथ स्पर्श २.५७६ ब।

पृथिवी (नाम)—रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९। नारायण ४ १८ ब।

पृथिवी अलीक—सत्य ४.२७३ ब।

पृथिवीकाय—३ ८४ अ। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्ध-स्थान ३ ११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९९, ४.३०५ त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत्

४ २००, सख्या ४ १००, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४.४८३, काल २ १०६, अन्तर १ १२ भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

पृथिवीकायिक जीव—३ ८३ ब, ३ ८४ अ, अवगाहना १ १७९, आयु १ २६४, जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २.३४३ काय २ ४४, वनस्पति ३ ५०६ अ, स्थावर ४ ४५३-४५४।

पृथिवीकायिक—वृक्ष—कमल ३ ३७८ ब। चैत्यवृक्ष ३ ५७९ ब।

पृथिवी कोंगणि—३ ८५ अ।

पृथिवी-जीव—३ ८४ अ।

पृथिवीनाथ- कुरुवश १ ३३६ अ।

पृथिवीपाल—३ ८५ अ।

पृथिवीपुर—चक्रवर्ती ४ १० ब, प्रतिनारायण ४ २० ब।

पृथिवीपुरी—बलदेव ४ १६ ब।

पृथिवीमडल—३.८४ ब।

पृथिवीरेखा—क्रोध २ ३८ अ।

पृथिवीषेणा—तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ २ ३८०।

पृथिवीसिंह—३ ८५ अ।

पृथु—३.८५ अ, कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ, यदुवश १.३३७।

पृष्ठ—धनुष पृष्ठ निकालने की विधि गणित २ २३३ अ।

पृष्ठक—३ ८५ अ। स्वर्ग पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६७।

पेज्ज—सुख ४.४३० ब।

पेय—३ ८५ अ।

पेशि—३ ८५ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।

पैसठ—पणट्ठी की सहनानी २ २१८ ब।

पैप्पलाद—३ ८५ अ, अज्ञानवादी १ ३८ ब, एकाती १ ४६५ ब।

पैशून्य—३ ८५ अ।

पोत—३ ८५ अ।

पोतकर्म—कर्म २.२६ अ, निक्षेप २ ५९८ अ।

पोदन—३ ८५ ब। ३ २७६ अ।

पोदनपुर—नारायण ४ १८ ब, बलदेव ४ १७

पोन्न—३ ८५ ब, इतिहास १.३३० ब।

पौण्ड्र—मनुष्यलोक ३ २७५ अ, यदुवश १ ३३७, वैदिकाभिमत देश ३.४३२ अ।

पौर—३.८५ ब।

पौराणिक राजवंश—इतिहास १ ३३५ अ।

पौरुषवाद- एकान्त १.४६५ अ-ब, दैववाद २.६१७ अ, नियतिवाद २.६१८ अ, परतत्रवाद ३.१२ अ।

पौरुषेय—३ ८५ ब, आगम १ २३८ अ।

पौलोम—हरिवंश १ ३३९ ब।

पौलोमपुर—३ ८५ ब, ३ २७६ अ।

पौष्टिक आहार—१ २८८ अ।

प्र—प्रतरागुल की सहनानी २.२१९ ब।

प्रकरण—अनुयोगद्वार १ १०२ अ।

प्रकरणसम—न्याय २.६३३ ब।

प्रकरणसम जाति ३.८५ ब।

प्रकरणसम हेत्वाभास—३.८५ ब।

प्रकर्षिणी—विद्या ३.५४४ अ।

प्रकाम—भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ।

प्रकार—३.८५ ब।

प्रकाश—३ ८६ अ, सल्लेखना ४.३८९ अ।

प्रकाशन—सल्लेखना ४ ३९० ब।

प्रकाशवृत्ति—दर्शन २ ४०६ ब।

प्रकाशशक्ति—३.८६ अ।

प्रकाश्य-प्रकाशक भाव—आगम १.२३३ ब, मबध ४.१२६ अ।

प्रकीर्णक—३ ८६ अ। नरकबिल—निर्देश २ ५७६ ब, विस्तार २ ५७८ ब, अकन ३ ४४१। सख्या २ ५७८ अ। स्वर्ग विमान—निर्देश ३ ५६३ अ, अकन ४ ५१७, संख्या ४ ५२० अ।

प्रकीर्णक तारे—३ ८६ अ। ज्योतिषदेव प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४.१७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

प्रकीर्णक देव—३.८६ अ, ज्योतिष—निर्देश २ ३४६ अ, आयु १ २६६ ब, भावन—निर्देश ३.२०९ अ, आयु १ २६५, वैमानिक—निर्देश ४ ५१३, देवियो की गणना ४ ५३, देव आयु १ २६९, देवी आयु १.२७०, व्यन्तर—निर्देश ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब।

प्रकुब्जा—तीर्थंकर अजितनाथ २.३८८।

प्रकुर्वी—३ ८६ अ।

प्रकृति—३.८६ अ, गुण २ २४० अ।

प्रकृति-उदय—१.३६५ ब।

प्रकृति-द्युति—यदुवंश १ ३३७।

प्रकृतिबंध- ३.८६ अ, ३ ८७ ब, ईर्यापथ कर्म १.३५० ब,

करण दशक २ ५ ब, देश व सर्वघाती १.९०-९४, बंध ३ ९७, बन्धस्थान ३ १०८, त्रिसयोगी भग १.४०४, सक्रमण ४ ८४ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

प्रकृतिबंध वेदना—अल्पबहुत्व १ १७६।

प्रकृतिवाद – एकान्त (साख्य दर्शन) १ ४६५ ब।

प्रकृति-विपरिणमना— विपर्यय ३ ५५५ अ-ब।

प्रक्रम – उपक्रम १ ४१६ ब।

प्रक्रिया— ३.११४ अ।

प्रक्षेपक — ३ ११४ अ।

प्रख्यात—नारायण ४ १८ ब।

प्रख्यात कीर्ति—नन्दिसघ १ ३२३ ब, १ ३२४ अ।

प्रगणना – ३ ११४ अ।

प्रज्ञप्ति—३ ११४ अ, तीर्थंकर सम्भवनाथ की यक्षिणी २ ३७९, विद्या ३ ५४४ अ।

प्रज्ञा – ३ ११४ अ, अनुभव १.८७ अ, परिषह ३ ३३ ब।

प्रज्ञाकर गुप्त— ३ ११४ अ।

प्रज्ञापना—प्ररूपणा ३.१४७ अ।

प्रज्ञापनी —भाषा ३ २२७ अ।

प्रज्ञापनीय—आगम १ २२८ ब, श्रुतकेवली ४ ५६ अ।

प्रज्ञापरिषह—३ ११४ अ, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ ब।

प्रज्ञाभाव छेदना – छेदना २ ३०६ ब, २ ३०७ अ।

प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४८, १.४५० अ-ब।

प्रचय— ३ ११४ ब, पर्याप्ति ३ ४४ अ।

प्रचला—निद्रा २ ६०८ ब।

प्रचला (कर्मप्रकृति)—प्ररूपणा – प्रकृति ३ ८८, २ ४२० अ, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.९४ ब, प्रदेश ३.१३६। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७९, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसयोगी भग १ ३९९, सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८ ब।

प्रचला-प्रचला —निद्रा २ ६०८ ब।

प्रचलाप्रचला (कर्मप्रकृति – प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८ २ ४२०, स्थिति ४ ४६० अनुभाग १.९४ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९७, बधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान १.३८७ ब, उदीरणा १.४११ अ. उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८ सत्त्वस्थान ४.२४९, त्रिसंयोगी भग १ ३९९, सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

प्रच्छन्न—३.११४ ब, आलोचना १-२७७ ब।

प्रच्युति—उत्पादादि (व्यय) १ ३५८ अ।

प्रजापति – गणधर २ २१३ अ, बलदेव ४ १७ अ, नारायण ४ १८ अ, रोहिणी नक्षत्र का देवता २ ५०४ ब।

प्रजापाल—३ ११४ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, बलदेव ४ १६ ब।

प्रजावती—तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३८०।

प्रज्वलित—३ ११४ ब। नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब। विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१, नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

प्रणय—३ ११५ अ।

प्रणव—पदस्थ ध्यान ३ ७ अ-ब।

प्रणाम—नमस्कार २ ५०६ अ। कृतिकर्म २ १३३ ब, सामायिक ४ ४१६ ब।

प्रणाली – हिमवान पर गंगाद्वार ३ ४५५ अ।

प्रणिधान—३ ११५ अ, उपयोग १ ४२९ अ, योग ३ ३७५ अ।

प्रणिधि—३ ११५ अ, माया ३ २९६ ब।

प्रणियोग—योग ३.३७५ अ।

प्रतर—३ ११५ अ, भेद ३.२३७ अ। रज्जू, लोक व तिर्यक् प्रतर ३ ११५ अ।

प्रतरसमुद्घात २ १६६ ब।

प्रतरांगुल—क्षेत्रप्रमाण २ २१५ ब, सहनानी २.२१९ ब।

प्रतरात्मक आकाश—३.११५ अ।

प्रताप—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ ब।

प्रतापवान्—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ।

प्रतापसेन काष्ठासघ १ ३२७ अ।

प्रतिकुंचन—३ ११५ अ, माया ३ २९६ ब।

प्रतिक्रमण—३ ११५ अ, उपयोग १ ४३४ अ, कृतिकर्म २ १३७ ब, २ १३९ ब, चारित्र २.२८८ ब, प्रतिक्रमण (प्रायश्चित) ३ ११७ अ, विषकुम्भ (उपयोग) १ ४३४ अ, श्रुतज्ञान ४ ६९ ब, सयम (उपयोग) १.४३४ अ, प्रायश्चित ३ १६० ब।

प्रतिज्ञा—३ ११८ ब, अनुमानावयव १ ९८ ब, न्याय २ ६३३ ब।

प्रतिज्ञांतर—३ ११८ अ।

प्रतिज्ञाविरोध-निग्रहस्थान—३ ११८ ब।

प्रतिज्ञासंन्यास निग्रहस्थान—३ ११८ ब।

प्रतिज्ञा-हानि निग्रहस्थान—३ ११९ अ।

प्रतिग्रह – भक्ति ३ ११९ अ।

प्रतिघकर्म—अनुयोग १.१०२ अ

प्रतिघात—३.११९ अ, कर्मोदय २.७१ ब, सूक्ष्म ४ ४३८ अ, ४.४३९ अ-ब।

प्रतिघात कर्म —अनुयोग १ १०२ अ।
प्रतिघाती—३ ११९ अ।
प्रतिचंद्र—वानरवंश १.३३८।
प्रतिच्छन्न—३.११९ अ, भूत ३ २३४ अ।
प्रतिजीवी गुण द्रव्य २ २४३ ब।
प्रतितंत्र—न्याय २ ६३३ ब, सिद्धान्त ४ ४२७ ब।
प्रतिदृष्टांत समाजाति —३ ११९ अ।
प्रतिनारायण—गति-अगति (जन्म) २ ३२१ ब, चक्रवर्ती ४ १० अ, जन्म (गति-अगति) २.३२१ ब, शलाका-पुरुष ४ २० ब।
प्रतिनीत—३ ११९ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ ब।
प्रतिपक्ष—अनेकान्त १.१०८ ब, आगम १ २३७ ब, पक्ष ३ ३ अ, वाद ३ ५३३ अ।
प्रतिपक्षपद—उपक्रम १ ४१६ ब, पद ३.५ अ।
प्रतिपत्ति श्रुतज्ञान ४ ६४ ब।
प्रतिपत्तिसमास—श्रुतज्ञान ४ ६४ ब।
प्रतिपद्यमान लब्धि ३.४१४ अ।
प्रतिपात—३ ११९ ब।
प्रतिपातस्थान—लब्धि ३ ४१४ ब।
प्रतिपाती—३.११९ ब, अवधिज्ञान १ १८८ ब, १ १९३ ब, मरण ३.२६७ ब, शुक्लध्यान ४ ३४ अ, ४ ३५ ब।
प्रतिपादन—आगम १ २३२ ब।
प्रतिपाद्य—आगम १ २२८ ब।
प्रतिपृच्छा—समाचार ४ ३३६ ब, ४.३३७ अ।
प्रतिबंध—३ ११९ ब।
प्रतिबंधक—कारण २ ७१ अ।
प्रतिबध्य—३ ११९ ब।
प्रतिबध्य-प्रतिबंधक—विरोध ३.५६४ ब, संबंध ४.१२६ अ।
प्रतिबल—वानरवंश १ ३३८ ब।
प्रतिबिंब—पूजा ३.७७ ब।
प्रतिबिंबवत्—केवलज्ञान २.१४६ ब, २ १५४ अ।
प्रतिबुद्धता—३ ११९ ब।
प्रतिबोध—३ ११९ ब।
प्रतिबोध चिंतामणि—इतिहास १.३४७ अ।
प्रतिभग्न—३ ११९ ब।
प्रतिभा—३.१२० अ।
प्रतिभाग ३ १२० अ।
प्रतिभा संस्कारारोपण पूजा—इन्द्रनंदि १.२९९ ब।
प्रतिभासाद्वैत—द्रव्य २.४५८ अ।
प्रतिभूत—३ १२० अ, भूत ३ २३४ अ
प्रतिमन्यु—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।
प्रतिमा—३.१२० अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०० अ, दिगंबर २ ३०१ ब, परिग्रह ३.२७ अ, पूजा ३.७७ अ-ब, श्रावक ४ ४८ अ।
प्रतिमान—प्रमाण ३.१४५ अ।
प्रतिमा-योग—सल्लेखना ३ ३९३ अ।
प्रतिमायोगी मुनिक्रिया—कृतिकर्म २.१३९ अ।
प्रतिमा-योग्य—श्रावक ४ ५२ ब।
प्रतिमा-स्थान—कायक्लेश तप २ ४६ ब।
प्रतियोगी—३ १२० अ।
प्रतिरूप ३ १२० अ, भूत जातीय देव ३ २३४ अ, व्यन्तरेन्द्र—निर्देश ३ ६११ अ, संख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १.२६४ ब।
प्रतिरूपक—३ १२० अ।
प्रतिरूपक व्यवहार—अस्तेय १ २१३ ब।
प्रतिलेखन—अथालन्दचारित्र १ ४६ अ, सल्लेखना ४ ३९० ब।
प्रतिलोम क्रम—३ १२० अ।
प्रतिविपलाश - ३ १२० अ।
प्रतिविपला—३ १२० अ, कालप्रमाण २.२१७ अ।
प्रतिशलाका संख्या ४.९२ अ।
प्रतिशलाका कुंड—असंख्यात १ २०६ ब।
प्रतिश्रवण -अनुमति १ ९६ अ।
प्रतिश्रुति—३ १२० अ, कुलकर ४ २३।
प्रतिषेध—अनेकान्त १ १०९ अ, सकलादेश ४ १५७ अ, सप्तभंगी ४ ३१९ ब। स्याद्वाद ४ ४९९ अ। हेतु ४ ५३९ अ।
प्रतिषेधरूप हेतु—४ ५३९ अ।
प्रतिष्ठा—३ १२० अ, धारणा २ ४९१ अ, कीर्ति-प्रतिष्ठा दे० पूजा-ख्याति प्रतिष्ठा।
प्रतिष्ठाचार्य—आचार्य १ २४२ ब।
प्रतिष्ठातिलक—३ १२० ब, इतिहास १ ३४३ ब।
प्रतिष्ठापन-समिति—समिति ४ ३४१ ब।
प्रतिष्ठापना-शुद्धि—समिति ४ ३४२ अ।
प्रतिष्ठा-पाठ ३ १२० ब, आशाधर १ २८१ अ, इन्द्रनन्दि १ २९९ ब।
प्रतिष्ठा-विधान—३.१२० ब।
प्रतिष्ठासारसंग्रह—इतिहास १ ३४३ ब।
प्रतिष्ठित—३.१२० ब, कुरुवंश १ ३३५ ब।
प्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पति—निर्देश ३.५०२-५०७, जीव-समास २.३४३। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०४, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान १.३९२ ब,

उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.२०९, सख्या ४.१०१, क्षेत्र २.२०१, स्पर्शन ४ ४८४, काल २ १०७, अन्तर १ १२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४६।

प्रतिसर—कुरुवश १ ३३५ ब।

प्रतिसरण—३ १२० ब, उपयोग (विषकुम्भ) १ ४३४ अ।

प्रतिसारी ऋद्धि—१ ४४८, १.४४९ ब।

प्रतिसेवना—श्रुतकेवली ४.५५ ब, साधु ४ ४०८ ब।

प्रतिसेवना-काल—काल २ ८१ ब।

प्रतिसेवना-कुशील—कुशील २ १३१ अ, श्रुतकेवली ४.५५ ब, साधु ४ ४०८ ब।

प्रतिसेवा—अनुमति १ ९६ अ।

प्रतिसूर्य—३ १२० ब।

प्रतिसूर्यतप—कायक्लेश २ ४७ अ।

प्रतिहरण—३ १२१ अ।

प्रतीद्र—इन्द्र १ २९९ अ, ज्योतिषदेव—निर्देश २.३४५ ब, आयु १ २६६। भवनवासी देव—निर्देश ३ २०९ अ, आयु १ २६५, वैमानिक देव—निर्देश ४.५१२, देवियो की गणना ४ ५१३ आयु १ २६९, व्यन्तर—निर्देश ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब।

प्रतीक—३ १२१ अ।

प्रतीच्छना—३.१२१ अ, उपयोग १.४२९ ब।

प्रतीच्य—३.१२१ अ।

प्रतीति—३ १२१ अ, उपदेश १ ४२६ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५० ब।

प्रतीत्य सत्य—सत्य ४.२७१ ब।

प्रत्यक्—३ १२१ अ।

प्रत्यक्ष—३ १२१ अ, अनुभव १ ८१-८७, अवधिज्ञान १ १९० अ-ब, परोक्ष अनुभव १ ८७ अ, मतिज्ञान—अनुभव १ ८३ ब, मन पर्यय ज्ञान (अवधिज्ञान) १ १९० अ, श्रुतज्ञान (अनुभव) १ ८३ ब, स्वसवेदन (अनुभव) १ ८१-८७, स्वाध्याय ४ ५२४ अ।

प्रत्यक्षज्ञान—प्रमाण ३ १४१ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५२ अ।

प्रत्यक्षज्ञानी—आगम प्रामाण्य १ २३५ ब।

प्रत्यक्षबाधित—बाधित ३ १८२ ब।

प्रत्यक्ष विनय—विनय ३ ५४९ ब।

प्रत्यक्ष हेतु—स्वाध्याय ४ ५२४ अ।

प्रत्यक्षाभास—प्रत्यक्ष ३ १२३ अ।

प्रत्यनीक—३ १२४ अ, कारण (कर्मोदय) २.७१ ब।

प्रत्यभिज्ञान—३.१२४ ब, मतिज्ञान ३ २५४ अ-ब, स्मृति (मतिज्ञान) ३.२५४ अ।

प्रत्यभिज्ञानाभास—प्रत्यभिज्ञान ३ १२५ अ।

प्रत्यय—३ १२५ अ, ३ १२६ अ, आकाश १ २२१ ब उदय व्युच्छित्ति ३ १२६-१.२९, प्रत्ययस्थान ३ १२९ १३०, उपयोग (अशुभ) १ ४३३ ब, निमित्त २ ६१० ब, पर-प्रत्यय उत्पाद १.२२१ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३५ अ, मोहनीय ३ ३४२ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५० ब, स्व प्रत्यय उत्पाद १ २२१ ब।

प्रत्ययकषाय—२.३५ ब, २.३६ अ, २ ३७ अ-ब, समुत्पत्तिक कषाय २ ३७ ब।

प्रत्यय निबधन नाम—नाम २ ५८२ ब।

प्रत्यय मल—मल ३.२८८ ब।

प्रत्यय स्थान—प्रत्यय ३ १२९ ब।

प्रत्यवेक्षण—३ १३१ अ, स्मृत्यतराधान ४ ४९५ ब।

प्रत्याख्यात सेवना—आहारातराय १ २९ अ।

प्रत्याख्यान—३ १३१ अ, कृतिकर्म २ १३९ ब, प्रतिक्रमण ३ ११८ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३७ अ, (सम्यग्दर्शन) ३ १३२ ब, सल्लेखना ४.३९० ब, ४ ३९३ अ।

प्रत्याख्यान-कषाय—कषाय २ ३५ ब, २ ३८ अ, २ ३९ अ।

प्रत्याख्यान-चतुष्क—उदय १ ३७४ ब।

प्रत्याख्यान-धारण—कृतिकर्म २ १३९ ब।

प्रत्याख्यान-प्रवाद—श्रुतज्ञान ४.६९ अ।

प्रत्याख्यानावरण कर्मप्रकृति—३ १३३ अ, सर्वघाती १.९३ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ३४४ अ, स्थिति ४ ४६१, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३.१०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२ सत्त्व ४ २७८. सत्त्वस्थान ४ २९६, स्थितिसत्त्व स्थानो का अल्पबहुत्व १ १६५ ब, त्रिसंयोगी भंग १ ४०१ ब, संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

प्रत्याख्यानावरण चतुष्क—१.३७४ ब।

प्रत्याख्यानी भाषा—भाषा ३.२२७ अ।

प्रत्यागाल—आगाल १ २३९ ब।

प्रत्यामुंडा—३ १३३ अ।

प्रत्यावली—अन्तरकरण १ २५ ब, आवली १.२७९ ब।

प्रत्यास—३.१३३ ब।

प्रत्यासत्ति—३.१३३ ब।

प्रत्याहार—३ १३४ अ, प्राणायाम ३.१५५ अ।

प्रत्युत्पन्न नय सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब।

प्रत्युत्पन्न भाव प्रज्ञापन नय—नय २ ५२२ अ।

प्रत्युपकार—उपकार १.४१५ अ।

प्रत्यूषकाल—३.१३४ अ।

प्रत्येक पद—भंग ३.१९७ अ।

प्रत्येकबुद्ध—बुद्ध ३.१८४ अ. अल्पबहुत्व १.१५४ अ, संख्या ४ ९४ अ।

प्रत्येकबुद्ध वचन—आगम १ २३९ अ।

प्रत्येकबुद्धि ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४८।

प्रत्येक भंग—भंग ३ १९७ अ।

प्रत्येकवनस्पति काय—काय-निर्देश २ ४४, वनस्पति-निर्देश ३ ५०२-५०७, अवगाहना १.१७९, आयु १.२६४, जीवसमास २ ३४३। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्ध-स्थान ३ ११३, उदय १.३७९, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत ४.२०७, संख्या ४ १०१, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४.४८४, काल २ १०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४६।

प्रत्येकशरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा - प्रकृति ३.८८, २ ५८३, ३.५०३ अ, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ ब, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४, संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६७ अ।

प्रत्येकशरीर वर्गणा—वनस्पति ३ ५०३ अ, वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१४ अ, ३.५१५ ब, ३ ५१६ अ, ३ ५१७ ब, ३ ५१८ अ।

प्रथम—श्रेढी व्यवहार गणित २.२२९ ब, २.२३० ब।

प्रथमकोट—समवसरण ४ ३३० ब।

प्रथम गुणहानि—श्रेढी-व्यवहार गणित २.२३१ ब, २ २३२ अ।

प्रथम तीर्थ—समवसरण ४ ३३१ ब।

प्रथम धन—श्रेढी व्यवहार गणित २ २२९ ब।

प्रथम मूल—गणित (वर्गमूल) २ २२३ अ।

प्रथम सम्यक्त्व—पर्याप्ति ३ ४४ ब।

प्रथम स्थिति—अन्तरकरण १ २५ अ-ब, १ २६ अ।

प्रथमानुयोग—३ १३४ अ, अनुयोग १.९९-१०१ अ, आगम १ २३६ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ ब, स्वाध्याय ४ ५२३ ब।

प्रथमोपशम सम्यक्त्व—अन्तरकरण १.२५ अ, उपशम १.४३७ ब, १ ४३८ अ, तीर्थंकर २ ३७६ ब, परिहारविशुद्धि ४ ३७ अ, मरण ३ २८३ अ, सम्मूर्छिम ४.१२७ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६६ ब, सासादन ४.४२५

प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन—प्ररूपणा - बन्ध ३.१०८, बन्ध-स्थान ३.११३, उदय १.३८५, उदयस्थान १ ३९३, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४.३०२, ४.३०६, त्रिसंयोगी भंग १ ४०८ अ। सत् ४.२५८, संख्या ४.१०९, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४.४९३, काल २.११८, अंतर १ ४ अ, १ २०, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५२।

प्रथु—हरिवंश १.३४० अ।

प्रदक्षिणा—३ १३४ अ, कर्म २ २६ अ, वंदना ३.४९५ ब।

प्रदुकार दोष—वसतिका ३.५२८ ब।

प्रदुष्ट—३ १३४ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२३ अ।

प्रदेश—३ १३४ अ-ब, अणु १ ४२ अ, अस्तिकाय १ २११ अ, १.२१२ अ, आकाश (अखण्डत्व) १ २२१ अ, आकाश (अवगाह) १ २२४ अ, आकाश (लोकाकाश) १ २२२ अ, इंद्रिय १ ३०२ ब, औदारिक शरीर १ ४७१ ब, काय २ ४४ अ, २.४६ ब, कालद्रव्य(अस्तिकाय) १.२१२ अ, जीव २ ३३९ अ-ब, द्रव्य २ ४५८ अ,२. ४६० धर्म-अधर्म द्रव्य २ ४८७ ब, परमाणु ३ १७ अ, ३ १८ अ, पर्याय ३ ४७ अ, पुद्गल ३ ६७ ब, प्रदेशभ्रमण २ ३३९ ब, रुचक प्रदेश २.३३९ अ, ३ ४४० ब, शरीर ४ ६ अ, संकोच-विस्तार (काय) २ ४६ ब, सत्त्व ४ २७६ ब, सप्तभंगी (सापेक्ष धर्म) ४ ३२३ अ, सूक्ष्म बादर ४ ४४० अ, स्कन्ध ४ ४४६ अ।

प्रदेश उदय—१ ३६५ ब, १ ३८६।

प्रदेशघात—अपकर्षण १ ११७ ब, क्षपित कर्मांशिक २ १७७ अ।

प्रदेश-छेदना—छेदना २ ३०६ ब, २.३०७ अ।

प्रदेशत्व—३.१३८ अ, द्रव्य २ ४५८ ब।

प्रदेश-निर्जरा—अल्पबहुत्व १ १७४ अ।

प्रदेश-परिस्पंद—काय २.४६ ब, क्रिया २ १७३ ब, योग ३ ३७५ अ।

प्रदेश-बंध—३ १३५ अ, ३ १३६, अनुभाग बन्ध १ ९० ब, अनिवृत्तिकरण २ १३ ब, अल्पबहुत्व १.१७१, १ १७३, अ, १ १७६, शरीरबद्ध प्रदेशों का अल्पबहुत्व १ १५७, स्थितिबन्ध ४.४५८ अ।

प्रदेशत्व—३ १३८ अ, द्रव्य (आकाश) २ ४५८ ब।

प्रदेशविपरिणमना—विपरिणमना ३.५५५ ब।

प्रदेश-विरच—३.१३८ अ।

प्रदेश-संक्रमण—संक्रमण ४.८५ ब, संक्रमण का अल्पबहुत्व १ १७४ ब।

प्रदेशाग्र—अन्तरकरण १ २५ ब।

प्रदेशापचय—ओम् १.४७० अ।

प्रदेशार्थता—कर्म २.२६ ब।

प्रदेशीपना—परमाणु ३ १५ अ।
प्रदोष—३ १३८ अ, अतिचार १ ४४ अ।
प्रद्युम्न—३ १३८ अ, यदुवंश १.३३७।
प्रद्युम्नचरित्र—३ १३८ ब। इतिहास—प्रथम १ ३४२ ब, द्वितीय १ ३४६ अ।
प्रद्योत—इतिहास (मगध देश) १ ३१० ब, १ ३१२।
प्रद्योतवंश—इतिहास (मगध देश) १.३१२।
प्रधान—कारण २ ७३ ब।
प्रधानवाद—एकात (साख्यदर्शन) १ ४६५ ब।
प्रबधनकाल—काल २.८१ अ।
प्रबोध—कारण (लब्धि) २ ५६ अ।
प्रभंकर—३ १३८ ब। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अंकन ४.५१९ ब, देव-आयु १ २६७।
प्रभंकरा—चन्द्र-सूर्य की पट्टदेवी २ ३४६ अ। नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४९१, अकन ३ ४६५। विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।
प्रभजन—३.१३८ ब, वायुकुमारेन्द्र—निर्देश ३ २०८ ब, परिवार ३ २०९ अ, अवस्थान ३.२०९ ब, आयु १.२६५। विद्याधर वश १ ३३९ अ।
प्रभंजन (कूट)—मानुषोत्तर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अंकन ३.४६४।
प्रभ—३.१३८ ब, स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४ ५१९ ब, देव-आयु १ २६७।
प्रभवा—नारायण (पटरानी) ४ १८।
प्रभा—३.१३८ ब, तैजस शरीर ३.३६४ ब।
प्रभाकर भट्ट—३.१३८ ब, एकान्ती १ ४६५ ब, मीमासा दर्शन ३.३११ अ।
प्रभाकर मत—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ।
प्रभाकर मिश्र—मीमासा दर्शन ३ ३११ अ।
प्रभाकरी—चक्रवर्ती ४ ११ ब। विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६०।
प्रभाचंद्र—३.१३८ ब। प्रथम—नन्दिसंघ १.३२३ अ, १ ३२४ अ, देशीयगण १ ३२५, इतिहास १ ३२९ अ, द्वितीय—इतिहास १.३२९ अ। तृतीय—इतिहास १.३२९ ब, १.३४२ अ। चतुर्थ—इतिहास १ ३३० ब। पंचम—देशीयगण इतिहास १.३३० ब, १ ३४२ ब, १.३४३ अ-ब। षष्ठ—इतिहास १ ३३१ ब, १ ३३२ अ। सप्तम—नन्दिसघ १ ३२३ ब, इतिहास १ ३३२ अ। अष्टम—नन्दिसघ १ ३२३ ब, इतिहास १ ३३२ ब। नवम—इतिहास १.३३२ ब, दशम—इतिहास १ ३३३ अ। एकादश दश—इतिहास १.३३३ ब। द्वादश—इतिहास १ ३३३ ब।
प्रभादेव—तीर्थंकर २ ३७७।
प्रभामंडल—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब, प्रातिहार्य १.१३७ ब।
प्रभाव—३.१३९ अ।
प्रभावती—३ १३९ अ, कुलकर ४ २३, तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३८०, बलदेव ४ १८ ब, यदुवश १ ३३७, वैमानिक इन्द्र की ज्योष्ठा देवी ४ ५१४ अ।
प्रभावना—३ १३९ अ।
प्रभावना अग—सम्यग्दर्शन ४ ३५९ अ।
प्रभास (स्वर्ग)—३ १४० अ, अनुदिश स्वर्ग का श्रेणीबद्ध—निर्देश ४ ५१९ ब, अकन ४.५१५, ४.५१७, देव-आयु १ २६९।
प्रभासदेव—३.१४० अ, धातकीखण्ड का देव ३ ६१४, नाभिगिरि का देव ३.४७१ अ, ३.६१३ ब, नारायण ४.२० अ। गणधर २.२१३ अ, चक्रवर्ती ४.१५ ब।
प्रभासद्वीप—लवणोद व कालोद सागर मे—निर्देश ३ ४५५ ब, ३.४६२ ब, विस्तार ३ ४६२ ब, ३ ४७८, अकन ३ ४४४ के सामने, ३.४६१, ३ ४६४ के सामने। सिन्धु नदी का प्रवेशतीर्थ ३.४५५ ब, सीतोदा नदी मे स्थित ३ ४६० ब।
प्रभु—३ १४० अ, इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ।
प्रभुत्वैशक्ति—३.१४० अ।
प्रभूत तेज—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ।
प्रभोदय—तीर्थंकर २ ३७७।
प्रमत्त—अहिंसा १ २१६ अ, धर्मध्यान २.४८२ अ।
प्रमत्तयोग—हिंसा ४ ५३५ ब।
प्रमत्तसंयत—आरोहण-अवरोहण २.२४७, आर्तध्यान १ २७४ अ, आहारक काययोग १ २९७ ब, करण दशक २ ६ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब, गुणस्थान २ २४६ ब, गुणस्थान-परिवर्तन (प्रमत्त-अप्रमत्त) ४.३७० अ, निगोद वनस्पति ३.५०६ अ, परिषह ३.३४, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४ अ, प्रदेशनिर्जरा की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १७४ ब, सयत ४ १२९ ब, ४ १३१ अ, समुदघात ४ ३४३।
प्रमत्तसंयत—प्ररूपणा—बंध ३ ९७, बधस्थान ३ १०८, ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९२ अ, उदी-

रणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२८८, ४ ३०४, त्रिसयोगी भग १ ४०६ अ। सत् ४ १६२, सख्या ४.९४, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २ ९९, अतर १ ७, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १.१४३।

प्रमद—भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ।

प्रमदा—वेद ३.५८९ अ, स्त्री ४.४५० अ।

प्रमाकरण—प्रमाण ३ १४४ अ।

प्रमाण—३ १४० अ, अनुभव प्रधान १ ८२ अ, अनुमान १ १०० ब, अनेकान्त १.१०६, अवग्रह १.१८२ ब, आगम (दे आगे), ईहा १.३५१ अ, १ १८२ ब, उपचार १.४२२ अ, ज्ञान २ २५८ ब, नय २ ५१६ अ-ब, २ ५२६, निक्षेप २ ५९२ अ, नैगम नय २.५३२ ब, न्याय २ ६३३ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ अ, श्रुतज्ञान ४.६७ ब, सकलादेशी (नय) २ ५१७ अ, ४ १५६ ब, सप्तभंगी ४ ३१५ ब, स्यात् ४.३१७ अ।

प्रमाण (अनुयोग)—१.१०२ ब, आहार तथा आहारकाल १.२८५ ब, १ २८९ अ, उपक्रम १.४१६ ब, श्रुतज्ञान ४.६७ ब, समवसरण ४.३३१ ब।

प्रमाण (आगम)—१.२३४ ब, अर्थ व शब्द सबंध १ २३३ अ, आचार्य-वचन १ २३७ अ, आप्तवचन १ २३५ ब, छद्मस्थ ज्ञान १.२३७ ब, जिनवचन १.२३८ अ, तर्कसगत १ २३६ अ, परम्परा से आगत १ २३५ ब, पूर्वापर अविरुद्ध १ २३६ अ, पौरुषेय १ २३८ अ, प्रत्यक्ष ज्ञानी १,२३५ ब, वचन-वक्ता संबध १ २३४ ब, वाच्य-वाचक सबध १ २३३ अ, वीतराग वचन १.२३५ अ, शब्द-अर्थ सबंध १ २३४ अ, सूत्र वचन १.२३२ ब, सूत्र-अविरुद्ध वचन १.२३८ अ, सूत्रसम वचन १.२३५ ब।

प्रमाण (ज्ञान)—नयसापेक्ष २ ५२६ अ, प्रमाण ३ १४१ ब, प्रमेयत्व २ २५८ ब, स्वपर-प्रकाशक २.२५८ ब।

प्रमाणक देव—व्यन्तरजातीय देव—आयु १ २६४ ब।

प्रमाणदोष—आहार का दोष १.२९२ अ।

प्रमाणद्वय सिद्धि—अर्चट १.१३४ ब।

प्रमाणनय-तत्त्वालकार—३.१४५ ब, इतिहास १.३४४ अ।

प्रमाणनिर्णय—इतिहास १.३४३ अ।

प्रमाणनिर्माण—निर्माण २.६२५ अ।

प्रमाणपद—पद ३.४ ब, ३.५ अ, श्रुतज्ञान ४.६५ अ।

प्रमाणपद-उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब।

प्रमाण-परीक्षा—३.१४५ ब, इतिहास १.३४१ ब।

प्रमाण-प्रमेयकलिका—इतिहास १ ३४८ अ।

प्रमाणमीमांसा—३ १४५ ब, इतिहास १ ३४१ ब, १ ३४३ ब।

प्रमाण-योजन—२ १४५ ब, क्षेत्र प्रमाण २.२१५ ब।

प्रमाण-राशि—३.१४५ ब।

प्रमाण-विस्तार—३ १४५ ब।

प्रमाणसंग्रह—३.१४५ ब, अकलक १ ३१ अ, इतिहास १.३४१ ब।

प्रमाणसंग्रहालकार—इतिहास १.३४२ ब।

प्रमाणांगुल—३ १४५ ब, उपमा प्रमाण २ २१८ अ, क्षेत्र प्रमाण २.३१५ अ।

प्रमाणातिरेक दोष—वसतिका ३ ५२९ ब।

प्रमाणाभास—प्रमाण ३.१४१ ब, १ १४२ अ।

प्रमाता—३.१४५ ब, प्रमाण ३.१४३ अ।

प्रमाद—३ १४५ ब, अतिचार १.४४ अ, अशुभोपयोग १.४३३ ब, दोष प्रस्तार २.२२६ ब, समिति ४.३४२ अ। हिंसा—निर्देश १.२१६ अ, १ २१७ अ, ४.५३२ ब, रहितता ४ ५३३ ब।

प्रमादचरित—अनर्थदण्ड १.६३ ब।

प्रमादप्रत्यय—३ १२६ अ, अविरति ३ १२६ ब, उदय ३ १२७-१३०, कषाय २ १२६ अ।

प्रमादयोग—हिंसा ४.५३२ अ-ब।

प्रमा-प्रमेय—इतिहास १ ३४४ ब।

प्रमार्जन—विहार ३ ५७८ ब, समिति ४.३३९ ब।

प्रमार्जित—३.१६६ ब।

प्रमिति—३.१४६ ब।

प्रमुशा—३ १४६ ब, मनुष्यलोक (नदी) ३ २७५ ब।

प्रमेय—३ १४६ ब, ज्ञान २.२५८ ब, न्याय २.६३३ अ, प्रमाण ३ १४३ ब।

प्रमेय उपक्रम—उपक्रम १ ४१६ ब।

प्रमेयकमलमार्तंड—३ १४६ ब, इतिहास १ ३४३ अ।

प्रमेयत्व—३.१४६ ब।

प्रमेयरत्नकोश—३ १४६ ब, इतिहास १ ३४४ अ।

प्रमेयरत्नाकर—१ १४६ ब, आशाधर १,२८१ अ, इतिहास १:३४४ अ।

प्रमेयरत्नालकार—इतिहास १.३४७ अ।

प्रमेयाकार—प्रमाण २.१५३ ब।

प्रमोद—३ १४६ ब, राक्षसवंश १.३३८ अ।

प्रयत—हिंसा ४.५३५ ब।

प्रयुत—कालप्रमाण २ २१६ अ।

प्रयुतांग—कालप्रमाण २.२१६ अ।

प्रयोग—३.१४६ ब, उदय १.३६५ ब।
प्रयोगकर्म—कर्म २.२६ अ-ब। सत् ४.२६९, सख्या ४ ११६ ब, क्षेत्र २ २०८, भाव ३ २२३।
प्रयोग क्रिया—क्रिया २.१७४ ब।
प्रयोगगति—गति २.२३५ अ।
प्रयोगज परिणाम—परिणाम ३.३१ ब।
प्रयोजन—३ १४६ ब, न्यायदर्शन २.६३३ अ-ब।
प्रयोज्यता—३ १४६ ब।
प्ररूपणा—३.१४७ अ, अनुयोगद्वार १ १०२ अ, १.१०३ ब।
प्ररोहण—कार्मण २.७५ ब।
प्रलंब—३.१४७ अ, ग्रह २.२७४ अ, तालप्रलब न्याय २.३६६ अ।
प्रलय—३ १४७ अ, वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ।
प्रवक—३ १४७ ब।
प्रवचन—३ १४७ ब, उपदेश १.४२४ अ, पिशाच जातीय व्यन्तर देव ३.५८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ।
प्रवचन-प्रभावना—प्रभावना ३.१३९ ब।
प्रवचन-भक्ति—भक्ति ३ १९८ ब।
प्रवचन-वात्सल्य—वात्सल्य ३ ५३२ ब।
प्रवचन-सन्निकर्ष—३.१४८ अ, श्रुतज्ञान ४.६० अ।
प्रवचनसार—३ १४८ अ, इतिहास १ ३४० ब।
प्रवचनसार टीका—अमृतचन्द्र १ १३३ अ।
प्रवचनसारोद्धार—३.१४८ अ, इतिहास १.३४२ ब, १.३४३ ब।
प्रवचनाद्धा—३.१४८ ब, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।
प्रवचनार्थ—३ १४८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ।
प्रवचनी—३.१४८ ब, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।
प्रवचनीय—३ १४८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ।
प्रवरवाद—३ १४८ ब, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।
प्रवर्तक (साधु)—३.१४८ ब, निर्यापक २ ६२५ ब।
प्रवाद—३ १४८ ब।
प्रवाल—३ १४८ ब, रत्नप्रभा की चित्रापृथिवी ३.३९१ अ, मानुषोत्तर पर्वत का कूट-निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३.४६४।
प्रवाह क्रम—क्रम २ १७१ ब।
प्रवाहण जैवलि—३.१४८ ब, कुरुवश १ ३१० ब।
प्रविचार—३.१४९ अ, देवगति २.४४६ ब।
प्रविष्ट—३.१४९ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ ब।
प्रवृत्ति—३.१४९ अ, गुप्ति २.२५० ब, न्याय २ ६३३ ब, राग ३.३९८ अ।
प्रवृद्धावेग—चक्रवर्ती ४ १३ अ।
प्रवेणी—३ १४९ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।
प्रव्रज्या—३ १४९ अ, म्लेच्छ ३ ३४७ अ।
प्रशंसा—३ १५१ अ, अन्यदृष्टिप्रशसा १ ११२ अ, स्त्री ४ ४५१ अ।
प्रशम—३ १५१ अ, उपेक्षा १ ४४४ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ, ४.३५२ अ, ४.३५३ अ, सुख ४ ४२९ ब, ४.४३२ अ।
प्रशमाभास—प्रशम ३.१५१ अ।
प्रशस्त—३.१५१ ब, उपयोग १.४३३ अ, उपशम १ ४३७ अ, धर्मध्यान २ ४७८ अ, ध्यान २ ४९६ अ, निदान २ ६०८ अ, प्राभृत ३ १५६ ब, मोह ३.३४० ब, राग ३ ३९५ अ, वेद्य ३ ५९२ अ, सत्य ४.२७२ ब।
प्रशस्तपाद—३ १५१ ब।
प्रशस्तपाद भाष्य—वैशेषिक दर्शन ३.६०७ ब।
प्रशस्त विहायोगति नामकर्म प्रकृति—विहायोगति ३ ५७३ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३ अ, स्थिति ४.४६६, अनुभाग १ ९५ ब, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदय-स्थान १.३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६९ अ।
प्रशांतता क्रिया—संस्कार ४.१५२ ब।
प्रशांति—कुरुवंश १.३३५ ब।
प्रशांति क्रिया—सस्कार ४ १५१ ब।
प्रश्न—३.१५१ ब, स्वभाव ४ ५०७ अ।
प्रश्नकीर्ति—तीर्थंकर २ ३७७।
प्रश्नकुशल साधु—३.१५१ ब।
प्रश्नभाषा—भाषा ३.२२७ अ।
प्रश्नव्याकरण—३.१५१ ब, श्रुतज्ञान ४ ६८ अ।
प्रश्नोत्तरमाला—अमोघवर्ष १.१३३ ब।
प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—३ १५१ ब, इतिहास १.३४५ ब।
प्रष्ठक—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१७ ब, विस्तार ४.५१७, अकन ४ ५१९ ब, देव-आयु १.२६७।
प्रसंख्यान—एकाग्रचितानिरोध १.४६६ अ।
प्रसंग—३.१५१ ब।
प्रसंगसमा जाति—३.१५१ ब।
प्रसज्य अभाव—अभाव १.१२८ अ-ब।
प्रसाद—दान २ ४२३ ब।
प्रसारितबाहु तप—कायक्लेश २.४७ अ।
प्रसेनजित्—३.१५१ ब, कुलकर ४.२३, यदुवंश १ ३३७।

प्रस्तर—३ १५२ अ। नरकपटल—निर्देश २ ५७६ ब, नामनिर्देश २ ५७९ अ, विस्तार २ ५७९ अ, अकन ३ ४४१। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१४ ब, नामनिर्देश ४.५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४ ५१५।

प्रस्तार—३ १५२ अ, अक्षसचार गणित २ २२६ अ-ब।

प्रस्ताव—३.१५२ अ।

प्रस्थ—३ १५२ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ, तौल का प्रमाण २.२१५ अ।

प्रस्थापक—३.१५२ अ।

प्रस्रवण—आहारान्तराय १ २९ अ।

प्रहरण—तीर्थंकर २.३९१, प्रतिनारायण ४ २०।

प्रहरा—३ १५२ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।

प्रहसित—३ १५२ अ, मातगवश १.३३६ ब।

प्रहार—आहारान्तराय १ २९ ब।

प्रहारसक्रामिणी विद्या—३ १५२ अ, विद्या ३ ५४४ अ।

प्रह्लाद—३ १५२ अ, प्रतिनारायण ४ २०।

प्राक्—३.१५२ अ।

प्राकाम्य ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५१ अ, १ ४५२ ब।

प्राकार—३ १५२ अ।

प्राकृत सख्या—३ १५२ अ।

प्रागभाव—अभाव १.१२७ ब-१२९ अ।

प्राग्ज्योतिष—मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

प्राच्य—३ १५२ अ।

प्राण—३ १५२ अ, अयोगकेवली २.१६४ अ, कालप्रमाण २.२१६ अ, पर्याप्ति ३ ४३ ब, मार्गणा ३ २९८ अ, समुद्घातकेवली २ १६४ अ, सयोगकेवली २.१६४ अ, हिंसा ४.५३६ अ।

प्राण असयम—असयम १ २०७ ब।

प्राणघात—हिंसा ४ ५३६ अ।

प्राणघातिकी हिंसा—हिंसा ४.५३२ अ।

प्राणत—३ १५४ ब, नारायण ४ १८ ब।

प्राणत (देव)—३ १५४ ब, अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६८, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १ २५८ ब, इन्द्र—निर्देश ४ ५१० ब, उत्तरेंद्र ४ ५११ अ, परिवार ४ ५१२-५१३, चिह्न आदि ४ ५११ ब, अवस्थान ४ ५२० ब, विमान नगर व भवन ४.५२०-५२१।

प्राणत (देव)—प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ १९२, सख्या ४ ९८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।

प्राणत (स्वर्ग)—३ १५४ ब, निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४ ५१८, विभाग ४ ५२० ब, विस्तार ४ ५१८, अवस्थान ४ ५१४ ब, अकन ४.५१५, इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४ ५२०।

प्राणपीडन—हिंसा ४.५३२ अ।

प्राणरक्षा—अहिंसा १.२१७ ब।

प्राणवाद—३ १५४ ब।

प्राणव्यपरोप—अहिंसा १.२१७ ब।

प्राणव्यपरोपण—हिंसा ४ ५३२ अ।

प्राणि-संयम—संयम ४ १३८ अ।

प्राणातिपात—३.१५४ ब, प्रत्यय ३ १२६ अ।

प्राणातिपातिकी क्रिया—क्रिया २.१७४ ब।

प्राणापान पर्याप्ति—उच्छ्वास १ ३५२ ब।

प्राणायाम—३ १५४ ब, ध्यान २.४९६ अ, मडल ३.१५५ अ।

प्राणावाय पूर्व—श्रुतज्ञान ४ ६९ अ।

प्राणि संयम—संयम ४ १३८ अ।

प्राणी—जीव २.३३३ अ-ब।

प्राणु—कालप्रमाण २ २१६ अ।

प्रातर—३.१५६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

प्रातिक देव—व्यन्तर जातीय देव—आयु १ २६४ ब।

प्रातिहार्य—अर्हन्त १.१३७ ब, चैत्यचैत्यालय २ ३०३ अ।

प्रात्ययिकी क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।

प्राथमिक—३ १५६ अ।

प्रादुर्भाव—उत्पाद १ ३६० ब।

प्रादुष्कार—३ १५६ अ, आहार दोष १ २९० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ, वसतिका दोष ३ ५२८ ब।

प्रादुष्कृत—वसतिका दोष ३ ५२८ ब।

प्रादोषिक काल—३ १५६ अ।

प्रादोषिकी क्रिया—क्रिया २.१७४ ब।

प्राधान्य पद—उपक्रम १ ४१६ ब, पद ३ ५ अ।

प्राप्ति-ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५१ अ।

प्राप्तिसमा जाति—३ १५६ अ।

प्राप्य कर्म—कर्म २.१७ अ।

प्राप्यकारी—इन्द्रिय १.३०३-३०४।

प्राभृत—३.१५६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६४ ब।

प्राभृत दोष—आहार १ २९० ब उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

प्राभृतप्राभृत—श्रुतज्ञान ४ ६४ ब।

प्राभृतप्राभृत समास—श्रुतज्ञान ४.६४ ब।
प्राभृत समास—श्रुतज्ञान ४ ६४ ब।
प्रामाण्य—३ १५७ अ, प्रमाण ३ १४३ अ।
प्रामाण्य भंग—इतिहास १ ३४१ ब।
प्रामृष्य दोष—३ १५७ अ, आहार १.२९० ब। उद्दिष्ट १ ४१३ अ।
प्रायश्चित्त—३.१५७ अ, प्रायश्चित्त ३ १५८ ब। भक्ष्याभक्ष्य ३.२०१ ब, व्युत्सर्ग ३.६२३ अ, व्रत ३ ६२६ अ, सल्लेखना ४ ३९१ ब।
प्रायाश्चित्त विधान—इन्द्रनन्दि १ २९९ ब।
प्रायश्चित्त शास्त्र—श्रोता (पात्रापात्र) ४ ७५ ब।
प्रायोगिक बध—बध ३ १६९ ब।
प्रायोगिकी क्रिया—क्रिया २ १७३ ब।
प्रायोग्य लब्धि—नियति २.६१५ अ, लब्धि ३.४१२ ब।
प्रायोग्यानुपूर्वी—आनुपूर्वी १.२४७ अ।
प्रायोपगमन—सल्लेखना ४ ३८६ ब।
प्रायोपगमन मरण—सल्लेखना ४.३८९ ब।
प्रारंभ क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।
प्रारब्ध योगी—ध्याता २ ४९४ अ, योगी ३.३८६ अ।
प्रावचन—३ १६२ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।
प्राविष्कृत—३.१६२ अ।
प्रासाद—३.१६२ अ, ज्योतिषी देवो के २ ३५१, भवनवासी देवो के ३.२१० ब, मध्यलोकवासी देवो के ३ ६१५, व्यन्तर देवो के ३ ६१२ ब।
प्रासुक—३ १६२ अ, आहार (उद्दिष्ट) १ ४१३ ब। जल २ ३२५ अ, वनस्पति या सचित्त पदार्थ ४.१५८ ब।
प्रासुक परित्याग—त्याग २ ३९७ ब।
प्रासुक विहारी—विहार ३.५७४ अ।
प्रास्थाल—३ १६२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।
प्रिय—३.१६२ अ, धातकीखण्ड का रक्षक देव ३ ६१४, सुख ४ ४३० ब।
प्रियकारिणी—३.१६२ ब, तीर्थंकर वर्द्धमान २.३८० ।
प्रियकर—हरिदेव ४ ५३० अ।
प्रियंगु—तीर्थंकर सुमति व पद्मप्रभ २.३८३।
प्रियंगु सुदरी—यदुवश १.३३७।
प्रियदर्शन—३ १६२ ब, धातकीखण्ड का रक्षक देव ३ ४६३ अ, ३.६१४, महोरग जातीय व्यन्तर देव ३ २९३ अ, लवण सागर का रक्षक देव ३ ६१४, सुमेरु का अपर नाम ४ ४३७ अ।
प्रियदर्शना—व्यन्तरेन्द्र वल्लभिका ३.६११ ब।
प्रियमित्र—३.१६२ ब, नारायण ४ १८ अ।
प्रियोद्भव क्रिया—मन्त्र ३.२४६ ब, सस्कार ४ १५१ अ।
प्रीतिंकर—३ १६२ ब, कुरुवश १ ३३५ ब, लान्तवेन्द्र का यान ४ ५११ ब। स्वर्ग (ग्रैवेयक) पटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४.५१८, अकन ४ ५१५, देव-आयु १ २६८।
प्रीति—वात्सल्य ३ ५३२ अ।
प्रीति-क्रिया—मन्त्र ३ २४६ ब, संस्कार ४ १५१ अ।
प्रेत—सल्लेखना ४ ३९६ ब।
प्रेत्य भाव—३ १६२ ब, न्यायदर्शन २ ६३३ ब।
प्रेम—३ १६२ ब, राग ३.३९७ ब, वात्सल्य ३ ५३२ अ, ३ ५३३ अ, श्रद्धा ४.४६ अ।
प्रेमक—तीर्थंकर २ ३७७।
प्रेमानुराग—राग ३.३९५ अ।
प्रेरक—कारण २ ६४ अ, २ ६५ अ, (धर्मादि द्रव्य) २.६५ अ, निमित्त २ ६४ अ, २ ६१२ अ।
प्रेष्य प्रयोग—३ १६२ ब।
प्रोक्षण विधि—३ १६२ ब।
प्रोषध—प्रोषधोपवास ३ १६३ अ।
प्रोषध प्रतिमा—प्रोषधोपवास ३.१६५ अ।
प्रोषधोपवास—३.१६२ ब, अनशन १ ६५ ब, क्षुल्लक २.१८९ अ।
प्रोषधोपवास प्रतिमा—प्रोषधोपवास ३ १६४ ब।
प्रोष्ठिल—३ १६७ अ, मूल सघ १.३१६, इतिहास १ ३२८ अ, तीर्थंकर २ ३७७।
प्रौष्ठिल—तीर्थंकर २.३७७, तीर्थंकर वर्द्धमान २ ३७८।
प्लक्ष—तीर्थंकर शीतलनाथ २.३८३।
प्लक्षणकूला—शिखरी पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४ के सामने।
प्लुत—अक्षर १ ३३ अ।

फ

फण—(पार्श्वनाथ प्रतिमा) पूजा ३.७८ अ।
फल—३.१६७ अ, कर्म २ २७ ब, कारण(जीव के परिणाम) २ ७४ अ, न्याय २.६३३ ब, पूजा ३.७८ ब, प्रमाण ३.१४२ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब, राग ३.३९७ अ, सल्लेखना ४ ३९० ब।

फलकमय सस्तर—संस्तर ४ १५३ ब ।
फलचारण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५३ अ ।
फलत्याग—अनशन १.६६ अ, उपदेश १ ४२४ ब, तप २ ३५८ ब, २ ३६० अ, निकाक्षित २.५८५ ब, २ ५८६ अ, राग ३.३९७ अ ।
फलदशमी व्रत—३.१६७ अ ।
फलदान—उदय १ ३६६ अ-ब, १ ३६७ अ । उदीर्ण १.४१३ अ ।
फलरस—रस ३ ३९२ ब ।
फलराशि—३ १६७ अ ।
फलाकांक्षा—अनशन १.६६ अ, उपदेश १ ४२४ ब, तप २.३५८ ब, २.३६० अ, निकाक्षित २ ५८५ ब, २ ५८६ अ, राग ३ ३९७ अ ।
फलेच्छा—दे. फलाकाक्षा ।
फालि—अपकर्षण १ ११७ अ, काण्डक २ ४१ ब ।
फालिसंक्रमण—सक्रमण ४ ८४ अ ।
फाहियान—३.१६७ अ ।
फिलिप्स—३ १६७ अ ।
फुसी—कायक्लेश २ ४७ ब ।
फूई—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब, ३ २०३ अ ।
फूलदशमी व्रत—३ १६७ अ ।
फेनमालिनी—३.१६७ अ, विभगा नदी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४८९, ३.४९०, अकन ३ ४४४ (चित्र १३), ३.४६४ के सामने (चित्र ३७)।
फोड़ा—कायक्लेश २ ४७ ब ।
फ्रेंच लाग—गणित २ २२५ अ ।

ब

बंग—३ १६७ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।
बगाल—मगधदेश १ ३१० ब ।
बंदर—तीर्थंकर अभिनंदननाथ २ ३७९ ।
बंध—३.१६७ ब, अहिसा व्रत १.२१६ अ ।
बंध (कर्मबध)—३.१६८ ब, अध्यवसान (परिग्रह) ३ २८ ब, अन्तर १.२३, अल्पबहुत्व १.१६४ ब, १.१७५, आस्रव १ २८३ ब, ईर्यापथ कर्म १.३४९ ब, उदय १ ३९८ अ-ब, उपयोग १ ४३२ अ, एकसमयिक स्थिति ४.४५५ ब, करण दशक २ ६, गति व आयु बन्ध मे अन्तर १ २५४ अ, गुणस्थान (करण दशक) २ ६, परिग्रह ३ २८ ब, युति ३ ३७३ ब, रागादि ३ १७४, रागाश(उपयोग) १ ४३२ अ, व्यवहारचारित्र २.२९० अ, व्यवहार धर्म २ ४७४ ब, शुक्लध्यान ४ ३४ अ, सक्रान्ति ४ ३८ अ ।
बध (प्ररूपणा)—प्रकृति ३ ८८ अ, स्थिति ४ ४५७ ब, ४ ४६०, अनुभाग १ ८८-९०, १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६, बन्ध ३ ९७, अन्तराय कर्म १ २८ अ, आयुकर्म १ २५४ अ, १ २६२ ब, बन्धस्थान ३ १०८, उदय १ ३६८ अ, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७६, सत्त्वस्थान ४ २८७, त्रिसंयोगी भग १ ३९९-४०८, सक्रमण ४ ८४ अ, अल्पबहुत्व १ १६४-१७६ ।
बंध-अपसरण—अपकर्षण १ ११५ अ, १ ११७ अ, काण्डक २ ४२ अ, क्षय २ १७९ ब, २ १८० अ ।
बंध-उदय-सत्त्व त्रिभंगी—इतिहास १ ३४४ ब ।
बंधक ३ १७८ ब ।
बंधन-नामकर्म-प्रकृति—३ १७९ अ, प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३७, बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३ ११०, उदय १.३७४, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४, संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १७१ ब ।
बंधन-बद्धत्व—३ १७९ ब ।
बंधनीय—वेदना ३.५९० ब ।
बंधपरिणाम—आयुबन्ध योग्य १.२५४ अ, मोहनीय बन्ध योग्य ३ ३४४ अ ।
बंधयोग्य प्रकृति—३ ९० अ ।
बध-विधान—३.१७९ ब ।
बंध-वेदना—अल्पबहुत्व १ १७६ ।
बंध-समुत्पत्तिक—अनुभाग सत्कर्म स्थान १ ८९ ब, सत्त्व का अल्पबहुत्व १ १६५ ब ।
बंधस्थान—३ १७९ ब, अनुभाग १ ८९ ब, आयु १ २५९ अ, प्रकृतिबन्ध ३ १०८, स्थितिबन्ध अल्पबहुत्व १.१६४ ब ।
बंधस्पर्श—स्पर्श ४.४७६ अ ।
बंधस्वामित्व—इतिहास १ ३४१ अ, १ ३४५ अ ।
बंधहेतु—उदय (मोहज भाव) १ ४०८ ब, बन्ध ३ १७५ अ ।

बंधापसरण—अपकर्षण १.११५ अ, १.११७ अ, काण्डक २.४२ अ, क्षय २.१७९ ब, २ १८० अ।
बंधाभाव गति—गति २ २३५ अ।
बंधावली—आवली १.२७९ अ, उपशम १.४४१ ब।
बंधुमति—यदुवंश १ ३३७।
बंधुवर्मा—इतिहास १.३३२ अ।
बंधुसेन—यदुवंश १ ३३७ ब।
बंधुसेना—तीर्थंकर मल्लिनाथ २.३८८।
बंधोत्सरण—उत्कर्षण १ ३५३ ब।
बंध्यबधक भाव—कारक २ ५० अ।
बकरा—स्वप्न ४.५०५ अ।
बकुल—तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३८३।
बकुश—३.१७९ ब, श्रुतकेवली ४ ५५ ब।
बगुला—श्रोता ४ ७४ ब।
बघेरवाल—आशाधर १ २८० ब।
बड़—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ ब।
बड़वामुख—लवणसागर का पाताल—निर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४७८, अकृत ३.४६१, चित्र ३.४६२ अ।
बड़ानगर—३ १८० अ।
बदला—उपकार १ ४१५ अ।
बद्ध—३.१८० अ, कारण २.५६ ब।
बद्धायुष्क—अकालमृत्यु (मरण) ३ २८४ अ, आयुबन्ध १.२६२ अ, गुणस्थान आयु १.२६२ ब। जन्म २.३१३-३१४, बन्ध-उदय सत्त्व (उदय) १.४०० अ, मरण ३.२८४ अ, सम्यग्दर्शन (आयु) १.२६२ ब।
बध्यमान आयु—अपवर्तन १.२६१ अ, आयु १.२५३ ब।
बध—३ १८० अ।
बधपरिषह—३.१८० अ।
बध्य-घातक विरोध—३.१८०, कर्म-जीव २ ६७ ब, विरोध ३ ५६४ ब, सम्बन्ध ४.१२६ अ।
बध्य-बन्धक भाव—नय २.५५० ब।
बध्यमान कर्म—३.१८० ब।
बनवारीलाल—३ १८० ब।
बनारस—तीर्थंकर पार्श्वनाथ २.३७९, नारायण ४.१८ अ, प्रतिनारायण ४.२०, बलदेव ४ १७ अ।
बनारसीदास—३.१८० ब, इतिहास १.३३४ अ, १.३४७ ब।
बनारसीविलास—३ १८० ब, इतिहास १.३४७ ब।
बंबर—तीर्थंकर अभिनंदननाथ २ ३७९।
बप्पदेव—३ १८० ब, इतिहास १.३२८ ब, १.३४० अ।
बप्पनंदि—देशीय गण १.३२५।
बप्पिला—तीर्थंकर नमिनाथ २.३८०।
बयालीस—बादाल की सहनानी २.२१८ ब।
बरड़—गन्धमादन २.२११ अ।
बल—३ १८१ अ, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ, कालकृत हानि-वृद्धि २ ९३, गणधर २ २१३ अ, तीर्थंकर. सुपार्श्वनाथ २.३८७, बलदेव ४ १६, भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ, रुद्र ४.२२ अ, रघुवंश १ ३३८ अ।
बलऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १ ४५४ ब।
बलचंद्र—३.१८१ अ।
बलदत्त—तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ २ ३८७।
बलदेव—३ १८१ अ, गति-अगति (जन्म) २ ३२१ ब, यदुवंश १ ३३७, शलाकापुरुष ४.१६ अ।
बलदेव (आचार्य)—सूरि ३ १८१ अ, इतिहास—१ ३२८ अ। पुन्नाट संघ १.३२७ अ, इतिहास १.३२९ ब।
बलभद्र—३ १८१ अ, चक्रवर्ती ४.१० अ, प्रतिनारायण ४.२० ब। सुमेरु पर्वत का कूट व देव—निर्देश ३ ४५० अ, विस्तार ३ ४८३, अकृत ३ ४५१। स्वर्ग-पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४ ५१७, अकृत ४.५१५, देव-आयु १ २६७।
बलमद—मद ३ २५९ ब।
बलमित्र—३ १८१ अ।
बलवत्ता—कारण (कर्म) २.७१ अ-ब।
बलवान्—कारण २.७१ ब।
बलहद्दचरिउ—इतिहास १ ३४५ ब।
बला (देवी)—गजदत कूट की—निर्देश ३.४७३ अ, ३.६१४, आयु १.२६५ ब, पद्मह्रद की—निर्देश ३.४५५ अ, ३.६१४। वैमानिक इंद्रों की ४.५१३ ब।
बलाकपिच्छ—३.१८१ अ, मूलसंघ १.३२२ ब, देशीयगण १.३२४ ब, इतिहास १.३२८ ब।
बलाकामरण—मरण ३ २८१ ब।
बलात्कार गण—३ १८१ अ, मूलसंघ १ ३२३ अ, १.३२४ अ। नन्दिसंघ १. परि०/२.३, १. परि०/४.२, १ ३१८ ब।
बलाधानहेतु—कारण २.७१ ब, निमित्त २.६११ ब।
बलाधायक हेतु—निमित्त २.६१२ अ।
बलि—३ १८१ अ, अकम्पनाचार्य १.३० ब, तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३९१, सुपार्श्वनाथ २.३८७, पूजा ३.७८ ब, प्रतिनारायण ४.२० अ, यदुवंश १.३३७।
बलिदत्त—तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ २.३८७।
बलिदोष—आहार १.२९० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ, वसतिका ३.५२८ ब।

बलींद्र—३ १८१ ब, प्रतिनारायण ४.२० अ।
बल्लभ संप्रदाय—वैष्णव ३ ६०९ अ।
बल्लभीपुर—श्वेताम्बर ४.७७ अ।
बल्लाकदेव—३ १८१ ब।
बसंततिलक—इक्ष्वाकु १ ३३५ ब।
बहल—३ १८१ ब।
बहिरगछेद—अहिंसा १.२१६ ब, छेद २ ३०६ ब, हिंसा ४ ५३३ ब।
बहिरंग धर्मध्यान—नरक २ ४७८ ब।
बहिरंग शुद्धि—परिग्रह ३ २९ अ।
बहिरंग हिंसा—४.५३६ अ।
बहिरात्मा—३ १८१ ब, अन्तरात्मा १ २७ अ, आत्मा १ २४४ ब, गुरु २ २५२ अ, जीव २ ३३३ ब, भव्य ३ २१३ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, ३ ३०६ अ, शक्ति-व्यक्ति ३ २१३ अ, सम्यग्ज्ञान २.२६७ ब।
बहिर्चित्प्रकाश—दर्शन २ ४०६ ब।
बहिर्मुखचित्प्रकाश—दर्शन २.४०७ अ।
बहिर्यान क्रिया—मन्त्र ३ २४७ अ, संस्कार ४ १५१ अ, सूतक ४ ४४२ ब।
बहिस्तत्त्व—तत्त्व २ ३५३ ब।
बहु—३ १८२ अ, मतिज्ञान ३ २५४ ब।
बहुकेतु—३ १८२ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
बहुजन आलोचना—आलोचना १ २७७ ब।
बहुजन-पृच्छा आलोचना—आलोचना १.२७७ ब।
बहुजन संसक्त प्रदेश—भिक्षा ३ २३१ अ।
बहुपुत्रा—व्यन्तरेंद्र वल्लभिका ३ ६११ ब।
बहुप्रदेशी—काय २ ४४ अ।
बहु मतिज्ञानावरण—ऋद्धि १ ४४९ ब।
बहुमान—३ १८२ अ।
बहुमुख—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
बहुमुखी—३ १८२ अ।
बहुरूपा—व्यन्तरेंद्र वल्लभिका ३ ६११ ब।
बहुरूपिणी—३ १८२ अ, तीर्थंकर नमिनाथ २.३७९।
बहुल—रत्नप्रभा ३ ३९१ अ।
बहुलप्रभ—तीर्थंकर २ ३७७।
बहुवज्रा—३ १८२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
बहुविध—३.१८२ अ, मतिज्ञान ३ २५४ ब।
बहुविध मतिज्ञानावरण—ऋद्धि १ ४४९ ब।
बहुश्रुत—३ १८२ ब, संस्कार ४ १५० अ।
बहुश्रुत भक्ति—भक्ति ३ १९८ ब।
बहूदक—वेदान्त ३ ५९५ ब।
बांस—तीर्थंकर नेमिनाथ २.३८३ अ।
बा—बादर की सहनानी २ २१९ अ।
बाकी—३ १८२ ब।
बागड़गच्छ—एकांत (जैनाभासी संघ) १ ४६५ अ, काष्ठा संघ १ ३२१ ब, १ ३२२ अ।
बाण—३ १८२ ब।
बाणभट्ट—३ १८२ ब।
बाणमुक्त—मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
बाणा—३ १८२ ब। मनुष्यलोक ३ २७६ अ।
बादर—सहनानी २ २१९ अ।
बादर आलोचना—आलोचना १ २७७ ब।
बादर कषाय—गुणस्थान २ २४६ ब।
बादर-कायिक जीव—अवगाहना (सूक्ष्म) ४ ४३९ ब, आयु १ २६४, काय २.४४, जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २ ३४३। सूक्ष्म ४ ४३९ अ-ब। प्ररूपणा—बन्ध ३ १०४, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १ ३७९ उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत ४ २०१-२०९, संख्या ४.१०१, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८४, काल २ १०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४६।
बादरकृष्टि—२ १४० ब।
बादर क्षेत्रफल—गणित २ २३२ ब।
बादर दोष—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ।
बादर नामकर्म प्रकृति—सूक्ष्म ४ ४४० ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, ४ ४४० ब, स्थिति ४ ४६६, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६, बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान १ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४, संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६७ अ।
बादर-निगोद—वनस्पति ३ ५०५, ३ ५०८।
बादर-निगोद-वर्गणा—वनस्पति ३.५०५ ब वर्गणा ३ ५१३ अ, ३ ५१५-३ ५१८।
बादर परिधि—गणित २ २३२ ब।
बादर-प्राभृत दोष—आहार १ २९० ब।
बादर-वनस्पति—वनस्पति ३ ५०४।
बादर-बादर-स्कंध—स्कन्ध ४ ४४६ ब।
बादर युग्मराशि—ओज १ ४६९ ब।
बादर सांपराय—अनिवृत्तिकरण १ ६७ ब।
बादर सांपरायिक बंधक—बन्धक ३ १७९ अ।
बादर स्कंध—स्कंध ४.४४६ ब।

बादरायण—३ १८२ ब, अज्ञानवादी १ ३७ अ, १.३८ ब, एकातवादी १ ४६५ ब, वेदान्त ३.५९५ ब।
बादरि—वेदात ३ ५९५ ब।
बादाल—३ १८२ ब, सख्याप्रमाण २.२१४ ब, सहनाती २ २१८ ब।
बाधक—कारण (कर्मोदय) २.७१ ब।
बाधारहित—सुख ४ ४३२ अ।
बाधित—३ १८२ ब।
बाध्य-बाधक भाव—संबध ४ १२६ अ।
बानमुक्त—३ १८२ ब।
बानर—३ १८२ ब, स्वप्न ४ ५०५ अ।
बारस-अणुवेक्खा—३ १८२ ब, इतिहास १.३४० ब।
बारह—अग (श्रुतज्ञान) ४ ६७ ब, अनुप्रेक्षा १ ७९ अ, आयतन (बौद्ध) १ २५१ अ। आवर्त (कृतिकर्म) १.२७९ अ, २ १३३ ब, चक्रवर्ती ४ १० ब, तप २.३५९ अ, जीवसमास २ ३४१, भावना (अनुप्रेक्षा) १ ७८ ब, भिक्षाप्रतिमा (सल्लेखना) ४.३९२ ब, श्रुतज्ञान के अग ४ ६७ ब।
बारह-तप व्रत—३ १८२ ब।
बारह बिजोरा—३.१८३ अ।
बारहवशमी व्रत—३.१८३ अ।
बाल—३ १८३ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ।
बालकन्या—मगल ३.२४४ ब।
बालक्रिया—क्रिया २.१७५ अ।
बालचद्र—३ १८३ अ, भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ। काष्ठासघ १ ३२७ अ, इतिहास १.३२९ ब।
बालचंद्र सैद्धांतिक—इतिहास १.३३१ ब, १.३३२ अ।
बालचद्रा—यदुवश १.३३७।
बालचरण—ज्ञान २.२६७ ब, निंदा (साधु) २ ५८९ अ।
बालचारित्र—चारित्र २.२८८ अ, २ २८९ अ।
बालतप—तप २.३५९ ब।
बालनंदि—३ १८३ अ, देशीय गग १.३२५, इतिहास १.३३१ अ।
बालपडितमरण—मरण ३ २८० ब।
बाल बालमरण—मरण ३ २८० ब।
बालमरण—मरण ३.२८० ब।
बालव्रत—चारित्र २ २८९ अ, तप २.३५९ ब।
बालश्रुत—ज्ञान २ २६७ ब, चारित्र २ २८८ अ, निन्दा (साधु) २.५८९ अ।
बालाग्र—३.१८३ अ।
बालाचार्य—आचार्य १.२४३ अ, दिशा २.४३३ ब।
बालादित्य—३.१८३ अ।
बालिश्त—३.१८३ अ।
बाली—३ १८३ अ, वानरवश १.३३८ ब।
बालुक—सौधर्मेंद्र का यान ४ ५११ ब।
बालुकाप्रभा—३ १८३ ब, तृतीय नरक पृथिवी—निर्देश २.५७६ अ, पटल २ ५७९, इंद्र श्रेणीबद्ध बिल २ ५७८, २ ५७९, विस्तार २ ५७६, २ ५७८, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १ १९८ अ, आयु १ २६३।
बालुकाप्रभा (प्ररूपणा)—बध ३.१०१, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४.२९८ ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १७०, सख्या ४ ९५, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४ ४७९, काल २ १०१, अन्तर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।
बालेंद्र—विद्याधरवंश १.३३९ अ।
बाह्लीक—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
बासन—कर्म (पंचसूत्र) २ २६ ब।
बासी भोजन—३ १८३ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब।
बाहु तीर्थंकर २ ३९२।
बाहुतप—कायक्लेश २ ४७ अ।
बाहुबलिचरिउ—इतिहास १ ३४५ ब।
बाहुबली—३ १८३ ब, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ, काम देव ४ २२ ब, पूजा (प्रतिमा) ३.७८ अ, शल्य ४.२६ ब, सोमवश १.३३९ ब।
बाहुबली (कवि)—इतिहास १ ३३३ ब।
बाहुल्य—३ १८३ ब।
बाह्य—३ १८३ ब।
बाह्य अनर्थदड—आखेट १.२२५ अ।
बाह्य उपधि—उपधि १.४२७ अ, व्युत्सर्ग ३.६२३ ब।
बाह्य करण—निमित्त २ ६११ ब।
बाह्य कारण—कारण-कार्य २.७२ ब।
बाह्य चिह्न—धर्मध्यान २.४७८ ब।
बाह्य तप.कर्म—कर्म २ २६ अ।
बाह्य तप—तप २.३५९ अ, २.३६१ ब।
बाह्य त्याग—परिग्रह ३ २७ ब, ३ २९ ब।
बाह्य द्रव्यमल—मल ३.२८८ अ।
बाह्य धर्मध्यान—२ ४७९ अ, २ ४८१ अ।
बाह्य नास्तिक्य—नास्तिक्य २ ५८५ ब।
बाह्य परिग्रह—उपधि १.४२७ अ, ग्रथ २.२७३ ब। परिग्रह ३.२८ अ।

बाह्य पारिषद—पारिषद ३.५६ अ।
बाह्य प्रत्यय—कषाय २ ३५ ब, प्रत्यय ३.१२५ ब।
बाह्य प्रमेय—प्रमाण ३ १४४ अ।
बाह्य प्राण—हिंसा ४ ५३२ ब।
बाह्य वर्गणा—वर्गणा ३.५१६ ब।
बाह्य व्यास—गणित २ २३३ ब।
बाह्य व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३.६२३ ब।
बाह्य शास्त्र—शास्त्र ४ २८ अ।
बाह्य शुक्लध्यान—शुक्लध्यान ४.३२ ब।
बाह्य सल्लेखना—सल्लेखना ४.३८२ अ।
बाह्य सूची—गणित २.२३३ ब।
बाह्य हिंसा—हिंसा ४ ५३५ अ।
बाह्य हेतु—कारण २ ५४ अ, २ ७२ ब।
बाह्योपधि व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३.६२३ ब।
बिंदु—सख्या प्रमाण २ २१४ ब।
बिंदुसार—३.१८३ ब, मगधदेश—इतिहास १ ३१० ब, १.३१३।
बिंब—३.१८३ ब।
बिंबसार—३ १८४ अ, मगधदेश—इतिहास १.३१० ब, १.३१२।
बिंबोष्ठ—विद्याधर वंश १ ३३९ अ।
बिल—३ १८४ अ। नरक—निर्देश २ ५७६ ब, श्रेणी ४ ७२ ब, सख्या २.५७८-५७९, विस्तार २.५७८-५७९, अवस्थान २.५७६, अकन ३.४४१।
बीज—३ १८४ अ, अग्नि १ ३६ अ।
बीजगणित—३.१८४ अ।
बीजचारण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १.४५३ अ।
बीजदर्शनार्य—आर्य १ २७५ अ।
बीजना—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ।
बीजपद—अर्थ १ १३५ अ, पद ३.४ अ, पद्धति ३.८ ब।
बीजबुद्धि ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४८ अ-ब, १.४४९ अ, गणधर २ २१२ ब।
बीजमान—प्रमाण ३ १४५ अ।
बीजरुचि—सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।
बीजरुह—वनस्पति ३.५०३ अ, ३.५०६ अ।
बीजसम्यक्त्वार्य—आर्य १ २७५ अ।
बीज-सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।
बीजा—३.१८४ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
बीजाक्षर—अक्षर १ ३३ अ, दिव्यध्वनि २.४३२ ब।
बीथी—३ १८४ अ, समवसरण ४.३३० ब।
बीधा अन्न—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ।
बीस—आयुबध-स्थान १ २५९ अ, प्ररूपणा ३ १४७ अ, मार्गणा (२० प्ररूपणा) ३ २९८ अ।
बीसिय—३ १८४ अ।
बुद्ध ३ १८४ अ, ग्रह २ २७४ अ, मगधदेश-इतिहास १ ३१० ब, वीर सवत् १ परि०/१।
बुद्ध गया—उरुबिल्व १ ४४५ ब।
बुद्धगुप्त—३ १८४ अ।
बुद्धस्वामी—३.१८४ अ, इतिहास १.३२९ ब।
बुद्धि—३ १८४ अ, अध्यवसान १ ५२ अ, अनुगताकार (अन्वय) १,११२ ब, न्याय २ ६३३ ब, सस्कार ४.१५० अ।
बुद्धि ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७-४५०।
बुद्धिकीर्ति—३ १८४ ब।
बुद्धिकूट—३.१८४ ब, रुक्मिपर्वत का—निर्देश ३ ४७२, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४ के सामने।
बुद्धिदेवी—३ १८४ ब, भवनवासिनी—निर्देश ३.६१२ अ, परिवार ३.६१२ अ, भवनविस्तार ३.६१५, आयु १.२६५ ब, ह्रद-निवासिनी—निर्देश ३.४५३ ब, परिवार ३ ६१२ अ, रुक्मि पर्वत के कूट की—निर्देश ३.४७२ ब, अकन ३.४४४ के सामने।
बुद्धिल—मूलसघ १.३१६।
बुद्धिलिंग—१ १८४ ब, मूलसघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ।
बुद्धिवीर्य—तीर्थंकर पुष्पदत २.३९१।
बुद्धिसागर—चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४.१५ अ।
बुद्धेशभवनव्याख्यान—३ १८४ ब, इतिहास १.३४१ ब।
बुध—३ १८४ ब। ज्योतिष ग्रह—निर्देश २.३४८ अ, विस्तार २ ३५१ ब, आकार २ ३४७, किरणे तथा वाहक देव २ ३४७, चित्र २ ३४७, देव आयु १.२६६ ब। आधुनिक मत ३ ४३६ अ, वैदिक मत ३ ४३२ ब।
बुधजन—३ १८४ ब, इतिहास १ ३३४ ब, १.३४८ अ।
बुधजनविलास ३ १८४ ब, इतिहास १ ३४८ अ।
बुधजन सतसई—३ १८४ ब, इतिहास १.३४८ अ।
बुभुक्षा काल—भिक्षा ३ २२८ ब।
बुलाकीदास—३ १८४ ब, इतिहास १. ३३४ अ।
बूचिमय्यंगुल—गण्डविमुक्त देव २ २१० ब।
बूचीराज—३.१८४ ब, इतिहास १.३३१ ब, १.३३३ ब, १.३४७ अ।

बृहती—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ।
बृहत्कथा—३.१८४ ब।
बृहत्कथाकोष—कथाकोष २ ३ ब, इतिहास १ ३४२ अ।
बृहत्कथासरितसागर—कथाकोष २ ३ ब।
बृहत्कांत—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
बृहत्कीर्ति—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
बृहत्केतु—कुरुवंश १.३३६ अ।
बृहत्क्षेत्रसमास—३ १८४ ब, इतिहास १ ३४१ अ।
बृहत्चूर्णि—१.३४१ ब, २ परि०/१।
बृहत्त्रयम्—३ १८४ ब, अकलंक १ ३१ अ, इतिहास १ ३४१ ब।
बृहत्शतक चूर्णी—इतिहास १ ३४१ ब, २ परि०/१।
बृहत्संग्रहिणी सूत्र—३ १८५ अ, इतिहास १ ३४१ अ।
बृहत्संघायणी सुत्त इतिहास १ ३४१ अ।
बृहत्सर्वज्ञसिद्धि—३ १८५ अ, अनन्तकीर्ति १.५० ब, इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ अ।
बृहद्गति—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
बृहद्गृह ३ १८५ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
बृहद्बल—३ १८५ अ।
बृहद्रथ—यदुवंश १ ३३७, हरिवंश १ ३४० अ।
बृहद्वसु—हरिवंश १ ३४० अ।
बृहस्पति—३.१८५ अ, ग्रह—निर्देश २ ३४८ अ, नाम-निर्देश २ २७४ अ, विमान का आकार २.३४७, विमान का विस्तार २ ३५१ ब, विमान का चित्र २ ३४७, किरणें तथा वाहक देव २.३४७। आधुनिक मत ३ ४३६ अ, वैदिक अभिमत ३ ४३२ ब। देव-आयु १.२६६ अ, इन्द्र २ ३४५ ब।
बेलंधर—३ १८५ अ।
बेल—तीर्थंकर शीतलनाथ २ ३८३ अ।
बेलड़ी—३ १८५ अ।
बेलन—३.१८५ अ।
बेलनाकार—३.१८५ अ, गणित २ २३४ अ।
बेला व्रत—३.१८५ अ।
बैल—तीर्थंकर ऋषभनाथ २.३७९, तीर्थंकर सीमन्धर तथा सूरिप्रभ २ ३९२, स्वप्न ४ ५०४ अ, ४ ५०५ अ।
बोद्धराय—३.१८५ अ।
बोध पाहुड—३ १८५ अ, इतिहास १.३४० ब।
बोधायन—३.१८५ अ, वेदांत ३.५९५ ब।
बोधि—३ १८५ अ।
बोधितबुद्ध—३ १८५ अ, संख्या ४.९४ अ, अल्पबहुत्व १ १५४ अ।
बोधिदुर्लभ—अनुप्रेक्षा १.७५ ब, १.८० अ।
बोधिसमाधियंत्र—यंत्र ३ ३५६।
बौद्धदर्शन—३ १८५ अ, आयतन १ २५१ अ, इतिहास (मगध देश) १ ३१० ब, एकांत १ ४६५ अ-ब, जीव २ ३३६ ब, द्रव्य २.४५८ अ, भूगोल ३ ४३४ अ।
बौद्धायन—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ।
ब्रह्म—३ १८८ अ, ओम् १.४६९ ब, जीव २ ३३६ अ। तीर्थंकर पुष्पदंतनाथ का यक्ष २ ३७९।
ब्रह्म (देव)—अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १.२६७, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५८ ब। निर्देश ४.५१० ब, दक्षिणेंद्र ४ ५११ अ, चिह्न आदि ४ ५११ ब, परिवार ४ ५१२-५१३, अवस्थान ४ ५२० ब, विमान, भवन व नगर ४ ५२१।
ब्रह्म (देव)—प्ररूपणा—बंध ३ १०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४ १९२, संख्या ४ ९८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।
ब्रह्म (स्वर्ग)—निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४.५१८ इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४.५२०, दक्षिण विभाग ४ ५२१ अ, अवस्थान ४ ५१४ ब, ४ ५२० ब, अंकन ४ ५१५। बौद्धाभिमत ३ ४३५। ब्रह्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४.५१५। देव-आयु १ २६७।
ब्रह्म (स्वर्ग)—चक्रवर्ती ४ १० ब, नारायण ४ १८ ब। बलदेव ४.१६ ब, ४ १७ अ, ४ १८ ब।
ब्रह्मचर्य—३ १८८ अ, अहिंसा १ २१७ अ, चारित्रशुद्धि-व्रत २ २९४ ब।
ब्रह्मचर्य आश्रम—आश्रम १.२८१ अ, वर्णव्यवस्था ३ ५२४ ब।
ब्रह्मचर्य आश्रमी—ब्रह्मचर्य ३.१९४ अ।
ब्रह्मचर्य तप-ऋद्धि—३.१९४ अ।
ब्रह्मचर्य प्रतिमा—ब्रह्मचर्य ३ १९० अ।
ब्रह्मचारी—३ १९४ अ, आश्रम १.२८१ अ।
ब्रह्मदत्त—३ १९४ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ, तीर्थंकर २.३९१।
ब्रह्मदेव—३.१९४ ब, इतिहास १.३३१ ब, १.३४३ ब।

ब्रह्मनदि—नन्दिसघ भट्टारक १ ३२३ ब।
ब्रह्मभूति—नारायण (पिता) ४ १८ अ।
ब्रह्ममीमांसा—मीमासादर्शन ३ ३११ अ।
ब्रह्मरथ—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ ब, चक्रवर्ती ४.११ ब।
ब्रह्मराक्षस—३ १९४ ब, राक्षस ३ ३९३ ब।
ब्रह्मरुचि—रुद्र ४ २२ अ।
ब्रह्मर्षि—ऋषि १.४५७ ब।
ब्रह्मलोक—लौकान्तिक देव ३ ४९४ अ।
ब्रह्मवाद—अद्वैतवाद १ ४६५ ब।
ब्रह्मविद्या—३ १९४ ब, इतिहास १.३४४ अ।
ब्रह्मविलास—इतिहास १ ३४७ ब।
ब्रह्म संप्रदाय—वैष्णव दर्शन ३.६०९ अ।
ब्रह्मसाधारण—इतिहास १ ३३३ अ।
ब्रह्मसिद्धि—वेदान्त ३ ५९५ ब।
ब्रह्मसूत्र—वेदान्त ३ ५९५ ब।
ब्रह्मसेन—३.१९४ ब, काष्ठा संघ १ ३२७ अ, लाडबागड सघ १ ३२७ ब, सेनसघ १ ३२६ अ।
ब्रह्महृद—३ १९४ ब।
ब्रह्महृदय—स्वर्गपटल निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४ ५१५, देव-आयु १ २६७।
ब्रह्मा—चक्रवर्ती ४ ११ ब, नक्षत्र २ ५०४ ब, निन्दा २ ५८८ ब।
ब्रह्माद्वैत—अद्वैतवाद १ ४७ ब। नय २ ४५८ अ, वेदान्त ३ ५९६ अ।
ब्रह्मेश्वर—३ १९४ ब, शीतलनाथ का यक्ष २ ३७९।
ब्रह्मोत्तर (देव)—३ १९४ ब। अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६७, आयुबन्ध के योग्य परिणाम १ २५८ ब। इन्द्र—निर्देश ४ ५१० ब, उत्तरेन्द्र ४ ५११ अ, चिह्न आदि ४ ५११ ब, परिवार ४ ५१२-५१३, अवस्थान ४ ५२० ब, विमान व नगर ४.५२०-५२१।
ब्रह्मोत्तर (देव)—प्ररूपणा—बध ३ १०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.४८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४ १९२, सख्या ४.९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।
ब्रह्मोत्तर (पटल)—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४ ५१५, देव-आयु १ २६७।
ब्रह्मोत्तर (स्वर्ग)—निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४.५१८, इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४ ५१८-५२०, उत्तर विभाग ४ ५२१ अ, अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४.५१५ ब।
ब्रात—कुरुवश १ ३३५ ब।
ब्राह्मण—३.१९५ अ, यज्ञोपवीत ३ ३७० अ, वर्ण-व्यवस्था ३ ५२३ ब, ३ ५२४ अ।
ब्राह्मी—३ १९६ ब, तीर्थंकर ऋषभदेव २ ३८८, तीर्थंकर पार्श्वनाथ २ ३८०।

भ

भग—३ १९६ ब, अक्षर १ ३३ अ, आयुकर्म के त्रिसयोगी भग १ २६२, गणित २ २२८ अ, पर्याय ३.४५ ब, प्रत्यय ३ १२९ ब, प्रत्ययस्थान ३ १२९ ब, बन्ध-उदय सत्व के त्रिसयोगी भग १ ४०१, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
भंगविचय—अनुयोगद्वार १ १०३ अ।
भंगविधि—भग ३ १९६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।
भंडारदशमी व्रत—३ १९७ अ।
भक्त—३ १९७ अ।
भक्तकथा—कथा २ ३ ब।
भक्तपान संयोजना—अधिकरण १.४९ अ।
भक्तप्रत्याख्यान—सल्लेखना ४ ३८५-३८७ ब।
भक्तामर कथा—३ १९७ अ, इतिहास १ ३४७ ब, १ ३४८ अ।
भक्तामर स्तोत्र—३ १९७ अ, इतिहास १.३४१ ब। स्तोत्र ४ ४४९ ब।
भक्ति—३ १९७ अ, पूजा ३ ७५ अ, ३ ७६ अ ब, (प्रतिमा) ३ ७७ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ।
भक्ति (नवधा)—आहार १ २८६ ब।
भक्षण—पूजा (पूजा किये बिना भोजन करना) ३ ७५ ब।
भक्ष्य नैवेद्य—पूजा ३.८० अ।
भक्ष्याभक्ष्य—३.२०० ब।
भग—परमात्मा ३.२० ब, नक्षत्र २.५०४ ब।
भगदत्त—गणधर २ २१३ अ।
भगदेव—गणधर २ २१३ अ।
भगफल्गु—गणधर २.२१३ अ।
भगलि—तीर्थंकर २ ३७७।

भगवती आराधना—३ २०४ ब, अमितगति १ १३२ अ, इतिहास १ ३४० अ।
भगवती आराधना टीका—आशाधर १.२८१ अ।
भगवतीदास—३ २०५ अ, इतिहास १.३३४ अ, १.३४७ ब।
भगवान्—केवली २ १५८ ब, परमात्मा ३ २० ब।
भगीरथ—३ २०५ अ।
भग्नघट श्रोता—उपदेश १.४२५ ब।
भट्ट अकलंक—१ ३१ अ, ३.२०५ अ, इतिहास १.३३४ अ, १ ३४१ ब, १ ३४७ ब।
भट्ट चार्वाक—जीव २.३३६ ब।
भट्ट प्रभाकर—मीमासक एकाती १.४६५ ब।
भट्ट भास्कर—३ २०५ अ।
भट्ट वोसरि—इतिहास १.३३० ब, १.३४२ ब।
भट्टाकलंक—१.३३४ अ। देखिए भट्टअकलक।
भट्टारक—३.२०५ अ।
भवत—३.२०५ अ, अनगार १.६२ अ।
भवेय—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
भद्र—३ २०५ अ, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ, नन्दीश्वर सागर का रक्षक देव ३ ६१४, बलदेव ४.१६ अ, ४.१७ अ, ४ १८, मनुष्यलोक ३ २७५ ब। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६९। हरिवश १.३४० अ।
भद्रक—३ २०५ अ, यक्ष ३.३६९ अ।
भद्रकाली—३ २०५ अ, विद्या ३ ५४४ अ।
भद्रपुर—३ २०५ अ, तीर्थंकर शीतलनाथ २ ३७९, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।
भद्रबल—गणधर २ २१३ अ।
भद्रबाहु—३ २०५ अ। प्रथम—मूलसंघ १.३१६, १ परि०/२ १,२,७, नन्दिसघ १. परि०/४.२, काल विचार १. परि०/२-३। इतिहास १.३२८ अ, श्वेताम्बर ४ ७७ अ, ४.७८ अ। द्वितीय—मूलसघ १.३१६, १ परि०/२ १,२,३,७, नन्दिसंघ १ ३२३ अ। इतिहास १ ३२८ अ, श्वेताम्बर ४.७७ अ, ४.७८ अ।
भद्रबाहु गणी—३.२०५ ब।
भद्रबाहुचरित—३ २०५ ब, इतिहास १ ३४६ ब।
भद्रमित्र—३.२०५ ब।
भद्रमुख—चक्रवर्ती ४.१३ अ, ४.१५ अ।
भद्रलपुर—३.२०५ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।
भद्रवती—चक्रवर्ती ४.११ ब
भद्रशालवन—३ २०६ अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, सुमेरु का वनखण्ड—निर्देश ३ ४५० अ, विस्तार ३ ४८८, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४४९।
भद्रसंघ—दि० सघ १ ३१७ ब।
भद्रसेन—काष्ठा सघ १ ३२७ अ।
भद्रांभोजा—बलदेव ४.१७ ब।
भद्रा—३ २०६ अ चक्रवर्ती ४.११ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी ३ ४७६, अक ३ ४६८-४६९, वाचना ३ ५३१ ब, विद्याधरवश १ ३३९ अ, व्यन्तरेन्द्र गणिका ३ ६११ ब।
भद्राश्व—३ २०६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।
भद्रासन-पाण्डुकशिला पर स्थित—निर्देश ३ ४५२ अ, विस्तार ३ ४८४, चित्र ३ ४५२ अ।
भद्रिल—तीर्थंकर शीतलनाथ २ ३७९।
भय—३ २०६ अ, अतिचार १ ४४ अ, कषाय २ ३५ ब, २.३९ अ, निःशकित २ ५८६ ब, विनय ३.५५३ ब, सज्ञा ४ १२० ब, सत्य ४ २७२ अ, हिंसा ४ ५ ३३ ब।
भय दोष—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ ब।
भयद्विक्—१ ३७४ ब।
भय प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति सत्त्वस्थानो का अल्पबहुत्व १.१६५ ब, अनुभाग १ ९४, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३ १०९, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३८९ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२९५, त्रिसयोगी भग १ ४०१ ब। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८ ब।
भय विनय—विनय ३ ५४८ ब।
भय वेदनीय मोहनीय ३ ३४४ ब।
भय संज्ञा—सज्ञा ४.१२० ब, ४ १२१ अ।
भयानक वन—वसतिका ३.५२८ अ।
भरणी नक्षत्र २ ५०४ ब।
भरत—३ २०६ ब, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ, (विशेष दे भरत चक्री) भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ, यदुवंश १.३३७, रघुवश १ ३३८ अ।
भरतक्षेत्र—३.२०७ अ। निर्देश ३ ४४६ अ, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३.४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४४७। अवगाहना १.१८०, आयु (तिर्यंच) १.२६३, आयु (मनुष्य) १ २६४, कर्मभूमि ३.२३५ ब, कालविभाग २.९२ अ, २.९३। आधुनिक भूगोल ३.४३६ अ, ३.४३७ अ,

वैदिक भूगोल ३ ४३१ ब।

भरतकूट—३ २०७ अ। विजयार्ध—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३.४४४ के सामने। हिमवान—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४ के सामने।

भरतचन्द्र—नंदि सघ १ ३२४ अ।

भरत चक्री—अकम्पन १ ३० ब, अच्युत स्वर्ग १ ४१ अ, इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ, ऋषभ के पुत्र २.३९१, कुलकर ४ २३, चक्रवर्ती ४ १० अ, चारित्र २ २९१ अ, तीर्थंकर ऋषभ २ ३९१, दीक्षा २ २९१ अ, लिंग धारण ३.४१९ अ, विभूति ४.१५ अ, सूर्यवंश १ ३३९ ब, स्वप्न ४ ५०५ अ।

भरतचंद्र—नदिसघ १ ३२४ अ।

भरतिमय्य—गण्डविमुक्त देव २ २१० ब।

भरतेशवैभव—इतिहास १ ३४७ अ।

भरतेश्वराभ्युदय—३.२०७ अ, आशाधर १ २८१, इतिहास १ ३४४ ब।

भरिचूड—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

भरुकच्छ—३.२०७ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

भर्तृप्रपच—३.२०७ अ, वेदान्त ३ ५९५ ब।

भर्तृप्रपंच वेदांत—वेदान्त ३ ५९६ अ।

भर्तृहरि—३.२०७ अ।

भल्लक—नरकलोक मे जन्मभूमि का आकार २.५७७ अ।

भव—३ २०७ ब, कारण २ ६४ अ, प्रत्यय १.१८७ ब, ३ ८८ ब, ३ ९० अ, भावि-शलाकापुरुष ४.२६ अ।

भवनजय—विद्याधर नगरी ३.५४६ अ।

भवन—३ २०७ ब, काञ्चनगिरि पर ३ ४५३ अ, चैत्य-चैत्यालय मे २ ३०३ अ। जम्बू व शाल्मली वृक्षस्थलो मे ३.४५८ ब, अकन ३.४५९। दिग्गजेन्द्र पर्वतो पर ३ ४५३ अ, मध्यलोक मे ३.६१५ अ, यमक पर्वतो पर ३ ४५३ अ। भवनवासी देवो के—निर्देश ३ २०७ अ, ३.६१५ अ, विस्तार ३ २१० ब, अवस्थान ३ २१० ब, स्वरूप ३ २१० ब, सख्या ३.२१० ब, लोकपाल देवो के ३ ४५० ब। व्यन्तर देवो के—निर्देश ३ ४७१, ३ ६१२ अ, ३ ६१३, विस्तार ३.६१५ अ, अवस्थान ३ ६१२ अ, ३.६१३, स्वरूप ३ ६१२ ब, सख्या ३.६१२ ब। स्वर्गवासी देवो के—निर्देश ४ ५२१ अ, विस्तार ४.५२१ ब, अवस्थान ४ ५२० ब, स्वरूप ४.२५१ अ।

भवनतापि—देव (आकाशोपपन्न) २.४४५ ब।

भवनत्रिक देव—प्ररूपणा—बन्ध ३.१०२ बन्धस्थान ३.११३, आयुबन्ध योग्य परिणाम १.२५७ अ, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ १८७, संख्या ४.९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४.४८२, काल २ १०४, अन्तर १ १०, भाव ३.२२०, अल्पबहुत्व १.१४५।

भवनपुर—भवनवासी देवो के ३.२०७ ब, ३.२१० अ। व्यन्तर देवों के निर्देश ३.६१२ अ, स्वरूप ३.६१२, विस्तार ३ ६१५ अ, सख्या ३ ६१२ ब। सुमेरु पर्वत पर ३ ४५० अ।

भवनभूमि—समवसरण ४ ३३१ अ।

भवनवासी देव—निर्देश २.४४५ ब, ३ २०७ ब, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६५, आयु बन्ध के योग्य परिणाम, १ २५७ ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब, २ ३०३ ब, अवस्थान ३.२१० अ, ३ ६१३, लेश्या ३ ४२५ ब। इन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, परिवार ३.२०९ अ, शक्ति चिह्न आदि ३ २०८ ब, भवन तथा भवनपुर ३.१२० अ, देवियाँ ३ २०९ अ।

भवनवासी देव (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३ ११३ उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१८७, सख्या ४.९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १ १०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

भवनश्रुत—बलदेव ४ १७ ब।

भवनिमित्तक—उदय (कर्म) १ ३६७ अ, कारण २.६४ अ।

भवपरिवर्तन—संसार ४.१४८ अ।

भवप्रत्ययिक—अवधिज्ञान १.१८७ ब, १.१९२-१९९, प्रकृतिबन्ध ३ ८८ ब, ३ ९० अ।

भवविचय—धर्मध्यान २ ४८० अ।

भवविपाकी प्रकृति—प्रकृतिबन्ध ३ ८९ ब।

भववृक्ष—साधु ४.४०७ अ।

भवसंसार—संसार ४.१४७ अ।

भवसिद्ध—भव्य ३ २११ ब।

भवस्थिति—३ २११ अ, स्थिति ४ ४५७ ब।

भवाद्धा—३ २११ अ।

भवाननुगामी—अवधिज्ञान १ १८८ ब।

भवानुगामी—अवधिज्ञान १.१८८ अ।

भवाभिनंदी—निन्दा (साधु) २.५८९ अ।

भवायु—आयु १.२५३ अ।

भवितव्य—नियति २ ६१७ ब।
भविष्यकाल—अवधिज्ञान १ १९७ ब, कालप्रमाण २ ८८ अ।
भविष्यग्राही ज्ञान—अवधिज्ञान १ १९७ ब, केवलज्ञान २.१४८ ब, २ १४९ ब, २ १५१ ब, मन-पर्यय ज्ञान ३ २६३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० ब।
भविष्यत्—श्रुतज्ञान ४ ६० ब।
भविष्यत् ज्ञायक शरीर—निक्षेप २ ६०४ अ।
भविष्यदत्तकथा—३ २११ अ, इतिहास १ ३४५ ब।
भविष्यदत्तचारित्र—३ २११ अ, इतिहास १ ३४७ अ।
भविष्यवाणी—३ २११ अ।
भविष्याभाव सबध—सम्बन्ध ४ १२६ अ।
भविसयत्तकहा—इतिहास १ ३४२ अ, १ ३३० अ।
भविसयत्तचरिउ—इतिहास १.३४४ अ।
भव्य—३ २११ अ, अल्पबहुत्व १ १४२ ब, जीव २ ३३३ ब, श्रुतज्ञान ४ ६० अ, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब, सापेक्षधर्म १ १०९अ, ४ ३२३ ब।
भव्यकुमुदचन्द्रिका—३ २१४ ब, आधार १.२८१ अ, इतिहास १ ३४४ ब।
भव्यकूट—समवसरण ४.३३० अ।
भव्यज्ञायक शरीर—अन्तर १.३ ब।
भव्यजनकठाभरण—३ २१४ ब, इतिहास १.३४५ अ।
भव्यत्व—प्ररूपणा—बंध ३.१०७, बंधस्थान ३.१९३, उदय १ ३८४, उदयस्थान १ ३९३, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४ ३०२, ४ ३०६, त्रिसयोगी भंग १ ४०८। सत् ४ २५४, सख्या ४.१०८, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४ ४९२, काल २ ११७, अन्तर १.२०, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १४२, १.१५२।
भव्यत्व भाव—३ २१२ अ, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब।
भव्यत्वाभिव्यक्ति—पद्धति ३.८ ब।
भव्यनोआगम द्रव्य—अन्तर १ ३ ब।
भव्यसिद्ध—भव्य ३.२११ ब।
भव्यसेन—३.२१४ ब।
भव्यस्पर्श—स्पर्श ४ ४७६ अ।
भाग—३.२१४ ब, पर्याय ३ ४५ ब।
भागचंद—३.२१४ ब, इतिहास १ ३३४ ब, १.३४८ अ।
भागवत—वैष्णवधर्म ३ ६०९ अ।
भागहार—३.२१४ ब, अनुयोगद्वार १ १०२ अ, गणित २ २२२ ब, २.२२४ अ।
भागाभाग—३.२१४ ब, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, १.१०३ ब, जीवविषयक प्ररूपणा ४.११०-११६। बन्ध-विषयक ३ २१५, ४.११७, ४ ५२७, सत्त्वविषयक ३ २१५, ४.११७।
भागाहार—३.२१६ अ, अनुयोगद्वार १.१०२ ब, गणित २ २२२ ब, २ २२४ अ, सक्रमण ४.८४ अ।
भागाहार संक्रमण—सक्रमण ४ ८४ अ, अल्पबहुत्व १.१७४ ब।
भाग्य—३.२१६ अ।
भाग्यपुर—३ २१६ अ।
भाजक—३ २१६ अ, गणित २.२२३ अ।
भाजतांग जातीय कल्पवृक्ष—वृक्ष ३ ५७८ अ।
भाजित—३.२१६ अ, गणित २.२२३ अ।
भाज्य—३.२१६ अ, गणित २.२२३ अ।
भाट्ट दीपिका—मीमासा दर्शन ३ ३११ अ।
भाट्टमत—मीमांसा दर्शन ३ ३११ अ।
भाद्रवन-सिंह-निष्क्रीडित व्रत—३.२१६ अ।
भानु—३ २१६ अ, तीर्थंकर धर्मनाथ २ ३८०, यदुवंश १.३३७, राक्षसवश १ ३३८ अ, हरिवश १.३४० अ।
भानुकर्ण—राक्षसवश १ ३३८ ब।
भानुकीर्ति—३ २१६ अ, नन्दिसघ देशीयगण १.३२५, इतिहास १.३३२ अ।
भानुगति—राक्षसवश १ ३३८ अ।
भानुगुप्त—३ २१६ अ, गुप्तवश १ ३११ अ-ब, १ ३१५।
भानुनंदि—३ २१६ अ, नन्दिसघ १ ३२३ अ, इतिहास १ ३२९ अ।
भानुप्रभ—राक्षसवश १.३३८ अ।
भानुमती—३.२१६ अ।
भानुमित्र—३.२१६ अ, शकवंश १.३१४।
भानुरक्ष—राक्षसवश १.३३८ अ।
भानुवर्मा—राक्षसवंश १.३३८ अ।
भामंडल—३.२१६ अ, अर्हन्त प्रातिहार्य १ १३७ ब।
भामती टीका—वेदान्त ३ ५९५ ब।
भारद्वाज—३.२१६ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
भारद्वाज वृत्ति—वैशेषिक दर्शन ३.६०७ ब।
भारामल्ल कवि—३.२१६ ब, इतिहास १.३४८ अ।
भार्गव—३.२१६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।
भार्गवाचार्य—३ २१६ ब, सांख्यदर्शन ४ ३९८ ब।
भाव—३.२१६ ब, अध्यवसान १.५२ अ, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, उत्पाद १.३६१ अ, चित्तविकार (विभ्रम) ३ ५६२ ब, भाव ३.२२४ अ, महा सामान्य ४.४१२ अ।
भाव (विशेष)—अवधिज्ञान का विषय १.१९७ ब, आर्त-

ध्यान मे १ २७४ अ, धर्मध्यान मे २ ४८१ ब, पौद्गलिकत्व ३ ३१८ ब, रौद्रध्यान मे ३.४०७ ब, ३ ४०८ ब।

भाव (स्वचतुष्टय)—२.२७८ अ, परभाव २ २७८ अ, सप्तभगी ४ ३१९ ब, ४ ३२० अ। स्वभाव २ २७७ ब।

भाव अतर—अतर १.३ ब।

भाव अनंत—अनंत १ ५५ ब।

भाव अनुयोगद्वार—अनुयोगद्वार १ १०३ ब।

भाव अप्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३ ११७ अ।

भाव अप्रत्याख्यान—अप्रत्याख्यान १ १२६ अ।

भाव अशुद्ध आहार—उद्दिष्ट १.४१३ ब।

भाव आस्रव—आस्रव १ २८२ ब।

भाव इंद्रिय—इंद्रिय १ ३०१ ब, १ ३०२ अ, १.३०४-३०५।

भाव उदय—उदय १.३६६ अ।

भाव उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब।

भाव उपशम—उपशम १ ४३७ अ।

भावकर्म—उदय १ ३६६ अ, कर्म २ २६ अ-२७ ब, २.२८ ब; जीव पुद्गल २ २८ ब, नो कर्म २.२७ अ।

भावकषाय—कषाय २ ३५ ब।

भावकाय—गुप्ति २ २५० अ।

भावकीर्ति—काष्ठासघ १ ३२७ अ।

भावक्रीत—आहार दोष १ २९० ब, उद्दिष्ट दोष १.४१३ अ, वसतिका दोष ३ ५२८ ब।

भावक्रोध—विवेक ३ ५६७ अ।

भावग्रंथ—परिग्रह ३ २८ अ।

भावग्रह—ग्रह २ २७४ अ।

भावचद्र—नंदिसघ १ ३२३ ब।

भावतीर्थ—तीर्थ २ ३९३ ब।

भाव त्रिभगी—इतिहास १.३४५ अ।

भावदोष—आहार १.२९० ब।

भावध्येय—२.५०० अ, २.५०१ ब, २ ५०२ अ।

भावनंदि—नदिसघ १ ३२३ ब।

भाव नपुंसक—नपुसक २.५०५ ब।

भाव नमस्कार—नमस्कार २ ५०६ ब, २.५०७ अ, विनय ३.५५२ अ।

भाव-नय—नय २ ५१४ ब, २.५२१ ब, २.५२२ ब, २.५२३ अ।

भावन-लोक—निर्देश ३.२०९ ब, विस्तार ३ ६१२ अ, अवस्थान ३ २१० अ, चित्र ३.२१० अ, पंकखर भाग ३.२०९ ब, भवनों की सख्या ३ २१० ब। अप् तथा तेज-कायिक २ ४५ ब।

भावना—३ २२४ अ, अभ्यास १ १३१ ब, उपयोग १.४२९ ब, धर्मध्यान २ ४८२ अ, २ ४८५ ब, ध्येय २ ५०२ अ, शुक्लध्यान ४.३३ अ, शुभोपयोग १ ४३३ अ, श्रुतज्ञान ४.५९ ब, ४.६२ ब।

भावना (धर्म-तप-व्रत आदि की)—अस्तेय व्रत की १ २१४ अ, अहिसा व्रत की १ २१६ अ, आकिञ्चन्य धर्म की १.२२४ ब, आर्जव धर्म की १ २७२ अ, क्षमा धर्म की २ १७७ ब, चारित्र की २ २८२ ब, तप धर्म की २ ३६० अ, परिग्रहत्याग व्रत का ३ २६ ब, वैयावृत्य की ३ ६०६ ब, वैराग्य की ३ ६०७ अ, व्रत की ३.६२६ ब, सत्य धर्म की ४ २७२ अ, सम्यग्ज्ञान की २.२६३ ब, सम्यग्दर्शन की ४ ३५१ अ, सल्लेखना की ४ ३९० ब, ४.३९२ अ।

भावना-पच्चीसी व्रत—३ २२५ ब।

भावना-पद्धति—३ २२५ ब, इतिहास १ ३४५ ब।

भावना-लीनता—सुख ४.४३२ ब।

भावना-विधि व्रत—३ २२५ ब।

भाव-निक्षेप—२ ५९३ ब, २ ६०५ अ-ब।

भाव-निबधन—निबधन २ ६१० ब।

भावनिर्जरा—निर्जरा २.६२२ अ-ब, सम्यग्यदृष्टि ४.३७७ अ।

भावनिर्विचिकित्सा—निर्विचिकित्सा २ ६२७ अ।

भावपरमाणु—ध्येय २ ५०१ ब, परमाणु ३ १४ ब, शुक्लध्यान ४.३३ ब।

भावपरिवर्तन—ससार ४ १४८ ब।

भावपाहुड—३ २२६ अ, इतिहास १ ३४० ब।

भावपुण्य—३ ६० अ।

भावपुरुष—पुरुष ३ ६९ ब।

भावपूजा—पूजा ३ ७५ अ।

भावप्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३ ११६ ब।

भावप्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३ १३२ अ।

भावप्रमाण—प्रमाण ३ १४४ ब, ३ १४५ अ।

भावप्ररूपणा—अनुयोगद्वार १ १०३ अ, केवली २ १५८ अ, क्षीणकषाय २ १८६ ब, जीव सामान्य की ओघ आदेश-प्ररूपणा ३ २१९, मिथ्यादृष्टि ३ ३०४ अ, मिश्र गुणस्थान ३.३०९ अ।

भावप्राण—प्राण ३.१५२ ब।

भावप्राधान्य—आगमार्थ १.२३१ अ, पाप ३.५३ ब, पुण्य ३.६० ब, पूजा ३.७७ ब, बन्ध ३.१७४ ब, मार्गणा ३.२९७ अ। लिंग (वेद) ३ ५८४ अ-ब, लिंग (साधु) ३.४१७ ब, विनय (साधु) ३ ५५३ ब।

भाव-प्रासुक-आहार—उद्दिष्ट १.४१३ ब।
भावबंध—उपशम १.४४२ अ, ३ १७० ब, ३ १७४ ब।
भावभावक भाव—कर्ता २ २२ ब।
भावमंगल – ३ २४१ अ।
भावमन—अनुभव १ ८१ ब, गुप्ति २ २४९ ब, प्राण ३ १५३ ब, मन ३ २७० अ, मूर्तत्व तथा पौद्गलिकत्व ३ ३१८ अ।
भावमल—मल ३ २८८ अ।
भाव-मान-कषाय विवेक—विवेक ३ ५६७ अ।
भावमार्गणा—मार्गणा ३.२९७ अ।
भावमोक्ष—मोक्ष ३.३२२ ब ३ ३२४ ब।
भावयुति—युति ३.३७३ ब।
भावयोग—योग ३.३७५ ब।
भावलिंग (वेद)—वेद ३ ५८४ अ-ब, ३ ५८६ अ।
भावलिंग (साधु)—लिंग ३.४१७ ब, ३.४१८ ब, विनय ३.५५३ ब।
भावलेश्या लेश्या ३.४२२ ब, ३.४२६ अ।
भावलोभ विवेक- विवेक ३.५६७ अ।
भाववचन – मूर्त ३ ३१७ अ।
भाववती शक्ति—भाव ३.२२४ अ।
भाववान्—द्रव्य २.४५६ अ।
भावविवेक – विवेक ३.५६६ ब।
भावविशुद्धि—प्रत्याख्यान ३.१३२ अ।
भाववेद—वेद ३.५८४ अ, ३.५८६ अ।
भावशक्ति—भाव ३.२२४ अ।
भावशल्य—शल्य ४.२६ ब।
भावशुद्धि—आलोचना १.२७७ अ, आहार १ २८९ अ, ज्ञानातिचार १.२२८ अ, धर्म २.४६९ ब, शुद्धि ४.३९ अ।
भावश्रुत—आगम १.२२९ ब, १.२३८ ब, आत्मा १ २४४ अ, श्रुतकेवली ४.५६ अ, श्रुतज्ञान ४.५९ ब, ४ ६१ अ। सूत्र—(आगम) १.२३८ ब, स्वाध्याय ४.५२५ अ।
भावश्रुत ग्रंथ कृति—ग्रंथ २ २७३ ब।
भावसंग्रह—३ २२६ अ, इतिहास १ ३४२ ब, १ ३४५ अ।
भाव-संयोगपद—पद ३ ५ अ।
भावसंवर—संवर ४.१४१ ब।
भावसत्य—सत्य ४ २७१ ब।
भाव-सल्लेखना—सल्लेखना ४ ३८२ ब।
भाव-सामायिक—सामायिक ४.४१६ अ।
भाव-सिंह—३.२२६ अ।
भावसूत्र—यज्ञोपवीत ३.३६९ ब।
भावसेन—३ २२६ अ, लाडबागड़ संघ १.३२७ ब, इतिहास १.३३० ब, १ ३३२ अ, १ ३४४ ब।
भावस्तवन—भक्ति ३ १९९ ब, ३ २०० ब।
भाव स्त्री—स्त्री ४ ४५० अ।
भावस्पर्श—स्पर्श ४ ४७६ अ।
भावस्वाध्याय—स्वाध्याय ४.५२३ अ।
भावागार—अगारी १ ३४ अ।
भावानंत – अनंत १ ५५ ब।
भावानुराग—राग ३.३९५ अ।
भावाभाव—उत्पादादि १ ३६१ अ।
भावाभाव शक्ति—भाव ३ २२४ अ।
भावार्थ—३ २२६ अ, आगम १.२३१ ब।
भावार्थ-दीपिका—३ २२६ अ।
भावावसन्न—अवसन्न १ २०१ ब।
भावास्रव—आस्रव १.२८२ ब।
भावि-आगम—उपशम १.४३७ अ।
भाविज्ञायिक शरीर—उपशम १ ४३७ अ।
भाविता—तीर्थंकर कुन्थुनाथ २.३८८।
भावि-नोआगम—अनंत १ ५५ ब, निक्षेप २ ६०० अ।
भावि-नैगमनय—नय २.५२२ अ, २ ५३० अ, २ ५३३ अ।
भावि-नोआगम द्रव्य—काल २ ८१ ब।
भावि-भूत उपचार—उपचार १ ४२० ब।
भावेंद्रिय—इन्द्रिय १.३०१ ब, १.३०२ अ, १.३०४-३०५।
भावोदय—उदय १.३६६ अ।
भावोपशम—उपशम १.४३७ अ।
भाव्य-भावक भाव—कर्ता-कर्म २ २२ ब, २.२४ अ, संबंध ४.१२६ अ।
भाषा—३.२२६ अ-ब, अनुयोग १ १०१ ब, योग (मनोयोगी) ३.३८० अ।
भाषा-द्रव्य वर्गणा—वर्गणा ३.५१३ अ।
भाषापरिच्छेद - वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ।
भाषा-पर्याप्ति—पर्याप्ति ३.४१ ब।
भाषा-पर्याप्ति काल—काल २.८१ अ, नामकर्म उदय-स्थान १.३९२-३९७।
भाषावर्गणा—वर्गणा ३.५१३ अ ३.५१५ ब, ३ ५१६ ब।
भाषासमिति—वाग्गुप्ति २.२५१ अ, सत्यधर्म ४.२७३ ब, समिति ४.३४० अ।
भाष्य—योगदर्शन ३.३८४ अ।
भाष्य-सूक्ति—वैशेषिक दर्शन ३.६०७ ब।

भासुर—३.२२७ ब, ग्रह २.२७४ अ।
भास्कर—मीमासादर्शन ३.३११ अ।
भास्कर (कवि)—३ २२७ ब, इतिहास १.३३३ अ।
भास्करनदि—३ २२७ ब, इतिहास १ ३३२ ब, १.३४५ अ।
भास्कर वेदांत—३ २२७ ब, वेदान्त ३ ५९७ अ।
भास्कराभ—राक्षसवश १ ३३८ अ।
भिक्षा—३ २२७ ब।
भिक्षाकाल—भिक्षा ३ २२८ ब।
भिक्षाचर्या—भिक्षा ३ २२८ ब।
भिक्षावृत्ति—आहार १.२८६ अ, भिक्षा २ २२८ ब, श्रावक (कायक्लेश) २ ४८ अ, सप्त ग्रह (आहार) १ २८७ अ।
भिक्षाशुद्धि—अस्तेयव्रत भावना १ २१४ अ, भिक्षा ३ २२८ ब, ३.२२९ अ।
भिक्षु—श्वेताम्बर ४ ८० ब।
भिक्षुक—आश्रम १.२८१ अ।
भिक्षु-प्रतिमा—सल्लेखना ४.३९३ अ।
भित्तिकर्म—कर्म २ २६ अ, निक्षेप २ ५९८ ब।
भिन्न—३.२३३ ब।
भिन्न कर्ता-कर्म—कर्ता २.२४ अ।
भिन्न दशपूर्वी—श्रुतकेवली ४.५५ अ।
भिन्न परिकर्माष्टक—गणित २ २२३ ब।
भिन्नपूर्वित्व ऋद्धि—ऋद्धि १.४४८।
भिन्न मुहूर्त—३ २३३ ब, अन्तर्मुहूर्त १ ३० अ, काल-प्रमाण २ २१६ ब।
भिल्लक संघ—इतिहास १ ३२२ अ, एकात जैनाभासी १ ४६५ ब।
भी—एकात १ ४६१ अ।
भीति—भय ३.२०६ अ।
भीम—३ २३३ ब, कुरुवंश १ ३३६ अ, नारद ४.२१ अ, यदुवश १ ३३७, राक्षस जातीय व्यतर ३ ३९३ ब, राक्षसवंश १.३३८ अ, हरिवंश १.३४० अ।
भीम (व्यंतरेंद्र)—निर्देश ३.६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, सख्या ३ ६११ अ, आयु १.२६४ ब।
भीमप्रभ—राक्षसवश १.३३८ अ।
भीमरथी—३ २३३ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।
भीमसेन—३ २३३ ब, काष्ठासंघ १ ३२७ अ, पुन्नाटसघ १.३२७ अ, इतिहास १.३३३ अ।
भीमावलि—२.२३४ अ, तीर्थंकर ऋषभ २.३९१, रुद्र ४.२२ अ।
भीमवर्मा—यदुवंश १.३३७।
भीष्म—३.२३४ अ, कुरुवंश १.३३६ अ, राक्षसवश १.३३८ अ।
भुजंगदेव—३.२३४ अ, मध्यलोकवासी व्यन्तर ३.६१३ ब। लवण सागर का रक्षक—आयु १ २६४ ब।
भुजंगम—तीर्थंकर २ ३९२।
भुजंगशाली—महोरग जातीय व्यतर देव ३.२९३ अ।
भुजग—महोरग जातीय व्यतर देव ३.२९३ अ।
भुजगप्रिया—व्यंतरेंद्र गणिका ३.६११ ब।
भुजगा—व्यंतरेंद्र गणिका ३.६११ ब।
भुजगार बंध—प्रकृतिबंध ३.८९ अ।
भुजगार स्थितिबंध—स्थिति ४ ४५९ ब।
भुजबलिचरित—इतिहास १ ३४६ ब।
भुजवर द्वीप-सागर—नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तर ३.४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २.३४९ ब, अधिपति देव ३.६१४ ब।
भुक्ति-मुक्ति-विचार—इतिहास १ ३४४ ब।
भुज्यमान आयु—अपवर्तन १.२६१ अ, आयु १.२५३ ब।
भुवनकीर्ति—३.२३४ अ, नन्दिसघ भट्टारक १.३२४ अ, नन्दि सघ बला० (शुभ० आम्नाय) १.३२४ अ।
भुवनकीर्ति गीत—३.२३४ अ, इतिहास १.३४७ अ।
भूगोल—३ ४३१ अ, आधुनिक ३ ४३५ ब, चातुर्द्वीपिक ३ ४३७ अ। जैनाभिमत ३.४३१ अ, बौद्धाभिमत ३.४३४ अ, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब, सप्तद्वीपिक ३ ४३१ ब।
भूत—३ २३४ अ, परतत्रवाद ३.१२ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ, स्वप्न ४ ५० अ।
भूत (देव)—निर्देश ३.६१० ब, अवगाहना १ १८०, अवधि-ज्ञान १.१९८ ब, आयु १.२६४, अवस्थान ३.६१२-६१४, ३.४७१। इन्द्र—निर्देश ३.६११ अ, शक्ति आदि ३.६१०-६११, वर्ण तथा चैत्यवृक्ष ३.६११ अ, परिवार ३.२०९ अ।
भूत (व्यंतर देव)—प्ररूपणा—बन्ध ३ १०२, बन्धस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४ १८८, सख्या ४ ९७ क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अतर १ १०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।
भूतकांता—व्यतरेंद्र गणिका ३.६११ ब।
भूतकाल—अवधिज्ञान १.१९७ अ, काल प्रमाण २.८८ अ,

निक्षेप (ज्ञायक शरीर) २.५९५ अ।
भूतग्राही ज्ञान—अवधिज्ञान १.१९७ ब, केवलज्ञान २.१४८ ब, २.१४९ ब, २.१५१ ब, मनःपर्ययज्ञान ३ २६३ अ, श्रुतज्ञान ४.६० ब।
भूतग्राही नय—नय २.५२२ अ।
भूतज्ञायक शरीर—उपशम १.४३७ अ, निक्षेप २.५९९ अ।
भूतदेव—हरिवंश १.३४० अ।
भूत नैगमनय—नय २.५३० अ।
भूतपूर्व नय २ ५२२ अ।
भूतपूर्व न्याय—नय २.५२२ अ।
भूतपूर्व प्रज्ञापन नय—नय २ ५२२ अ।
भूत प्रज्ञापन नय—नय २ ५२२ अ।
भूत भावी उपचार—उपचार १.४२० ब।
भूतबली—३ २३४ अ, मूलसघ १.३१७, १.३२२ ब, १ परि०/२ २, कालावधि १. परि०/२.७ विशेष विचार १. परि०/२ ११। इतिहास १.३२८ ब, १ ३४० अ।
भूतमुख—चक्रवर्ती ४ १५ अ।
भूतरक्ता—व्यंतरेंद्र गणिका ३ ६११ ब।
भूतरमण—भद्रशाल वन का एक भाग—निर्देश ३.४५० अ, विस्तार ३.४८८, अकन ३.४४४ के सामने, ३ ४५७, ३.४६४ के सामने।
भूतवर—३.२३४ अ।
भूतवर सागर-द्वीप—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अंकन ३ ४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४।
भूतविषय नय—नय २ ५२२ अ।
भूतसेन—काष्ठासघ १.३२७ अ।
भूता—व्यतरेंद्र गणिका ३.६११ ब।
भूतानंद—नागेन्द्र ३.२०८ अ, परिवार ३.२०९ अ, आयु १.२६५, अवस्थान ३.२०९ ब।
भूतारण्यक वन—३.२३४ ब—निर्देश ३.४६० ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने।
भूतार्थ—नय २.५६७ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ।
भूतोत्तम—३ २३४ अ-ब।
भूधरवास—३.२३४ ब, इतिहास १ ३३४ ब, १.३४७ ब।
भूपाल—३.२३४ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ।
भूपाल चतुर्विंशतिका—३.२३४ ब।
भूपाल चतुर्विंशतिका टीका—आशाधर १.२८१ अ, इतिहास १.३४४ ब।
भूमि—३.२३४ ब, गणित २ २२९ ब, ३ २३० ब, दर्पण तुल्य (अर्हंतातिशय) १.१३७ ब।
भूमिकल्प—३ २३६ ब, इद्रनदि १.२९९ ब।
भूमिका—दे० गुणस्थान।
भूमिकुडल—३.२३६ ब।
भूमितिलक—३ २४७ ब, ३२३६ ब।
भूमितुड—विद्या ३.५४४ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, विद्याधरवंश १ ३३९ अ।
भूमिधन—गणित २.२३० ब।
भूमिनाश—प्रलय ३ १४७ ब।
भूमिपाल—तीर्थंकर वीरसेन २.३९२।
भूमिमंडल—विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।
भूमिमित्र—मगधदेश इतिहास १.३१२।
भूमिशुद्धि—३.२३६ ब।
भूमिसंस्तर—सस्तर ४.१५३ अ।
भूमिस्पर्श—आहारातराय १ २९ ब।
भूलसुधार—आगम १ २३८ अ, आगमार्थ १.२३२ ब।
भूषणगृह ज्योतिष देवो के प्रासादो मे २.३५१ ब।
भूषणशाला—भवनवासी देवो के भवनो मे ३ २१० ब।
भूषणांग जाति कल्पवृक्ष—वृक्ष ३.५७८ अ।
भृंगनिभा—३ २३६ ब, सुमेरु की पुष्करिणी—निर्देश ३ ४५३ ब, नाम निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४९०, ३.४९१, अंकन ३.४५१, चित्र ३.४५१।
भृंगा—३ २३६ ब, सुमेरु की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४९०, ३.४९१, अकन ३.४५१, चित्र ३ ४५१।
भृंगार—चैत्यचैत्यालय २.३०२ ब।
भृकुटी—३.२३६ ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब, तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ का यक्ष २.३७९।
भृत्यवंश—३ २३६ ब, इतिहास १.३११ अ, १ ३१४।
भेंडकर्म—कर्म २.२६ अ, निक्षेप २ ५९८।
भेद—३ २३६ ब, उत्पादादि १.३५९ ब, १.३६१ अ, उपचार १ ४१९ अ, द्रव्य २.४५८ अ, २.४६०, पर्याय ३ ४५ ब, वर्गणा ३.५१६ अ, सापेक्ष धर्म (अनेकान्त) १ १०९ अ, स्कन्ध ४.४४७ अ।
भेदकल्पना-निरपेक्ष-शुद्ध-द्रव्यार्थिक नय—नय २.५४५ अ।
भेदकल्पना-सापेक्ष-अशुद्ध-द्रव्यार्थिक नय—नय २.५४४ अ।
भेदज्ञान—अनुभव १.८७ अ, ज्ञान २.२६१ ब, प्रज्ञा (अनुभव) १.८७ अ, सस्कार (वासना) ४.१५० अ, सम्यग्ज्ञान (ज्ञान) २.२६२ ब, २.२६५ अ।

भेदग्रहण—आकार १ २१८ ब।
भेदपक्ष—द्रव्य २ ४५९ अ-ब, २.४६० अ।
भेदपद—अनुयोग १ १०२ ब।
भेदप्रवृत्ति—विश्लेषण पद्धति (नय) २ ५५८ अ।
भेदरत्नत्रय—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ।
भेदवाद—३.२३७ अ।
भेदविज्ञान—उपयोग १ ४३२ ब, ज्ञान (सम्यक्) २.२६७ ब।
भेदसंघात—वर्गणा ३ ५१६ अ, ३ ५१८ ब, संघात ४ १२४ अ, स्कंध ४.४४७ अ।
भेद-स्वभाव—भेद ३ २३६ ब।
भेदातीत—लब्धि ३ ४१५ अ।
भेदाभेद—अनेकांत (सापेक्ष धर्म) १ १०९ अ, उत्पादादि १.३५९ ब-३६१ अ, कर्ता-कर्म २.१७-२४, कारक २.४८-५०, कारण-कार्य २ ५५ अ, द्रव्य २ ४५८ अ, २.४५९ अ-ब, भोक्ता-भोग्य ३ २३८ अ।
भेदाभेद-विपर्यास—ज्ञान २.२६४ ब, विपर्यय ३ ५५६ अ।
भेदोपचार—उपचार १ ४१९ अ नय २ ५५६ ब।
भेससम—उपदेश १ ४२५ ब, श्रोता ४ ७४ ब।
भेसा—उपदेश (श्रोता) १ ४२५ ब, तीर्थंकर वासुपूज्य २ ३७९, श्रोता ४ ७४ ब।
भैक्ष्यशुद्धि—अस्तेय व्रत १ २१४ अ।
भैरवपद्मावती कल्प—इतिहास १ ३४३ ब।
भोक्ता—३.२३७ अ, कर्ता २ २० ब, २ २४ ब, जीव २ ३३३ ब, द्रव्य २ ४५७ अ।
भोक्ता-भोग्य भाव—कर्ता-कर्म २ २२ अ, २ २४ ब।
भोक्तृत्व—भोक्ता ३ २३७ ब।
भोक्तृत्व नय—२ ५२३ ब।
भोक्तृत्व भोग्य भाव—कर्ता-कर्म २.२२ अ, २ २४ ब।
भोगंकरा—गजदन्त के कूट की देवी ३ ४७३ अ, ३.६१४।
भोगकृति—गजदन्त के कूट की देवी ३ ४७३ अ, ३.६१४।
भोगंधरी—३.२३७ ब।
भोग—३ २३७ ब, इंद्रिय विषय १.३०६ अ, काम २.४२ ब, निदान २ ६०८ अ-ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, राग ३ ३९९ ब, सम्यग्दृष्टि ३.४०० अ।
भोग (नाम)—चक्रवर्ती ४.१५ अ।
भोग निदान—निदान २ ६०८ अ-ब।
भोगपत्नी—स्त्री ४.४५० ब, ४.४५२ अ।
भोगभूमि—निर्देश ३.२३५, अकालमरण ३.२८४ ब, अधःकर्म १.४८ ब, अवगाहना १.१८०, आयु १.२६३, १ २६४, आयु का अपकर्ष काल १.२५९ ब, आयु-बंध १ २६१ ब, १.२६२ ब, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५५-२५६, उदय-व्युच्छित्ति १ ३७७, कालविभाग २ ९३, गणना ३.४४५, गुणस्थान ३ २३५ ब, गोत्र ३ ५२२ अ, जीवसमास २ ३४३, मनुष्य ३ २७३, वेद ३ ५८७ अ। सत् ४.१८५, सम्यक्त्व ३ २३५ ब, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब।
भोगमालिनी—३ २३८ ब, गजदन्त के कूट की देवी ३ ४७३ अ, ३.६१४।
भोगरति—सुख ४.४३४ अ।
भोगवती—३.२३८ ब, गजदन्त के कूट की देवी ३ ४७३ अ, व्यंतरेंद्र गणिका ३ ६११ ब, मध्यलोक मे अवस्थान ३ ६१४ ब।
भोगवर्धन—प्रतिनारायण ४ २० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
भोगा—व्यंतरेंद्र गणिका व वल्लभिका २ ६११ ब।
भोगाकांक्षा—निदान २ ६०८ अ।
भोगांतराय कर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, १ २७ ब, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १ ९४, प्रदेश ३.१३७। बंध ३.९७, बन्धस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, तत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसयोगी भंग १ ३९९ संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६९।
भोगोपभोग ३.२३८ ब, अनुभव १.८१ अ, अनर्थदण्ड १ ६४ अ, सुख ४ ४३० अ।
भोगोपभोग परिमाण व्रत—३ २३८ ब, अनर्थदण्ड १.६४ अ, सचित्तत्याग प्रतिमा ४ १५८ अ।
भोज—३ २३९ ब, योगदर्शन ३ ३८४ अ।
भोजवंश—३ २३९ ब, इतिहास १ ३१० अ, १ ३३६ ब।
भोजकवृष्णि—३ २३९ ब, यदुवंश १ ३३६, हरिवंश १ ३४० अ।
भोजन—३ २४० अ, दान २ ४२४ ब, भिक्षा काल ३ २२८ ब।
भोजनकथा—कथा २.३ ब।
भोजनदान—दान ३.४२४ ब।
भोजनपान—अहिंसा १ २१६ अ।
भोजनसंपात—आहारान्तराय १.२९ अ।
भोजनांग जातीय कल्पवृक्ष—वृक्ष ३ ५७८ अ।
भोजवृत्ति—योगदर्शन ३.३८४ अ।
भोज्यशूद्र—वर्ण व्यवस्था ३ ५२५ ब।

भौमनिमित्तज्ञान – ऋद्धि १ ४४८, निमित्तज्ञान २ ६१२ ब।
भ्रम—३ २४० अ, कर्ता-कर्म २ २२ ब। नरक पटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३।
भ्रमक– ३ २४० अ, नरकपटल – निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३।
भ्रमका—३ २४० अ, नरक पटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३।
भ्रमघोष—कुरुवंश १ ३३६ अ।
भ्रमण—जीवप्रदेश २ ३३९ ब।
भ्रमणकाल—काल—पुरुषवेदी २ ९६ ब, स्त्रीवेदी २ ९६ ब।
भ्रमरघोष—कुरुवंश १ ३३५ ब।
भ्रमराहार—आहार १.२८८ ब, भिक्षा ३.२२९ ब।
भ्रष्ट मुनि—साधु ४ ४०९ ब, स्वच्छन्द साधु ४ ५०३ अ।
भ्रांत – ३ २४० अ, नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३।
भ्रांति – ३ २४० अ, संस्कार ४ १५० अ।
भ्रामरी वृत्ति—३ २४० अ, आहार १ २८८ ब, भिक्षा क्लेश (श्रावक) २.४८ अ, भिक्षा ३ २२९ ब।
भ्रूक्षेपण—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।

म

मंखलि – पूरन कश्यप ३.८२ अ।
मगरस– ३.२४० अ, इतिहास १ ३३३ ब, १ ३४६ ब।
मंगराज—३ २४० अ, इतिहास १ ३३३ ब।
मंगल—३ २४० अ, ग्रह २ २७४ अ। गजदन्त का कूट तथा देव – निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३.४५७।
मंगल (ज्योतिषलोक)—ज्योतिषविमान—निर्देश २.३४६ ब, आकार २.३४७, विस्तार २.३५१ ब, अंकन २ ३४७, चित्र २ ३४७, किरण तथा वाहक देव २ ३४७। देव—निर्देश २ ३४५ ब, आयु १.२६६ ब। इन्द्र निर्देश २ ३४५ ब, शक्ति २ ३४५ ब। आधुनिक मत ३ ४३६, वैदिक मत ३ ४३२ ब।
मंगल गोचर—कृतिकर्म २.१३९ अ।
मंगलगोचर प्रत्याख्यान – कृतिकर्म २ १३७ ब।
मंगल द्रव्य—समवसरण ४ ३३० ब।
मंगला—३ २४४ ब, तीर्थंकर सुमतिनाथ २ ३८०, तीर्थंकर स्वयंप्रभ २ ३९२, विद्या ३ ५४४ अ।
मंगलावती—३ २४४ ब। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३.४४४ के सामने, २ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देव ३ ४७२ ब।
मंगलावर्त—३ २४४ ब, गजदन्त का कूट – निर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४५७।
मंगिना—तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३८८।
मंजूषा—३ २४४ ब, विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।
मंडन—मीमांसक ३ ३११ अ, वेदान्त ३ ५९५ ब।
मंडन मिश्र—३.२४४ ब, वेदान्त ३ ५९५ ब।
मंडप– समवसरण ४.३३० अ।
मंडपभूमि—३.२४४ ब, समवसरण ४ ३३० अ।
मंडल—३ २४५ अ, अग्नि १.३५ ब, १ ३६ अ, आकाश १ २२० ब, मन्त्र ३ २४५ ब।
मंडलीक—३ २४५ अ, राजा ३.४०० ब, तीर्थंकर ऋषभ आदि २ ५८९।
मंडित—३.२४५ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
मंत्र—३.२४५ अ-ब, पदस्थ ध्यान ३.५ ब। हिंसा ४ ५३४ ब।
मंत्र बोध—आहार १.२९१ ब।
मंत्र महोदधि—इतिहास ५.३४३ ब।
मंत्रवादी देवचंद्र—नन्दिसंघ १.३२५।
मंत्रशाला—ज्योतिष देवो के प्रासादो मे २ ३५१ ब।
मंत्रसामर्थ्य– हिंसा ४.५३४ ब।
मंत्री– २.२४८ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब।
मंत्रोपजीवी—३.२४८ ब।
मंदकषाय—कषाय २.३६ अ, २.३९ अ।

मंदपरिणाम—उदीरणा १.४१० अ।

मदप्रबोधिनी—३ ३४८ ब, अभयचन्द्र १.१२७ अ, इतिहास १ ३४५ अ।

मंदभाव—परिणाम ३ ३२ अ।

मदर (कूट)—कुडलवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६७। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६८। सुमेरु पर्वत का—निर्देश ३ ४७३, विस्तार ३ ४८३. अकन ३.४५१।

मंदर (नाम)—कुरुवश १ ३३५ ब, तीर्थंकर विमलनाथ २३.८७, वानरवश १ ३३८ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

मदर (सुमेरु)—३ २४८ ब, सुमेरु ४ ४३७ अ, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब।

मदरपुर—प्रतिनारायण ४.२० ब।

मदराकार क्षेत्र—३ २४८ ब।

मंदरार्य—३.२४८ ब, तीर्थंकर विमलनाथ २ ३८७, पुन्नाट सघ १.३२७ अ, इतिहास १ ३२८ ब।

मंदिर—तीर्थंकर वासुपूज्य २.३८७, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६९, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

मंदिर-निर्माणकर्म—श्रावक ४.५२ अ।

मंदोदरी—३ २४८ ब।

मकर-मुखासन तप—कायक्लेश २ ४७ ब।

मक्खन—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०२ ब।

मख—३.२४८ ब, पूजा ३.७४ अ।

मगध—३ २४८ ब, अग्निभूति १ ३६ ब, इतिहास १.३१० ब, परि०/२ १ २, मनुष्यलोक ३ २७५ अ-ब।

मगधसारतलक—३ २४८ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

मगर—तीर्थंकर पुष्पदन्त २ ३७९।

मघवा—३ २४८ ब, चक्रवर्ती ४ १० अ, तीर्थंकर २ ३९१।

मघवान्—३ २४८ ब, गणधर २ २१३ अ।

मघवी—नरक पृथिवी—निर्देश २.५७६ अ, पटल २ ५८०, इन्द्रक श्रेणीबद्ध २ ५७८, २.५८०, विस्तार २ ५७६, २ ५७८, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८ आयु १.२६३।

मघवी (नरक पृथिवी)—प्ररूपणा—बंध ३ १००, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३७६ उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१७०, सख्या ४ ९५, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४ ४७९, काल २ १०१, अन्तर १ ८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।

मघा—३.२४८ ब, तीर्थंकर सुमतिनाथ ३.३८०, नक्षत्र २.५०४ ब।

मघा सवत्—इतिहास १.३१० अ।

मच्छरसम श्रोता—उपदेश १.४२५ ब।

मजीरा—चैत्यचैत्यालय २ ३०२ अ।

मज्जा—औदारिक शरीर १ ४७१ ब, १ ४७२ अ।

मज्जानुराग—राग ३ ३९५ अ।

मटंब—३ २४८ ब, चक्रवर्ती ४ १३ ब, बलदेव ४ १७ ब।

मणि—३ २४९ अ, चक्रवर्ती ४ १३ अ, मन्त्र ३.२४५ ब।

मणि (कूट)—कुडलवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६७। रुचकवर पर्वत का निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६८। शिखरी पर्वत का—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४ के सामने।

मणिकांचन—३ २४९ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

मणिकांचन (कूट)—३ २४९ अ, रुक्मि पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४। शिखरी पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३.४४४ के सामने।

मणिकुंडल—अच्युत १ ४१ अ।

मणिकेतु—३.२४९ अ।

मणिग्रीव—विद्याधर वश १ ३३९ अ।

मणिचित—३ २४९ अ, सुमेरु ४ ४३७ अ।

मणिधूल—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

मणिपूर चक्र—पदस्थध्यान (नाभिकमल) ३ ६ ब।

मणिप्रभ—३ २४९ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

मणिप्रभ (कूट)—कुडलवर पर्वत का—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३.४६७। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३.४७६ ब, विस्तार ३.४८७।

मणिभद्र (कूट)—३.२४९ अ, रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३ ४६९। विजयार्ध पर्वत का—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४ के सामने।

मणिभद्र (देव)—३.२४९ अ, यक्ष ३.३६९ अ, व्यतरेंद्र—निर्देश ३.६११ अ, सख्या ३.६११ अ, परिवार ३.६११ ब, आयु १.२६४ ब।

मणिभवन—३.२४९ अ।

मणिभासुर—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

मणिमालिनी—३.२४९अ, गजदंत के कूट की देवी ३.६१४। सुमेरु के वन की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७३ ब, अकन ३.४५१।

मणिवज्र—३ २४९ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, ३.५४६ अ।

मणिस्यंदन—विद्याधरवंश १.३३९ अ।

मतग—३.२४९ अ, अन्तकृत् केवली १.२ ब।

मतंगज—यदु वंश १ ३३७।

मत—३.२४९ अ, एकान्तमत १ ४६४ ब।

मतानुज्ञा—३ २४९ अ।

मतार्थ—३.२४९ अ, आगम १ २३० अ, कर्ताकर्म २.२४ ब।

मति—अध्यवसान १ ५२ अ, मतिज्ञान ३ २५० अ।

मतिज्ञान—३ ३४९ अ, अनुभव प्रत्यक्ष १.८३ ब, अवग्रह, आदि की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०, अवधिज्ञान १ १८९ अ, १ १९० ब, केवलज्ञान २ २५९-२६०, गति-अगति (गुणोत्पादन) २ ३२२, गुणस्थान तथा जीवसमास २ २६१, नय २ ५५४ अ, परोक्ष ३ ३९ अ, प्रत्यक्ष (अनुभव) १ ८३ ब, (सा-व्यवहारिक) ३ १२२ ब, मनःपर्यय ३ २६७ ब, मोक्ष मार्ग ४ ६० ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ, ४.६१ अ-ब।

मतिज्ञान (प्ररूपणा)-बंध ३.१०६, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १.३९३ अ, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ। सत् ४ २३५, सख्या ४ १०६, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २.११३, अन्तर १.१५, भाव ३.२२१ अ, अल्पबहुत्व १ १५०।

मतिज्ञान सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५४ अ।

मतिज्ञानावरण—ज्ञानावरण २.२७१ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.२७१ अ, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १.९१ ब, १.९४ ब, प्रदेश ३.१३६। बध ३.९८, बधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३८७ उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२ सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसयोगी भग १ ३९९। सक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८ ब।

मतिसागर—द्रविड सघ १.३२० अ।

मतजला—३.२५९ अ। विभंगा नदी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४८९, ३ ४९०, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने।

मत्यज्ञान—अज्ञान १ ३७ ब, मतिज्ञान ३.२५२ अ, जीवसमास तथा गुणस्थान २.२६१। प्ररूपणा—दे० मतिज्ञान।

मत्स—३ २५९ अ।

मत्सर—३.२५९ अ।

मत्स्य—३.२५९ अ, तीर्थंकर अरहनाथ २ ३७९, मनुष्यलोक ३.२७५ अ, हरिवंश १ ३३९ ब।

मत्स्ययुगल—स्वप्न ४.५०४ ब।

मत्स्योद्वर्त—३.२५९ अ, व्युत्सर्गदोष ३.६२२ ब।

मथमितिकी—३.२५९ अ।

मथुरा—३ २५९ अ, उग्रसेन १.३५२ अ, नारायण ४ १८ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

मथुरा संघ—३.२५९ अ, जैनाभासी संघ १ ३१९ अ, इतिहास १ ३२१ ब, १.३२७ ब।

मद—३.२५९ अ, मार्दव ३.२९८ ब।

मदनकीर्ति—आशाधर १.२८० ब।

मदनवेगा—यदुवंश १ ३३७।

मदना—३ २५९ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

मदिरा—मद्य ३.२५९ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब।

मद्य—३ २५९ ब, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब, श्रावक ४.५० ब।

मद्यमयी—सुमेरु की परिधि ३ ४४९ अ।

मद्यांग नातीय कल्पवृक्ष—वृक्ष ३.५७८ अ।

मद्र—३ ३६० अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

मद्रक—३.२६० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

मद्रकार—मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

मद्री—३.२६० अ, अन्धकवृष्णि १ ३० अ, यदुवश १.३३७।

मधु—३ २६० अ, प्रतिनारायण ४.२० अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब, श्रावक ४ ५० ब।

मधुकरी वृत्ति—आहार १ २८८ ब, भिक्षा ३ २२९ ब।

मधुकैटभ—३ २६० ब, तीर्थंकर अनन्तनाथ २ ३९१, प्रतिनारायण ४.२० अ।

मधुक्रीड—प्रतिनारायण ४.२० अ।

मधुपिंगल—३ २६० ब।

मधुर (कवि)—इतिहास ३ ३३२ ब।

मधुर भाषण—गुरु २.२५२ ब, सत्य ४.२७२ ब, समिति ४.३४० ब।

मधुरा—३.२६१ अ, व्यन्तरेन्द्र गणिका ३.६११ ब।

मधुरालापा—व्यन्तरेन्द्र गणिका ३.६११ ब।

मधुसूदन—प्रतिनारायण ४ २० अ।

मधुसूदन सरस्वती—३.२६१ अ, वेदान्त ३.५९५ ब।

मधुसेना—तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३८८।

मधुस्रावी ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५६ अ।

मध्य—३.२६१ अ, परमाणु ३.१६ ब, वारुणीवर सागर का रक्षक देव ३.६१४, वैष्णव ३ ६०९ अ।

मध्यखंड द्रव्य—कृष्टि २.१४१ ब।

मध्य-ग्रैवेयक—ग्रैवेयक स्वर्ग के पटल ४.५१८-५२०।

मध्य-धन—गणित २ २२९ ब।

मध्यदिन—एकान्त (अज्ञानवादी) १.४६५ ब।

मध्यदेश—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

मध्यधन—गणित २.२२९ ब, २.२३२ अ।

मध्यप्रदेश — ३ २६१ अ।

मध्यम—वारुणीवर सागर का रक्षक देव ३ ६१४।

मध्यम अनन्त—अनन्त १ ५६ ब, गणित २.२१४ ब।

मध्यम अन्तरात्मा—१ २७ अ।

मध्यम अवगाहना—सख्याप्ररूपणा ४ ९४ अ।

मध्यम असंख्यात—असंख्यात १ २०६ ब, गणित २.२१४ ब।

मध्यम आराधना—सल्लेखना ४ ३८७ अ।

मध्यम ग्रैवेयक—ग्रैवेयक स्वर्ग पटल ४ ५१८-५२०।

मध्यम नक्षत्र—सल्लेखना ४.३९७ ब।

मध्यम धर्मध्यान—धर्मध्यान २ ४७९ अ।

मध्यम पद—आगम १.२२८ ब, पद ३.४ ब, श्रुतज्ञान ४.६५ अ।

मध्यम पात्र—पात्र ३ ५२ ब।

मध्यम पारिषद—पारिषद ३.५६ अ।

मध्यम प्रोषधोपवास—प्रोषधोपवास ३ १६४ अ।

मध्यम व्यास—गणित २ २३३ ब।

मध्यम संख्यात—गणित २.२१४ ब, सख्यात ४ ९२ अ।

मध्यम सूची—गणित २.२३३ ब।

मध्य स्वर—स्वर ४.५०८ ब।

मध्यमा—भाषा ३.२२७ ब।

मध्य मीमांसा—दर्शन २.४०४ अ।

मध्यलोक—३ २६१ अ, ३.४४२ अ, चित्र ३.४४३। क्षेत्र-प्ररूपणा २ १९१ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, २.३०४ अ।

मध्यलोक सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।

मध्यस्थ भाव—सामायिक ४ ४१९ अ।

मध्याह्न—३.२६१ अ।

मध्यास्रव ऋद्धि—ऋद्धि १.४५६ ब।

मन.कर्म—कर्म २.२६ अ।

मनःपर्ययज्ञान—३.२६१ अ, अवधिज्ञान १.१८८ ब. १ १८९ अ, अवधिज्ञान (प्रत्यक्षता परोक्षता) १ १९० अ-ब, उपक्रम १ ४१६ ब, ऋद्धि १.४४८, गति-अगति (गुणोत्पादन) २ ३२२ अ, जीवसमास तथा गुणस्थान २ २६१। दर्शन २ ४१६ अ, पचम काल १.१८९ ब, परिहारविशुद्धि ३ ३७ अ, प्रत्यक्षता परोक्षता (अवधिज्ञान) १.१९०-१९१, मोक्षमार्ग (अवधिज्ञान) १.१८९ ब, वेद भाव ३.५८८ ब।

मनःपर्ययज्ञान (प्ररूपणा)—बध ३ १०६, बधस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १ ३९३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०७ अ, सत् ४ २३६, संख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११३, अन्तर १ १५, भाव ३ २२१ अ अल्पबहुत्व १ १५०।

मन पर्ययज्ञान सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४ अ।

मनःपर्ययज्ञानावरण—३ २७१ ब, प्रकृति ३ ८८, २ २७०, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३.९७, बन्धस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदय-स्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसंयोगी भग १ ३९९। संक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६८।

मनःपर्ययज्ञानावरणीय—दे. मन पर्ययज्ञानावरण।

मनःपर्ययज्ञानी—तीर्थंकर सघ २ ३८७, स्वाध्याय ४ ५२४ अ।

मनःपर्याप्ति पर्याप्ति ३ ४१ ब।

मनःपरावर्तन—आवर्त्त १ २७९ अ।

मनःप्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३ ११६ ब।

मन प्रत्याख्यान प्रत्याख्यान ३ १३२ अ।

मन.शिल—३ २६९ ब। सोलहवाँ सागर द्वीप—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ। ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४।

मनःशुद्धि—धर्म २ ४६९ ब, भक्ति ३.१९९ अ।

मन—३ २६९ ब, अनुभव १ ८१ ब, अवधिज्ञान १ १९१ अ-ब, आहारान्तराय १.२९ अ, उपयोग (कर्मबन्ध) १.४३३ ब, एकेन्द्रिय १.३०७ अ, कर्म २.२६ अ, केवली २.१६३ अ, द्रव्यमन (अनुभव) १.८१ ब, न्याय २ ६३३ ब, पर्याप्त ३.३८० अ, प्राण ३.१५३ अ, ३.१५४ ब, प्राणायाम ३.१५६ अ, मतिज्ञान ३.२५० ब, ३.२६८ अ, मन पर्यय ज्ञान ३.२६२ अ, ३ २६७ ब, ३.२६८ अ, मूर्त ३,३१८ अ, भावमन (अनुभव) १.८१ ब, सज्ञी ४.१२२ अ, सस्कार ४.१५० अ, स्वाध्याय ४ ५२५ अ।

मनक—३.२७२ अ, नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३.४३९। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

मनचिंती अष्टमी व्रत—३.२७२ अ।

मनन—स्वाध्याय ४.५२३ अ।

मनरंगलाल—३.२७२ ब, इतिहास १.३३४ ब, ३४८ अ।

मनाधिगुप्त—भावि तीर्थंकर २.३७७।

मनु—३ २७२ ब, कुलकर २ १३० ब, भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ, विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

मनुज—३.२७२ ब।

मनुपुत्रक—विद्याधर वंश १.३३९ अ।

मनुष्य—३ २७२ ब, अवधिज्ञान १ १९४ ब, आकाश मे अवस्थान १ २२४ अ, आयुबन्ध १.२६२ अ, गति-अगति (जन्म) २.३१९ अ, जीव २.३३३ ब, पुरुषवेद ३ ५८६ अ, वैक्रयिक शरीर ३.६०३ अ, व्यन्तर (भूताविष्ट) ३ ६११ अ, सन्निपातिक भाव ४ ३१२ ब।

मनुष्यक्षेत्र—आकाश १.२२४ अ।

मनुष्यगति—निर्देश ३ २७३, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१९४ ब, अवधिज्ञान का विषय १.१९९ अ, आयु १.२६४, कषाय २ ३८ अ, जन्म (गति-अगति) २.३२२, दुःख २ ४३५ अ, लेश्या ३.४२८ ब।

मनुष्यगति (प्ररूपणा)—बन्ध ३ १०१, बन्धस्थान ३ ११३, उदय १.३७७, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८२, उद्वेलना युक्त सत्त्व ४ २८२, सत्त्व-स्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ १७७, सख्या ४ ९६, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४ ४८०, काल २ १०२, अन्तर १ ९, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।

मनुष्यगति नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बन्ध ३ ९७, बन्धस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९ अ।

मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी—नाम कर्म २ ५८३ ब।

मनुष्यगत्यानुपूर्वी नामकर्म प्रकृति—आनुपूर्वी १ २४७ अ, प्ररूपणा—(दे. मनुष्यगति नामकर्म प्रकृति प्ररूपणा)।

मनुष्यचतुष्क—उदय १.३७४ ब।

मनुष्यत्रिक—उदय १.३७४ ब।

मनुष्यणी—निर्देश ३.२७३। वेद—गुणस्थान ३ ५८९ ब। वेदभाव ३.५८५ ब, स्त्रीवेद ३.५८६ अ। प्ररूपणा—बन्ध ३.१०१ बन्धस्थान ३ ११३ उदय १ ३७७, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४ १८०, सख्या ४.९६, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४.४८०, काल २ १०३, अन्तर १ ९, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

मनुष्यणी सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४।

मनुष्यद्विक—उदय १ ३७४।

मनुष्यलोक—३.२३५, ३.२७४।

मनुष्यव्यवहार—३.२७६ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०४ अ।

मनुष्यसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४।

मनुष्यायु कर्मप्रकृति—आयु (बन्धयोग्य परिणाम) १ २५५ ब, प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, १ २५३, स्थिति ४ ४६२, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३.१३६। बन्ध ३ ९७, बन्ध-स्थान ३.१०८, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसयोगी भग १.४०१। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९।

मनोगुप्ति—अतिचार (गुप्ति) २ २५० अ-ब, अहिंसा १ २१६ अ, गुप्ति (निश्चय व्यवहार) २.२४८ ब, २ २४९ अ, गुप्ति (भाव) २ २४९ अ।

मनोजय—प्राणायाम ३ १५६ अ, सयम ४.१३९ अ, स्वाध्याय ४ ५२५ अ।

मनोज्ञ—आर्तध्यान १ २७३ ब, १.२७४ अ, परिग्रह ३ २६ ब।

मनोज्ञ साधु—३ २७६ अ।

मनोज्ञान—मनोयोग ३.२७७ ब।

मनोत्पन्न सुख—सुख ४ ४२९ ब।

मनोदुष्ट—२.२७६ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ ब।

मनोद्रव्यवर्गणा—वर्गणा २.५१३ अ।

मनोबल—३ २७६ अ, ऋद्धि १ ४४७, १ ४५५ अ, पर्याप्ति ३.४४ अ।

मनोभद्र—३ २७६, यक्ष २ ३६९ अ।

मनोभव—भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ।

मनोमतिज्ञान—श्रुतज्ञान ४.६२ ब।

मनोयोग—३ २७६ अ, अपर्याप्ति (योग) ३ ३८० अ, कार्य-कारण (योग) ३ ३७८ ब, काल २ ९६ ब, काला-वधि का अल्पबहुत्व १ १६१, भाषा पर्याप्ति (योग) ३.३८० अ, (मनोमतिज्ञान मनोयोग) ३ २७७ ब, वचनोत्पत्ति (योग) ३ ३८१ अ, योग ३ ३७९ अ, ३ ३८० अ-ब, शरीरपर्याप्ति (योग) ३.३८० अ।

मनोयोग (प्ररूपणा)—बध ३ १०४, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७९, उदयस्थान १.३९२ ब, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.२९९, ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ २१२, संख्या ४ १०२, क्षेत्र २.२०२,

स्पर्शन ४ ४८५, काल २.१०८, अंतर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४८।
मनोरम—३ २७८ अ, किन्नर २ १२४ ब, सुमेरु ४.४३७ अ।
मनोरमा—३.२७८ अ।
मनोरम्य—राक्षसवंश १.३३८ अ।
मनोवंदना—वंदना ३.४९४ ब।
मनोवर्गणा—वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३.५१६ अ।
मनोवेग—३.२७८ अ, चक्रवर्ती ४.१५ अ, राक्षसवंश १ ३३८ अ।
मनोवेगा—३.२७८ अ, तीर्थंकर चन्द्रप्रभ की यक्षिणी २ ३७९।
मनोहर—३.२७८ अ, तीर्थंकर पद्मप्रभ श्रेयांस व वासुपूज्य २.३८३, मनोरग जातीय व्यन्तरदेव ३ २९३ अ, राक्षसवंश १ ३३८ अ, शतारेंद्र का यान ४ ५११ ब।
मनोहरण—३ २७८ ब, यक्ष ३ ३६९ अ।
मनोहरलाल—इतिहास १ ३३४ अ।
मनोहरा—नारायण ४ १८ ब।
मनोहरी—कुलकर ४ २३।
मनोह्लाद—राक्षसवंश १.३३८ अ।
ममकार—३ २७८ ब, अहंकार १.२१५ अ।
ममत्व—३ २७८ ब, परिग्रह ३.२४ ब, शरीर ४.८ अ, हिंसा (सुख) ४ ५३२ ब।
ममेदं बुद्धि—वात्सल्य (आकांक्षा) ३ ५३२ ब।
मय—३ २७८ ब, यदुवंश १.३३७।
मयणजुज्झ—इतिहास १ ३४७ अ।
मयणपराजयचरिउ—इतिहास १ ३४५ ब।
मयूर—अच्युतेंद्र का यान ४.५११ ब।
मयूरग्रीव—भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ।
मयूरपिच्छ—क्षुल्लक २ १८८ ब।
मयूरवान्—राक्षसवंश १.३३८ अ।
मयूरी—चक्रवर्ती ४.११ ब।
मरण—३.२७८ ब, आहारातराय १.२९ ब, काल २ ९६ अ, नरक २ ५७४, लेश्या ३ ४२७ ब, षट्कालिक हानि-वृद्धि २.९३।
मरणकांडिका—इतिहास १.३४३ ब।
मरणसूतक—सूतक ४.४४२ ब।
मरणावली—उदीरणा १.४१० अ।
मरणाशौच—सूतक ४.४४२ ब।
मरणासन्न—स्वाध्याय ४.५२६ अ।
मरियानी—गंडविमुक्त देव २.२१० ब।
मरीचि—३ २८८ अ, अक्रियावादी १.३२ अ, एकांती १,४६५ ब।
मरु—३.२८८ अ।
मरुडवंश—३.३१४ अ।
मरुत—३ २८८ अ, लौकांतिक देव ३.४९३ ब, स्वर्ग-पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४ ५१९ ब, देवआयु १.२६६।
मरुतचारण ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १ ४५२ ब।
मरुत्वान यज्ञ—४.२२ अ।
मरुदेव—३ २८८ अ, यदुवंश १.३२७।
मरुदेवी—३ २८८ अ, कुलकर ४.२३, चक्रवर्ती ४ ११ ब, तीर्थंकर ऋषभ २ ३८०।
मरुद्देव—कुलकर ४ २३।
मरुप्रभ—३ २८८ अ, किंपुरुष २ १२५ अ।
मरुभूति—३.२८८ अ।
मर्मस्थान—३.२८८ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ।
मर्यादा—३.२८८ अ, जल २ ३२५ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ अ, ३ २०३ अ।
मल—३ २८८ अ, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ, समिति (प्रतिष्ठापन) ४.३४१ ब।
मलद—३ २८८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
मलदोष—आहार १.२८९ ब।
मल-परिषह—३ २८८ ब, ३ ३३ ब, ३.३४ अ।
मलय—३ २८८ ब, प्रतिनारायण ४ २० ब, बलदेव ४.१६ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, यदुवंश १ ३३७।
मलयकीर्ति—इतिहास १ ३३३ अ।
मलयगिरि—मनुष्यलोक ३.२७५ ब, श्वेताबर टीकाकार १ ३३१ अ।
मलिन—सम्यग्दर्शन ४.३७० ब।
मलौषध ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५५ अ।
मल्ल—३.२८८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ-ब।
मल्लधारीदेव—३ २८९ अ, नंदिसंघ देशीय गण १.३२४ ब, इतिहास—१.३३१ ब।
मल्लवादी—३.२८९ अ, इतिहास—प्रथम १.३२९ अ, १.३४० ब।
मल्लि—तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के गणधर २.३८७।
मल्लिणाह कव्व—इतिहास १.३४५ ब।
मल्लिनाथ—३ २८९ अ, तीर्थंकर प्ररूपणा २.३७९-३९१।
मल्लिनाथचरित्र—३ २८९ अ, इतिहास १ ३४५ ब।
मल्लि भूपाल—३.२८९ अ।
मल्लिभूषण—३ २८९ अ, नंदिसंघ १.३२४ अ, इतिहास—प्रथम १.३३३ अ।

मल्लिषेण—३ २८९ अ, इतिहास—प्रथम १ ३३१ अ-ब, १ ३४३ अ-ब, द्वितीय १ ३४४ अ, तृतीय १.३३२ ब, १ ३४५ अ।
मल्लिषेण-प्रशस्ति—३ २८९ अ।
मशकसम स्रोता—उपदेश १ ४२५ ब।
मसिकर्मार्य—आर्य १ २७५ अ।
मस्करी—एकान्त अज्ञानवादी १.४६५ ब, परवाद ३.२३ अ।
मस्करी गोशाल—३ २८९ अ, पूरनकश्यप ३.८२ ब।
मस्करी पूरन—पूरनकश्यप ३ ८२ ब।
मस्तक—३ २८९ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ। स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४ ५१९ ब, देवआयु १ २६७।
मस्तककमल—पदस्थध्यान ३ ६ ब।
मस्तिष्क—३.२८९ ब, औदारिक शरीर १.४७२ अ।
मह—३ २८९ ब, पूजा ३.७४ अ।
महत्तर—३.२८९ ब।
महत्तरदेवी—भवनवासी—परिवार ३ २०९ अ, वैमानिक—नामनिर्देश ४ ५१३ ब, सख्या ४.५१२, आयु १ २७०। व्यंतर—आयु १.२६४ ब।
महत्ता—३.२८९ ब।
महनंदि—इतिहास १ ३३३ अ, १ ३४६ ब।
महा अडड—काल का प्रमाण २.२१६ अ।
महा अडडांग—काल का प्रमाण २ २१६ अ।
महाधिक तृणफल—तौल का प्रमाण २.२१५ अ।
महा-ऊह—काल का प्रमाण २ २१६ अ।
महा-ऊहांग—काल का प्रमाण २ २१६ अ।
महा ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५४ ब।
महाकक्ष—३ २८९ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
महाकच्छ—३ २८९ ब, गणधर २ २१३ अ।
महाकच्छा—३ २८९ ब, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।
महाकथानक—संख्या का प्रमाण २.२१४ ब।
महाकमल—काल का प्रमाण २.२१६ अ।
महाकमलांग—काल का प्रमाण २.२१६ अ।
महाकल्प—३.२८९ ब, श्रुतज्ञान ४.६९ ब।
महाकल्प्य—श्रुतज्ञान ४.६९ ब।
महाकल्याण—चक्रवर्ती ४.१५ ब।
महाकाय—व्यंतरेंद्र—निर्देश ३ ६११ अ, सख्या ३.६११ अ, परिवार ३.६११ ब, आयु १ २६४ ब।
महाकाल—३ २८९ ब, ग्रह २ २७४ अ, चक्रवर्ती १.१४ ब, नारद ४ २१ अ, पिशाच जातीय देव ३ ५८ ब। व्यतरेंद्र—निर्देश ३ ६११ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १.२६४ ब।
महाकाली—३ २८९ ब, तीर्थंकर श्रेयासनाथ की यक्षिणी २ ३७९, विद्या ३ ५४४ अ।
महाकीर्ति—नदिसघ १ ३२३ ब।
महाकुमुद—काल का प्रमाण २.२१६ अ।
महाकुमुदांग—काल का प्रमाण २.२१६ अ।
महाकूट—३ २८९ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
महाकौशल—३ २८९ ब।
महाक्षेत्र—भरत आदि क्षेत्र—निर्देश ३.४४६ अ, ३.४६२ ब, ३.४६३ ब, विस्तार ३ ४७९, ३.४८०, ३ ४८१, अंकन ३.४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने।
महाखर—३.२८९ ब।
महागंध—३ २८९ ब।
महागंध (देव)—क्षौद्रवर द्वीप सागर का रक्षक ३.६१४, नन्दीश्वर द्वीप सागर का रक्षक ३.६१४, आयु १ २६५।
महागिरि—हरिवंश १ ३३९ ब, १.३४० अ।
महागौरी—३ २८९ ब, विद्या ३.५४४ अ।
महाग्रह—ग्रह ३ २७४ अ।
महाघोष—स्तनित कुमारेंद्र—निर्देश ३ २०८ ब, अवस्थान ३ २०९ ब, परिवार ३ २०९ अ, आयु १.२६५ अ।
महाचंद्र—३ २८९ ब, भावि शलाकापुरुष ४ २५ ब।
महाज्वाल—३ २८९ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, ३ ५४६ अ।
महातनु—३ २८९ ब, महोरग जातीय व्यन्तर देव ३.२९३ अ।
महातमःप्रभा—३ २९० अ। नरक पृथिवी—निर्देश २ ५७६, पटल २.५७९, इन्द्रक श्रेणीबद्ध २.५७८, २ ५८०, विस्तार २ ५७६, २.५७८, अकन ३.४४१। नारकी अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३।
महातमःप्रभा (प्ररूपणा)—बध ३ १००, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.१७०; सख्या ४.९५, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४ ४७९, काल २.१०१, अंतर १ ८, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।

महातेज—तीर्थंकर अजितनाथ २ ३७८।
महात्मा—३ २९० अ।
महात्रुटित—काल का प्रमाण २.२१६ अ।
महात्रुटितांग—काल का प्रमाण २ २१६ अ।
महादेवी—तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३८०।
महादेह—३ २९० अ, पिशाचजातीय व्यन्तरदेव २.५८ ब।
महाधनु—यदुवश १ ३३७।
महाध्वजा—चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ।
महानंद—अच्युत १.४१ अ, मगधदेश इतिहास १.३१३।
महानलिन—काल का प्रमाण २ २१६ अ।
महानलिनांग—काल का प्रमाण २ २१६ अ।
महानिमित्तज्ञान—ऋद्धि १ ४४८, निमित्तज्ञान २.६१२ ब, विद्या ३ ५४४ अ।
महानेमि—यदुवश १ ३३७।
महान्—औदारिक १.४७१ अ।
महापद्म—३ २९० अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, कुंडलवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७५ ब। विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६७। कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ, तीर्थंकर पुष्पदत व शीतलनाथ २.३७८, तीर्थंकर भाविकालीन २ ३७७, भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ।
महापद्म (ह्रद)—निर्देश ३.४४६ ब, ३.४५३ ब, विस्तार ३.४९०, ३.४९१, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४५४।
महापद्म नंद—मगधदेश इतिहास १ ३१३।
महापद्मांग—काल का प्रमाण २ २१६ अ।
महापद्मा—असुरेंद्र की अग्रदेवी ३ २०९ अ। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७०, विस्तार ३.४७९, ३ ४८०, ३.४८१, अकन २.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४ के सामने।
महापवन—वायु ३.५३४ ब।
महापुंडरीक—३ २९० अ, श्रुतज्ञान ४.६९ ब, रुक्मि पर्वत का द्रह—निर्देश ३.४४६ ब, ३.४५३ ब, विस्तार ३.४९०, ३.४९१, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४५४।
महापुर—३.२९० अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ।
महापुराण—३.२९० अ, इतिहास—प्रथम १ ३४३ अ, द्वितीय १.३३१ अ।
महापुराण कालिका—इतिहास १.३४५ अ।
महापुराण टिप्पणी—इतिहास १.३४३ अ।
महापुरी—३ २९० अ, चक्रवर्ती ४.१० ब, विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।
महापुरुष—३.२९० अ, किंपुरुष जातीय व्यंतर देव २ १२५ अ, व्यतरेंद्र—निर्देश ३.६११ अ, संख्या ३.६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १.२६४।
महाप्रभ—३.२९० अ। कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६७। घृतवर सागर व द्वीप का रक्षक देव ३ ६१४।
महाप्रातिहार्य—वृक्ष ३ ५७९।
महाबध—३.२९० अ, ३ परि०, सत्कर्म पंजिका ४ परि०, इतिहास १ ३४० अ।
महाबल—३.२९० अ, इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ, तीर्थंकर अभिनंदन व सुमतिनाथ २.३७८, तीर्थंकर भुजगम २ ३९२, बलदेव ४.१६ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ, सोमवश १.३३९ ब।
महाबाल—गणधर २.२१३ अ।
महाबाहु—कुंडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ ब, अकन ३ ४६७। राक्षसवश १.३३८ अ।
महाभद्र—तीर्थंकर २ ३९२।
महाभानु—यदुवश १.३३७।
महाभारत—३.२९० ब।
महाभाषा—दिव्यध्वनि २ ४३२ अ।
महाभिषेक—३.२९० ब।
महाभीम—३.२९० ब, नारद ४.२१ अ, राक्षस जातीय व्यंतर देव ३ ३९३ ब। व्यतरेंद्र—निर्देश ३.६११ अ, संख्या ३.६११ अ, परिवार ३.६११ ब, आयु १.२६४।
महाभुज—३.२९० ब।
महाभूत—३.२९० ब, भूत जातीय व्यतर देव ३.२३४ अ।
महामंडलीक—३ २९० ब, राजा ३.४०१ अ।
महामति—३ २९० ब।
महामत्स्य—अवगाहना १.१७९, वनस्पति ३.५०५ ब, संमूर्च्छिम ४ १२८ ब।
महामात्य—३.२९० ब।
महामानसी—३ २९० ब, तीर्थंकर कुथुनाथ की यक्षिणी २.३७९, विद्या ३ ५४४ अ।
महामेघ रथ—तीर्थंकर कुथुनाथ २.३७८।

महामेरु - सुमेरु ४.४३७ अ।

महायक्ष—३ २९० ब, तीर्थंकर अजितनाथ का यक्ष २.३७९।

महायान—३ २९० ब, बौद्धदर्शन ३.१८७ अ-ब।

महायोजन—३.२९० ब।

महारक्ष—राक्षसवंश १.३३८ अ।

महारत्न—नारायण ४.१८ अ।

महारथ—कुरुवंश १ ३३५ ब, गणधर २ २१३ अ, यदुवंश १.३३७, हरिवंश १ ३४० अ।

महारव—राक्षसवंश १.३३८ अ।

महारस—गणधर २ २१३ अ।

महाराज—राजा ३ ४०० ब।

महाराजा—३ २९० ब।

महाराष्ट्र—३ २९१ अ।

महारुद्र—३ २९१ अ, ग्रह २.२७४ अ, नारद ४ २१ अ।

महालता—३ २९१ अ, काल का प्रमाण २ २१६ ब।

महालतांग—३.२९१ अ, काल का प्रमाण २ २१६ ब।

महावग्ग—पूरन कश्यप ३ ८२ अ।

महावत्सा—२ २९१ अ, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६०। वक्षारगिरि का कूट—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४ के सामने।

महावप्र—३ २९१ अ।

महावप्रा—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ। वक्षारगिरि का कूट—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५-४८६, अंकन ३ ४४४।

महावसेन—काष्ठासंघ १ ३२७ अ।

महावसु—हरिवंश १ ३४० अ।

महावाह—व्यंतरेंद्र गणिका ३.६११ ब।

महाविकृति—मास ३.२९३ अ।

महाविद्या—विद्या ३.५४४ अ।

महावीरतीर्थ—अनुत्तरोपपादक १.७० ब, अंतकृत केवली १.२ ब, अपराजित १.११९ अ।

महावीर-निर्वाण संवत्—इतिहास १.३०९ अ, १.३१० अ, १.३१६, १.परि०/१।

महावीर पंडित—आशाधर १.२८० ब।

महावीरपुराण—३.२९२ अ, इतिहास—प्रथम ५.३४५ ब, द्वितीय १.३४६ ब।

महावीर भगवान्—३.२९१ अ, अग्निमित्र १ ३६ ब, इन्द्रभूति १ २९९ ब, गणधर २ २१३ अ। तीर्थंकर प्ररूपणा मगधदेश इतिहास १.३१० ब, मूलसंघ १ ३१६, १ परि०/२.१,२,८। वीरसंवत् १.परि०/१, श्रुततीर्थ १ ३१८ अ।

महावीराचार्य—३ २९२ अ, इतिहास १.३३० अ, १ ३४२ अ।

महावीराष्टक—इतिहास १.३४८ अ।

महावीर्य—कुरुवंश १.३३६ अ।

महाव्रत—अस्तेय १ २१३ ब, अहिंसा १ २१५ ब, तप २ ३६० अ, परिग्रह ३ २६ अ, बद्धायुष्क १ २६२ ब, ब्रह्मचर्य ३ १८९ ब, व्रत ३ ६२७ अ, शुभोपयोग १.४३३ अ, संयम ४ १३६ ब, सत्य ४ २७० ब, सल्लेखना ४ ३९६ अ, स्वामित्व (तप) २.३६० अ।

महाशंख—३.२९२ अ, लवणसागर में स्थिति पर्वत—निर्देश ३ ४६२ अ, नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३ ४७९, अंकन ३ ४६१, वर्ण ३.४७८।

महाशलाका—संख्या ४ ९२ अ।

महाशलाका कुंड—असंख्यात १.२०६ ब।

महाशिरा—३.२९२ अ। कुंडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ ब, अंकन ३.४६७।

महाशुक्र (स्वर्ग)—३.२९२ अ, चक्रवर्ती ४ १० ब, नारायण ४.१८ ब, बलदेव ४.१६ ब। स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४.५१८, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४.५२०, उत्तर विभाग ४.५२१ अ, अवस्थान ४.५१४ ब, अंकन ४ ५१५। इस स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४.५१५, देव आयु १ २६८।

महाशुक्र (देव)—अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १.२७०, आयुबंध के योग्य परिणाम २.२५८ अ। इंद्र—निर्देश ४.५१० ब, उत्तरेंद्र ४.५११ अ, परिवार ४ ५१२-५१३, अवस्थान ४.५२० ब, चिह्न, शक्ति आदि ४.५११ ब, विमान, नगर व भवन ४.५२०-५२१।

महाशुक्र (प्ररूपणा)—बंध ३.१०२, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.१९२, संख्या ४ ९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५।

महाश्वेता—३ २९२ अ, विद्या ३ ५४४ अ।
महासंघिक—३ २९२ अ।
महासत्ता—३ २९२ अ, अस्तित्व १ २१३ अ, द्रव्य २.४५५ अ, सापेक्ष धर्म १ १०९ अ, ४.३२३ अ।
महासर—कुरुवंश १ ३३५ ब।
महासर्वतोभद्र—३ २९२ अ।
महासाधु—तीर्थंकर २ ३७७।
महा-सामान्य—सामान्य ४.४१२ अ।
महासुव्रत—बलदेव ४.१६ ब।
महासेन—३.२९२ अ, तीर्थंकर चन्द्रप्रभ २.३८०, तीर्थंकर पार्श्वनाथ २ ३९१, यदुवंश १ ३३६, हरिवंश १.३४०, इतिहास १.३२९ ब, १.३३० ब, १ ३४२ ब। काष्ठा संघ १ ३२७ अ।
महास्कंध—३.२९२ अ, परमाणु ३.१६ अ, वनस्पति ३ ५०५ ब, वर्गणा ३ ५१३ अ, ३ ५१५ ब, ३ ५१६ अ, ३ ५१८ ब, स्कंध ४ ४४६ ब।
महास्कंध स्थान—वनस्पति ३ ५०५ ब।
महास्वर—३ २९२ अ। गंधर्व जातीय व्यंतर २.२११ अ।
महाहिमवान् (कूट)—३.२८२ अ, पद्महृद का कूट—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४५४। महाहिमवान् पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४ के सामने।
महाहिमवान् (पर्वत)—निर्देश ३ ४४६ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७, इनके कूट तथा देव ३.४७२ अ।
महाहृदय—कुंडलवर पर्वत के कूट का देव ३ ४७५ ब, अंकन ३ ४६७।
महितसागर (कवि)—इतिहास १.३३४ ब।
महिम—मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
महिमा—३ २९२ ब, साधु (आत्म प्रशंसा) ४ ४०८ अ।
महिमा ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १.४५१ अ।
महिमा नगर—अर्हद्बली १ १३८ ब, यति सम्मेलन १ परि०/२ २।
महिला—संगति ४ ११९ ब। स्त्री ४ ४५० अ।
महिष—३ २९२ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
महिषग—३.२९२ ब।
महिषमति—३.२९२ ब।
महिषसम श्रोता—उपदेश १.४२५ ब।
महिचंद—नंदिसंघ १.३२३ ब, १ ३२४ अ, काष्ठासंघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३३४ अ, १.३४७ ब।
महीजय—यदुवंश १.३३७।
महीदत्त—हरिवंश १.३३९ ब।
महीदेव—३ २९२ ब, मूलसंघ १ ३२२ ब, अकलंक भट्ट १.३१ अ।
महींद्र—इतिहास १.३३३ ब, १ ३४७ अ।
महीधर—गणधर २ २१२ ब।
महीपाल—३ २९२ ब।
महीभागी—गणधर २.२१३ अ।
महीशूर—२.२९२ ब।
महेंद्र—३.२९२ ब, अंजना १.२ अ, गणधर २.२१२ ब, यदुवंश १ ३३७, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ। कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६७।
महेंद्रका—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
महेंद्रकीर्ति—नंदिसंघ १.३२३ ब, १.३२४ ब।
महेंद्रगिरि—यदुवंश १.३३७।
महेंद्रजित्—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ।
महेंद्रदत्त—चक्रवर्ती ४.१० अ।
महेंद्रदेव—३.२९२ ब, इतिहास १ ३३१ अ।
महेंद्रपुर—विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।
महेंद्रविक्रम—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ।
महेंद्रसेन—इतिहास १ ३३४ अ।
महेंद्रिका—३ २९२ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
महेश्वर—२.१९३ अ, निंदा २.५८८ ब।
महेश्वरमुनि—मूलसंघ १ ३२२ ब।
महोदधि—वानरवंश १.३३८ ब।
महोदय—समवसरण ४.३३० अ।
महोपवास विधि—स्वाध्याय ४ ५२६ अ।
महोरग—३.२९३ अ। व्यंतरदेव—निर्देश ३ ६१० ब। अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १.२६४ ब। इन्द्र—निर्देश ३.६११ अ, शक्ति आदि ३ ६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३.६११ अ, अवस्थान ३ ६१२-६१४, ३ ४७१।
महोरग (देव)—प्ररूपणा—बंध ३ १०२, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ ३८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४.१८९, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।
मांछपिक—क्रियावादी २.१७५ ब।
मांडल गढ़—आशाधर १ ३८० ब।
मांडलिक—वायु ३.५३४ ब।

मांडलीक—३ २९३ अ, एकातो १.४६५ ब, क्रियावादी २.१७५ ब।

मांडव्य—गणधर २ २१३ अ।

मांस—३.२९३ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब, वैक्रियिक शरीर २ ५७३ ब, श्रावक ४.५० ब।

मांसदर्शन—आहारातराय १ २८ ब।

मांसपेशी—औदारिक शरीर १.४७२ अ।

मागधदेव—चक्रवर्ती ४ १५ ब, प्रतिनारायण ४ २० अ।

मागध द्वीप ३ २९३ ब—निर्देश ३.४५५ अ, ३.४६२ ब, विस्तार ३.४७९, अकन ३.४४४, ३ ४६१, ३ ४६४ के सामने। सीता-सीतोदा नदी के तीर्थ ३.४६० अ।

माघ—३.२९४ अ।

माघचंद्र—नदिसघ १ ३२३ ब, काष्ठासघ १ ३२७ अ।

माघनंदि—३ २९४ अ। प्रथम नदिसघ १.३१८ ब, देशीयगण १.३२४ ब, बलात्कार गण १.३२३ अ, मूलसंघ १.३२२ ब, इतिहास १ ३२८ ब। १.परि०/-२ १,२,३,७। १ परि०/४.२, कालावधि १ परि०/-२.८। तृतीय—इतिहास १.३३२ अ। चतुर्थ—इतिहास १ ३३२ अ, १ ३४४ ब।

माघनंदि कोल्हापुरीय—देशीयगण १ ३२५, इतिहास १ ३३१ ब।

माघनंदि त्रैविद्य—देशीयगण १.३२५ इतिहास १.३३१ ब।

माघवी—३.२९४ अ। नरक पृथिवी—निर्देश २.५७६ अ, पटल इंद्रक व श्रेणीबद्ध २ ५७८, २ ५८०, विस्तार २.५७६, २ ५७८, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३। प्ररूपणा—बध ३ १००, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१००, सख्या ४ ९५, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४.४७९, काल २ १०१, अतर १.८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

माठर—३.२९४ अ, अक्रियावाद १ ३२ अ, एकाती १ ४६५ ब, साख्य ४ ३९८ ब।

माणव—मनुष्यलोक ३.२७५ अ।

माणवक—तीर्थंकर २ ३७७।

माणिकचद—इतिहास १.३३३ ब।

माणिकभद्र—३.२९४ अ।

माणिकसेन—सेनसंघ १ ३२६ अ।

माणिक्यनंदि—३ २९४ अ, नदिसघ १ ३२३ अ, देशीय गण १ ३२५, इतिहास १ ३२९ ब, १ ३३१ अ, १.३४३ अ।

माणिक्यराज—इतिहास १.३३३ ब, १ ३४६ ब, १ ३४७ अ।

मातंग—३ २९४ अ, तीर्थंकर पद्मप्रभ व पार्श्वनाथ का यक्ष २.३७९, मातंग वश १ ३३६ ब, विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधर १ ३३९ अ, विद्याधरवश १ ३३६ ब, १ ३३९ अ।

मातगवश—इतिहास १ ३३६ ब।

मातंगी विद्या—इतिहास १ ३३९ अ।

मातलिजल्प—इतिहास १ ३४२ ब।

माता—प्रवचनमाता ३ १४८ अ।

मातृका—पदस्थ ध्यान ३ ६ ब।

मातृका यत्र—यत्र ३ ३५६।

मात्सर्य—३ २९४ अ।

माथुरगच्छ—एकात (जैनाभासी सग) १.४६५ अ, काष्ठासघ १ ३२१ अ।

माथुरसंघ—एकात (जैनाभासी सघ) १ ४६५ ब, इतिहास १ ३१९ अ, १ ३२१ ब।

मादिती—प्राणतेंद्र का यान ४ ५११ ब।

माद्री—कुरुवश १ ३३६ अ।

माधव—३ २९४ ब।

माधवचक्र—३.२९४ ब, नंदिसघ १.३२३ ब, देशीयगण १ ३२५।

माधवचंद्र त्रैविद्य—इतिहास १.३३० अ, १ ३३२ अ, १ ३४२ अ, १ ३४४ ब।

माधवसिंह—३ २९४ ब।

माधवसेन—३ २९४ ब, माथुरसघ १.३२७ ब, इतिहास १.३३० ब।

माधवाचार्य—३ २९४ ब।

माधवी—नारायण ४ १८ ब।

माध्यंदिन—३ २९४ ब, एकाती १ ४६५ ब, अज्ञानवादी १ ३८ ब।

माध्यमिक—३ २९४ ब, बौद्धदर्शन ३.१८७ ब।

माध्यस्थ—३.२९४ ब।

माध्यस्थता—धर्म २ ४६७ अ, शुद्धोपयोग १ ४३० ब।

माध्यस्थ भाव—सामायिक ४ ४१४ ब।

माध्यस्थ्य—उपेक्षा १.४४४ ब।

माध्व वेदांत—३ ३०५ ब, वेदात ३.६०७ अ।

मान—३ २९४ ब, ग्रह २.२७४ अ, सुमेरु के वन में देव भवन—निर्देश ३ ४५० अ, अंकन ३.४५१। प्रमाण ३ १४५ अ।

मान (कषाय)—३ २९४ ब, कषाय २.३५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०, १.१६१, द्वैष कषाय २ ३९ अ, मार्दव ४ १३९ ब। प्ररूपणा—बंध ३ १०५, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८२, उदयस्थान १ ३९३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ। सत् ४ २३२, सख्या ४ १०५, ४ ११७, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन ४.४८८, काल २ ११२, अन्तर १.१५, भाव ३.२२१ अ, ३ २२३, अल्पबहुत्व १ १४९, भागाभाग ४ ११७।

मानकांडक—काडक २ ४१ अ।

मानतुग—३ २९५ अ, स्तोत्र ४ ४४९ ब, इतिहास १ ३२९ अ, १.३४१ ब।

मानदंड—सुमेरु ४.४३६ ब।

मानपद—सूक्ष्म ४ ५३७ ब।

मान (कर्म) प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ३४१, स्थिति ४.४६१, अनुभाग १ ९४ अ-ब, प्रदेश ३.१३६। बध २ ९७, बधस्थान ३ १०९, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९५, त्रिसंयोगीभग १ ४०१ ब। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

मानव—३ २९५ अ, चक्रवर्ती ४.१४ ब, जीव २.३३३ ब, विद्या ३.५४४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

मानवक—ग्रह २.२७४ अ।

मानवपुत्रक—विद्याधर १.३३९ अ।

मानवयोजन—३.२९५ अ, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ ब।

मानवर्तिक—३ २९५ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

मानवी—३ २९५ अ।

मानशक्ति—कषाय २.३८ अ।

मानस—३.२९५ अ, मानुषोत्तर पर्वत के कूट देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अकन ३.४७४, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

मानस-आस्रव—आस्रव १ २८२ ब।

मानस-आहार—आहार १ २८५ अ, आहारक १.२९५ अ, देव २.४४६ अ।

मानस-कायोत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३.६२० अ।

मानसचेष्टित—नारायण ४.१८ अ।

मानस-जप—व्युत्सर्ग ३.६२० ब।

मानस-जाप—व्युत्सर्ग ३ ६२० ब।

मानस दु ख—दु ख २.४३४ ब।

मानसरोवर—३.२९५ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

मानस-विनय—विनय ३.५४८ ब।

मानस-व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३ ६२० अ।

मानसाहार—आहार १ २८५ अ, आहारक १ २९५ अ, देव गति २ ४४६ अ।

मानसिक आस्रव—आस्रव १ २८२ ब।

मानसिक आहार—आहार १ २८५ अ, आहारक १ २९५ अ, देवगति २ ४४६ अ।

मानसिक कायोत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३ ६२० अ।

मानसिक जप—व्युत्सर्ग ३ ६२० ब।

मानसिक जाप—व्युत्सर्ग ३ ६२० ब।

मानसिक दु ख—दु ख २ ४३४ ब।

मानसिक विनय—विनय ३ ५४८ ब, ३ ५४९ ब।

मानसिक व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३ ६२० अ।

मानसी—३.२९५ अ, तीर्थंकर शीतलनाथ की यक्षिणी २ ३७९, विद्या ३ ५४४ अ।

मानस्तम्भ—३ २९५ ब, इन्द्रभूति १ २९९ ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब, सौधर्म स्वर्ग ४ ४४५ ब।

मानस्तम्भ-भूमि—समवसरण ४ ३३० ब, ४ ३३३ ब।

मानी—जीव २ ३३३ ब।

मानी दोष—आहार १ २९१ अ।

मानुष—२.२९५ ब, मनुष्य ३ २७३ ब, मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ अ, अकन ३.४६४, यक्ष ३ ३६९ अ।

मानुषोत्तर—३ २९५ ब, भद्रशाल वन का भाग ३ ४५० अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ।

मानुषोत्तर पर्वत—३ २९५ ब, जैनाभिमत—निर्देश ३ ४६३ ब। कूटो के नाम ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अकन ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६४, वर्ण ३ ४७८। वैदिकाभिमत—निर्देश ३ ४३१ ब, चित्र ३ ४३२। चैत्यचैत्यालय २ ३०३ अ।

मान्धाता—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।

मान्यखेट—३ २९६ अ, अकालवर्ष १ ३१ अ, इतिहास १ ३१५ अ।

मान्याईता अधिकार—ब्राह्मण ३ १९६ ब।

माप—३ २२६ अ।

मापिकी—३ २९६ अ।

माया—३.२९६ अ, वेदात ३ ५९६ ब।

माया कषाय—आर्जव १.२७२ अ, कषाय २ ३५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०, १.१६१, रागद्वेष कषाय २ ३९ अ। प्ररूपणा—बध ३.१०५, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८२, उदयस्थान १ ३९३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, त्रिसयोगी भग १ ४०७ अ। सत् ४ २३२, सख्या ४ १०५, ४ ११७, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११२, अतर १ १५, भाव ३ २२१ अ, ३ २२३, अल्पबहुत्व १ १४९, भागाभाग ४ ११७।

मायाकांडक—काडक २ ४२ अ।

मायाक्रिया—क्रिया २ १७४ ब।

मायाक्षर—पदस्थ ध्यान ३ ७ ब।

मायागता चूलिका—श्रुतज्ञान ४ ६९ अ।

माया प्रकृति—(प्ररूपणा)—प्रकृति ३ ८८, ३ ३४१, स्थिति ४ ४६१, अनुभाग १ ९४ अ-ब, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७, बधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९५, त्रिसयोगी भग १ ४०१ ब। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

मायाप्रायश्चित्त—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।

मायाशक्ति—कषाय २ ३८ अ।

मायाशल्य—माया ३ २९६ अ, शल्य ४.२६ ब।

मायी—आहार दोष १ २९१ अ, जीव २.३३३ ब।

मायूरी—३ २९४ ब, विद्या ३ ५४४ अ।

मार—३ २९४ ब, भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ। नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४०। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

मारण—मन्त्र ३.२४५ ब, राक्षसवश १ ३३८ अ।

मारणांत सल्लेखना—सल्लेखना ४.३८६ अ।

मारणांतिक कषाय—मरण ३ २८७ ब।

मारणांतिक वेदना—मरण ३ २८७ ब।

मारणांतिक समुद्घात—निर्देश ४ ३४३, उपपाद १ ४२७ ब, क्षेत्र २ १९६ अ, क्षेत्र प्ररूपणा २ १९७-२०७, जन्म २ ३१६ ब, मरण ३ २८६ अ, विशुद्धि ३ ५७० अ, सक्लेश ३ ५७० अ, सत्त्व ४ ३४३, सल्लेखना ४ ३८५ ब, सासादन ४ ४२५ अ, स्पर्शन प्ररूपणा ४ ४७७-४९४।

मारसिंह—३ २९६ ब।

मारा—नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २.५८०, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १ २६३।

मारीच—३.२९६ ब।

मारुतचारण ऋद्धि—ऋद्धि १.४५२ ब।

मारुत-वेग—बलदेव ४ १६ अ।

मारुति-धारणा—वायु ३ ५३५ अ।

मार्कंडेय—हरिवश १ ३४० अ।

मार्ग—३ २९६ ब, मिथ्यादर्शन ३ ३०० अ।

मार्गण—सल्लेखना ४ ३९० ब।

मार्गणा—३ २९६ ब, ३ २९७ अ, ऊहा १ ४४५ ब, कषाय २ ३५ ब।

मार्गणास्थान—स्थान ४ ४५२ ब।

मार्ग दर्शनार्य—आर्य १ २७५ अ।

मार्गप्रभावना—प्रभावना ३ १३९ ब।

मार्गप्रासुक—विहार ३ ५७५ अ।

मार्गयथानुमार्ग—श्रुतज्ञान ४ ६० अ।

मार्गरुचि—सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।

मार्गवाद—मार्गणा ३ २९८ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।

मार्ग-सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब।

मार्ग-सम्यक्त्वार्य—आर्य १ २७५ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब।

मार्गिणी—तीर्थंकर नमिनाथ २ ३८८।

मार्गोपसंयत—समाचार ४ ३३७ अ।

मार्जार—श्रोता ४ ७४ ब।

मार्दव—सयम ४ १३९ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७८ ब।

मार्दव धर्म—मार्दव ३ २९८ अ, सयम ४ १३९ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ ब।

मार्दवधर्म-लोक—मार्दव ३ २९८ ब।

मालक—३ ५४४ अ।

मालव—३ २९९ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

मालवा—३ २९९ अ, आशाधर १ २८० अ, मागध देश इतिहास १ ३१० ब, १ ३११ अ, १ ३१५।

माला—स्वप्न ४ ५०४ ब।

मालांग—३ २९९ अ।

मालांग जातीय कल्पवृक्ष—वृक्ष ३ ५७८ अ।

माला निमित्तज्ञान—ऋद्धि १ ४४८।

मालारोहण—३ २९९ अ, आहार दोष १ २९१ अ, उद्दिष्ट १ ४१३ अ, वसतिका दोष ३ ५२९ अ।

मालास्वप्न—स्वप्न ४ ५०४ अ।

मालिकोद्वहन—३.२९९ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२१ ब।

मालिनी—व्यतरेंद्र गणिका ३ ६११ ब।

माली—राक्षसवश १.३३८ ब।

माल्य—२.२९९ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ।

माल्यकल्लीवनोपांत—मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

माल्यवती - ३ २९९ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

माल्यवान—२.२९९ ब, यदुवश १ ३३७, राक्षसवश १ ३३८ ब।

माल्यवान्—३ २९९ ब, गजदत—निर्देश ३ ४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४५६ ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४५२ ब, वर्ण ३ ४७७, कूट व देव ३.४७२। गजदत का कूट—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७। द्रह—निर्देश ३ ४५६ ब, नामनिर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अकन ३.४४४, ३.४५७, ३ ४६४ के सामने। नाभिगिरि—निर्देश ३ ४५२ ब। नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४५२ ब, वर्ण ३ ४७७।

माषफल—३ २९९ ब।

माषवती—३.२९९ ब। मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

मास—३.२९९ ब, काल का प्रमाण २ २१६ अ-ब।

मासिक धर्म—सूतक ४ ४४३ अ।

मासैकवासिता—३ २९९ ब।

माहिषक—३.२९९ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

माहिष्मती—मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

माहेंद्र—३.२९९ ब, चक्रवर्ती ४.१० ब, नारायण ४ १८ ब। विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।

माहेंद्र (देव)—निर्देश ४.५१० ब, अवगाहना १.१८० ब। अवधिज्ञान १.१९८ ब, आयु १ २६७, आयुबध के योग्य परिणाम १.२५८ अ। इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, उत्तरेन्द्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, अवस्थान ४ ५२० ब, चिह्न आदि ४.५११ ब, विमान नगर व भवन ४ ५२०-५२१।

माहेंद्र (देव प्ररूपणा)—बध ३.१०२, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८ ४.३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१९१, सख्या ४.९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव २.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५।

माहेंद्र (स्वर्ग)—निर्देश ४.५१४ ब, उत्तर विभाग ४.५२० ब, पटल ४ ५१७, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१७, ४ ५२०, अवस्थान ४ ५१४ ब, अकन ४.५१५।

मिट्टीसम श्रोता—उपदेश १ ४२५ ब, श्रोता ४ ७४ ब।

मित संभाषण—३ २९९ ब, समिदी ४ ३४० अ-ब।

मित्र—नक्षत्र २ ५०४ ब, सगति ४.१२० अ, स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४ ५१९ ब, देव आयु १.२६७।

मित्रक—३.२९९ ब, पुन्नाट संघ १.३२७ अ।

मित्रता—संगति ४.१२० अ।

मित्रनंदि—३ २९९ ब, इतिहास १ ३२८ अ।

मित्रफल्गु—गणधर २.२१३ अ।

मित्रभाव—तीर्थंकर अभिनदननाथ २.३९१।

मित्रयज्ञ—गणधर २.२१२ ब।

मित्रवीर—३ २९९ ब, पुन्नाट संघ १.३२७ अ, इतिहास १ ३२८ ब।

मित्रवीर्य—तीर्थंकर सुमतिनाथ २.३९१।

मित्रसेना—तीर्थंकर अरनाथ २.३८०।

मित्राग्नि—गणधर २.२१२ ब।

मिथिला—३.२९९ ब, तीर्थंकर नमिनाथ, मल्लिनाथ २.३७९, नारायण ४.१८ अ, हरिवश १.३४० अ।

मिथ्या अनेकांत—अनेकात १ १०५ ब।

मिथ्या अवधिज्ञान—अवधिज्ञान १ १८७ अ।

मिथ्या अहंकार—कर्ता २ २०३ अ।

मिथ्या उपदेश—उपदेश १.४२४ अ।

मिथ्या एकांत—एकात १ ४५९ ब, १ ४६३ अ-ब, १.४६४ अ-ब।

मिथ्या कर्ता-कर्म—कर्ता २ २२ अ।

मिथ्याकार—समाचार ४.३३६ ब।

मिथ्याज्ञान—अज्ञान १ ३७ अ, अध्यवसान १ ५२ ब, सम्यग्ज्ञान ३ २६३ अ—२६७।

मिथ्याचारित्र—अध्यवसान १ ५२ ब, चारित्र २.२८३ अ।

मिथ्यात्व—अज्ञान १.३७ अ, अंतरायाम १.४४१ अ, अशुभोपयोग १.४३३ ब, उपशम १.४३८ ब, एकान्त १ ४६४ अ, कर्ता-कर्म २.२२ ब, २.२३ अ, कारक २.५० ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१ ब, ज्ञान-दर्शन (मिथ्या) २ २६४ अ, त्रिधाकरण १.४३८ ब, व्यवहार नय २.५६४ अ, सासादन (काल) २.९५ अ,ब ४.४२६ अ।

मिथ्यात्व क्रिया—क्रिया २.१७४ ब।

मिथ्यात्व प्रकृति (कर्म)—आबाधा १.२४९ अ, मोहनीय ३.३४२ ब, ३ ३४३ अ, सर्वघाती १.९३ ब। प्ररूपणा

—प्रकृति ३ ८८, ३ ३४१, स्थिति ४.४६१, अनुभाग १ ९३ ब, १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, ३ १७८ ब, बधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्व ४ २७८ सत्त्वस्थान ४ २९५, स्थिति-सत्त्व स्थानो का अल्पबहुत्व १ १६५ ब। त्रिसयोगी भंग १ ४०१ ब। उपशम १ ४३८ ब, क्षय २ १७९ अ, सक्रमण ४ ८५ अ, ४.८६ अ, ४ ८७ अ-ब, ४.८८ अ, अल्पबहुत्व १.१६९।

मिथ्यात्व प्रत्यय—उदय ३ १२७-१३०।

मिथ्यात्वादिक—ग्रन्थ २ २७३ अ।

मिथ्यादर्शन—३ ३०० अ, अध्यवसान १ ५३ अ, अनत १ ५४ ब, अनतानुबधी १ ६० अ, अवधिज्ञान १ १९४ ब, करण चिह्न १ १९२ ब, प्रत्यय ३ १२६ अ, दर्शनावरण ४.३४९ ब।

मिथ्यादर्शन क्रिया—क्रिया २.१७४ ब।

मिथ्यादर्शन प्ररूपणा—बध ३ १०७ ब, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८६, उदयस्थान १ ३९३, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८४, सत्त्व-स्थान ४ ३०१-४ ३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०८। सत् ४ २६० सख्या ४ १०९ क्षेत्र २ २०६, स्पर्शन ४ ४९३, काल २ ११९, अन्तर १ २१, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५२।

मिथ्यादर्शन वाक्—वचन ३ ५९७ ब।

मिथ्यादृष्टि—३ ३०१ ब, अज्ञानी १ ३७ अ, २ २७३ अ, अधश्रद्धानी (श्रद्धान) ४ ४५ अ, अभव्य (भव्य) ३ २२३ ब, अवधिज्ञान १ १९० अ, १ १९४ ब, आगमार्थ ग्रहण १ २३२ अ-ब, आरोहण-अवरोहण २ २४७, उपदेश १ ४२६ अ, उपशम १ ४३८ ब, करण दशक २ ६ अ, कर्ता-कर्म २ २२ ब, २.२३ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ अ, कारक (भेदाभेद) २ ५० ब। गति गति (कालाबधि का अल्पबहुत्व) १ १६१। ज्ञान २ २५७ ब, ज्ञानी (अज्ञानी) २ २७३ अ, चेतना (कर्म व कर्मफल) २ २९७ ब, २.२९९ ब, दशकरण २ ६ अ, धर्मध्यान २ ४८२ अ, नय २ ५२६ अ, निंदा २ ५८९ अ, परिषह ३.३७। भव्य (अभव्य) २ २२३ ब, राग ३ ३९८ ब, ३ ३९९ अ-ब, शास्त्र-ज्ञान (ज्ञान) २ २६५ ब, २ २६७, श्रद्धान ४.४५ अ, ४.४६ अ, श्रुतकेवली (साधु) ४.५६ अ, सक्रमण ४.८७ अ-ब, समुद्घात ४.३४३ अ।

मिथ्यादृष्टि (प्ररूपणा)—बध ३.९७, बंधस्थान ३.१०९ उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३९२ अ, उदीरण १.४११ अ, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८७, ४.२९७, ४ ३०४, त्रिसयोगी भग १ ४०५ ब। सत् ४ १६१, सख्या ४ ९४, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २.९९, अन्तर १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४२ ब।

मिथ्या नय—नय २ ५२०, २.५२४ अ।

मिथ्या मत—एकात १ ४६४ ब।

मिथ्या शल्य—शल्य ४ २६ ब।

मिथ्या श्रुतज्ञान—श्रुतज्ञान ४.५९ ब।

मिथ्याहकार—कर्ता २.२३ अ।

मिथ्योपदेश—उपदेश १ ४२४ अ।

मिनट—३ ३०७ अ, काल का प्रमाण २ २१७ अ।

मिश्र—३ ३०७ अ, अनुकपा १ ६९ ब, अनुभव १.८६ अ। उपयोग १ ४३१ ब, काय २ ४३ ब, काययोग २ ४६ ब, १ ४७२ अ-ब, काल २ ८० अ, मिश्र गुणस्थान ३ ३०७ अ, समुद्घात ४.३४३ अ।

मिश्र काययोग—आयु बध १ २६३ ब, औदारिक १ ४७२ अ-ब, काय (पर्याप्त) २ ४६ ब, वैक्रियिक ३ ६०४ अ, प्ररूपणा—बंध ३ १०४, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३८०, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०७ अ। सत् ४.२१८, सख्या ४.१०३, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २.१०८, अतर १.१३, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४८।

मिश्रकाल—काल २ ८० अ।

मिश्रकेशा—३ ३०७ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६८, ३ ४६९।

मिश्र गुणस्थान—३.३०७ अ, दे० सम्यग्मिथ्यादृष्टि।

मिश्र तद्व्यतिरिक्त—अंतर १ ३ ब।

मिश्र दोष—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ, वसतिका ३ ५२८ ब।

मिश्र द्रव्य—सहनानी २ २१९ अ।

मिश्र नोकर्म द्रव्यबंधक—बधक ३ १७९ अ।

मिश्र पाहुड—प्राभृत ३ १५६ ब।

मिश्रपूजा—पूजा ३ ७४ ब।

मिश्रप्रकृति—दे. सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति।

मिश्र बंधक—बंधक ३.१७९ अ।

मिश्र मत—मीमासादर्शन ३.३११ अ।

मिश्र मोहनीय—सक्रमण ४.८६ अ, दे० सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति।

मिश्रयोग—आयुबध १ २६३ ब, औदारिक १ ४७२ अ-ब, काय (पर्याप्ति) २ ४६ ब, वैक्रियिक ३ ६०४ अ। प्ररूपणा—बध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८०, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०७ अ। सत् ४ २१९, सख्या ४.१०४, क्षेत्र २.२०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २ १०८, अतर १ १३, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४८।

मिश्रयोनि—योनि ३ ३८७ अ।

मिश्रशरीर काल—उदयस्थान १ ३९७।

मिश्रशरीर पर्याप्तिकाल—उदयस्थान १ ३९७।

मिश्रशल्य – शल्य ४ २६ ब।

मिश्रश्रद्धा—मिश्र (गुणस्थान) ३ ३०७ ब।

मिश्रितश्रेणीव्यवहार गणित—गणित २.२३१ अ।

मिश्रानुकपा—अनुकपा १ ६९ ब।

मिश्रानुभव—अनुभव १ ८६ अ।

मिश्रोपयोग—१ ४३१ ब।

मिहिरकुल—३ ३१० ब, हूनवश १ ३११ अ-ब, १ ३१५ अ।

मीना—तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ २ ३८८।

मीनार्या—तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ २ ३८८।

मीमांसा—३ ३११ अ, ऊहा १ ४४५ ब, विचय ३.५४९ ब।

मीमांसा दर्शन—३ ३११ अ, एकाती १ ४६५ अ-ब, दर्शन २ ४०३ अ।

मीमांसानुक्रमणी – मीमासादर्शन ३ ३११ अ।

मीमांसा न्यायप्रकाश – मीमासादर्शन ३ ३११ अ।

मीमांसापरीक्षा—अतिचार १ ४४ अ।

मील—क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ ब।

मुज—३ ३१३ अ, भोजवंश १ ३१० अ।

मुड—३ ३१३ अ, एकाती १ ४६५ ब, क्रियावादी २.१७५ ब। मगधदेश इतिहास १ ३१२, १ ३१३।

मुकुटसप्तमी व्रत—३ ३१३ अ।

मुकुद—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

मुक्त जीव – अल्पबहुत्व १ १४२ ब, उत्पादादि १.३६२ ब, जीव २ २३४ ब, धर्माधर्म द्रव्य २ ४८९ अ, मोक्ष ३.३२३ अ, ३ ३२४ अ, शरीर (सल्लेखना) ४.३९७ ब। सत् प्ररूपणा ४ १६५, सुख ४.४३१ अ, ४.४३३ अ।

मुक्त जीवराशि—सहनानी २ २१९ अ।

मुक्तदत—भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ।

मुक्तावली व्रत – व्रत ३ ३१३ अ।

मुक्ताशुक्ति कर्म – कर्म २ १३५ अ।

मुक्ताशुक्ति मुद्रा—मुद्रा ३ ३१३ ब, २ १३५ अ।

मुक्ताहर—३.३१३ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

मुक्ताहार—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

मुक्ति—दे. मोक्ष।

मुख—३ ३१३ अ, गणित २ २२९ ब, २.२२० ब।

मुखधन—गणित २ २२९ ब।

मुखनिर्विष ऋद्धि – ऋद्धि १.४४७, १.४५५ ब।

मुखवस्त्रिका—श्वेताबर ४ ७९ ब।

मुखस्थ कमल—पदस्थ ध्यान ३ ६ ब।

मुख्य – ३ ३१३ ब, गौण १ २३२ अ, स्याद्वाद ४ ४९९ अ।

मुख्य गणधर—तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३८७।

मुख्य-गौण व्यवस्था—निश्चय-व्यवहार २ ५६८ अ, सामान्य ४ ४१४ अ, स्याद्वाद ४ ४९९ अ।

मुख्य धर्मध्यान—धर्मध्यान २.४७९ अ।

मुख्य मंगल—मगल ३ २४१ ब।

मुख्य व्यवस्था—निश्चय-व्यवहार २ ५६८ अ, सामान्य ४ ४१३ अ, स्याद्वाद ४ ४९९ अ।

मुग्ध बोध—इतिहास १.३४० ब, व्याकरण ३ ६१७ ब।

मुद्रा—३ ३१३ ब, कृतिकर्म २.१३३ ब, २ १३५ अ, मत्र ३ २४५ ब।

मुद्राकर्म—अनुयोग १.१०१ ब।

मुनि—३ ३१३ ब। विशेष दे. साधु।

मुनिगुप्त—गणधर २ २१२ ब।

मुनिदत्त—गणधर २.२१२ ब।

मुनिदेव—गणधर २ २१२ ब।

मुनि प्रायश्चित्त (शास्त्र)—३ ३१३ ब, इन्द्रनदि १.२९९ ब।

मुनिभद्र—३ ३१४ अ, इतिहास १ ३३२ ब।

मुनियज्ञ – गणधर २ २१२ ब।

मुनि-लिंग – लिग ३.४१७ अ, ३ ४१९ ब।

मुनिसुव्रत—तीर्थंकर २ ३७९-३९१, भावि तीर्थंकर २.३७७।

मुनिसुव्रत काव्य—इतिहास १.३४५ अ।

मुनिसुव्रतनाथ—३.३१४ अ, राक्षसवश १ ३३८ अ, वानरवश १.३३८ ब, हरिवश १ ३३९ ब, १ ३४० अ।

मुनिसुव्रत पुराण—३ ३१४ अ, इतिहास १ ३४७ ब।

मुन्नालाल—३ ३१४ अ, इतिहास १ ३३४ ब।

मुमुक्षु—३.३१४ अ।

मुरजमध्य व्रत—३ ३१४ अ।
मुरब्बा—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०२ ब।
मुररा—३ ३१४ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।
मुरारी मिश्र—मीमांसादर्शन ३.३११ अ।
मुरुडवंश—३.३१४ अ, इतिहास १ ३१० ब, १.३१३।
मुलगित (वैद्यराज)—हरिदेव ४ ५३० अ।
मुष्टिविधान व्रत—३ ३१४ अ।
मुहांवापुर—३.३१४ अ।
मुहूर्त—३ ३१४ ब, काल का प्रमाण २.२१६ अ-ब।
मू—मूल की सहनानी २.२१८ ब।
मूक—३.३१४ ब।
मूककेवली—केवली २.१५७ अ।
मूक दोष—व्युत्सर्ग दोष ३.६२३ अ।
मूक संज्ञा—३ ३१४ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।
मूडबिद्री—३ ३१४ ब।
मूढ—३ ३१४ ब, कर्ताकर्म २ २२ ब, मिथ्यादर्शन ३ ३०० अ, ३ ३०१, अ, मोक्षमार्ग ३ ३३७ ब, राग ३ ३९८ अ।
मूढता—३.३१५ अ, अमूढदृष्टि १ १३२ ब, १ १३३ अ।
मूढशिष्य—उपदेश १ ४२५ ब।
मूढ श्रोता—उपदेश १.४२५ ब।
मूत्र—३ ३१६ अ, समिति (प्रतिष्ठापना) ४ ३४१ ब।
मूर्ख श्रोता—उपदेश १.४२५ ब।
मूर्च्छन—समूर्च्छिम ४.१२६ ब।
मूर्च्छा—३ ३१६ अ, परिग्रह ३ २४ ब, ३.२५ अ, सुख (हिंसा) ४ ५३२ ब।
मूर्त—३ ३१६ अ, गुण २.२४४ ब, जीव २ ३३२ ब, द्रव्य २.४५६ अ, बंध ३ १७३ अ, संसारी जीव (मन.पर्यय ज्ञान) ३ २६३ अ, सापेक्ष धर्म १ १०९ अ, ४ ३२३ ब, स्पर्श ४ ४७६ ब।
मूर्तत्व—मूर्त ३ ३१६ अ।
मूर्ति—३.३१९ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ, पूजा ३ ७७ अ-ब, मूर्तपरिणाम ३.३१६ ब।
मूर्तिक पदार्थ—अवधिज्ञान १ १९६ अ।
मूल—३.३१९ अ, गणित २.२२३ अ, तीर्थंकर सुविधिनाथ २.३८०, नक्षत्र २.५०४ ब, सहनानी २.२१८ ब, हरिवंश १ ३४० अ।
मूलक—३.३१९ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।
मूलकर्म—३.३१९ अ, आहार दोष १.२९१ ब, वसतिका दोष ३.५२९ ब।
मूलक्रिया—३.३१९ अ।
मूलगुण—३ ३१९ अ, चारित्र (संयत) २ २९३ अ, श्रावक ४.५० ब, साधु ४ ४०४ अ।
मूलगुण प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३ १३३ अ।
मूल प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३.१०८, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८८, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २८७, त्रिसंयोगी भंग १ ३९९। संक्रमण ४.८४ अ, अल्पबहुत्व १ १७१।
मूलप्रलंब—ताल प्रलंब २ ३६६ अ।
मूल प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त ३ १६१ ब।
मूल बीज—वनस्पति ३ ५०२ ब, ३.५०६ अ।
मूलराज—३ ३१९ अ।
मूलराशि—३ ३१९ अ, गणित २ २२२ ब।
मूलवीर्यक—विद्या २ ५४४ अ, विद्याधरवंश १.३३९ अ।
मूलसंघ—३ ३१९ अ, परिचय १ ३१५ ब, १.परि०/२ २, विचार १ परि०/२.१, पट्टावली १ ३१६-३१७। विभाजन १ ३१७ ब, १.परि०/२-२, ४-१। श्वेताम्बर-दिगम्बर भेद १ परि २ ३। जैनाभासी संघ १.३१९ अ।
मूलस्थान—३.३१९ अ।
मूलस्थान प्रायश्चित्त—आहार १ २८८ ब, प्रायश्चित्त ३ १६१ ब।
मूला—३.३१९ ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।
मूलाचार—३ ३१९ ब, इतिहास १.३४० ब।
मूलाचारप्रदीप—इतिहास १ ३४६ अ।
मूलाराधना—३.३१९ ब, आशाधर १ २८१ अ।
मूलाराधनादर्पण—३ ३१९ ब। इतिहास १ ३४४ अ।
मूलितल गच्छ—द्राविड संघ १ ३२० ब, १.३२२ अ।
मूलोत्तर प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ १०८, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३८८, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२८७, त्रिसंयोगी भंग १ ३९९। संक्रमण ४ ८४ अ, अल्पबहुत्व १.१७१।
मूष—मोक्ष (मोम का सांचा) ३ ३२९ ब।
मूसल—३ ३१९ ब, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ अ।
मृक्षित दोष—आहार दोष १ २९१ ब।
मृग—३ ३१९ ब।
मृगचारित—३ ३१९ ब। स्वच्छंद साधु ४.५०३ ब।
मृगशिरा—नक्षत्र २ ५०४ ब, तीर्थंकर संभवनाथ २ ३८०

मृगशीर्ष – ३.३१९ ब, नक्षत्र २.५०४ ब।
मृगांक—३ ३१९ ब, इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ, बलदेव ४ १७ ब।
मृगारिदमन - राक्षसवंश १.३३८ अ।
मृगावती—नारायण ४.१८ ब।
मृगोद्धर्मा—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।
मृत शरीर—अपवाद (क्षपक) १.१२२ अ, मोक्ष ३.३२८ ब। सल्लेखना ४ ३९६ ब।
मृतसंजीवनी – ३ ३१९ ब, विद्या ३ ५४४ अ।
मृत्तिका-नयन यंत्र—यंत्र ३.३५७।
मृत्तिका-सम श्रोता—उपदेश १ ४२५ ब।
मृत्युंजय यंत्र—यंत्र ३ ३५७।
मृत्यु—नरक २ ५७४, मरण ३ २७८ ब।
मृत्युभय—३.२०६ ब।
मृदंग—लोक (ऊर्ध्व) ३.४३८ ब, वैराग्य ३ ६०७ ब।
मृदंगमध्य व्रत—३.३१९ ब।
मृदंगाकार—३ ३१९ ब, क्षेत्रफल गणित २.२३४ अ।
मृदु भाषण—गुरु २ २५२ ब, सत्य ४.२७२ ब, समिति ४ ३४० ब।
मृदुभाषिणी—व्यंतरेंद्र गणिका ३.६११ ब।
मृषानंद—रौद्रध्यान ३ ४०७ ब, ३ ४०८ अ।
मृषा योग – अनुभय वचन ३ ३८० ब, असंज्ञी ३ ३८० ब, असत्य – दे० असत्य, प्रत्यय ३ १२६ अ, मनोयोग ३ ३८० अ, वचनयोग १ २०९ अ, ३ ४९७ ब, ४ २७३ अ। प्ररूपणा—बंध ३ १०४, बंधस्थान ३.११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४ २१२, संख्या ४ १०२, क्षेत्र २.२०२, स्पर्शन ४ ४८४, काल २ १०८, अंतर १ १२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४७।
मृषावाद—प्रत्यय ३ १२६ अ।
मेखलापुर—३ ३२० अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
मेघंकरा—सुमेरु के कूट की दिक्कुमारी– निर्देश ३ ४७३ ब, अंकन ३ ४५१।
मेघंकरी—३ ३२० अ।
मेघ—३.३२० अ, तीर्थंकर संभवनाथ, अभिनंदननाथ, विमलनाथ २ ३८२, मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव —निर्देश ३ ४७५ अ, अंकन ३ ४६४, यमकगिरि का रक्षक देव ३ ४५३ अ। यदुवंश १ ३३७, राक्षसवंश १ ३३८ अ। स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४ ५१९ ब, देव आयु १.२६७।
मेघकूट—३.३२० अ। यमकगिरि—निर्देश ३ ४५३ अ, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७। विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
मेघचंद्र– ३ ३२० अ, नंदिसंघ १ ३२३ अ-ब, अभयनंदि १ १२७ अ, इतिहास १ ३२९ ब।
मेघचंद्र त्रैविद्य—प्रथम—देशीय गण १.३२५, इतिहास १ ३३० ब। द्वितीय—देशीय गण १ ३२५ इतिहास १ ३३१ अ।
मेघचारण ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १.४५२ ब।
मेघध्वान—राक्षसवंश १.३३८ अ।
मेघनाद—३ ३२० अ।
मेघमाल—३ ३२० अ, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ।
मेघमाला व्रत—३ ३२० अ।
मेघमालिनी—३.३२० अ, सुमेरु पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७३ ब, अंकन ३.४५१।
मेघरथ—३ ३२० अ, कुरुवंश १.३३६ अ। तीर्थंकर शान्तिनाथ २ ३७८। तीर्थंकर सुमतिनाथ २.३८०।
मेघराजी—उत्तरेंद्रों की ज्येष्ठा देवी ४ ५१३ ब।
मेघवती—३.३२० अ, सुमेरु के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७३ ब, ३ ६१४।
मेघवाहन—३ ३२० ब, राक्षस वंश १ ३३८ अ-ब, विद्याधरवंश १ ३३९ ब।
मेघा—नरक पृथिवी – निर्देश २ ५७६ अ, पटल २ ५७९, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध २ ५७८, २ ५७९। विस्तार २ ५७६, २.५७८, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६३। प्ररूपणा – बंध ३ १००, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ १७० संख्या ४ ९५, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४ ४७९, काल २ ७१, अंतर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४।
मेघानीक—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।
मेचक—३ २२० अ।
मेढासम श्रोता – उपदेश १.४२५ ब।
मेद—३ २२० ब, औदारिक शरीर १.४७२ अ।
मेदार्य—गणधर २.२१३ अ।

मेधा—३.३२० ब।
मेधावी—इतिहास १.३३३ अ, १.३४६ अ।
मेमंबर पुराण—इतिहास १.३३२ अ, १.३४४ ब।
मेय—३.३२० ब।
मेरक—३.३२० ब, तीर्थंकर विमलनाथ २.३९१, प्रतिनारायण ४.२० अ।
मेरु—३.३२० ब, गणधर २.२१२ ब, वानरवंश १.३३८ ब, सुमेरु ४.४३६ ब, ४ ४३७ अ।
मेरुकीर्ति—३.३२० ब, नंदिसंघ १.३२३ अ, इतिहास १.३२९ ब।
मेरुचंद—नंदिसंघ १.३२४ अ, इतिहास १.३३४ अ।
मेरुधन—गणधर २.२१२ ब।
मेरुपंक्ति व्रत—३.३२० ब।
मेरुभूति—गणधर २.२१२ ब।
मेरुषेणा—तीर्थंकर अभिनंदननाथ २ ३८८।
मेषशृंग—कषाय (माया) २.३८ अ, तीर्थंकर नेमिनाथ २.३८३।
मेषसम श्रोता—उपदेश १.४२५ ब।
मेहेसरचरिउ—इतिहास १.३४५ ब।
मैगस्थिनीज—३ ३२० ब।
मैत्री—३ ३२१ अ, अनुकंपा १ ६९ अ।
मैत्रीभाव—सामायिक ४ ४१६ ब।
मैत्रीभावना—३ ३.२१ ब, सामायिक ४ ४१५ ब।
मैथिलीकल्याणम्—इतिहास १.३४४ अ।
मैथुन—३ ३२१ अ, प्रत्यय ३.१२६ अ, प्रविचार ३.१४९ अ, ब्रह्मचर्य ३ १९२ ब, ३ १९३ अ-ब, वेदभाव ३ ५८३ ब, हिंसा ४ ५३२ ब।
मैथुनशाला—ज्योतिष देवो के प्रासादों मे २.३५१, भवनवासी देवो के भवनो ३.२१० ब।
मैथुन संज्ञा—संज्ञा ४.१२० ब, ४ १२१ अ, स्त्री ४ ४५० अ।
मैनासुंदरी—३.३२१ अ।
मोक—३ ३२१ अ मनुष्यलोक ३ २७५ अ।
मोक्ष—३ ३३१ अ, अग्र्य १.३९ अ। उपयोग १ ४३२ अ, कर्मोदय २.७४ ब, चक्रवर्ती ४ १० अ। चारित्र २ २८५ ब, धर्मध्यान २ ४८४ अ, पुरुषार्थ ३.७० ब, मोक्षमार्ग (प्रत्यय) ३ ३३४ ब, ३ ३३५ अ, राग ३.३९६ ब, वर्णव्यवस्था (उच्च-नीच कुल) ३ ५३४ अ, सुख ४ ४३१ ब, ४.४३२ ब, ४.४२४ अ।
मोक्ष पाहुड—३ ३३२ अ, इतिहास १.३४० ब।
मोक्ष पुरुषार्थ—पुरुषार्थ ३.७० ब।
मोक्षमार्ग—३.३३२ अ, अभ्यास १.१३१ ब, अवधिमनःपर्यय ज्ञान १.१८९ अ, कारण (कर्मोदय) २.७४ ब, कारण (जीव परिणाम) २.६८ अ, धर्म (निश्चय) २.४७४ अ, विनय ३.५५१ ब, सामायिक (साम्य) ४.४१५ ब।
मोक्षमार्गप्रकाशक—३.३४० अ, इतिहास १.३४८ अ।
मोक्षमार्ग यंत्र—यंत्र ३.३५७।
मोक्षविनय—विनय ३.५४८ अ।
मोक्षशास्त्र—तत्त्वार्थसूत्र ३ २५६ ब।
मोक्षसप्तमी व्रत—३.३४० अ।
मोड़े वाली गति—विग्रह गति ३.५४१ ब।
मोद—एकांतवादी १.४६५ ब, अज्ञानवाद १.३८ ब।
मोद क्रिया—मंत्र ३.२४६ ब, संस्कार ४ १५१ अ।
मोष—वचन ३.४९८ अ।
मोषवचन—वचन ३.४९८ अ।
मोषवाक्—वचन ३.४९८ अ।
मोह—३.३४० अ, अशुभोपयोग १.४३३ ब, उपयोग १ ४३३ अ-ब, कर्ताकर्म २.२२ ब। करुणा २.१५ अ, गुणस्थान २ २४६ अ, पुण्य ३.६१ अ, प्रत्यय ३ १२६ अ, मूर्त ३.३१८ ब, राग ३ ३९५ ब, ३ ४१० अ, विभाव ३ ५५८ ब, वेद ३ ५८३।
मोहज भाव—औदयिक भाव १.४०८ ब।
मोहन—ध्यान २ ४९७ अ, राक्षसवंश १ ३३८ अ।
मोहनीय कर्मप्रकृति—३.३४० ब, आबाधा १.२४९ अ, उदयबंध कारण-कार्य भाव ३ १७६ अ, उपशम १.४३७-४४०, क्षय २.१७८ ब, वेदनीय कर्म ३ ५९४ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति ४ ४६१, स्थितिसत्त्व स्थानो का अल्पबहुत्व १.१६५ ब, अनुभाग १ ९४ ब, अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६६, प्रदेश ३.१३६, प्रदेशबंध का अल्पबहुत्व १ १४२ ब, बंध ३ ९७, बंध संबंधी नियम ३.९३, ३ ९४ अ, बंधस्थान ३.१०९ अ, उदय १ ३७५ उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदयस्थान १.३८९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८ सत्त्वस्थान ४ २९५, सत्त्वस्थानो का काल २ १२०, सत्त्व की अपेक्षा जीवो की संख्या ४.११७ अ, त्रिसंयोगी भंग १.४०१ ब, संक्रमण ४ ८४ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
मोह-विवेक-युद्ध—इतिहास १ ३४७ अ।
मौखर्य—३.३४४ ब।
मौद्गलायन—३ ३४४ ब, अक्रियावादी बौद्ध १ ३२ अ, एकांती १ ४६५ ब।

मौन—३.३४५ अ, आहार १.२८६ अ, भिक्षा ३.२२९ अ, सत्य ४.२७० ब, सल्लेखना ४.३८९ ब, ४.३९२ ब, सामायिक ४ ४१७ अ।

मौनवृत्ति—सल्लेखना ४ ३९२ ब।

मौनव्रत—३ ३४५ ब।

मौनाध्ययन वृत्ति – सस्कार ४ १५२ ब।

मौनाध्ययन वृत्ति क्रिया—सस्कार ४.१५१ ब।

मौर्यपुत्र—गणधर २.२१३ अ।

मौर्यवश—इतिहास १.३१० ब, १ ३१३।

मौलिक प्रक्रिया—३ ३४५ ब।

म्रक्षित – ३ ३४५ ब, वसतिका दोष ३ ५२९ ब।

म्लेच्छ—निर्देश ३ २७३ ब, ३ ३४५ ब, अंतर्द्वीपज निर्देश ३.३४६ अ, अतद्वीपजो की आयु १.२६४ अ, चक्रवर्ती ४ १५ ब, प्रतिनारायण ४ २० अ, प्रव्रज्या ३.१५० अ, सत् प्ररूपणा ४ १८४।

म्लेच्छ-खंड—निर्देश ३ ४४६ अ, ३.४६२ ब, ३ ४६३ ब, विदेहस्थ ३ ४६० अ, गणना ३.४४५ अ, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४४७, ३.४६४ के सामने, काल-विभाग २.९२ अ।

य

यंत्र—३ ३४७ अ, करणत्रिक (अध.करण) २ ७-९, (अपूर्व-करण) २.१२ ब, मंत्र ३.२४५ ब।

यंत्रपीडन जीविका—४ ४२१ ब।

यंत्रशाला—भवनवासी देवों के भवनो मे ३ २१० ब।

यंत्रेशयंत्र—यत्र ३.३५७।

यक्ष – ३ ३६९ अ, चक्रवर्ती ४.१३ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ, तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३७९। पिशाच जातीय व्यंतर देव ३ ५८ ब। व्यंतर देव—निर्देश ३ ६१० ब, ३ ५८ ब, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१९८ ब, अवस्थान ३ ६१२-६१४, आयु १ २६४। इन्द्र—निर्देश ३ ६११ अ, शक्ति आदि ३ ६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३ ६११ अ। बौद्धाभिमत ३.४३५ अ। प्ररूपणा—बंध ३.१०२, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.१८८, सख्या ४ ९७, क्षेत्र ३ १९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।

यक्षलिक—३ ३६९ अ।

यक्षवर (सागर द्वीप)—३ ३६९ अ। अत से चतुर्थ—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अधिपतिदेव ३ ६१४।

यक्षिणी – तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३७९, तीर्थंकर नेमिनाथ की मुख्य आर्यिका २ ३८८।

यक्षिता—तीर्थंकर अरनाथ की मुख्य आर्यिका २ ३८८।

यक्षेश्वर—३ ३६९ अ, तीर्थंकर अभिनदननाथ का यक्ष २.३७९।

यक्षोत्तम—३ ३६९ अ।

यज्ञ—३ ३६९ अ, अग्नि (आत्मा) १.३५ ब, पूजा ३ ७४ अ।

यज्ञोपवीत—३ ३६९ ब, क्षुल्लक २ १८८ ब, वर्णव्यवस्था ३ ५२३ ब।

यति—३ ३७० अ, अनगार १ ६२ अ।

यतिपूजा - शुभोपयोग १ ४३४ ब।

यतिवर वृषभ—३ ३७० अ।

यतिवृषभ – ३.३७० अ, मूलसघ १.३२२ ब, १ परि०/-२-१; ३ १,५, १.३२२ ब, आर्यमंक्षु १ २७५ ब, उच्चारणाचार्य १ ३५२ अ। इतिहास १ ३२८ ब, १ ३४० ब।

यति सम्मेलन—१.परि०/२-२,७,८।

यत्न—कारण (कर्मव्यवस्था) २ ६८ ब।

यत्नाचार—अहिसा १ २१७ ब।

यत्याचार—३ ३७० अ।

यत्रतत्रानुपूर्वी—आनुपूर्वी १ २४७ अ।

यथाकाल उदय—उदय १ ३६८ अ।

यथाख्यात चारित्र—३ ३७० ब, लब्धिस्थानों का अल्प-बहुत्व १.१६०, सिद्धों का अल्पबहुत्व १ १५३।

यथाख्यात विहार—३ ३७० ब।

यथाख्यात विहार-शुद्धि सयत—३ ३७० ब।

यथाख्यात संयम ३.३७० ब, प्ररूपणा—बंध ३.१०६, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १.३९३ अ, उदीरणा १.४११, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६, त्रिसं-

योगी भंग १ ४०७ ब। सत् ४ २३८, संख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४८९, काल २.११४, अतर १ १७, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १ १५१।

यथाच्छंद मुनि—स्वच्छंद साधु ४ ५०३ ब।

यथाच्छंद श्रोता—उपदेश १ ४२५ ब।

यथाजात—३ ३७० ब।

यथाजातरूपधर—३.३७० ब, निर्ग्रंथ २.६२१ ब।

यथातथानुपूर्वी—आनुपूर्वी १ २४६ ब।

यथानुपूर्व—श्रुतज्ञान ४.६० अ।

यथार्थ—३ ३७१ अ।

यथालब्ध—आहार १ २८८ अ।

यदु—३ ३७१ अ, यदुवंश १ ३३६, हरिवंश १.३४० अ।

यदुवंश—निर्देश १ ३३६, इतिहास १.३३७, हरिवंश १.३४० अ।

यदृच्छा—परतंत्रवाद ३ १२ अ।

यदृष्ट—३ ३७१ अ, आलोचना १ २७७ ब।

यम—३ ३७१ अ, नक्षत्र २ ५०४ ब, भोगोपभोग ३ २३९ अ, यमकगिरि का रक्षक देव ३ ४५३ अ, इस देव के प्रासाद का विस्तार ३.६१५, शुभोपयोग १ ४३३ अ, संयम ४ १३६ ब, सामायिक २ ३०८ ब।

यम (लोकपाल)—३ ३७१ अ, लोकपाल ३ ४९१ ब, आयु १ २६९, ऋद्धि व शक्ति ४ ५१३ अ, दिग्गजेंद्र पर्वतवासी वाहन देव ३ ६१३ अ, ३ ४५३ अ, सुमेरु पर्वत पर भवन ३ ४५० अ-ब, स्वर्गलोक में ४.५१३ अ।

यमक—३ ३७१ अ।

यमकगिरि—निर्देश ३.४५३ अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४५३ अ, वर्ण ३.४८३, गणना ३ ४४५ अ।

यमकायिक—आकाशोपन्न देव २ ४४५ ब।

यमकूट—यमकगिरि—निर्देश ३.४५३ अ, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४, ३.४५७, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४५३ अ, वर्ण ३ ४७७।

यमदंड—३.३७१ अ।

यमदग्नि—३ ३७१ अ।

यमदेव—३.३७१ अ।

यमलोक—३.३७१ अ, अंतकृत १.२ ब।

यमुना—मनुष्य क्षेत्र ३ २७५ ब।

यव—३ ३७१ अ, क्षेत्र का प्रमाण ३ २०४ अ।

यवन—३.३७१ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

यवमध्य—वनस्पति ३.५०९ अ, योगस्थानों में समयों का अल्पबहुत्व १.१६१ ब, अनुभागबंध अध्यवसाय स्थानों की रचना का अल्पबहुत्व १ १७६, सान्तर सिद्धों का अल्पबहुत्व १ १५३ ब।

यवमध्य काल—अद्धा संक्षेप १ ४७ अ, अल्पबहुत्व १ १६१ ब।

यवमध्य क्षेत्र—३ ३७१ अ।

यवमध्य-रचना—याग ३ ३८२ अ।

यवमूरज क्षेत्र—३ ३७१ ब।

यश कीर्ति—३.३७१ ब। प्रथम—नंदिसंघ १ ३२३ अ, १ ३२४ अ, इतिहास १ ३२८ ब। द्वितीय—काष्ठासंघ १.३२७ ब, इतिहास १ ३३० ब। तृतीय—अनन्तकीर्ति १ ५९ ब, इतिहास १ ३३२ अ, १ ३४५ अ। चतुर्थ—इतिहास १.३३२ अ, १ ३४३ ब। पंचम—इतिहास १ ३३१ अ, १.३४६ अ। षष्ठ—इतिहास १ ३३३ अ, १ ३४६ अ। सप्तम—इतिहास १ ३३३ ब।

यश. नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ९६ अ, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९२, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान, ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४। संक्रमण ४.८४ अ, अल्पबहुत्व १.१६९।

यश—३ ३७२ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३.४६९।

यशपाल—३ ३७२ अ, मूलसंघ १ ३१६।

यशस्कांत—मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अंकन ३.४६४।

यशस्तिलकचंद्रिका—३ ३७२ अ, इतिहास १ ३४६ ब।

यशस्तिलकचंपू—३ ३७२ अ, इतिहास १ ३४२ ब।

यशस्वती—कुलकर ४.२३, चक्रवर्ती ४ ११ ब।

यशस्वान्—३ ३७२ अ, किंपुरुषजातीय व्यंतरदेव २.१२५ अ। मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अंकन ३ ४६४।

यशस्विनी—३ ३७२ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६९।

यशस्वी—३ ३७२ अ, कुलकर ४ २३।

यशोदेव—३ ३७२ अ।

यशोधर—३.३७९ अ, चक्रवर्ती ४ १० ब, तीर्थंकर २.३७७,

मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ अ, अकन ३ ४६४। ग्रैवेयक स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अकन ४ ५१५, देव-आयु १ २६८।

यशोधरचरित्र—३.३७२ अ। इतिहास—प्रथम १.३४३ अ। द्वितीय १.३४५ ब। तृतीय १ ३४६ अ। चतुर्थ १.३४६ ब। पंचम १.३४७ ब।

यशोधरा—३ ३७२ अ, कुलकर ४.२३। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३.४६८, ३.४६९।

यशोधर्मा—भोजवंश १.३१० अ।

यशोनंदि—३.३७२ अ, नंदिसंघ १ ३२३ अ, इतिहास १ ३२८ ब।

यशोबाहु—गणधर २.२१२ ब। भद्रबाहु द्वि०—मूलसंघ १ ३१६, इतिहास १.३२८ अ।

यशोभद्र—३ ३७२ अ, मूलसंघ १.३१६ इतिहास १ ३२८ अ।

यशोभद्र सूरि—इतिहास १ ३३० ब।

यशोभद्रा—३.३७२ ब।

यशोरथ—३.३७२ ब।

यशोवती—चक्रवर्ती ४.११ ब।

यशोवर्मा—३ ३७२ ब।

यशोविजय—३.३७२ ब, इतिहास १.३३४ अ, १.३४७ ब।

याग—पूजा ३ ७४ अ, यज्ञ ३.३६९ अ।

याज्ञिक—एकांत १ ४६५ ब।

याज्ञिक मत—३ ३७२ ब। एकांत १.४६५ ब।

याचना—३.३७२ ब, परिषद् ३.३३ ब, ३.३४ अ, भिक्षा ३ २२९ अ।

याचना-परिषह—३.३७२ ब, ३.३३ ब, ३ ३४ अ।

याचनी भाषा—भाषा ३ २२७ अ।

यादव—तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ व नेमिनाथ ३ ३८०।

यादववंश—इतिहास १ ३३७, हरिवंश १.३४० अ।

यान—३ ३७२ ब। देव विमान विविध आकार ४.५११।

यापनीय संघ—इतिहास १.३१९ ब। एकांत (जैनाभासी) १.४६५ अ-ब।

याम—३ ३७२ ब।

यावानुद्देश—३.३७२ ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ।

युक्त—३ ३७३ अ, अनंत २.११५ अ, असंख्यात २ २१४ ब, २ २१५ ब।

युक्ताचारी हिंसा—हिंसा ४ ५३५ ब।

युक्तानंत—अनंत १.५६ ब, २.२१५ अ।

युक्तासंख्यात—असंख्यात १ २०५, २.२१५ ब।

युक्ति—अनुभव १ ८२ ब, अविनाभाव १.२०२ ब। आगम (प्रामाण्य) १ २३६ अ, ऊहा १.४४५ ब, तर्क २ ३६५ अ, न्याय २ ६३३ अ-ब, पद्धति (अभिप्राय) ३.९ ब, मतिज्ञान ३ २५४ ब, स्वभाव ४.५०७ अ।

युक्तिक—यदुवंश १ ३३६।

युक्तिचिंतामणि स्तव—३ ३७३ अ, इतिहास १.३४२ ब।

युक्त्यनुशासन—३.३७३ अ, इतिहास १ ३४० ब।

युक्त्यनुशासनालंकार—इतिहास १ ३४१ ब।

युग—३ ३७३ अ, काल का प्रमाण २ २१६ अ, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ अ, सृष्टिक्रम २ ९१, पूर्णता की तिथि २.३५१ अ।

युगकंधर—३ ३७३ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२१ ब।

युगत—यदुवंश १.३३७।

युगंधर—तीर्थंकर चंद्रप्रभ व पुष्पदन्त २.३७८।

युगपत—३ ३७३ अ, केवलज्ञान २ १४६ ब।

युगप्रतिक्रमण—१.प्रति०/२ २,८।

युगमंधर—तीर्थंकर २ ३९२।

युगल अष्टक—उदय १.३७४ ब।

युगलविरोधी धर्म—अनेकान्त १ १०९ अ।

युगादि पुरुष—३.३७३ अ, कुलकर २.१३० ब।

युग्म—३ ३७३ अ, अनुयोगद्वार (पद) १.१०२ ब।

युतसिद्ध—३ ३७३ अ।

युति—३.३७३ ब।

युधिष्ठिर—३.३७३ ब, कुरुवंश १ ३३६ अ।

युवती—३ ३७३ ब, चक्रवर्ती ४.१३ अ, स्त्री ४.४५० अ।

युवेनच्वांग—३ ३७३ ब।

यूक—३.३७३ ब।

यूनान—३ ३७३ ब।

यूपकेशरी—लवणसागर का पाताल—निर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३ ४७८, अंकन ३ ४६१, चित्र ३.४६२ अ।

योग—३.३७३ ब। निर्देश ३ ३७६ ब, ३ ३७७ अ, अविभाग प्रतिच्छेद १.२०३ अ, ३.२८७ अ-ब, अविभाग प्रतिच्छेदों का अल्पबहुत्व १ १६२, आयु-बंध १.२६३ ब, आस्रव १ २८२ अ, औदारिक शरीर १ ४७२, करण-त्रिक (अनिवृत्तिकरण) २ १३ ब, कायक्लेश २.४७ ब। केवली २.१६४ ब, गुणस्थान २ २४६ अ, ध्यान १.४६६ अ, प्रत्यय ३ १२६ ब, प्रदेशबन्ध ३ १३५ ब, प्राणायाम ३.१५४ ब, बंध ४.१७५ अ, ३.१७८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३७ अ,

लेश्या ३ ४२४ ब। शरीर स्वामित्व ४.७, षट्कर्म-स्वामित्व ४ २६९।

योग (प्ररूपणा)—बध ३.१०४, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.२११, स्वामित्व सत्त्व ३ ३७९, सख्या ४ १०२, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २.१०८, अतर १ ४ अ, १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४७, पचशरीरस्वामित्व अल्पबहुत्व १ १५९ ब।

योग (उपयोग)—उपयोग १ ४३२ ब, अशुभोपयोग १.४३३ ब, शुद्धोपयोग १ ४३१ अ।

योगचंद्र—३ ३८३ ब, इतिहास १ ३३१ ब।

योगत्यागक्रिया—सस्कार ४ १५२ अ।

योगदर्शन—३ ३८४ अ, दर्शन २.४०३ अ।

योगदेव—इतिहास १ ३३३ अ-ब, १ ३४७ अ।

योगद्वार—आस्रव १ २८३ अ।

योगनिग्रह—गुप्ति २ २४८ अ।

योगनिद्रा—निद्रा २ ६१० अ, सम्यग्दृष्टि ४ ३७८ अ।

योगनिरोध—३ ३८५ ब, ध्यान २ ४९६ ब, योग ३ ३८८ ब।

योगनिर्वाणसंप्राप्तिक्रिया—संस्कार ४ १५१ ब।

योगनिर्वाणसाधनक्रिया—सस्कार ४ १५१ ब।

योगपरिवर्तन—काल २ ९५ ब, शुक्लध्यान ४ ३३ अ, सक्राति ४ ९१ अ।

योगप्रत्यय—उदय ३ १२७।

योगमत—एकात १ ८६५ ब।

योगमार्ग—३ ३८५ ब, इतिहास १ ३४२ ब।

योगमार्गणा—दे० योग (प्ररूपणा)।

योगमुद्रा—मुद्रा ३ ३१३ ब।

योगवक्रता—३ ३८५ ब।

योगवर्गणा—योग (अविभाग प्रतिच्छेद) ३ ३८३ अ, अविभाग प्रतिच्छेदो का अल्पबहुत्व १ १६२, जीव-प्रदेशो का अल्पबहुत्व १.१७६, कर्मप्रदेशो का अल्पबहुत्व १ १७६।

योगवार्तिक—योगदर्शन ३ ३८४ अ।

योगशल्य—भावि शलाकापुरुष ४ २६ ब।

योगशास्त्र—३ ३८६ अ, इतिहास १.३४४ अ।

योगसंक्रमण—शुक्लध्यान ४.३३ अ-ब।

योगसंक्राति—शुक्लध्यान ४.३७ ब, संक्राति ४.९१ अ।

योगसग्रह क्रिया—सस्कार ४.१५२ अ।

योगसार—३.३८६ अ, प्रथम (योगेद्र कृत) इतिहास १ ३४१ अ, द्वितीय (अमितगति कृत) इतिहास १.३४२ ब। तृतीय—इतिहास १ ३४६ ब।

योगसूत्र—योगदर्शन ३ ३८४ अ।

योगस्थान—निर्देश—३ ३८१ अ, अविभाग प्रतिच्छेद १.१६२, ३.३८३ ब, अवस्थानकाल २ १२१, योग ३.३८३ ब, स्थान ४ ४५२ ब। प्ररूपणा—सत्, (इन्द्रिय मार्गणा पूरी) १.१६०-१६४, संख्या ४.११६ ब, अल्पबहुत्व १ १६१ ब, १ १७६, भागाभाग ४.११६ ब, स्वामित्व (इन्द्रिय मार्गणा पूरी) ३ ३८२ ब।

योगस्पर्धक—योग ३.३८३ ब।

योगाचार—बौद्धदर्शन ३.१८७।

योगाविभाग-प्रतिच्छेद—योग ३.३८३ अ-ब, अल्पबहुत्व १ १६२ ब।

योगिभक्ति—भक्ति ३.१९८ अ, इतिहास १.३४० ब।

योगी—३ ३८६ अ, जीव २ ३३३ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७६ ब, सुख ४.४३३ ब, स्नातक ४ ४७१ अ।

योगेंदु देव—३ ३८६ अ, इतिहास १ ३२९ अ, १.३४१ अ।

योग्य क्षेत्र—कृतिकर्म २.१३५ ब।

योग्यता—३ ३८६ ब, कारण—(परिणमन) २.६१ अ, (शक्ति) २.५६ अ, २ ६१ अ।

योग्य पात्र—उपदेश १.४२५ ब, पात्र (दान) ३.५२ अ, व्रत ३ ६२५ ब।

योग्य मुद्रा—कृतिकर्म २ १३४ ब।

योजन—३.३८६ ब, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ अ-ब।

योजना—योग ३.३७६ अ।

योध—राक्षसवंश १ ३३८ अ।

योनि—३.३८६ ब, परतत्रवाद ३ १२ अ, वेदभाव ३.५८६ अ।

योनिभूत स्थान—जन्म २ ३१२ ब।

योनिमति तिर्यंच—३.३८८ अ, तिर्यंच २.३६७, वेद ३.५८५ ब। प्ररूपणा—बध ३ १०१, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् १ २७५, सख्या ४ ९५, क्षेत्र २ १९८, स्पर्शन ४.४८०, काल २.१०९, अतर १.८, भाव ३.२२०. अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

योषा—स्त्री ४ ४५० अ।

यौग—३ ३८८ अ।

यौवराज्य क्रिया—सस्कार ४.१५२ अ।

र

र—रज्जू की सहनानी २.२१९ ब।

रइधू—३ ३८८ अ, इतिहास १.३३२ ब, १ ३४५ ब।

रक्कस—३ ३८८ अ।

रक्त—आहारानराय १.२९ अ, औदारिक शरीर १.४७१ ब, १.४७२ अ।

रक्तकबला—३.३८८ अ। पाडुकवन की शिला—निर्देश ३ ४५० ब, विस्तार ३ ४८४, अकन ३.४५०, वर्ण ३.४७७।

रक्तनिभ—ग्रह २.२७४ अ।

रक्तवती—शिखरी पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने।

रक्तशिला—३.३८८ अ। पाडुक वन की शिला—निर्देश ३ ४५० ब, विस्तार ३.४८४, अंकन ३ ४५० ब, वर्ण ३ ४७७।

रक्ता (कुड)—३ ३८८ अ, रक्ता नदी का कुड तथा उसकी देवी—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४९०, अकन ३.४४७। इस कुड मे स्थित द्वीप तथा कूट—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३ ४८४, अकन ३.४४७, वर्ण ३ ४७७।

रक्ता (कूट)—३ ३८८ अ, शिखरी पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने।

रक्ता (देवी)—३.३८८ अ, रक्ताकूटवासिनी ३.४७२ ब, रक्ताकुडवासिनी ३.४५५ अ।

रक्ता (नदी)—३ ३८८ अ, निर्देश ३.४५५ अ, ३ ४६० अ, विस्तार ३ ४८९-४९०, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३.४७८।

रक्तोदा (कुंड)—३ ३८८ अ, रक्तोदा नदी का कुंड—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४९०, अकन ३.४४७। इस कुंड का द्वीप तथा कूट—निर्देश ३.४५६ अ। विस्तार ३.४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३.४७७।

रक्तोदा (कूट)—३.३८८ अ, शिखरी पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४। रक्तोदा कुड मे स्थित कूट—निर्देश ३ ४५६ अ। विस्तार ३ ४८४, अकन ३.४४७, वर्ण ३ ४७७।

रक्तोदा (देवी)—३.३८८ अ, रक्तोदा कुड तथा कूटवासिनी ३ ४५६ अ, ३.४७२ ब।

रक्तोदा (नदी)—३.३८८ अ। ऐरावत तथा विदेहक्षेत्रो की—निर्देश ३.४५५ अ, ३.४६० अ, विस्तार ३ ४८९, ३ ४९०, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, जल का वर्ण ३.४७८।

रक्तोष्ठ—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

रक्षा—अहिंसा १ २१६ ब, १.२१७ ब, शरीर ४.८ अ।

रक्षाबधन व्रत—३ ३८८ अ।

रक्षिता—तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३८०।

रघु—३.३८८ अ, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ, रघुवश १ ३३८ अ।

रघु (कवि)—इतिहास १.३३४ ब।

रघुनाथ—३.३८८ ब।

रघुवंश—इतिहास १.३३८ अ।

रज—३ ३८८ ब।

रजत—३ ३८८ ब। कुडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६७। मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अकन ३ ४६४। माल्यवान गजदत का कूट—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४, ३ ४५७। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६८। सुमेरु के वन का कूट—निर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४५१।

रजतप्रभ—कुडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६७।

रजताभ—कुडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अकन ३ ४६७।

रजस्वला स्त्री—भिक्षा ३.२३२ अ, सूतक ४.४४३ अ।

रजोहरण—श्वेताबर ४ ७९ ब।

रज्जू—३.३८८ ब, औदारिक शरीर १.४७२ अ, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ ब, गणित २.२१८ ब, लोक का आयाम ३ ३४३ ब, सहनानी २.२१९ ब।

रज्जू[2]—रज्जूप्रतर की सहनानी २.२१९ ब।

रज्जू[3]—रज्जूघन की सहनानी २.२१९ ब।

रज्जूघन—लहनानी २ २१९ ब।
रज्जूप्रतर—पहनानी २ २१९ ब।
रति—३ ३८८ ब, उपदेश १.४२४ अ। कषाय २.३५ ब, २ ३९ अ, चैत्य-चैत्यालय (मूर्ति) २ ३०३ ब, सुख ४.४३० ब, हिंसा ४.५३३ ब।
रतिकर- ३.३८८ ब, नदीश्वर द्वीप का पर्वत—निर्देश ३ ४६६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन, ३ ४६५, वर्ण ३.४७८।
रतिकूट—३ ३८९ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
रति-प्रकृति—३ ३८८ ब, प्ररूपणा –प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति ३ ४४६, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९४ ब, ३ ९६ ब, ३ ९७, बंध की कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१ ब, बंधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३८९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९५, स्थितिसत्त्व स्थानों का अल्पबहुत्व १ १६५ ब, त्रिसंयोगी भंग १ ४०१ ब। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
रतिप्रिय—३ ३८९ अ, किन्नरजातीय व्यंतरदेव २ १२४ ब।
रतिप्रिया—व्यंतरेंद्र वल्लभिका ३ ६११ ब।
रतिवाक्—वचन ३ ४९७ ब।
रतिवेदनीय—मोहनीय ३ ३४४ ब।
रतिषेण—३ ३८९ अ, तीर्थंकर सुमतिनाथ २.३७८।
रतिषेणा—तीर्थंकर पद्मप्रभ २ ३८८।
रतिसेना—व्यंतरेंद्र वल्लभिका ३ ६११ ब।
रत्न—३ ३८९ अ, कवि—इतिहास १.३३० ब, चक्रवर्ती ४ १२ अ, ४ १३ अ, नारायण ४ १९ ब।
रत्नकंबल—श्वेतांबर ४ ८० अ।
रत्नकरंडश्रावकाचार—३ ३८१ अ, इतिहास १ ३४० ब।
रत्नकीर्ति—३ ३८९ अ। प्रथम—नंदिसंघ १.३२४ अ, काष्ठा संघ १ ३२७ ब। इतिहास—द्वितीय १ ३३२ ब। तृतीय १.३३३ ब, १.३४६ ब। चतुर्थ १ ३३४ ब।
रत्नकूट—३ ३८९ अ, मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अंकन ३ ४६४। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८।
रत्नगर्भ—यदुवंश १.३३७।
रत्नचित्र—विद्याधरवंश १.३३९ अ।
रत्नत्रय—३ ३८९ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, शुभोपयोग १ ४३४ ब।
रत्नत्रयकथा—३.३८९ अ।
रत्नत्रयचक्र यंत्र—यंत्र ३ ३५८।
रत्नत्रयविधान—३.३८९ अ।
रत्नत्रयविधान टीका—इतिहास १ ३४४ ब, आशाधर १ २८१ अ।
रत्नत्रयविधान यंत्र—यंत्र ३.३५८।
रत्नत्रयव्रत—३.३८९ अ।
रत्नद्वीप—राक्षसवंश १.३३८ अ।
रत्ननंदि—३ ३८९ ब, नंदिसंघ १.३२३ अ, इतिहास १ ३२८ ब, १ ३२९ अ।
रत्नपुर—तीर्थंकर धर्मनाथ २.३७९, प्रतिनारायण ४ २० ब, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।
रत्नपुरी- ३ ३८९ ब।
रत्नप्रभ ३ ३८९ ब। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६९। लोकपाल ३ ४९१ ब।
रत्नप्रभा—३.३८९ ब। नरक पृथिवी—निर्देश २ ५७६ अ, पटल २ ५७९ ब, इंद्रक श्रेणीबद्ध व प्रकीर्णक २ ५७८, २ ५७९, विस्तार २.५७६, २ ५७८, अंकन ३ ४४१, चित्र ३ ३९०। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १.२६३। प्ररूपणा—बंध ३ १००, बंधस्थान ३ ११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४.१६१, संख्या ४ ९५, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४.४७९, काल २ १०१, अंतर १.८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।
रत्नमाला—३.३९१ अ, हरिवंश १.३४० अ।
रत्नमाली—विद्याधरवंश १.३३९ अ।
रत्नमुक्तावली व्रत—३.३९१ अ।
रत्नरथ—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।
रत्नराशि—स्वप्न ४.५०४ ब, ४.५०५ अ।
रत्नवज्र—विद्याधरवंश १.३३९ अ।
रत्नवती—यदुवंश १.३३७।
रत्नवृष्टि—कल्याणक २.३२ ब।
रत्नशैल—रत्नप्रभा ३.३९१ अ।
रत्नश्रवा—३.३९१ अ, राक्षसवंश १ ३३८ ब।
रत्नसंचय—३ ३९१ अ, तीर्थंकर अभिनंदननाथ २.३७८ विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

रत्नसचया—विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९ – ३.४८१, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।
रत्ना—चमरेंद्र की अग्रदेवी ३ २०९ अ।
रत्नाकर—३ ३९१ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।
रत्नाकर वर्णी (कवि)—इतिहास १ ३३३ ब, १.३४७ अ।
रत्नाढ्या—व्यंतरेंद्र की वल्लभिका ३ ६११ ब।
रत्नावतसिका—नारायण ४ १८ अ।
रत्नावली व्रत—३ ३९१ अ।
रत्नि—३ ३९१ ब।
रत्नोच्चय—३ ३९१ ब। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६९, सुमेरु पर्वत का नाम ४ ४३७ अ।
रत्नोपचय—३ ३९१ ब।
रथ—३ ३९१ ब।
रथनूपुर—३ ३९१ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
रथपुर—३.३९१ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
रथरेणु—३.३९१ ब, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ अ।
रथवीपुर—श्वेताबर ४ ८० अ।
रमणीया—३.३९१ ब। नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४९१, अकन ३.४६५। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३ ४८०, ३.४८१, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।
रम्यक—शुक्रेंद्र का यान ४ ५११ ब।
रम्यक कूट—३ ३९१ ब, रुक्मि पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३ ४४४। वक्षारगिरि का कूट ३ ४७२ ब।
रम्यक क्षेत्र—३.३९१ ब। महाक्षेत्र—निर्देश ३ ४४६ अ, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३,४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने। भोगभूमि—निर्देश ३ २३५ ब, अवगाहना १.१८०, आयु १.२६३, १.२६४, काल विभाग २ ९२ ब, चातुर्द्वीपिक भूगोल ३.४३७ ब, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब, सुषमाकाल २.९३। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।
रम्यक देव—३ ३९१ ब, रुक्मि पर्वग के कूट का देव—निर्देश ३.४७२ ब, अकन ३ ४४४। वक्षारगिरि के कूट का देव ३.४७२ ब।
रम्यकविजय—काल २.९२ ब।
रम्यका—३ ३९१ ब।
रम्यपुर—३ ३९२ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
रम्या—३ ३९२ अ। नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३-४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४९१, अकन ३ ४६५। मनुष्यलोक ३ २७५ ब। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।
रयणसार—३.३९२ अ, इतिहास १ ३४० ब।
रयसकात देव—३ ३९२ अ।
रवि—राक्षसवश १ ३३८ अ, विद्याधर वश १ ३३९ अ, हरिवश १ ३४० अ।
रविघोष—कुरुवश १.३३६ अ।
रविचद्र—देशीयगण १ ३२४ ब, इतिहास १.३३२ अ, १ ३४४ ब।
रवितेज—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ।
रविनदि—३ ३९२ अ।
रविप्रभ—वानरवश १ ३३८ ब।
रविभद्र—३.३९२ अ इतिहास १ ३३० ब।
रविमन्यु—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ ब।
रविवय कहा—इतिहास १ ३३२ ब, १ ३४६ अ।
रविवार व्रत—३ ३९२ अ।
रविषेण—३.३९२ अ, सेनसघ १.३२६ अ, इतिहास १.३२९ ब, १.३४१ ब।
रवेस्या—मनुष्यलोक (नदी) ३ २७५ ब।
रश्मिदेव—३ ३९२ अ।
रश्मिवेग—३ ३९२ अ।
रस—३ ३९२ अ, ईर्यापथ कर्म १ ३४९ अ, आहारांतराय १ २८ ब, पूजा ३ ७८ ब।
रस-ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १ ४५५ ब।
रसकर्म—मत्र ३ २४५ ब।
रस कषाय—कषाय २ ३५ ब।
रसकूट—३ ३९२ ब, शिखरी पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७२, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४ के सामने।
रसज—जीव २ ३३४ अ।
रसदेवी—३.३९३ अ, शिखरी पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, अंकन ३.४४४ के सामने।
रसना इंद्रिय—३ ३९३ अ, आहारातराय १.२८ ब, इंद्रिय १.३०२ अ, इंद्रिय की अवगाहना का अल्पबहुत्व १.१५७, इसके प्रदेशो का अल्पबहुत्व १.१५७।

प्रधानता ४.१३९ अ।
रसना ज्ञान—कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६० ब।
रस निरपेक्ष—आहार १ २८८ अ।
रस-परित्याग – ३.३९३ अ।
रसमान—प्रमाण ३ १४५ अ।
रसा—व्यतरेंद्र गणिका ३ ६११ ब।
रसायन—मंत्र ३.२४५ ब।
रहस्य—३.३९३ ब।
रहस्यपूर्ण चिट्ठी—३ ३९३ ब, इतिहास १.३४८ अ।
रहोभ्याख्यान—३.३९३ ब।
राई—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ-ब।
राक्षस—३.३९३ ब, राक्षसवंश १ ३३८ अ।
राक्षस(देव)—३ ३९३ब, पिशाच जातीय व्यंतर देव – निर्देश ३ ५८ ब, नामनिर्देश ३ ६१० ब, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १.२६४ ब। बौद्धाभिमत ३ ४३४ ब। इंद्र—निर्देश ३ ६११ अ, शक्ति आदि ३ ६१०-६११, वर्ण व चैत्यवृक्ष ३ ६११ अ, अवस्थान ३ ४७१, ३ ६१२-६१४।
राक्षस (देव)—प्ररूपणा—बंध ३ १०२, बंधस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २ १०४, अंतर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।
राक्षस द्वीप—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
राक्षस-राक्षस—३.३९३ ब।
राक्षसवंश—इतिहास १.३३८ अ, विद्याधर वंश १.३३९ अ।
राक्षसी विद्या—राक्षसवंश १.३३८ अ।
राग—३.३९३ ब। अपराध (विभाव) ३ ५५८ ब, अभिलाषा १ ६५ अ, १ ६६ अ, आकांक्षा १ ६५ ब, १ ६६ अ, आकाशवत् अनंत १ २२४ ब, उपयोग १ ४३२ अ-४३३ ब। कषाय २ ३९ अ, पौद्गलिक (मूर्त) ३ ३१८ ब, बंध ३ १७५ अ, मूर्त ३ ३१८ ब, विभाव ३ ५५८ ब, ३ ५५९ अ, ३ ५६० अ, ३ ५६२ अ, सत्त्व ४ ५२८, हिंसा १ २१६ अ, १.२१७ ब, ४ ५३२ अ।
राग-परिहार—चारित्र २.२८४ अ, त्याग २ ३९६ ब, राग ३.३९७ अ, सामायिक ४.४१६ ब, ४.४१९ अ।
राग-प्रत्यय—प्रत्यय ३.१२६ अ।
राग लोकेषणा—अनाकांक्ष अनशन १ ६६ अ, उपदेश १.४२४ ब, तप २.३५८ ब, २.३६० अ, धर्म २ २७५ अ, ध्याता २ ४९३ अ, राग ३ ३९६ ब, ३ ३९७ अ, वाद ३.५३३ अ, विनय ३.५५२ ब। विवेक ३.५६६ अ, सल्लेखना ४.३८३ अ, साधु ४.५०५ अ, स्वाध्याय ४.५२३।
रागांश - उपयोग १ ४३२ अ।
राघव—हरिदेव ४ ५३० अ।
राजकथा—कथा २ ३ ब।
राजगृह—तीर्थंकर मुनिसुव्रत २ ३७९, प्रतिनारायण ४ २० ब। मगध देश इतिहास १ ३१० ब।
राजधानी—३ ४०० अ, चक्रवर्ती ४ १६ अ, भरत, ऐरावत तथा विदेह क्षेत्रों की प्रधान नगरियाँ—निर्देश ३ ४४६ अ, ३ ४६० अ, गणना ३ ४४५ अ, अंकन ३ ४४४, ३ ४४७, ३ ४६० अ।
राजपिंड—भिक्षा ३ २३३ अ।
राजपुर—चक्रवर्ती ४.१० ब।
राजभय—आहारांतराय १ २९ ब।
राजमती – तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३८८।
राजमती विप्रलंभ—३ ४०० अ, आशाधर १.२८१ अ, इतिहास १ ३४४ ब।
राजमल्ल—३.४०० अ, इतिहास १ ३३३ ब, १.३४७ अ।
राजमल्ल सत्यवाक्य – ३.४०० ब।
राजर्षि ऋषि १ ४५७ ब।
राजवलिकथे—३.४०० अ।
राजवल्लभ नौकर—निंदा (साधु) २ ५८९ अ।
राजवार्तिक—३.४०० ब, अकलंक १.३१ अ, इतिहास १ ३४१ ब।
राजशेखर—३ ४०० ब।
राजसदान—दान २ ४२३ अ।
राजसिंह—३.४०० ब, प्रतिनारायण ४.२० ब।
राजसेना – श्रेणी ४ ७२ अ।
राजसेवा—निंदा (साधु) २.५८९ अ, साधु ४.४०८ अ।
राजा—३ ४०० ब।
राजादित्य—इतिहास १ ३३१ ब।
राजीमती—३ ४०१ अ।
राजुलमती—भोजवंश १ ३३६ ब।
राजू—३.४०१ अ, (रज्जू) ३ ३८८ ब, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ ब, गणित २.२१८ ब, लोक का आयाम ३.४३८ ब, सहनानी २.२१९ ब।
राजेंद्र—३.४०१ अ।

राजेंद्रकीर्ति—काष्ठासंघ १.३२७ अ।
राज्य—३ ४०१ अ। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३.४६८।
राज्यकाल—जगतुंग २ ३१० अ।
राज्यवंश—३.४०१ अ, इतिहास १ ३१० अ, १.३३५ अ।
राज्यसेवक—निंदा (स्वच्छंद साधु) २ ५८९ अ, साधु ४ ४०८ अ।
राज्यातिक्रम—अस्तेय व्रत १.२१३ ब।
राज्योत्तम—३ ४०१ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अकन ३ ४६८।
रात्रि—३ ४०१ अ, अपवाद मार्ग १ १२२ अ, पूजा ३ ८० ब, सूर्य की गति से उत्पत्ति २.३५१, सम्यग्दृष्टि ४ ३७८ अ।
रात्रिक आलोचना—आलोचना १.२७६ ब।
रात्रिक पूजा—पूजा ३ ८० ब।
रात्रिक प्रतिक्रमण—कृतिकर्म २ १३७ ब, प्रतिक्रमण ३ ११६ अ, व्युत्सर्ग ३.६२१ अ।
रात्रिभुक्तित्याग—रात्रिभोजन ३ ४०३ अ, व्रत ३ ६२७ ब। श्रावक ४ ५० ब, हिंसा ४ ५३२ ब।
रात्रिभोजन—३ ४०१ अ, जल-गालन २.३२६ अ, व्रत ३ ६२७ ब, श्रावक ४ ५० ब, हिंसा ४.५३२ ब।
रात्रिभोजनत्यागव्रत कथा—इतिहास १ ३४६ ब।
रात्रियोग—कृतिकर्म २ १३७ ब।
रात्रिवचनालाप—अपवाद मार्ग १ १२२ अ।
राध—३.४०३ ब, आराधना १.२७१ अ।
राम—३ ४०३ ब, अग्निप्रभदेव १ ३६ ब, चक्रवर्ती ४.१६ अ, रघुवंश १.३५८ अ, हरिदेव ४ ५३० अ।
रामकथा—३ ४०३ ब, इतिहास १ ३४१ अ।
रामकीर्ति—नंदिसघ १.३२३ ब।
रामगिरि—३.४०३ ब।
रामचंद्र—३.४०३ ब, काष्ठासघ १.३२७ अ, नंदिसघ १.३२३ ब।
रामचंद्र त्रैविद्य—३ ४०३ ब, इतिहास १ ३३२ अ। देशीयगण १.३२५ अ।
रामचंद्र मुमुक्षु—इतिहास १ ३३२ ब, १ ३४५ अ।
रामचरित्र—इतिहास १ ३४५ ब।
रामदत्ता—३.४०३ ब।
रामनंदि—३.४०३ ब, देशीयगण १ ३२५।
रामपुत्र—३.४०३ ब, अंतकृत केवली १.२ ब।
रामपुराण—इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ ब।
राम-बलदेव—तीर्थंकर २ ३९१।
रामल्य—श्वेताबर ४ ७७ अ, ४ ७८ अ, इतिहास १ ३२८ अ, स्थूलभद्र ४ ४७१ अ।
रामसेन—३ ४०४ अ, काष्ठा सघ १.३२७ अ, माथुर सघ १ ३२७ ब, इतिहास १ ३३१ अ, १.३४३ ब।
रामा—वैमानिक उत्तरेंद्रो की ज्येष्ठा देवी ४ ५१४ अ, तीर्थंकर सुविधिनाथ २ ३८०।
रामानंदी—वैष्णव दर्शन ३.६०९ अ।
रामानुज वेदांत—३ ४०४ अ, वेदात ३.५९७ ब।
रामापति—वैमानिक उत्तरेंद्रो की ज्येष्ठा देवी ४ ५१३ ब।
रामायण (जैन)—इतिहास १ ३३२ ब।
रायचद—३ ४०४ अ।
रायमल—३ ४०४ अ, इतिहास—अनंतकीर्ति के शिष्य १ ३३३ ब, प. टोडरमल के अन्तेवासी १ ३३४ ब, सकलचद्र भट्टारक के शिष्य १ ३३४ अ। इतिहास १ ३४७ ब।
रायमल्लाभ्युदय—इतिहास १ ३४७ अ।
रावण—३ ४०४ अ, तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३९१, प्रति-नारायण ४.२०, राक्षसवंश १ ३३८ अ।
रावणभाष्य वैशेषिक दर्शन ३ ६०७ ब।
राशि—३.४०४ अ।
राष्ट्रकूट—अकालवर्ष १ ३१ अ।
राष्ट्रकूटवंश—इतिहास १.३१५ अ।
रासभ—३.४०४ अ।
राहू—ज्योतिष ग्रह—निर्देश २.३४८ अ, आकार व चित्र २.३४७। विस्तार २ ३५१ ब, इद्र २.३४५ ब, चद्रग्रहण २ ३५१ अ।
रिक्कु—३.४०४ अ।
रिट्ठणेमिचरिउ—३ ४०४ अ, इतिहास १ ३४१ ब।
रिण—३ ४०४ अ।
रिणराशि—३.४०४ अ।
रिपुदम—तीर्थंकर संभवनाथ २.३७८।
रिष्टकसंभवा—३ ४०४ अ, आकाशोपपन्न देव २.४४५ ब।
रिष्टसमुच्चय—इतिहास १ ३४३ ब।
रिष्टा—विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।
रुक्कमण—कुरुवंश १ ३३६ अ।
रुक्मपात्रांकित—तीर्थमडल यंत्र ३.३५९, वज्रमंडल यंत्र ३.३५९, वरुणमंडल यंत्र ३.३५९।

रुक्मि (कूट)—३ ४०४ ब, पुंडरीक या महापुंडरीक ह्रद का कूट – निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, ३.४८५, ३ ४८६। रुक्मि पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३.४४४ के सामने।

रुक्मि (पर्वत) – ३ ४०४ ब, वर्षधर पर्वत – निर्देश ३ ४४६ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४ के सामने, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७।

रुक्मिणी—३ ४०४ ब, नारायण ४ १८ ब।

रुक्मिणी व्रत—३ ४०४ अ।

रुचक – ३ ४०४ ब। कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६७। निषध पर्वत का कूट – निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४। पद्म आदि ह्रदो के कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४५४। मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अकन ३ ४६४। रुचक पर्वत का कूट – निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६८, ३ ४६९। सुमेरु के वन का कूट—निर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४५१।

रुचक (स्वर्ग)—३ ४०४ ब। सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अंकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६६।

रुचककांता—३ ४०४ ब। रुचक पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७६ ब, अकन ३ ४६८।

रुचकाभ—कुडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३.४६७।

रुचककीर्ति—३ ४०४ ब, रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७६ ब, अंकन ३ ४६८।

रुचकगिरि– ३ ४०४ ब। विशेष दे. रुचकवर पर्वत।

रुचकप्रदेश—जीव के आठ मध्यप्रदेश २ ३३९ अ। लोकाकाश के आठ मध्यप्रदेश ३.४४० ब।

रुचकप्रभ – कुडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५, ब विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६७।

रुचकप्रभा—३ ४०४ ब, रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७६ ब, अकन ३ ४६८।

रुचकवर—३ ४०४ ब।

रुचकवर द्वीप—निर्देश ३ ४६६ ब, नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन ३.४४३। चित्र ३.४६८ ब, ३.४६९, ज्योतिष चक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

रुचकवर पर्वत—चैत्यचैत्यालय २.३०३ अ, रुचकवर द्वीप का कुडलाकार पर्वत—निर्देश ३ ४६६ ब, विस्तार ३ ४८७, चित्र ३ ४६८, ३ ४६९, वर्ण ३ ४७८, कूट तथा देव ३ ४७६, कूटो का विस्तार ३ ४८७।

रुचकवर सागर—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अकन ३ ४४३, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिष-चक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४।

रुचका—३ ४०४ ब, रुचकवर पर्वत की देवी—निर्देश ३ ४७६ ब, अकन ३ ४६८, ३ ४६९।

रुचकांता – रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७६ ब, अकन ३.४६९।

रुचकाभा—३.४०४ ब, रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७६ ब, अकन ३ ४६९।

रुचकी—३ ४०४ ब।

रुचकोत्तम—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६९।

रुचकोत्तमा—रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३.४७६ ब, अकन ३ ४६९।

रुचकोत्तर—रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७ अकन ३.४६९।

रुचि—३ ४०४ ब, उपदेश १ ४२५ अ, १.४२६ ब, मोहनीय ३ ३४२ ब, राग ३ ३९५ ब. श्रद्धान ४.४४ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब, ४ ३५० ब, ४ ३५७ अ, सुख ४ ४३० ब।

रुचिर—४ ४०४ ब। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६९। स्वर्ग पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१९ ब, देव आयु १ २६६।

रुजा—३ ४०५ अ।

रुद्र—३ ४०५ अ, जन्म (गति-अगति) २.३२१ ब, ग्रह २.२७४ अ, नक्षत्र २ ५०४ ब, नारद ४ २१ अ, ४.२२ अ।

रुद्रदत्त—३.४०५ अ, अन्धकवृष्णि १.३० अ।

रुद्ररुद्र—तीर्थंकर पुष्पदंत २ ३९१।

रुद्रवती—व्यंतरेंद्र की गणिका ३ ६११ ब।

रुद्रवसंत व्रत—३ ४०५ अ।

रुद्रसंप्रदाय—वैष्णव दर्शन ३ ६०९ अ।

रुद्रसेन—काष्ठा संघ १.३२७ अ।

रुद्रा—व्यंतरेंद्र की गणिका ३.६११ ब।

रुद्राश्व—३.४०५ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

रुद्रिल—सांख्य दर्शन ४.३९८ ब।

रुधिर—३ ४०५ अ, अर्हंत भगवान १.१३७ ब, आहारातराय १ २९ अ, औदारिक शरीर १.४७१ ब, १.४७२ अ। स्वर्ग पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४.५१९ ब, देव आयु १.२६६।

रूक्षत्वस्कंध—४ ४४८ अ।

रूक्षपुद्गल—स्कध ४ ४४८ अ।

रूक्षाणु—ईर्यापथ कर्म १ ३५० अ।

रूढ संख्या—३ ४०५ अ।

रूढि—कर्ताकर्म २.२२ अ, नय २ ५३९ ब, २ ५६३ अ।

रूप—३ ४०५ अ, गुण २ २४० अ।

रूपगता चूलिका—३.४०५ अ, श्रुतज्ञान ४.६९ अ।

रूपचंद पांडेय—३.४०५ अ, १ ३३४ अ-ब, १.३४७ ब।

रूपनिभ—३.४०५ ब, ग्रह २ २७४ अ।

रूपपाली—३ ४०५ ब, किन्नर जातीय व्यंतर देव २.१२४ ब।

रूपमद—मद ३ २५९ ब।

रूपरेखा—३ ४०५ ब।

रूपवती—व्यतरेंद्र वल्लभिका ३ ६११ ब।

रूपसत्य—सत्य ४ २७१ ब।

रूपस्थ ध्यान—३ ४०५ ब।

रूपातीत ध्यान—३ ४०६ अ।

रूपानुपात—३.४०६ ब।

रूपाधिक भागाहार—अनुयोगद्वार १ १०२ ब।

रूपिणी—नारायण ४ १८ ब।

रूपी—अवधिज्ञान १.१९६ अ, मूर्त ३.३१६ अ।

रूपोन भागाहार—अनुयोगद्वार १ १०२ ब।

रूप्य—रुक्मिपर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३.४४४ के सामने।

रूप्यकूला (कुंड)—३.४०६ ब, रूप्यकूला नदी का कुंड—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४९०, अंकन ३.४५७। इस कुड मे स्थित द्वीप—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४८४, अकन ३.४४७, वर्ण ३.४७७।

रूप्यकूला (कूट)—३.४०६ ब, रूप्यकूला कुड का कूट—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३ ४८४, अकन ३.४४७। रुक्मिपर्वत का कूट—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४ के सामने, वर्ण ३.४७७।

रूप्यकूला (देवी)—रूप्यकूला कुड की देवी—निर्देश ३.४५५ अ, अंकन ३.४४७ रूप्यकूला कूट की देवी—निर्देश ३.४७२, अंकन ३.४४४ के सामने।

रूप्यकूला (नदी)—३.४०६ ब, हैरण्यवत क्षेत्र की महानदी—निर्देश ३ ४५६ अ, विस्तार ,३.४८९, ३ ४९०, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३.४७८।

रूप्यमाषफल—३ ४०५ ब, तौल का प्रमाण २ २१५ अ।

रूप्यवर—३.४०६ ब।

रूप्यवर द्वीप सागर—३ ४०६ ब, नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अकन ३ ४४३, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

रेखा—३ ४०६ ब।

रेचक—प्राणायाम ३.१५५ अ।

रेणुका—तीर्थंकर चंद्रबाहु २ ३९२।

रेवती—३ ४०६ ब, तीर्थंकर अनतनाथ-धर्मनाथ-अरनाथ २ ३८०, नक्षत्र २.५०४ ब।

रेवा—३ ४०६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

रेशमी वस्त्र—वस्त्र ३.५३१ अ।

रैन मंजूषा—३.४०६ ब।

रैवत—तीर्थंकर २.३७७, शिखरी पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४ के सामने।

रैवतक—३.४०६ ब।

रोग—३.४०६ ब, परिवाह ३.३३ ब, ३ ३४ अ।

रोगपरिषह—३ ४०६ ब। ३ ३३ ब, ३.३४ अ।

रोगराहित्य—अर्हंतातिशय १ १३७ ब।

रोचक शैल—३.४०७ अ।

रोचन—दिग्गजेंद्र पर्वत—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४ के सामने।

रोटतीज व्रत—३ ४०७ अ।

रोध—आहारातराय १.२९ अ।

रोम—३.४०७ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।

रोमज (वस्त्र)—वस्त्र ३.५३१ अ।

रोमश—३.४०७ अ, एकातवादी १ ४६५ ब, क्रियावादी २ १७५ ब।

रोम शैल—यदुवंश १.३३७।

रोम समानता—अर्हंतातिशय १ १३७ ब।

रोमर्षिणी—३.४०७ अ, एकाती १ ४६५ ब, वैनयिक ३.६०५ अ।

रोष—३ ४०७ अ।

रोहिणी—३ ४०७ अ, तीर्थंकर अजितनाथ की यक्षिणी २.३७९, नक्षत्र २.५०४ ब, बलदेव ४.१७ ब, यदुवश १.३३७, विद्या ३.५४४ अ, वैमानिक दक्षिणेंद्र की वल्लभिका ४ ५१३ ब, व्यंतरेंद्र वल्लभिका ३.६११ ब।

रोहिणी व्रत—३ ४०७ अ।

रोहित कुड—३ ४०७ अ, रोहित नदी का कुड—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४९०, अंकन ३.४४७। रोहित कुड मे स्थित द्वीप—निर्देश ३.४५५ अ। विस्तार ३ ४८४, अंकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७।

रोहित (कूट)—३.४०७ अ, रोहित कुड के द्वीप मे स्थित कूट—निर्देश ३ ४५५ ब, विस्तार ३ ४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३.४७७। महाहिमवान पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४।

रोहित (देव)—३ ४०७ अ, रोहित कुड की देवी—निर्देश ३ ४५५ अ, अकन ३ ४४७। महाहिमवान के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७२ अ, अकन ४ ४४४। लवण सागर के पर्वत का रक्षक देव ३.४७४ ब।

रोहित (नदी)—३.४०७ अ, हैमवत क्षेत्र की महानदी—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३.४८९, ३ ४९०, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, जल का वर्ण ३.४७८।

रोहित पटल—स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६६।

रोहितास्या कुंड—३ ४०७ अ, रोहितास्या नदी का कुड निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४८४, अकन ३ ४४७। रोहितास्या कुंड का द्वीप—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ५८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३.४७७।

रोहितास्या कूट—३ ४०७ अ, रोहितास्या कुड के द्वीप का कूट—निर्देश ३ ४५५ ब, विस्तार ३ ४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३.४७७। महाहिमवान पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४ के सामने।

रोहितास्या देवी—३ ४०७ अ, रोहितास्या कुड की देवी—निर्देश ३ ४५५ अ, अकन ३ ४४७, रोहितास्या कूट की देवी—निर्देश ३ ४७२ अ, अकन ३.४४४ के सामने।

रोहितास्या नदी—३ ४०७ अ, हैमवत क्षेत्र की महानदी—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३ ४८९, ३ ४९०, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, जल का वर्ण ३ ४७८।

रौद्र—३ ४०७ अ।

रौद्र ध्यान—३ ४०७ अ, अशुभोपयोग १.४३३ ब, ध्यान २.४९७ अ, सम्यग्दृष्टि ४ ३७६ अ, सामायिक ४ ४१७ ब।

रौद्रनाद—नारायण ४ १८ ब।

रौरव—३ ४०९ अ, नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३, वैदिकाभिमत नरक ३ ४३२ ब।

रौरुक—३ ४०९ अ, नरक पटल—निर्देश २ ५७९ अ, विस्तार २ ५७९ अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

र्ह—पदस्थ ध्यान ३ ६ ब।

ल

लंका—३ ४०९ अ, प्रतिनारायण ४ २० अ-ब, राक्षसवश १ ३३८ अ, विद्याधरवश १ ३३९ अ।

लका-शोक—राक्षसवश १ ३३८ अ।

लंघन—प्रोषधोपवास ३ १६६ ब।

लंब-संक्षेत्र—३ ४०९ अ।

लबित—३ ४०९ अ, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।

लबिताधर—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

ल०—लक्ष की सहनानी २ २१८ ब।

ल० को०—लक्ष कोटि की सहनानी २ २१८ ब।

लक्खण (कवि)—३ ४०९ अ, इतिहास १ ३३२ अ।

लक्खनदि—नदिसघ १ ३२५।

लक्ष—सहनानी २ २१८ ब।

लक्षकोटि—सहनानी २ २१८ ब।

लक्षण—३ ४०९ अ, गुण २ २४० अ, प्रवृत्ति ३ १४९ अ।

लक्षणनिमित्तज्ञान—निमित्तज्ञान २ ६१३ अ, ऋद्धि १ ४४८।

लक्षणपंक्ति व्रत—३ ४१० अ।

लक्षणाभास—लक्षण ३ ४०९ ब।

लक्षपर्वा—३ ४१० अ, विद्या ३.५४४ अ।

लक्षावधि—साधु ४ ४०८ अ।

लक्ष्मण—३ ४१० अ, अग्निप्रभ देव १.३६ ब, तीर्थंकर २.३९१, प्रतिनारायण ४.२० अ, रघुवश १.३३८ अ।

लक्ष्मणदेव (कवि)—३.४१० अ, इतिहास १ ३३२ ब।

लक्ष्मणपुरी—३.४१० अ।

लक्ष्मणसेन—३ ४१० अ। प्रथम—काष्ठासघ १.३२७ अ, इतिहास १.३२९ अ। सेनसघ १ ३२६ अ, इतिहास १ ३३३ अ।
लक्ष्मणा—तीर्थंकर चन्द्रप्रभ २ ३८० ।
लक्ष्मी—३.४१० अ, आनतेंद्र का यान ४ ५११ ब, नारायण ४ १८ ब, स्वप्न ४ ५०४ ब।
लक्ष्मीकूट—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
लक्ष्मीचंद्र—३ ४१० अ। प्रथम—नदिसघ १.३२३ ब, १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३३ अ।
लक्ष्मीचंद्र (कवि)—इतिहास १ ३३३ अ, १ ३३४ ब।
लक्ष्मीदेवी—पुंडरीक ह्रद की देवी—निर्देश ३ ४५३ ब, परिवार ३.६१२ अ, अंकन ३ ४४४ के सामने, भवनवासी देवी—आयु १ २६५, परिवार ३ ६१२ अ, भवन का विस्तार ३.६०९। रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८। शिखरी पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४ के सामने।
लक्ष्मीमती—३ ४१० अ, तीर्थंकर चंद्रप्रभ २ ३८० ।
लक्ष्मीवती—रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३.४६९।
लक्ष्मीसेन—सेनसघ १.३२६ अ।
लक्ष्य—३ ४१० अ।
लक्ष्य-लक्षण संबंध—४ १२६ अ।
लक्ष्य-लक्षण समानाधिकरण—लक्षण ३ ४१० अ।
लगड शय्यासन तप—कायक्लेश २.४७ ब।
लघिमा ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १.४५१ अ।
लघीयस्त्रय—३ ४१० ब, अकलंक १ ३१ अ, इतिहास १ ३४१ ब।
लघीयस्त्रयवृत्ति—अभयचंद्र १ १२७ अ।
लघु—३ ४१०, चूर्णि २.६३८।
लघुत्व गति—गति २ २३५ अ।
लघुभाषा—दिव्यध्वनि २ ४३२ अ।
लघु मासिक प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त १.४० ब।
लघुरिक्थ—३ ४१० ब, गणित २ २२५ अ।
लघुशंका—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२१ अ।
लघु शतक चूर्णि—इतिहास १.३४१ अ।
लघु सर्वज्ञसिद्धि—३ ४१० ब, अनंतवीर्य १.६० अ, इतिहास १.३४२ अ।
लघुहव्व—अकलंक भट्ट १.३१ अ।
लज्जा—विनय ३.५५३ ब।
लतांग—काल का प्रमाण २.२१६ अ, २ २१७ अ।
लता—अनुभाग १ ९१ ब, १.९३ ब, काल का प्रमाण २ २१६ अ, २ २१७ अ।
लतागृह—भवनवासी देवों के भवनों में ३.२१० अ।
लताभूमि—समवसरण ४.३३० ब।
लतावक्र—३ ४१० ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२१ ब।
लब्ध—३ ४१० ब।
लब्धराशि—३ ४१० ब।
लब्धाभिमान—हरिवंश १ ३४० अ।
लब्धि—३ ४१० ब, उपयोग १ ४२९ अ, १ ४३० अ-ब, उपशम १ ४३८ अ-ब, कारण (योग्यता) २ ५६ अ, छेदोपस्थापना २ ३०९ अ, विकल्प (निर्विकल्प) ३.५३८ अ, श्रुतज्ञान ४ ५९ ब, ४ ६२ ब।
लब्धि-अक्षर—अक्षर १.३२ ब।
लब्धिप्राप्त—वैक्रियिक ३ ६०३ ब।
लब्धिविधान व्रत—३ ४१५ अ।
लब्धिसपन्न ऋषि—सम्यग्दर्शन का निमित्त ४ ३६४ ब।
लब्धिसंवेग सपन्नता—संवेग ४ १४४ अ-ब।
लब्धिसार—३.४१५ ब, इतिहास १ ३४३ अ।
लब्धिसार टीका—इतिहास १ ३४८ अ।
लब्धिस्थान—अल्पबहुत्व १ १६० अ, छेदोपस्थापना २ ३०९ अ, लब्धि ३ ४१४ अ, ३ ४१५ अ।
लब्ध्यक्षर—अक्षर १.३२ ब।
लब्ध्यक्षर ज्ञान—श्रुतज्ञान ४.६५ ब।
लब्ध्यपर्याप्त—आयु १.२६४, जीव २.३३३ ब, जीवसमास २.३४३, पर्याप्ति ३ ४२ अ, मनुष्य ३.२७३, योगस्थान ३.३८३ अ, वेदभाव ३ ५८७ अ।
लय—मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब।
लयकर्म—कर्म २.२६ अ, निक्षेप २.५९८ अ।
लयभाजन—निंदा (मिथ्या साधु) २.५८९ अ।
लरि०—लघुरिक्थ की सहनानी २.२२५।
ललितकीर्ति—३ ४१५ ब। प्रथम अनंतकीर्ति १ ५९ ब, इतिहास १ ३३२ अ। द्वितीय—काष्ठा संघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३३४ ब। तृतीय—नदिसंघ भट्टारक १ ३२३ ब।
ललितांग देव—३.४१५ ब।
लल्लक—३.४१५ ब, नरक पटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १ २६३।
लव—३.४१५ ब, काल का प्रमाण २ २१६ अ-ब, गणित २ २२३ ब, प्रतिबुद्धता ३.१९९ ब।
लवणतापि—३ ४१५ ब, देव (आकाशोपपन्न) २.४४५ ब।

लवण सागर—३.४१५ ब, निर्देश ३.४६० ब, नामनिर्देश ३ ४७० अ, पर्वत तथा पाताल ३ ४६२ अ, ३ ४७४ ब, विस्तार ३ ४७८, अकन ३.४४३, ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६१, जल का रस ३ ४८०, अधिपति देव ३ ६१४। जीव—अन्तर्द्वीपज मनुष्य ३ ३५८ अ, अवगाहना १ १७९, तिर्यंच २.३७० ब। वैदिकाभिमत—निर्देश ३.४३१ ब, अकन ३.४३२।

लवणादेवी—सिंधु नदी के कूट की देवी ३ ६१४, आयु १ २६५ ब।

लवणोदसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ अ।

लवपुर—३.४१५ ब।

लहू—अतराय (आहारातराय) १.२९ अ।

लांगल—३.४१५ ब। स्वर्ग पटल—निर्देश ४.५१७, विस्तार ४ ५१७, अकन ४ ५१५, देव आयु १ २६७।

लांगल स्वातिका—३ ४१५ ब, मनुष्यलोक ३.३७६ अ।

लांगल चित्र—करणत्रिक २.९ अ।

लांगल रचना—करणत्रिक (अध.करण) २.८ ब, २.९ अ।

लांगलस्वस्तिका—३ ४१५ ब।

लांगलावर्त—३ ४१५ ब।

लांगलावर्ता—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३ ४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४।

लांगलिका गति—विग्रह गति ३ ५४० ब।

लांतव (देव)—३ ४१५ ब। निर्देश ४.५१० ब, अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १.१९८ ब, आयु १.२६७, आयु बध के योग्य परिणाम १ २५८ ब।

लांतव देव (प्ररूपणा)—बध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगीभंग १.४०६ ब। सत् ४.१९२, सख्या ४.९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २ १०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२०, अल्पबहुत्व १.१४५।

लांतव स्वर्ग—निर्देश ४.५१८, पटल ४.५१८, इद्रक व श्रेणीबद्ध ४.५१८, ४.५२०, दक्षिण विभाग ४.५२१ अ, अवस्थान ४.५१४ ब, विस्तार ४.५१८, अंकन ४.५१५। नारायण ४.१८ ब।

लाक्षा वाणिज्य कर्म—सावद्य ४.४२१ ब। निर्देश ४.५१० ब, दक्षिणेंद्र ४ ५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, अवस्थान ४.५२० ब, चिह्न आदि ४.५११ ब, विमान नगर व भवन ४ ५२०-५२१।

लाखू (कवि)—इतिहास १.३३२ अ, १ ३४५ अ।

लाघव—३.४१६ अ, अचेलकत्व १.४० अ, शौच ४.४२ ब।

लाट—३ ४१६ अ।

लाटी संहिता—३.४१६ अ, इतिहास १.३४७ अ।

लाड़बागड़ गच्छ—एकात जैनाभास १ ४६५ अ, काष्ठासघ १.३२१ अ, १ ३२२ अ, १.३२७ ब।

लाड़बागड़ संघ—काष्ठा सघ १.३२१ अ, १ ३२७ ब।

लाभ—३.४१६ अ।

लाभांतराय—अन्तराय १.२७ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, १ ९४ ब, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १.९४ ब, प्रदेश ३.१३७। बध ३.९७ बधस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसयोगीभग १.३९९। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९ ब।

लालसा—निदान २.६०८ अ।

लिंग—३ ४१६ अ, मोक्ष ३.३२७ ब, वेद ३.५८३ ब, सल्लेखना ४ ३९० ब।

लिंगज श्रुतज्ञान—श्रुतज्ञान ४.५९ अ।

लिंगपाहुड—३.४२० ब, इतिहास १ ३४० ब।

लिंग व्यभिचार—नय २ ५३७ ब।

लिंगशुद्धि—शुद्धि ४ ४० अ।

लिंगसावरण—वेद ३ ५८९ अ।

लिपिबद्ध—आगम १.२२८ ब।

लिपि संख्यान क्रिया—मंत्र ३.२४७ अ, संस्कार ४.१५१ अ।

लिप्त—३.४२० ब, आहार दोष १ २९१ ब।

लीख—३.४२० ब, क्षेत्र का प्रमाण २.२१७ अ।

लीन—चारित्र २.२८४ अ, मोक्षमार्ग (लय) ३.३३५ ब, सामायिक ४.४१५ ब।

लीलाविस्तार टीका—३ ४२० ब, इतिहास १.३४२ अ।

लुका—३.४२० ब, श्वेताबर ४ ८० ब।

लुंका मत—३.४२० ब। श्वेताबर ४.८० ब।

लेखक्रिया—क्रिया २.१७४ ब।

लेखन—आगम १.२२८ ब।

लेप—३ ४२० ब।

लेपाहार—आहार १.२८५ अ, आहारक १.२९५ अ।

लेप्यकर्म—कर्म २ २६ अ, निक्षेप २.५९८ अ।
लेप्याहार—आहार १.२८५ अ, आहारक १ २९५ अ।
लेवड़—३ ४२० ब।
लेश्या—३.४२० ब, आयुबंध के स्थान १.२५९ अ, आर्तध्यान १ २७४ अ, कषाय २ ३९ अ, काल २.९७ अ, २ ९७ ब, केवली २.१६४ ब, जन्म २ ३१८ ब, जन्म (गति अगति) २ ३२१ अ, तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति २.३७६ ब, धर्मध्यान २ ४८१ ब, मरण ३ २८३ ब, रौद्रध्यान ३ ४०८ ब, सल्लेखना ४ ३८४ अ, ४.३९० ब।
लेश्या मार्गणा (प्ररूपणा)—३ ४२५ ब। प्ररूपणा—बध ३ १०७, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८४, उदयस्थान १ ३९३ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८४, सत्त्वस्थान ४ २८६, ४.३०१, ४.३०६, त्रिसंयोगीभग १.४०७ ब। सत् ४ २४२, सख्या ४ १०७, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४ ४९०, काल २ ११५, अन्तर १ १८, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१, भागाभाग ४.११३। पचशरीर स्वामित्व ४ ७।
लेह्य—आहार १ २८५ अ।
लोंकागच्छ—श्वेताबर ४ ८० ब।
लोंकाशाह—श्वेताबर ४.८० ब।
लोंच—२ १६९ ब।
लो०—घनलोक की सहनानी २.२१९ ब।
लोक—३ ४२८ ब, निर्देश ३.४३१ अ, आकार ३.४३८ अ, लक्षण ३.४३८ अ, विस्तार ३ ४३८ अ, त्रि विभाग ३ ४४० ब, चित्र ३ ४३९, संतुलित अध्ययन ३ ४३१ अ। ओम् १.४७० अ, धर्माधर्म द्रव्य २ ४८८ ब। २ ४९०, सत् ४ १६० अ।
लोक अनुप्रेक्षा—अनुप्रेक्षा १ ७६ ब, १ ८० अ।
लोकचद्र—३.४९१ अ, नदिसघ १.३२३ अ-ब, इतिहास १ ३२९ अ।
लोकनाभि—सुमेरु ४ ४३७ अ।
लोकनिंदा—आहारातराय १.२९ ब।
लोकपक्ति क्रिया—३ ४९१ अ, क्रिया २.१७५ अ।
लोकपाल—३ ४९१ अ। भवनवासी—निर्देश ३.२०९ अ, आयु १ २६५। वैमानिक—निर्देश ४ ५१२, आयु १ २६९-२७०, देवियो की गणना ४.५१३।
लोकपूरण समुद्घात—केबली २ १६६ ब।
लो० प्र०—लोकप्रतर की सहनानी २.२१९ ब।
लोकप्रतर—३ ४९२ अ, सहनानी २ २१९ ब।
लोकप्रमाण—संख्या ४.९२ ब।
लोकबाधित—बाधित ३ १८२ ब।
लोकबिंदुसार—श्रुतज्ञान ४.६९ अ।
लोकमध्य—सुमेरु ४.४३७ अ।
लोकमूढता—अमूढदृष्टि १.१३२ ब, मूढता ३.३१५ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३६१ ब।
लोकवाद—एकात १.४६५ अ-ब, लोकोत्तर वाद ३ ४९२ अ।
लोकविनिश्चय—इतिहास १ ३४० अ।
लोकविभाग—३ ४९२ अ, इतिहास १ ३२९ अ, १.३४१ अ।
लोकव्यवहार—सम्यग्दर्शन २ ५५७ अ।
लोकश्रेणी—३.४९२ अ।
लोकसंस्थान—ध्येय २.५०० अ।
लोकसेन—३ ४९२ अ, पचस्तूप सघ १ ३२६ ब, इतिहास १ ३३० अ।
लोकांत—लौकातिक देव ३ ४९३ अ।
लोकांतिक—लौकातिक देव ३.४९३ अ।
लोकाकाश—आकाश १ २२० ब, १.२२४ अ, उत्पादादि १ ३६२ ब।
लोकाग्र—मोक्ष ३ ३२४ ब।
लोकादित्य—३.४९२ अ, अकालवर्ष १ ३१ अ।
लोकानुप्रेक्षा—१ ७६ ब, १ ८० अ।
लोकानुवृत्ति—विनय ३ ५४८ ब।
लोकायत—चार्वाक २ २९४ ब।
लोकालोक विभाग—धर्माधर्म द्रव्य २ ४८९ ब, २ ४९० अ।
लोकालोक व्यापी—केवलज्ञान २ १४७ ब।
लोकेषणा—अनाकांक्ष अनशन १ ६५ अ, १.६६ अ, उपदेश १.४२४ ब, तप २ ३५८ ब, २ ३६० अ, धर्म २ २७५ अ, ध्याता २ ४९३ अ, राग ३ ३९६ ब, ३.३९७ अ, वाद ३ ५३३ अ, विनय ३ ५५२ ब, विवेक ३ ५६६, सल्लेखना ४ ३८३ अ, साधु ४ ४०५ अ, स्वाध्याय ४.५२३।
लोकोत्तर गणना—प्रमाण ३.१४४ ब।
लोकोत्तर चेतना—चेतना २.२९९ ब।
लोकोत्तर जुगुप्सा—जुगुप्सा २.३४४ अ, सूतक ४.४४२ ब।
लोकोत्तर मंगल—निक्षेप २.६०१ अ।
लोकोत्तरवाद—३ ४९२ अ।
लोकोत्तर शरण—शरण ४.५ अ।
लोकोत्तर शुचित्व—शुचि ४.३८ अ।

लोकोत्तरीय वाद—श्रुतज्ञान ४.६० अ।

लोगाक्षि भास्कर—३.४९४ अ, मीमांसा दर्शन ३.३११ अ, वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ।

लोभ (कषाय)—३ ४९२ ब, कषाय २.३५ ब, २ ३८ अ, २ ३९ अ, काडक २ ४२ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०-१६१, शौच ४.४२ ब, संज्ञा (परिग्रह) ४ १२१ अ। प्ररूपणा—बंध ३ १०५, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८२, उदयस्थान १ ३९३ अ, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०७ अ। सत् ४ २३२, संख्या ४ १०५, ४.११७, क्षेत्र २.२०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११२, अंतर १ १५, भाव ३.२२१ अ, ३.२२३, अल्पबहुत्व १ १४९, भागाभाग ४ ११७।

लोभकर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३.३४१, स्थिति ४ ४६१, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ १७, बंधस्थान ३ १०९, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २९५, त्रिसंयोगी भंग १ ४०१ ब। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।

लोभाकुलता—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।

लोभाणु—सूक्ष्म सांपराय ४ ४४१ ब।

लोभी—आहार दोष १ २९१ अ।

लोल—३ ४९२ ब। नरक पटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

लोलक—३.४९२ ब। नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार ३.५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

लोलवत्स—३ ४९२ ब। नरक पटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

लोलुक—नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब। अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

लोलुप—नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३ ४४१, नारकी—अवगाहना १.१७८ आयु १ २६३।

लोहवाहिनी—चक्रवर्ती ४.१५ अ.

लोहागल—३.४९३ अ। विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

लोहाचार्य—३ ४९३ अ। प्रथम—मूलसंघ १.३१६, इतिहास १.३२८ अ, १ परि०/२ २,३,५,७। द्वितीय—मूलसंघ १ ३१६, १.३१७, नंदिसंघ बलात्कारगण १.३२३ अ, पुन्नाट संघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३२८ अ। तृतीय—मूलसंघ १ ३२२ ब, नंदिसंघ बलात्कारगण १ ३२३ अ, इतिहास १ ३२८ ब। चतुर्थ—सेनसंघ १ ३२६ अ।

लोहार्गल—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

लोहार्य—मूलसंघ १ ३१६। इतिहास १ ३२८ अ।

लोहित—३ ४९३ अ। गजदंत का कूट—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४४४, ३.४५७। ग्रह २.२७४ अ। पाण्डुक वन में सोमदेव का भवन—निर्देश ३ ४५० ब, अंकन ३ ४५० ब। मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अंकन ३ ४६४। लवणसागर के पर्वत का देव ३ ४७४ ब।

लोहित (स्वर्ग पटल)—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अंकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २७९।

लोहितांक—रत्नप्रभा (चित्रा पृथिवी) ३ ३८९ ब। लवण सागर के पर्वत का देव ३ ४७४ ब।

लोहिताक्ष—३ ४९३ अ, रुक्मवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६९। स्वर्ग-पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अंकन ४.५१९ ब, देव आयु १.२६७।

लोहिताक्षमयी—सुमेरु की परिधि ३.४४९ अ-ब।

लौंद मास—चन्द्र की गति से उत्पत्ति २.३५१ अ।

लौकांतिक देव—३.४९३ अ, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५८ ब, जन्म २ ३१७ ब, द्विचरम शरीर ४.५१० ब।

लौकिक—३ ४९४ अ। नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३, निक्षेप २.५१९ ब।

लौकिक कर्ताकर्म—कर्ताकर्म २.२३ अ।

लौकिक क्रिया—साधु ४.४०५ ब।

लौकिक गणना—प्रमाण ३ १४४ ब।

लौकिक चेतना—चेतना ३.२९९ ब।

लौकिक जुगुप्सा—जुगुप्सा २.३४४ अ, सूतक ४.४४२ ब।

लौकिक जैन—२ ३४४ अ।

लौकिकता—कर्ताकर्म २.२३ अ, चेतना २.२९९ ब, जैन २ ३४४ अ।

लौकिक मंगल—निक्षेप २.६०१ अ।

लौकिक मूढता—अमूढदृष्टि १ १३२ ब, मूढता ३.३१५ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६१ ब।

लौकिकवाद—एकात १ ४६५ अ-ब, लोकोत्तर वाद ३ ४९२ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ।

लौकिक शरण—शरण ४ ५ अ।

लौकिक शास्त्र—शास्त्र ४ २८ अ।

लौकिक शुचि—शुचि ४ ३८ अ।

लौकिक संगति—सगति ४ ११८ अ।

लौकिक सुख—सुख ४ ४३० ब।

व

वंग—मनुष्यलोक (बग) ३ २७५ अ।

वंगा—३ ४९४ अ, मनुष्यलोक (बंगा) ३ २७५ ब।

वंचन—स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६६।

वंचना—माया ३ २९६ अ।

वंदन—विनय ३ ५५२ अ-ब।

वंदनमाला—मंगल ३.२४४ अ।

वंदना—३ ४९४ ब, उपयोग १.४३४ अ, कृतिकर्म २.१३४ अ, २.१३५ अ, पूजा ३ ७६ ब, विनय ३.५४३ ब, ३ ५५२ अ-ब, व्युत्सर्ग ३.६२१ अ, श्रुतज्ञान ४ ६९ ब, सयम (उपयोग) १.४३४ अ, सामायिक ४ ४१७ अ।

वंदना मुद्रा—मुद्रा ३ ३१३ ब।

वंदनीय—विनय ३ ५५३ अ।

वद्य—विनय ३ ५५३ अ, ३ ५५४ अ।

वंश—३.४९६ अ, इतिहास १.३१० अ, वर्ण व्यवस्था ३.५२० ब।

वंशक—मगधदेश इतिहास १ ३१२।

वंशपत्र (योनि)—योनि ३.३८७ अ।

वंशा—३ ४९६ अ। नरक पृथिवी—निर्देश २ ५७६ अ, पटल २ ५७९, इद्रक श्रेणीबद्ध प्रकीर्णक २.५७८, २.५७९, विस्तार २ ५७६, २.५७८, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६३।

वंशा (नरक)—प्ररूपणा—बध ३ १००, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ३ ३०५ विषयोगीभग १ ४०६ ब। सत ४ १६९, संख्या ४.९५, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४ ४७९, काल २.१०१, अन्तर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४४।

वंशाल—३ ४९६ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

वंशालय—विद्या ३.५४४ अ, विद्याधर १.३३९ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।

व—जघन्य वर्ग की सहनानी २ २१९ अ।

$व_2$—सूच्यंगुल तथा घनागुल की वर्गशलाका २ २१९ ब।

$व_2 + \frac{व}{१६+२}$—जगश्रेणी की वर्गशलाका राशि २.२१९ ब।

$व_2^{१/२}$ प्रतरागुल की वर्गशलाका राशि २.२१९ ब।

$व_{16/2}$—जगश्रेणी की वर्गशलाका राशि २ २१९ ब।

$\begin{bmatrix} व_{16/2} \\ व_2 \end{bmatrix}$—घनागुलकी वर्गशला का राशि २ २१९ ब।

$\begin{bmatrix} व^{1/2} \\ व_2^{16/2} \end{bmatrix}$—जगत्प्रतरकी वर्गशलाका राशि २ २१९ ब।

वकुश—साधु बकुश) ४ ४०८ ब।

वक्कज—वस्त्र ३ ५३१ अ।

वक्खार—आवास १ २८० ब।

वक्तृत्व—केवलज्ञान (सर्वज्ञता) २ १५२ अ।

वक्तव्य—३ ४९६ अ, सप्तभगी ४ ३२६ ब।

वक्तव्यता—३ ४९६ अ, उपक्रम १ ४१६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६७ ब।

वक्ता—३ ४९६ अ, आगम १ २३४ ब, उपदेश १ ४२४ ब, १.४२५ अ, जीव २ ३३३ ब, प्रामाणिकता(आगम) १.२३४ ब, सामान्य (इच्छा) ४ ४१३ अ।

वक्रग्रीव—३ ४९७ अ कुन्दकुन्द २ १२६ ब, २.१२७ ब, मूलसघ १ ३२२ ब, इतिहास १ ३३१ ब।

वक्रांत—३.४९७ अ। नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

वक्षार—३.४९७ अ।

वक्षारगिरि—३ ४९७ अ, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ, विदेह क्षेत्र के पर्वत—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने। चित्र ३ ४६० अ, वर्ण ३.४७७, कूट तथा देव ३.४७२ ब।

वचन—३ ४९७ अ, अतिचार १ ४४ अ, आगम (प्रामाण्य) १.२३४ ब, केवली २ १६३ अ-ब, मन (योग) ३ ३८१ अ, मूर्तत्व ३ ३१७ अ, योग (मन) ३ ३८१ विवेक ३ ५६७ अ, व्युत्सर्ग ३.६२० अ।

वचन (अनृत)—असत्य १ २०८ ब।

वचन (अनालोच्य)—असत्य १ २०८ ब।

वचन (अभूतोद्भावन)—असत्य १ २०८ ब।

वचन (असत्य)—असत्य १ २०८ अ।

वचन (असूनृत) असत्य १.२०९ अ।

वचन (ऋत)—असत्य १ २०८ अ।

वचन (कर्म)—कर्म २ २६ अ।

वचनगुप्ति—अतिचार (गुप्ति) २ २५० ब, अहिंसा १ २१६ अ, गुप्ति २ २४८ ब, २ २४९ अ, २.२५० ब।

वचन-गोचरातीत—मोक्ष ३.३३० अ।

वचननिर्विष ऋद्धि—ऋद्धि १ ४५५ ब।

वचन-पथ—एकात ४ ४६५ अ, नय २ ५२४ अ।

वचन-परावर्तन—कृतिकर्म (आवर्त १ २७९ अ।

वचन (परुष)—असत्य १ २०८ अ।

वचन प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३.१३२ अ।

वचनप्रवृत्ति—मनोयोग ३.२७७ अ।

वचनप्राण—प्राण ३ १५३ अ, ३.१५४ ब।

वचनबल—३ ४९८ ब, ऋद्धि १ ४४७, १ ४५५ अ, पर्याप्ति ३ ४४ अ, योग ३ ३८० अ।

वचनबल ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५५ अ।

वचनयोग—३ ४९८ अ, अपर्याप्ति (योग) ३ ३८० अ, काल २.९६ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०, केवलज्ञान (सर्वज्ञत्व) २ १५२ अ, दिव्यध्वनि २ ४३० ब, योग ३.३७९ अ-ब, ३.३८० अ-ब।

वचनयोग (प्ररूपणा)—बध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय १ २७९, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८३, ३ ३७९ अ, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ २१३, सख्या ४.१०२, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४.४८५, काल २ १०८, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४७।

वचनवदना—वदना ३ ४९४ ब।

वचनविवेक—विवेक ३ ५६७ अ।

वचनशुद्धि—भक्ति ३ १९९ अ, शुद्धि ४ ३९ अ, ४ ३४१ ब।

वचन (सत्प्रतिषेध)—असत्य १.२०८ ब।

वचनातीत—अवक्तव्य १.१७७ अ, तत्त्व १ २१९ अ, नय २ ५५४ ब, मोक्ष ३ ३३० अ, नय (अवक्तव्य) १ १७७ अ, २ ५२२ ब, नय (वचनातीत) २ ५५४ सापेक्ष धर्म (अवक्तव्य) ४ ३२४ ब।

वचनालाप—(रात्रि को) अपवादमार्ग १ १२२ अ।

वज्र—३.४९८ ब, गणधर ३ २१३ अ, तीर्थंकर सुमति व अभिनन्दन २ ३८७, विद्याधरवश १ ३३९ अ।

वज्र (कूट)—कुडलवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६७। मानुषोत्तर पर्वत का—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अकन ३ ४६४। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६८। सुमेरु के वनो मे स्थित—निर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४५१। सुमेरु के वन मे सोम देव का पुर—निर्देश ३ ४५०, अंकन ३ ४५१।

वज्र (स्वर्ग)—अनुदिश स्वर्ग का श्रेणीबद्ध निर्देश ४ ५१९ अ, अकन ४ ५१५, ४ ५१७, देव आयु १ २६९। सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अंकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६७।

वज्रकठ—वानरवश १ ३३८ ब।

वज्रकांड—चक्रवर्ती ४ १५ अ।

वज्रखंडिक—३ ४९८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

वज्रघोष—३ ४९८ ब।

वज्रचमर—तीर्थंकर अभिनदन तथा पद्मप्रभ २ ३८७।

वज्रचूड—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

वज्रजघ—३ ४९९ अ, विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

वज्रजानु—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

वज्रतुडा—चक्रवर्ती ४ १५ अ।

वज्रदत—३ ४९९ अ, तीर्थंकर वासुपूज्य २ ३७८।

वज्रदष्ट्र—यदुवंश १ ३३७, विद्याधर वश १ ३३९ अ।

वज्रदत्त—तीर्थंकर श्रेयासनाथ २ ३७८।

वज्रधर—तीर्थंकर ३ ३९२।

वज्रधर्मा—यदुवंश १ ३३६।

वज्रध्वज—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

वज्रनदि—३ ४९९ अ। प्रथम—नदिसघ १ ३२३ अ, इतिहास १ ३२९ अ। द्वितीय—द्रविडसघ १ ३२० ब, मूलसंघ १ ३२२ ब, इतिहास १ ३२९ अ।

वज्रनाभि—३ ४९९ अ, तीर्थंकर ऋषभ, विमल तथा वासुपूज्य २.३७८, तीर्थंकर अभिनंदन २ ३८७।

वज्रनाराचसंहनन—४.१५५ अ-ब, नामकर्मप्रकृति प्ररूपणा

—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७, बध स्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भंग १ ४०४ सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ अ।

वज्रपजरविधान—इतिहास १ ३४३ ब।

वज्रपाणि—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

वज्रपुर—३.४९९ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।

वज्रप्रभ—३ ४९९ अ, वानरवंश १.३३८ ब।

वज्रप्रभ (कूट)—कुडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६७।

वज्रबाहु—३ ४९९ ब, विद्याधरवंश १ ३३९ अ, हरिवंश १ ३४० अ।

वज्रभूत—विद्याधरवंश १.३३९ अ।

वज्रमध्य—राक्षसवश १ ३३८ अ।

वज्रमध्य व्रत—३ ४९९ ब।

वज्रमय—सुमेरु पर स्थित यभदेव का पुर—निर्देश ३ ४५० अ, अकन ३ ४५१।

वज्रमयी—सुमेरु की परिधि ३ ४४९ अ-ब।

वज्रमूक—३ ४९९ ब।

वज्रमूल—सुमेरु ४ ४३७ अ।

वज्रयश—१.परि०/३.४, इतिहास १ ३२८ ब।

वज्रर्षभनाराचसंहनन—४ १५५ अ-ब, नामकर्म प्रकृति प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३.१३६। बध ३ ९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगीभग १ ४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६९ अ।

वज्रवर—३.४९९ ब।

वज्रवर सागर-द्वीप—३ ४९९ ब। निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

वज्रवा—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

वज्रवान—३.४९९ ब, गंधर्व जातीय व्यंतरदेव २.२११ अ, विद्याधरवश १.३३९ अ।

वज्रशृंखला—३.४९९ ब, तीर्थंकर अभिनदननाथ की यक्षिणी ३.३७९, विद्या ३.५४४ अ।

वज्रसंज्ञ—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

वज्रसार—गणधर २ २१३ अ, तीर्थंकर ऋषभनाथ २ ३७८।

वज्रसेन—विद्याधरवश १ ३३९ अ।

वज्रांकुशा—३ ४९९ ब, तीर्थंकर सुमतिनाथ की यक्षिणी २ ३७९, विद्या ३ ५४४ अ।

वज्राढ्य—३ ४९९ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

वज्राढ्यपुर—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

वज्रा पृथिवी—सागरो की आधारभूत पृथिवी ३ ४४२ अ।

वज्राभ—विद्याधरवश १.३३९ अ।

वज्रायुध—३ ४९९ ब, विद्याधरवश १ ३३९ अ।

वज्रार्गल—३ ४९९ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

वज्रार्द्धतर—३.४९९ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।

वज्रास्य—विद्याधरवश १.३३९ अ।

वट—तीर्थंकर ऋषभदेव २ ३८३।

वट्टकेर—३.४९९ अ, कुन्दकुन्द २ १२७ अ, इतिहास १ ३२८ ब।

वड्ढमाणचरिउ—३ ४९९ ब, इतिहास १ ३४४ अ, १ ३४५ ब।

वणथली—३ ५०० अ।

वणिक्कर्म—सावद्य ४.४२० ब।

वणिवग(दोष)—३ ५०० अ, वसतिका दोष ३ ५२९ ब।

वत्थि मोक्खो—ब्रह्मचर्य ३ १८९ अ।

वत्स—३ ५०० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, तीर्थंकर पद्मप्रभ २ ३७९।

वत्समित्रा—३ ५०० अ, गजदत के कूट की देवी—निर्देश ३.४७२ ब, अकन ३.४५७।

वत्सराज—३.५०० अ, राष्ट्रकूटवश १.३१५ अ।

वत्सवत्—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३.४४४, ३.४६० अ।

वत्सा—३.५०० अ, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, गिस्तार ३.४८२, ३.४८५, अंकन ३.४४४, ३.४६० अ।

वत्सावती—३.५०० अ, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३.४८०,

३.४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, अकन ३ ४४४।

वदतोव्याघात—३ ५०० अ।

वदन—३ ५०० अ।

वद्दिग – ३ ५०० अ।

वद्धदेव (चूड़ामणि)—मूलसघ १.३२२ ब।

वध—३ ५०० अ, अहिसा व्रत का अतिचार १.२१६ अ, वधकोपदेश १ ६३ ब।

वधपरिषह— ३ ५०० अ, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ।

वधू—स्त्री ४.४५० अ।

वध्यघातक—३.५०० ब, विरोध ३.५७४ ब, संबंध ४.१२६ अ।

वनक—३ ५०० ब। नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।

वनखड— जबू व शाल्मली वृक्षस्थल—निर्देश ३ ४५८ ब, अकन ३.४५९। भूतारण्यक देवारण्यक—निर्देश ३ ४६० ब, विस्तार ३.४८७, ३ ४८८, अकन ३ ४४४, ३ ४६२। सुमेरु के चार वन—निर्देश ३ ४५० अ, विस्तार ३.४८८। अकन ३ ३४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने।

वनजीविका— सावद्य (खर कर्म) ४ ४२१ ब।

वनभूमि—चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ।

वनमाल— ३ ५०० ब। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४.५१७, अकन ४.५१५, देवआयु १ २६७।

वनमाला— ३.५०० ब।

वनवास—३ ५०० ब।

वनवास्था—३.५०० ब, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।

वनस्पति (काय)—३ ५०० ब, ३ ५०२, अवगाहना १.१७९, आयु १ २६४, काय २.४४, २.४६ अ, जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २.३४३, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब, ३.२०४ अ, सचित्त-अचित्त ४ १५८ अ, स्थावर ४ ४५३, ४ ४५४ व।

वनस्पतिकाय—प्ररूपणा—बध ३.१०४, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३७९, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९९, ४ ०३५, त्रिसयोगीभग १ ४०६ ब। सत् ४ २०६, सख्या ४ १०१, क्षेत्र २.२०१, स्पर्शन ४.४८३, काल २.१०६, अन्तर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

वनीपक—२.५१० ब, आहारदोष १.२९१ अ।

वपु:स्पर्श—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ।

वप्र—३.५१० ब।

वप्रकावती—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश अकन ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र, ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब। विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, अकन ३.४४४ के सामने।

वप्रथु—हरिवंश १.३४० अ।

वप्रवान्—३.५१० ब।

वप्रा—चक्रवर्ती ४ ११ ब, तीर्थंकर नमिनाथ २.३८०। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ। वक्षार गिरि का कूट व देवी—निर्देश ३ ४८२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, अकन ३ ४४४ के सामने।

वप्रावत्—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६०, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, अकन ३.४४४ के सामने।

वमन—आहारातराय १.२९ अ।

वय—३.५१० ब।

वयोपेक्षा विवर्जन—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ।

वयोवृद्ध—संगति ४.११९ अ।

वरकुमार—कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ।

वरचंद्र—भावि शलाकापुरुष ४ २५ ब।

वरज्येष्ठ—यम लोकपाल का यान ४ ५१३ अ।

वरतनु—३.५११ अ।

वरतनु (देव)—चक्रवर्ती ४.१५ ब, प्रतिनारायण ४ २० अ।

वरतनु (द्वीप)—लवण तथा कालोदसागर का अन्तर्द्वीप—निर्देश ३.४६२ ब, ३.४६३ अ, विस्तार ३.४६२ ब, ३.४६३ अ, ३.४७८, अकन ३.४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, सीता व सीतोदा नदी का तीर्थ ३.४६० ब।

वरदत्त—तीर्थंकर नेमिनाथ २.३८७।

वरधर्म—तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३७८।

वररुचि ३.५११ अ, चक्रवर्ती ४.१० ब।

वरवीर—३.५११ अ।

वरसेन—अच्युत १.४१ अ, बलदेव ४.१७ अ, ४.१८ अ।

वरसेना—तीर्थंकर वासुपूज्य २ ३८८।
वरांगकुमार—३.५११ अ।
वरांगचरित्र—इतिहास १ ३४६ अ।
वरांगचरित्र—इतिहास १ ३४५ ब।
वराटक—३.५११ ब, पूजा ३.७९ अ, निक्षेप २.५९८ ब।
वराटक कर्म—कर्म २ २६ अ, निक्षेप २ ५९८ ब।
वराह—३ ५११ अ, तीर्थंकर श्रेयासनाथ (गेंडा) २ ३७९, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।
वराहमिहिर—३ ५११ अ, श्वेताबर ४ ७८ ब।
वरुण ३ ५११ ब, गणधर २ २१३ अ, तीर्थंकर मल्लिनाथ का यक्ष २.३७९, नक्षत्र २ ५०४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब। वारुणीवर द्वीप का रक्षक देव ३ ६१४।
वरुणकायिक—३.५११ ब, देव (आकाशोपपन्न) २.४४५ ब।
वरुणपर्वत—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
वरुणपुर—जल २.३२४ ब।
वरुणप्रभ—३.५११ ब, वारुणीवर द्वीप का रक्षक देव ३.६१४।
वरुण लोकपाल—वैमानिक देवों के—निर्देश ३ ४९२ अ, शक्ति आदि ४ ५१३ अ, मध्यलोक मे अवस्थान ३.६१३ ब, ३ ६१४, सुमेरु पर्वत पर भवन ३.४५० अ-ब, स्वर्गलोक मे अवस्था ४ ५१३ अ, आयु १.२६९।
वरुना—तीर्थंकर चद्रप्रभ २ ३८८।
वर्ग—३ ५११ ब, उदय १.३६६ ब, गणित २.२२३ अ, २ २२४ अ, त्रिवर्ग २.४०० ब।
वर्गण संवर्गण—गणित २.२२३ ब।
वर्गणा—३ ५११ ब, उदय १ ३६६ ब, कर्म २.२७ अ-ब, कृष्टि (अनुभाग) २ १४० ब, निर्वर्गणा २.६२६ अ, प्रदेश (समयप्रबद्ध) ३.१३५ ब, सख्या ४.९३ अ।
वर्गणा (प्ररूपणा)—सत् ३ ५१२ अ, सख्या ४ ११६ ब, क्षेत्र २ २०८, स्पर्शन ४ ४९४, भाव (वर्गणा के स्वामियो का) ३ २२३। अल्पबहुत्व—वर्गणाबद्ध प्रदेशो का १ १४२ अ, १ १५५, १.१७६, शरीरबद्ध वर्गणाओ का १.१५७, वर्गणा की अवगाहना का १ १५७, वर्गणा पचक के द्रव्य प्रमाण आदि का १ १५६ ब, एकश्रेणी व नाना श्रेणी वर्गणाओ का १ १५५।
वर्गणा शलाका—३ ५१८ ब।
वर्गधारा—गणित २.२२९ अ।
वर्गमूल—३.५१८ ब, गणित २.२२३ अ, २.२२४ अ।
वर्गशलाका—३ ५१९ अ, गणित २ २२५ अ।
वर्गशलाका राशि—गणित २ २२९ अ। सहनानी २.२१९ ब।
वर्ग-समीकरण—३ ५१९ अ।
वर्गित—गणित २ २२५ अ।
वर्गित सर्वगित—३.५१९ अ, अनन्त १.५६ अ, गणित २ २२३ ब।
वर्चगत—रत्नप्रभा (चित्रा पृथिवी) ३.३९१ अ।
वर्चस्क—३ ५१९ अ। नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन १ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।
वर्ण—३.५१९ अ, ईर्यापथ कर्म १,३४१ अ, निक्षेप २.६०२ ब, प्रव्रज्या ३.१४९ ब।
वर्णचतुष्क १.३७४ ब।
वर्णमातृका—पदस्थ ध्यान ३ ६ ब।
वर्णलाभ क्रिया—संस्कार ४ १५१ ब, ४.१५२ ब।
वर्णविभाग—वर्णव्यवस्था ३ ५२२ ब।
वर्णव्यवस्था—३ ५१९ ब, गोत्रकर्म निर्देश ३.५२० ब, वर्णव्यवस्था निर्देश ३ ५२३ अ, उच्च-नीच कुल ३ ५३४, शूद्र ३ ५२५ ब।
वर्णोत्तम अधिकार—ब्राह्मण ३.१९५ ब।
वर्ण्यसमा जाति—३ ५२५ ब।
वर्तना—३ ५२६ अ, काल २.८२ ब, २ ८३ अ, २.८५ अ-ब।
वर्तमान काल—३.५२६ अ, अल्पबहुत्व १ १४२ ब, काल (प्रमाण) २.८८ अ, नय २.५३६ अ।
वर्तमान ज्ञायक शरीर—अन्तर १.३ ब, निक्षेप २ ६०३ ब।
वर्तमान ग्राही नय—नय ३.५२२ अ।
वर्तमान नैगम-नय—नय २ ५३० अ-ब।
वर्दल—३.५२६ अ, नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २ ५८० अ, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १ २६३।
वर्द्धमान—३.५२६ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६९।
वर्द्धमानकीर्ति—नन्दिसंघ १.३२३ ब।
वर्द्धमानचरित्र—इतिहास १.३४५ ब, १.३४६ अ।
वर्द्धमानचारित्र—३.५२६ अ, असग १ २०७ ब, इतिहास १.३३० ब. १.३४३ अ।
वर्द्धमान भट्टारक—इतिहास—प्रथम १.३३२ ब, १.३४५ ब। द्वितीय १.३३३ ब।
वर्द्धमान महावीर—अग्निमित्र १.३६ ब, इंद्रभूति १.२९९ ब, गणधर २ २१३ अ, तीर्थंकर प्ररूपणा २.३७९-३९१, मगधदेश इतिहास १.३१०, महावीर ३.२९१

अ, मूलसघ १.३१६, १ परि०/२ १,२,८ । वीरसंवत् १ परि०/१, श्रुततीर्थ १.३१८ अ ।

वर्द्धमान यंत्र—यत्र ३ ३५९ ।

वर्धकि—३ ५२६ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ ।

वर्धमानक—चक्रवर्ती ४ १५ अ ।

वर्मा—तीर्थंकर पार्श्वनाथ २ ३८० ।

वर्मिला—तीर्थंकर पार्श्वनाथ २ ३८० ।

वर्ष—३ ५२६ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, सूर्य की गति से उत्पत्ति २ ३५१ अ, चातुर्द्वीपिक मत ३ ४३७ ब, बौद्धमत ३ ४३४, वैदिक अभिमत ३ ४३१ ब ।

वर्ष दशक—काल का प्रमाण २ २१६ अ ।

वर्षधर—३ ५२६ अ, प्रत्येक द्वीप मे लबायमान पर्वत—निर्देश ३ ४४६ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७, गणना ३.४४५ अ, ३.४६२ ब, ३ ४६३ ब, इसके कूट तथा देव ३.४७२ अ ।

वर्षलक्ष—काल का प्रमाण २.२१६ अ ।

वर्ष शतसहस्र—काल का प्रमाण २ २१६ अ ।

वर्षा ऋतु—योग (कालस्थिति) ३ ३७५ ब ।

वर्षायोग—३ ५२६ ब, कायक्लेश २.४७ ब, कृतिकर्म २.१३९ अ, योग ३ ३७५ ब ।

वलजुअ कच्छउड—अडर १.२ अ ।

वलय—३ ५२६ ब, क्षेत्रफल परिधि, व्यास आदि २ २३३ ब, चन्द्र सूर्य आदि के वलय २ ३४७ ।

वलाहक—३ ५२६ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, ३.५४६ अ ।

वलीक—३.५२६ ब, अंतकृत केवली १ २ ब ।

वल्कल—३ ५२६ ब, एकातवादी १ ४६५ ब, अज्ञानवादी १.३८ ब ।

वल्गु—३ ५२६ ब, गधा क्षेत्र का अपर नाम २.२११ अ, लोकपाल का यान ४ ५१३ अ । विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नाम निर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८१, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ । वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३ ४४४ ।

वल्गु (स्वर्ग)—स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६६ ।

वल्गुप्रभ—कुबेर लोकपाल का यान ४ ५१३ अ ।

वल्लभ—३.५२६ ब, वेदान्त ३ ६०१ अ ।

वल्लभगोविंद—राष्ट्रकूट वश १ ३१५ ब ।

वल्लभा—भवनवासी इन्द्रो की ३ २०९ अ, व्यन्तरेन्द्रो की ३.६११ ब, वैमानिक इन्द्रो की ४ ५१२, ४.५४३ ब ।

वल्लभिका—३ ५२६ ब, भवनवासी इन्द्रो की ३.२०९ अ, व्यंतरेंद्रो की ३ ६११ ब, वैमानिक इन्द्रो की ४ ५१२, ४ ५१३ ब ।

वल्लरि छेदना—२.३०६ ब, २ ३०७ अ ।

वल्लिभूमि—३ ५२६ ब, समवसरण ४ ३३० ब ।

वशवर्तिता—कारण (कर्मोदय) २ ७१ ब ।

वशार्तमरण—मरण ३ २८१ ब ।

वशित्व ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १.४५१ अ ।

वशिष्ठ—३.५२६ ब, एकात विनयवादी १ ४६५ ब, वैनयिक ३.६०५ अ ।

वशीकरण—ध्यान २.४९७ अ, मन्त्र ३.२४५ ब ।

वश्यकर्म—३ ५२६ ब ।

वश्ययत्र—यत्र ३ ३६० ।

वसत—३.५२६ ब, सुमेरु ४ ४३७ अ ।

वसंतकीर्ति—नदिसघ १ ३२३ ब ।

वसंतभद्र व्रत—३.५२६ ब ।

वसतिका—३ ५२६ ब, अतिचार १.४४ अ, अथालन्द चारित्र १.४६ अ, अधःकर्म ३ ४८ अ, उद्दिष्ट १ ४१३ ब, सल्लेखना ४ ३९२ अ ।

वसा—३ ५३० अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ ।

वसिष्ठ—द्वीपकुमारेंद्र—निर्देश ३ २०८ अ, परिवार ३ २०९ अ, अवस्थान ३.२०९ ब, आयु १ २६५ ।

वसुंधर—३ ५३० अ, कुरुवंश १ ३३५ ब, गणधर २.२१२ ब, चक्रवर्ती ४ १० अ, ४ १६ अ ।

वसुधरा—३ ५३० अ । रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९ । वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठा देवी ४ ५१३ ब, ४ ५१४ अ ।

वसु—३.५३० अ, अज्ञानवादी १ ३७ अ, १.३८ ब, एकात अज्ञानवादी १ ४६५ ब, कुरुवंश १ ३३५ ब, नक्षत्र २.५०४ ब, लौकातिक देव ३ ४९३ ब, हरिवश (असत्य के प्रभाव से नरक) १ ३४० अ ।

वसुका—वैमानिक इंद्रो की ज्येष्ठा देवी ४.५१३ ब ।

वसुकीर्ति—कुरुवंश १.३३५ ब, १.३३६ अ ।

वसुगिरि—हरिवंश १.३४० अ ।

वसुदर्शन—नारायण ४.१८ ब ।

वसुदेव—३ ५३० अ, गणधर ३ २१२ ब, बलदेव ४ १७ अ, ४ १८ अ, यदुवश १.३३७ ।

वसुधर्मा—वैमानिक इन्द्रो की ज्येष्ठा देवी ४.५१३ ब ।

वसुधर्मी—यदुवंश १ ३३७।
वसुधा – ३ ५३० अ।
वसुधारक—चक्रवर्ती ४ १५ अ।
वसुध्वज—यदुवंश १ ३३७।
वसुनंदि—३ ५३० अ। प्रथम—नंदिसंघ १ ३२३ अ, इतिहास १ ३२९ अ। द्वितीय—देशीय गण १ ३२४ ब, १ ३२५ अ, इतिहास १.३३० अ। तृतीय —इतिहास १ ३३१ अ, १ ३४३ ब।
वसुनंदि श्रावकाचार—३ ५३० ब, इतिहास १ ३४३ ब।
वसुपाल—३ ५३० ब।
वसुपूज्य—तीर्थंकर वासुपूज्य २ ३८०।
वसुबंधु —३ ५३० ब।
वसुभूति – नारायण ४ १८ ब।
वसुमती—३ ५३० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
वसुमत्का—३ ५३० ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।
वसुमान—यदुवंश १ ३३७।
वसुमित्र—३ ५३० ब, गणधर २ २१२ ब, शकवंश १ ३१४।
वसुमित्रा—वैमानिक इन्द्रों की ज्येष्ठा देवी ४ ५१३ ब, ४ ५१४ अ, व्यंतरेंद्रों की वल्लभिका ३.६११ ब।
वसुरथ—कुरुवंश १ ३३५ ब।
वसुषेण—३ ५३० ब।
वस्तु—३ ५३० ब, अनेकांत १ १०८ ब, एकांत (विवक्षा) १ ४६२ ब, १ ४६३ अ, कारण (वस्तुस्वातंत्र्य) २ ६० अ, २ ७३ अ, द्रव्य २ ४५४ ब, नमस्कार २ ५०६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६४ ब।
वस्तुग्राही नय—नय २ ५१३ ब।
वस्तुत्व —३ ५३० ब।
वस्तुविद्या—३ ५३१ अ।
वस्तुसमास – ३ ५३१ अ, श्रुतज्ञान ४ ६४ ब।
वस्तून ग्रह २ २७४ अ।
वस्त्र—३ ५३१, अचेलकत्व १.४० ब, श्वेताबर ४ ७९ ब।
वस्त्ररहित—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब।
वस्त्रांग (कल्पवृक्ष)—३ ५३१ अ, वृक्ष ३ ५७८ अ।
वस्त्रौक—३ ५३१ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
वह्नि—३ ५१०, लौकांतिक ३ ४९३ ब। अग्नि के अर्थ में देखिए अग्नि।
वह्निजरी - विद्याधर वंश १ ३३९ अ।
वह्नितेज—विद्याधर वंश १.३३९ अ।
वांछा—परिग्रह ३ २७ ब, संज्ञा ४ १२० ब।
वाइम—३ ५३१ अ, निक्षेप २ ६०२ अ।
वाक् (वचन) ३ ४९७ अ। विशेष दे० वचन।
वाक्छल—छल २ ३०५ ब, न्याय २ ६३४ अ।
वाक्शुद्धि—समिति ४ ३४० ब, शुद्धि (वचन) ४.३९ अ।
वाकुस – ३ ५३१ अ।
वाक्य – ३ ५३१ अ।
वाक्यप्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३ ११६ ब।
वागर्थसंग्रह—इतिहास १ ३४२ अ।
वागलि—तीर्थंकर समाधिगुप्ति २ ३७७।
वाग्भट्ट—३ ५३१ ब, इतिहास—प्रथम १ ३३१ अ, १ ३४३ ब। द्वितीय १ ३३२ ब, १ ३४५ अ।
वाग्भट्टसंहिता—आशाधर १.२८१ अ, इतिहास १ ३४४ अ।
वाघावेण—काल २ ९५ ब।
वाङ्मय—आगम १ २२७।
वाचक—३ ५३१ ब।
वाचक-वाच्य संबंध—आगम १ २३२ ब, १ २३३ अ, नय २ ५५० अ, संबंध ४.१२६ अ।
वाचक शब्द—नय २ ५२८ ब, सप्तभंगी ४ ३२४ ब।
वाचना—३ ५३१ ब, उपयोग १ ४२९ ब।
वाचनिक—व्युत्सर्ग ३ ६२० ब।
वाचनिक आस्रव—आस्रव १ २८२ ब।
वाचनिक व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३ ६२० ब।
वाचनोपगत—निक्षेप २ ६०२ अ।
वाचस्पति—न्याय २ ६३४ अ।
वाचस्पति मिश्र—३ ५३१ ब, वेदांत ३ ५९५ ब, योगदर्शन ३ ३८४ अ, साख्यदर्शन ४.३९८ ब।
वाचा उपकरण-विवेक—विवेक ३ ५६७ अ।
वाचा मायाविवेक—विवेक ३.५६७ अ।
वाचा लोभविवेक—विवेक ३ ५६७ अ।
वाचा वसतिसंस्तरविवेक—विवेक ३ ५६७ अ।
वाचा वैयावृत्यविवेक—विवेक ३ ५६७ अ।
वाचा शरीरविवेक—विवेक ३ ५६७ अ।
वाचिक—विनय ३ ५४८ ब।
वाचिक आस्रव—आस्रव १ २८२ ब।
वाचिक विनय – विनय ३ ५४९ ब।
वाचिक व्युत्सर्ग—व्युत्सर्ग ३ ६२० ब।
वाच्य—अनेकांत (सापेक्ष धर्म) १ १ ९ अ, नय २ ५२८ ब।
वाच्य-वाचक भाव—आगम १ २३२ ब, १.२३३ अ, नय २ ५५० अ, संबंध ४.१२६ अ।
वाटग्राम—३ ५३१ ब।

वाटवान्—३.५३१ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

वाण—३.५३१ ब, गणित २ २३३ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

वाणप्रस्थ—(दे. वानप्रस्थ)।

वाणिज्य—३.५३१ ब, सावद्य ४ ४२० ब।

वाणिज्य कर्मार्य—आर्य १ २७५ अ।

वाणी—३ ५३१ ब, आगम १ २२७ ब, ओम् १.४६९ ब।

वात—औदारिक शरीर १ ४७१ ब, वातवलय ३.५३२ अ।

वातकायिक—दे० वायुकायिक।

वातकुमार—३.५३१ ब, भवनवासी देव—निर्देश ३ २०८ अ, ३.२१० ब, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १ १९८, आयु १ २६५। इन्द्र—निर्देश ३ २०८ अ, शक्ति आदि ३ २०८ ब। अवस्थान ३ २०९ ब, ३ ४७१, ३ ६१२-६१४।

वातकुमार देव—प्ररूपणा—बंध ३ १०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगीभग १ ४०६ ब। सत् ४.१८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २ १०४, अतर १ १०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।

वातपृष्ठ—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

वातवलय—३ ५३२ अ, लोक ४.४४० अ, चित्र ३ ४३९।

वातव्यतर—लेश्या ३ ४२५ ब।

वात्सल्य—३.५३२ अ, उपकार १ ४१५ ब, निश्चय वात्सल्य ३.५३२ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५१ अ, ४ ३५८ ब।

वात्सायन—३ ५३३ अ, न्यायदर्शन २.६३४ अ।

वाद—३ ५३३ अ, एकात १ ४६५ अ, कथा २ २ अ, न्याय २ ६३३ अ-ब, स्याद्वाद ४ ४९७ ब।

वाद (नरकपटल)—निर्देश २ ५८० ब, विस्तार २.५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।

वाद-न्याय—३ ५३४ अ, इतिहास १.३४१ ब।

वाद-महार्णव—३ ५३४ अ, अभयदेव १ १२७ अ, इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२ अ।

वाद-विवाद—अस्तेय १ २१४ अ, वाद ३.५३३ ब।

वादाभास—वाद ३ ५३३ ब।

वादिचन्द्र—३ ५३४ अ, नंदिसघ १ ३२४ अ, इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ अ।

वादिचतुर्मुख—नदिसघ १.३२५।

वादित्व ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४८।

वादिदेव सूरि—३ ५३४ अ, इतिहास १.३३८ ब, १.३५१ ब, १.३५२ अ।

वादिभूषण—नंदिसघ १.३२४ अ, इतिहास १ ३३३ ब।

वादिराज—३.५३४ अ। प्रथम—मूलसघ १ ३२२ ब, इतिहास १.३२८ ब, १ ३४० ब। द्वितीय—द्राविडसंघ १ ३२० ब, इतिहास १.३३१ अ, १ ३४३ अ-ब। स्तोत्र ४.४४९ ब।

वादिराज सूरि—द्रविडसघ १ ३२० अ।

वादींद्र मुनि—आशाधर १.२८० ब।

वादी—तीर्थंकरवश २ ३८७।

वादीभसिंह (अजितसेन)—३ ५३४ ब, इतिहास १ ३३१ ब, १.३४४ अ।

वादीभसिंह (ओडय देव)—मूलसघ १ ३२२ ब, इतिहास १ ३२९ ब, १ ३४१ ब।

वादबलि—अक्रियावाद १ ३२ अ।

वानप्रस्थ—३ ५३४ ब, आश्रम १ २८१ अ, क्षुल्लक २ १९० अ।

वानप्रस्थ आश्रम—वर्णव्यवस्था ३.५२४ ब।

वानरद्वीप—वानरवश १ ३३८ ब।

वानरवश—इतिहास १ ३३८ ब।

वानायुज—३ ५३४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

वापी—जम्बू-शाल्मली वृक्षस्थलो मे—निर्देश ३ ४५८ ब, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१। नदीश्वर द्वीप मे—निर्देश ३ ४६३ ब, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३,४९१, अकन ३ ४६५।

वामदेव—३ ५३४ ब, यदुवंश १.३३७।

वामदेव पंडित—इतिहास २.३३१ ब, १.३४५ अ।

वामन—लोकपाल ३ ४९१ ब।

वामन मुनि—इतिहास १.३३३ अ, १ ३४४ ब।

वामनसस्थान-नामकर्म-प्रकृति—४ १५४ ब, प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, बधस्थान ३.११० उदय १.३७५, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३। त्रिसंयोगी भंग १.४०४। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९ अ।

वामा—३ ५३४ ब।

वायव्य—३.५३४ ब।

वायु—३ ५३४ ब, अर्हतातिशय १.१३७ ब।

वायुकायिक—३.५३४ ब, आयु १.२६४, काय २.४४१, जीव २.३३३ ब, जीवसमास २ ३४३, वनस्पति ३ ५०६ अ, लोक में अवस्थान ३ ५३५ अ। वक्रियिक ३.६०२ ब, स्थावर ४.४५३, ४.४५४ ब।

वायुकायिक—प्ररूपणा —बध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३७९, उदय की विशेषता १ ३७३ अ, उदय स्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९९, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ २०७, सख्या ४ १०१, क्षेत्र २.२०१, स्पर्शन ४ ४८४, काल २ १०६, अन्तर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

वायुकुमार देव—दे० वातकुमार।

वायुचारण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५२ ब।

वायुधारणा—प्राणायाम ३ १५५ ब।

वायुनिरोध—प्राणायाम ३ १५५ ब।

वायुभूति—३ ५३५ ब, गणधर २ २१३ अ।

वायुमंडल—वायु ३.५३४ ब। बौद्धाभिमत ३ ४३४ अ।

वायुरथ—३.५३५ ब।

वायुवेग—यदुवश १ ३३७।

वायुशर्मा—गणधर २ २१२ ब।

वाराणसी—तीर्थंकर सुपार्श्व तथा पार्श्वनाथ २ ३७९।

वारिणी—३.५३५ ब, विद्याधरनगरी धारिणी ३ ५४६ अ।

वारिषेण—३.५३५ ब, अनुत्तरोपपादक दशागी १ ७० ब।

वारिषेणा—गजदत के कूट की देवी ३.४७३ अ, ३ ६१४।

वारुणी—३ ५३५ ब, ३.५३६ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९। विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।

वारुणी धारणा—वारुणी ३.५३५ ब।

वारुणीवर—३ ५३६ अ, चतुर्थ सागर द्वीप—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अकन ३ ४४३, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

वार्क्षमूल—विद्याधरवश १.३३९ अ।

वार्क्षमूलिक—विद्याधरवश १.३३९ अ।

वार्ता—३.५३६ अ।

वार्तिक—३ ५३६ अ। अनुयोगद्वार १ १०२ अ।

वार्तिकाकर्म—अनुयोगद्वार १.१०२ अ।

वार्दल—नरकपटल—निर्देश २ ५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।

वार्षगण्य—३.५३६ अ, साख्यदर्शन ४.३९८ ब।

वार्षिक प्रतिक्रमण—कृतिकर्म २.१३९ ब, प्रतिक्रमण ३.११६ अ, व्युत्सर्ग ३.६२१ अ।

वाल्मीकि—३.५३६ अ, एकांत विनयवादी १.४६५ ब, वैनयिक ३.६०५ अ, साख्यदर्शन ४.३९८ ब।

वाविल—३ ५३६ अ। नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

वासना—३ ५३६ अ, सुख ४ ४३० अ।

वासनाकाल—अनन्तानुबधी १ ६१ ब, काल २ ८१ अ, अप्रत्याख्यानावरण १ १२६ ब, प्रत्याख्यानावरण ३ १३३ ब, संज्वलन ४ १२५ अ।

वासवंत—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

वासव—३ ५३६ अ, कुरुवश १ ३३५ ब, गधर्व २ २११ अ, विद्याधरवंश १ ३३९ अ, हरिवश १ ३४० अ।

वासवकेतु—हरिवश १ ३४० अ।

वासुकि—३ ५३६ अ, कुरुवश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, यदुवश १ ३३७। कुडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ ब, अकन ३ ४६७।

वासुदेव—३ ५३६ अ, तीर्थंकर कृष्ण २.३७७, प्रतिनारायण ४ २० ब।

वासुदेव सार्वभौम—३ ५३६ अ।

वासुपूज्य—३.५३६ अ, तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३७९-३९१।

वाह—तौल का प्रमाण २.२१५ अ।

वाहिनी—३.५३६ अ, सेना ४.४४४ अ।

वाह्लिक—यदुवश १.३३७।

वाह्लीक—३.५३६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

विदफल—३ ५३६ अ।

विदुसार—हरिवश १.३४० अ।

विंध्य पर्वत—३.५३६ ब।

विंध्यवर्मा—३.५३६ ब, आशाधर १ २८० ब, भोजवश १.३१० अ।

विंध्यव्यासी—३.५३६ ब, साख्यदर्शन ४.३९८ ब।

विंध्यशक्ति—३ ५३६ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब।

विंध्याचल—३ ५३६ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

विंशति—आयुबधस्थान १ २५९ अ, प्ररूपणा ३ १४७ अ, मार्गणा (२० प्ररूपणा) ३.२९८ अ।

वि—विकलेंद्रिय की सहनानी २ २१९ अ।

विकट—ग्रह २ २७४ अ, बलदेव ४.१८ अ।

विकथा—कथा २.२ अ, २.३ अ-ब, समिति ४ ३४० ब, साधु ४.४०५ ब।

विकल—३.५३६ ब।

विकलचारित्र—सयम ४.१३७ अ।

विकलन—३.५३६ ब।

विकलप्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष ३.१२३ अ।

विकलादेश—३.५३६ ब, सकलादेश ४.१५६ ब, सप्तभंगी

४ ३१५ ब, ४ ३१६ अ।

विकलादेशी—नय २ ५१७ अ।

विकलेंद्रिय—३ ५३७ अ, सहनानी २.२१९ ब। निर्देश २.३६७, अवगाहना १.१७९ आयु १.२६३, १ २६४, जन्म २ ३१५ अ, जीवसमास २.३४३, त्रस २ ३९८, वेद ३ ५८७ अ, सक्लेश विशुद्धि स्थानो का अल्पबहुत्व १ १६०, सज्ञी ४ १२२ ब, सस्थान १.३७४ अ।

विकलेंद्रिय (प्ररूपणा)—बध ३.१०३, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ १९५, सख्या ४.९९, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४ ४८३, काल २ १०६, अंतर १ ११, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

विकल्प—३ ५३७ अ, आकार १.२१८ ब, केवलज्ञान २ १५५ अ, धर्मध्यान २.४८५ ब, नय २ ५१४ अ, २.५१९, पर्याय ३.४५ ब, मनोयोग ३ २७७ ब, सल्लेखना ४ ३८२ ब।

विकल्पनय—नय २ ५२३ अ।

विकल्प समा—३.५३९ अ।

विकस—ग्रह २ २७४ अ।

विकार—३ ५३९ अ, कषाय २.३६ ब, काम के दश विकार २.४२ ब, विनय ३ ५३९ अ, पर्याय ३.४५ ब।

विकार्य कर्म—कर्ता-कर्म २ १७ अ।

विकाल—ग्रह २ २७४ अ।

विकृत गति—गति २ २३५ ब।

विकृतवान्—३.५३९ ब। हरिक्षेत्र का नाभिगिरि—निर्देश ३ ४५२ ब, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४५२ ब, वर्ण ३ ४७७।

विकृति—३ ५३९ ब, निर्विकृति २ ६२६ ब।

विक्रम—३ ५३९ ब।

विक्रमप्रबध टीका—३ ५३९ ब।

विक्रम संवत्—इतिहास १ ३०९ अ।

विक्रमादित्य—३.५३९ ब, गुप्तवश १ ३१५, मौर्यवंश १ ३१३।

विक्रांत—३ ५३९ ब। नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

विक्रांतकौरव—इतिहास १.३४४ अ।

विक्रिया—३ ५३९ ब, देवगति २.४४६ ब, नरक गति २ ५७४ अ, वैक्रियिक ३ ६०२ अ।

विक्रिया ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १ ४५०, परिहार-विशुद्धि सयम ३ ३७ अ।

विक्रिया ऋद्धिधारी—तीर्थंकर सघ २ ३८६।

विक्षेप—३ ५३९ ब, ध्यान २ ४९५ अ।

विक्षेपिणी कथा—उपदेश १.४२५ अ, १ ४२६ अ, कथा २ २ ब, श्रोता ४.७५ ब।

विगलि—तीर्थंकर स्वयभू २ ३७७।

विज्ञप्ति—३ ५३९ ब।

विज्ञान—३.५३९ ब, अध्यवसान १ ५२ अ, मतिज्ञान ३.२५५ ब।

विज्ञानभिक्षु—३ ५३९ ब, योगदर्शन ३ ३८४ अ, साख्य दर्शन ४ ३९८ ब।

विज्ञानवाद—३ ५३९ ब, बौद्धदर्शन ३ १८७ अ।

विज्ञानाद्वैत—अद्वैतवाद १ ४७ ब, बौद्धदर्शन ३ १८७ अ।

विज्ञानामृतभाष्य—साख्यदर्शन ४ ३९८ ब।

विग्रह—३ ५४० अ।

विग्रहगति—३.५४० अ, उपपाद १.४२७ ब, अवगाहना १ १७८ अ, आनुपूर्वी १ २४७ अ-ब, कार्मणकाययोग २ ७६ ब, जीवप्रदेश २ ३३९ ब, निगोद वनस्पति ३ ५०५ अ, जन्म २ ३१२ ब, पर्याय ३.४३ अ, वनस्पति (निगोद) ३.५०५ अ, भुजगार बध (स्थिति) ४ ४५९ ब, मरण ३ २८६ ब, विग्रहगति ३.५४१ अ, वेद ३ ५८७ ब, सस्थान (आनुपूर्वी) १ २४७ अ, स्थिति (बध) ४.४५९ ब।

विघट—राक्षसवश १.३३८ अ।

विघ्न—३ ५४१ ब, अर्हतातिशय १.१३७ ब।

विचय—३.५४१ ब।

विचार—३ ५४१ ब, नय २ ५२० ब।

विचारस्थान—स्थिति ४ ४५७ ब।

विचारणा—ऊहा १.४४५ ब, विचय ३ ५४१ ब।

विचिकित्सा—निर्विचिकित्सा ३.६२७ अ।

विचित्र—३ ५४२ अ, कुरुवश १ ३३५ ब, विचित्रकूट यमकगिरि का रक्षक देव ३ ४५३ अ।

विचित्रकूट—३ ५४२ अ, यमकगिरि—निर्देश ३ ४५३ अ, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४५३ अ, वर्ण ३ ४७७। विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

विचित्रगुप्त—चक्रवर्ती ४.१० ब।

विचित्रवाहन—भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ।

विचित्रवीर्य—कुरुवंश १ ३३५ ब ।

विचित्रा—३ ५४२ अ, सुमेरु के वनों की दिक्ककुमारी ३.४७३ ब।

विचित्राश्रयाकीर्ण—३.५४२ अ, सुमेरु ४.४३७ अ।

विच्छेद—आगम १.२२९ ब।

वि०छे० छे०—घनलोक के अर्द्धच्छेद की सहनानी २.२१९ ब।

विजय—३.५४२ अ, अच्युत १ ४१, कुरुवंश १ ३३६ अ, ग्रह २ २७४ अ, चक्रवर्ती का तथा उसके पिता का नाम ४ १० अ, ४ ११ ब, तीर्थंकर नमिनाथ के पिता तथा श्रोता का नाम २.३८०, २ ३९१, तीर्थंकर श्रेयास के समय बलदेव २ ३९१, तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का यक्ष २ ३७९, तीर्थंकर भाविकालीन २ ३७७, बलदेव का नाम ४.१६ अ, यदुवंश १ ३३७, विद्याधर वंश १ ३३९ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ। श्रुत-केवली (मूलसंघ) १ ३१६, १.३२८ अ।

विजय कवि—इतिहास १ ३४६ अ।

विजयकीर्ति—३.५४२ अ, नंदिसंघ १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३३ अ।

विजय कूट—गजदंतो के कूट—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४४४, ३.४५६। निषध पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४४४। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८।

विजयगिरि—चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४ १५ ब।

विजयगुप्त—गणधर २ २१२ ब।

विजयचंद्र—काष्ठासंघ १.३२७ अ।

विजयचरी—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

विजयदेव—विजयद्वार का रक्षक देव ३ ६१५ अ, इसका नगर ३ ६१२ ब, आयु बंध के योग्य परिणाम १ २५८ ब।

विजयद्वार—जम्बूद्वीप की जगती का पूर्वद्वार—निर्देश ३.४४४ ब, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३ ४४४।

विजयनंदि—देशीय गण १.३२५। इतिहास १ ३३१ अ।

विजयनगर—३ ५४२ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।

विजयपुर—प्रतिनारायण ४.२० ब, बलदेव ४ १६ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।

विजयपुरी—३ ५४२ ब, विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९-४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

विजय महाराज—कुरुवंश १.३३५ ब।

विजयमित्र—गणधर २ २१२ ब।

विजयवंश—३.५४२ ब।

विजय वर्णी—इतिहास १.३३२ ब, १.३४५ अ।

विजयवर्मा—३.५४२ ब, भोजवंश १ ३१० अ।

विजयवान्—विदेह वक्षार—निर्देश ३.४६० अ, नाम-निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६० अ, ३ ४६४ के सामने (चित्र स० ३७), वर्ण ३ ४७७। इस वक्षार का कूट—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४ हरिक्षेत्र का नाभि-गिरि—निर्देश ३ ४५२ ब, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने (चित्र स० ३७), चित्र ३ ४५२ ब, वर्ण ३ ४७७।

विजय विमान—३.५४२ अ। अनुत्तर स्वर्ग का विमान—निर्देश ४ ५१९ अ, अंकन ४.५१५, ४ ५१७, देव ४ ५१० ब। चक्रवर्ती ४ १० ब।

विजयसागर—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ।

विजयसिंह—इतिहास १ ३३३ अ।

विजयसेन—३ ५४२ ब, श्रुतकेवली १ ३१६। नागसेन के गुरु—इतिहास १ ३३० अ। काष्ठासंघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३२८ अ।

विजयसेना—तीर्थंकर अजितनाथ २ ३८० यदुवंश १ ३५७।

विजया—३ ५४२ ब, तीर्थंकर मल्लिनाथ की यक्षिणी २.३७९, तीर्थंकर वासुपूज्य का माता २ ३८०, तीर्थंकर देवयश, बाहू तथा विशालभद्र की माता २ ३९२। बलदेव की माता ४ १७ ब। नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४९१, अंकन ३ ४६५। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९। विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नाम-निर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९-४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६० अ, ३.४६२ विद्याधर नगरी ३.५४५ अ

विजयाचार्य—३ ५४२ ब, अपराजित १.११९ अ।

विजयार्ध—३ ५४२ ब, प्रतिनारायण ४ २० अ, वानरवंश १ ३३८ ब।

विजयार्ध कुमार—विजयार्ध का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४।

विजयार्ध गिरि—निर्देश ३ ४४८ अ, ३ ४६० अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, अंकन ३.४४४, ३ ४४७, ३ ४६४

के सामने (चित्र स० ३७), चित्र ३.४४८ अ, वर्ण ३.४७७, गणना ३ ४४५ अ।
विजयाश्रिता—जाति २.३२६ ब।
विजयिल—गणधर २.२१२ ब।
विजयोदया टीका—३.५४२ ब, इतिहास १.३४१ ब।
विजस्का—३ ५४२ ब।
विजाति—३.५४२ ब। उपचार १.४१९ ब।
विजिगीषु कथा—३ ५४२ ब, कथा २.२ अ।
विजिष्णु—३ ५४२ ब, ग्रह २ २७४ अ।
विडौषधि ऋद्धि—ऋद्धि १.४४७, १ ४५५ ब।
वितंडा—३ ५४२ ब, न्याय २ ६३३ अ-ब, वाद ३ ५३३ ब।
वितत—३.५४३ अ, शब्द ४ ३ अ।
वितथ—३.५४३ अ।
वितर्क—३.५४३ अ, ऊहा १ ४४६ अ।
वितस्ता—३ ५४३ अ।
वितस्ति—३.५४३ अ, क्षेत्र का प्रमाण २.२१५ अ, २ २१७ अ।
वितसार—इतिहास १.३४५ ब।
विदर्भ—३.५४३ अ, तीर्थंकर सुविधि २ ३८७ अ।
विदर्भपुर—३ ५४३ अ।
विदल—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ ब।
विदारण क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।
विदिशा—३ ५४३ अ, दिशा २.४३३ ब।
विदुर—३.५४३ अ, कुरुवंश १ ३३६ अ।
विदूरथ—यदुवंश १ ३३७।
विदेह ३ ५४३ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब, ३.२७६ अ।
विदेहकूट—गजदंतो के कूट—निर्देश ३ ४७२ ब, ३ ४७३ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३.४४४, ३ ४५७। नील पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४।
विदेहक्षेत्र—३.५४३ अ, कुदकुद २.११७ ब, विदेह ३ ५४३ ब, निर्देश ३.४४६ अ, विस्तार ३ ४७९-४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने (चित्र स० ३७), बत्तीस विदेह नामनिर्देश ३.४७० ब। जैनाभिमत ३ ४३१ ब, समवसरण ४.३३१ ब।
विदेहक्षेत्र (कर्मभूमि)—निर्देश ३.२३५ ब, अवगाहना १ १८०, आयु १ २६३, १ २६४, दु खमा-सुषमाकाल २.९३, सत् प्ररूपणा ४ १८४ अ।
विद्रावण—३.५४३ ब।
विद्रुणू (कवि)—३ ५४३ ब।
विद्धाशन—अनशन १.६६ अ, अपवाद मार्ग २.१२१ अ, तप २ ३६० अ।
विद्या—३ ५४३ ब, मंत्र ३.२४५ ब, विद्याधर वंश १.३३९ अ।
विद्या (दोष)—आहार १ २९१ ब, वसतिका ३ ५२९ ब।
विद्या कर्मार्य—आर्य १ २७५ अ सावद्य ४ ४२१ अ।
विद्याधर—३ ५४४ ब, चक्रवर्ती ४ १५ ब, चिह्न १ ३३६ ब, जातियाँ १ ३३९ अ। प्रतिनारायण ४ २० अ, वंश १ ३३८ ब, सत् प्ररूपणा ४ १८४ ब।
विद्याधर जिन—जिन २.३२९ अ।
विद्याधरलोक—निर्देश ३ ५४४ ब, कालविभाग २ ९२ अ, २ ९३, नगरियाँ ३ ५४५ अ, नगरियो की गणना ३ ४४५ अ, अंकन ३ ४४८। धातकीखंड मे ३ ४६२ ब, पुष्करार्ध द्वीप मे ३ ४६३ ब।
विद्याधरवंश—इतिहास १ ३३८ ब।
विद्यानंद—इतिहास १ ३२९ ब, १.३४१ ब।
विद्यानंद महोदय—३.५४६ अ, इतिहास १.३४१ ब।
विद्यानंदि—३.५४६ अ। प्रथम—देखिए विद्यानंद। द्वितीय—नंदिसंघ १.३२३ ब, १ ३२४ अ, इतिहास १.३३३ अ, १ ३४५ अ। तृतीय—इतिहास १ ३३३ ब, १ ३४६ अ। चतुर्थ—इतिहास १ ३३३ ब।
विद्यानिकाय—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।
विद्यानुवाद (पूर्व)—३.५४६ ब, रुद्र ४ २२ ब, श्रुतज्ञान ४ ६९ अ।
विद्याप्रदान—अपवादमार्ग १.१२२ अ।
विद्याभूषण भट्टारक—नंदिसंघ १.३२४ अ।
विद्यारण्य—वेदांत ३.५१५ ब।
विद्याश्रमण—श्रुतकेवली ४.५५ अ।
विद्युच्चर—३.५४६ ब।
विद्युज्जिह्व—३.५४६ ब, ग्रह २.२७४ अ।
विद्युत्—देवकुरु का द्रह—निर्देश ३.४५६ अ, नामनिर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३ ४९०, ३.४९१, अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने।
विद्युत्करण—३.५४६ ब।
विद्युत्कुमार—३ ५४६ ब। भवनवासी देव—निर्देश ३.२१० अ, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६५। इंद्र—निर्देश ३ २१० ब, शक्ति आदि ३ २०८ ब, अवस्थान ३ २०९ ब, ३.६१२-६१४।
विद्युत्कुमार (देव प्ररूपणा)—बंध ३ १०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी

भग १.४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४.९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १ १०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५ अ।

विद्युत्केश—३ ५४६ ब, राक्षसवंश १.३३८ ब।

विद्युत्प्रभ—३ ५४६ ब, चक्रवर्ती ४.१५ अ, यदुवंश १.३३७, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ। गजदंत—निर्देश ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३ ४८६ अंकन ३ ४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), चित्र ३ ४५२ ब, वर्ण ३ ४७७, इसका कूट तथा देव ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४, ३ ४५७।

विद्युत्वान्—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

विद्युदाभ—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

विद्युद्दंष्ट्र—३ ५४६ ब। विद्याधरवंश १.३३९ अ।

विद्युद्दृढ—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

विद्युद्वेग—विद्याधरवंश १.३३९ अ।

विद्युन्मुख—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

विद्वेशता—अर्हन्तातिशय १ १४१ ब। १ १३७ ब।

विद्योपजीवन—३.५४६ ब।

विद्रावण—अधःकर्म १ ४८ अ। विद्रावण ३ ५४३ ब।

विद्रावण कर्म—कर्म २ २६ अ।

विद्रुम—बलदेव ४ १६ ब, यदुवंश १.३३७ ब।

विद्वज्जनबोधक—३.५४६ ब।

विद्वेषण मंत्र—मंत्र ३ २४५ ब।

विध—३ ५४६ ब, मतिज्ञान ३.२५४ ब।

विधा—पर्याय ३ ४५ ब।

विधाता—३ ५४६ ब।

विधान—३ ५४६ ब, अनुयोगद्वार १.१०२ अ, संख्या ४ ९२ अ।

विधि—३ ५४७ अ, अनेकांत (सापेक्षधर्म) १ १०९ अ, तत्त्व २ ३५३ अ, द्रव्य २ ४५४ ब, निषेध २ ६२९ अ, सकलादेश ४ १५७ अ, सप्तभंगी ४ ३१८ ब, ४.३१९ ब, स्याद्वाद ४ ४९८ अ, ४ ४९९ अ, ४ ५०० ब।

विधिदानक्रिया—संस्कार ४ १५१ ब।

विधिवाक्य—वाक्य ३ ५३१ अ।

विधिविवेक—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ।

विधिसाधक हेतु—हेतु ४ ५३९ ब।

विधु—'एक' का सैद्धांतिक नाम २ २१८ ब।

विध्यात-संक्रमण—संक्रमण ४.८४ अ, ४ ८७ ब। अल्पबहुत्व १.१७४ ब।

विनमि—उग्रवंश १.३३५ ब, गणधर २.२१३ अ, भोजवंश १ ३३६ ब, मातंगवंश १ ३३६ ब, विद्याधरवंश १ ३३८ ब, १ ३३९ अ।

विनयंधर—३ ५४७ अ, पुन्नाटसंघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३२८ अ।

विनय—३ ५४७ अ, ३.५५२ ब, अतिचार १ ४४ अ, सल्लेखना ४ ३९० ब।

विनयकर्म—कर्म २ २६ ब, कृतिकर्म २.१३३ ब।

विनयचंद्र—३ ५५४ ब, काष्ठासंघ १.३२७ अ, इतिहास १ ३३२ अ।

विनयचरी—विद्याधर नगरी ३ ४४५ अ।

विनयचारी—३.५५५ अ।

विनयतप—विनय ३ ५४८ अ, ३ ५५१ अ।

विनयदत्त—३ ५५५ अ, श्रुतकेवली १ ३१७, १.परि०/३ ६, इतिहास १ ३२८ ब।

विनयपुरी—३.५५५ अ।

विनयभद्र—आशाधर १ २८० ब।

विनय मिथ्यात्व—मिश्र गुणस्थान ३ ३०८ ब।

विनय लालसा—३.५५५ अ, सप्तऋषि ४ ३१३ अ।

विनयवादी—एकांत १ ४६५ अ-ब, वैनयिक ३ ६०५ अ।

विनयविजय उपाध्याय—३ ५५५ अ।

विनयशुद्धि—प्रत्याख्यान ३ १३२ अ, शुद्धि ४.३९ अ।

विनयश्री—वैमानिक इंद्रों की वल्लभिका देवी ४.५१३ ब।

विनयसंपन्नता—विनय ३ ५४८ अ, ३.५५० ब।

विनयसेन—३ ५५५ अ। प्रथम—पंचस्तूपसंघ १ ३२६ ब, इतिहास १ ३३७ अ। द्वितीय—काष्ठासंघ १ ३२१ अ, इतिहास १ ३३८ अ।

विनयोपसंपत—समाचार ४ ३३७ अ।

विनायक—३.५५५ अ, राक्षस ३ ४०६ ब।

विनायक यंत्र—यंत्र ३ ३६०।

विनाश—३ ५५५ अ, गुण २.२४२ अ, नय २.५५० ब।

विनिमय—३ ५५५ अ।

विनिहात्र—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

विनीत—गणधर २ २१२ ब।

विनीता—तीर्थंकर ऋषभ तथा अनंतनाथ २ ३७९, भरत क्षेत्र ३ २०७ अ ३.४४६ अ।

विनोदीलाल—३.५५५ अ, इतिहास १ ३३२ ब।

विपक्ष—३ ५५५ अ।

विपरिणाम—३ ५५५ अ।

विपरिणामना—विपरिणाम ३.५५५ अ।

विपरीत मत—विपर्यय ३.५५५ ब।

विपरीत मिथ्यात्व—विपर्यय ३.५५६ अ।

विपरीतवाद—एकात १ ४६५ ब, विपर्यय ३.५५६ अ।
विपरीत श्रद्धान—मिथ्यादर्शन ३.३०० ब, श्रद्धान ४.४६ अ।
विपरीत श्रद्धानी—मिथ्यादृष्टि ३ ३०४ अ।
विपरीताभिनिवेश—सम्यग्दर्शन ४.३५६ ब।
विपर्यय—३ ५५५ ब।
विपर्यय ज्ञान—विपर्यय ३ ५५५ ब।
विपर्यय मिथ्यात्व—विपर्यय ३.५५५ ब।
विपल—३ ५५६ अ, काल का प्रमाण २.२१७ अ।
विपलांश—काल का प्रमाण २ २१७ अ।
विपाक—३ ५५६ अ, उदय १ ३६५ ब, ध्येय २.५०० अ, बध ३ १७१ ब।
विपाकजा निर्जरा—निर्जरा २ ६२२ अ।
विपाक-प्रत्ययिक बंध—बध ३.१७२ अ।
विपाक-विचय—धर्मध्यान २ ४८० अ।
विपाकसूत्र—३ ५५६ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ अ।
विपुल—३.५५६ ब, ग्रह २ २७४ अ, भाविकालीन तीर्थंकर २ ३७७, मन.पर्यय ज्ञान ३ २६६ अ।
विपुलख्याति—तीर्थंकर संभवनाथ २ ३७८।
विपुलत्व—मन पर्ययज्ञान ३.२६६ अ।
विपुलमति—मन पर्ययज्ञान ३.२६६ अ।
विपुलवाहन—सभवनाथ व अभिनंदननाथ २ ३७८।
विपुलाचल—इद्रभूति १.२९९ ब।
विप्पाणस मरण—मरण ३ २८० अ।
विप्रतिपत्ति—३ ५५६ ब।
विप्राणस मरण—मरण ३.२८२ अ।
विलुप्त—३.५५६ ब।
विभंग ज्ञान—३ ५५६ ब, अपर्याप्त १ १९५ ब, अवधिज्ञान १.१८६ ब, १.१९० अ, १.१९५ अ-ब, गुणस्थान २ २६१, जीवसमास २.२६१।
विभंग ज्ञान (प्ररूपणा)—बध ३.१०५, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३९३ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८३, १.४०७ अ, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०७ अ। सत् ४ २३४, सख्या ४.१०६, क्षेत्र २ १९६, २.२०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११३, अतर १ १५, भाव २ २२१ अ, अल्पबहुत्व १ १५०।
विभंगज्ञानी क्षेत्र २ १९६ अ।
विभंगदर्शन—वर्णन २.४१५ ब।
विभंगा—३.५५६ ब। कुण्ड—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४९०, ३ ४९१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र स० ३७)। गणना ३.४४५ अ। नदी—निर्देश ३ ४५६ अ, २ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४८९, ३ ४९०, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, गणना ३ ४४५ अ।
विभक्ति—३ ५५६ ब, अनुयोगद्वार १ १०३ अ।
विभक्तिकरण—आदेश १.२४५ ब।
विभाग-निष्पन्न क्षेत्र—क्षेत्रप्रमाण २.२०९ अ।
विभाव—३ ५५७ अ, निमित्त २.७४ ब, पर्याय ३.४९ अ, सापेक्षधर्म (अनेकात) १.१०९ अ, अनित्य पर्यायार्थिक नय २ ५५१ ब।
विभाव अर्थपर्याय—पर्याय ३ ५० अ।
विभाव-क्रिया—क्रिया २.१७३ ब, विभाव ३ ५५७ ब।
विभाव-गति—गति २ २३५ ब।
विभाव-गुण—गुण २ २४० ब।
विभाव-गुणपर्याय—पर्याय ३ ५० अ।
विभाव-गुणव्यजनपर्याय—३ ५० अ।
विभाव-द्रव्यपर्याय—३.४९ ब।
विभाव-द्रव्यव्यंजनपर्याय—३.४९ ब।
विभाव-पुद्गल—पुद्गल ३ ६७ अ।
विभाव शक्ति—बध ३ १७७ अ।
विभाव-स्वभाव—विभाव ३ ५५९ अ।
विभाषा—३ ५६२ ब, अनुयोगद्वार १.१०१ ब।
विभीषण—३ ५६२ ब, राक्षसवश १ ३३८ ब।
विभु—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ।
विभुत्वशक्ति—३ ५६२ ब।
विभूति—भरत चक्रवर्ती ४.१५ अ।
विभ्य—३ ५६२ ब।
विभ्रम—३ ५६२ ब।
विभ्रांत—३ ५६२ ब, नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी - अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।
विमर्श—३ ५६२ ब।
विमल—३ ५६२ ब, अच्युतेंद्र विमान ४ ५११ ब, आरणेंद्र विमान ४ ५११ ब, क्षीरवर सागर का देव ३ ६१४, ग्रह २ २७४ अ, चक्रवर्ती ४.१० ब, तीर्थंकर अजित नाथ २ ३७८, तीर्थंकर भाविकालीन २.३७७, विद्याधर नगर ३ ५४६ अ।
विमल (कूट)—गजदत का कूट—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४, ३.४५७। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ-ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६९।

विमल (स्वर्गपटल)—सौधर्म पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४.५१९ ब, देव आयु १.२६६।

विमलकीर्ति—इतिहास १ ३३१ ब।

विमलदास—३ ५६२ ब, अनंत देव १.५९ ब, इतिहास १ ३३३ अ।

विमलदेव—३ ५६२ ब, इतिहास १.३३० अ।

विमलनाथ—३ ५६२ ब, तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३७९-३९१।

विमलपुराण—३ ५६३ अ, इतिहास १ ३४७ ब।

विमलप्रभ—३.५६३ अ, क्षीरवर सागर का देव ३.६१४, भूत भावि तीर्थंकर २ ३७७।

विमलवाहन—३ ५६३ अ, कुलकर ४ २३, तीर्थंकर अजित व संभवनाथ आदि २.३७८। भावि शलाकापुरुष ४.२५ अ।

विमलसुंदरी—नारायण ४ १८ ब।

विमलसूरि—३.५६३ अ, इतिहास १ ३२९ अ, १.३४० ब।

विमला—कुलकर ४.२३, व्यंतरेंद्र गणिका ३ ६११ ब।

विमलेश्वर—३.५६३ अ, भूतकालीन तीर्थंकर २.३७७।

विमा—३ ५६३ अ।

विमान—३ ५६३ अ। ज्योतिषलोक—निर्देश २ ३५१ ब, बनावट २ ३५१ ब, विस्तार २ ३५१ ब, अवस्थान २ ३४६ ब, अंकन २.३४७, चित्र ३ ३४७। चर-अचर भेद २ ३४६ ब, देवयान ४ ५११ ब। सल्लेखना ४ ३९४ अ, साधु ४ ५०४ ब। स्वर्गलोक—निर्देश ४ ५१४ ब, विस्तार ४ ५२१ ब। अंकन ४.५१५, बनावट ४.५२१ अ, संख्या ४ ५२० अ, अवस्थान ४ ५१६-५१८, ४ ५२० ब, चित्र ४ ५१७।

विमानपंक्ति व्रत—३ ५६३ ब।

विमानवासी देव—निर्देश २.४४५ ब, ४ ५१० अ, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १ २६६-२६९।

विमुख—३ ५६३ ब।

विमुखी—३ ५६३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

विमोच—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

विमोचिता—३ ५६३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

विमोचितावास—अस्तेय १ २१४ अ।

विमोचिपुर—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

विमोह—३ ५६३ ब।

विरक्त—ध्याता २ ४९३ ब।

विरजस्का—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

विरजा—३.५६३ ब। नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ ब, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४९१, अंकन ३ ४६५। विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९ ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र स० ३७), चित्र ३ ४६० अ।

विरत—३.५६३ ब, ग्रह २.२७४ अ।

विरताविरत—३.५६४ अ, सचतासंयत ४.१३४ अ।

विरति—३ ५६४ अ, उपदेश (परद्रव्यविरति) १ ४२४ अ, संयम ४ १३८ ब।

विरलन—३ ५६४ अ, गणित २.२२३ ब।

विरलन देय प्रक्रिया—३ ५६४ अ, गणित २.२२३ ब।

विरहकाल—अंतर १.३ अ, १.६ ब।

विराग—३ ५६४ अ, धर्मध्यान २.४८० अ, प्रत्याख्यान ३ १३२ ब।

विराट—३.५६४ अ।

विराधन—३ ५६४ अ।

विराधित—३ ५६४ अ।

विरुद्ध—जीव २ ३३५ अ, न्याय २.६२३ ब।

विरुद्धधर्मत्व शक्ति—३ ५६४ अ।

विरुद्ध राज्यातिक्रम—३ ५६४ अ, अस्तेय १ २१३ ब।

विरुद्ध हेत्वाभास—३.५६४ अ।

विरोध—३ ५६४ ब, अनेकांत १ १०९-१११, आगमार्थ १ २३२ अ, उपदेश १.४२५ अ।

विरोधी धर्म—अनेकांत १.१०८ ब, १.१०९-१११, जीव २.३३७ ब।

विरोधी हिंसा—हिंसा ४.५३५ अ।

विलया—स्त्री ४ ४५० अ।

विलसित—३.५६५ अ।

विलास—३.५६५ अ।

विलेपन—३ ५६५ अ, निक्षेप २ ६०२ ब, पूजा ३ ७९ अ।

विल्लाल—३ ५६५ अ।

विल्हण—आशाधर १ २८० अ।

विवक्षा—३ ५६५ अ, एकांत १ ४६१ अ-१.४६३ अ, सामान्य ४ ४१३ अ, स्याद्वाद ४.४९७ ब, ४.४९८ ब, ४.४९९ ब।

विवर—३ ५६५ अ, लवणसागर के पाताल—निर्देश ३ ४६० ब, नामनिर्देश ३ ४७४ ब, स्वरूप ३ ४६० ब, विस्तार ३.४७९, अंकन ३ ४६१, चित्र ३.४६१, ३ ४६४ के सामने।

विवर्त—३ ५६५ अ, परिणाम ३ ३१ अ।

विवाद—वाद ३.५३३ अ-ब।

विवाह—३ ५६५ अ।
विवाह क्रिया—पत्कार ४ १५१ ब, ४.१५२ ब।
विवाह पटल—३ ५६५ ब।
विवाहिता स्त्री—४.४५० ब।
विविक्त—वसतिका ३.५२७ ब।
विविक्त वसतिका—वसतिका ३ ५२७ ब।
विविक्त शय्यासन—३ ५६५ ब।
विवृत—योनि ३ ३८७ अ।
विवेक—३ ५६६ अ, प्रायश्चित्त ३ १६१ अ, विचय ३.५४१ ब।
विवेक प्रायश्चित्त—विवेक ३.५६६ अ।
विवेचन—३ ५६७ अ।
विशद—३ ५६७ अ।
विशदावग्रह—अवग्रह १ १८२ अ, १.१८३ अ।
विशल्या—३ ५६७ ब।
विशल्याकारिणी—३.५६७ ब, विद्या ३.५४४ अ।
विशाख—तीर्थंकर मल्लिनाथ २.३८७।
विशाखदत्त—मूलसघ १ ३१६।
विशाखनदि—३.५६७ ब। प्रतिनारायण ४.२० ब।
विशाखभूति—३ ५६७ ब, चक्रवर्ती ४.१६ अ।
विशाखयूप—मगध देश इतिहास १ ३१२।
विशाखा—३ ५६७ ब। तीर्थंकर सुपार्श्व, चद्रप्रभ व पार्श्वनाथ २ ३८०, नक्षत्र २.५०४ ब।
विशाखाचार्य ३ ५६७ ब, मूलसघ (श्रुतकेवली) १ ३१६, १ परि०/२.३, चद्रगुप्त मौर्य १ परि०/२.७, इतिहास १ ३२८ अ।
विशालकीर्ति—आशाधर १ २८० अ, नदिसघ भट्टारक १.३२३ ब, इतिहास १.३३४ ब।
विशालनयन—रुद्र ४.२२ अ।
विशालनेत्र—कुडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अकन ३ ४६७।
विशालप्रभ—तीर्थंकर २ ३९२।
विशाला—३.५६७ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
विशालाक्ष—३.५६७ ब, गणधर २ २१३ अ।
विशिष्ट—३ ५६७ ब, कुंडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ अ, अकन ३.४६७। गजदत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४४४, ३.४५७।
विशिष्ट पद—अनेकात १.१०२ ब।
विशिष्टाद्वैत—वेदांत ३.५९७ ब।
विशुद्ध—३.५६७ ब, सम्यग्दर्शन (लेश्या) ४.३६३ अ।
विशुद्धता—करण (अध करण) २ ९ अ।
विशुद्ध परिणाम—स्थिति ४.४५८ ब।
विशुद्धि—३.५६८ अ, उदयाभाव १ ३६६ ब, उपयोग (अशुद्ध) १ ४३१ ब, १.४३३ ब, उपयोग (शुभ) १ ४३३ अ। करणत्रिक—अध करण २ ९-११, अनिवृत्तिकरण २ १३-१४, अपूर्वकरण २ १२ अ, अल्पबहुत्व २ ७ अ। त्रिकरण २ ७ अ, मनःपर्यय ज्ञान ३.२६७ ब, स्वाध्याय ४ ५२६ अ।
विशुद्धि लब्धि—लब्धि ३ ४१२ अ।
विशुद्धि व सक्लेश—विशुद्धि ३ ५६९ ब।
विशुद्धि-स्थान—अल्पबहुत्व १ १६०, विशुद्धि ३ ५६८ ब, स्थान ४ ४५२ ब।
विशेष—३ ५७० अ, गणित २ २२९ ब, गुण २ २४० अ, पर्याय ३ ४५ ब, सप्तभगी ४ ३१८ अ, सापेक्ष धर्म (अनेकात) १ १०९ अ, सामान्य ४.४१२ अ।
विशेष उपयोग—आकार (ज्ञान) १ २१९ अ।
विशेष काल—सप्तभगी ४ ३२३ अ।
विशेष क्षेत्र—क्षेत्र २ १९२ अ।
विशेष गुण—गुण २.२४०, २.२४२ ब, २.२४३ ब।
विशेषण—पक्ष ३ २ अ।
विशेषण-विशेष्य भाव—आगम १.२३३ ब, नय २ ५४९ ब।
विशेष नय—२.५२३ ब।
विशेष विधि—आगम १.२३२ अ।
विशेष-संग्रह नय—नय २ ५३४ अ।
विशेष-संग्रह भेदक व्यवहार नय—२.५५८ ब।
विशेष स्वभाव—स्वभाव ४.५०६ अ।
विशेषालोचना—सल्लेखना ४.३९१ ब।
विशेषावश्यक भाष्य—३ ५७० ब, इतिहास १ ३४१ अ।
विशेष्य-विशेषण भाव—आगम १.२३३ ब, नय २ ५४९ ब।
विशोक—३ ५७० ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।
विशोका—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
विश्रमण-काल—अद्धा असक्षेप १.४७ अ।
विश्रुता—वैमानिक इद्रो की वल्लभिका देवी ४.५१३ ब।
विश्रेणी गति—विग्रहगति ३.५४१ अ।
विश्लेषण—३ ५७० ब।
विश्व—३ ५७० ब, कुरुवंश १ ३३५ ब, १.३३६ अ, नक्षत्र २ ५०४ ब, लौकांतिक देव ३ ४९३ ब।
विश्वकीर्ति—काष्ठासघ १ ३२७ अ।
विश्वकेतु—कुरुवश १ ३३५ ब।

विश्वचंद्र—काष्ठासघ १ ३२७ अ, नदिसघ भट्टारक १ ३२३ ब।
विश्वतत्त्वप्रकाश—इतिहास १ ३४४ ब।
विश्वध्वज—कुरुवश १ ३३५ ब।
विश्वनंदि—३.५७० ब, नदिसघ भट्टारक १ ३२३ ब, बलदेव ४ १८ अ।
विश्वनाथ—वैशेषिक दर्शन ३ ६०८ अ।
विश्वभू—३ ५७० ब।
विश्वभूषण—३.५७० ब।
विश्वरूप—यदुवश १ ३३७।
विश्वलोचन कोष—इतिहास १ ३४५ अ।
विश्वसेन—३ ५७० ब, कुरुवश १.३३५ ब, १ ३३६ अ, गणधर २.२१२ ब, तीर्थंकर शाति तथा पार्श्वनाथ २ ३८०।
विश्ववसु—हरिवश १ ३४० अ।
विषंग—३.५७० ब।
विष—३.५७० ब, अनुभाग १.९० ब, चैत्य २ ३०२ ब।
विषकुभ—उपयोग १.४३४ अ, चारित्र २ २८८ ब, २ २९० अ।
विषद—यदुवश १.३३६।
विषम—स्कध ४ ४४८ अ।
विषम दृष्टांत—३.५७० ब, दृष्टात २ ४४० अ।
विषमधारा—गणित २.२२९ अ।
विषमित्र—यदुवश १ ३३६।
विषमोचिका—चक्रवर्ती ४.१५ अ।
विष—३ ५७० ब, इद्रिय १ ३०६ अ, सुख ४ ४३० ब।
विषयत्याग—मिथ्यादृष्टि ३ ३०७ अ।
विषयरुचि—सुख ४.४३० ब।
विषयविराग—विराग ३ ५६४ अ।
विषयसंरक्षणानंद—रौद्रध्यान ३.४०८ अ।
विषयातीत सुख ४ ४३२ ब।
विषयाधीन सुख ४ ४३० ब।
विषयाभिलाष—राग ३ ३९५ ब।
विषयासक्ति उपयोग १.४३३ ब।
विषरथ—३ ५७१ अ।
विषापहार स्तोत्र—इतिहास १.३४२ अ।
विषुप—काल २.९१ ब।
विष्कंभ—३.५७१ अ, गणित २ २३२ ब।
विष्कंभक्रम—क्रम २.१७१ ब।
विष्कंभ सूची—सूची ४ ४४२ अ।
विष्टा—३.५७१ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ, समिति ४.३४१ ब।
विष्णु—३.५७१ अ, कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, जीव २.३३३ ब, नक्षत्र २ ५०४ ब, तीर्थंकर श्रेयास नाथ २ ३८०, निंदा २ ५८८ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०६ ब।
विष्णुकुमार—३ ५७१ अ, अकंपनाचार्य १ ३० ब।
विष्णुदत्त—३ ५७१ अ।
विष्णुनंदि—३ ५७१ अ, मूलसघ १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ।
विष्णुयशोधर्म—३ ५७१ अ, हूनवंश १ ३११ ब, १ ३१५ अ।
विष्णुवर्धन—३ ५७१ अ।
विष्णुश्री—तीर्थंकर श्रेयासनाथ २.३८०।
विष्णुसजय—यदुवश १.३३७।
विष्णुस्वामी—वैष्णवदर्शन ३.६०९ अ।
विसंयोजन—उपशम १ ४३९ ब।
विसंयोजना—३.५७१ अ, उपशम १.४३७ ब।
विसंवाद—वाद ३.५३३ अ, योगवक्रता ३ ३८५ ब।
विसदृश—३.५७२ ब, परिणाम ३.३२ अ, सापेक्ष धर्म (अनेकात) १.१०९ अ।
विसर्जन—पूजा ३.८० ब।
विसर्पण—जीव २.३३८ ब।
विसृष्टांक तप—कायक्लेश २ ४७ अ।
विस्तर सत्त्व त्रिभगी—इतिहास १.३३० ब, १ ३४२ ब।
विस्तार—३ ५७२ ब।
विस्तार-दर्शनार्य—आर्य १ २७५ अ।
विस्तार-रुचि—उपदेश १ ४२५ अ, सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।
विस्तार-विशेष—गुण २ २४१ अ।
विस्तार-सम्यक्त्वार्य—आर्य १.२७५ अ।
विस्तार-सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब।
विस्तार-सामान्य—क्रम २.१७२ ब, द्रव्य २ ४५४ अ।
विस्तारानत—अनंत १ ५५ ब।
विस्तारासंख्यात—असंख्यात १ २०६।
विस्मय—सम्यग्दर्शन ४ ३७२ ब।
विस्रसोपचय—३ ५७३ अ, अल्पबहुत्व १.१४२ अ, १ १५७, आस्रव १.२८३ अ, कारण (अबद्धकर्म) २ ५६ ब, कार्मण १.७६ अ, गुण २.२४१ ब, प्रदेश ३.१३५ अ, बध ३.१७४ ब, वर्गणा ३.५१६ ब, संमूर्च्छन ४.१२८ अ।

विहायोगति—३.५७३ अ।

विहायोगति नामकर्म प्रकृति—परूपणा – प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७ अ, ३ ९७, बधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९।

विहायोद्विक—उदय १ ३७४ ब।

विहार—३ ५७३ ब, आर्यिका १.२७६ अ।

विहारक्रिया सस्कार ४.१५२ अ।

विहारवत् स्वस्थान—क्षेत्र २ १९२ अ, १ १९७-२०७।

विचार—विचार ३ ५४१ ब।

वीची – अनुवीचि भाषण १.१०४ अ।

वीतभय – ३ ५७५ ब।

वीतभी – इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ।

वीतराग – ३ ५७५ ब, अनगार १ ६२ अ, अनुभव १ ८५ ब, चारित्र २ २९३ अ, छद्मस्थ २.३०५ ब। मोक्ष ३ ३२४ ब।

वीतरागकथा – कथा २ २ अ, वाद ३ ५३३ ब।

वीतरागचारित्र—उत्सर्ग मार्ग १.१२१ अ, उपयोग (शुद्ध) १ ४३१ अ, चारित्र २.२८५ अ, २.२८९ ब, २ २९० ब, पद्धति ३ ९ अ, सम्यग्दर्शन ४.३५८ अ।

वीतराग छद्मस्थ—उपशांत कषाय १ ४४२ ब, छद्मस्थ २ ३०५ ब, शुक्लध्यान ४ ३६ अ।

वीतरागता—उपयोग (शुद्ध) १.४३० ब, धर्म २ ४६७ अ।

वीतराग धर्मध्यान—उपयोग (शुद्ध) १ ४३१ अ, पद्धति ३.९ अ।

वीतराग वचन—आगम १.२३५ अ।

वीतराग श्रमण—साधु ४ ४०६ अ।

वीतराग सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४ ३६० ब।

वीतराग सम्यग्दृष्टि – सम्यग्दृष्टि ४ ३७७ ब।

वीतराग सुख—अनुभव १ ८५ अ, सुख ४.४३२ अ।

वीतराग स्तोत्र – ३ ५७५ ब, स्तोत्र ४.४४९ ब।

वीतरागांश सवर १.४३२ अ।

वीतशोक – ३ ५७६ अ, ग्रह २ २७४ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

वीतशोका—३.५७६ अ, चक्रवर्ती ४.१० ब, तीर्थंकर मल्लिनाथ २.३७८, बलदेव ४ १६ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब। नदीश्वर द्वीप की वापी – निर्देश ३.४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४९१, अकन ३.४६५। विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नाम निर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

वीथी—चद्र सूर्य की २.३४९ ब, समवसरण ४.३३० ब, ४ ३३१।

वीर—३ ५७६ अ, महावीर के लिए दे० महावीर, यदुवश १ ३३६, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, हरिवश १ ३४० अ, सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६६।

वीर कवि—इतिहास १ ३३१ अ, १.३४३ ब।

वीरचद्र—३ ५७६ अ, प्रथम – नंदिसघ १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३३ ब। द्वितीय—भिल्लक सघ १.३२२ अ, इतिहास १.३३३ अ।

वीरचर्या – तप २ ३६० अ, श्रावक २ ४८ अ, ४ ५२ ब।

वीर-जयंती व्रत—३ ५७६ अ।

वीरनदि – ३ ५७६ अ, नदिसघ १ ३२३ अ, देशीय गण १ ३२४ ब, १ ३२५, अभयनदि १ १२७ अ। इतिहास —प्रथम १ ३२९ अ। द्वितीय १ ३३० ब, १ ३४२ ब। तृतीय १ ३३० ब। चतुर्थ १ ३३१ ब, १ ३४४ अ।

वीरनिर्वाण-क्रिया—कृतिकर्म २ १३९ अ।

वीरनिर्वाण सवत्—इतिहास १ ३०९ अ, १ ३१० अ, १ ३१६।

वीरमार्तंडी—३ ५७६ ब, इतिहास १ ३४३ अ।

वीरवित—३.५७६ ब, पुन्नाटसघ १ ३२७ अ।

वीर-वैष्णव – वैष्णवदर्शन ३ ६०९ अ।

वीरशासनजयती व्रत—३ ५७६ ब।

वीरसंघ विघटन १ ३१७ ब।

वीरसागर—३ ५७६ ब, इतिहास १ ३३४ ब।

वीरसेन—३ ५७६ ब, इक्ष्वाकुवश १.३३५ ब, तीर्थंकर ऋषभानन २.३९२।

वीरसेन (आचार्य)—प्रथम – पचस्तूपसघ १ ३२६ ब, इतिहास १ ३२९ ब, १ ३४१ ब। द्वितीय—काष्ठा सघ १ ३२७ अ। माथुरसघ १ ३२७ ब। सेनसंघ १ ३२६ अ। इतिहास १.३३० अ। तृतीय – लाड-वागडसघ १ ३२७ ब। इतिहास १.३३१ अ।

वीरसेना—तीर्थंकर ऋषभानन २.३९२।

वीरांगज मुनि—कल्की २ ३१ ब।

वीरानद—चक्रवर्ती ४.१५ ब।

वीरासन—आसन १ २८१ अ-ब, कृतिकर्म २.१३५ ब।

वीरासन तप—कायक्लेश २ ४७ ब ।

वीर्य—३.५७६ ब, कुरुवंश १ ३३५ ब, तीर्थंकर विशालप्रभ २.३९२ ।

वीर्य (गुण)—३.५७६ ब, जीव २.३३७ अ, योग ३ ३७७ अ ।

वीर्य-चर्या—तप २ ३६० अ, श्रावक ४ ४८ अ, ४ ५२ ब ।

वीर्य-प्रवाद—३.५७७ अ, श्रुतज्ञान ४ ६८ ब ।

वीर्य लब्धि—३.४११ ब ।

वीर्यांतराय—अंतराय १ २७ ब ।

वीर्यांतराय कर्मप्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, १.२७, स्थिति ४ ४६७, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३.१३७। बध ३.९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसयोगीभंग १.३९९, सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९ ।

वीर्याचरण—मिथ्यादृष्टि ३.२०३ ब ।

वीर्याचार—आचार १.२४१ अ ।

वृंदावन—३.५७७ अ, इतिहास १ ३३४ ब, १.३४८ अ ।

वृंदावन विलास—३ ५७७ ब, इतिहास १ ३४८ अ ।

वृंदावनी—वैष्णवदर्शन ३ ६०९ अ ।

वृंदावली—३.५७७ ब, आवली १.२७९ ब ।

वृकार्थक—३ ५७७ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ ।

वृक्ष—३ ५७७ ब, जम्बू द्वीप में गणना ३.४४५ अ । जम्बूवृक्ष ३ ४५८ अ, चित्र ३.४५८ ब, वर्ण ३ ४७७। वृक्षस्थल ३.४५८ ब, चित्र ३.४५९। वसतिका (वृक्षमूल) ३ ५२७ ब, साधु (भव वृक्ष) ४.४०७ अ, स्वप्न ४.५०५ अ ।

वृक्षमूल—३.५८० अ, वसतिका ३.५२७ ब, विद्या ३.५४४ अ ।

वृक्षमूल योग—अतिचार २.४७ ब, कायक्लेश २.४७ ब ।

वृक्षमूल विद्या—विद्या ३.५४४ अ, विद्याधर वंश १ ३३९ अ ।

वृक्षमूलावास—कायक्लेश २.४६ ब ।

वृत्त—३.५८० अ, औदारिक शरीर १.४७१ अ, गणित (क्षेत्रफल, व्यास आदि) २.२३२ ब, २ २३३ ब ।

वृत्त-विष्कंभ—३ ५८० अ ।

वृत्ति—३.५८० अ ।

वृत्तिपरिसंख्यान—३.५८० अ ।

वृत्तिमत्व—३.५८१ अ ।

वृत्तिमान—३ ५८१ अ ।

वृत्तिलाभ क्रिया—सस्कार ४ १५२ ब ।

वृत्तिविलास—३ ५८१ अ, इतिहास १.३३१ अ, १.३४४ अ ।

वृत्तिसूत्र—आगम १ २३९ अ ।

वृत्त्यश—पर्याय ३.४५ ब ।

वृद्धि—३.५८१ अ, संगति ४.११९ अ ।

वृद्धार्थ—यदुवश १.३३७ ।

वृद्धि—३ ५८१ ब, अवधिज्ञान १.१९९ ब, गणित २.२२९ ब ।

वृद्धि-हानि—अवधिज्ञान १.१९७ ब, षड्गुण ४.८१ अ ।

वृद्ध-ह्रास—काल २ ९३ ।

वृष—३ ५८१ ब ।

वृषध्वज—कुरुवंश १ ३३५ ब ।

वृषभ—३.५८१ ब, तीर्थंकर ऋषभनाथ २ ३७९, तीर्थंकर सीमधर तथा सूरिप्रभ २.३९२, स्वप्न ४ ५०४ ब ।

वृषभगिरि—३ ५८५ अ, निर्देश ३ ४४६ अ । विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४४७, ३.४६४ के सामने । वर्ण ३.४७७, विदेहस्थ ३.४६० अ । चक्रवर्ती ४ १५ ब ।

वृषभदेव—मध्यलोक मे अवस्थान ३.६१३ अ; आयु १.२६५ अ ।

वृषभध्वज—इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ ।

वृषभसंघ—१ ३१७ ब, १ ३१९ अ, १.३२६ अ ।

वृषभसेन—३ ५८२ अ, गणधर २.२१२ ब, तीर्थंकर ऋषभदेव २ ३८७ ।

वृषभाकार प्रणाली—गंगानदी का द्वार ३.४५५ अ ।

वृषभेष्टा—लौकातिक देव ३.४९३ ब ।

वृषानंत—कुरुवश १.३३५ ब ।

वृष्य—अभिषव १.१३० ब ।

वृष्यरससेवा—ब्रह्मचर्य ३.१८९ अ ।

वृहदारण्यक—वेदात ३ ५९५ ब ।

वृहद्ध्वज—कुरुवंश १.३३५ ब ।

वेंगी नगर—आंध्रदेश की नगरी १.३० ब ।

वेंत—कषाय (मान) २.३८ अ ।

वेगवती—यदुवंश १.३३७ ।

वेगवान्—यदुवंश १ ३३७ ।

वेणा—३.५८२ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ ।

वेणु—३.५८२ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।

वेणु (देव)—मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ अ, अंकन ३.४६४। शाल्मली वृक्ष का देव १.४५८ अ, ३.६०३ अ। सुपर्ण कुमारेंद्र—निर्देश

३.२०८ अ, परिवार ३ २०९ अ, निवास ३ २०९ ब, आयु १.२६५ ।

वेणुतालि—मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अंकन ३ ४६४ ।

वेणुधारी—३ ५८२ अ, मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अकन ३.४६४ । शाल्मलीवृक्ष का देव ३.४५८ अ, ३ ६१३ ब । सुपर्ण कुमारेंद्र—निर्देश ३.२०८ अ, परिवार ३ २०९ अ, निवास ३.२०९ ब, आयु १.२६५ ।

वेणुन—३ ५८२ अ ।

वेणुनीत—मानुषोत्तर पर्वत के कूट देव—निर्देश ३.४७५ अ, अकन ३.४६४ ।

वेणुपुर—३ ५८२ अ ।

वेणुमती—३.५८२ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

वेणुमूल—कषाय (माया) २ ३८ अ ।

वेणुवती—३ ५८२ अ ।

वेणुश्री—तीर्थंकर श्रेयासनाथ २.३८० ।

वेतरणी नरकलोक की नदी २.५७३ अ, २ ५७७ ब ।

वेत्ता—३ ५८२ अ ।

वेत्र—कषाय (मार) २ ३८ अ ।

वेत्रवती—३.५८२ अ ।

वेत्रासन—३.५८२ अ, अधोलोक ३ ४३८ अ, वैराग्य ३ ६०७ ब ।

वेद (कर्म प्रकृति)—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३ ३४३ ब, स्थिति ४ ४६१, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६, बध ३ ९७, बधस्थान ३ १०९, उदय १.३७५, उदय के निमित्त १.३६७ ब, उदय की विशेषता १ ३७१ ब, १ ३७२ ब, १ ३७३ ब, उदयस्थान १.३८९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२९५, त्रिसयोगी भग १.४०१ ब । सक्रमण ४ ८६ अ, अल्पबहुत्व १.१६८, १.१७६ ।

वेद (कषाय)—३ ५८२ अ, ३ ५८३ ब, कषाय २ ३५ ब, २.३९ अ, जीव २.३३३ ब, मैथुन संज्ञा ४ १२१ अ ।

वेद (मार्गणा)—प्ररूपणा—बध ३ १०५, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०७ अ । सत् ४.२२२, सख्या ४ १०४, क्षेत्र ३.२०३, स्पर्शन ४.४८७, काल २.१११, अतर १.१४, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व .१.१४८, पंचशरीर स्वामियों का अल्पबहुत्व १.१५९ ब, भागाभाग ४.११२ ।

वेद (शास्त्र)—निंदा २.५८८ ब, श्रुतज्ञान ४ ६० अ ।

वेदक—३.५९० अ ।

वेदककाल—काल २.८१ अ ।

वेदक-सम्यक्त्व—३ ५९० अ, काल २.९८ अ, क्षयोपशम २.१८३ ब, २.१८४ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३६९ अ, ४.३७० ब । प्ररूपणा—बध ३.१०७, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३८५, उदयस्थान १.३९३, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसंयोगीभग १ ४०८ । सत् ४ २५७, सख्या ४.१०९, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४ ४९२, काल २ ११८, अतर १ २०, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५२, संक्रमण ४.८७ अ ।

वेदक सम्यग्दृष्टि—क्षयोपशम २.१८५ ब, सक्रमण ४ ८७ अ ।

वेदत्रय—अल्पबहुत्व १ १७६, उदय १.३७३ ब ।

वेदन—३.५९० अ, अनुभव १.८१-८६ ।

वेदना—३.५९० अ, आर्तध्यान १.२७४ अ, उपलब्धि १ ४३५ अ, समुद्घात ४ ३४३ ब, सम्यग्दर्शन का निमित्त ४ ३६३ अ, स्वाध्याय ४ ५२६ अ ।

वेदना-भय—भय ३ २०६ ब ।

वेदनाभिभव—सम्यग्दर्शन का निमित्त ४ ३६३ ब ।

वेदना-सन्निकर्ष—सन्निकर्ष ४ ३१२ अ ।

वेदना-समुद्घात—३.५९१ अ, निर्देश (समुद्घात) ४.३४३, सत् ४.३४३, क्षेत्र २ १९७-२०७, स्पर्शन ४.४७७-४९४ ।

वेदनीय—३ ५९१ ब, आबाधा १ २४९ अ, घाती १.९१ अ । प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ९३ अ, ३ ५९१, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १.९५, अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६६ अ, प्रदेश ३ १३६ । बध ३.९७, बधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदय के निमित्त १ ३६७ ब, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसयोगी भग १.३९९ । सक्रमण ४.८४ अ, अल्पबहुत्व १ १६८ ।

वेद-सिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३ ब ।

वेदांत—३ ५९४ ब, एकात १.४६५ ब ।

वेदांतसार—वेदात ३.५९५ ब ।

वेदिका—३.६०१ ब । जंबूद्वीप—निर्देश (ज्योति) ३.४४४ ब, गणना ३.४४६ अ, विस्तार ३.४८४; अंकन ३.४४४, वर्ण ३ ४७७ । जंबू व शाल्मली वृक्षस्थल—निर्देश ३ ४५८ अ, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.५६७, वर्ण ३.४७७ । द्रह—निर्देश ३.४४४ ब, विस्तार

३.४८४, अंकन ३ ४५४, वर्ण ३.४७७। पुष्करिणी —अंकन ३.४५१, रेवाण्यक व भूतारण्य वन—निर्देश ३.४४४, ३ ४५७ ब, विस्तार ३.४८४, अंकन ३ ४४४, ३.४४७, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७। पर्वत—निर्देश ३ ४४४ ब, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४७, ३.४४९, ३ ४५२, वर्ण ३ ४७७। भद्रशाल वन—निर्देश ३.४५८ अ, विस्तार ३.४८४, अंकन ३ ४४४, वर्ण ३.४७७।

वेदिकाबद्ध—३.६०१ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ ब।

वेदिम—३ ६०१ ब।

वेदी—३.६०१ ब, विशेष प्ररूपणा दे० ऊपर वेदिका।

वेधिम—निक्षेप २.६०२ अ।

वेलधर देव नगरी—लवणसागर में ३ ४६२ अ, अंकन ३ ४६१।

वेलंब—३ ६०१ ब, मानुषोत्तर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अंकन ३ ४६४। वायुकुमार इंद्र—निर्देश ३ २०८ अ, परिवार ३.२०९ अ, अवस्थान ३.२०९ ब, आयु १.२६५।

वेश्या—३ ६०१ ब, ब्रह्मचर्य ३.१९२ अ, स्त्री ४.४५० ब।

वेश्यागमन—ब्रह्मचर्य ३ १९१ ब।

वैकालिक दशक—३ ६०१ ब, श्रुतज्ञान ४.६७ ब।

वैक्रियिक—३ ६०१ ब।

वैक्रियिक काययोग—३.६०३ ब, प्ररूपणा—बंध ३.१०४, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८०, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ ३८३, सत्त्वस्थान ४ २१९, ४ ३०५, त्रिसयोगीभंग १.४०७ अ। सत् ४ २९९, संख्या ४ १०३, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४ ४८५, काल २ ९६ ब, २ १०८, अंतर १ ११३, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४८।

वैक्रियिक चतुष्क—उदय १ ३८४ ब।

वैक्रियिक द्विक—उदय १ ३७४ ब।

वैक्रियिक वर्गणा—वर्गणा ३.५१४ ब।

वैक्रियिक विमान—विमान ३ ५६३ अ।

वैक्रियिक शरीर—आहारक शरीर १.४५७ अ, कल्याणक २ ३२ ब, नरक २ ५७३ ब, प्रदेश अल्पबहुत्व १ १५७।

वैक्रियिक शरीर अंगोपांग—१.१ ब।

वैक्रियिक शरीर अंगोपांग नामकर्मप्रकृति—प्ररूपणा—दे० नीचे वैक्रियिक शरीर नामकर्मप्रकृति।

वैक्रियिक शरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, संक्रमण ४.८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६९।

वैक्रियिक शरीर बंध—वैक्रियिक-वैक्रियिक, वैक्रियिक-तैजस, वैक्रियिक-कार्मण, वैक्रियिक-तैजस-कार्मण ३.१७० ब।

वैक्रियिक षट्क—उदय १.३७४ ब।

वैक्रियिक समुद्घात—वैक्रियिक ३ ७०४ अ। समुद्घात—निर्देश ४.३४३, क्षेत्र २.१९७-२०७, स्पर्शन ४.४७७-४९४।

वैखरी—भाषा ३.२२७ ब।

वैखानस मुनि—वैष्णवदर्शन ३ ६०९ अ।

वैज्ञानिक भूगोल—निर्देश ३ ४३५ ब।

वैचित्र्य—कारण (कर्मोदय) २ ७१ ब।

वैजयंत—३ ६०४ ब, ग्रह २ २७४ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ। जम्बूद्वीप की जगती का द्वार—निर्देश ३.४४४ ब, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४४ ३.४४७, इसका रक्षकदेव ३ ६१३। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६८।

वैजयंत (स्वर्ग)—अनुत्तर विमान—निर्देश ४ ५१९ अ, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४.५१५, ४ ५१७। देव—निर्देश ४.५१० अ, आयु १.२६९, आयु बंध के योग्य परिणाम १ २५८ ब। चक्रवर्ती ४ १५ अ-ब।

वैजयंता—विदेहनगरी—निर्देश ३ ४७० ब, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९-४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६२, चित्र ३.४६० अ।

वैजयंती—३ ६०४ ब, बलदेव ४ १७ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ। नंदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४९१, अंकन ३ ४६५। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ-ब, अंकन ३.४६८, ३.४६९। विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ।

वैडूर्य—३.६०४ ब, मनुष्यलोक, ३.२७५ ब, रत्नप्रभा ३.३८९ ब।

वैडूर्य (कूट)—महाहिमवान् पर्वत का—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४। मानुषोत्तर

पर्वत का—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३.४६४। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८, ३.४६९। पद्म आदि द्रहों के—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३.४५४।

वैडूर्यमयी—सुमेरु पर्वत की परिधि ३.४४९ अ-ब।

वैडूर्यसागर-द्वीप—नामनिर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिष चक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

वैडूर्य (स्वर्गपटल)—सौधर्म पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अकन ४.५१९ ब, देव आयु १.२६६।

वैतरणी—३.६०४ ब। नरक की नदी—निर्देश २.५७३, २.५७७ ब। बौद्धाभिमत ३.४३४ ब, वैदिकाभिमत ३.४३२। मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

वैतराणी—३.६०४ ब।

वैताढ्य—३.६०४ ब, चक्रवर्ती ४.१५ ब।

वैतृष्ण्य—३.६०४ ब, उपेक्षा १.४४४ ब, ४.४१४ ब।

वैदर्भ—३.६०४ ब, तीर्थंकर चंद्रप्रभ तथा सुविधिनाथ २.३८७, मनुष्यलोक ३.२७५ अ-ब।

वैदिक दर्शन—३.६०४ ब, दर्शन २.४०२ ब।

वैदिक भूगोल—निर्देश ३.४३१ ब।

वैदिक मूढ़ता—अमूढ़दृष्टि १.१३२ ब, मूढ़ता ३.३१५ ब।

वैदिक शास्त्र—शास्त्र ४.२८ अ।

वैदिश—३.६०४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

वैद्यसार—३.६०४ ब, इतिहास १.३४० ब।

वैद्युत—विद्याधरवंश १.३३९ अ।

वैधर्म्य—३.६०४ ब, दृष्टांत २.४३८ अ।

वैनयिक—३.६०५ अ, मिश्रगुणस्थान ३.३०८ ब, श्रुतज्ञान ४.६९ ब।

वैनयिक मिथ्यात्व—वैनयिक ३.६०५ अ।

वैनयिकी ऋद्धि—ऋद्धि १.४४८, १.४५० अ।

वैभाविक भाव—विभाव ३.५५७ ब।

वैभाविकी क्रिया—विभाव ३.५५७ ब।

वैभाविकी शक्ति—विभाव ३.५५७ ब, ३.५५८ अ।

वैभाषिकी—बौद्धदर्शन ३.१८६ ब।

वैमनस्क—३.६०५ ब, नरकपटल—निर्देश २.५८० अ, विस्तार २.५८० अ, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।

वैमानिक देव—निर्देश ३.४४५, २.२४४ ब, ४.५१० अ, अवगाहना १.१८०, अवधिज्ञान १.१९७ अ, १.१९८, आत्मरक्ष १.२४३ ब, आयु १.२६६-२६९, आयुबंध के योग्य परिणाम १.२५८ अ। इंद्र—निर्देश ४.५१० ब, परिवार ४.५१३ अ, शक्ति ४.५११ ब, विमान नगर व भवन ४.५२१ अ।

वैमानिक देव (प्ररूपणा)—बंध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसंयोगीभंग १.४०६। सत् ४.१८९, संख्या ४.९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

वैयधिकरण्य—३.६०५ ब।

वैयाकरणी—३.६०५ ब, एकांत १.४६५ ब।

वैयावृत्ति—सल्लेखना ४.३९५ अ।

वैयावृत्य—३.६०५ ब, ३.६०६ ब, अपवाद मार्ग १.१२१ ब। दान २.४२२ ब।

वैयावृत्यकरण शुद्धि—शुद्धि ४.४१ अ।

वैयावृत्य तप—वैयावृत्य ३.६०५ ब।

वैयावृत्य योगयुक्तता—३.६०७ अ।

वैर—३.६०७ ब।

वैरकुमार—३.६०७ अ।

वैरग्गसार—इतिहास १.३४४ अ।

वैरत्याग अर्हंतातिशय १.१३७ ब।

वैराग्य—३.६०७ अ, उपदेश १.४२४ अ, उपेक्षा १.४४४ ब, करुणा २.१५ ब, मिथ्यादृष्टि ३.३०३ अ, राग ३.३९८ ब, ३.३९९ अ, साधु ४.४०६ ब।

वैराग्यभावना—अनुप्रेक्षा १.७८ अ, ध्येय २.५०२ अ।

वैराग्यमाला—३.६०७ ब, इतिहास १.३४६ ब।

वैरात्रिक—३.६०७ ब, कृतिकर्म २.१३७ ब।

वैरिसिंह—३.६०७ ब।

वैरोचन—अनुदिश स्वर्ग विमान—निर्देश ४.५१९ अ, विस्तार ४.५१९ अ, अंकन ४.५१५, ४.५१७, आयु १.२६९। असुरेंद्र—निर्देश ३.२०८ अ, परिवार ३.२०९ अ, अवस्थान ३.२०९ ब, आयु २.२६५।

वैरोटी—३.६०७ ब, तीर्थंकर अनंतनाथ की यक्षिणी २.३७९, विद्या ३.५४४ अ।

वैलक्षणा—वैमानिक इंद्रों की वल्लभिका देवी ४.५१३ ब।

वैवस्वत यम—३.६०७ ब।

वैशद्य—विशद ३.५६७ अ।

वैशाख—३.६०७ ब।

वैशेषिक (दर्शन)—३.६०७ ब, एकांत १.४६५ अ। १.४९६ अ, दर्शन २.४०३ अ, द्रव्य २.४५८ अ, वैशेषिक ३.६०८ अ।

वैशेषिक सूत्र—३.६०७ ब।
वैश्य—३.६०९ अ, वर्णव्यवस्था ३.५२३ ब, ३.५२४ अ।
वैश्रवण—३.६०९ अ, तीर्थंकर मल्लिनाथ २.३७८। दिग्गजेंद्र पर्वत का देव—३ ४५३ अ, मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव ३ ४७५ अ।
वैश्रवण कायिक—देव (आकाशोपन्न) ३.४४५ ब।
वैश्रवण कूट—विदेह वक्षार—निर्देश ३.४६० अ, नाम निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७। पद्म आदि द्रहों के कूट—निर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४५४। मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अंकन ३ ४६४। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६८। वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४, ३.४६० अ। विजयार्ध गिरि का कूट—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४४४, ३ ४४८। विद्याधरनगरी ३ ५४५ अ-ब।
वैश्वानर—३ ६०९ अ, कुरुवंश १.३३५ ब, १.३३६ अ, तीर्थंकर शीतलनाथ का रुद्र २.३९१, रुद्र ४ २२ अ।
वैषयिक आधार—आधार १.२४६ अ।
वैष्णव दर्शन—३ ६०९ अ।
वैसदृश्यप्रत्यभिज्ञान—प्रत्यभिज्ञान ३.१२५ अ।
वैसादृश्य—प्रत्यभिज्ञान ३.१२५ अ।
वैस्रसिक परिणाम—परिणाम ३.३१ ब।
त्रैस्रसिक बंध—बंध ३.१६९ ब।
वैस्रसिक शब्द—शब्द ४.३ अ।
वैस्रसिकी क्रिया—क्रिया २.१७३ ब।
वोंडज—वस्त्र ३ ५३१ अ।
वोटिक—श्वेतांबर ४.८० ।
वोम्मरस—इतिहास १ ३३३ अ।
व्यंग्यव्यंजक भाव—स्फोट ४ ४९५ अ।
व्यंग्यव्यंजक संबंध—सबंध ४.१२६ अ।
व्यंजन—३ ६०९ ब, अक्षर १ ३३ अ, शुक्लध्यान ४.३३ ब।
व्यंजन-निमित्तज्ञान—ऋद्धि १.४४८, निमित्तज्ञान २.६१३ अ।
व्यंजन-पर्याय—३ ४७ ब, ३.४८ ब, सप्तभंगी ४.३२२ ब।
व्यंजन-पर्याय नैगमनय—नय २.५३१ अ।
व्यंजन-पर्याय नैगमाभास—नय २.५३१ ब।
व्यंजन-शुद्धि—३ ६०९ ब, उभय शुद्धि (सम्यग्ज्ञान) १.४४४ अ।
व्यंजन-संक्रांति—संक्राति ४.९१ अ।
व्यंजनावग्रह—अवग्रह १.१८२ अ, १.१८३, मतिज्ञान ३.२५७ अ।
व्यंतर—३ ६०९ ब, चैत्य-चैत्यालय २.३०३ अ-ब, मनुष्य-शरीर-प्रवेश ३.६११ अ, स्वप्न ४.५०५ अ।
व्यंतरदेव—निर्देश २.४४५ ब, ३.६१० ब, भेद ३.६१० ब। अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१९८, अवस्थान १ ४७१, ३ ६१२-६१४, आयु १.२६४, आयु-बंध के योग्य परिणाम १ २६८ ब, इंद्र—निर्देश ३ ६११ अ, शक्ति आदि २.६१० ब, शरीर का वर्ण आदि ३ ६११ अ, देवी ३ ६११ ब, भव, आवास व नगर ३ ६१२ अ-ब।
व्यंतरदेव (प्ररूपणा)—बंध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४ १८७, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २ १०४, अंतर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।
व्यंतर लोक—निर्देश ३ ६१२ अ।
व्यंकलन—३ ६१५ अ, गणित २.२२२ ब, २ २२४ अ।
व्यक्त—मन.पर्ययज्ञान ३ २६४ अ।
व्यक्तनिर्वृत्यक्षर—अक्षर १.३२ ब।
व्यक्तराग—राग ३ ३९६ अ।
व्यक्ति—३ ६१५ अ, कर्म २.२९ अ, साधु ४.५०७ अ।
व्यक्ति-स्थिति—उत्कर्षण १.३५४ ब।
व्यग्रता-विनिवृत्ति—ध्यान २.४९५ अ।
व्यतिकर (दोष)—३.६१६ अ, कर्ता-कर्म २.२२ ब।
व्यतिक्रम—३.६१६ अ।
व्यतिरेक—३ ६१६ अ।
व्यतिरेकी दृष्टांत—अनुमान १ ९८ ब, दृष्टांत २.४३८ अ।
व्यतिरेकी धर्म—व्यतिरेक ३.६१६ अ।
व्यतिरेकी पर्याय—पर्याय ३ ४७ अ।
व्यतिरेकी लिंगानुमान—अनुमान १.९७ ब।
व्यतिरेकी विशेष—व्यतिरेकी ३ ६१६ अ।
व्यतिरेकी व्याप्ति—अनुमान १.९७ अ।
व्यतीत शोक—तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३७८।
व्यधिकरण—३ ६१६ ब।
व्यभिचार—३.६१६ ब, शब्द नय २ ५३६ ब।
व्यभिचारी हेत्वाभास—व्यभिचार ३.६१६ ब।

व्यय—उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य १.३५७ ब, मार्गणा ३ २९७ ब।

व्यर्थ सभाषण—सत्य ४.२७३ अ।

व्यवच्छेद—३.६१७ अ।

व्यवसाय—३.६१७ अ अध्यवसान १ ५२ अ।

व्यवस्था—३ ६१७ अ।

व्यवस्था-पद—अनुयोगद्वार १.१०२ ब, पद ३ ४ ब।

व्यवहार-अनशन—अनशन १ ६५ अ।

व्यवहार-अनुप्रेक्षा—अनुप्रेक्षा १.७२-७८ ब।

व्यवहार-अमूढ़दृष्टि—अमूढदृष्टि १ १३२ ब।

व्यवहार-अहिंसा—अहिंसा १ २१७ ब।

व्यवहार-आलोचना—आलोचना १.२७६ ब।

व्यवहार-उपगूहन—उपगूहन १.४१७ अ।

व्यवहार-उपयोग—उपयोग (शुभोपयोग) १.४३४ अ-१ ४३५ अ।

व्यवहार-कर्ताकर्म—कर्ता-कर्म २ २१-२४।

व्यवहार-कारक—कारक २.४९ अ।

व्यवहार-कारण—कारण (निमित्त) २ ७३ अ।

व्यवहार काल—काल २.८६ ब।

व्यवहार-क्षमा—क्षमा २ १७७ अ।

व्यवहार गणित—इतिहास १ ३३१ ब।

व्यवहार-गुप्ति—गुप्ति २ २४८ अ, २ २४९ अ, २ २५० अ।

व्यवहार-ज्ञान—२ २५८ ब, ज्ञान २ २६८ ब।

व्यवहार-ज्ञानाचार—आचार १ २४० अ।

व्यवहार-चारित्र—चारित्र २ २८४ अ, २ २८९ ब।

व्यवहार-चारित्राचार—आचार १ २४० ब।

व्यवहार-तप—तप (लक्षण) २ ३५८ ब, तप (बाह्य) २.३५९ अ, २ ३६१ ब।

व्यवहार-तपाचार—आचार १ २४० ब।

व्यवहारत्व (गुण)—३ ६१७ ब।

व्यवहार दर्शनाचार—आचार १.२४० अ।

व्यवहार-धर्म—उपयोग—अशुद्धोपयोग १.४३४ ब, पुण्य १ ४३४ अ, विषकुंभ १.४३४ अ, शुभोपयोग १.४३४ अ। धर्म २ ४६६ ब, २ ४६९ अ-ब, २ ४७५।

व्यवहार-धर्मध्यान—धर्मध्यान २ ४७९ अ, २ ४८५ ब।

व्यवहार-नय—नय—निर्देश २ ५१४ ब, २ ५१५ अ, उपचार २ ५६२ अ, सविकल्प २ ५५५ अ, अशुद्ध निश्चय २ ५५५ अ। अपवाद-मार्ग १ १२० ब। नय-सप्तक—२.५२७ ब, २.५२८ अ, २ ५३२ अ, २ ५५६ ब। निक्षेप—२.५९३ अ, २.५९५ अ, उदाहरण—आत्मद्रव्य २ ५२३ ब, रागद्वेष कषाय २.३९ अ-ब, सप्तभंगी ४ ३१८ ब।

व्यवहार-नय-उपक्रम—उपक्रम १ ४१६ ब।

व्यवहार-नयाभास—नय २ ५५९ अ।

व्यवहार-पंडितमरण—मरण ३ ३८१ अ।

व्यवहार-पर्याय—पर्याय ३.४५ ब।

व्यवहार-पल्य—उपमाप्रमाण २.२१८ अ, काल का प्रमाण २ २१७ ब।

व्यवहार-प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३ १३१ अ।

व्यवहार-प्रभावना—प्रभावना ३ १३९ ब।

व्यवहार-प्राण—प्राण ३.१५२ ब, ३ १५४ अ।

व्यवहार-प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त ३.१५८ अ।

व्यवहार-प्रोषधोपवास—प्रोषधोपवास ३ १६३ अ।

व्यवहार-बालमरण—मरण ३ २८१ अ।

व्यवहार-ब्रह्मचर्य—ब्रह्मचर्य ३ १८९ अ।

व्यवहार-भक्ति—भक्ति ३ १९७ ब।

व्यवहार-भोक्ता-भोग्यभाव—कर्ता-कर्म २ २२ अ, भोक्ता ३ २३७ अ, भोग ३.२३८ अ।

व्यवहार-मोक्षमार्ग—मोक्षमार्ग ३ ३३५ अ, ३ ३३९ अ।

व्यवहार-रत्नत्रय—उपयोग (शुभ) १.४३४ ब, संवर ३ १४३ ब।

व्यवहार-वात्सल्य—वात्सल्य ३ ५३२ अ।

व्यवहारवान् (आचार्य)—व्यवहारत्व गुण ३ ६१७ ब।

व्यवहार-विनय—विनय ३ ५४८ अ।

व्यवहार-वीर्याचार—आचार १.२४१ अ।

व्यवहार-श्रुतकेवली—श्रुतकेवली ४.५५ ब।

व्यवहार-संयम—संयम ४ १३६ ब।

व्यवहार-सत्य—सत्य ४.२७१ ब।

व्यवहार-समिति—समिति ४ ३३९ अ, ४ ३४२ अ।

व्यवहार-सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ।

व्यवहार-सागर—काल का प्रमाण २ २१७ ब।

व्यवहार-साधु—साधु ४ ४०४ अ।

व्यवहार सुख—सुख ४ ४३२ अ।

व्यवहार-स्तवन—भक्ति ३ १९९ ब।

व्यवहार-स्थितिकरण—स्थितिकरण ४.४७० अ।

व्यवहार-स्वाध्याय—स्वाध्याय ४.५२३ अ।

व्यवहार-हिंसा—हिंसा ४ ५३४ अ।

व्यहारावलंबी—मिथ्यादृष्टि ३.३०३ ब, साधु ४.४०४ अ।

व्यवहारेशिता अधिकार—ब्राह्मण ३.१९६ अ।

व्यसन—३.६१७ ब, श्रावक ४.५० ब।

व्याकरण—३.६१७ ब, आगमज्ञान १.२३१ ब, १.२३२ अ।
व्याकरण क्रियाकलाप—आशाधर १.२८० ब, इतिहास १.३४४ अ।
व्याकरण गुजराती—३ ६१७ ब।
व्याकरण जैनेन्द्र—३.६१७ ब।
व्याकरण प्राकृत—३.६१७ ब।
व्याकरणशास्त्र—नय (शब्दनय) २.५३९ अ।
व्याक्षेपासक्त-चित्तता—व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ।
व्याख्या—३.६१७ ब।
व्याख्यान—उपदेश १ ४२५ ब, पद्धति ३.९ ब।
व्याख्यानाचार्य—सत्त्व ४ २७६ ब।
व्याख्यानाभास—आगम १ २३६ ब।
व्याख्याप्रज्ञप्ति – ३ ६१७ ब, श्रुतज्ञान ४ ६८ अ-ब, अमितगति १ १३२ अ, इतिहास १.३२८ ब, १.३४० अ, १.३४३ अ।
व्याख्यालंकार टीका—आशाधर १.२८१ अ।
व्याघात—३.६१८ अ, सूक्ष्म ४ ४३८ अ।
व्याघात-अपकर्षण —अपकर्षण १ ११३ ब, १ ११६ ब।
व्याघात-उत्कर्षण – उत्कर्षण १.३५३ ब।
व्याघात-काल – काल (योगमार्गणा का जघन्य काल) २ १६ अ।
व्याघ्रभूति—३.६१८ अ, अक्रियावाद १ ३२ अ, एकात १ ४६५ ब।
व्याघ्रहस्ती—३.६१८ अ, पुन्नाटसंघ १.३२७ अ।
व्याघ्री – ३ ६१८ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
व्याज – ३.६१८ अ।
व्यापक—३.६१८ अ।
व्यापकानुपलब्धि अनुमान—३ ६१८ अ, अनुमान १ ९७ अ।
व्यापार—३ ६१९ अ।
व्याप्ति—३ ६१८ अ, कारण-कार्य २ ५९ अ, तर्क २ ३६५ अ।
व्याप्तिज्ञान—मतिज्ञान ३.२५४ ब।
व्याप्य—३ ६१८ ब।
व्याप्य-व्यापक भाव—कर्ता-कर्म २ १९-२४, कारण-कार्य २ ५७ अ।
व्याप्यव्यापक सबध—कारक २ ५० अ, संबध ३.१२६ अ।
व्याप्यासिद्ध हेत्वाभास – असिद्ध हेत्वाभास १.२१० अ।
व्यामोह—३ ६१८ ब।
व्यावृत्ति—३ ६१८ ब, पर्याय ३.४५ ब।
व्यास—३.६१८ ब, एकांत विनयवादी १.४६५ ब। वैनयिक् ३.६०५ अ। कुरुवंश १.३३६ अ, गणित २ २३२ ब, २.२३३ ब। योगदर्शन ३.३८४ अ।
व्युच्छित्ति—३.६१८ ब, उदय १.३७५, उदीरणा १.४११ अ, बंध ३ ९७, सत्त्व ४.२७८।
व्युच्छेद—आगम (तीर्थव्युच्छेद) १ २३७ अ।
व्युत्क्रांत – ३.६२४ अ, नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब; विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।
व्युत्सर्ग—३ ६१९ अ, त्याग २.३९६ ब।
व्युत्सर्ग-तप —व्युत्सर्ग ३ ६२३ अ।
व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त ३ १६१ अ।
व्युपरतक्रिया-निवृत्ति – शुक्लध्यान ४ ३५ ब।
व्युष्टिक्रिया—मत्र ३ २४७ अ, सस्कार ४ १५१ अ।
व्योमेंदु—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।
व्योमचर—विद्या ३ ५४४ अ।
व्योमवती—वैशेषिक दर्शन ३ ६०७ ब।
व्योमशेखर – वैशेषिक दर्शन ३ ६०७ ब।
व्रणमुख—३.६२४ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।
व्रण संरोहिणी—विद्या ३ ५४४ अ।
व्रत—३.६२४ अ, अस्तेय १ २१३ अ, अहिंसा १.२१५ ब, उपयोग १ ४३३ अ, १.४३४ ब, १ ४३५ अ, चारित्र २ २८९ अ, २.२९० अ, २.२९१ ब, २.२९२ ब, ध्याता २ ४९३ अ, पुण्य (उपयोग) १.४३५ अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०१ ब, राग ३.४०० अ, शुभोपयोग १.४३३ अ, १.४३४ अ-ब, सवर ४ १४३ ब, २.२९२ ब।
व्रत-कथाकोष—कथाकोष २.३ ब, इतिहास १ ३४६ अ।
व्रतखंडन—अतिचार १.४२ ब, अपवाद मार्ग १ १२१ अ।
व्रतचर्या-क्रिया – मंत्र ३ २४७ अ, संस्कार ४.१५१ अ, ४.१५२ ब।
व्रतत्याग—चारित्र २.२९० ब, २.२९१ अ, २.२९४ अ।
व्रतदान—व्रत ३ ६२५ ब।
व्रतधर्मा—कुरुवंश १.३३५ ब।
व्रतप्रतिमा — ३.६२८ ब, दर्शनप्रतिमा २.४१८ अ।
व्रतभंग—अतिचार १.४२ ब, अपवाद मार्ग १ १२१ अ।
व्रतशुद्धि—शुद्धि ४ ४० अ।
व्रतारोपण—व्रत ३.६२५ ब।
व्रतावतरण क्रिया—सस्कार ४.१५१ ब, ४ १५२ ब।
व्रती—३.६२९ अ, बद्धायुष्क १.२६२ ब।
व्रातमदर—कुरुवंश १ ३३६ अ।

श

शंकर मिश्र—वैशेषिक ३.६०७ ब।
शंकर वेदांत—४ १ अ, वेदांत ३.५९६ अ।
शंकराचार्य—४ १ अ, वेदांत ३.५९५ ब।
शंकरानंद—४ १ अ।
शंका—४ १ अ, अतिचार १ ४४ अ, आप्त १.२४७ ब, निःशंकित २.५८६ ब।
शंकाकार शिखा—४ १ अ।
शंकातिचार—अतिचार १.४४ अ, संशयमिथ्यात्व ४.१४५ ब।
शंका-राहित्य—आप्त १ २४७ ब।
शंकित दोष—४.१ अ, आहार १.२९१ ब, वसतिका ३.५२९ ब।
शंकित विपक्षवृत्ति—व्यभिचार ३.६१६ ब।
शंकुक—विद्या ३ ५४४ अ, विद्याधरवंश १.३३९ अ।
शंकु समुच्छिन्नक—४ १ अ।
शंख—४.१ अ, चक्रवर्ती ४ १४ ब, चैत्यचैत्यालय २ ३०२, अ, तीर्थंकर नेमिनाथ १.३७९, तीर्थंकर प्रभादेव २ ३७७, तीर्थंकर वज्रधर २.३९२, यदुवंश १.३३७, हरिवंश १.३४० अ। लवण सागर के पर्वत—निर्देश ३.४६२ अ, नामनिर्देश ३ ४७४, विस्तार ३ ४७९, अंकन ३ ४६१, वर्ण ३.४७८।
शंख-परिणाम—४.१ अ, ग्रह २ २७४ अ।
शंखरत्न—४.१ अ। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६९।
शंखवज्र—४.१ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
शंखवर—४ १ ब, बारहवाँ द्वीप-सागर—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अंकन ३.४४३, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।
शंखवर्ण—४ १ अ, ग्रह २.२७४ अ।
शंखा—विदेहक्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ। विदेह वक्षार का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४ के सामने।
शंखाकार आकृति—४.१ ब, गणित (क्षेत्रफल) २ २३४ अ।
शंखावर्त योनि—योनि ३.३८७ अ।
शंब—४.१ ब, यदुवंश १.३३७।
शंबरदेव—४.१ ब।
शंबूक—४.१ ब।
शक—४.१ ब, अग्निमित्र १.३६ ब।
शकट—४ १ ब, तीर्थंकर ऋषभदेव २.३८४।
शकट द्वीप—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
शकटमुखी—४ २ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
शकटमुख—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
शक वंश—४ २ अ, इतिहास १.३१० ब, १ ३१४।
शक संवत्—१.३०९ ब, १ ३१० अ।
शकुंदमन—यदुवंश १.३३७।
शक्कर—अनुभाग १.९० ब।
शक्ति—४ २ अ, अनशन १ ६६ अ, कर्म २ २९ अ, कर्मोदय (कारण) २ ७१ ब। कषाय २ ३८ अ, कारण २ ६० अ, २.७१ ब, गुण २ २४० अ, २.२४१ अ, तप २ ३६० अ, २.३६३ ब, प्रकृति ३.८७ ब, प्रोषधोपवास ३.१६५ अ, स्वभाव ४.५०७ अ।
शक्ति-अंश—गुण २ २४१ अ।
शक्तिकुमार—४ २ अ।
शक्तितः अनशन—१ ६६ अ।
शक्तितस्तप—तप २ ३६० अ, २ ३६३ ब।
शक्तितस्त्याग—त्याग २.३९७ अ।
शक्ति-भूपाल—४ २ अ।
शक्ति-स्थिति—उत्कर्षण १ ३५४ ब।
शक्य पक्ष—पक्ष ३ २ ब।
शक्य प्राप्ति—४ २ अ।
शक्रपुरी—४.२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
शक्रादित्य—४ २ अ।
शची—वैमानिक इंद्रों की ज्येष्ठा देवी ४ ५१३ ब।
शत—संख्या परिमाण २.२१४ ब, इन्द्र १ २९९ अ।
शतइंद्र—इन्द्र १.२९९ अ।
शत उज्ज्वल—गजदंत कूट—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४५, ३ ४५७।
शतक—इतिहास १ ३४१ अ।
शतक चूर्णि—इतिहास १ ३४१ अ, बृहत् १ ३४१ ब।
शतक ज्वाल—गजदंत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४, ३.४५७।
शतधनु—गणधर २ २१२ ब, यदुवंश १ ३३७, हरिवंश १ ३४० अ।
शतपदा—४ २ अ, रुचकवर पर्वत के कूट की देवी—निर्देश

३ ४७६ ब, अकन ३ ४६८, ३ ४६८, ३ ४६९ ।

शतपर्वा—४.२ अ, विद्या ३ ५४४ अ ।

शतभागा—४ २ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

शतभिषा—४ २ अ, तीर्थंकर वासुपूज्य २ ३८०, नक्षत्र २ ५०४ अ ।

शतमति—४.२ अ ।

शतमुख—४.२ ब, यदुवश १ ३३७ ।

शतरथ—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ ब ।

शतसहस्र—संख्या-परिमाण (गणित) २ २१४ ब ।

शतह्रद—४.२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ ।

शतह्रदा—रुचकवर पर्वत की देवी ३.४७६ ब ।

शताख्य—स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४ ५१५, देव आयु १ २६८ ।

शतानीक—४.२ ब, कुरुवश १ ३१० ब, विद्याधरवश १ ३३९ अ ।

शतार (देव)—४ २ ब, देव—निर्देश ४ ५१० ब, अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १ २६८, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५८ ब । इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, दक्षिणेंद्र ४ ५११ अ, परिवार ४ ५१२-५१३, चिह्न आदि ४.५११ ब, अवस्थान ४.५२० ब, विमान नगर व भवन ४.५२०-५२१ ।

शतार (देव) प्ररूपणा—बध ३ १०२, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगीभग १ ४०६ ब। सत् ४ १९२, संख्या ४ ९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अतर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

शतार (स्वर्ग)—४ २ ब। निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४ ५१८, इन्द्रक श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४ ५२०, दक्षिण विभाग ४ ५२१ अ। अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४ ५१५। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४ ५१५ ।

शत्रुंजय—४.२ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, विद्याधरवश १.३३९ अ ।

शत्रु—४.२ ब, गुरु २.२५२ ब, सुख ४ ४३० ब ।

शत्रुघ्न—४.२ ब, यदुवश १.३३७, रघुवश १.३३८ अ ।

शत्रुभयंकर—राष्ट्रकूटवंश १.३१५ ब ।

शत्रुसेन—यदुवंश १ ३३७ ।

शनि—४.२ ब, ग्रह २ २७४ अ । ज्योतिष विमान—निर्देश २.३४७, आकार २ ३४७, किरणे तथा वाहक देव २.३४७, विस्तार २ ३५१ ब, अकन २.३४७, चित्र २ ३४७ । आधुनिक मत ३ ४३६, वैदिकाभिमत ३.४३२ ब । इन्द्र—निर्देश २.३४५ ब, किरणे तथा शक्ति २.३४७ ।

शबर-भाषा—मीमासादर्शन ३ ३११ अ ।

शबर-स्वामी—४.२ ब, मीमासादर्शन ३ ३११ अ ।

शबरी-गुह्यगूहन—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ ।

शबल—४ २ ब ।

शब्द—४ २ ब, आगम १ २२९ ब, १ २३४ अ, आगमार्थ १ २३१ अ, १ २३२ ब, आहारातराय १ २९ अ, ध्येय २ ५०० अ, नय २ ५१४ ब, २ ५४३ अ, मूर्त ३.३१८ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२३ अ, सप्तभगी ४ ३२४ ब, ४.३२५ ब, स्फोट ४ ४९५ ब ।

शब्दकोष—४ ४ ब ।

शब्द-गौरव—गौरव या गारव २.२३९ अ ।

शब्द-ग्रहण संस्कार—सस्कार ४.१५० अ ।

शब्दचिंतामणि—इतिहास १.३४६ ब ।

शब्दनय—आगम १ २३४ अ, कषाय २ ४० अ, नय सामान्य २.५१४ ब, २ ५२० ब, नय सप्तक २ ५२६ ब, २.५२७ ब, २ ५२८ अ, नय (शब्द नय) २ ५३६ अ, २ ५३९ ब, २ ५४० अ, २ ५४१ अ, २.५४३ अ, निक्षेप २ ५९५ ब, २ ५९६ ब, समभिरूढ़ नय २.५४० अ, सप्तभगी ४ ३२३ ब ।

शब्दनय-उपक्रम—उपक्रम १ ४१६ ब ।

शब्द-नयाभास—नय २.५३७ अ ।

शब्द-प्रमाण—आगम १ २२८ अ, प्रमाण १ २३४ अ ।

शब्द-ब्रह्म—ब्रह्म ३ १८८ अ ।

शब्दभेद—नय (अर्थभेद) २.५३९ अ, २ ५४१ अ, मतिज्ञान (अर्थभेद) ३ २५४ अ ।

शब्दरत्नप्रदीप—इतिहास १ ३४७ ब ।

शब्द-लिंगज—श्रुतज्ञान ४ ५९ अ, ४ ६० ब, ४.६७ अ ।

शब्दवान्—४.४ ब, नाभिगिरि—निर्देश ३.४५२ ब, नाम-निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४५२ ब, वर्ण ३.४७७ ।

शब्दसंक्रमण—शुक्लध्यान ४ ३३ अ ।

शब्द-समय—ज्ञान २.२६९ अ, समय ४.३२८ अ ।

शब्दांभोज भास्कर—इतिहास १.३५३ अ ।

शब्दाकुलित—आलोचना का दोष १ २७७ ब ।

शब्दाद्वैत—अद्वैतवाद १.४७ ब, एकात १.४६५ ब।
शब्दानुपात—४.४ ब।
शब्दानुशासन—इतिहास १ ३४२ अ, १ ३४३ ब, १.३४७ ब।
शब्दार्थ—आगम—गौगता १ २३४ ब, देशकाल १ २३४ अ।
शब्दावतार—इतिहास १ ३४० ब।
शम—४.४ ब।
शयन—कृतिकर्म २ १३५ ब, कायक्लेश २ ४६ ब।
शयनतप—२.४७ ब।
शयनासन शुद्धि—वसतिका ३.५२८ अ।
शय्या—सल्लेखना ४ ३९० ब।
शय्याधर—भिक्षा ३.२३१ ब।
शय्या परिषह—४ ४ ब, चर्या २.२७९ अ, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ।
शय्या व संस्तर शुद्धि—शुद्धि ४.४१ अ।
शर—कुरुवश १.३३५ ब।
शरण—४ ५ अ, अनुप्रेक्षा १.७३ अ, १ ७९ अ, द्रव्य (अनन्य शरण) २.४६१ अ।
शरद्वीप—कुरुवंश १ ३३५ ब।
शरभरथ—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।
शरावती—४ ५ अ।
शरीर—४.५ अ, अंगोपाग १.१ ब, अध.कर्म १ ४८ ब, आकार १.४७१ ब, कर्म २.२९ अ, काम २.४४ अ, कायोत्सर्ग ३.६२० अ, कारक २.५०, केवली २.१५८ ब, क्षीणकषाय २ १८७ अ, चक्रवर्ती ४.१० ब, ४ ११ अ, जीव २ ३३८ अ, तीर्थंकर २ ३७३ ब, देव २ ४४६ अ, नरक २.५७३ ब, निगोद (क्षीण-कषाय) २.१८७ अ, न्याय २.६३३ ब, पिंडस्थ ध्यान ३.५८ अ, लेश्या (वर्ण) ३.४२५ अ, व्युत्सर्ग तप ३.६२० अ, षट्कालिक वृद्धि-हानि २ ९३, सौक्ष्म्य-स्थौल्य ४ ६, १ १५७ ब।
शरीर—प्ररूपणा—शरीरबद्ध प्रदेशवर्गणा—सत् ४.६, अल्पबहुत्व १ १५७। सौक्ष्म्य-स्थौल्य—सत् ४.६, अल्पबहुत्व १ १५७ ब। पंच शरीर स्वामित्व—सत् ४ ७, अल्पबहुत्व १ १४२ अ, १ १५८ ब, शरीरस्थान स्वामित्व—सत् ४ ७।
शरीर-कृशीकरण—उपकार १.४१५ अ, कायक्लेश तप २ ४७ अ, सल्लेखना ४.३८२ ब।
शरीरत्याग—व्युत्सर्ग तप ३.६१९ अ, सल्लेखना ४.३९२ ब।
शरीरत्रिक—उदय १.३७४ ब।
शरीर-नामकर्म-प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३ ९५ अ, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७, बधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगीभग १.४०४। संक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १.१६९।
शरीर-निर्मलता—अर्हतातिशय १.१३७ ब।
शरीर-निर्माण क्रम—जन्म २.३१३ अ।
शरीरनिर्वर्तनाधिकरण—अधिकरण १ ४९ ब।
शरीर-निर्वृत्तिस्थान—पर्याप्ति ३ ४२ अ।
शरीर-पर्याप्ति—पर्याप्ति ३.४१ अ, योग ३ ३८० अ।
शरीर-पर्याप्ति काल—काल २ ८१ अ, उदयस्थान १.३९३-३९७।
शरीर-प्रमाण जीव—जीव २.३३८ अ।
शरीर-बंध—बध ३.१७० ब।
शरीर-बंधन गुणछेदना—छेदना २ ३०६ ब, २ ३०७ अ।
शरीर-बकुश—बकुश ३.१८० अ।
शरीरबद्ध प्रदेश—अल्पबहुत्व १.१५७।
शरीरबद्ध वर्गणा—अल्पबहुत्व १.१५६।
शरीर-रक्षा—आहार १ २९२ ब।
शरीर-वर्गणा—वर्गणा ३ ५१६ ब, अल्पबहुत्व १.१५७।
शरीर-वियोग—हिंसा ४.५३६ ब।
शरीर-विस्रसोपचय—अल्पबहुत्व १ १४२ अ, १.१५७।
शरीर-शोषण—उपकार १ ४१५ अ, कायक्लेश तप २.४७ अ।
शरीर सल्लेखना—४.३८२ ब।
शरीरसघात—संघात ४.१२५ अ।
शरीरसघात नामकर्म—सघात ४.१२४ अ।
शरीर-सस्कार—साधु ४.४०५ अ।
शरीर-स्वामित्व—अल्पबहुत्व १.१५८ ब।
शरीरी—जीव २ ३३३ ब।
शर्करा—अनुभाग १.९० ब।
शर्कराप्रभा—४.८ ब, नरक पृथिवी अपरनाम वंशा—निर्देश २,५७६ अ, पटल २.५७९ ब, इन्द्रक श्रेणीबद्ध प्रकीर्णक २.५७८, २.५७९, विस्तार २.५७६, २.५७८, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, अवधिज्ञान १.१९८, आयु १.२६३।
शर्कराप्रभा (प्ररूपणा)—बंध ३.१०१, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७६, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा

१ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८१, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगीभग १ ४०६ ब। सत् ४.१६९, संख्या ४ ९५, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४ ४७९, काल २ १०१, अतर १ ८, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४४।

शर्करावती—४.८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

शर्मा—तीर्थंकर विमलनाथ ३ ३८०।

शलाका—४ ८ ब, सख्या ४ ९२ अ।

शलाकाकुड—असंख्यात १ २०६ ब।

शलाका-निष्ठापन—भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ।

शलाकापुरुष—४.८ ब, आयुबध योग्य परिणाम १ २५६ अ, कुलकर २.१३० ब, गज २ २११ ब, जन्म (गति अगति) २ ३२१, २ ३२२, त्रिपृष्ठ २.४०० अ, मरण ३.२८४ ब।

शल्य—४.२६ अ, ४.२७ अ, ध्याता २.४९३ अ, व्रती ३ ६२९ अ।

शल्यरहित—व्रत प्रतिमा ३.६२८ ब।

शवविसर्जन—सल्लेखना ४.३९६ ब।

शवशय्यासन तप—कायक्लेश २.४७ ब।

शशांक—कुरुवश १ ३३५ ब, तीर्थंकर जयकीर्ति २.३७७। यदुवश १.३३७।

शशांकमुख—विद्याधर वश १.३३९ अ।

शशि—इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ।

शशिन—यदुवश १ ३३७।

शशिप्रभ—४.२७ अ, चक्रवर्ती ४ १० अ, यदुवश १ ३३७, विद्याधरनगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ।

शशिप्रभा—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

शहद—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०२ ब, श्रावक ४ ५० ब।

शहाबुद्दीन—आशाधर १ २८० ब।

शांतकर—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अकन ४.५१५, देव आयु १.२६८।

शांत कषाय—बंधक ३ १७३ अ।

शांतनु—४.२७ अ, कुरुवश १ ३३५ ब, १.३३६ अ, यदुवश १.३३६, १ ३३७।

शांतभद्र—४.२७ अ।

शांतरिक्ष—४.२७ अ।

शांति—उपेक्षा १.४४४ ब, चक्रवर्ती ४.१० अ।

शांतिकीर्ति—४ २७ अ, नदिसघ १ ३२३ अ, इतिहास १.३२९ ब, १ ३३३ ब।

शांतिचक्र पूजा—इन्द्रनदि १.२९९ ब।

शांतिचक्र यंत्रोद्धार—यत्र ३ ३६२।

शांतिचद्र—कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ।

शांतिनाथ—४ २७ अ, अपराजित १ ११९ अ, कुरुवश १.३३५ ब, १.३३६ अ, तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३७९-३ ९१।

शांतिनाथचारित्र—इतिहास १ ३४३ अ, १ ३४५ ब।

शांतिनाथ पुराण—४ २७ अ, असग कवि १ २०७ ब, इतिहास १ ३४७ अ।

शांतिनाथ स्तोत्र—स्तोत्र ४.४४९ अ।

शांतिप्रभ—कुरुवश १ ३३५ ब।

शांति यंत्र—यत्र ३.३६१।

शांतिवर्धन—कुरुवश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ।

शांतिविधान यंत्र—यत्र ३.३६३।

शांतिषेण—कुरुवश १ ३३५ ब, इतिहास १ ३२९ अ।

शांतिसागर—४.२७ ब, इतिहास १ ३३४ ब।

शांतिसेन—४ २७ ब। पुन्नाटसघ १.३२७ अ, लाडबागड़ सघ—१ ३२७ ब, इतिहास १.३३० अ।

शांत्यष्टक—४ २७ ब, इतिहास १.३४० ब।

शात्याचार्य—४ २७ ब, श्वेताबर ४.७७ अ, १.परि०/२ ४, इतिहास १ ३३० ब, १ ३४३ अ।

शार्ग—नारायण ४.१९ ब।

शाकटायन न्यास—४.२७ ब, इतिहास १ ३४३ अ, टीका १ ३४४ ब।

शाकटायन पाल्यकीर्ति—इतिहास १ ३३० अ, १ ३४२।

शाकटाल—मगध देश इतिहास १ ३१० ब।

शाकल्य—४ २७ ब, अज्ञानवाद १ ३८ ब।

शाखा—४ २७ ब।

शातंकर—४ २७ ब।

शाती—नाभिगिरि का रक्षक देव ३.४७१ अ।

शाप—४ २७ ब।

शामकुड—४ २७ ब, इतिहास (कुदकुद) १.३२८ ब, १ ३४० ब।

शारीरिक दु.ख—दु ख २ ४३४ ब।

शाल—तीर्थंकर धर्मनाथ, सभवनाथ २.३८३, हरिवंश १ ३४० अ।

शालगुहा—४ २८ अ, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

शालि—तीर्थंकर धर्मनाथ, मल्लिनाथ २.३८३।

शालिग्राम—अग्निभूति १ ३६ ब।

शालिभद्र—४.२८ अ, अनुत्तरोपपादकदशाग १.७० ब।

शालिवाहन—४ २८ अ, भृत्यवंश १.३१४। इतिहास १ ३११ अ, १ ३१४।

शालिवाहन संवत्—१ ३०९ ब।

शालिसिक्थ मत्स्य—समूर्च्छन ४.१२८ अ।

शाली (देव)—भावनदेव—आयु १ २६५, अवस्थान ३.६१३ अ।
शाल्मली वृक्ष—४.२८ अ, तीर्थंकर सभवनाथ २ ३८३। वृक्ष—निर्देश ३.४५८-४५९, ३.५७८ ब, अवस्थान ३ ४५६ ब, विस्तार ३.४५८ अ, अंकन ३.४४४, ३ ४५७, चित्र ३ ४५८ ब, वर्ण ३ ४७७, वृक्ष ३.५७८ ब।
शाल्मली वृक्षस्थल—४.२८ अ, अवस्थान ३.४५८ अ, अंकन ३ ४५७, चित्र ३.४५९, वर्ण ३ ४७७, देव प्रासादो का विस्तार ३ ६१५। बौद्धाभिमत नरकस्थित अय.शाल्मली वन ३.४३४ ब, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब।
शाश्वत उपादान—उपादान १.४४३ ब।
शाश्वत जिनस्तुति—स्तोत्र ४.४४९ अ, इतिहास १ ३४१ अ।
शाश्वत सुख—सूक्ष्म सापराय ४ ४४१ अ।
शाश्वतानत—अनत १ ५५ ब।
शाश्वतासख्यात—असख्यात १ २०५ ब।
शासन—४ २८ अ, आगम १.२२७ ब।
शासनविवस—महावीर ३ २९१ अ।
शासन देव—विनय ३ ५५३ अ।
शास्त्र—४.२८ अ, अग्र (श्रुत) १ ३९ अ, अध्यात्म १.५४ अ, आगम १.२२७-२३९, चैत्य-चैत्यालय २.३०१ अ, पूजा ३ ७७ अ। शब्दलिगज श्रुतज्ञान ४.६७ अ, स्वाध्याय ४ ५२३ अ।
शास्त्रज्ञान—ज्ञान २ २६७ ब, २.२६८ अ, (चारित्र) २ २६७ ब, मिथ्यादृष्टि २.२६५ ब, २.२६७ ब, श्रुतज्ञान (द्रव्य) ४.५९ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५६ अ।
शास्त्र-तात्पर्य—ज्ञान २.२६९ अ।
शास्त्रदान—अपवाद मार्ग १ १२२ अ, दान २.४२३ अ।
शास्त्रदीपिका—मीमासादर्शन ३.३११ अ।
शास्त्र-पठन—सिद्धातशास्त्र के पठन का अधिकार २.४८ अ, स्वाध्याय ४ ५२४ ब, ४.५२५ अ।
शास्त्रवार्तासमुच्चय—४.२८ ब, इतिहास १.३४४ ब।
शास्त्रसारसमुच्चय—४.२८ ब, इतिहास १.३४४ ब।
शास्त्राध्ययन—श्रावक का अधिकार २.४८ अ, स्वाध्याय ५.५२४ ब, ४.५२५ अ।
शास्त्रार्थ—वाद ३ ५३३ ब।
शाह ठाकुर—इतिहास १.३३३ ब, १.३४५ अ।
शिकार—आखेट १.२२५ अ।
शिक्षक—तीर्थंकर संघ २.३८६।
शिक्षा—४.२८ ब, सल्लेखना ४ ३९० ब।
शिक्षाकाल—काल २.८० ब।
शिक्षागुरु—गुरु २.२५२ अ।
शिक्षाव्रत—४.२८ ब।
शिखडी—४ २८ ब।
शिखरनी—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ ब।
शिखरी—४.२८ ब, वर्षधर पर्वत—निर्देश ३ ४४६ ब, नामनिर्देश ३.४७१, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७, वैदिकाभिमत शृगी पर्वत ३.४३१ ब।
शिखरी (कूट)—पद्म आदि ह्रदो के कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३.४५४। शिखरी पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४ के सामने।
शिखा—क्षुल्लक २ १८८ ब।
शिखिकंठ—भावि शलाकापुरुष ४.२६ अ।
शिथिल—साधु ४.४०७ ब।
शिथिल श्रद्धानी—सम्यग्दर्शन ४.३७१ अ।
शिथिलाचारी—साधु ४.४०७ ब।
शिप्रा—४ २८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
शिर.कंप—४.२८ ब।
शिरोनति—कर्म २ २६ अ, कृतिकर्म २.१३३ ब, नमस्कार २ ५०६ अ, वदना ३.४९४ ब।
शिरोमणि दास—इतिहास १.३३३ ब।
शिला—४.२९ अ।
शिलामय आसन—कृतिकर्म २.१३५ ब।
शिलामय संस्तर—सस्तर ४.१५३ ब।
शिलायुध—यदुवंश १.३३७।
शिलारेखा—कषाय (क्रोध) २ ३८ अ।
शिल्पकर्म—सावद्य ४.४२० ब।
शिल्पकर्मार्य—आर्य १.२७५ अ, सावद्य ४.४२१ अ।
शिल्पिसंहिता—४.२९ अ, इतिहास १.३४२ ब।
शिल्पि डिक्कार—इतिहास १.३४० अ।
शिवकर—४.२९ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब।
शिव—४.२९ अ। तीर्थंकर २.३७७, ध्यान २.४९९ अ, लवण-सागर के पर्वतों का रक्षक देव ३.४७४ ब।
शिवकुमार—४.२९ अ।
शिवकुमार बेला व्रत—४.२९ अ।
शिवकोटि—४.२९ अ, इतिहास—प्रथम १.३२८ अ, १.३४० अ।
शिवगुप्त—४.२९ ब, चक्रवर्ती ४.१० ब। पुन्नाट संघ

१.३२७ अ, इतिहास १.३२८ अ।
शिवघोष—बलदेव ४.१७ ब।
शिवतत्त्व—४.२९ ब।
शिवदत्त—४.२९ ब, मूलसंघ १.३१७, १ परि०/२.६, इतिहास १ ३२८ ब।
शिवदेव—४.२९ ब।
शिवदेवी—४.२९ ब, तीर्थंकर नेमिनाथ २.३८०।
शिवनद—यदुवंश १ ३३७।
शिवनंदि—नदिसंघ १.३२३ ब।
शिवभूति—श्वेतांबर ४.७८ अ-ब, ४.७९ ब।
शिवमंदिर—४ २९ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ-ब।
शिवमत—एकांत (वैशेषिक) १.४६५ ब।
शिवमार—४.२९ ब।
शिवमृगेश वर्म—४ २९ ब।
शिवलाल—४.२९ ब। इतिहास १.३३४ ब।
शिवशर्म सूरि—इतिहास १ ३२९ अ, १.३४१ अ।
शिवसागर—४.२९ ब, इतिहास १.३३४ ब।
शिवस्कंद—४.२९ ब, इतिहास १ ३२८ ब।
शिवा—वैमानिक इन्द्रों की ज्येष्ठा देवी ४.५१३ ब, ४ ५१४ अ।
शिवाकर—नारायण ४ १८ ब।
शिवादित्य—वैशेषिक दर्शन ३ ६०८ अ।
शिवार्य—४.२९ ब, इतिहास (शिवकोटि) १ ३२८ अ, १.३४० अ।
शिवि—यदुवंश १.३३६।
शिविका—४.३० अ।
शिशुनाग—मगधदेश इतिहास १.३१२।
शिशुनाग वंश—मगधदेश इतिहास १.३१२।
शिशुपाल—४.३० अ, कल्कीराज २ ३० ब, कल्कीवंश १ ३११ ब, १.३१५ अ।
शिष्य—४.३० अ, आलोचना १.२७८ अ, उपदेश १.४२५ अ-ब, गुरु २ २५२ ब।
शीत—४.३० अ, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ. योनि ३.३८७ अ। नरकपटल—निर्देश २.५७६ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।
शीतयुद्ध—४.३० अ। मनुष्यलोक ३.२७५।
शीतपरिषह—४.३० अ, परिषह ३.३३ ब, ३.३४ अ।
शीतयोग—कायक्लेश २ ४७ ब, २.४८ अ।
शीतलनाथ—४.३० अ, तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३७९-३९१।
शीतलप्रसाद—४ ३० अ, इतिहास १ ३३४ ब।
शीतल वायु—अर्हतातिशय १.१३७ ब।
शीता—रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ।
शीतोपचार—अपवाद मार्ग १.१२२ अ।
शीतोष्ण—योनि ३ ३८७ अ।
शीर्ष-प्रकंपित—काल का प्रमाण २.२१६ ब।
शीर्ष-प्रकंपित—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।
शीर्ष-प्रहेलिका—काल का प्रमाण २.३१६ अ-ब।
शीर्ष प्रहेलिकांग—काल का प्रमाण २.२१६ अ-ब।
शील—४.३० अ उपयोग (शुभ) १.४३४ ब, गुण २.२४० अ, ब्रह्मचर्य ३ १९० अ, ३.१९३ अ, शुभोपयोग १.४३४ ब, सावद्यकर्म ४.४२१ ब।
शीलकथा—४ ३१ अ, इतिहास १ ३४८ अ।
शीलचंद—नदिसंघ भट्टारक १.३२३ ब।
शीलपताका—इतिहास १ ३४७ ब।
शीलपाहुड—४ ३१ अ, इतिहास १.३४० ब, वच० १.३४८ अ।
शीलव्रत—४ ३१ अ, शील ४.३० अ।
शीलव्रतानतिचार—शील ४ ३० ब।
शीलव्रतेष्वनतिचार—शील ४.३० ब।
शीलवृद्ध—सगति ४ ११९ अ।
शीलसप्तमी व्रत—४.३१ अ।
शुंभा—४.३१ अ।
शुक्र—महा शुक्रेंद्र का यान ४ ५११ ब।
शुकसम श्रोता—उपदेश १ ४२५ ब, श्रोता ४.७४ ब।
शुकाढ्या—असुरेंद्र की अग्र देवी ३.२०९ अ।
शुक्ति—४.३१ अ।
शुक्तिमती—४ २१ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, (नगर) ३ २७६ अ।
शुक्र—४ ३१ अ, औदारिक शरीर १.४७१ ब, १ ४७२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
शुक्र (ग्रह)—४.३१ अ, ग्रह २ २७४ अ, ज्योतिष विमान—निर्देश २ ३४८ अ, आकार २ ३४७, किरणे तथा वाहक देव २ ३४७, विस्तार २ ३५१ ब, अंकन २ ३४७, चित्र २ ३४७। देवआयु १ २६६ अ, इन्द्र २.३४५ ब। आधुनिक मत ३.४३६ अ, वैदिकाभिमत ३ ४३२ ब।
शुक्र (देव)—देव—निर्देश ४ ५१० ब, अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १.२६८, आयु बंध के योग्य परिणाम १.२५८ ब। इन्द्र—निर्देश ४.५१ ब, दक्षिणेंद्र ४ ५११ अ, परिवार ४.५१२-५१

अवस्थान ४ ५२० ब, चिह्न आदि ४.५११ ब, विमान नगर व भवन ४ ५२०-५२१ ।

शुक्र (देव)—प्ररूपणा—बंध ३ १०२, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्व ४ २८२, सत्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भंग १.४०६ ब। सत् ४.१९२, संख्या ४ ९८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अंतर १.१०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।

शुक्र (स्वर्ग)—स्वर्ग—निर्देश ४ ५१४ ब, पटल ४ ५१८, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४ ५२०, दक्षिण विभाग ४ ५२१ अ, अवस्थान ४.५१४ ब, अंकन ४ ५१५ । स्वर्गपटल – निर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४.५१५ ।

शुक्लध्यान—४.३१ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, धर्मध्यान २.४८१ अ, ध्याता २ ४९२ अ, २ ४९३ ब, पद्धति ३ ९ अ, प्रतिक्रमण ३ ११७ ब, मोक्षमार्ग ३ ३२६ अ, विकल्प ३ ५२८ ब, शुद्धोपयोग १ ४३१ अ ।

शुक्लपक्ष—लवण सागर में जलवृद्धि ३ ४६० ब ।

शुक्ल लेश्या—कालावधि का अल्पबहुत्व १ १५९, लेश्या ३ ४२३ ब, आयुबंध १.२५९ अ। प्ररूपणा—बंध ३.१०७, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८४, उदयस्थान १ ३९३ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८४, सत्वस्थान ४ ३०१, ४.३०६, त्रिसंयोगी भंग १ ४०७ ब। सत् ४ २५१, संख्या ४.१०८, क्षेत्र २.२०६, स्पर्शन ४.४९०, काल २ ११६, अंतर १.१८, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५१ ब ।

शुचि—४.३८ अ, पिशाच जातीय व्यंतरदेव ३.५८ ब ।

शुचित्व—शुचि ४.३८ अ ।

शुचिदत्त—गणधर २.२१३ अ ।

शुचिशील—गणधर २.२१३ अ ।

शुतभुंग—४.३८ अ ।

शुद्ध—४.३८ अ, अनशन १.६६ अ, अनुभव १.८२ ब, १.८४ ब, १.८६ ब, आहार १.२९२ ब, उपयोग १ ८६ अ, तत्त्व २.३५३ अ, नय २.५५१ अ, परम ३.१३ अ, श्रुतज्ञान ४.६० अ। सापेक्षधर्म—अनेकांत १.१०९ अ, सप्तभंगी ४.३२३ ब ।

शुद्ध अर्थ-पर्याय—पर्याय ३.४९ ब ।

शुद्ध आहार—अपवाद मार्ग १ १२१ अ, आहार १ २८५ अ ।

शुद्ध उपयोग—उत्सर्ग मार्ग १.१२१ अ, उपयोग १.४३० ब-१.४३१ ब, (गुणस्थान) १.४३४ अ, पद्धति ३ ८ ब ।

शुद्ध-उपलब्धि—उपलब्धि १.४३५ ब ।

शुद्धचारित्र—धर्मध्यान (पंचमकाल) २.४८४ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब ।

शुद्धचेतना—चेतना २ २९७ अ ।

शुद्धता—उदयाभाव १.३६६ ब ।

शुद्धद्रव्य—नय २ ५३१ अ-ब ।

शुद्धद्रव्य नैगमनय—नय २ ५३१ अ ।

शुद्धद्रव्य-नैगमाभास—नय २ ५३२ अ ।

शुद्धद्रव्य-व्यंजनपर्याय नैगमनय—नय २.५३१ ब ।

शुद्धद्रव्य-व्यंजनपर्याय नैगमाभास—नय २ ५३२ अ ।

शुद्धद्रव्यार्थपर्याय नैगमनय—नय २ ५३१ ब ।

शुद्धद्रव्यार्थपर्याय नैगमाभास—नय २ ५३२ अ ।

शुद्धद्रव्यार्थिक नय—नय २ ५४३ ब, नय (संग्रह) २ ५३४ ब ।

शुद्ध ध्यान—ध्यान २.४९६ अ ।

शुद्ध नय—नय २.५२३ ब ।

शुद्ध निश्चयनय—नय २.५५३ ब ।

शुद्ध परिणाम—उपयोग १.४३४ ब, परिणाम ३.३१ ब ।

शुद्धपर्यायार्थिक नय—नय (ऋजुसूत्र) २ ५३५ अ ।

शुद्ध पारिणामिक भाव—उत्पादादि १.३५८ अ, गुण २ २४१ ब, २ २४२ ब, ध्येय २.५०१ ब, परम ३ १२ ब, पारिणामिक ३ ५५ अ, भव्य ३ २१४ अ, भाव ३.२१९ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, ३.३३७ ब, ३.३३८ अ ।

शुद्ध भाव—उपयोग १ ४३० ब, धर्म २.४६७ अ, पद्धति ३ ८ ब ।

शुद्धमति—४ ३८ ब, तीर्थंकर २.३७७ ।

शुद्ध सद्भूत नय—नय २ ५६० अ ।

शुद्धात्म ज्ञान—४.३८ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब ।

शुद्धात्म-दर्शन—४ ३८ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब ।

शुद्धात्म-द्रव्य—मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ ।

शुद्धात्म-पठन—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ ।

शुद्धात्म-संवित्ति—पद्धति ३ ९ अ ।

शुद्धात्म-स्वरूप—४ ३८ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब ।

शुद्धात्मा—तत्त्व २ ३५५ ब, ध्येय २ ५०१ ब, पद्धति ३ ९ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३५७ अ, ४.३५८ अ ।

शुद्धात्मानुभव—अनुभव १ ८६ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३९ अ, स्वरूपाचरण ४.५०९ अ ।

शुद्धात्मानुभूति—मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, ३.३३६ अ-ब, सामायिक ४.४१९ अ ।

शुद्धात्माभिमुख परिणाम—पद्धति ३ ८ ब।
शुद्धाद्वैत—वेदात ३ ६०१ अ।
शुद्धाभ देव—४ ३८ ब, तीर्थंकर २ ३७७।
शुद्धाशन—अपवाद १ १२१ अ, अनशन १ ६६ अ, तप २ ३६० अ।
शुद्धाशुद्धोपयोग—उपयोग १ ४३० ब।
शुद्धि—४ ३८ ब, आहार १.२८५ अ-ब, १ २८९ अ, आगम १ २२८ अ, उपयोग १.४३० ब, उभय शुद्धि १ ४४४ ब, द्रव्य क्षेत्रादि की शुद्धि (आगम) १ २२८ अ, भावशुद्धि (आहार) १ २८९ अ, विष्कुम्भ (उपयोग) १ ४३४ अ, सम्यग्ज्ञान (उभय शुद्धि) १ ४४४ ब।
शुद्धोदन—४ ४१ अ।
शुद्धोपयोग—१.४३० ब-४३१ ब, (गुणस्थान) १ ४३४ अ, चारित्र २ २८९ अ-ब, धर्म २ ४६९ अ, धर्मध्यान २.४८३ अ, पद्धति ३ ८ ब, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, संवर ४ १४३ ब, हिंसा (अशुद्धोपयोग) ४ ५३२ अ।
शुद्धोपयोगी—धर्म २ ४६९ ब, साधु ४.४०३ अ, ४ ४०७ ब।
शुभंकर—कुरुवंश १ ३३५ ब, १.३३६ अ।
शुभ—४ ४१ अ, अनुभव १ ८६ अ, उपयोग १.४३०-१ ४३५, उपशम १.४३७ अ, धर्म २ ४७२ ब, परिणाम ३ ३१ अ, प्रणिधान ३ ११५ अ, मनोयोग ३ २७७ ब, मोह ३ ३४० ब, योग ३ ३७७ अ, संयत ४ १३२ ब।
शुभ आस्रव—आस्रव १ २८२ ब, संवर ४ १४३ अ।
शुभ उपयोग—अपवादमार्ग १ १२० ब। उपयोग—१.४३०-१ ४३५, गुणस्थान १ ४३४ अ, धर्म १.४३३-४३४, विष्कुम्भ १ ४३४ अ। चारित्र २.२९० अ-ब, धर्म २ ४६६ ब, संवर ४ १४३ ब।
शुभ उपशम—उपशम १ ४३७ अ।
शुभकरण चिह्न अवधिज्ञान १ १९२ अ।
शुभकर्म—राग ३ ३९६ अ।
शुभ काययोग—काय २ ४६ अ।
शुभकीर्ति—४ ४१ ब, नंदिसंघ भट्टारक १ ३२३ ब। काष्ठासंघ १ ३२७ अ, इतिहास १.३३३ अ, १ ३४६ अ।
शुभचंद्र—४.४१ ब, शलाकापुरुष ४.२५ ब, प्रथम—नंदिसंघ १.३२४ अ, इतिहास १ ३३१ अ, १ ३४३ अ। द्वितीय—नंदिसंघ देशीयगण १.३२४ ब, १.३२५, इतिहास १.३३१ ब। तृतीय—इतिहास १ ३३१ ब। चतुर्थ—नंदिसंघ भट्टारक १ ३२३ ब, इतिहास १ ३३२ अ। पंचम—इतिहास १ ३३२ अ। षष्ठ—इतिहास १ ३३२ ब। सप्तम—१ ३३३ ब, १ ३४६ ब, १ ३४७ अ।
शुभ-तैजस-शरीर—तैजस २ ३९४ ब।
शुभ-तैजस-समुद्घात—तैजस २ ३९६ अ।
शुभध्यान—धर्मध्यान २ ४७८ अ, २ ४८२ अ।
शुभनदि—४.४१ ब, इतिहास १ ३२८ ब।
शुभ नामकर्म प्रकृति—पुण्य ३ ६० ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २.५८३, स्थिति ४ ४६६, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगी भंग १.४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६७ अ।
शुभ परिणाम—उपयोग १.४३१ ब, पुण्य ३.६० अ, ३ ६३ अ।
शुभ भाव—अनुप्रेक्षा १ ७८ ब, (चारित्र) १ ७८ ब, पुण्य ३ ६३ अ।
शुभ भावना—धर्मध्यान २ ४८२ ब।
शुभ योग—योग ३ ३७५ ब, संवर ४ १४२ ब।
शुभ लेश्या—लेश्या ३ ४२२ ब।
शुभ वचनयोग—वचन ३.४९८ ब।
शुभ विचार—सामायिक ४.४१७ ब।
शुभ स्वप्न—स्वप्न ४ ५०४ अ।
शुभा—विदेह नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।
शुभानुबंधी निर्जरा—अनुप्रेक्षा १.७५ ब, निर्जरा २ ६२२ ब।
शुभास्रव—आस्रव १.२८२ ब, संवर ४.१४३ अ।
शुभोपयोग—अपवाद मार्ग १ १२० ब। उपयोग—१.४३०-४३५, (अशुद्धोपयोग) १ ४३३ ब, (गुणस्थान) १.४३४ अ, (धर्म) १.४३४, (विष्कुम्भ) १.४३४ अ। चारित्र २ २९० अ-ब, धर्म २.४६६ ब, संवर ४.१४३ ब।
शुभोपयोगी—चारित्र २.२९३ ब, साधु ४.४०४ अ, ४ ४०७ ब।
शुभ्र—४.४२ अ।
शुभ्रपुर—मनुष्यलोक ३.२७६ अ।
शुम्भा—४.३१ अ।
शुष्क—४.४२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
शूकर—तीर्थंकर विमलनाथ २ ३७९।

शूद्र—आहारातराय १.२९ ब, प्रायश्चित्त ३.१६२ अ, भिक्षा ३.२३२ अ, ब्राह्मण ३.१९५ अ, वर्णव्यवस्था ३.५२५ ब।

शूद्र (कारू) – वर्णव्यवस्था ३.५२५ ब।

शूद्रवश - वर्णव्यवस्था ३ ५२४ अ।

शूद्रवर्ण—वर्णव्यवस्था ३.५२३ ब, ३.५२४ अ-ब।

शून्य—अगृहीत द्रव्य की सहनानी '०' २.२१९ अ।

शून्य—४.४२ अ, अनुभव १.८२ अ, जीव २.३३३ अ, ध्यान २ ४९९ ब, पदस्थ ध्यान ३ ७ अ, शुक्लध्यान ४.३३ अ।

शून्यघर—वसतिका ३ ५२७ ब।

शून्य दोष—कर्ता कर्म २ २२ ब।

शून्य ध्यान—धर्मध्यान २ ४८५ ब, शुक्लध्यान ४ ३२ ब।

शून्य नय—४ ४२ अ, नय २ ५२३ अ।

शून्य परिकर्माष्टक—गणित २ २२२ अ, २ २२४ ब।

शून्य वर्गणा—वर्गणा ३ ५१८ अ।

शून्यवाद—४ ४२ अ, एकांत १.४६५ ब, बौद्धदर्शन ३ १८७ ब।

शून्यागारावास—अस्तेय १.२१४ अ।

शूर—४.४२ अ, अंधकवृष्णि १.३० अ, कुरुवंश १.३३६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ, यदुवंश १ ३३६, हरिवंश १ ३४० अ।

शूरसेन—४ ४२ अ।

शृंखलित—४ ४३ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।

शृंगारमंजरी—इतिहास १.३४५ अ।

शृंगारार्णवचंद्रिका—इतिहास १.३४५ अ।

शेषवत् अनुमान—अनुमान १.९७ ब।

शेषवती—४ ४२ अ, रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३.४६८।

शैक्ष—४ ४२ अ।

शैल—४ ४२ अ, अनुभाग १.९१ ब, १ ९४ अ, कषाय (मान) २ ३८ अ, रत्नप्रभा ३ ३९१ अ, यदुवंश १.३३७।

शैलकर्म—कर्म २.२६ अ, निक्षेप २ ५९८ अ।

शैलघन श्रोता—उपदेश १ ४२५ ब।

शैलनगर—नारायण ४ १८ ब।

शैलभद्र—४ ४२ अ, यक्ष ३ ३६९ अ।

शैलराज—सुमेरु ४.४३७ अ।

शैला—४ ४२ अ।

शैलेशी अवस्था—शुक्लध्यान ४.३५ अ।

शैवदर्शन—४.४२ अ, एकांत १.४६५ ब, वेदांत ३.६०१ अ।

शोक—४.४२ अ, कषाय २.३५ ब, (रागद्वेष) २.३९ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१, हिंसा ४ ५३३ ब।

शोक—(कर्मप्रकृति)—४ ४२ अ, चारित्र मोहनीय ३.३४३ ब, ३ ३४४ ब, उपशम १ २६ अ, १ ४४० अ, उपशम की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१, क्षपणा १ २६ ब, २ १७९ ब, क्षपणा का कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१, चारित्र २ २९४ अ।

शोक (कर्मप्रकृति)—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति ४ ४६१, स्थिति सत्त्वस्थानों का अल्पबहुत्व १ १६५ ब, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६। बंध ३.९७, बंधस्थान ३ १०९, बंध की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१, उदय १.३७५, उदय की कालावधि का अल्पबहुत्व २.१२०, उदय की विशेषता १ ३७२ अ ब, उदयस्थान १.३८९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २९५, स्थिति सत्त्वस्थानों का अल्पबहुत्व १ १६५ ब, त्रिसंयोगी भंग १.४०१ ब। संक्रमण ४ ८५ अ अल्पबहुत्व १.१६८।

शोक वेदनीय—मोहनीय ३ ३४४ अ, ३.३४४ ब।

शोका—विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९ ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

शोधन—आहार (अन्नशोधन) १ २८५ ब।

शोधित—४ ४२ ब, गणित (व्यकलन) २.२२२ ब।

शोन—४.४२ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

शौच—४ ४२ ब, समिति (उपकरण) ४.३४१ अ।

शौचधर्म—४.४२ ब, गुप्ति २ २५०।

शौचोपकरण—समिति ४ ३४१ अ।

शौद्धोदनि—परवाद ३ २३ अ।

शौरपुर—४ ४३ ब, अंधकवृष्णि १ ३० अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।

शौरीपुर—तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३७९।

शौर्यपुर—यदुवंश १ ३३६।

श्मशान-निलय—मातंगवंश १ ३३६ ब।

श्मशानभूमि—वसतिका ३ ५२७ ब।

श्यामकुमार—४ ४३ ब।

श्याम द्वीप व सागर—तेरहवाँ द्वीप व सागर—निर्देश ३.४७० अ, विस्तार ३.४७८, अंकन ३.४४३, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २.३४८ ब, अधिपति देव ३.६१४।

श्यामा—वैमानिक इंद्रों की ज्येष्ठा देवी ४.५१४ अ, यदुवंश १.३३७।

श्रद्धा—प्रत्यय ३ १२५ ब, मोहनीय ३ ३४२ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५० ब, ४ ३५६ अ, ४.३५९ ब सम्यग्दृष्टि ४.३७८ ब।

श्रद्धान—४ ४३ ब, अदर्शन परिषह १ ४६ ब, अनुभव १ ८२ ब, आगमार्थ १ २३२ ब, उपदेश १.४२६ ब प्रायश्चित्त ३ १५८ ब, ३ १६२ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०२ ब, ३.३०५ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३४९ अ-ब, ४.३५२ ब, ४ ३५४ अ, ४ ३५६ अ-ब, ४ ३५९ अ, साधु ४ ४०६ ब।

श्रद्धान प्रायश्चित्त—प्रायश्चित्त ३ १५८ ब।

श्रद्धानवाद—एकात १ ४६५ ब।

श्रद्धानांश—मिश्र गुणस्थान ३ ३१० अ।

श्रद्धानाश्रद्धान—मिश्र गुणस्थान ३ ३१० अ।

श्रद्धावती—नाभिगिरि—निर्देश ३ ४५२ ब, नामनिर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४५२ ब।

श्रद्धावान्—४ ४६ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ ब।

श्रद्धावान् (कूट)—वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४।

श्रद्धावान् (पर्वत)—४.४६ ब। नाभिगिरि—निर्देश ३ ४५२ ब, नाम निर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८३ ३.४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७। वक्षारगिरि—निर्देश ३ ४६० अ, नाम निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७।

श्रमण—४ ४६ ब, अनगार १.६२ अ, अनुभव १.८६ अ, साधु ४.४०६ अ, ४.४०७ ब, ४ ४१० अ। विशेष दे० साधु।

श्रमणशय्या—व्युत्सर्ग ३.६२१ अ।

श्रवण—आहारान्तराय १ २९ अ, ग्रह २ २७४ अ, तीर्थंकर श्रेयास तथा मुनिसुव्रतनाथ २.३८०, नक्षत्र २.५०४ ब।

श्रामण्य—परिग्रह ३.२५ ब।

श्रावक—४ ४६ ब, अनुभव १.८४-८६ अ, आहारांतराय १ २८ अ, उपकार १.४१६ अ, कायक्लेश २.४८ अ, क्रिया २ १७४ अ-ब, २.१७५ अ, तीर्थंकर संघ २.३८८, पूजा ३ ७५ अ, बौद्ध दर्शन ३ १८६ ब।

श्रावकसंघ—कल्की २.३१ ब।

श्रावकसूत्र—यज्ञोपवीत ३.३६९ ब।

श्रावकाचार—४.५२ ब, इतिहास—(धर्मरत्नाकर) १ ३४३ अ, आगम परम्परा १ ३४३ ब।

श्रावकाचार सारोद्धार—इतिहास १ ३४५ ब।

श्रावणद्वादशी व्रत—४ ५२ ब।

श्रावस्ती—तीर्थंकर सभवनाथ २ ३७९, नारायण ४ १८ ब, प्रतिनारायण ४ २० ब।

श्राविका—उपकार १ ४१६ अ, तीर्थंकर सघ २.३८७।

श्रिति—४ ५२ ब, सल्लेखना ४.३९० ब।

श्री—४ ५३ अ। पद्मद्रह की देवी—निर्देश ३.४५३ ब, परिवार ३.६१२ अ, अवस्थान ३ ६१४ अ, अंकन ३.४०३, भवन विस्तार ३ ६१५ रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६८, ३.४६९। हिमवान पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४ के सामने।

श्रीकंठ—४ ५३ अ, भावि शलाकापुरुष ४ २६ अ, वानरवश १.३३८ ब।

श्रीकटन—४.५३ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

श्रीकल्प—४.५३ अ। काल का प्रमाण २ २१६ ब, २.२७ अ।

श्रीकांत—भावि शलाकापुरुष ४ २५।

श्रीकांता—४.५३ अ, तीर्थंकर कुंथुनाथ २ ३८०, सुमेरु के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३.४९०, ३ ४९१, अकन ३.४५१, चित्र ३ ४५१।

श्रीकूट—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

श्रीचंद्र—४ ५३ अ, कुरुवंश १.३३५ ब, १ ३३६ अ, चक्रवर्ती ४.१६ अ, भावि शलाकापुरुष ४.२५ ब।

श्रीचंद्र—४.५३ अ, नन्दिसंघ भट्टारक १ ३२३ ब, १ ३२४ अ। इतिहास १.३३१ अ, १ ३३३ अ, १ ३४३ ब, १.३४६ ब।

श्रीचंद्रा—सुमेरु के वनों की पुष्करिणी—निर्देश ३ ४५० अ, नामनिर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४९०, ३.४९१, अकन ३ ४५१, चित्र ३ ४५१।

श्रीदत्त—४.५३ अ, तीर्थंकर २.३७७।

श्रीदत्त—४.५३ अ, मूलसंघ १ ३१७, परि०/२.६, इतिहास—प्रथम १.३२८ ब, द्वितीय १.३२९ अ, ब।

श्रीधर—४ ५३ अ, तीर्थंकर २ ३७७, पुष्कर सागर का देव ३.६१४, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ, वैशेषिक ६०७ ब।

श्रीधर—४ ५३ अ, नन्दिसंघ देशीय गण १ ३२४ ब।

इतिहास—प्रथम १ ३२९ ब, १ ३४२ अ। द्वितीय १ ३३० ब, १.३४४ अ। तृतीय १.३३०, १.३४४ अ। चतुर्थ १ ३३१ ब, १ ३४५ ब। पचम १.३३१ ब। षष्ठ १ ३३२ अ। सप्तम १ ३३२ ब। अष्टम १.३३३ अ।

श्रीधरा—४ ५३ अ।

श्रीधर्म—तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ २ ३७८।

श्रीध्वज—यदुवश १ ३३७।

श्रीनंदन—४ ५३ अ।

श्रीनंदि—.४५३ ब, नदिसघ भट्टारक १.३२३ ब। देशीय गण १ ३२५, इतिहास १ ३३१ अ।

श्रीनदि तटगच्छ—एकात (जैनाभासी संघ) १.४६५ अ।

श्रीनाथ—४ ५३ ब।

श्रीनिकेत—४ ५३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

श्रीनिकेतन—३ ५४५ ब।

श्रीनिचय—४.५३ ब, पद्म आदि द्रहो के कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४५४।

श्रीनिलया—सुमेरु के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४९०, ३ ४९१, अकन ३ ४५१, चित्र ३ ४५१।

श्रीनिवास—४ ५३ ब, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ।

श्रीपर्वत—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

श्रीपाल—४ ५३ ब। पचस्तूप संघ १.३२६ ब, इतिहास १.३२९ ब, द्राविड सघ १ ३२०।

श्रीपाल-आख्यान—इतिहास १ ३४७ अ।

श्रीपालचरित—४ ५३ ब, इतिहास १.३४६ अ-ब, १ ३४७ अ-ब, १.३४८ अ।

श्रीपालदेव—द्रविडसघ १ ३२० अ।

श्रीपाल वर्णी—४ ५४ अ।

श्रीपुर—४.५४ अ, चक्रवर्ती ४ १० ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

श्रीपुर-पार्श्वनाथस्तोत्र—इतिहास १ ३४१ ब।

श्रीपुरुष—४ ५४ अ।

श्रीप्रभ—४ ५४ अ, पुष्कर सागर का देव ३.६१४, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

श्रीबल्लभ गोविंद—राष्ट्रकूट वश १.३१५ ब।

श्रीभद्र—४.५४ अ, तीर्थंकर २ ३७७।

श्रीभद्रा—४ ५४ अ, सुमेरु के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३.४५३ ब, नामनिर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४९०, ३.४९१, अकन ३ ४५१, चित्र ३ ४५१।

श्रीभूति—भावि शलाकापुरुष ४ २५ अ।

श्रीभूषण—४.५४ अ, नंदिसंघ भट्टारक १.३२३ ब, १.३२४ अ, इतिहास १ ३३३ ब, १ ३४७ अ।

श्रीमंडप—समवसरण ४ ३३० अ।

श्रीमडप भूमि—४ ५४ अ, समवसरण ४ ३३१ अ।

श्रीमती—४ ५४ अ, कुलकर ४.२३, तीर्थंकर कुथुनाथ २ ३८०, वैमानिक इद्रो की ज्येष्ठा देवी ४ ५१४ अ।

श्रीमन्यु—४.५४ अ।

श्रीमहिता—४ ५४ अ, सुमेरु के पर्वत के वनो की पुष्करिणी—निर्देश ३ ४५३ ब, नामनिर्देश ३ ४७३, विस्तार ३ ४९०-३ ४९१, अकन ३.४५१, चित्र ३.४५१।

श्रीमाधव—मीमांसादर्शन ३ ३११ अ।

श्रीराधावल्लभ—वैष्णवदर्शन ३.६०९ अ।

श्रीरुह—तीर्थंकर युगमधर २ ३९२।

श्रीवंश—४ ५४ अ, इतिहास १.३३९ ब।

श्रीवत्स—वैशेषिक दर्शन ३ ६०७ अ।

श्रीवत्समित्रा—गजदत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, भवस्थान ३ ६१४।

श्रीवर्द्धन—हरिवश १ ३४० अ।

श्रीवर्मा—४.५४ अ।

श्रीवल्लभ ४ ५४ अ।

श्रीवसु—कुरुवश १ ३३५ ब।

श्रीविजय—४.५४ ब।

श्रीवृक्ष—४ ५४ ब। कुडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३ ४७५ ब, अकन ३ ४६७। महेद्र का यान ४ ५११ ब। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६९। हरिवश १.३४० अ।

श्रीव्रत—कुरुवश १ ३३५ ब।

श्रीशैल—४ ५४ ब।

श्रीष—तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ २ ३८३।

श्रीषेण—४ ५४ ब, अच्युत १ ४१ अ, भावि शलाकापुरुष ४ २५। सेनसघ १ ३२६ अ।

श्रीसंचय—४ ५४ ब, पद्म आदि द्रहो का कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३.४८३, अकन ३ ४५४।

श्रीसंप्रदाय—वैष्णवदर्शन ३ ६०९ अ।

श्रीसौध—४ ५४ ब, विद्याधरनगरी ३ ५४५ ब।

श्रीहर्म्य—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

श्रीहर्ष—४ ५४ ब, वेशात ३ ५९५ ब।

श्रुत—अग्र १ ३९ अ, अवर्णवाद १.२०१ अ, आत्मा १ २४४ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०१ अ, जन्म (गति-अगति) २ ३२२ अ, तत्त्व २.३५३ अ। श्रुतकेवली ४ ५६ अ, श्रुतज्ञान ४ ५८ ब, ४.५९ अ।

श्रुतकीर्ति—४ ५४ ब, नदिसघ देशीयगण १ ३२५, नदिसंघ

भट्टारक १ ३२३ ब, १ ३२४ अ। इतिहास १ ३३१ अ-ब, १ ३३२ ब, १ ३४६ ब।

श्रुतकेवली—४ ५४ ब, अनुभव १ ८६ अ, आगम १ २३८ ब, ध्याता २ ४९२ अ-ब, श्रुतकेवली ४ ५७ अ। मूलसंघ १.३१६, १ परि०/२ २, अपराजित १ ११९ अ।

श्रुतगुरु—गुरु २ २५२ अ, नमस्कार २ ५०५ ब।

श्रुतज्ञान—४ ५७ अ, अतिचार १ २२८ अ, अनुभव १ ८३, अनुमान १ ९७ ब, अर्थापत्ति १ १३६ अ, अवधिज्ञान १ १८९ अ, आगम १ २२७-२३९, उपमान १ ४२८ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब, केवलज्ञान (अनुभव) १.८३, तत्त्व २ ३५३ अ, पद ३ ५ ब, परोक्ष ३ ३९ अ, १ ८३ ब, मन ४ ६० ब, मनःपर्यय ३ २६८ ब, श्रुतकेवली ४ ५६ अ, संज्ञी ४ १२३ अ, स्वाध्याय ४ ५२५ अ, स्वामित्व (जीवसमास) १ २६१।

श्रुतज्ञान (प्ररूपणा)—बंध ३ १०५, बंधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८३, उदयस्थान १ ३९३, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३००, ४ ३०५, त्रिसंयोगीभंग १ ४०७। सत् ४ २३५, संख्या ४ १०६, क्षेत्र २ २०४, स्पर्शन ४ ४८८, काल २ ११३, अंतर १ १५, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १ १५०।

श्रुतज्ञान उपक्रम—१ ४१६ ब।

श्रुतज्ञान व्रत—४ ७० ब।

श्रुतज्ञानसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५४ अ।

श्रुतज्ञानावरण—ज्ञानावरण—निर्देश २ २७१ अ, आबाधा १.२४९ अ, मोहनीय ३ ३४२ अ, वर्गणा ३ ५१७ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २.२७१ अ, स्थिति ४ ४६०, अनुभाग १ ९४ ब, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९४, त्रिसंयोगी भंग १.३९९। संक्रमण ४ ८४ ब, अल्पबहुत्व १ १६८।

श्रुतज्ञानी—अनुभव (केवलीसम) १ ८३ ब।

श्रुतग्रंथकृति—ग्रंथ २ २७३ ब।

श्रुततीर्थ—इतिहास—उत्पत्ति १ ३१७ ब, १. परि०/२ १, ह्रास १.३१८ अ, १. परि०/३ १।

श्रुतदर्शन—दर्शन २.४१५ ब।

श्रुतदेवता—समवसरण ४ ३३० अ।

श्रुतधर आम्नाय—इतिहास, १. परि०/२ १-२-३, ३.१।

श्रुतपंचमी क्रिया—कृतिकर्म २.१३९ अ।

श्रुतपंचमी व्रत—४ ७१ अ।

श्रुतभक्ति (दशभक्ति)—इतिहास १ ३४० ब।

श्रुतभावना—भावना ३ २२४ ब।

श्रुतमुनि—इतिहास १ ३३२ ब, १ ३४५ अ-ब।

श्रुतवाद—४.७१ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ।

श्रुतवीर—सेनसंघ १ ३२६ अ।

श्रुतसागर—४ ७१ अ, नंदिसंघ १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३३ अ, १ ३४६ अ।

श्रुतसागरी—इतिहास १ ३२६ अ।

श्रुतस्कंध—स्वाध्याय ४ ५२५ अ,।

श्रुतस्कंध पूजा—इतिहास १ ३३४ अ, १ ३४६ ब।

श्रुतस्कंध व्रत—४ ७१ अ।

श्रुताज्ञान—श्रुतज्ञान ४ ५९ ब।

श्रुतावतार—४ ७१ अ. इंद्रनंदि १ २९९ ब, इतिहास १ ३१६, १ ३३० ब, १ ३३२ ब।

श्रुति—सूर्य की अग्रदेवी २ ३४६ अ।

श्रुतिकीर्ति—बलदेव ४ १७ ब।

श्रुतिगम्य—४.७१ अ।

श्रेढी—४.७१ ब, गणित २.२२८ ब।

श्रेढी व्यवहार गणित गणित २.२२८ ब।

श्रेणिक—४.७१ ब, तीर्थंकर महापद्म २.३७७, तीर्थंकर वर्द्धमान २.३९१, मगधदेश इतिहास १.३१० ब, १.३१२।

श्रेणी—४ ७१ ब, अनुयोगद्वार १ १०२ अ, आरोहण अवरोहण काल की अवधि तथा अल्पबहुत्व १ १६१, गुणस्थान २ २४७ अ, युगपत् प्रवेश करने वालों का प्रमाण ४ ९४, विग्रहगति ३ ५४१ ब, विद्याधर लोक ३ ५४१ ब, ३ ४६४ अ, विद्याधर लोक में कालविभाग २ ९३, सेना की अठारह श्रेणी ४ ७२ अ।

श्रेणीचारण ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १.४५१ ब।

श्रेणीबद्ध—४ ७२ ब। नरक बिल—निर्देश २ ५७१ ब, २ ५७६ अ, विस्तार २ ५७८ ब, अंकन ३.४४१, संख्या २ ५७८-५८०। स्वर्गविमान निर्देश ३ ५६३ अ, ४.५१६ अ, नामनिर्देश ४ ५१९ अ, विस्तार ४ ५१६-५१८, अंकन ४.५१७, संख्या ४.५१६-५२०।

श्रेणीबद्ध कल्पना—४ ७४ अ।

श्रेयस्कर—४ ७४ अ, लौकांतिक देव ३.४९३ ब।

श्रेयांस—४ ७४ अ, कुरुवंशी राजा १.३३५ ब, तीर्थंकर २.३७९-३९१, नारायण ४ १८ ब, स्वप्न ४.५०५ अ।

श्रेयांससेन—काष्ठासंघ १.३२७ अ।

श्रेयोविधा—अभयनंदि १.१२७ अ।

श्रेष्ठी—तीर्थंकर २.३७७।
श्रोता - ४.७४ अ, उपदेश १.४२४ ब।
श्रोत्र (इंद्रिय)—आहारांतराय १ २९ अ, इंद्रिय १.३०२ अ, प्रदेश तथा अवगाहना का अल्पबहुत्व १ १५७, प्राप्यकारी १ ३०३ ब।
श्रोत्रज मतिज्ञान – कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६० ब, श्रुतज्ञान ४ ६२ अ।
श्रोत्रिय ब्राह्मण ३.१९५ अ।
श्लक्ष्णकूला—४ ७५ ब।
श्लेष—४ ७५ ब।
श्लेष संबंध—४ ७५ ब।
श्लेष्म—औदारिक शरीर १ ४७२ अ।
श्लोकवार्तिक—४ ७६ अ, इतिहास १.३४१ ब। मीमासा-दर्शन २ ३११ अ।
श्लोहित—४ ७६ अ।
श्वपाकज – विद्याधरवश १ ३३९ अ।
श्वपाकविद्या—विद्याधरवश १.३३९ अ।
श्वस्ना—४ ७६ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
श्वासोच्छ्वास—४.७६ अ, उच्छ्वास १.३५२ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१ अ, प्राणायाम ३ १५५ अ, शुक्लध्यान ४ ३५ ब।
श्वेत—तीर्थंकर मल्लिनाथ २ ३८३।
श्वेतकुमार—४ ७६ अ।
श्वेतकेतु—४.७६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
श्वेतध्वज—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
श्वेतपंचमी व्रत—४.७६ अ।
श्वेतरुधिर—अर्हंतातिशय १.१३७ ब।
श्वेतवर्ण—मंगल ३ २४४ अ।
श्वेतवस्त्र—क्षुल्लक २.१८८ ब।
श्वेतवाहन—४.७६ अ।
श्वेतांबर—४.७६ अ, अचेलकत्व १ ४० अ, कुंदकुंद २.१२७ अ, मूलसंघ १.३१९ अ, १. परि०/२.३, निंदा २.५८८ ब।
श्वेतांबर पराजय—इतिहास १.३४७ ब।
श्वेतांबर संघ—एकात (जैनाभास) १.४६५ अ।
श्वेतांबराभास—श्वेतांबर ४.८० ब।

ष

षंड वन—तीर्थंकर २.३८३।
षट्—अनायतन १.२५१ अ, आवश्यक कर्म (श्रावक) ४ ५१ ब, आवश्यक कर्म (साधु) १ २७९ ब, आहार १.२८५ अ, कर्तव्य (श्रावक) ४ ५१ ब, कर्म (असि-मसि आदि) ४ २४, ४.४२० ब, कारक २ ४८, खंड ४ ८१ अ, घनांगुल की सहनानी २ २१९ ब, दर्शन (एकात मत) १ ४६५ अ, द्रव्य २.४५५ ब, पर्याप्ति ३ ४१ अ, रस ३ ३९३ अ, हानिवृद्धि ४ ८१ अ।
षट्-अनायतन—आयतन १ २५१ अ।
षट्-आवश्यक—श्रावक ४ ५१ ब, साधु १.२७९ ब।
षट्कर्म—श्रावक ४ ५१ ब, सावद्य ४ ४२० ब।
षट्काय—काय २ ४४ ब।
षट्कारक—कारक २ ४८-५०, ज्ञान (भेदज्ञान) २.२६१ ब। ध्यान २ ४९५ अ।
षट्खंड—४ ८१ अ, भरत आदि क्षेत्रो के छः छः खंड – निर्देश ३.४४६ अ, विस्तार ३ ४४७, ३ ४६० अ, ३.४७९, अवन ३ ४४७, ३ ४६४ के सामने, गणना ३ ४४५ अ, काल विभाग २ ९३।
षट्खंड टीका—इतिहास १ ३४० ब।
षट्खंडागम—४ ८१ अ, इतिहास १ ३४० अ।
षटखडागम टीका—इतिहास १ ३४० ब।
षट् गुण हानि वृद्धि—४ ८१ अ, अगुरुलघु १.३४ अ अध्यवसाय १.५३ ब, गणित २ २३१।
षट्चक्र—पदस्थ ध्यान ३ ६ ब।
षट्चत्वारिंशत्—अर्हंत के गुण १.१३७ ब, आहार के दोष १ २८७ अ, १ २८९ अ, वसतिका के दोष ३ ५२८ अ।
षट्त्रिंशत्—आचार्य के गुण १ २४२ अ।
षट्पर्याप्ति—केवली २.१६२ ब, पर्याप्ति ३.४१ अ।
षट्प्राभृत टीका—इतिहास १ ३४६ ब।
षडशता—परमाणु ३.१७ अ।
षडनायतन—आयतन १.२५१ अ।
षडशीति—इतिहास १.३४५ अ।
षडावश्यक—आवश्यक (साधु) १.२७९ श्रावक ४.५१ ब।
षड्क—४ ८१ ब।
षड्गुण-हानि-वृद्धि—४ ८१ अ, अगुरुलघु १.३४ अ अध्यवसाय १.५३ ब, गणित २.२३१ अ।
षड्ज—४ ८१ ब, स्वर ४ ५०८ ब।
षड्दर्शन—एकात १ ४६५ अ, दर्शन २.४०२ ब।
षड्दर्शनसमुच्चय—४.८२ अ, इतिहास १ ३४१ अ।
षड्दिक्-अपक्रम—गति ३ ३५ ब, २.२३६ अ।
षड्दिक्-गति—गति २.२३५ ब, २.२३६ अ।
षड्द्रव्य—निर्देश (द्रव्य) २ ४५५ ब, अल्पबहुत्व १.१४२ ब, कर्म २.२८ ब, कारण-कार्य २.६३ ब।

षड्रस—रस-परित्याग तप ३ ३९३ अ।
षड्रसी व्रत—४ ८२ अ।
षड्विध आहार—आहार १.२८५ अ।
षड्विंशति (कर्म प्रकृति)—संक्रमण ४ ८७ ब, सत्त्व ४ २७६ अ।
षण्णवति प्रकरण – ४.८२ अ, इतिहास १ ३४२ ब।
षष्ठ अणुव्रत —रात्रिभोजन ३ ४०३ अ।
षष्ठ बेला—४ ८२ अ।
षष्ठ भक्त—४ ८२ अ, अनशन १ ६५ ब, कायक्लेश २ ४७ अ, प्रोषधोपवास ३ १६४ ब।
षष्ठितंत्र – सांख्यदर्शन ४.३९८ ब।
षष्ठोव्रत – ४.८२ अ।
षाष्ठिक पद्धति – ४ ८२ अ।
षोडश—सहनानी अनंत='१६', अनंतानंत=१६, असंख्यात (परीत)=१६, जीवराशि=१६। काल समय राशि=१६ ख ख, आकाशप्रदेश राशि=१६ ख ख ख। २ २१९ अ।
षोडश —आहार के उत्पादन व उद्गम दोष १ २८९-२९१, कुलकर ४.२३ अ, पृथिवी (रत्नप्रभा) ३ ३८९ ब, भावना ३.२२५ अ, स्वप्न ४ ५०४ अ।
षोडशकारणधर्म चक्रोद्धारयंत्र— यंत्र ३ ३६३।
षोडशकारणभावना—भावना ३ २२५।
षोडशकारणभावना व्रत ४ ८२ अ।
षोडशपदिक अल्पबहुत्व —अल्पबहुत्व १ १४२ ब।
षोडश स्वप्न – ४.५०४ अ, ब, ४.५०५ अ।

स

सं—संज्ञी की सहनानी २.२१९ अ, सामायिक ४.४१५ अ।
संकटहरण व्रत—४.८२ अ।
संकर दोष – ४.८२ अ, कर्ता-कर्म २.२२ ब।
संकलन – ४.८२ अ, गणित २ २२२ ब, २.२२४ अ।
संकलन-व्यवहार – गणित २.२२९ ब।
संकलन-श्रेणी व्यवहार—गणित २.२२८ ब, २.२२९ ब।
संकलित धन – ४.८२ ब।
संकल्प—४.८२ ब, आहारांतराय १.२९ अ, विकल्प ३ ५३७ ब।
संकल्पी हिंसा—हिंसा ४ ५३५ अ।
संकुट—४ ८२ ब, जीव २ ३३३ ब।
संकेत—४ ८२ ब।
संकेत क्रम—४ ८२ ब।
संकोच —४ ८२ ब।
संकोच-विकोच —काय ८ ४६ ब, मनोयोग ३ २७६ ब, योग ३ ३७६ ब।
संकोच-विस्तार – जीव २ ३३८ ब, २ ३३९ ब, मोक्ष ३ ३२९ अ, योग ३ ३७६ अ।
संकोच-विस्तार धर्म - जीव २ ३३८ ब, २ ३३९ ब।
संक्रमण —४ ८२ ब, अंतरकरण १ २५ ब, १.२६ अ-ब, अष्टकर्म अल्पबहुत्व १ १७५, आयुकर्म १ २६० ब-२६१, करणदशक २ ६, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०, कृष्टि २ १४२ अ, क्षपणा २ १८० अ, गलितावशेष २ २३८ ब, गुणस्थान (करण दशक) २ ६ अ, प्रदेशों का अल्पबहुत्व १.१७४ ब।
संक्रांति —४ ९१ अ, शुक्लध्यान ४.३७ अ।
संक्लिष्ट हस्तकर्म – हस्तकर्म ४.५३० ब।
संक्लेश – उपयोग १ ४३१ ब, १.४३३ ब, विशुद्धि ३ ५६८ अ-ब, स्थितिबंध ४ ४५८ ब, ४.४६०-४६७, स्थान ४ ४५२ ब, स्थानों का अल्पबहुत्व १.१६० अ।
संक्षेप दर्शनार्य – आर्य १.२७५ अ।
संक्षेप रुचि —उपदेश १.४२५ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब।
संक्षेप शारीरिक—वेदांत ३.५९५ ब।
संक्षेप सम्यक्त्वार्य—आर्य १.२७५ अ।
संक्षेप सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४ ३४८ ब।
संख्या – ४.९१ अ, अनुयोगद्वार १.१०२ अ-ब, अवधिज्ञान १.१९६ अ, करणत्रिक (परिणाम) २ ७-१४, गणित २.२१४ ब, २ २२६ अ-ब, जीवप्ररूपणा ४.९४-१०९, द्रव्य २.४५६ ब, मोक्ष (मुक्तजीव) ३ ३२८ अ।
संख्यात —असंख्यात १.५८ ब, गणित २ २१४ ब, २.२१८ अ, संख्या ४ ९२ अ।
संख्यात गुणवृद्धि अध्यवसाय १.५३ अ, श्रुतज्ञान ४ ६६ अ, षड्गुण हानि-वृद्धि ४.८१ ब।
संख्यात भागवृद्धि —अध्यवसाय १.५३ ब, श्रुतज्ञान ४.६६ अ, षड्गुण ४.८१ ब।
संख्यातानुवर्गणा – वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३.५१६ अ।
संख्या तुल्यघात – ४.११८ अ।

संख्याधिकार—अनुयोगद्वार १ १०३ अ।
संख्या व्यभिचार—नय २ ५३७ ब।
संगति—४ ११८ अ।
संगीत समयसार—इतिहास १ ३४४ ब।
संगीति—अर्हद्बलि १ १३८ ब।
संग्रह—४.१२३ ब, आगमार्थ १.२३२ अ।
संग्रहकृष्टि—कृष्टि १ १४० अ-ब, २.१४१ अ।
संग्रहनय—उपचार १.४२३ अ, कषाय २.३९ अ-ब, दर्शन २.४०९ ब, नय २.५२७ ब, २.५३२ अ, २.५३३ ब, निक्षेप २ ५९५ अ, सप्तभंगी ४.३१८ ब।
संग्रहनय-उपक्रम—उपक्रम २.४१६ ब।
संग्रहाभास—नय २.५३४ ब।
संघ—४ १२३ ब, अवर्णवाद १.२०१ अ, इतिहास १ ३१९, उपकार १.४१६ अ, एकात जैनाभास १ ४६५ अ, कल्की २ ३१ ब।
संघकरमोचन दोष—व्युत्सर्ग ३ ६२३ अ।
संघसाक्षी—व्रत ३ ६२६ अ।
संघाट—नरक पटल—निर्देश २ ५७९, विस्तार २ ५७९, अंकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।
संघात—४ १२४ अ, वर्गणा ३ ५१६ अ, श्रुतज्ञान ४ ६४ ब, स्कंध ४ ४४७ अ।
संघात (नामकर्म प्रकृति)—४ १२४ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६, बंध ३.९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
संघातन—४ १२४ अ।
संघातन कृति—संघातन ४.१२४ अ।
संघातन-परिशातन कृति—संघातन ४ १२४ ब।
संघात-समास-ज्ञान—श्रुतज्ञान ४.६४ ब।
संघातिम—निक्षेप २ ६०२ ब।
संघायणी (बृ० संघायणी सुत्त)—४.१२४ ब, इतिहास १.३४१ अ।
संचया—४.१२४ ब।
संचरण—जीव २.३३९ ब।
सचार—४.१२४ ब।
संचारगति—गति २.२३५ अ।
संचालन—जीव २.३३९ ब।
संचेतन—४ १२४ ब।
संचेतना—अनुभव १ ८२ अ।
सजम—रुद्र ४ २२ ब।
संजयंत—४.१२४ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ, हरिवश १ ३४० अ।
संजयंती—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
संजय—४ १२४ ब, विद्याधरवश १ ३३९ अ।
सजात—तीर्थंकर २ ३९२।
संज्ञ—सज्ञी ४ १२२ अ।
सज्ञा—४ १२० ब, मार्गणा ३ २९८ अ।
संज्ञासंज्ञ—४ १२१ ब।
सज्ञी—४ १२१ ब, आयु १ २६४ अ, केवली २ १६३ ब, जीव २.३३३ ब, जीवसमास २ ३४३, प्राण ३ १५३ अ, संक्लेश विशुद्धि स्थानो का अल्पबहुत्व १-१६० अ, सज्ञी मार्गणा ४ १२१ ब, सहनानी २ २१९ अ।
संज्ञी मार्गणा (प्ररूपणा)—प्ररूपणा—बध ३.१०८ बंध स्थान ३ ११३, १ ३८५, उदयस्थान १.३९३ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०२, ४.३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०८ अ। सत् ४.२६०, सख्या ४ १०९, क्षेत्र २ २०७, स्पर्शन ४ ४९३, काल २.११९, अतर १.२१, भाव ३ २२२ अ अल्पबहुत्व १ १५२।
संज्वलन—४ १२४ ब, कषाय २.३५ ब, २.३८ अ, २.३९ अ, संयत ४ १३२ अ।
सज्वलन (कर्मप्रकृति)—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.३४१, स्थिति ४.४६१, अनुभाग १ ९१ ब, १.९४ अ, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७ बधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ २९५, स्थिति सत्त्वस्थान अल्पबहुत्व १.१६५ ब, त्रिसयोगी भग १ ४०१ ब, सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६८।
सज्वलन चतुष्क—उदय १ ३७४ ब।
संज्वलित—४ १२५ ब। नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।
संततता—४ १२५ ब।
संतलाल—४ १२५ ब, इतिहास १.३३४ अ।
संतान—४.१२५ ब, ग्रह २.२७४ अ, धर्मध्यान २.४८१ ब, वर्णव्यवस्था ३ ५२० ब।
संतिणाहचरिउ—इतिहास १.३३३ ब, १.३४४ अ, १.३४५

अ, १.३४६ अ, १.३४७ अ।

संतोष—शौच ४ ४२ ब, संयम ४.१३९ ब।

सतोषतिलक जयमाल—इतिहास १ ३४७ अ।

संतोष भावना—भावना ३.२२५ अ।

सदंश—आहारातराय १ २९ ब।

संदिग्ध—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ।

संदिग्ध अन्न—भक्ष्याभक्ष्य ३.२०३ अ।

सदिग्धासिद्ध हेत्वाभास—असिद्धहेत्वाभास १.२१० अ।

संदृष्टि—४ १२५ ब, अधःकरण २ ७-९, अपूर्वकरण २ १२ ब।

संदेह—नि शकित २ ५८६ ब।

संधान—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ अ।

सधानक—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०३ ब।

संधि—४.१२५ ब, औदारिक शरीर १ ४७२ अ, ग्रह २ २७४ अ।

संध्या—सामायिक ४ ४१५ ब।

संध्याकार—राक्षसवंश १.३३८ अ।

सध्याकाल—वदना ३ ४९५ अ।

संनिधिकरण—पूजा ३ ८० ब।

सन्यास-आश्रम—आश्रम १ २८१ अ, वर्णव्यवस्था ३.५२४ ब।

सन्यास-क्रिया—कृतिकर्म २ १३९ अ।

सन्यास-मरण—सल्लेखना ४ ३९२ ब, ४ ३९३ ब, ४ ३८६ ब।

संन्यास-विधि—स्वाध्याय ४.५२६ अ।

संपराय—४ १२५ ब।

संपरिकीर्ति—राक्षसवश १ ३३८ अ।

संपूर्ण जीवराशि—सहनानी २ २१९ अ।

संप्रज्वलित—४.१२५ ब। नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब। विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी अवगाहना १.१७८, आयु १ २६३। वैदिकाभिमत नरक महाज्वाल तथा वह्निज्वाल ३ ४३२ ब।

संप्रति—४.१२५ ब, मौर्यवश १ ३१३, इतिहास १.३१० ब।

संप्रदान कारक—४ १२५ ब। कारक २ ४८ ब।

संप्रदान शक्ति—४ १२५ ब।

संप्रदाय-विरोध—आगम १.२३७ ब।

सप्राप्तिजनित उदय—उदय १ ३६६ अ।

सबध—४.१२५ ब, कारक २ ४९ ब, ज्ञान २ २६१ ब, नय २ ५४९ ब, न्याय २ ६३३ अ, सप्तभंगी भेदाभेद ४.३२४ अ-ब, ४.३२५ ब।

संबंधशक्ति—४.१२६ ब।

संबंधांतर अधिकार—ब्राह्मण ३.१९६ ब।

संबधाहार—सचित्त ४ १५८ अ।

संभव—४ १२६ ब, ग्रह २.२७४ अ, तीर्थंकर २ ३७९-३९१, देव (आकाशोपपन्न) २.४४५ ब।

संभवचरित्र—इतिहास १.३४६ अ।

संभवदल कर्म—१.१०२ अ।

सभवनाथ—४.१२६ ब, तीर्थंकर २.३७९-३९१।

संभवयोग—योग ३ ३७६ अ।

संभावना सत्य—सत्य ४ २७१ ब।

संभाषण—४ १२६ ब।

संभिन्नमति—४.१२६ ब।

संभिन्नश्रोत्र-ऋद्धि १.४४८, १.४४९ ब, गणधर २.२१२ ब।

सभूत—चक्रवर्ती ४ १० अ, नारायण ४.१८ ब, हरिवश १.३४० अ।

संभ्रांत—४.१२६ ब। नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४५७। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

संमद—शलाकापुरुष ४ २६ अ।

संमिश्र—भोगोपभोग ३ २३९ ब, सचित्त ४ १५८ अ।

संमूर्च्छन—४ १२६ ब।

संमूर्च्छन जन्म—संमूर्च्छन ४ १२६ ब।

संमूर्च्छन मनुष्य—समूर्च्छन ४ १२७ अ, मनुष्य ३ २७३।

संमूर्च्छिम—४ १२६ ब। अवधिज्ञान १ १९५ अ, जीवसमास २.३४३, तिर्यंच २ ३६७, मनुष्य ३ २७३, वनस्पति ३ ५०३ अ, ३ ५०६ अ।

संमूर्च्छिम तिर्यंच—तिर्यंच २ ३६७, वेद ३ ५८७ अ।

समूर्च्छिम मनुष्य—मनुष्य ३ २७३, समूर्च्छन ४.१२७ ब।

संमेदशिखर—तीर्थंकर प्ररूपणा—२ ३८५।

संमेदाचल माहात्म्य—४ ३४४ अ, इतिहास १ ३४८ अ।

संमेलन—अर्हद्बली १.१३८ ब।

संमोह (देव)—४.१२८ ब, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५८ अ, देव २ ४४५ ब, पिशाच जातीय व्यतर देव ३ ५८ ब।

संमोही भावना—४ १२८ ब, भावना ३ २२५ ब।

संयत—४ १२८ ब, विशेषताओं के लिए दे० संयम। प्ररूपणाओं के लिए दे० प्रमत्तसयत तथा अप्रमत्तसंयत।

संयतासंयत—४ १३३ ब, विशेषताओ के लिए दे० संयमासंयम। प्ररूपणा—बंध ३ ९७, बधस्थान ३.११०, ३.१११, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३६२ अ,

उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२८८, ४.२९६, ४.३०४, त्रिसयोगी भंग १.४०६ अ। सत ४.१६२, सख्या ४.९५, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४.४७७, काल २.९९, अतर १.७, भाव ३.२२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३।

संयम—४.१४० ब, तीर्थंकर २.३७७, शलाकापुरुष ४.२५ अ।

संयम (सयत)—४.१३५ ब, अनगार (सयत) १.६२ अ, अवधिज्ञान १.१९५ अ, आयुका अपवर्तन १.२६१ ब, आर्तध्यान १.२७४ अ, आहारक समुद्घात १.२९८ ब, उपयोग १.४३१ अ, १.४३२ अ, १.४३३ अ, १.४३४ अ, ऋद्धि (चारण) १.४५१ ब, कषाय २.३४ अ, केवली २.१६५ अ, क्षयोपशम २.१८५ ब, २.१८६ अ, क्षायोपशमिक भाव २.१८२ ब, चारित्र २.२८२ ब, २.२८७ ब, २.२८८ अ, २.२८९ अ, २.२९१ ब, १.२९३ अ ब, जन्म (गति-अगति) २.३२२ ब, तप २.३५९ ब, २.३६१ अ, तिर्यंच २.३६९ ब, निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१४१ ब, प्रत्याख्यानावरण ३.१३३ ब, बद्धायुष्क १.२६२ ब, मोक्ष ३.३२६ ब, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ-ब, लब्धि ३.४१४ अ, शुक्लध्यान २.३४ ब, षट्कालिक हानिवृद्धि २.९३, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब, साधु ४.४०७ अ, सामायिक ४.४१८ ब।

सयम (प्ररूपणा)—बध ३.१०६, बधस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १.३९३ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८३, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६, त्रिसयोगी भग १.४०७ ब। सत ४.२३६, सख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४.४८९, काल २.११४, अंतर १.१६, भाव ३.२२१, अल्पबहुत्व १.१५०, भागाभाग ४.११३। पंचशरीर-स्वामित्व—निर्देश ४.७, अल्पबहुत्व १.१५९ ब। अनुभाग का अल्पबहुत्व १.१६८।

संयम (अपहृत)—अपवादमार्ग १.१२० ब।

सयम (उपेक्षा)—उत्सर्गमार्ग १.१२१ अ।

संयम (उपकरण)—उपकरण १.४१४ ब, समिति ४.३४१ अ।

संयमचरण-चारित्र—चारित्र २.२९३ अ।

संयमभाव—चारित्र २.२८९ अ।

संयमरक्षा—आहार १.२९२ ब।

संयमलब्धि—३.४१४ अ।

सयमलब्धि-स्थान—अल्पबहुत्व १.१६६, स्थान ४.४५२ ब।

सयमविशुद्धि स्थान—अल्पबहुत्व १.१६० अ।

सयमस्वरूप-प्रतिमा—चैत्य-चैत्यालय २.३०० ब।

संयमाचरण—चारित्र २.२८५ अ।

सयमासंयम—४.१३३ ब, अप्रत्याख्यानावरण १.१२६ अ, आरोहण अवरोहण २.२४७, आर्तध्यान १.२७४ अ, करण दशक २.६ अ, कषाय २.४० ब, काय २.४५ ब, क्षयोपशम २.१८५ अ, २.१८६ अ, क्षायोपशमिक भाव २.१८२ ब, २.१८३ अ, क्षायिक सम्यग्दृष्टि २.३६८ ब, चारित्र २.२८७ ब, तिर्यंच २.३६८ ब, तिर्यंच अपर्याप्त २.३६९ अ, तीर्थंकर २.३७३ ब, परिषह ३.३४, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १.१७४, बद्धायुष्क १.२६२ ब, लब्धि ३.४१४ अ, सख्या ४.९२ ब, समूर्च्छन ४.१२७ अ, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब, समुद्घात ४.३४३ अ, सम्यग्दर्शन (क्षायिक) ४.३७३ ब।

सयमासंयम (प्ररूपणा) बंध ३.१०६, बधस्थान ३.११३, उदय १.३८३ उदयस्थान १.३९३ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२ सत्त्व ४.२८५, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४.३०६, त्रिसयोगी भग १.४०७। सत् ४.२३९, सख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४.४८९, काल २.११४, अंतर १.१७, भाव ३.२२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५१।

संयमोपकरण—उपकरण १.४१४ ब, समिति ४.३४१ अ।

संयोग—विभाव ३.५६१ अ।

सयोगकेवली—दे० सयोगकेवली।

सयोगगति—गति २.२३५ अ।

सयोगद्रव्य—द्रव्य २.४५४ ब।

सयोगपद-उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब।

संयोगवाद—४.१४१ अ, एकात १.४६४ ब १.४६५ अ ब।

संयोग सबंध—४.१४१ अ, नय २.४६० अ, २.५४९ ब।

संयोगाक्षर—अक्षर १.३३ अ।

सयोगाधिकरण—अधिकरण १.४९ अ।

संयोगी स्थान प्ररूपणा—उदय १.३९९-४०८।

संयोगी भंग—उदय १.३९९-४०८, गणित २.२२८ अ।

सयोगी भाव—विभाव ३.५६१ अ, सन्निपातिक भाव ४.३१२ ब।

संयोजन—४.१४१ अ।

संयोजना दोष—आहार १.२९० अ।

संयोजना सत्य—सत्य ४.२७१ ब।

संरंभ—४.१४१ अ।

संरक्षणानंद—रौद्रध्यान ३.४०७ ब, ३.४०८ अ।

संवत्—इतिहास १.३०९अ-३१० अ, १ परि०/१।
सवत्सर—४.१४१ अ, इतिहास १ ३०९अ-३१०अ, १. परि०/१, काल का प्रमाण २.२१६, सूर्य की गति से उत्पत्ति २.३५१ अ।
संवर—४.१४१ ब, अनुप्रेक्षा १.७७ अ, १.८० अ, उपयोग १.४३१ अ-१ ४३२ ब, क्षेत्र (व्रतादि का) २ २९२ ब, गणधर २ २१२ ब, तप २ ३५८ अ, धर्मध्यान २.४८३ ब, निर्जरा २.६२३ अ, पुण्य १ ७८ ब, मोक्ष-मार्ग ३ ३३७ अ, सवर (निश्चय व्यवहार) ४.१४२ अ।
संवर (नाम)—तीर्थंकर मुनिसुव्रत व अरहनाथ २.३७८।
संवर्गित—४ १४४ अ।
सवर्तक वायु—प्रलय ३.१४७ अ।
सवाद—वाद ३.५३३ अ।
संवास अनुमति—अनुमति १.९६ अ।
संवाह—४.१४४ अ।
संवाहन—४ १४४ अ, चक्रवर्ती ४.१३ ब।
संवित्—४.१४४ अ, ज्ञान २.२५७ ब।
संवित्ति—अनुभव १.८१-८६।
संवृत—४.१४४ अ, योनि ३.३८७ अ।
संवृत-विवृत—योनि ३ ३८७ अ।
संवृत्ति—अभाव १.१२८ ब।
संवृति-सत्य—सत्य ४.२७१ ब।
सवेग—४ १४४ अ, अनुप्रेक्षा १ ७८ अ, निर्वेद २.६२७ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ।
संवेदन—अनुभव १ ८१-८६, उपयोग १.४३४ ब, प्रत्यक्ष ३ १२१ ब।
संवेजनी कथा—कथा २ ३ अ।
संवेदनी कथा—उपदेश १ ४२५ अ, १.४२६ अ।
संव्यवहरण दोष—४ १४४ ब, आहार १.२९१ ब।
संशय—४.१४४ ब, अनेकात १ १०५ ब, अवग्रह १ १८२ अ-ब, ईहा १ ३५१ अ-ब, न्याय २ ६३३ अ-ब, मिश्र गुणस्थान ३ ३०७ ब, ३ ३०८ ब।
संशय मिथ्यात्व—संशय ४.१४५ अ।
संशय मिथ्यादृष्टि—आगमार्थ १.२३२ अ, मिश्रगुणस्थान ३.३०८ ब।
संशय वचन—भाषा ३.२२७ अ।
संशयसमा जाति—४.१४६ अ।
संश्लेष—स्कंध ४.४४८ अ।
संश्लेषबध—बध ३.१७० ब।
संसक्त साधु—४.१४६ अ।
संसक्त द्रव्यसेवा—ब्रह्मचर्य ३.१८९ अ।
संसरण—ससार ४.१४६ ब।
संसर्ग—४ १४६ अ, संगति ४.११८ अ, सप्तभंगी ४.३२४ अ-ब, ४ ३२५ ब।
संसार—४ १४६ अ, अनुप्रेक्षा १.७७ अ-ब, १ ८० अ, क्षेत्रपरिवर्तन २ २०९ अ, दो प्रकार ४ १४७ अ।
संसारभीरु—सल्लेखना ४,३९१ ब।
संसारस्थिति—नियति २ ६१४ ब।
संसारानुप्रेक्षा—४ १४९ ब।
ससारी—४ १४९ ब।
ससारी जीव—अल्पबहुत्व १.१४२ ब, मूर्त ३.३१९ अ, सहनानी २.२१९ अ।
ससिद्धि—आराधना १.२७१ अ।
सस्कार—४ १४९ ब, (अभ्यास) ४ १५० अ, (क्रिया) ४ १५३ अ, गणधर २ २१३ अ।
संस्तवक—४.१५३ अ, नरक पटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब, अकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।
संस्तर—५ १५३ अ, सल्लेखना ४.३८४ अ, ४ ३८५ अ-ब, ४ ३८९ ब, ४.३९० अ-ब, ४.३९२ अ, ४.३९६ ब।
सस्तव—प्रशंसा १.११२ अ, भक्ति ३.१९९ ब।
सस्थान—४ १५३ ब, विग्रहगति १.२४७ अ, चक्रवर्ती ४ १० ब, षट्कालिक हानिवृद्धि २.९३।
संस्थान नामकर्म-प्रकृति—आनुपूर्वी नामकर्म १ २४७ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३.९५ ब, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३.९७, बध-स्थान ३.११० उदय १.३७५, उदय की विशेषता १ ३७२ ब, १.३७३ ब, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६९ अ।
संस्थान-निर्माण—निर्माण २ ६२५ अ।
संस्थान-विचय—धर्मध्यान २ ४८० अ।
संस्थान-विचय धर्मध्यान—धर्मध्यान २ ४८० ब।
सस्थानाक्षर—अक्षर १ ३३ अ।
संहनन—४ १५५ अ, चक्रवर्ती ४ १० ब, जन्म (गति अगति) २.३२१ अ, ध्याता २.४९२ ब, २ ४९४ अ, शुक्लध्यान ४.३६ अ, षट्कालिक हानिवृद्धि २.९३।
संहनन-काल—सल्लेखना ४.३८७ अ।

सहनन नामकर्म-प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ९५ ब, २.५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १ ३७३ ब, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२,सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३. त्रिसंयोगी भंग १ ४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९ अ।

संहरण सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३।

सहार—जीव २ ३३८ ब।

स²— समयप्रबद्ध की सहनानी २ २१९ अ।

स$_{32}$—समयप्रबद्ध की सहनानी २ २१९ अ।

सककापिर—४ १५६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

सकक्ष—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

सकल—परमात्मा ३ २० अ।

सकलकीर्ति—४ १५६ अ, नदिसघ १ ३२४ अ, इतिहास १.३३३ अ, १ ३४५ ब।

सकलचारित्र—सयम ४.१३७ अ।

सकल-जिन—जिन २ ३२८ ब, पूजा ३ ७७ अ।

सकल-त्याग—उपयोग १ ४३१ अ, सयम ४ १३७ ब।

सकलदत्ति—दान २.४२२ ब।

सकल परमात्मा—परमात्मा ३.२० अ।

सकल प्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष ३.१२२ ब ३ १२३ अ।

सकलभूषण—नदिसघ भट्टारक १ ३२४ अ, इतिहास १ ३३३ ब।

सकलात्मा—परमात्मा ३ २० अ।

सकलादेश—४ १५६ ब, सप्तभंगी ४.३१५ ब, ४ ३१६ अ-ब, ४.३१७ अ।

सकलादेशी—नय २.५१७ अ।

सकलेंद्रिय—जीवसमास २.३४३, त्रस २ ३९८।

सक्तनिभ—४ १५७ ब।

सक्ता—४ १५७ ब, जीव २ ३३३ ब।

सक्रिय—योग ३ ३७६ ब।

सगर—४.१५७ ब इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ, चक्रवर्ती ४ १० अ, तीर्थंकर अजितनाथ २.३९१।

सचित्त—४.१५७ ब, निक्षेप २ ६०१ अ, पूजा ३ ८० अ, भक्ष्याभक्ष्य ३.२०४ अ-ब, भोगोपभोग ३.२३९ अ, योनि ३.३८७ अ।

सचित्त काल—काल २ ८१ ब।

सचित्त गुणयोग—योग ३.३७६ अ।

सचित्त व्यतिरिक्त नोआगम द्रव्य—अतर १ ३ ब।

सचित्त-त्याग प्रतिमा—आरभ-त्याग प्रतिमा १ २७१ अ, सचित्त ४ १५७ ब।

सचित्तद्रव्य शल्य—शल्य ४ २६ ब।

सचित्त-निक्षेप—सचित्त ४ १५८ अ, निक्षेप २ ५९१ ब, २ ६०१ अ।

सचित्त नोकर्म द्रव्य बधक—बध ३ १७९ अ।

सचित्त-पाहुड—प्राभृत ३ १५६ ब।

सचित्तपूजा—पूजा ३ ७४ ब।

सचित्त बंधक—बध ३.१७९ अ।

सचित्त भाव—भाव ३ २१८ ब।

सचित्त योनि—योनि ३.३८७ अ।

सचित्त वर्गणा—वर्गणा ३ ५१६ ब, ३ ५१८ अ।

सचित्त सबध आहार—भोगोपभोग ३.२३९ ब, सचित्त ४ १५८ अ।

सचित्त स्थान—स्थान ४ ४५३ अ।

सचित्ताचित्त योनि—योनि ३ ३८७ अ।

सचित्तापिधान—४.१५८ अ।

सचेलता—वेद (स्त्री) ३ ५८९ अ।

सज्जन—सगति ४ ११८ अ।

सज्जनचित्तवल्लभ—४ १५८ ब, इतिहास १ ३३१ ब, १ ३४३ ब।

सज्जाति-क्रिया—सस्कार ४.१५२ ब।

सतालक ४ २७० अ, पिशाच ३.५८ ब।

सतीपुत्र—४ २७० अ।

सत्—४ १५८ ब, अद्वैतवाद १ ४७ ब, अनुयोगद्वार १ १०२ अ, अनेकात १ १०९ अ, असत् १.२०८ अ, अस्तित्व १ २१२ अ, उत्पादादि १ ३५७ ब, १ ३५८ अ, १ ३६१ अ-ब, कार्य (उत्पादादि) १ ३६२ ब, जैन-दर्शन २ ३४४ ब, द्रव्य २ ४५३ ब, २ ४५४ ब, द्रव्य-गुण-पर्याय (उत्पादादि) १ ३६१ब-३६२, सापेक्ष धर्म १.१०९ अ, ४ ३२३ अ।

सत्—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ९७, स्थिति ४.४६०, अनुभाग १ ८९ ब, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७-१०८, बंध-स्थान ३.१०८, ३.११३, उदय १ ३७५-३८७, उदय-स्थान १.३९२ ब, १.४०६, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८-२८४, सत्त्व-स्थान ४ २८७, ४ २९८, ४.३०५, त्रिसंयोगी भंग १ ३९९, १ ४००, ६.४०६ ब, करणदशक-स्वामित्व २.६, जीव सामान्य ४ १६१-२६८, परिषह-स्वामित्व ३ ३४, प्रत्यय-स्वामित्व ३ १२७-१२९, भाव-स्वामित्व ३.२१९-३.२२२, योग-स्वामित्व ३.३७९, शरीर-

स्वामित्व ४ ७, षट्कर्म-स्वामित्व ४ २६९ ब, सत् ४ १६० अ, समुद्घात-स्वामित्व ४ ३४३, स्पर्श ४ ४७४ ब।

सत्कथा—कथा २ २ अ-ब।

सत्कर्म—इतिहास १ ३४१ ब, ४ परि०।

सत्कर्म पंजिका—इतिहास १ ३४२ अ, ४. परि०।

सत्कर्म स्थान—अनुभाग १ ८९ ब।

सत्कार—ब्रह्मचर्य ३ १८९ अ, विनय ३ ५५२ ब, श्रोता ४ ७५ ब।

सत्कार-पुरस्कार परिषह—४ २७० अ, परिषह ३ ३३ ब, ३ ३४ अ।

सत्कीर्ति—बलदेव ४ १७ ब।

सत्क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।

सत्तरिका—४ २७० अ।

सत्तवसनकहा—इतिहास १ ३४७ अ।

सत्ता—४.२७० अ, अवातर १ २१३ अ, अस्तित्व १ २१२ ब, १ २१३ अ, उदीरणा १.४१० अ, द्रव्य २ ४५४ ब, महा (अस्तित्व) १ २१३ अ, सापेक्ष धर्म १ १०९ अ, ४ ३२३ अ, सामान्य ४ ४१२ अ।

सत्ताईस—प्रकृति सत्त्व—सक्रमण ४ ८७ ब।

सत्ता-गौण उत्पाद-व्यय ग्राहक नय—नय २ ५५२ अ।

सत्ता-ग्राहक शुद्ध-द्रव्यार्थिक नय—नय २ ५४४ ब।

सत्ता मात्र अवलोकन—सम्यग्दर्शन ४ ३४९ अ।

सत्ता सापेक्ष स्वभाव नित्य नय—नय २ ५५२ अ।

सत्पति—हरिवश १ ३४० अ।

सत्परिणाम—परिणाम ३ ३२ अ, सामान्य ४ ४१२ अ।

सत्पात्र—२ ४२३ ब।

सत्पुरुष—४ २७० अ, किंपुरुष जातीय व्यतरेंद्र—निर्देश २ १२५ अ, ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब, सख्या ३ ६११ अ। सगति ४ ११९ अ।

सत्प्रतिपक्षी—४ ३२६ ब।

सत्प्रतिषेध—असत्य १ २०८ ब।

सत्य—४ २७० अ, अहिसा १ २१७ अ, उपदेश १ ४२४ ब।

सत्य अणुव्रत—सत्य ४.२७० ब।

सत्यक—यदुवश १ ३३६।

सत्यकिपुत्र—४ २७३ ब, तीर्थंकर अनतवीर्य व दिव्यपाद २ ३७७, तीर्थंकर वर्द्धमान २ ३९१, रुद्र ४.२२ अ।

सत्यगुप्त—गणधर २ २१२ ब।

सत्यघोष—४ २७३ ब।

सत्यदत्त—४ २७४ अ, एकांत विनयवादी १.४६५ ब, तीर्थंकर धर्मनाथ २.३९१, वैनयिक ३ ६०५ अ।

सत्यदेव—गणधर २ २१२ ब।

सत्यधर्म—सत्य ४.२७३ ब।

सत्यनेमि—यदुवंश १.३३७।

सत्यप्रवाद—४ २७४ अ, श्रुतज्ञान ४ ६८ ब।

सत्यभामा—४ २७४ अ।

सत्य मनोयोग—निर्देश ३ २७६ ब। प्ररूपणा—बध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३७९, उदय-स्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा स्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ २१२, सख्या ४ १०२, क्षेत्र २ २०२, स्पर्शन ४.४८४, काल २ १०८, अंतर १.१२, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १ १४८।

सत्यमित्र—गणधर २.२१२ ब।

सत्यवचन योग—वचन योग ३.४९८ अ। प्ररूपणा—दे० सत्य मनोयोग।

सत्यवाक् कगुनीवरम्—४.२७४ अ।

सत्य महाव्रत—सत्य ४.२७० ब।

सत्यवीर्य—तीर्थंकर संभवनाथ २.३९१।

सत्यव्रत—चारित्रशुद्धि व्रत २.२९४ ब।

सत्यशासनपरीक्षा—४.२७४ अ, इतिहास १ ३४१ ब।

सत्या देवी—४ २७४ अ, कुलकर ४ २३। रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३.४६८।

सत्याभ—४ २७४ अ, लौकातिक देव ३ ४९३ ब।

सत्यार्थ उपचरित व्यवहार—उपचार १.४२० अ।

सत्यासत्य—सत्य ४.२७१ अ।

सत्यासत्यार्थ उपचरित व्यवहार—उपचार १.४२० अ।

सत्त्व—४ २७४ अ, असत १ २०७ ब, आयुकर्म १ २६२ ब, करण-दशक २.६ अ, गुणस्थान (करण-दशक) २ ६ अ, द्रव्य २.४५४ ब, निषेक रचना (उदय) १.३७०, १ ३७१ अ, सत् ४ १६० अ, सापेक्ष धर्म (अनेकात) १ १०९ अ।

सत्त्व (प्ररूपणा)—बध ३ ८९ अ, उदय १.३६८ अ, १.३७०, १ ३७१ अ, सत्त्व ४ ६७८, ४ २८५। सत्त्व-स्थान—सत्त्व ४ २७७ ब, पचभाव ३ २२२ ब, अनुभागसत्त्व अल्पबहुत्व १.१६५ ब, स्थितिसत्त्व अल्पबहुत्व १.१६५, सत्त्व के साथ त्रिसंयोगी भंग १.४००-१.४०८। काल—सामान्य २ १२०, अनंतानुबंधी का १.६१ अ, मोहनीय का २ १२३। अतर १ २३, भाव

३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१७५ ।
सत्त्व त्रिभंगी—४ ३११ अ, इतिहास १.३३० ब, १.३४२ ब, १ ३४४ ब ।
सत्त्व भावना—भावना ३ २२४ ब ।
सत्त्व व्युच्छिति—सत्त्व ४ २७७ ब ।
सत्त्वस्थान—सत्त्व ४.२७७ ब । प्ररूपणा दे० सत्त्व ।
सत्वाद—४.२७० अ ।
सत्वापसरण—अपकर्षण १ ११५ ब, क्षय २.१८० अ ।
सत्सगति—सगति ४ ११८ ब ।
सदर चउक—४.३११ अ, उदय १ ३७४ ब ।
सदवस्था रूप उपशम—उपशम १.४३७ अ ।
सदसत्—उत्पादादि—सामान्य १.३५७-३६२, काय १ ३६२, द्रव्य-गुण-पर्याय १.३६१-३६२ ।
सदानद—४ ४११ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३६ अ, वेदात ३.५९५ ब ।
सदा मुक्त—जीव २ ३३६ ब ।
सदार्चन—पूजा ३ ७४ अ ।
सदाशिव—जीव २.३३६ ब, ३.६०१ अ ।
सदाशिव मत—४ ३११ अ, एकात १ ४६५ ब ।
सदासुखदास—४.३११ अ, अकलकस्तोत्र १.३१ अ, इतिहास १ ३३४ ब ।
सदृश—४ ३११ ब, ग्रह २ २७४ अ, परिणाम ३ ३२ अ, सापेक्ष धर्म (अनेकात) १.१०९ अ ।
सदृश उत्पाद—परिणाम ३ ३२ अ ।
सदृश एकत्व उपचार—उपचार १ ४२१ अ ।
सदृश तद् उपचार—उपचार १ ४२० ब ।
सद्गृहित्व क्रिया संस्कार ४.१५३ अ ।
सद्धर्म कथा—कथा २ २ ब ।
सद्धर्माविसंवाद—अस्तेय १.२१४ अ ।
सद्भाव—सप्तभगी ४.३१९ ब ।
सद्भाव-स्थापना—अतर १.३ ब, उपशम १ ४३७ अ, निक्षेप २ ५९७ ब, २.५९८ ब ।
सद्भाव-स्थापना कर्म—कर्म २ २६ अ ।
सद्भावस्थापना-काल—काल २.८१ ब ।
सद्भावानित्य—नय २ ५५२ अ ।
सद्भावितावली—इतिहास १.३४५ ब ।
सद्भूत व्यवहार—उपचार १ ४१९ अ ।
सद्भूत व्यवहार नय—नय २ ५५९ ब ।
सद्रूप—अनेकांत १ १०९ अ ।
सद्वेद्य—वेदनीय ३.५९२ अ ।
सनंदा—तीर्थंकर सुबाहु २ ३९२ ।
सनक—साख्य ४ ३९८ ब ।
सनत्कुमार चक्रवर्ती—४ ३१२ अ, कुरुवश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, चक्रवर्ती ४ १० अ, तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३९१, नारायण ४.१८ ब, बलदेव ४ १६ ब, साख्य ४ ३९८ ब ।
सनत्कुमार (देव)—४ ३१२ अ । देव—निर्देश ४ ५१० ब, अवगाहना १ १८० ब, अवधिज्ञान १ १९८ ब आयु १ २६७, आयुबंध के योग्य परिणाम १ २५८ ब । इद्र—निर्देश ४ ५१० ब, दक्षिणेद्र ४.५११ अ, परिवार ४ ५१२-५१३, चिह्न आदि ४ ५११ ब, अवस्थान ४ ५२० ब, विमान, नगर व भवन ४ ५२०-५२१ ।
सनत्कुमार (देव)—प्ररूपणा—बध ३ १०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५ त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब । सत् ४.१९१, सख्या ४ ९८, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४ ४८१, काल २ १०४, अतर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।
सनत्कुमार (स्वर्ग)—४ ३१२ अ, निर्देश ४ ५१४ ब, पटल ४ ५१७, इद्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१७, ४.५२०, विस्तार ४ ५१७, अवस्थान ४ ५१४ ब, अकन ४ ५१५, ४ ५२० ।
सनातन—साख्यदर्शन ४ ३९८ ।
सन्नासन्न—४ ३१२ अ, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ अ ।
सन्निकर्ष—४ ३१२ अ, प्रमाण ३ १४३ ब, प्रवचनसन्निकर्ष ३ १४८ अ ।
सन्निधिकरण—पूजा ३ ८० ब ।
सन्निपातिक भाव—४ ३१२ अ ।
सन्निवेश—४ ३१३ अ ।
सन्नीरा—४ ३१३ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।
सन्मति—४ ३१३ अ, कुलकर ४.२३ ।
सन्मतिकीर्ति—४ ३१३ अ ।
सन्मतितर्क टीका—अभयदेव १.१२७ अ ।
सन्मतिसूत्र—४ ३१३ अ, इतिहास १ ३४१ अ ।
सपर्या—४.३१३ अ, पूजा ३ ७४ अ ।
सपादलक्ष—आशाधर १ २८० ब ।
सप्त—अनीक १ ६८ ब, ऋषि ४ ३१३ अ, क्षेत्र ३.४४४ ब, ३.४४६ अ, तत्त्व २ ३५३ ब, नय २.५२६ ब, पृथिवी (नरक) २.५७६ अ, भग ४ ३१३ ब, भय ३ २०६ अ, व्यसन ३.६१७ ब, समुद्घात ४ ३४३ अ ।
सप्त ऋषि—४ ३१३ अ ।

सप्त-ऋषि पूजा—इतिहास १.३४८ अ।
सप्तकरण—क्षय (चारित्रमोह) २ १८० अ।
सप्तकक्षा—अनीक १ ६८ ब।
सप्तकुम्भ—४ ३१३ अ।
सप्तक्षेत्र—लोक ३ ४४४ ब, ३.४४६ अ।
सप्तगृह-भिक्षा—आहार १ २८७ अ।
सप्त गोदावर—४ ३१३ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
सप्त चत्वारिंशत—शक्तियाँ (जीव) २ ३३७ ब।
सप्तच्छद-वन—तीर्थंकर धर्मनाथ २ ३८३, नन्दीश्वर द्वीप ३ ४६६ अ, भवनवासी देवो के नगर ३ २१० ब, व्यतर देवो के नगर ३ ६१२ ब।
सप्त-तत्त्व—तत्त्व २ ३५३ ब।
सप्ततिका—इतिहास १ ३४१ अ, ४ परि०।
सप्ततिका चूर्णि—इतिहास १ ३४२ अ।
सप्त-दोष—आहार १ २८९ ब।
सप्तद्वीपिक भूगोल—निर्देश ३ ४३१ ब।
सप्त नय—नय २ ५२६ ब।
सप्त पदार्थ—दे० सप्ततत्त्व।
सप्त पदार्थी—वैशेषिक दर्शन ३ ६०८ अ।
सप्त पदार्थी टीका—इतिहास १ ३४४ ब।
सप्तपर्ण वन—तीर्थंकर अजितनाथ २ ३८३।
सप्तपारा—४ ३१३ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
सप्तभगी तरगिणी—४.३२६ ब।
सप्तभंगी—४ ३१३ ब, नय २ ५२२ ब, स्याद्वाद ४.५०२ अ।
सप्त भय—भय ३ २०६ अ।
सप्तविंशति—प्रकृति सत्त्व—सक्रमण ४ ८७ ब।
सप्तव्यसन कथा—इतिहास १ ३४६ अ।
सप्तव्यसन चारित्र—४ ३२६ ब, इतिहास १ ३४८ अ।
सप्तांक—४.३२६ ब।
सप्रतिपक्षी—४ ३२६ ब।
सप्रतिपक्षी प्रकृति—प्रकृतिबध ३ ९१ अ।
सप्रतिपक्षी हेत्वाभास—४.३२६ ब।
सप्रदेशी द्रव्य—द्रव्य २ ४५६ ब।
सभाभवन—चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ, ज्योतिषी देवो का प्रासादो मे २ ३५१।
सभामंडप—चैत्यचैत्यालय २ ३०३ अ।
समंतभद्र—४.३२६ ब, मूलसघ १ ३२२ ब, इतिहास १.३२८ ब, १.३४० ब।
समंतभद्र (लघु)—सेनसघ १.३२६ ब, इतिहास १.३४२ ब।
समतानुपात क्रिया—क्रिया २.१७४ ब।
सम—४ ३२७ अ, सामायिक ४ ४१४ ब, ४.४१५ अ, सोम लोकपाल का यान ४ ५१३ अ।
समकित चौबीसी व्रत—४.३२७ अ।
समकेंद्रिय—४ ३२७ अ।
समगुण—स्कध ४ ४४८ अ।
समचतुरस्र संस्थान—सस्थान ४ १५४ अ।
समचतुरस्र संस्थान नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३ ९७, बधस्थान ३ ११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रियोगो भग १ ४०४ सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९ अ।
समच्छिन्नक—४ ३२७ अ।
समच्छेद—४.३२७ अ, गणित २ २२३ ब।
समता—४ ३२७ अ, उपयोग (युद्ध) १ ४३० ब, १ ४३१ अ, उपेक्षा १ ४४४ ब, चारित्र २ २८३ ब, २ २८४ अ, तप २ ३६० ब, धर्म २ ४६७ अ, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, सल्लेखना ४ ३९० ब, ४ ३९२ अ, साधु ४ ४०६ अ, सामायिक ४ ४१४, अ ब, ४ ४१५ अ, सामायिक व्रत ४ ४१७ ब, सामायिक चारित्र ४.४१९ अ।
समता परिणाम—सामायिक ४ ४१४ ब।
समता भाव—सामायिक व्रत ४ ४१७ ब सामायिक चारित्र ४ ४१९ अ।
समता रहित साधु ४.४०७ अ।
समतोया—४ ३२७ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
समदत्ति—दान २.४२२ ब।
सद्विबाहु—४.३२७ अ।
समधारा—गणित २.२२९ अ।
समनस्क—सज्ञा ४.१२१ अ, भज्ञी ४ १२२ अ।
समन्वय—४ ३२७ ब। निश्चय-व्यवहार ज्ञान २.२६९ ब, निश्चय-व्यवहार चारित्र २.२९२ अ, निश्चय व्यवहार मोक्षमार्ग ३.३३८ ब निश्चय-व्यवहार सम्यग्दर्शन ४.३५९ ब, निश्चय-व्यवहार हिंसा ४.५३५ ब, बाह्याभ्यन्तर तप २.३६० ब।
समपर्यंकासन तप—कायक्लेश २.४७ ब।
समपाद तप—कायक्लेश २.४७ अ।
समभाव—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ, सामायिक ४.४१४ अ, ४.४१५ अ, सामायिक व्रत ४.४१७ ब, सामायिक चारित्र ४.४१९ अ।

समभिरूढ नय—नय २.५२८ अ, २.५३९ अ, नय (एवंभूत) २ ५४१ ब, निक्षेप २ ५९५ ब, सप्तभगी ४ ३२३ ब।
समभिरूढनय उपक्रम—उपक्रम १ ४१६ ब।
समभिरूढ नयाभास—नय २ ५४० ब।
समभूर्धाग्नि नाद—नारायण ४ १८ ब।
समय—४.३२७ ब, करणत्रिक (अध.करण) २.८ अ, २.१० अ, (अपूर्वकरण) २ १२ ब, काल अविभागी २ ८७ अ, काल (उत्पत्ति) २ ८७ अ, कालद्रव्य २.८४ अ, कालप्रमाण २ २१६ अ-ब, पर्याय ३ ४८ अ, मूढता ३ ३१५ ब, शब्द-अर्थ-ज्ञान समय ४ ३२८ अ, सामायिक ४ ४१४ ब, ४ ४१५ अ, स्व-पर समय ४.३२८ अ।
समयप्रबद्ध—४.३२८ ब, उदय १ ३६८ ब, १ ३६९-३७०, प्रदेश ३.१३५ ब, प्रदेशाल्पबहुत्व १ १५७, १ १७१, ३.१३५ ब, प्रदेश भागाभाग ४ ११६, प्रदेशवर्गणा ३ १३५ ब, सहनानी २ २१९ अ।
समय-भूषण—४.३२९ अ, इद्रनदि १ २९९ ब।
समय भेदाभेद—उत्पादादि १ ३६०।
समयमूढता—मूढता ३ ३१५, सम्यग्दर्शन ४ ३६१ ब।
समय वक्तव्यता—वक्तव्यता ३.४९६ अ।
समयसत्य—सत्य ४ २७२ अ।
समयसार—४ ३२९ अ-ब, अनुभव १ ८३ अ, मोक्षमार्ग ३.३३६ अ, सामायिक ४ ४१९ ब।
समयसार (शास्त्र)—४.३२९ ब, इतिहास १ ३४० ब।
समयसार (आत्मख्याती वचनिका)—इतिहास १.३४८ अ।
समयसारकलश—इतिहास १.३४२ अ।
समयसार टीका—प्रथम—अमृतचद्र १ १३३ अ, इतिहास १.३४३ अ।
समयसार नाटक—४ ३२९ ब, इतिहास १.३४७ ब।
समयसार नाटक टीका—४ ३११ ब।
समरसी भाव—ध्यान २.४९९ अ।
समवदान कर्म—कर्म २ २६ अ-ब, सत् ४ २६९, संख्या ४.११६ ब, क्षेत्र २ २०८, भाव ३.२२३।
समवधान कर्म—कर्म २.२६ ब, सत् ४.२६९ अ।
समवसरण—४.३२९ ब, इद्रभूति गणधर १ २९९ ब।
समवसरण व्रत—४.३३४ अ।
समवाय—४.३३४ अ, द्रव्य २.४५४ ब, समय ४.३२७ ब।
समवाय पदार्थ—समवाय ४ ३३४ ब।
समवाय संबध—द्रव्य २ ४६० ब, नय २ ५४९ ब, समवाय ४.३३४ अ, संबंध ४.१२६ अ, स्कध ४.४४७ ब।
समवायांग—श्रुतज्ञान ४.६८ अ।
समवायी—४.३३५ ब।
समवायी कारण—समवायी ४.३३५ ब।
समवृत्तस्तूप—४.३३६ अ।
समवृत्ति—४ ३३६ अ।
समांतर श्रेणी—४ ३३६ अ।
समांतरानीक—४ ३२६ अ।
समांतरी गुणोत्तर श्रेणी—४ ३३६ अ।
समाचार—४ ३३६ अ।
समाचार काल—काल २.८१ ब।
समाधान क्रिया—क्रिया २.१७४ ब।
समादेश—४.३३७ अ, उद्दिष्ट १.४१३ अ।
समाधान—४.३३७ अ, ध्यान २ ४९६ अ।
समाधि—४ ३३७ अ, अनुभव १ ८३. अतरात्मा १.२७ अ, उपयोग (शुद्ध) १ ४३१ अ, उपयोग (ध्यान) १ ४६६ अ, गुप्ति २ २५० ब, ज्ञान २ २६८ अ, २.२६९ ब, तप २ ३६१ अ, तीर्थ २ ३९३ अ, धर्म २ ४७१ अ, ध्यान २ ४९८ अ, २.४९९ अ, ध्यान (उपयोग) १ ४६६ अ, पद्धति ३ ९ अ, प्राणायाम ३.१५५ अ-ब, मोक्षमार्ग ३ ३४० अ, योग ३ ३७५ अ, शुक्लध्यान ४ ३२ ब, सल्लेखना ४ ३९० ब, सुख ४.४३१ ब, ४.४३२ ब।
समाधिगुप्त—४ ३३८ अ, तीर्थंकर २ ३७७।
समाधितंत्र—४ ३३८ अ, इतिहास १ ३४१ अ।
समाधितंत्र टीका—इतिहास १.३४२ ब।
समाधिमरण—सल्लेखना ४ ३९४ अ।
समाधिरस्तु—विनय ३ ५५२ अ।
समाधि सधारणता—समाधि ४.३३७ ब।
समान खड—४.३३७ ब।
समान गोत्र—४ ३३८ अ।
समान जातीय द्रव्य पर्याय—पर्याय ३.४६ अ।
समानता—नय (ऋजुसूत्र) २.५५० अ।
समानदत्ति—२ ४२२ ब।
समानाधिकरण—४.३३८ अ।
समानुपात सिद्धांत—४.३३८ अ।
समाय—सामायिक ४.४१४ ब, ४.४१५ अ।
समारभ—४.३३८ अ।
समारोप—उपचार १.४१८ ब।
समास—४.३३८ अ, जीवसमास २.३४१ ब, श्रुतज्ञान (अक्षर व पर्याय समास) ४.६५ अ।

समाहार—४.३३८ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन ३ ४६८।

समिति—४ ३३८ अ, अहिंसा १.२१७ ब, अहिंसाव्रत की भावना १.२१६ अ, उपयोग (शुभ) १ ४३३ अ, १ ४३४ ब, गुप्ति २ २५० ब, चारित्र २ २८२ अ, चारित्रशुद्धि व्रत २ २९४ ब, धर्म २ २५० ब, सयम ४.१३६ ब, ४ १३८ ब, सवर (समिति) ४ ३४२ ब, सामायिक चारित्र ४ ४२० अ, सूक्ष्मसापराय चारित्र ४ ४४१ ब।

समीकरण—४ ३४२ ब।

समीपस्थ तत् उपचार - उपचार १ ४२० ब।

समीरण गति—वानरवंश १ ३३८ ब।

समुच्छिन्नक्रिया-निवृत्ति—शुक्लध्यान ४.३५ अ, ४ ३६ ब।

समुत्कीर्तना—अनुयोगद्वार १ १०३ ब।

समुत्पत्ति—कषाय २ ३६ अ।

समुत्पत्तिक अनुभाग सत्त्वस्थान—अल्पबहुत्व १ १६५ ब।

समुत्पत्तिक कषाय—२ ३५ ब, २ ३६ अ, २ ३७ अ-ब।

समुत्पत्तिस्थान—अल्पबहुत्व १.१६५ ब, अनुभाग १ ८९ ब-९० अ।

समुत्युक्त ज्ञायक शरीर—अतर १ ३ ब।

समुद्घात—४ ३४२ ब, केवली २ १५९ अ, मरण ३ २८२ अ, योग (वचनयोग) ३ ३८० ब, आहारक १ २९६ ब।

समुद्दिष्ट—४ ३४४ अ, गणित २ २२६ अ-ब, २ २२७ ब।

समुद्देश—४ ३४४ अ, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

समुद्र—४ ३४४ अ, राक्षसवश १ ३३८ अ, स्वप्न ४ ५०४ ब, ४ ५०५ अ।

समुद्रगुप्त—४.३४४ अ, गुप्तवश १ ३११ अ, १ ३१५।

समुद्रविजय—४ ३४४ अ, अन्धकवृष्णि १ ३० अ, चक्रवर्ती ४ ११ ब, तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३८०, यदुवश १ ३३७, हरिवश १ ३४० अ

सम्मइजिण चरिउ—इतिहास १ ३४५ ब।

सम्मत्तगुणविहाण कव्व—इतिहास १ ३४६ अ।

सम्मत सत्य—सत्य ४ २७१ ब।

सम्मद—शलाकापुरुष ४ २६ अ।

सम्मान—ब्रह्मचर्य ३ १८९ ब, विनय ३ ५५२ ब।

सम्मिश्र—भोगोपभोग ३ २३९ ब, सचित्त ४ १५८ अ।

सम्मेदशिखर—तीर्थंकर प्ररूपणा २ ३८५।

सम्यक्—४ ३४४ अ, एकात १.४५९ ब, १ ४६२ ब, श्रुतज्ञान ४.५९ ब।

सम्यक्चारित्र—चारित्र २ २८३ अ-ब। दे० चारित्र।

सम्यक्त्व—दे० सम्यग्दर्शन।

सम्यक्त्व उद्योतन—उद्योत १.४१४ अ।

सम्यक्त्वकौमुदी—४.३४४ अ, इतिहास १.३४६ ब।

सम्यक्त्वक्रिया—क्रिया २.१७४ ब।

सम्यक्त्वमिथ्यात्व—दे० सम्यग्मिथ्यात्व।

सम्यक्त्वमोहनीय—दे० सम्यक्प्रकृति।

सम्यक्त्व वाद—एकात १ ४६५ ब।

सम्यक्त्वाचरण—चारित्र २ २८५ अ, २ २९३ अ।

सम्यक्त्वाराधना—आराधना १ २७१ ब।

सम्यक् नय—नय २ ५२०, २ ५२४ अ।

सम्यक् प्रकृति—देशघाती १.९२ ब, मोक्षमार्ग ३ ३४३ अ, मोहनीय ३.३४३ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३७१ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३ ३४१, स्थिति ४ ४६१, स्थिति सत्त्वस्थानों का अल्पबहुत्व १.१६४ ब, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७, बधस्थान ३.१०९, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्व काल २.२१०, त्रिसयोगीभग १ ४०१ ब, उपशम १ ४३९ अ, क्षय २ १७९ अ, सक्रमण ४.८६ अ, ४.८७ अ, ४ ८८ अ। अल्पबहुत्व १ १६८।

सम्यक्त्वोद्योत—उद्योत १ ४१४ अ।

सम्यगनेकांत - अनेकांत १.१०५ ब।

सम्यगेकांत—एकात १ ४५९ ब, १.४६२ ब।

सम्यगवधिज्ञान अवधिज्ञान १ १८७ अ।

सम्यग्ज्ञान—अधिगमज १ ५१ ब, अनुभव १.८१-८६, अभ्यास १.१३१ ब, आगमज्ञान १.२२८ अ, आत्मा ३.३३७ अ, उपयोग १.४२९ ब १.४३१ ब, उपलब्धि १ ४३५ अ, कषाय १.४३२ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६०, चारित्र २.२८६ अ-ब, जन्म (गति-अगति) २.३२२ अ, तप २.३६० ब, धर्म ३.४६९ ब, ध्यान २.४९५ ब, २.४९६ ब। ध्येय २.५०० अ, निश्चय व्यवहार ज्ञान २.२७० ब, निसर्गज १.५१ ब, प्रज्ञा १ ८७ अ, प्रज्ञाश्रमण १.४५० ब, प्रत्याख्यान ३ १३२ ब, प्रमाण २.२५८ ब, २.५२६ अ, ३.१४१ ब, बुद्धि ३.१८४ ब, मिथ्याज्ञान (अज्ञान) १ ३७ अ, २.२६४ अ, मिश्रज्ञान ३.३०८ अ-ब, मोक्षमार्ग ३.३२८ अ-ब, ३.३३३ ब, ३.३३७ अ, योग १ ४३२ ब, राग ३ ३९५ अ, विशुद्धि ३.५७० अ, शुद्धोपयोग (उपयोग) १.४३४ अ, शुद्धाशुद्ध उपयोग १.४३२ अ, श्रुतकेवली ४ ५५ ब, श्रुतज्ञान (आगम) १.२२९ ब, ४.५९ ब, सम्यग्ज्ञान २ २६२ अ, २.२६५ ब, सम्यग्-

दर्शन ४ ३५३ ब, सम्यग्दृष्टि ४ ३७५ ब, ४.३७६ ब, सिद्धो का अल्पबहुत्व १.१५४, सुख ४.४३२ अ, स्वसवेदन (अनुभव) १ ८१-८७ अ।

सम्यग्ज्ञानचंद्रिका—इतिहास १ ३४८ अ।

सम्यग्दर्शन—४ ३४४ ब, अश (मिश्र) ३ ३१० अ, अधःकरण २ ७ अ, अधिगमन १ ५१ अ, अनन्तानुबधी १ ६० ब, अनन्तानुबधी विसयोजन १.४३९ ब, अनिवृत्तिकरण (करण) २.१३ अ, अनुप्रेक्षा १.७८ ब, अनुभव १ ८२ ब, अनुभाग क्षयोपशम) २ १८६ अ, अतरकरण १ २५ ब, अतर काल १.४ अ, अपूर्वकरण (करण) २.११ ब, अभ्यास १ १३१ ब, अवधिज्ञान १ १९४ ब, १ १९५ अ, आयु (बद्धायुष्क) १ २६२ ब, उपलब्धि १ ४३५ अ, उपशम १.४३७ ब-१ ४३९ ब, करण चिह्न (अवधिज्ञान) १ १९२ अ, करणत्रिक २ ६-१४, करणलब्धि (लब्धि) ३ ४१४ अ, करुणा २ १५ अ, कर्मभूमि (भूमि) ३ २३५ ब, कारण (सम्यग्दर्शन) ४.३६२ अ, क्षय २ १७९ अ, क्षयोपशम २ १८३ ब, २.१८६ अ-ब, चारित्र २ २८६ अ-ब, २ २८७ अ, जन्म २ ३१३ ब, जन्म (गति-अगति) २ ३२२ ब, तप २.३६० ब, तिर्यंच गति २ ३६७ ब, तीर्थंकर २ ३७५ अ, त्रिकरण २.६-१४, देवगति २.४४७ अ, द्वितीयोपशम (उपशम) १ ४३९ अ, धर्म २ ४६७ ब, नरकगति २.५७४ ब, २ ५७५ ब, निश्चयनय (नय) २.५५६ अ, निसर्गज (अधिगमज) १ ५१ अ, प्रत्याख्यान ३ १३३ ब, प्रथमोपशम (उपशम) १ ४३७ ब, १ ४३८ अ, बद्धायुष्क (आयु) १.२६२ ब, भूमि (कर्मभूमि) ३ २३५ ब, मल ३.२८८ ब, मिश्र (सम्यग्मिथ्यात्व) ३ ३१० अ, मोक्षमार्ग ३ ३३७ अ, रुद्र ४.२२ ब, लब्धि (करणलब्धि) ३.४१४ अ, (पचलब्धि) ३ ४१२ ब, लिंग ४.४३० ब, लेश्या ३ ४२७ अ, विकल्प ३ ५३७ ब, वेद ३ ५८८ अ, व्रत ३.६२५ ब, शंका २ ५८६ ब, ४ १४५ ब, शलाकापुरुष ४ २५ ब, ४.२६ ब, श्रद्धान ४ ४५ ब, श्रावक ४.४९ ब, श्रोता ४.७५ अ, संज्ञी ४ १२२ ब, सम्मूर्च्छिम ४ १२७ ब, सम्यग्ज्ञान २ २६३-२६५, सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ, ४.३६२ अ, ४ ३७१ अ, साधु ४ ४०६ ब, स्वाध्याय ४ ५२३ अ।

सम्यग्दर्शन—प्ररूपणा—बध ३.१०८, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३८५, उदयस्थान १.३९३, उदीरणा १.४११ अ, सत्त्व ४.२८४, ४.२८६, सत्त्वस्थान ४.३०२, ४ ३०६, त्रिसंयोगीभंग १.४०८ अ। सत् ४.२४५, संख्या ४ १०८, क्षेत्र २ २०६, स्पर्शन ४.४९२, काल २ ११७, अतर १ २०, भाव ३.२२१ ब, अल्पबहुत्व १ १५२, भागाभाग ४ ११४। पंचशरीर स्वामित्व—निर्देश ४ ७, अल्पबहुत्व १ १६० अ। षट्कर्म स्वामित्व ४.७।

सम्यग्दर्शन वाक् वचन ३ ४९७ ब।

सम्यग्दर्शनार्य—आर्य १ २७४ ब।

सम्यग्दृष्टि—४ ३७३ ब, अनुभव १.८४ ब, अवधिज्ञान १ १९५ अ, आगमार्थ ग्रहण १.२३२ ब, आर्तध्यान १ २७४ ब, करणदशक २ ६ अ, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब, क्षायिक २ १८६ ब, गर्हण २.२३८ ब, गुणस्थान २ २४६ ब, चेतना २ २९७ ब, तीर्थंकर (जन्म) २ ३७६ ब, दर्शन २ ४१७ अ, दर्शन प्रतिमा २ ४१८ अ, देवगति २.४४८ ब, नय २ ५२६ अ, निःशकित २ ५८६ ब पापभीरु (आगम) १ २४२ ब, बद्धायुष्क १ २६२ ब, मिथ्यादृष्टि, ३ ३०५ अ, राग (भोग) ३ ३९९ अ, ३.४०० अ, राग (वैराग्य) ३ ३९८ अ-ब, लेश्या ३.४२७ अ विसयोजना ३ ५७१ ब, वैराग्य ३ ३९८ अ-ब, शका ४ १४५ ब, श्रद्धान ४.४५ अ, ४ ४६ अ, श्रुतज्ञान ४ ६० अ, सक्रमण ४ ८७ अ, सख्या ४ ९३ अ, सशय ४.१४५ ब, सम्यग्ज्ञान २ २६५ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३५१ अ। प्ररूपणा—दे० अविरतसम्यग्दृष्टि।

सम्यग्मिथ्याचारित्र—चारित्र २ २८० ब।

सम्यग्मिथ्यात्व (प्ररूपणा)—बध ३ १०८ बधस्थान ३ ११३, उदय १ ३८६, उदयस्थान १ ३९३ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८४, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४ ३०६, त्रिसयोगी भग १ ४०८ अ। सत् ४.२६०, सख्या ४.१०९, क्षेत्र २ २०६, स्पर्शन ४ ४९३, काल २ ११९, अतर १ २१, भाव ३ २२१ ब, अल्पबहुत्व १.१५२ अ।

सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति—मिथ्यात्वप्रकृति का त्रिधाकरण (उपशम) १ ४३९ अ, सर्वघाती १.१३ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३ ३४१, ३.३४३ अ, स्थिति ४ ४६१, स्थितिसत्त्व जघन्य ४ २७७ अ, स्थितिसत्त्व स्थानो का अल्पबहुत्व १.१६५, अनुभाग १.९३ अ, १ ९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३.९७, बंधस्थान ३ १०९, उदय १.३७५, ३ ३०७ ब, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वकाल २ १२०, स्थिति सत्त्व जघन्य ४.२७७ अ, सत्त्वस्थान ४.२९६, त्रिसयोगी

भग १ ४०१ ब। सक्रमण ४ ८६ अ, ४ ८७ अ, ४.८८ ग, अल्पबहुत्व १ १६८।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि—अनतानुबधी ३ ५७१ ब, अतर काल १ ४ अ, आरोहण-अवरोहण (गुणस्थान) २ २४७, उदय (अनतानुबधी) ३.५७१ ब, उदय (मिश्रप्रकृति) ३ ३०७ ब, करणदशक २ ६, कषाय २ ४० ब, काय २ ४५ ब, नरकगति २ ५७५ ब, परिषह ३ ३४, प्रत्यय ३ १२७, बद्धायुष्क १ २६२ ब, मरण ३ २८२ ब, सक्रमण ४.८६ अ, ४ ८७ अ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि (प्ररूपणा)—बध ३.९७, बंधस्थान ३ ११०, ३.१११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९२ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४.२८७, ४ २९६, ४.३०४, त्रिसयोगी भग १ ४०६ अ। सत् ४ १६२, सख्या ४.९४, क्षेत्र २.१९७, स्पर्शन ४ ४७७, काल २.९९, अंतर १.७, भाव ३.२२१, अल्पबहुत्व १.१४३।

सयलविहिविहाण—इतिहास १.३४३ ब।

सयोग—गुणस्थान ३ २४६ ब।

सयोगकेवली—अर्हन्त १ १३८ अ, आरोहण (गुणस्थान) १.२४७, करणदशक २ ६ अ, कर्मक्षय (केवली) २.१५८ अ, कषाय २ ४० ब, काय २.४५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, केवली २ १५७ ब, २.१५८ अ, नामकर्म उदयस्थान १ ३९६, १ ३९७, परिषह ३ ३४, प्रदेशनिर्जरा का अल्पबहुत्व १.१७४ अ, प्राण ३ १५३ ब, वनस्पति (अप्रतिष्ठित प्रत्येकशरीरी) ३ ५०६ अ, सक्रमण ४ ८६ ब, समुद्घात ४ ३४३ अ।

सयोगकेवली (प्ररूपणा)—बध ३ ९७, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३९२ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७९, सत्त्वस्थान ४ २८९, ४.२९६, ४ ३०४, त्रिसयोगी भंग १.४०६ अ। सत् ४ १६४, संख्या ४.९४, क्षेत्र २.१९७, स्पर्श ४.४७७, काल २.१००, अतर १ ७, भाव ३.२२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४३।

सयोगी—समुद्घात ४ ३४३। दे० ऊपर सयोगकेवली।

सयोगी जिन—केवली २ १५७ ब। दे० ऊपर सयोग केवली।

सरल—तीर्थंकर अभिनदन २.३८३।

सरलता—आर्जव १.२७२ अ।

सरल समीकरण—४.३७९ अ।

सरस—४.४३७ अ।

सरस्वती—तीर्थंकर वज्रधर २ ३९२, व्यन्तरेंद्र वल्लभिका ३ ६११ ब।

सरस्वतीमत्रकल्प—इतिहास १ ३४३ ब।

सरस्वतीयंत्र—यत्र ३.३६४।

सरह—४ ३७९ अ।

सरहपा—४ ३७९ अ।

सरागचारित्र—अपवादमार्ग १ १२० ब, उपयोग (शुभ) १ ४३३ अ, चारित्र २.२८० ब, २ २८४ ब, २.२९०-२९३।

सराग छद्मस्थ—छद्मस्थ २.३०५ ब।

सराग श्रमण—साधु ४.४०४ अ।

सराग सयम—चारित्र २.२९१ अ।

सराग सम्यग्दर्शन—सम्यग्दर्शन ४ ३६० ब।

सराग सम्यग्दृष्टि—सम्यग्दर्शन ४.३५८ अ। सम्यग्दृष्टि ४ ३७७ ब।

सरित्—४ ३७९ अ। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ। नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३ ४८०, ३.४८१, अकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

सरीसृप—निर्देश (तिर्यंच) २.३६७, आयु १.२६३।

सरोवर—स्वप्न ४.५०४ ब।

सर्ज कषाय—कषाय २.३५ ब, २.३६ अ।

सर्प—तीर्थंकर पार्श्वनाथ २ ३७९, नक्षत्र २ ५०४ अ।

सर्पवत् चाल—करण (अध.करण) २.१० अ, उपशम १ ४३९ अ।

सर्पसम श्रोता—उपदेश १ ४२५ ब, श्रोता ४ ७४ ब।

सर्पिस्रावी ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५६ ब।

सर्वजय—विद्याधर वश १.३३९ अ।

सर्व—४.३७९ अ, अनशन १.६५ ब। तीर्थंकर (सर्व ऋद्धि संख्या) २ ३८७, मंत्र ३.२४८ अ।

सर्व-असर्व बध—बध ३ ११४।

सर्वकरण—उपशम १.४३७ अ।

सर्वगधा—४.३७९ अ, अरुणाभास द्वीप का देव ३.६१४।

सर्वगत—४.३७९ अ, केवलज्ञान २ १५३ ब, जीव २.३३८ द्रव्य २.४५७ अ, स्कध ४ ४४७ अ।

सर्वगतत्व—४.३७९ ब।

सर्वगत नय—नय २ ५२३ अ।

सर्वगंध—४.३७९ अ, अरुणाभास द्वीप का देव ३.६१४।

सर्वगुप्त—४.३७९ ब, गणधर २.२१२ ब, तीर्थंकर विमलनाथ २.३७८।

सर्वगुप्त—इतिहास १.३२८ अ।

सर्वगुप्ति—तीर्थंकर अनंतनाथ २ ३७८ ।
सर्वज्ञत्व—४ ३७९ ब, अनतत्व १ ५८ ब, अनुभव १.८३ ब, केवलज्ञान २ १४७ अ-२.१५१ अ, केवली २.१५७ ब । वक्तृत्व (केवलज्ञान) २ १५२ अ, श्रुतज्ञान ४ ६३ अ, ४ ६४ अ ।
सर्वज्ञत्व शक्ति—४ ३७९ ब ।
सर्वज्ञदेव—देव (भगवान्) २.४४४ अ ।
सर्वज्ञबाह्य—कर्ताकर्म ५.२३ अ-ब ।
सर्वज्ञसिद्धि—अनतकीर्ति १ ५९ ब, इतिहास—लघु १.३४२ अ, बृहद् १ ३३० अ, १ ३४२ अ ।
सर्वज्ञात्म मुनि—४ ३७९ ब, वेदात ३ ५९५ ब ।
सर्वग्राहकता—केवलज्ञान २.१४७ अ ।
सर्वघाती—अनुभाग १ ९१-९३, अनुभाग का अल्पबहुत्व १ १७१ अ, उदय १ ३७१ ब, स्पर्धक ४.४७३ अ ।
सर्वचंद्र—४.३७९ ब, नदिसघ देशीय गण १.३२४ ब, इतिहास १ ३३० अ ।
सर्वजनानंद—तीर्थंकर पुष्पदत व शीतलनाथ २.३७८ ।
सर्वतंत्र—न्याय २.६३३ ब, सिद्धात ४.४२७ ब ।
सर्वतोभद्र—चक्रवर्ती ४ १५ अ, ब्रह्मेंद्र का यान ४ ५११ ब, यम लोकपाल का यान ४ ५१३ अ ।
सर्वतोभद्र यंत्र (लघु व बृहद्)—यत्र ३ ३६५ ।
सर्वतोभद्र व्रत ४.३७९ ब ।
सर्वतोभद्रा—४.३८० अ, नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३.४९१, अकन ३ ४६५ ।
सर्वथा—४.३८० अ, एकात १.४६० अ, नय २.५२५ अ, स्याद्वाद ४.५०० अ, ४ ५०१ अ-ब ।
सर्वदर्शित्व शक्ति—४ ३८० अ ।
सर्वदेव—गणधर २ २१२ ब ।
सर्वदेश दोष—आहार १.२९० ब, उद्दिष्ट १.४१३ ब ।
सर्वदेश अभिघट दोष—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ ब ।
सर्वदेश-त्याग—व्रत ३ ६२७ ब ।
सर्वधन—गणित २.२२९ ब, २.२३० ब ।
सर्वधारा—गणित २.२२९ अ ।
सर्वनंदि—४ ३८० अ, इतिहास १ ३२९ अ, १ ३४१ अ ।
सर्वपवगत भंग—३.१९७ अ ।
सर्वपदार्थ—श्रुतज्ञान ४.६३ अ ।
सर्वपदार्थ स्थितत्व—अनेकात (सापेक्ष धर्म) १.१०९ अ ।
सर्वपरित्याग—उत्सर्गमार्ग १.१२१ अ, उपयोग (शुद्ध) १.४३१ अ ।
सर्वप्रभ—४.३८० अ, तीर्थंकर २ ३७७ ।
सर्वप्रिय—गणधर २ २१२ ब ।
सर्वभद्र—४ ३८० अ, यक्ष ३.३६९ अ ।
सर्वमत—जीव २.३३६ ब ।
सर्वयज्ञ—गणधर २ २१२ ब ।
सर्वयश—गणधर २ २१२ ब ।
सर्वरक्षित—४ ३८० अ, लौकातिक देव ३ ४९३ ब ।
सर्वरत्न—४ ३८० अ, मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३.४८६, अकन ३ ४६४ । रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ-ब, विस्तार ३ ४८७, अकन ३ ४६८ ।
सर्वरत्नमयी—सुमेरु की परिधि ३.४४९ अ, वनखण्ड ३ ४५० अ ।
सर्वविजय—गणधर २ २१२ ब ।
सर्वविद्याप्रकर्षिणी—विद्या ३.५४४ अ ।
सर्वविद्याविराजिता—विद्या ३.५४४ अ ।
सर्वविपरिणामना—विपरिणाम ३.५५५ ब ।
सर्वविभक्ति—अनुयोगद्वार १.१०३ ब
सर्वव्यापी—केवलज्ञान (सर्वगत) २.१५३ ब, जीव (सर्वगत) २ ३३८ अ, द्रव्य (सर्वगत) २.४५७ अ, मुक्तजीव ३ ३२९ अ । स्कन्ध (सर्वगत) ४.४४७ अ ।
सर्वशून्य दोष—कर्ता-कर्म २ २२ ब ।
सर्वश्यामा—तीर्थंकर अनंतनाथ की माता २ ३८० ।
सर्वश्री—कल्की (आर्यिका) २ ३१ ब, तीर्थंकर अनतनाथ (आर्यिका) २ ३८८, व्यंतरेंद्र की वल्लभिका ३.६११ ब ।
सर्वसंकर दोष—कर्ता-कर्म २.२२ ब ।
सर्वसंक्रमण—सक्रमण ४.८४ अ-ब, ४ ९० ब, अल्पबहुत्व १.१७४ ब ।
सर्वसंघ—गणधर २.२१३ अ ।
सर्वसाधु—साधु ४ ४०३ अ ।
सर्वसावद्य निवृत्ति—सामायिक ४.४१७ ब ।
सर्वसावद्य योग—सामायिक ४.४१९ ब ।
सर्वसुंदर—४.३८० ब ।
सर्वसेना—व्यतरेंद्र गणिका ३.६११ ब ।
सर्वस्थिति—अनुयोगद्वार १.१०३ अ, स्थिति ४ ४५६ ब ।
सर्वस्थिति विभक्ति—स्थिति ४.४५६ ब ।
सर्वस्पर्श—स्पर्श ४.४७६ अ ।
सर्वांग—केवलज्ञान २.१४६ अ ।
सर्वातिचार—अतिचार १.४२ ब, १.४४ अ ।
सर्वातिचार प्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३.११६ अ ।

सर्वात्मभूत—तीर्थंकर २ ३७७ ।
सर्वानंत—अनंत १ ५५ ब ।
सर्वानशन—अनशन १ ६५ ब ।
सर्वानुकंपा—अनुकंपा १ ७० अ ।
सर्वायुध—तीर्थंकर २ ३७७ ।
सर्वार्थ—तीर्थंकर चंद्रप्रभ २ ३८३, रत्नप्रभा (चित्रा पृथिवी) ३ ३९१ अ ।
सर्वार्थपुर—४.३८० ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब ।
सर्वार्थसिद्धा—विद्या ३ ५४४ अ ।
सर्वार्थसिद्धि—देव—अवगाहना १.१८१ अ, अवधिज्ञान १.१९८ ब, आयु १ २६९, आयुबंध के योग परिणाम १ २५८ ब, द्विचरम शरीरी ४ ५१० ब । स्वर्ग—विमान ४ ३८० ब । नामनिर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४.५१५, ४ ५१७, चक्रवर्ती ४ १० ब ।
सर्वार्थसिद्धि (देवप्ररूपणा)—बंध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसंयोगीभंग १.४०६ ब । सत ४ १९२, संख्या ४ ९८, क्षेत्र २ २००, स्पर्शन ४ ४८१, काल २.१०४, अंतर १ १०, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५ ।
सर्वार्थसिद्धि (शास्त्र)—४ ३८० ब, इतिहास १ ३४१ अ ।
सर्वार्थसिद्धि वचनिका—इतिहास १ ३४८ अ ।
सर्वार्थसिद्धि व्रत—४ ३८० ब ।
सर्वावधि—अवधिज्ञान—निर्देश १ १८७ ब, १ १९३ ब-१९९, गुणप्रत्यय १ १९३ ब, विषय १ १९९ ।
सर्वाशन—अनशन १ ६६ अ, अपवादमार्ग १ १२१ अ, तप २ ३६० अ ।
सर्वासंख्यात—असंख्यात १ २०६ अ ।
सर्वोपशम—सम्यग्दर्शन ४ ३६८ ब ।
सर्वोपशमन—धर्मध्यान २ ४८३ अ ।
सर्वोपशमना—सम्यग्दर्शन ४ ३६८ ब ।
सर्वौषध ऋद्धि—ऋद्धि १ ४४७, १ ४५५ ब ।
सर्षप फल—४ ३८० ब, तौल का प्रमाण २.२१५ अ ।
सलक्षण—आशाधर १ २८० ब ।
सल्लक्षण—आशाधर १.२८० ब ।
सल्लेखना—४ ३८० ब, शुद्धि ४.४० ब, सल्लेखना के ४० अधिकार ४ ३९० अ ।
सल्लेखना काल—काल २.८० ब ।
सवरी गुह्यगूहन—४ ३९७ ब ।
सवर्णकारिणी—विद्या ३ ५४४ अ ।
सवर्तक—तीर्थंकर चन्द्रप्रभ २.३८३ ।
सवस्त्र लिंग—लिंग ३ ४१७ अ, वेद ३ ५८९ ब ।
सविकल्प—विकल्प (ज्ञान) ३.५३७ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३६२ अ ।
सविचार—शुक्लध्यान ४.३३ अ-ब, सल्लेखना ४.३८८ ब, ४ ३९० अ ।
सविचार भक्त प्रत्याख्यान—सल्लेखना ४ ३८८ ब, ४ ३९० अ ।
सविचार स्थान तप—कायक्लेश २.४७ अ ।
सवितर्क—शुक्लध्यान ४ ३३ ब, ४ ३४ ब ।
सविपाक—अनुप्रेक्षा (निर्जरा) १.७५ ब, उदय १.३६५ ब ।
सविपाक उदय—उदय १ ३६५ ब ।
सविपाक निर्जरा—अनुप्रेक्षा १ ७५ ब ।
सविश्वरूपत्व—अनेकांत (सापेक्षधर्म) १.१०९ अ ।
सवृद्धिक दोष—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १.४१३ अ ।
सवृद्धिक प्रामृष्य दोष—आहार १.२९० ब ।
सवेद भाग—वेद ३ ५८७ ब ।
सवैडूर्य—सुमेरु ४ ४३७ अ ।
सव्यभिचार—न्याय २ ६३३ ब ।
सशल्य मरण—मरण ३.२८१ ब ।
ससन्निरोध तप—कायक्लेश २.४७ अ ।
ससिक्थ—४.३९८ अ ।
सहकार—तीर्थंकर नेमिनाथ २.३८३ ।
सहकारी—४ ३९८ अ, काल २.६३ ब ।
सहकारीकरण—कारण २ ५६ अ, २ ५७ अ, २ ६३ ब, २ ६६ अ, काल २ ८२, २ ८५ अ, निमित्त २.६१२ अ ।
सहगमन—संगति ४.११९ अ ।
सहचर—हेतु ४.५३८ ।
सहज ४.३९८ अ ।
सहज दुःख—दुःख २.४३४ ब ।
सहदेव—४ ३९८ अ, कुरुवंश १.३३६ अ ।
सहदेवी—४.३९८ अ, चक्रवर्ती ४ ११ ब ।
सहधर्मिणी—स्त्री ४.४५२ अ ।
सहनानी—४ ३९८ अ ।
सहप्रवृत्त—गुण २.२४२ ब, द्रव्य २.४५४ अ ।
सहभाव—४.३९८ अ, अविनाभाव १.२०२ ब, गुण २ २४३ अ ।

सहभावी—गुण २ २४२ ब, द्रव्य (गुण) २ ४५४ अ, पर्याय ३ ४५ ब।
सहभावी विशेष—द्रव्य २.४५४ अ।
सहभू—गुण २ २४२ ब, अन्वयी १.११२ ब।
सहभूत—गुण २ २४३ अ।
सहभोजन—आहार १ २८६ ब।
सहवर्ती—ध्येय (गुण) २ ५०० अ।
सहवर्ती उदय—उदय १.३७३ अ।
सहवा (कवि)—इतिहास १ ३३४ अ।
सहवास—सगति ४.११९ ब।
सहवृत्ति—४ ३९८ अ।
सहसा—अतिचार १ ४४ अ, निक्षेप १ ४९ ब।
सहसातिचार—अतिचार १.४४ अ।
सहसा निक्षेप—निक्षेप १.४९ ब।
सहस्ती—रुचकवर पर्वत का दिग्गजेंद्र—निर्देश ३ ४७६ ब।
सहस्र—गणित २.२१४ ब।
सहस्रकीर्ति—नदिसघ के भट्टारक १.३२४ अ, काष्ठासघ १ ३२७ अ।
सहस्रनयन—४ ३९८ अ।
सहस्रनाम स्तव—४.३९८ अ, आशाधर १.२८१ अ, स्तोत्र ४.४४९ ब, इतिहास १.३४४ ब।
सहस्रपर्वा—विद्या ३.५४४ अ।
सहस्रबाहु—चक्रवर्ती ४.११ ब।
सहस्ररश्मि—४ ३९८ अ।
सहस्रानीक—विद्याधरवश १ ३३९ अ।
सहस्राम्र—तीर्थंकर शातिनाथ २ ३८३।
सहस्रायुध—४ ३९८ ब।
सहस्रार (देव)—४ ३९८ ब। देव—निर्देश ४ ५१० ब, अवगाहना १ १८१ अ, अवधिज्ञान १ १९८ ब, आयु १.२६८, आयुबध के योग्य परिणाम १ २५८ ब। इद्र—निर्देश ४.५१० ब, उत्तरेद्र ४.५११ अ, परिवार ४.५१२-५१३, चिह्न आदि ४.५११ ब, अवस्थान ४.५२० ब, विमान नगर व भवन ४.५२०-५२१। तीर्थंकर नेमिनाथ २.३८३, नारायण ४ १८ ब, बलदेव ४.१६ ब।
सहस्रार (देव प्ररूपणा)—बंध ३ १०२, बंधस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१९२, संख्या ४.९८, क्षेत्र २.२००, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४५।
सहस्रार (स्वर्ग)—स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४ ५१८, इंद्रक व श्रेणीबद्ध ४ ५१८, ४ ५२०, उत्तर विभाग ४ ५२१ अ, अवस्थान ४ ५१४ ब, अकन ४ ५१५। पटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४.५१५, देव आयु १ २६८।
सहानवस्था विरोध—विरोध ३.५६४ ब।
सहायक कारण—निमित्त २ ६१२ ब।
सहेतुक प्रत्याख्यान—प्रत्याख्यान ३ १३१ ब।
सहेतुक वन—तीर्थंकर अजित, सभव, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, विमल, अनंत, कुथु, अरनाथ २.३८३।
सह्य—४ ३९८ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब, यदुवंश १ ३३७।
सांख्य (दर्शन)—४ ३९८ ब।
सांख्यकारिका—साख्य ४ ३९८ ब।
सांख्यकौमुदी—सांख्य ४ ३९८ ब।
सांख्यदर्शन—एकांत १ ४६५ अ-ब, २ ४०३ अ, साख्य ४ ३९८ ब।
सांख्यप्रवचन भाष्य—सांख्य ४ ३९८ ब।
सांख्यप्रवचन सूत्र—सांख्य ४ ३९८ ब।
सांख्यमत—जीव २ ३३६ ब।
सांख्यसप्तति—सांख्य ४ ३९८ ब।
सांख्यसार—साख्य ४ ३९८ ब।
सांतरगतिसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब।
सांतर-निरंतर द्रव्यवर्गणा—वर्गणा ३.५१३ ब।
सांतरनिरंतर वर्गणा—वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३ ५१६ अ।
सांतरबधी प्रकृति—निर्देश ३.८८ ब, ३.९० ब, नियम ३ ९३-९४, त्रिसंयोगी प्ररूपणा १ ३९९।
सांतर-मार्गणा—मार्गणा ३.२९७ अ।
सांतर-सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब।
सांतर-स्थिति—स्थिति ४.४५७ अ।
सांद्र—४ ४०० अ।
सांपरायिक—बधक ३ १७९ अ।
सांपरायिक आस्रव—आस्रव १.२८२ ब।
सांपरायिक बंधक—बंधक ३.१७९ अ।
सांप्रति—४.४०० अ।
सांप्रतिक कृष्टि—कृष्टि २.१४३ अ।
सांवत्सरिक प्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३.११६ अ।
सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष—प्रत्यक्ष ३.१२२ ब।

सांव्यवहारिक शब्दज्ञान—श्रुतज्ञान ४.६१ अ।
सांसारिक दुःख—सुख ४.४३० ब।
सांसारिक सुख—सुख ४.४३० ब।
साकांक्ष अनशन—अनशन १.६५ ब।
साकार—४ ४०० अ, प्रत्याख्यान ३ १३१ ब।
साकार उपयोग—आकार १ २१८ ब, १ २१९ अ, विशुद्धि ३ ५७० अ।
साकार मंत्रभेद—४ ४०० अ।
साकार स्थापना—अंतर १.३ ब, उपशम १.४३७ अ, निक्षेप २ ५९७ ब, २.५९८ ब।
साकेत—४.४०० अ।
साकेतपुर—मनुष्यलोक ३.२७६ अ।
साकेता—तीर्थंकर अजित, अभिनन्दन व सुमतिनाथ १ ३७९।
साक्षर शब्द—भाषा ३ २२६ ब।
साक्षात् प्रत्यक्ष हेतु—स्वाध्याय ४ ५२४ अ।
सागर—४ ४०० अ, काल का प्रमाण २.२१७ ब, तीर्थंकर २ ३७७, यदुवंश १-३३६।
सागर-गणित (क्षेत्रफल आदि) २ २३३ ब, मापनिर्देश ३ ४७०, अंकन ३ ४४३। चातुर्द्वीपिक भूगोल ३ ४३७, बौद्धाभिमत ३.४३४, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब।
सागर (कूट)—गजदंत का कूट—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८६, अंकन ३.४४४, ३.४५७। सुमेरु के वनों का कूट—निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३ ४७३, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३.४५१।
सागरदत्त—बलदेव ४ १८ अ।
सागर वृद्धि—४ ४०० अ।
सागरसिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ अ।
सागरसेन—हरिवंश १ ३४० अ।
सागार—४.४०० ब, संयम ४.१३७ अ।
सागार धर्मामृत—४ ४०० ब, आशाधर १ २८१ अ, इतिहास १ ३४४ अ।
सागरोपम—४.४०० अ।
सात—नारायण ४.१९ ब।
सात—अनीक १.६८ ब, ऋषि ४ ३१३ अ, ३.४४४ ब, ३.४४६ अ, तत्त्व २.३५३ ब, नय २ ५२६ ब, नरक पृथिवी २.५७६ अ, अंग ४.३१३ ब, व्यसन ३ ६१७ ब। समुद्घात ४ ३४३ अ।
सात (७)—रज्जु, रज्जुप्रतर व रज्जुघन की संहनानी २.२३९ ब।
सातक—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४ ५१५ ब। देव आयु १ २६८।
सातकर्णी—४ ४०० ब, इतिहास १ ३१४।
सात गारव—गारव २ २३९ अ।
सात ज्ञान—ज्ञानावरण २ २७२ ब।
सातत्य—४ ४०० ब।
सात नय—नय २.५१४ ब।
सात बंधक—विशुद्धि ३.५६९ ब।
सात भय—भय ३ २०६ अ।
सातवी पृथिवी—क्षेत्रप्ररूपणा २ १९४ ब।
सात व्यसन—व्यसन ३ ६१७ ब।
सात स्वप्न—स्वप्न ४ ५०४ ब।
साता—दुःख २.४३४ ब।
साता वेदनीय—निर्देश ३.५९२ अ, आबाधा १ २४९ अ, घाती १ ९१ अ, बंधयोग्य परिणाम (विशुद्धि) ३ ५६९ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ९६ ब, ३ ५९८, स्थिति ४ ४५९ अ, ४ ४६०, ४.४६९, अनुभाग १ ९५, ४ ५२७। बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ १०९, उदय १ ३७५ उदयस्थान १ ३८७। उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९४। त्रिसंयोगी भंग १.३९९। संक्रमण ४ ८४ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
सातिचार सामायिक—सामायिक ४ ४१८ अ।
सातिप्रयोग—४ ४०० ब। माया ३ २९६ अ।
सातिरेक—४ ४०० ब।
सातिशय अप्रमत्त—उपशम १.४४० अ, क्षपणा चारित्र-मोह की २.१७९ ब, संयत ४ १३० अ।
सातिशय केवली—केवली २.१५७ अ।
सातिशय मिथ्यादृष्टि—निर्देश (मिथ्यादृष्टि) ३ ३०३ अ, करणदशक २ ६ अ। बंध ३ ९८ अ, उदय १.३८६-३८७, उपशम १.४३८ अ, सत्त्व ४.२८०।
सात्यकिपुत्र—४ ४०० ब, रुद्र ४ २२ अ।
सात्यमुग्रि—अज्ञानवाद १.३८ ब।
सात्विक दान—दान २ ४२३ अ।
सादि—अनुभाग १ ८९ अ, काल २.८८ ब, बंध ३.१६९ ब, बंधी प्रकृति ३.८८, ३.९० अ।
सादित्व—अनंत १ ५१ अ।
सादि नित्य पर्यायार्थिक नय—नय २.५५१ ब।
सादि पद—अनुयोगद्वार १ १०२ ब, १.१०३ ब।
सादि बंध—प्रकृतिबंध ३.११४।
सादि बंधी प्रकृति—प्रकृतिबंध ३.९० अ।

सादि मिथ्यादृष्टि—उपशम १ ४३८ अ, क्षयोपशम २.१८५ अ, सममासयम क्षयोपशम २ १८५ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६८ ब, ४ ३७१ ब।
सादि शरीरी बंध—बध ३ १७० ब।
सादि स्थिति बंध—स्थिति ४ ४५७ अ।
सादृश्य—४ ४०० ब।
सादृश्य प्रत्यभिज्ञान—प्रत्यभिज्ञान ३ १२५ अ।
सादृश्य लक्षणसामान्य—सामान्य ४ ४१२ ब।
सादृश्य सत्ता—अस्तित्व १ २१३ अ।
साधक क्षुल्लक—क्षुल्लक २ १९० अ।
साधक श्रावक—श्रावक ४ ४८ ब।
साधक हेतु—हेतु ४ ५३८ ब।
साधन—४ ४०१ अ, कारण २ ५४ अ, २ ५७ अ, ज्ञान २ २६८, मोक्षमार्ग ३ ३३९ ब, हेतु ४ ५३८ ब।
साधन व्यभिचार—नय २ ५३८ अ।
साधनसाध्य भाव—४ ४१२ अ, संबध ४ १२६ अ। व्यवहार-निश्चय-समन्वय—ज्ञान २ २६८ ब, चारित्र २ २९० अ, धर्म २ ४७१ अ, धर्मध्यान २.४८६ अ नय २ ५६८ अ-ब, मोक्षमार्ग ३.३३९ ब, सम्यग्दर्शन ४ ३६० अ।
साधन हेतु—हेतु ४ ५३८ ब।
साधना—अनुयोग १ १०२ अ, अभ्यास १ १३१ ब, साधु ४ ४०६ अ।
साधर्म्य—४ ४०१ अ।
साधर्म्य उदाहरण—दृष्टात २ ४३८ अ।
साधर्म्यसमा जाति—४.४०१ अ।
साधारण—४ ४०१ ब, ४ ४०२ अ, पारिणामिक ३ ५५ अ।
साधारण कायिक जीव—वनस्पति ३ ५०६ अ।
साधारण गुण—गुण २.२४० ब, ३ २४३ ब।
साधारणत्व—साधारण ४.४०१ ब।
साधारण दोष—वसतिका ३ ५२९ ब।
साधारण नामकर्म प्रकृति—प्रकृति ३ ८८, २.५८३, ३ ५०६ ब, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३,१३६। बध ३ ९७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भंग १.४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।
साधारण कायमार्गणा प्ररूपणा—बध ३.१०४, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७९, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९९, ४ ३०५, त्रिसंयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.२०७, सख्या ४ १०१, क्षेत्र २ २०१ स्पर्श ४ ४८४, काल २ १०६, अतर १.१२ भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४६।
साधारण वनस्पति—कायनिर्देश २.४४, अवगाहना १ १७९, आयु १ २६४ अ, जीवसमास २ ३४३, वनस्पति ३.५०२, ३.५०६, ३ ५०८, ३.५१०।
साधारण स्थान तप—कायक्लेश २ ४७ अ।
साधारण हेत्वाभास—साधारण ४.४०२ अ।
साधारणासाधारण—साधारण ४ ४०१ ब।
साधारणीकृत—४ ४०२ अ।
साधिक जघन्य—सहनानी २ २१८ ब।
साधित—आराधना १ २७१ अ।
साधु—४ ४०२ अ, अनगार १ ६२ अ, अपवाद मार्ग १.१२१ अ, अवर्णवाद १.२०१ अ, आर्यिका की सगति ४ १२० अ, आवश्यक कर्म १.२८० अ। आहार-चर्या १.२८६-२९३, आहारातराय १ २९ अ, उपकार १.४१६ अ, उपदेश १ ४२४ ब, ओम १.४६९ ब, कुशील साधु २ १३१ अ, कृतिकर्म २ १३७ अ, २.१३९ अ, क्रिया २ १७५ अ, गुरु २ २५१ ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०१ अ, त्याग २ ३९७ ब, दशधर्म २.४७६ अ, देवत्व २ ४४४ ब, धर्म २ ४७३ अ, धर्मध्यान १ ८५ ब, ध्येय २ ५०१ अ, नमस्कार (विनय) ३ ५५२ ब, परीक्षा (विनय) ३ ५५४ अ, पूजा ३.७७ अ, प्रत्याख्यान ३ १३२ ब, भिक्षा चर्या ३.३२८ ब, मत्रतत्र ३ २४८ अ, मिथ्यादृष्टि (श्रुतकेवली) ४ ५६ अ, मृत शरीर (कृतिकर्म) २.१३९ अ, लिंग ३ ४१७ ब, वदना (विनय) ३ ५५२ ब, विनय ३ ५५२ ब, ३ ५५४ अ, शुद्धि ४ ४१ अ, श्रावक ४.४६ ब, ४ ४७ अ, श्रुतकेवली ४ ५६ अ, श्रेणी ४ ७१ ब, सगति (आर्यिका) ४ १२० अ, सयत ४ १२९ ब, ४ १३२ अ-ब, ४ १३३ अ, ससार ४ १४६ अ, सस्कार ४ १५० अ, सत्य वचन ४ २७० ब, साधु ४.४१० अ।
साधुधर्म—अनगार धर्म १ ६२ अ, अपवादमार्ग १ १२१ अ, उपदेश १ ४२४ ब।
साधु-पूजा—उपयोग १.४३४ ब, पूजा ३ ७७ अ।
साधु-प्रासुक-परित्यागता—त्याग २.३९७ अ।
साधु-संघ—इतिहास १ ३१६, कल्की २.३१ ब।
साधुसमाधि—समाधि ४.३३७ ब।
साधुसेन—गणधर २.२१२ ब।
साध्य—पक्ष ३ २ ब, विरुद्ध हेत्वाभास ३ ५६४ अ। विरोध ३ ५६४ ब।

साध्य-सम हेतु—४ ४११ अ, न्याय २ ६३३ ब।
साध्यसमा जाति—४.४११ अ।
साध्य-साधक भाव—४ ४११ अ, धर्मध्यान २ ४८६ अ, नय २.५६८ अ-ब, मोक्षमार्ग ३ ३३९ ब, सम्बन्ध ४ १२६ अ, सम्यग्दर्शन ४ ३६० अ।
साध्याभास—पक्ष ३ ३ अ।
सान—४ ४११ अ।
सानत्कुमार—दे० सनत्कुमार।
सानुकार—स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४ ५१५, देव आयु १ २६८।
सापराध—विभाव ३ ५५९ अ।
सापेक्ष—एकांत १.४६१ अ-४६३, धर्मध्यान २ ४८६ ब।
सापेक्ष तत्त्व—स्याद्वाद ४ ४९८ अ।
सापेक्षता—अनेकांत १ १०८ ब, नय २ ५६९ अ, स्वभाव ४ ५०७ ब।
सापेक्ष दृष्टि—स्याद्वाद ४ ४९९ अ।
सापेक्ष धर्म—अनेकांत १ १०९ अ, सप्तभंगी ४ ३२३ ब।
सापेक्ष नय—नय २ ५२५ ब।
सापेक्ष मात्रा—४ ४११ अ।
सामर्थ्य—कारण (कर्मोदय) २.७१ ब।
सामानाधिकरण्य—४ ३३८ अ।
सामानिक—४ ४११ अ।
सामानिक देव—ज्योतिष देव २.३४६ अ। भवनवासी देव—निर्देश ३ २०९ अ, पद्म आदि ह्रदों में श्री आदि देवियाँ ३ ४५३-४५४, ३ ६१२ अ, आयु १.२६५, व्यंतर देव—निर्देश ३.६११ ब, आयु १.२६४ ब। वैमानिक देव—निर्देश ४ ५१२, देवियों की गणना ४ ५१३, देवों की आयु १ २६९, देवियों की आयु १.२७०।
सामान्य—४ ४११ ब, जाति २ ३२६ ब, दर्शनोपयोग २ ४१० ब, द्रव्य २.४५४ ब, सप्तभंगी ४.३१८ अ, समयसार ४.३२९ अ, सापेक्ष धर्म (अनेकांत) १.१०९ अ।
सामान्य आलोचना—आलोचना १ २७७ अ, सल्लेखना ४.३९१ ब।
सामान्य उपयोग—दर्शन १ २१९ अ।
सामान्य काल—सप्तभंगी ४ ३२३ अ।
सामान्य केवली—केवली २.१५७ अ।
सामान्य क्षेत्र—क्षेत्र २.१९२ अ।
सामान्य गुण—गुण २.२४० ब, द्रव्य २.२४३ अ, पारिणामिक भाव २ २४२ ब।
सामान्य गृह—भवनवासी देवों के भवन ३.२१० ब।
सामान्य ज्ञान—ज्ञान (केवलज्ञान) २.२६० ब।
सामान्य ग्रहण—दर्शनोपयोग २ ४१२ ब।
सामान्य छल—छल २.३०५ ब, न्याय २ ६३४ अ।
सामान्यतो दृष्ट—अनुमान १ ९७ ब।
सामान्य नय—नय २ ५२३ अ।
सामान्य भूमि—समवसरण ४ ३३० ब।
सामान्य विधि—आगम १ २३२ अ।
सामान्य विशेषात्मक—सामान्य ४ ४१२ ब।
सामान्य संग्रह नय—नय २ ५३४ अ।
सामान्य संग्रह भेदक व्यवहार नय—नय २ ५५८ ब।
सामान्य स्वभाव—स्वभाव ४.५०६ अ।
सामान्यालोचना—आलोचना १ २७७ अ, सल्लेखना ४ ३९१ ब।
सामान्याधिकरण—४ ४१३ अ।
सामायिक—४.४१३ अ, अभ्यास १ १३१ ब, कृतिकर्म २ १३५ ब, प्रतिक्रमण ३.११८ अ, प्रोषधोपवास ३ १६७ अ, शांति ४ २७ अ, श्रावक ४ ४७ अ श्रुतज्ञान ४ ६९ ब, संयत ४.१२९ अ, ४.१३२ अ, समय ४.३२७ अ, समिति ४.३३८ ब, सामायिक ४ ४१४ ब, ४ ३२७ अ।
सामायिक चारित्र—निर्देश (सामायिक) ४.४१९ अ, उपयोग (शुभ) १ ४३४ ब, छेदोपस्थापना २.३०८ अ, लब्धिस्थानों का अल्पबहुत्व १.१६० अ, सिद्धों का अल्पबहुत्व १ १५३ ब।
सामायिक दंडक—कृतिकर्म २ १३७ ब, वंदना ३.४९५ ब।
सामायिक पाठ—४ ४२० अ, अमितगति १.१३२ अ, इतिहास १ ३४३ अ।
सामायिक प्रतिमा—सामायिक ४.४१७ ब।
सामायिक प्रतिमाधारी—सामायिक ४.४१६ ब।
सामायिक भावश्रुत—ग्रंथकृति २.२७३ ब।
सामायिक मूढता—अमूढदृष्टि १ १३२ ब, मूढता ३.३१५ ब।
सामायिक व्रत—सामायिक ४.४१८ अ।
सामायिक शास्त्र—शास्त्र ४.२८ अ।
सामायिकशुद्धि संयम—सामायिक ४ ४२० अ।
सामायिक संयम—मोक्षमार्ग (रत्नत्रय) ३.३३३ ब, मोहनीय का स्थितिसत्त्व ४ ३०९ अ। प्ररूपणा—बंध ३.१०६, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १.३९३, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान

१.४१२, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४ ३०१, ४.३०६, त्रिसंयोगी भंग १ ४०७। सत् ४.२३७, संख्या ४.१०६, क्षेत्र २.२०५, स्पर्शन ४ ४८९, काल २ ११४, अंतर १ १६, भाव ३ २२१ अ, अल्पबहुत्व १ १५१।

सामीप्य—४.४२० अ।

साम्य—उपेक्षा १.४४४ ब, उपयोग (शुद्ध) १ ४३१ अ, चारित्र २ २८८ ब, २ २८९ ब, सामायिक ४.४१४ अ।

साम्राज्य क्रिया—संस्कार ४.१५२ अ, ४.१५३ अ।

सायणाचार्य—४ ४२० अ।

सार—४.४२० अ।

सारण—यदुवंश १ ३३७।

सारणा—सल्लेखना ४ ३९० ब।

सारनिवह—४ ४२० अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

सारसंग्रह—४.४२० अ, इतिहास १.३४० ब।

सारसमुच्चय—४ ४२० ब, प्रतिनारायण ४ २० ब, इतिहास १.३४२ ब।

सारस्वत—४ ४२० ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ, लौकांतिक देव ३ ४९३ ब।

सारस्वत यंत्र—यंत्र ३ ३६५।

सारीपुत्र—४ ४२०।

सार्द्धद्वय द्वीप प्रज्ञप्ति—अमितगति १.१३२ अ।

सार्द्धद्वय प्रज्ञप्ति—४.४२० ब, इतिहास १ ३४३ अ।

सार्धपौर्णमासिक गच्छ—श्वेताम्बर ४.७७ ब।

सार्धशतक—इतिहास १.३४३ ब।

सार्वभौम—तीर्थंकर मल्लिनाथ २.३९१।

सालंबन ध्यान—शुक्लध्यान ४ ३३ अ।

साल वन—तीर्थंकर सुविधि तथा वर्द्धमान २ ३८३।

सालव मल्लिराय—४.४२० ब।

सालिवाहन (कवि)—४ ४२० ब, इतिहास १ ३३३ ब।

साल्व (कवि)—इतिहास १.३३३ ब।

सावद्य (कर्म)—४ ४२० ब, शिल्पकर्म ४.२९ अ, श्रावक ४ ५२ ब, सरःशोष कर्म ४ ३७९ अ।

सावद्य कर्मार्य—४ ४२० ब, ४.४२१ अ, आर्य १ २७५ अ।

सावद्य निवृत्ति—अहिंसा १ २१६ ब, सामायिक ४ ४१५ ब, ४.४१६ ब। ४ ४१९ ब।

सावद्य परिहार—अहिंसा १ २१६ ब।

सावद्य वचन—वचन ३.४९७ ब।

सावयव—द्रव्य २ ५४९ अ, परमाणु ३.१६ ब।

सावानी (कवि)—इतिहास १.३३४ अ।

सासादन (गुणस्थान)—४.४२२ अ, अनंतानुबंधी १.६१ अ, आरोहण २ २४७, करणदशक २ ६ अ, कषाय २ ४० ब, काय २.४५ ब, जन्म २ ३१४ ब, नरक गति २ ५७५ अ-ब, परिषह ३ ३४, प्रत्यय ३ १२७, बद्धायुष्क १ २६२ ब, मरण ३ २८२ ब, श्रेणी ४ ७२ अ, संक्रमण ४ ८६ अ, ४ ८७ अ, समुद्घात ४ ३४३ अ, सम्यग्दर्शन (उपशम) ४.३६९ अ।

सासादन (गुणस्थान)—प्ररूपणा—बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ ११०, ३ १११, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९२ अ। उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २८७, ४ २९७, ४ ३०४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०५ ब। सत् ४ १६१, संख्या ४ ९४, क्षेत्र २ १९३ ब, २.१९६ अ, २ १९७, स्पर्शन ४.४७७, काल २.९४ ब, २ ९९, अंतर १ ४ अ-ब, १ ७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १ १४२ ब।

सासादन सम्यग्दृष्टि—प्ररूपणा बंध ३ १०८, बंधस्थान ३ ११३, उदय १.३८५, उदयस्थान १ ३९३ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८४, ४.२८६, सत्त्वस्थान ४ ३०२, ४.३०६, त्रिसंयोगी भंग १.४०७ ब। सत् ४ २५५, संख्या ४.१०८, क्षेत्र २ २०६, स्पर्शन ४ ४९२, काल २ ११७, अंतर १.२०, भाव ३ २२२ अ, अल्पबहुत्व १.१५२।

साहसगति—४.४२६ अ।

साहसी—४ ४२६ अ।

सिंघाटक—चक्रवर्ती ४.१५ अ।

सिंदूर द्वीप सागर—४ ४२६ ब, नामनिर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अंकन ३ ४४३, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४।

सिंधु कक्ष—४.४२६ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

सिंधु कुंड—सिंधु नदी का द्वार—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३.४९०, अंकन ३ ४४७। इस कुंड का द्वीप—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७।

सिंधु कूट—सिंधु द्वीप का कूट—निर्देश ३ ४७१ अ, विस्तार ३ ४९०, अंकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७, हिमवान पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, अंकन ३ ४४४।

सिंधु नदी—४ ४२६ ब, चक्रवर्ती ४ १४ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ अ ब। भरत तथा विदेह क्षेत्र—निर्देश ३.४५५ अ, ३.४६० अ, विस्तार ३ ४८९, ३.४९०। अंकन ३.४४४, ३.४६० अ, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४४७, जल का वर्ण ३ ४७८।

सिंह—४ ४२६ ब, ग्रह २ २७४ अ, तीर्थंकर वर्द्धमान २ ३७९, यदुवंश १.३३७, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब, सनत्कुमारेंद्र का यान ४ ५११ ब, स्वप्न ४.५०४ ब, ४ ५०५ अ।

सिंह (कवि)—इतिहास १ ३३१ ब, १ ३४४ ब।

सिंहकीर्ति—नंदिसंघ भट्टारक १.३२३ ब।

सिंहकेतु—विद्याधरवंश १.३३९ अ।

सिंहचंद्र—शलाकापुरुष ४.२५ ब।

सिंहदमन—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

सिंहदंष्ट्र—मातंगवंश १ ३३६ ब।

सिंहध्वज—४.४२६ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

सिंहनंदि—४ ४२६ ब, प्रथम—मूलसंघ १.३२२ ब, नंदिसंघ १ ३२३ अ। इतिहास १.३२८ ब। द्वितीय—नंदिसंघ १.३२४ अ, इतिहास १.३२९ अ। चतुर्थ—इतिहास १ ३३० ब। पंचम—इतिहास १.३३३ अ। षष्ठ १.३३३ अ।

सिंहनादपुर—तीर्थंकर श्रेयांसनाथ २.३७९।

सिंहनिष्क्रीडित व्रत—४.४२६ ब।

सिंहपुर—४.४२७ अ, तीर्थंकर श्रेयांसनाथ २ ३७९, नारायण ४.१८ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

सिंहपुरी—४.४२७ अ। विदेह नगरी—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३ ४६० अ।

सिंहबल—पुन्नाटसंघ १ ३२७ अ।

सिंहयान—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

सिंहरथ—४.४२७ अ, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब, तीर्थंकर कुंथु तथा अरनाथ २.३७८।

सिंहल—४.४२७ अ, भोजवंश १ ३१० अ।

सिंहवर्मा—४.४२७ अ।

सिंहवाहिनी—चक्रवर्ती ४.१५ अ।

सिंहविक्रम—राक्षसवंश १.३३८ अ।

सिंहसंघ—इतिहास १.३३९ अ।

सिंहस्थ प्रभु—विद्याधरवंश १.३३९ अ।

सिंहसूरि—४.५४४ अ, इतिहास १.३२९ अ, १.३३३ अ, १.३४६ अ।

सिंहसेन—४.४२७ अ, तीर्थंकर अनंतनाथ २.२८०, तीर्थंकर अजितनाथ २.३८७, बलदेव ४.१७ अ, ४.१८ अ, यदुवंश १.३३७। पुन्नाटसंघी आचार्य १.३२७ अ।

सिंहासन—अर्हंत प्रातिहार्य १.१३७ ब, समवसरण ४.३३१ ब, स्वप्न ४.५०४ ब।

सिकंदर—४.४२७ अ।

सिकतिनी—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

सिक्तानन—४.४२७ अ।

सिक्तिनी—४.४२७ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

सिक्थ—ससिक्थ ४ ३९८ अ।

सिक्थ मत्स्य—हिंसा ४ ५३६ अ।

सितपट चौरासी—४.४२७ अ, इतिहास १.३४४ अ।

सिद्ध—अकाय (काय) २ ४५ ब, अर्हंत (मोक्ष) ३.३२४ अ। अल्पबहुत्व १.१४२ अ-ब, १४३ ब, १ १४४ अ, १ १५३-१५४, अवगाहनत्व गुण १.१७७ ब, अवर्णवाद १ २०१ अ, आराधना १ २७१ अ, उत्पादादि १ ३६२ ब, ओम् १.४६९ ब, काय मार्गणा २.४५ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०१ अ, पक्षाभास ३.३ अ, जीव ३.३३४ ब, ध्येय २ ५०० ब, मोक्ष ३ ३२३ अ, ३.३२४ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब, संख्या ४ ९२ ब। सत् प्ररूपणा ४.१६५, सामायिक ४.४१७ ब, सुख ४.४३२ अ।

सिद्धर्षि—४.५४४ अ, इतिहास १.३३० अ, १.३४२ अ।

सिद्धकाल—अल्पबहुत्व १.१४२ ब।

सिद्धकेवली—केवली २.१५७ अ।

सिद्ध गति—अल्पबहुत्व १ १५३, मोक्ष ३ ३२३ अ।

सिद्धचक्क कहा—इतिहास १.३४५ अ।

सिद्धचक्रयंत्र बृहत्—यंत्र ३.३६७।

सिद्धचक्रयंत्र लघु—यंत्र ३.३६६।

सिद्धचक्र विधान—पूजापाठ ३ ८१ ब।

सिद्धचक्राष्टक पूजा—पूजापाठ ३.८१ ब।

सिद्ध जीव—मोक्ष ३.३२३ अ।

सिद्धजीव-राशि—गणित (सहनानी) २.२१९ अ।

सिद्धत्व—४.४२७ ब।

सिद्धप्रतिमा क्रिया—कृतिकर्म २ १३९ अ।

सिद्धभक्ति—भक्ति २.१९८ ब। इतिहास १.३४० ब।

सिद्ध भगवान्—दे० सिद्ध।

सिद्धयिनी—४.४२७ ब, तीर्थंकर महावीर की यक्षिणी २.३७९।

सिद्धलोक—मोक्ष ३.३२३ ब।

सिद्धसाधन दोष—अकिंचित्कर हेत्वाभास १.३१ ब।

सिद्धसेन गणी—४.४२७ ब, इतिहास १.३२९ ब, १.३४२ अ।

सिद्धसेन दिवाकर—४.४२७ ब, इतिहास १.३२९ अ, १.३४१ अ।

सिद्धहेमशब्दानुशासन—शब्दकोश ४.४ ब।

सिद्धांत—४.४२७ ब, कर्म २ २९ अ, न्याय २ ६३३ अ, पद्धति ३ ९ ब, प्रवचन ३ १४७ ब, वेद ३.५८३ ब।

सिद्धांत अध्ययन—कायक्लेश (श्रावक) २.४८ अ। श्रोता ४ ७५ ब।

सिद्धांतग्रंथ—पद्धति ३.८ ब।

सिद्धांतचक्रवर्ती—अभयनंदि १ १२७ अ, इंद्रनंदि १.२९९ ब, इतिहास १ ३३० ब, १ ३४२ ब।

सिद्धांत भट्टारक—द्राविड संघ १ ३२० ब, इतिहास १.३३० ब।

सिद्धांतशास्त्र—कायक्लेश (श्रावक) २ ४८ अ, श्रोता ४ ७५ ब।

सिद्धांतसागर—४.४२८ अ।

सिद्धांतसार—४.४२८ अ, इतिहास १ ३४४ ब, १.३४६ अ।

सिद्धांतसारदीपक—इतिहास १.३४६ अ।

सिद्धांतसार भाष्य—इतिहास १ ३४७ ब।

सिद्धांतसारसंग्रह—४ ४२८ अ, इतिहास १.३४३ ब।

सिद्धांतसेन—४ ४२८ अ, द्राविड संघ १ ३२० ब, इतिहास १ ३३० ब।

सिद्धांताचार वाचन-क्रिया—कृतिकर्म ३ १३९ ब।

सिद्धांतिक देव—नंदिसंघ देशीय गण १ ३२४ ब, इतिहास १ ३३१ अ।

सिद्धाभ देव—४.४२८ अ, तीर्थंकर २.३७७।

सिद्धायतन कूट—४ ४२८ अ, आयतन १ २५१ अ, चैत्य-चैत्यालय २ ३०४ अ। सभी पर्वतो पर एक एक—निर्देश ३ ४७१-४७३, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४६०, ३ ४७८। ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने (चित्र स० ३७)।

सिद्धार्थ—४ ४२८ अ, तीर्थंकर ऋषभदेव २ ३८३, नेमिनाथ २ ३७८, वर्द्धमान २ ३८०। मानुषोत्तर पर्वत का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अंकन ३.४६४, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

सिद्धार्थ—मूलसंघ १ ३१६, इतिहास १.३२८ अ।

सिद्धार्थक—विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

सिद्धार्थ मंगल—मंगल ३.२४४ अ।

सिद्धार्थ—४.४२८ अ, तीर्थंकर अभिनंदननाथ की यक्षिणी २.३८०, विद्या ३.५४४ अ।

सिद्धि—४ ४२८ अ, ध्यान २.४९६ ब, २.४९७ अ।

सिद्धिप्रिय स्तोत्र—४ ४२८ अ, इतिहास १.३४० ब।

सिद्धिविनिश्चय—४.४२८ अ, अकलंक भट्ट १.३१ अ, इतिहास १ ३४१ ब।

सिद्धिविनिश्चय वृत्ति—इतिहास १ ३४२ ब।

सिर चालन—व्युत्सर्ग का दोष ३ ६२२ अ।

सिरा—४ ४२८ अ, औदारिक शरीर १ ४७२ अ।

सिरिवालचरिउ—४ ४२८ अ, इतिहास १ ३४५ ब, १.३४६ अ।

सिरीष कषाय—कषाय २.३५ ब, २.३६ अ।

सीता—४.४२८ ब, नारायण ४.१८ ब।

सीताकुंड—४ ४२८ ब, सीता नदी का उद्गम स्थान—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४९०, अंकन ३ ४४७। इस कुंड का द्वीप—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४७, वर्ण ३ ४७७।

सीता कूट—४.४२८ अ, सीताकुंड का कूट—निर्देश ३ ४५६ अ, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७। गजदंत पर्वत का—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४५६। नील पर्वत का—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४। रुचकवर पर्वत का—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६८।

सीतादेवी—सीताकुंड की—निर्देश ३.४६५ अ, अंकन ३ ४४७। रुचक पर्वत की—निर्देश ३ ४०६ अ, अंकन ३.४६८।

सीता नदी—४ ४२८ ब, विदेह क्षेत्र की—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३.४८९, ३.४९०, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३ ४७८। चातुर्द्वीपिक भूगोल ३ ४३८ अ, बौद्धाभिमत ३ ४३४ ब।

सीतोदा कुंड—४ ४२८ ब, सीतोदा नदी का उद्गम स्थान—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३.४९०, अंकन ३ ४४७। इस कुण्ड का द्वीप—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३ ४४७, वर्ण ३.४७७।

सीतोदा कूट—४ ४२८। सीतोदा कुंड में स्थित—निर्देश ३ ४५५ ब, विस्तार ३ ४८४, अंकन ३.४४७, वर्ण ३ ४७७, गजदंत पर्वत का निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३.४४४, ३ ४५७। निषध पर्वत का—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, अंकन ३ ४४४।

सीतोदा देवी—सीतोदा कुंड की—निर्देश ३.४५५ अ, अंकन ३.४४७। निषध पर्वत के कूट की—निर्देश ३.४७२ अ, अंकन ३.४४४।

सीतोदा नदी—४.४२८ ब, विदेह क्षेत्र की महानदी—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४८९, ३.४९०, अंकन

३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, जल का वर्ण ३ ४७८। विभंगा नदी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३४७४ ब, विस्तार ३ ४८९, ३ ४९०, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने।

सीदिया—४ ४२८ ब।

सीमंकर—४ ४२८ ब, कुलकर ४.२३, ग्रह २ २७४ अ।

सीमंतक—४ ४२८ ब, नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब। विस्तार २ ५७९ ब। अंकन ३ ४३८। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १.२६३।

सीमंधर—४.४२८ ब, कुलकर ४.२३, तीर्थंकर २ ३९२, तीर्थंकर सुमति तथा पद्मप्रभ २.३७८, तीर्थंकर शीतलनाथ २.३९१।

सीमा—४ ४२८ ब।

सीमातीत संज्ञा—४ ४२८ ब।

सीरी—तीर्थंकर २ ३७७।

सुंगयुन ४ ४२८ ब।

सुंदर—४ ४२८ ब, कुंडलवर पर्वत का कूट तथा देव—३ ४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६७।

सुंदरदास—४.४२८ ब, इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ ब।

सुंदरी—४ ४२८ ब।

सुअंधदहमी कहा—इतिहास १.३३२ अ, १ ३४४ अ।

सुकंठ—शलाकापुरुष ४ २६ अ।

सुकंदा—असुरेंद्र की अग्रदेवी ३ २०९ अ।

सुकक्ष—४ ४२९ अ।

सुकच्छ—४.४२९ अ।

सुकच्छविजय—४.४२९ अ।

सुकच्छा—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४।

सुकांता—असुरेंद्र की अग्रदेवी ३ २०९ अ।

सुकीर्ति—कुरुवंश १.३३५ ब, १ ३३६ अ।

सुकुमार—कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ।

सुकुमालचरिउ—इतिहास १.३४४ अ।

सुकुमालचारित्र—४.४२९ अ, इतिहास १.३३२ ब, १ ३४४ अ।

सुकेतु—४.४२९ अ।

सुकेश—राक्षसवंश १.३३८ ब।

सुकोशल—४.४२९ अ, इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

सुक्कोसलचरिउ—इतिहास १.३४६ अ।

सुख—४ ४२९ अ, अनुभव १ ८१-८५ अ, ईर्यापथ १ ३५० अ, देवगति २ ४४६ अ, देवगति (दुःखमेव) २.४४६ अ, मोक्ष ३.३२४ ब, वेदनीय कर्म ३.५९४ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३७४ अ, सामायिक ४ ४१९ अ, सुख ४ ४३१ अ ब, सुख (वीतराग) ४ ४३२ अ, ४ ४३३ अ, स्वसंवेदन (अनुभव) १८३-८६।

सुखकारण व्रत—४ ४३४ ब।

सुखद वायु—अर्हतातिशय १.१३७ ब।

सुख-दुःखोपसंयत समाचार ४ ३३७ अ।

सुखनिधान—इतिहास १ ३४७ ब।

सुखबोध—४ ४३४ ब।

सुखबोधवृत्ति—इतिहास १.३४५ अ, १ ३४७ अ।

सुखबोधिनी वृत्ति—इतिहास १.३४३ ब।

सुखरथ—हरिवंश १.३४० अ।

सुखशक्ति—४.४३४ ब।

सुखसंपत्ति व्रत—४.४३४ ब।

सुखानुबंध—४.४३४ ब।

सुखानुभूति—मोक्षमार्ग ३.३२६ अ।

सुखाभाव—सुख ४ ४३३ अ।

सुखाभास—सुख ४.४३० ब।

सुखावह—४.४३४ ब, वक्षारगिरि—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७। इस पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३ ४४४।

सुखासन—आसन १.२८१ ब, कृतिकर्म २.१३५ अ।

सुखास्वादन—चारित्र २.२८५ अ।

सुखेंद्रकीर्ति—नंदिसंघ भट्टारक १ ३२३ ब।

सुखोदय क्रिया—संस्कार ४ १५१ ब।

सुगंध—४ ४३४ ब, अरुणाभास द्वीप का रक्षक देव ३.६१४।

सुगंधदशमी व्रत—४.४३५ अ।

सुगंधा—४.४३५ अ। विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३ ४८६,

अंकन ३ ४४४।

सुगंधिनी - ४ ४३५ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।

सुगत—४ ४३५ अ।

सुगर्भ—यदुवंश १ ३३७।

सुगात्र—४ ४३५ अ।

सुग्रीव—४.४३५ अ, अगद १.१ अ, तीर्थंकर सुविधिनाथ २ ३८०, तीर्थंकर सुबाहु २.३९२, राक्षसवंश १ ३३८ अ, वानर वंश १ ३३८ ब।

सुघोषा—व्यन्तरेंद्र की गणिका ३ ६११ ब।

सुचंद्र—शलाकापुरुष ४ २५ ब।

सुचक्षु—४ ४३५ अ, मानुषोत्तर व पुष्करार्ध का देव ३ ६१४।

सुचरित मिश्र—४.४३५ अ, मीमांसादर्शन ३.३११ अ।

सुचार—कुरुवंश १ ३३६ ब।

सुचारित्र मिश्र—मीमांसादर्शन ३.३११ अ।

सुचारु—कुरुवंश १.३३५ ब, यदुवंश १.३३७।

सुतारा—४.४३५ अ।

सुतेजस—कुरुवंश १ ३३५ ब।

सुत्तपाहुड—इतिहास १.३४० ब।

सुदंसणचरिउ—इतिहास १.३४३ ब।

सुदर्शन—४ ४३५ अ, अंतकृत केवली १ २ ब, कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, तीर्थंकर अरनाथ २ ३८०, तीर्थंकर धर्मनाथ २ ३९१, बलदेव ४.१६ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४६ अ।

सुदर्शन (पर्वत व कूट)—बौद्धाभिमत पर्वत ३.४३४ अ, मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८६, अंकन ३.४६४। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ४.४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९। सुमेरु पर्वत ४ ४३७ अ।

सुदर्शन (स्वर्ग)—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४.५१५। देव आयु १.२६८।

सुदर्शन चक्र—चक्रवर्ती ४.१३ अ, ४.१५ अ, नारायण ४.१९ ब।

सुदर्शनचरित्र—४.४३५ अ। इतिहास—प्रथम १.३४३ ब, द्वितीय १.३४६ अ।

सुदर्शना—नन्दीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४९१, अंकन ३ ४६५। बलदेव की माता ४.१७ ब, व्यंतरेंद्र वल्लभिका ३ ६११ ब।

सुदास—४.४३५ अ।

सुदत्त—४ ४३५ अ, गुणधर २.२१३ अ, तीर्थंकर वासुपूज्य २.३८७, बलदेव ४ १६ ब, ४ १७ ब। श्रुतकेवली (मूलसंघ) १ ३१६।

सुधर्मभित्र—चक्रवर्ती ४.१० ब।

सुधर्मसेन—४ ४३५ ब, पुन्नाटसंघ १.३२७ अ।

सुधर्माचार्य—मूलसंघ (श्रुतकेवली) १ ३१६, इतिहास १ ३२८ अ।

सुधर्मा सभा—४ ४३५ ब, चैत्य-चैत्यालयों में २.३०३ अ, वैमानिक देवों के भवनों में ४.५२१ अ, व्यंतरदेवों के नगरों में ३ ६१२ ब, सौधर्म स्वर्ग में ४ ४४५ अ।

सुनंद—तीर्थंकर २ ३७७, तीर्थंकर मुनिसुव्रत, नेमि तथा वर्द्धमान २.३७८, तीर्थंकर शीतलनाथ २.३८०, प्रतिनारायण ४ २० अ।

सुनंदा—कुलकर ४.२३।

सुनंदिषेण—४ ४३५ ब। पुन्नाटसंघ—प्रथम १ ३२७ अ, द्वितीय १.३२७ अ।

सुनक्षत्र—४.४३५ ब। अनुत्तरोपपादक दशांगी १.७० ब।

सुनपथ—४ ४३५ ब।

सुनय—सकलादेश ४ १५७ अ।

सुनेत्रा—नारायण ४.१८ ब।

सुनेमि—यदुवंश १.३३७।

सुपत्नीत्व—स्त्री ४.४५२ अ।

सुपद्म—४.४३५ ब। कुरुवंश १ ३३५ ब, १.३३६ अ।

सुपद्मा—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७० ब। विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३ ४८६ अंकन ३.४४४।

सुपर्ण—४.४३१ ब।

सुपर्णकुमार—४.४३५ ब, भवनवासी देव—निर्देश ३.२१० ब, नामनिर्देश ३.२०८ अ, अवगाहना १ १८०, अवधिज्ञान १.१९८ आयु १.२६५। इन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, शक्ति आदि ३.२०८ ब, अवस्थान ३.२०९ अ, ३.४७१, ३.६१२-६१४।

सुपर्णकुमार देव (प्ररूपणा)—बंध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १ ३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणा स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२ सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसंयोगीभंग १.४०६ ब। सत् ४.२८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०,

भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

सुपार्श्वनाथ—४.४३५ ब, तीर्थंकर २.३७७, तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ २.३७९-३९१ तीर्थंकर सूरप्रभ २ ३७७।

सुपार्श्वनाथ स्तोत्र—४ ४३५ ब।

सुप्रकीर्णा—रुचकवर पर्वत के कूट की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३ ४६८।

सुप्रकीर्ति—४ ४३५ ब।

सुप्रणिधि—४.४३५ ब, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अंकन ३ ४६९।

सुप्रतिष्ठ—४.४३५ ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ अ, कुरुवंश १.३३५ ब, १ ३३६ अ, तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३७८, तीर्थंकर श्रेयांसनाथ २.३९१, तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ २.३८०, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६९। रुद्र ४.२२ अ।

सुप्रबंध—४.४३५ ब।

सुप्रबुद्ध—४.४३५ ब। मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ अ, अंकन ३.४६४। रुचक पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३.४६९। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४ ५१५, देव आयु १.२६८।

सुप्रबुद्धा—४ ४३५ ब। नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ अ, नामनिर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४९१, अंकन ३.४६५। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३ ४६८।

सुप्रभ—४ ४३५ ब, कुंडलवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७५ ब, घृतवर द्वीप का देव ३ ६१४, चक्रवर्ती ४.१० ब, तीर्थंकर २.३७७, तीर्थंकर अनंतनाथ २ ३९१, तीर्थंकर नमिनाथ २ ३८७, नारायण ४ १८ ब, बलदेव ४.१६ अ।

सुप्रभा—४ ४३६ अ, तीर्थंकर २.३८०, नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३ ४६३ अ, नामनिर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३.४९१, अंकन ३.४६५। बलदेव ४ १७ ब, रघुवंश १ ३३८ अ।

सुप्रयोगा—४.४३६ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

सुप्रीति क्रिया—मंत्र ३ २४६ ब, संस्कार ४ १५१ अ।

सुफल्गु यदुवंश १ ३३७।

सुबल—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ अ, सोमवंश १ ३३९ ब।

सुबाला—चक्रवर्ती ४ ११ ब, बलदेव ४ १७ ब।

सुबाहु—तीर्थंकर २ ३९२, हरिवंश १ ३४० अ।

सुभगत्रिक—उदय १.३७४ ब।

सुभग नामकर्म प्रकृति—४.४३६ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ९६ अ, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३.१३६। बंध ३.९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६९।

सुभगसुलोचनाचरित्र—इतिहास १.३४७ अ।

सुभट वर्मा—४.४३६ अ, आशाधर १.२८० ब, भोजवंश १.३१० अ।

सुभद्र—४ ४३६ अ, अरुणवर द्वीप का देव ३.६१४, नदीश्वर सागर का देव ३.६१४, नारायण ४.१८ ब, यक्ष ३.३६९ अ, व्यंतर देव ३ ६१४ अ, रुचकवर पर्वत का कूट तथा दिग्गजेंद्र—निर्देश ३.४७६ अ-ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८। वरुण लोकपाल का यान ४.५१३ अ। स्वर्ग पटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४ ५१५, देव आयु १ २६८।

सुभद्रनाटिका—इतिहास १ ३४४ अ।

सुभद्रसागर—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ।

सुभद्रा—४.४३६ अ, चक्रवर्ती ४ १३ अ, ४.१५ ब, बलदेव ४.१७ ब, विद्याधर वंश (भरतपत्नी) १.३३९ अ, व्यंतरेंद्र गणिका ३ ६११ ब।

सुभद्राचार्य—इतिहास १.३२८ अ, ३३१ ब, १.३४४ अ।

सुभानु—यदुवंश १ ३३७, हरिवंश १ ३४० अ।

सुभाषित तंत्र—इतिहास १ ३४१ अ।

सुभाषितरत्नसंदोह—४ ४३६ अ, अमितगति १.१३२ अ, इतिहास १ ३४३ अ।

सुभाषितरत्नावली—४ ४३६ अ।

सुभाषितार्णव—४ ४३६ अ, इतिहास १ ३४६ ब।

सुभीम—४ ४३६ अ। राक्षसवंश १ ३३८ अ।

सुभूति—नारायण ४.१८ ब।

सुभोगभूमि—आयु बंध के योग्य परिणाम १ २५६ अ।

सुभोगा—गजदंत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७३ अ, अंकन ३ ४५७।

सुभौम—४ ४३६ ब, कुरुवंश १ ३३५ ब, चक्रवर्ती २ ३९१, चक्रवर्ती (शलाकापुरुष) ४.१० अ, तीर्थंकर अरनाथ २ ३९१।

सुमंगला—चक्रवर्ती ४ ११ ब, तीर्थंकर सुमतिनाथ २ ३८०।

सुमंदर—मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

सुमति—४ ४३६ ब, अपराजित १ ११९ अ, कुलकर ४ २३।

सुमतिकीर्ति—४.४३६ ब, नंदिसंघ १ ३२४ अ, इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ अ।

सुमतिदेव—मूलसंघ १.३२२ ब, इतिहास १.३२९ ब।

सुमतिनाथ—४.४३६ ब, तीर्थंकर प्ररूपणा २.३७९-३९१।

सुमनस—४ ४३६ ब, स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४.५१८, अंकन ४.५१५, देव आयु १.२६८।

सुमना—नदीश्वर द्वीप की वापी—निर्देश ३.४६३ अ। नाम निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४९१, अकन ३ ४६५।

सुमागधी—४.४३६ ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

सुमाली—४ ४३६ ब, राक्षसवंश १ ३३८ ब।

सुमित्र—४ ४३६ ब, चक्रवर्ती ४ ११ ब, तीर्थंकर मुनिसुव्रत २.३८०, बलदेव ४.१७ ब, यदुवंश १ ३३७, हरिवंश १.३४० अ।

सुमित्रा—गजदंत के कूट की देवी—निर्देश ३.४७२ ब, अकन ३ ४५७, रघुवंश १ ३३८ अ।

सुमुख—४.४३६ ब, यदुवंश १.३३७, राक्षसवंश १.३३८ अ।

सुमुखी—४ ४३६ ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ ब, व्यंतरेंद्र वल्लभिका ३.६११ ब।

सुमेधा—४ ४३६ ब, असुरेंद्र की अग्रदेवी ३ २०९ अ, सुमेरु पर्वत के वन की देवी—निर्देश ३.४७३ ब, अकन ३ ४५१।

सुमेरु—४.४३६ ब, ४.४३७ अ, प्रत्येक द्वीप के मध्यवर्ती प्रधान पर्वत—निर्देश ३.४४८ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३.४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), चित्र ३ ४४९, वर्ण ३ ४७७, परिधि ३ ४४९ अ, चूलिका ३ ४४९ ब, वनखण्ड ३ ४५० अ। चातुर्द्वीपिक भूगोल ३-४३७ ब, बौद्धाभिमत ३ ४३४ अ, वैदिकाभिमत ३ ४३१ ब, जैनाभिमत ३ ४३१ अ। स्वप्न ४.५०४ ब।

सुयश—४.४३७ अ।

सुर—४ ४३७ अ, असुर १ २१० ब।

सुरगिरि—४.४३७ अ।

सुरदेव—४ ४३७ अ, तीर्थंकर २ ३७७।

सुरपतिकांत—४.४३७ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

सुरप्रभ—तीर्थंकर २.३७७।

सुरमन्यु—४ ४३७ अ।

सुरम्या—विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४।

सुरश्रेष्ठ—तीर्थंकर नेमिनाथ ३.३७८।

सुरस—स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अकन ४ ५१५, देव आयु १ २६७।

सुरसमिति—स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन।

सुरस—४ ५१५, देव आयु १ २६७।

सुरसा—व्यंतरेंद्र गणिका ३ ६११ ब।

सुरा—४ ४३७ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३ ४७६ अ, अकन, ३ ४६८, ३ ४६९। हिमवान् पर्वत का कूट तथा देवी—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, ३.४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४।

सुरारि—राक्षसवंश १.३३८ अ।

सुरालय—४ ४३७ अ।

सुराष्ट्र—४.४३७ अ, मनुष्यलोक ३ २७५ अ।

सुरूपदत्त—तीर्थंकर २.३७७।

सुरेंद्रकांत—विद्याधरनगरी ३ ५४५ ब।

सुरेंद्रकीर्ति—नदिसंघ भट्टारक १ ३२३ ब, इतिहास १ ३३४।

सुरेंद्रचक्र यंत्र—यंत्र ३.३६८।

सुरेंद्रता क्रिया—संस्कार ४ १५३ अ।

सुरेंद्रभूषण—इतिहास १ ३३४ अ।

सुरेंद्रमन्यु—इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।

सुरेश्वर—४.४३७ ब, वेदांत ३.५९५ ब।

सुलस—४ ४३७ ब। देवकुरु का द्रह—निर्देश ३ ४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३ ४९०, ३.४९१, अकन ३.४४४, ३ ४५७, ३ ४६४ के सामने (चित्र सं० ३७)।

सुलसा—४ ४३७ ब, व्यंतरेंद्रों की ज्येष्ठा देवी ४ ५१४ अ।

सुलोका—तीर्थंकर पार्श्वनाथ २ ३८८।

सुलोचन—४ ४३७ ब।

सुलोचना—४ ४३७ ब, अकपन १.३० ब, तीर्थंकर पार्श्वनाथ २ ३८८।

सुलोयणाचरिउ—इतिहास १ ३४३ ब।

सुवंक्षु—४ ४३७ ब।

सुवक्त्र—विद्याधर वंश १ ३३९ अ।

सुवज्र—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

सुवत्सा—४ ४३७ ब।

सुवत्सा—४.४३७ ब। गजदंत के कूट की देवी—निर्देश ३ ४७२ ब, ३ ६१४, अंकन ३ ४५७। विदेहस्थ क्षेत्र निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३ ४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), चित्र ३ ४६० अ। वक्षार गिरि का कूट तथा दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७२ ब,

विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४ ।

सुवप्रा — ४ ४३७ ब ।

सुवप्रा —विदेहस्थ क्षेत्र —निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३.४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देवी —निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४।

सुवर्ण —तौल का प्रमाण २ ५१५ अ। शिखरी पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५ ३ ४८६, अंकन ३ ४४४। सुमेरु की परिधि ३.४४९ ब। सुमेरु के वन मे वरुण देव का पुर—निर्देश ३ ४५० अ, अंकन ३.४५१ ।

सुवर्ण कुंभ—बलदेव ४.१७ ब ।

सुवर्ण कूट—विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ ।

सुवर्णप्रभ —सुमेरु के वन मे वरुण देव का पुर—निर्देश ३ ४५० अ, अंकन ३.४५१ ।

सुवर्णवती—मनुष्यलोक ३ २७५ ब ।

सुवल्गु—४ ४३७ ब, विदेहस्थ क्षेत्र—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३ ४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने (चित्र सं. ३७), चित्र ३.४६० अ। वक्षारगिरि का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४ ।

सुवसु — कुरुवंश १ ३३५ ब, यदुवंश १ ३३७, हरिवंश १ ३४० अ ।

सुविधि —४ ४३७ ब, चक्रवर्ती ४ १५ अ, तीर्थंकर—प्ररूपणा २ ३७९-३९१ ।

सुविशाल—४ ४३७ ब। स्वर्गपटल—निर्देश ४ ५१८, विस्तार ४ ५१८, अंकन ४ ५१५, देव आयु १ २६८ ।

सुवीर्य—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ ।

सुवेल—राक्षसवंश १.३३८ अ ।

सुवेषा—बलदेव ४ १७ ब ।

सुव्यक्त—राक्षसवंश १.३३८ अ ।

सुव्रत —कुरुवंश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ, तीर्थंकर २ ३७७, बलदेव ४.१६ ब, ४.१७ ब, हरिवंश १.३३९ ब, १.३४० अ ।

सुव्रता—तीर्थंकर धर्मनाथ २ ३८०, २.३८८ ।

सुशांति—कुरुवंश १ ३३५ ब ।

सुशील—सुगति ४ ११९ अ ।

सुषमा काल — निर्देश २ ८८, २ ९३, अवगाहना १.१८०, अवसर्पिणी २.८९, आयु १.२६४, आर्यखंड १.२७५ अ, उत्सर्पिणी २ ९०, क्षेत्र २ ९२, गणित २.२१७ ब, दर्शनमोह क्षपणा २ १७८ ब, प्रमाण २.९० ।

सुषमा-दुषमा काल - निर्देश २ ८८, २.९३, अवगाहना १ १८०, अवसर्पिणी २ ८९, आयु १.२६४, आर्यखंड १ २७५ अ, उत्सर्पिणी २ ९०, क्षेत्र २ ९२, गणित २ २१७ ब, प्रमाण २ ९० ।

सुषमा-सुषमा काल—निर्देश २ ८८, २ ९३, अवगाहना १ १८०, अवसर्पिणी २ ८९, आयु १ २६४, आर्यखंड १ २७५ अ, उत्सर्पिणी २ ९०, क्षेत्र २.९२, गणित २.२१७ ब, दर्शनमोह क्षपणा २ १७८ ब, प्रमाण २.९० ।

सुषेण—४.४३८ अ, यदुवंश १.३३६ ।

सुषेणा—तीर्थंकर संभवनाथ २.३८०, वैमानिक इंद्रो की ज्येष्ठा देवी ४ ५१४ अ ।

सुसिद्धार्थ—बलदेव ४.१७ ब ।

सुसीमा—४.४३८ अ, चंद्रमा अग्रदेवी २.३४६ अ, वैमानिक इंद्रो की वल्लभिका देवी ४ ५१३ ब, वैमानिक इंद्रों की ज्येष्ठा देवी ४ ५१४ अ, व्यंतरेंद्र की वल्लभिका ३ ६११ ब ।

सुसीमा (नगरी)—तीर्थंकर अजितनाथ व कुंथुनाथ २.३७८, तीर्थंकर ऋषभानन, बाहु, ईश्वर तथा देवयश २.३९२, बलदेव ४ १६ ब। विदेहस्थ नगरी—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३ ४७० ब, विस्तार ३ ४७९, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, चित्र ३.४६० अ ।

सुसुनाग—मगधदेश इतिहास १.३१० ब, १.३१२, १ ३१३ ।

सुसोमा—तीर्थंकर पद्मप्रभ २.३८० ।

सुस्थित —४.४३८ अ, लवणसागर का रक्षक देव ३.६१४, सल्लेखना ४.३९० ।

सुस्थिता—४ ४३८ अ, रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अंकन ३ ४६९ ।

सुस्वर नामकर्म प्रकृति —प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, ३.९७ अ, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६, बंध ३.९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७९, सत्त्वस्थान ४.३०४, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६७ अ ।

सुस्वरा—व्यंतरेंद्र गणिका ३.६११ ब ।

सुहस्ति —४.४३८ अ ।

सुह्म—४.४३८ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

सू—सूक्ष्म की सहनानी २ २१९ अ, सूच्यगुल की सहनानी २ २१९ ब।

सू²—प्रतरागुल की सहनानी २ २१९ ब।

सू³—घनागुलकी सहनानी २ २१९ ब।

सूकरिका—४ ४३८ अ, मनुष्यलोक ३ २७६ अ।

सूक्ष्म—४.४३८ अ, जीव २ ३३३ ब, पर्याय ३ ४७ ब, श्रद्धान ४ ४५ अ, सहनानी २ २१९ अ, सूक्ष्म ४ ४३९ ब, ४.४४० ब, स्कध ४.४४६ अ-ब।

सूक्ष्म अनुमान लिंग—अनुमान १ ९८ अ।

सूक्ष्म आलोचना—आलोचना का दोष १.२७७ ब।

सूक्ष्म ऋजुसूत्र नय—नय २ ५३५ अ।

सूक्ष्म कषाय—सूक्ष्म सांपराय ४.४४१ ब।

सूक्ष्मकायिक जीव—अप्रतिघाती १.२२३ ब, अहिंसा १ २१७ ब, आयु १ २६४, काय २.४४, जीव २ ३३३ ब, जीवसमास २.३४३, निगोद ३.५०८, वनस्पति ३ ५०३, सूक्ष्म ४ ४३८ अ। प्ररूपणा – बंध ३ १०४, बधस्थान ३.११३, उदय १ ३७९, उदय की विशेषता १ ३७३ अ, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४ २९९, ४ ३०५, त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ २०१, सख्या ४ १०१, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८४, काल २.१०६, अतर १.१२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १.१४६।

सूक्ष्म कृष्टि—उपशम १.४४१ अ, कृष्टि २ १४२ ब, यक्ष (चारित्रमोह क्षपणा) २ १८० ब, सूक्ष्मसांपराय ४ ४४१ ब, ४.४४२ अ।

सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाती—शुक्लध्यान ४.३४ ब, ४ ३६ ब।

सूक्ष्म क्षेत्रफल—गणित २ २३२ ब।

सूक्ष्म जीव—दे० सूक्ष्मकायिक।

सूक्ष्मता—पर्याय ३.४८ ब।

सूक्ष्मत्व गुण—मोक्ष ३ ३२५ ब, ३ ३२६ अ, सूक्ष्म ४.४३९ अ।

सूक्ष्म दोष—आलोचना १ २७७ ब, आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।

सूक्ष्मनिगोद वर्गणा—वनस्पति ३ ५०५ ब, वर्गणा ३.५१३ अ, ३.५१५ ब, ३.५१६ अ, ३ ५१७ ब, ३.५१८ अ।

सूक्ष्म पदार्थ—श्रद्धान ४.४५ अ।

सूक्ष्म परिधि—गणित २ २३२ ब।

सूक्ष्म पर्याय—पर्याय ३ ४७ ब।

सूक्ष्म प्राभृत दोष—आहार १.२९० ब।

सूक्ष्म-बादर-स्कंध—स्कध ४ ४४६ ब।

सूक्ष्म राग—राग ३.३९६ अ।

सूक्ष्म लोभ—सूक्ष्मसांपराय ४ ४४१ ब।

सूक्ष्म व्रत—व्रत ३ ६२७ ब।

सूक्ष्मशरीर नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसयोगी भग १ ४०४। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

सूक्ष्म सांपराय (गुणस्थान)—४ ४४१ अ, अनिवृत्तिकरण १.६८ अ, आरोहण-अवरोहण २ २४७ अ, ईर्यापथ १ ३४९ अ, करणदशक २ ६ अ, कषाय २.४० ब, काय २.४५ ब, कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६० ब, छेदोपस्थापना २ ३०८ ब, परिषह ३.३४ अ, प्रदेश निर्जरा का अल्पबहुत्व १ १७४, बधक ३.१७९ अ, लब्धिस्थानो का अल्पबहुत्व १.१६०, सक्रमण ४ ८६ अ, सिद्धो का अल्पबहुत्व १.१५३, सूक्ष्मकृष्टि २.१४३ अ।

सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान प्ररूपणा—बंध ३ ९७, बंधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ४०६ अ, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७९, सत्त्वस्थान ४ २८९, ४ ३०४, त्रिसयोगी भग १ ४०६ अ। सत् ४ १६४, सक्रमण ४.९४, क्षेत्र २ १९७, स्पर्शन ४.४७७, काल २.१००, अतर १.७, भाव ३ २२२ ब, अल्पबहुत्व १.१४३।

सूक्ष्मसांपराय चारित्र—सूक्ष्मसांपराय ४ ४४१ अ।

सूक्ष्मसांपराय बध—बध ३.१७९ अ।

सूक्ष्मसांपराय बंध—बंध ३.१७९ अ।

सूक्ष्मसांपराय शुद्धि संयत—सूक्ष्मसांपराय ४ ४४१ ब,

सूक्ष्मसांपराय सयम—सूक्ष्मसांपराय ४ ४४१ अ। प्ररूपणा बंध ३.१०६, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३८३, उदयस्थान १ ३९३ अ, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४.३०१, ४ ३०६, त्रिसंयोगी भग १ ४०७ ब, सत् ४ २३८ सख्या ४ १०७, क्षेत्र २ २०५, स्पर्शन ४ ४८९, काल २ ११४, अन्तर १ १६, भाव ३.२२१ अ, अल्पबहुत्व १.१५१।

सूक्ष्म-सूक्ष्म स्कंध—स्कध ४.४४६ ब।

सूक्ष्म स्कंध - सूक्ष्म ४.४३८ अ, स्कध ४.४४६ अ-ब।
सूक्ष्म-स्थूल स्कंध—स्कध ४.४४६ अ।
सूक्ष्म भाषा —भाषा ३ २२७ ब।
सूची —४ ४४२ अ, गणित २ २३३ ब।
सूचीकर्म—अनुयोग १ १०१ ब।
सूच्यंगुल —४ ४४२ अ, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ ब, सहनानी २ २१९ ब।
सूतक—४.४४२ अ।
सूत्र—४ ४४३ अ, आगम १ २३७ अ-ब, १.२३८ ब, ज्ञान २.२६९ अ।
सूत्रकृतांग—४.४४३ अ, श्रुतज्ञान ४.६८ अ।
सूत्र तात्पर्य—ज्ञान २.२६९ अ।
सूत्र दर्शनार्य—आर्य १ २७५ अ।
सूत्रपाहुड—४.४४३ ब, इतिहास १.३४० ब।
सूत्रपौरुषी – अध्ययनकुशल साधु १.५२ अ।
सूत्रमणि—४.४४३ ब, रुचकवर पर्वत की देवी—निर्देश ३ ४७६ ब।
सूत्ररुचि – सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।
सूत्र वचन—आगम प्रामाण्य १.२४२ ब।
सूत्रविरुद्ध—आगम प्रामाण्य १.२३८ अ।
सूत्रसम—आगम १.२३९ अ, आगम प्रामाण्य १.२३५ ब, निक्षेप २ ६०२ अ।
सूत्रसम द्रव्यनिक्षेप —निक्षेप २.६०२ अ।
सूत्र सम्यक्त्वार्य –आर्य १.२७५ अ।
सूत्रसम्यग्दर्शन —सम्यग्दर्शन ४.३४८ ब।
सूत्रोपसंयत —समाचार ४.३३६ अ।
सूना—४.४४३ ब।
सूर – देवकुरु का द्रह—निर्देश ३ ४५६ ब, नामनिर्देश ३.४७४ अ, विस्तार ३.४९०, ३.४९१, अंकन ३.४४४, ३ ४५७, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७)।
सूरकीर्ति—नदिसंघ भट्टारक १.३२३ ब।
सूरदत्त—गणधर २.२१२ ब।
सूरसेन—४.४४३ ब, कुरुवंश १.३३६ अ, तीर्थंकर कुंथुनाथ २.३८०, मनुष्यलोक ३.२७५ अ। सेनसंघ १.३२६ अ।
सूरिप्रभ – तीर्थंकर २.३९२।
सूर्पार—४.४४३ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।
सूर्य—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ, कुरुवंश १.३३५ ब, तीर्थंकर नेमिप्रभ व संजात २.३९२, यदुवंश १.३३७ हरिवंश १ ३४० अ।
सूर्य (ज्योतिष देव)—४ ४४३ ब, निर्देश २.३४५ ब, आयु १ २७८। इन्द्र – निर्देश २ ३४५ ब, परिवार २ ३४६ अ, किरणे व शक्ति २ ३४७, विमान सख्या २ ३४८ अ, अवस्थान २ ३४६ ब।
सूर्य (ज्योतिष देव प्ररूपणा) बध ३ १०२, बधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसयोगी भग १ ४०६ ब। सत् ४.१८८, सख्या ४.९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २ १०४, अतर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।
सूर्य (विमान)—निर्देश (ज्योतिषलोक) २ ३५० ब, काल २.८७ ब, किरणे तथा वाहक देव २.३४८ अ, गगनखड २ ३५० अ, गतिविधि २.३५० अ, ग्रहण २.३५१, चार क्षेत्र २.३४९ अ, परिवार २.३४६, विस्तार २.३५१, वीथियो २.३४९ ब, अकन २ ३४७। स्वप्न ४ ५०४ ब, ४.५०५ अ।
सूर्यक—मगधदेश इतिहास १ ३१२।
सूर्यगिरि—४ ४४३ ब। विदेह वक्षार—निर्देश ३ ४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३ ४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७), वर्ण ३ ४७७। इस वक्षार का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३.४४४।
सूर्यग्रहण—ज्योतिषलोक २.३५१ अ।
सूर्यघोष—कुरुवंश १.३३५ ब।
सूर्यतप—कायक्लेश २.४७ अ।
सूर्यद्वीप—निर्देश ३.४६२ ब, विस्तार ३ ४७९, अंकन ३ ४६१।
सूर्यपत्तन—४ ४४३ ब।
सूर्यपुर—४ ४४३ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।
सूर्यप्रज्ञप्ति—४.४४३ ब, श्रुतज्ञान ४.६८ ब, इतिहास १.३४१ अ।
सूर्यप्रभ – चक्रवर्ती ४.१३ अ, ४.१५ अ।
सूर्यप्रभा—सूर्य की अग्रदेवी २.३४६ अ।
सूर्यमंडल—काल २.८७ ब।
सूर्यमाल – विदेह वक्षार—निर्देश ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७१ अ, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३.४७७। इस का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८२, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४।

सूर्यरज—४ ४४३ ब, वानरवश १ ३३८ ब।
सूर्यवश – इक्ष्वाकुवश १ ३३५ अ, इतिहास १ ३३९ ब।
सूर्यह्रद—४ ४४३ ब।
सूर्याचरण—४ ४४३ ब, सुमेरु ४ ४३७ अ।
सूर्याभ—४ ४४३ ब, लौकातिक देव ३ ४९३ ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।
सूर्यावर्त—४.४४३ ब, सुमेरु ४ ४३७ अ।
सूवा—सूतक ४ ४४२ ब।
सृष्टि—४.४४३ ब, काल २.९१, केवली ४ १६० अ, वेदात ३ ५९६ ब, वैशेषिक दर्शन ३.६०८ अ।
सृष्ट्यधिकारता अधिकार—ब्राह्मण ३ १९६ अ।
सेज्जाधर—४.४४३ ब।
सेन – तीर्थंकर धर्मनाथ २.३८७।
सेनसंघ—इतिहास १ ३२६ अ।
सेना—४ ४४४ अ, अनीक १ ६८ ब, तीर्थंकर सभवनाथ २ ३८०, तीर्थंकर वासुपूज्य २ ३८८।
सेनापति—४ ४४४ अ, चक्रवर्ती ४ १३ अ।
सेनामुख—४.४४४ अ।
सेमर—४ ४४४ अ।
सेवक –तीर्थंकर २ ३७७, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, राग ३ ३९९ अ।
सेवन—वन्दना ३ ३९९ ब।
सेवा—४ ४४४ अ।
सेही—तीर्थंकर अनतनाथ २.३७९।
सैंतालीस--जीव (शक्तियाँ) २ ३३७, नय २.५२३ अ।
सैंधव—४ ४४४ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
सैकेंड—काल का प्रमाण २ २१७ अ।
सैंतव – ४ ४४४ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
सैद्धांतिक (देव)— ४ ४४४ अ।
सोगधिक – सख्या का प्रमाण २.२१४ ब।
सोतांतर वाहिनी—विभगा नदी – निर्देश ३ ४६० अ, नाम-निदश ३ ४७४ ब, विस्तार ३.४८९, ३.४९०, अकन ४ ४४४, ३ ४६४ के सामने।
सोता—निद्रा २ ६०९ अ, सम्यग्दृष्टि ४.३७८ अ।
सोतो-वाहिनी—विभगा नदी – निर्देश ३.४६० अ, नाम-निर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४८९, ३.४९०, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने।
सोना—निद्रा २ ६१० अ, सम्यग्दृष्टि ४ ३७८ अ।
सोपक्रम आयुष्क—आयु १.२५९ अ, १ २६० अ।
सोपक्रम काल—काल २ ८१ अ।
सोपाधिक अनुमान—उपाधि १ ४४४ अ।
सोम—४ ४४४ अ, नक्षत्र २ ५०४ ब, नारायण ४ १८ ब, यदुवश १.३३७, विद्याधरवश १ ३३९ अ।
सोम (लोकपाल) - निर्देश (लोकपाल) ३.४९१ ब, आयु १ २६९, मध्यलोक मे अवस्थान ३ ६१३ अ, सुमेरु पर्वत पर अवस्थान ३ ४५० अ-ब, स्वर्गलोक में अवस्थान ४.५१३ अ, शक्ति व ऋद्धि ४.५१३ अ।
सोमक—तीर्थंकर नेमिनाथ के गणधर २ ३८७।
सोमकायिक—४ ४४४ अ, आकाशोपपन्न देव २ ४४५ ब।
सोमकीर्ति—४ ४४४ अ, काष्ठासघ १ ३२७ अ, इतिहास १ ३३३ अ, १ ३४६ अ।
सोमदत्त—४.४४४ ब, गणधर २ २१२ ब, यदुवश १.३३७।
सोमदेव—४.४४४ ब, अग्निभूत १.३६ ब, इतिहास—प्रथम १.३३० ब, १.३४२ ब। द्वितीय १ ३३१ अ, १ ३३३ अ।
सोमनाथ—४ ४४४ ब, इतिहास १.३३२ अ।
सोमप्रभ—४ ४४४ ब, कुरुवंश १.३३५ ब, तीर्थंकर बलदेव ४ १७ अ, ४.१८ अ, राज्यवश सामान्य १ ३३५ अ।
सोमयश—४.४४५ ब, इक्ष्वाकुवश १.३३५ अ, सोमवंश १ ३३९ ब।
सोमवंश—इतिहास १.३३९ ब, ऋषिवश १ ३३५ ब, चन्द्रवश १ ३३६ ब।
सोम शर्मा ४ ४४४ ब।
सोमश्री—यदुवश १.३३७।
सोमश्रेणी—४ ४४४ ब।
सोमसेन—४ ४४४ ब, सेनसघ १ ३२६ अ-ब, इतिहास १.३३३ ब, १ ३४७ ब।
सोमा—तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ २.३८०।
सोमिल—४.४४४ ब, अंतकृत केवली १ २ ब।
सोमेश्वर—४.४४४ ब, मीमासा दर्शन (भट्ट) ३.३११ अ।
सोरठ—४ ४४४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।
सोलसा—२ ४४४ ब, तीर्थंकर धर्मनाथ की यक्षिणी २.३७९।
सोलह—सहनानी—अनन्त = १६, अनंतानंत = १६, असख्यात (परीत) = १६, जीवराशि = १६। काल समय राशि = १६ ख ख, आकाशप्रदेश राशि = १६ ख ख ख। गणित २.२१९ अ।
सोलह—आहार के उत्पादन व उद्गम दोष १.२८९-२९१, कुलकर ४.२३ अ पृथिवी (रत्नप्रभा) ३.३८९ ब, भावना ३.२२५ अ, स्वप्न ४.५०४ अ।

सोल्व—४.४४५ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।
सौ—सख्या का प्रमाण २.२१४ ब, इन्द्र १.२९९ अ।
सौकर—४ ४४५ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।
सौक्ष्म्य—सूक्ष्म ४.४३८ ब, स्कध ४.४४७ ब।
सौगधी—मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अंकन ३.४६४।
सौत्रांतिक—बौद्ध दर्शन ३ ३८७ अ।
सौदामिनी—४ ४४५ अ, रुचकवर पर्वत की देवी—निर्देश ३.४७६ ब, अंकन ३.४६८, ३ ४६९।
सौदास—४.४४५ अ, इक्ष्वाकुवश १ ३३५ ब।
सौधर्म देव—४.४४५ अ, अवगाहना १ १८० ब, अवधि ज्ञान १ १९८, आयु १.२६६, आयुबध के योग्य परिणाम १ २५८ ब। इद्र—निर्देश ४ ५१० ब, दक्षिणेद्र ४ ५११ अ, परिवार ४ ५१२-५१३, चिह्न आदि ४ ५११ ब, अवस्थान ४ ५२० ब, विमान, नगर व भवन ४.५२०-५२१।
सौधर्म देव (प्ररूपणा)—बध ३.१०२, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान, १ ४१२ सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४ २९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४.१८९, सख्या ४ ९७, क्षेत्र २.१९९, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अंतर १.१०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १ १४५।
सौधर्म स्वर्ग—निर्देश ४.५१४ ब, पटल ४ ५१६, इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ४.५१६, ४.५२०, दक्षिण विभाग ४ ५२० ब, अवस्थान ४.५१४ ब, अकन ४ ५१५, चित्र ४.५१९ ब। नारायण ४.१८ ब, बलदेव ४.१६ ब।
सौनद—नारायण ४ १९ ब।
सौनंदक—चक्रवर्ती ४.१५ अ।
सौभाग्य—सुभग ४.४३६ अ।
सौभाग्यदशमी व्रत—४.४४५ ब।
सौमनस—४.४४५ ब, चैत्य-चैत्यालय २ ३०३ अ, विद्याधर नगरी ३.५४६ अ, सनत्कुमार का यान ४ ५११ ब। स्वर्गपटल—निर्देश ४.५१९ अ, अकन ४ ५१५, ४ ५१७, देव आयु १.२६८।
सौमनस (पर्वत तथा कूट)—गजदत पर्वत—निर्देश ३.४५६ ब, नामनिर्देश ३ ४७१ ब, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ३.४६२, चित्र ३ ४५२ ब, वर्ण ३ ४७७, इसके कूट तथा देव ३.४७२ ब। गजदंत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ ब, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४५७। रुचकवर पर्वतका—कूट निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३ ४८७ अकन ३.४६९।
सौमनस वन—सुमेरु पर्वत का वन—निर्देश ३.४५० अ, विस्तार ३.४८८, चित्र ३ ४५१। इस वन का एक भाग ३ ४५० अ।
सौम्य चर्चा—हेतु ३.५३३ ब।
सौम्य रूपक—स्वर्ग का श्रेणीबद्ध—निर्देश ४ ५१९ अ, अकन ४ ५१५, ५१७, देव आयु १.२६९।
सौम्या—व्यंतरेद्र गणिका ३ ६११ ब।
सौम्या वाचना—वाचना ३ ५३१ ब।
सौराष्ट्र—मगधदेश इतिहास १.३१० ब, १ परि० २.२।
सौवीर—४ ४४४ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ अ।
सौवीर भुक्ति व्रत—४.४४४ ब।
सौषिर शब्द—शब्द ४.३ अ।
स्कंदगुप्त—४ ४४५ ब, गुप्तवश १.३११ अ-ब, १ ३१५।
स्कध—४ ४४५ ब, अण्डर १ २ अ, आकाश (लोकाकाश) १ २२३ अ, कर्म २.२७ ब, परमाणु १.२२४ अ, वनस्पति ३ ५०६ ब, ३.५१० अ, सूक्ष्म ४.४३८ अ, सूक्ष्म (महास्कध) ४ ४३९ अ।
स्कंध देश—स्कध ४ ४४६ अ।
स्कध प्रदेश—स्कंध ४.४४६ अ।
स्कंध बीज—वनस्पति ३.५०२ ब, ३ ५०६ अ।
स्कधशाली—४ ४४८ ब, महोरग ३.२९३ अ।
स्तंभन—ध्यान २.४९७ अ, मंत्र ३.२४५ ब।
स्तभन यत्र—यत्र ३ ३६८।
स्तंभ स्थिति—व्युत्सर्गदोष ३ ६२१ ब।
स्तंभावष्टंभ—४.४४८ ब, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२१ ब।
स्तनक—४ ४४८ ब। नरक पटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।
स्तनदृष्टि—४ ४४९ अ, व्युत्सर्ग ३.६२१ ब।
स्तनलोला—४ ४४९ अ। नरकपटल—निर्देश २ ५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अकन ३ ४४१। नारकी—अवगाहना १ १७८ आयु १.२६३।
स्तनलोलुक—४.४४९ अ। नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब। विस्तार २.५७९ ब, अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १.२६३।
स्तनलोलुप—४.४४९ अ। नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २.५७९ ब। अंकन ३.४४१। नारकी—अवगाहना १.१७८, आयु १ २६३।
स्तनित—४.४४९ अ।

स्तनितकुमार—(४४४१ अ)। भवनवासी देव—निर्देश ३.२०८ अ, ३ २१० ब, अवगाहना १.१८०, अवधि ज्ञान १ १९८, आयु १ २६५। इन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, शक्ति आदि ३ २०८ ब, अवस्थान ३ २०९ ब, ३ ४७१, ३ ६१२-६१४।

स्तनितकुमार (प्ररूपणा)– बंध ३ १०२, बंधस्थान ३.११३ उदय १ ३९३, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०६ ब। सत् ४ १८८, संख्या ४ ९७, क्षेत्र २ १९९, स्पर्श ४ ४८१, काल २ १०४, अतर १ १०, भाव ३ २२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

स्तनोन्नोति—व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ अ।

स्तब्ध—४.४४९ अ, व्युत्सर्ग दोष ३ ६२२ ब।

स्तब्धत्व—मान ३ २९४ ब।

स्तव—उपयोग १.४२९ ब, भक्ति ३ १९९ ब।

स्तवदंडक—कृतिकर्म २ १३४ ब।

स्तवन—उपयोग १ ४२९ ब, भक्ति ३.१९९ ब।

स्तवभूति—तीर्थंकर देवयश २.३९२।

स्तिमितसागर—यदुवश १.३३७।

स्तिवुक संक्रमण—सक्रमण ४ ९० ब।

स्तुति—४ ४४९ अ, उपयोग १ ४२९ ब, भक्ति ३ १९९ ब।

स्तुति (दोष)– आहार १ २९१ अ-ब।

स्तुति विद्या—इतिहास १.३४० ब।

स्तूप—४.४४९ अ, चैत्यचैत्यालय २ ३०२ ब, २.३०३ अ।

स्तेन प्रयोग—४ ४४९ अ, अस्तेय व्रतातिचार १ २१३ ब।

स्तेनित—४ ४४९ अ, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ ब।

स्तेय—४ ४४९ अ, अस्तेय १.२१३-२१५, अहिंसा १ २१७ अ।

स्तेयानंद—रौद्रध्यान ३ ४१४ ब।

स्तोक—४.४४९ अ, काल का प्रमाण २ २१६ अ-ब।

स्तोत्र—४ ४४९ अ।

स्त्यानगृद्धि—निद्रा २.६०८ ब।

स्त्यानगृद्धि कर्म प्रकृति—दर्शनावरण २.४२० अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, २ ४२०, स्थिति ४.४६२, अनुभाग १.९४ ब, प्रदेश ३.१३६। बध ३.९७, बंधस्थान ३ १०९, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७३ब, उदयस्थान १.३८७, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.२९४, त्रिसंयोगी भंग १ ३९९, संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

स्त्यानत्रिक—उदय १ ३७४ ब।

स्त्री—४ ४५९ ब, आहारक काययोग १ २९७ ब, परिषह ३ ३३ ब, ३.३४ अ, ४ ४५२ ब। वेद—तीर्थंकर ३ ५९० अ, प्रमाद ३ ५८९ अ, प्रव्रज्या २ ५८८ ब, मुक्ति ३ ५८८ ब। शुक्लध्यान ४.३६ ब, संहनन ४ १५६ अ।

स्त्रीकथा—कथा २ ३ ब।

स्त्रीपरिषह—४ ४५२ अ। परिषह ३.३३ ब, ३ ३४ अ।

स्त्रीप्रव्रज्या—वेद ३.४८८ ब।

स्त्रीमुक्ति—वेद ३ ५८८ ब।

स्त्रीमुक्ति प्रकरण—इतिहास १ ३४२ अ।

स्त्री वेद—४.४४९ ब, आहारक काययोग १.२९७ ब, कषाय २ ३५ ब, राग २ ३९ अ। प्ररूपणा - बंध ३ १०५, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३८१, उदयस्थान १ ३९२ ब, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२ ब, सत्त्व ४ २८३, सत्त्वस्थान ४.३००, ४ ३०५, त्रिसयोगी भग १.४०७ अ। सत् ४ २२२, सख्या ४ ९४ ब, ४ १०४, क्षेत्र २.२०३, स्पर्शन ४.४८७, काल २ १११, अतर १.१४, भाव ३.२२० ब, अल्पबहुत्व १.१४८।

स्त्रीवेद कर्मप्रकृति—निर्देश (मोहनीय) ३ ३४४ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३.९४ ब, २ ५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बंध ३.९७, बंध की कालावधि का अल्पबहुत्व १.१६१, बध विषयक नियम ३ ९६ ब, बंधस्थान ३.१०९, उदय १.३७५, उदय की विशेषता १.३७३ ब, उदयस्थान १.३८९, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ २९५, ४.३०५, स्थिति सत्त्वस्थानो का अल्पबहुत्व १.१६५ ब, त्रिसयोगी भंग १ ४०१ ब। संक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

स्त्रीवेद सिद्ध—अल्पबहुत्व १ १५३ ब।

स्त्रीसंसर्ग—संगति ४ ११९ ब।

स्थडिल—समिति ४ ३४१ ब, सल्लेखना ४.३८९ ब।

स्थपति—४ ४५२ ब, चक्रवर्ती ४.१३ अ।

स्थलगता चूलिका—४.४५२ ब, श्रुतज्ञान ४.६९ अ।

स्थविर कल्प - ४ ४५२ ब, कृतिकर्म २ १३६ ब, श्वेताबर ४.७९ अ।

स्थविरवादी मत—बौद्ध दर्शन ३.१८६ अ।

स्थान—४.४५२ ब, अध्यवसाय १.५३ अ, अध्यात्म १.५४ अ, अनुभाग १.८९ अ, अनुयोगद्वार १.१०२ ब, अंतर १.३ ब, आबाधा १.२४८ ब, आयुबंध १ १६४ अ, उदय १.३८७, गणित २.२२९ ब, गुणस्थान २.२४६

अ, जीवसमास २.३४१ ब, ३ २९६ ब, बध ३ ११०, बंध-उदय-सत्त्व के त्रिसंयोगी स्थान १ ३९९, मार्गणा ३ २९६ ब, योग ३.३८८ अ, लब्धि ३ ४१४ अ, सक्लेश विशुद्धि ३.५६८ ब, सत्त्व ४ २८७।

स्थान अल्पबहुत्व—अनुभाग १ १६६, बंध १ १६४ ब, बंध समुत्पत्तिक १ १६५ ब, योग १ १६१ ब, लब्धि १.१६०, सक्लेश विशुद्धि १.१६०, स्थितिबध १ १६४ ब, स्थितिसत्त्व १ १६५ ब, हत्समुत्पत्तिक १ १६६ अ।

स्थानकवासी – निन्दा २ ५८८ ब, श्वेताबर ४.८० ब।

स्थानगत—भग ३ १९७ अ।

स्थान तप – कायक्लेश २ ४७ अ।

स्थायी उपादान—उपादान १.४४३ ब।

स्थानलाभ क्रिया—संस्कार ४.१५२ ब।

स्थानांग—४.४५३ ब, श्रुतज्ञान ४ ६८ अ।

स्थानांतर गमन – आहारांतराय १.२९ ब।

स्थानार्ह पद्धति—४.४५३ ब।

स्थापना—४.४५३ ब, अनंत १ ५५ ब, अतर १ ३ ब, उपशम १ ४३७ अ, धारणा २ ४९१ अ, ध्यान २.५९८ ब, ध्येय २ ५०० अ, पूजा ३ ८० ब।

स्थापना उपक्रम – उपक्रम १.४१६ ब।

स्थापनाक्षर—अक्षर १ ३३ अ।

स्थापना कर्म—कर्म २ २६ अ।

स्थापना कषाय—कषाय २ ३५ ब, २ ३७ ब।

स्थापना छेदना—छेदना २ ३०६ ब।

स्थापना नय—नय २ ५२२ ब।

स्थापना निक्षेप—निक्षेप २ ५९७ ब।

स्थापना प्रतिक्रमण—प्रतिक्रमण ३ ११६ ब।

स्थापना प्रत्याख्यान – प्रत्याख्यान ३.१३२ अ।

स्थापना मगल—मंगल ३.२४१ अ।

स्थापना सत्य—सत्य ४ २७१ ब।

स्थापनास्तव—भक्ति ३.२०० ब।

स्थापित—४ ४५३ ब, आहारदोष १.२९० व, उद्दिष्टदोष १ ४१३ अ।

स्थावर (काय) – ४ ४५३ ब, अवगाहना १ १७९, जीव २ ३३३ ब, जीवस्थान २.३४२-३४३, पर्याप्ति ३ ४४ अ, प्राण ३ १५३ अ। प्ररूपणा—बंध ३ १०४, बधस्थान ३ ११३, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ २८२, सत्त्वस्थान ४.२९९, ४ ३०५. त्रिसयोगी भंग १ ४०६ ब। सत् ४ १९९, संख्या ४.९९, क्षेत्र २ २०१, स्पर्शन ४ ४८३, काल २ १०६, अंतर १ १२, भाव ३ २२० ब, अल्पबहुत्व १ १४५।

स्थावर जीव—स्थावर ४ ४५३ ब।

स्थावर दशक—उदय १ ३७४ ब।

स्थावर-लोक—स्थावर ४.४५५ अ।

स्थावर-शरीर नामकर्म-प्रकृति—प्ररूपणा – प्रकृति ३ ८८, २.५८३, स्थिति ४.४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६। बध ३ ९७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४, सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६७।

स्थित—निक्षेप २.६०१ ब, जीव २ ३३९ अ।

स्थिति—४ ४५५ ब, अनुयोग १ १०२ अ, अतरकरण १.२५ ब, अपकर्षण १.११५ ब, ईर्यापथ १.३५० अ, उत्कर्षण १ ३५३ ब, उत्पादादि १ ३६० अ, उदय १.३६५ ब, १ ३८७, द्वितीय (अन्तरकरण) १ २५ अ-ब, १.२६ अ, धर्माधर्म २ ४८८ ब, २.४९०, प्रथम (अतरकरण) १.२५ अ-ब, १ २६ अ, बध (स्थिति) ४ ४६०, बधस्थान अल्पबहुत्व १ १६५, सत्त्व (अल्पबहुत्व) १.१७६ सत्त्व (काल) २ १२०, सत्त्वस्थान अल्पबहुत्व १ १६४ ब, सर्वस्थिति ४ ३८० ब, स्थान ४ ४५२ ब, स्थिति प्ररूपणा ४ ४६०।

स्थिति-अपसरण—क्षय २.१८० अ, काडक २ ४२ अ।

स्थितिकरण—४.४७० अ।

स्थितिकल्प—४ ४७० ब।

स्थिति-कांडक घात—अतरकरण १ २६ ब, अपकर्षण १ ११६ ब, १ ११७ अ।

स्थिति-क्षय—उदय १ ३६५ ब।

स्थिति-घात—अनुभाग १ ११७ ब, अपकर्ष १ ११६ ब, १ ११७, आयु १ २६१ ब।

स्थिति-तप—कायक्लेश २ ४७ अ।

स्थिति-दंड – केवली २ १६७ अ।

स्थिति-निषेक—उदय १ ३७०।

स्थितिबंध—अध्यवसाय स्थान १ ५३ अ, ४ ११६ ब, अंतरकरण १ २६ ब, स्थिति ४ ४५६ ब, ४.४५७ ब।

स्थितिबंध अध्यवसाय स्थान अध्यवसाय १.५३ अ, सख्या ४ ११६ ब।

स्थितिबंध प्ररूपणा—स्थिति ४ ४६० अ।

स्थितिबंध वेदना—अल्पबहुत्व १ १७६।

स्थितिबंध स्थान—अल्पबहुत्व १ १६४ ब, स्थान ४.४५२ ब।

स्थितिबंधापसरण—अपकर्षण १ ११५ अ, काण्डक २ ४२ अ, क्षय २.१८० अ।
स्थिति-भोजन—४ ४७० ब, आहार १.२८६ ब।
स्थिति-विपरिणामना—विपर्यय ३ ५५५ ब।
स्थिति-व्यक्ति—उत्कर्षण १.३५४ ब।
स्थिति-शक्ति—उत्कर्षण १ ३५४ ब।
स्थिति सक्रमण—आयुबध १ १६५।
स्थितिसत्त्व—सत्त्व ४ २७६ ब।
स्थितिसत्त्वस्थान—अल्पबहुत्व १ १६५।
स्थिर—४ ४७० ब, आसन २.४९३ अ, चारित्र २ २८४ अ, चित्त १ ४६६ अ, ध्यान २.४९५ ब, यदुवश १.३३७।
स्थिर-आसन—ध्याता २ ४९३ अ।
स्थिरचित्त—उपयोग १.४६६ अ, ध्यान २ ४९५ ब।
स्थिर-नामकर्म-प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३.९६ अ, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३.१३६। बंध ३.९७, बधस्थान ३.११०, उदय १.३७५, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसयोगी भग १.४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६७।
स्थिरभाव—सामायिक ४.४१५ ब।
स्थिरहृदय—कुडलवर पर्वत के कूट का देव—निर्देश ३.४७५ ब, अंकन ३ ४६७।
स्थूणा—४.४७१ अ, औदारिक शरीर १.४७२ अ।
स्थूल—अनुमान लिंग १ ९८ अ, औदारिक १.४७१ अ, पर्याय ३ ४७ ब, ३ ४८ ब, स्कध ४.४४६ अ।
स्थूल अब्रह्म—श्रावक ४ ५० ब।
स्थूल ऋजुसूत्र नय—नय २ ५३५ अ।
स्थूल चोरी—अस्तेय १ २१३ ब।
स्थूल जीव—अहिंसा १ २१७ ब।
स्थूल परिग्रह—श्रावक ४ ५० ब।
स्थूलभद्र—४ ४७१ अ, इतिहास १ ३२८ अ, १.परि०/-२ २, श्वेताबर ४ ७७ अ-ब, ४ ७८ अ।
स्थूलव्रत—व्रत ३ ६२७ ब।
स्थूल-सूक्ष्म—स्कध ७ ४४६ अ।
स्थूल-स्थूल—पर्याय ३ ४७ ब, स्कध ४ ४४६ अ।
स्थूलाचार्य—४ ४७१ अ, इतिहास १ ३२८ अ, श्वेताबर ४.७७ अ।
स्थैर्य—ध्रौव्य १ ३५८ अ।
स्थौल्य—सूक्ष्म ४ ४३९ अ।
स्नात—स्नान ४ ४७१ ब।
स्नातक—४ ४७१ अ, साधु ४ ४०८ ब।
स्नान—४ ४७१ ब, पूजा ३ ८१ ब।
स्नायु—औदारिक शरीर १.४४२ अ।
स्निग्ध—४.४७१ ब, स्कंध ४.४४८ अ।
स्निग्धगुण—ईर्यापथ कर्म १ ३४९ ब।
स्निग्धत्व—स्कध ४.४४८ अ।
स्नेह—अतिचार १.४४ अ, वात्सल्य ३ ५३२ अ-ब।
स्नेहातिचार—अतिचार १.४४ अ।
स्पदन—दे० परिस्पंदन।
स्पंदरहित नेत्र—चैत्य-चैत्यालय २ ३०२ ब।
स्पर्धक—४ ४७२ अ, उदय १ ३६६ ब, भोग ३ ३८३ ब।
स्पर्धक करण—कृष्टि २ १४० ब।
स्पर्धक शलाका—सहनानी २.२१९ अ।
स्पर्श—४ ४७३ ब, आहारातराय १ २८ अ, ईर्यापथ कर्म १.३४९ अ, सम्यग्दर्शन ४.३५० ब, सर्वस्पर्श ४.३८० ब।
स्पर्श-अन्तरविधान—अनुयोग १.१०२ अ।
स्पर्श-कालविधान—अनुयोग १.१०२ अ।
स्पर्श क्षेत्रविधान—अनुयोग १.१०२ अ।
स्पर्श गतिविधान—अनुयोग १ १०२ अ।
स्पर्श द्रव्यविधान—अनुयोग १.१०२ अ।
स्पर्शन—अनुयोग १ १०२ अ, आहारातराय १.२८ अ, कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६०, क्षेत्र २.१९१ अ, २ १९२ ब, प्रदेश तथा अवगाहना का अल्पबहुत्व १.१५७, प्ररूपणा ४ ४७७, मोहनीय ३.३४२ ब, स्पर्शन ४.४७४ ब।
स्पर्शन इंद्रिय—इंद्रिय १ ३०२ अ।
स्पर्शन क्रिया—क्रिया २ १७४ ब।
स्पर्शनानुगम—अनुयोग १.१०३ अ।
स्पर्शनानुयोगद्वार—स्पर्श ४.४७४ ब।
स्पर्श नाम कर्मप्रकृति—प्रकृति ३ ८८, २.५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १.९५, प्रदेश ३ १३६, बंध ३ ९७, बधस्थान ३ ११०, उदय १ ३७५, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसंयोगी भंग १ ४०४। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६९।
स्पर्श नाम-विधान—अनुयोग १.१०२ अ।
स्पर्श नाम विभीषणता—अनुयोग १ १०२ अ।
स्पर्श-निक्षेप—अनुयोग १.१०२ अ।
स्पर्श-परिमाण विधान—अनुयोग १ १०२ अ।
स्पर्श-प्रत्ययविधान—अनुयोग १.१०२ अ।

स्पर्श-भागाभाग-विधान—अनुयोग १.१०२ अ।
स्पर्श-भावविधान—अनुयोग १ १०२ अ।
स्पर्श-सन्निकर्षविधान—अनुयोग १ १०२ अ।
स्पर्श-स्पर्श विधान—अनुयोग १ १०२ अ, स्पर्श ४.४७६ अ।
स्पर्श-स्वामित्वविधान—अनुयोग १.१०२ अ।
स्पष्ट—४.४९५ अ।
स्पष्टता—त्रिंशद ३ ५६७ ब।
स्पृश्य—वर्णव्यवस्था ३ ५२५ ब।
स्पृष्ट—इंद्रिय १ ३०३ अ।
स्पृहा—४ ४९५ अ।
स्फटिक—४.४९५ अ। अनुदिश स्वर्ग का श्रेणीबद्ध—निर्देश ४ ५१९ अ, अंकन ४ ५१५, ४ ५१७, देव आयु १.२६९। कारण (कर्म संयोग का उदाहरण) २ ७१ ब। कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६७। गजदंत का कूट—निर्देश ३.४७५ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४ ३ ४५७। मानुषोत्तर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ अ, विस्तार ३ ४८६, अंकन ३.४६४, रत्नप्रभा की चित्रा पृथिवी ३ ३९१ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९। सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४.५१६, विस्तार ४.५१६, अंकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६६।
स्फटिकप्रभ—४ ४९५ अ, कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७५ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६७।
स्फुट—राक्षसवंश १ ३३८ अ।
स्फुटपद—इतिहास १ ३४७ ब।
स्फोट—४ ४९५ अ, कर्म ४.४२१ ब।
स्फोटित—४.४९५ ब, गणित २.२२२ ब।
स्मरण—आहारातराय १.२९ अ, मतिज्ञान ३ २५४ ब।
स्मरणाभास—४.४९५ ब।
स्मितगिरि—मनुष्यलोक ३ २७५ ब।
स्मितयश—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ अ।
स्मृति—४ ४९५ ब, आहारातराय १ २९ अ, प्रत्यभिज्ञान ३ २५४ अ, मतिज्ञान ३ २५४ अ।
स्मृत्यनुपस्थानानि—४ ४९५ ब।
स्मृत्यंतराधान—४ ४९५ ब।
स्यंदन—४.४९६ अ।
स्यात्—४.४९६ अ, सप्तभंगी ४.३१५ ब, ४.३१७ अ, स्याद्वाद ४.४९७ अ।
स्यात्कार—स्यात् ४ ४९६ ब, सप्तभंगी ४ ३१५ ब, स्याद्वाद ४.५०० अ, ४ ५०१ अ।
स्याच्चेतन—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्याच्छुद्ध—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यात्पद—नय २.५१७ ब।
स्यात्परम—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादचेतन—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादनित्यत्व—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादनुपचरित स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादनेकत्व—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादनेकप्रदेशत्व—स्याद्वाद ४ ४४९८ ब।
स्यादपरम—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादभव्यत्व—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादभेदत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब।
स्यादमूर्त—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादवक्तव्य—सप्तभंगी ४ ३१४ ब।
स्यादशुद्धत्व स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादस्ति—सप्तभंगी ४.३१४ ब, स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादस्ति अवक्तव्य—सप्तभंगी ४ ३१४ ब।
स्यादस्ति नास्ति—सप्तभंगी ४ ३१४ ब।
स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्य—सप्तभंगी ४ ३१४ ब।
स्यादस्त्यवक्तव्य—सप्तभंगी ४ ३१४ ब।
स्यादुपचरित—स्याद्वाद ४.४९८ ब।
स्यादेकत्व—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्यादेकप्रदेशत्व—स्याद्वाद ४ ४९८ ब।
स्याद्भव्यत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब।
स्याद्भेदत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब।
स्याद्वाद—४.४९६ ब, श्रुतज्ञान ४ ६३ ब, सप्तभंगी ४ ३१३ ब सापेक्ष ४ ४११ अ।
स्याद्वादभूषण—४ ५०२ ब, अभयचंद्र १ १२७ अ, इतिहास १ ३४५ अ।
स्याद्वादमंजरी—४.५०२ ब, इतिहास १ ३४५ अ।
स्याद्वादमंजूषा—४.५०२ ब, इतिहास १ ३४७ ब।
स्याद्वादरत्नाकर—इतिहास १ ३४४ अ।
स्याद्वादवदन विदारण—४ ५०२ ब, इतिहास १ ३४६ ब।
स्याद्वादसिद्धि—४.५०३ अ इतिहास १ ३४४ अ।
स्याद्वादोपनिषद्—४.५०३ अ, इतिहास १.३४२ ब।
स्यान्नास्ति—सप्तभंगी ४ ३१४ ब, स्याद्वाद ४.४९८ ब।
स्यान्नास्त्यवक्तव्य—सप्तभंगी ४.३१४ ब।
स्यान्नित्यत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब।
स्यान्मूर्तत्व—स्याद्वाद ४.४९८ ब।
स्रष्टा—कर्म २.२८ अ।

स्व—अनेकांत (सापेक्ष धर्म) १ १०९ अ।
स्व-अनुकपा—अनुकपा १ ६९ अ।
स्व-अहिंसा—अहिंसा १ २१६ ब।
स्व-आकार—सप्तभगी ४ ३२२ अ।
स्व-उपकार—उपकार १ ४१५ अ-ब।
स्वकाल—काल २ ८० अ, चतुरय २ २७८ अ, सप्तभगी ४ ३२३ अ।
स्वकाल निर्जरा—अनुप्रेक्षा १ ७५ ब।
स्वकीय काल—सप्तभगी ४ ३१९ अ।
स्व-क्षेत्र—क्षेत्र २ १९१ ब, ३ १९३ अ, चतुष्टय २ २७८ अ, ससार ४ १४७ अ-ब, सप्तभगी ४ ३१९ अ, ४ ३२१ अ।
स्वगणानुपस्थापनप्रायश्चित—३.३५ ब।
स्वगुरु-स्थापनावाप्ति क्रिया—संस्कार ४ १५१ ब।
स्वग्राम-अभिघट दोष—आहार १.२९० ब, उद्दिष्ट १.४१३।
स्वग्राम दोष—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।
स्वचतुष्टय—चतुष्टय २ २७७ ब, सप्तभगी ४.३१७ ब, ४ ३१९ ब।
स्वचारित्र—चारित्र २.२८२ ब, २ २८३ अ, मोक्षमार्ग ३ ३३८ अ।
स्वच्छत्व शक्ति—४ ५०३ ब।
स्वच्छद—४.५०३ अ, अवसन्न १ २८१ ब, साधु ४ ४०८ ब, ४.४०९ ब।
स्वच्छद वृत्ति—अपवादमार्ग १ १२३ ब।
स्वच्छंद श्रोता—उपदेश १ ४२५ ब।
स्वच्छंद साधु ४.५०३ अ।
स्वच्छदाचार—आहार १ २८८ ब।
स्वच्छाहार—४.५०३ ब।
स्वजाति—जाति २.३२६ ब।
स्वजाति आरोप—उपचार ३ ४१९ ब।
स्वजाति-विजाति-उपचार—उपचार १.४२० अ।
स्वतःसिद्ध—सत् ४.१५९ ब।
स्वतत्त्व—तत्त्व २ ३५३ अ।
स्वतंत्र ४.५०३ ब, कारण-कार्य २.६० अ, २ ७३ अ, गुण २.२४२ अ, द्रव्य २.४६० ब, वस्तु (कारणकार्य) २ ७३ अ, स्वच्छद ४ ५०३ अ।
स्वतंत्र लिंग—चक्रवर्ती ४.१० ब।
स्वतत्रवाद—एकात १ ४६५ ब।
स्वतंत्र विवक्षा—स्याद्वाद ४.४९८ अ।
स्वदार सतोष—ब्रह्मचर्य ३ १८९ ब।
स्वदेश अभिघट दोष—आहार १.२९० ब।
स्वदेश दोष—आहार १ २९० ब, उद्दिष्ट १ ४१३ अ।
स्वद्रव्य—४.५०३ ब, चतुष्टय २.२७८ अ, द्रव्य २.४५३ अ, सप्तभगी ४ ३२१ ब।
स्वद्रव्य रति—उपदेश १.४२४ अ।
स्वद्रव्यादि-ग्राहक नय—नय २ ५४५ ब।
स्वधर्मव्यापकत्व शक्ति—४ ५०३ ब।
स्वनिंदा—निंदा २ ५८८ अ।
स्व-निमित्त—२ ६११ ब।
स्वनिमित्तक उत्पाद आकाश १ २२१ ब, उत्पाद १.३५७ ब।
स्वपक्ष-साधक हेतु—हेतु ४ ५४२ अ।
स्वपर-अवभासक—दर्शनोपयोग २ ४०८ ब।
स्वपर-चतुष्टय—चतुष्टय २ २७८ अ।
स्वपर-चारित्र—चारित्र २ २८० ब।
स्वपर तत्त्व—मोक्षमार्ग ३ ३३६ ब।
स्वपर प्रकाशक—केवलज्ञान २ १५२ ब, ज्ञान २ २५८ ब, २ २५९, दर्शन उपयोग २ ४०८ अ।
स्वपर भेद-विज्ञान—ज्ञान (निश्चय) २ २६७ ब।
स्वपर-विवेक—सम्यग्दर्शन ४ ३५८ ब, ४ ३५९ अ।
स्वपर-स्थान—अल्पबहुत्व १ १५४ ब, १ १५५ अ, १ १७५, भागाभाग ४ ११५।
स्व-पर्याय—पर्याय ३ ४६ ब।
स्वपाक—विद्या ३ ५४४ अ।
स्वप्न—४ ५०४ अ, अतिचार १.४४ ब, निद्रा २ ६०८ ब।
स्वप्न-निमित्तज्ञान—ऋद्धि १ ४४८, निमित्तज्ञान २ ६१३ अ।
स्वप्नसत्य—स्वप्न ४ ५०४ अ।
स्वप्नातिचार अतिचार १.४४ ब।
स्व प्रकाशक—दर्शनोपयोग २ ४०८ अ।
स्वप्रतिभास दर्शनोपयोग २ ४०८ ब।
स्वप्रत्यय उत्पाद—आकाश १.२२१ ब, उत्पाद १ ३५७ ब।
स्वभाव—४ ५०५ ब, अनेकात (सापेक्ष धर्म) १.१०९ अ, करुणा २.१५ अ, कारण २.५४ ब, २.६० अ, काल २.८३ अ, गति २.२३५ ब, गुण २ २४० अ, चतुष्टय २.२७८ अ, चारित्र २ २८२ ब, २.२८३ ब, द्रव्य २.४६० ब, परतत्रवाद ३.१२ अ, परिणमन (कारण) २.६० अ, पर्याय ३.४९ अ, पुद्गल ३.६७ अ, प्रकृति बध ३.८७ ब, भाव ३.२१८ ब, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, विभाव ३.५५७ ब, ३.५५९ अ, ससार ४.१४७ अ, सत् ४.१५९ ब सप्तभगी ४.३२२ ब, सापेक्ष धर्म (अनेकात) १.१०९ अ, सापेक्षधर्म (सप्तभगी) ४.३२२ ब, स्वतन्त्रता (कारण) २.६० अ।

स्वभाव अनित्य नय—नय २.५५२ अ।
स्वभाव क्रिया क्रिया २ १७३ ब।
स्वभाव गति—गति (ऊर्ध्वगति) २.२३५ अ, गति २ २३५ अ, २ २३६ अ, जीव पुद्गल २ २३५ ब।
स्वभावगुणपर्याय—पर्याय ३ ४९ ब।
स्वभाव-गुणव्यजन पर्याय—पर्याय ३ ५० अ।
स्वभावज्ञान—उपयोग १.४३० अ।
स्वभावदर्शन—उपयोग १ ४३० अ।
स्वभावद्रव्यपर्याय—पर्याय ३.४९ अ।
स्वभावद्रव्यव्यजन पर्याय—पर्याय ३ ४९ अ।
स्वभाव नय—नय २ ५२३ ब।
स्वभाव निरपेक्ष—मिथ्यादर्शन ३ ३०१ अ।
स्वभाव-पुद्गल—पुद्गल ३ ६७ अ।
स्वभाववाद—४ ५०७ ब, एकात १ ४६५ अ-ब। नियति वाद २ ६१९ अ, पुरुषार्थवाद (नियति) २ ६१९ अ।
स्वभावविरुद्धानुपलब्धि हेतु—४ ५३८।
स्वभाव-सिद्ध—सतू ४ १५९ ब।
स्वभाव-स्थिति—मोक्षमार्ग ३ ३३५ ब।
स्वभावाराधना—उपयोग १ ४३० ब, धर्म २ ४६७ अ।
स्वमुख-उदय—उदय १ ३६६ अ, १.३६७ अ, १ ३७१ ब।
स्वयंप्रभ—४.५०७ ब, ग्रह २ २७४ अ, तीर्थंकर २ ३७७, २ ३९२, तीर्थंकर सभवनाथ व अभिनन्दन २ ३७८, रुचक वर पर्वत का कूट—निर्देश ३ ४७६ ब, विस्तार ३ ४८७, अंकन ३ ४६८, ३ ४६९, सुमेरु ४ ४३७ अ, सोम लोकपाल का यान ४ ५१३ अ।
स्वयप्रभ पर्वत—जीवो की अवगाहना १ १७८ अ।
स्वयंप्रभा—४ ५०७ ब, कुलकर ४.२३।
स्वयबुद्ध—४.५०७ ब, ४.५०८ अ।
स्वयभू—४.५०८ अ, गणधर २ २१३ अ, जीव २ ३३३ ब, तीर्थंकर २ ३७७, तीर्थंकर कुथुनाथ व पार्श्वनाथ २.३८७, तीर्थंकर वासुपूज्य तथा विमल २ ३९१, नारायण ४ १८ अ, योगदर्शन ३.३८४ अ।
स्वयभू—इतिहास १ ३२९ ब, १.३४१ ब।
स्वयंभूछंद—४ ५०८ अ, इतिहास १.३४१ ब।
स्वयभू-मुखोत्पन्न—ब्राह्मण ३ १९५ अ।
स्वयभूरमण—४ ५०८ अ, द्वीप सागर पर्वत—४.५०८ अ, निर्देश ३ ४६६ ब, नामनिर्देश ३.४७० अ, अवगाहना १.१७९, आयुबंध १.२६१ ब, कर्मभूमि (भूमि) ३ २३५ ब, काल विभाग २.९३, तिर्यंच २ ३७०, द्वीप २.४६२ ब, विस्तार ३ ५०३, अकन ३ ४४३। ज्योतिष चक्र २.३४८ ब, जल का रस ३.४७० अ, अधिपति देव ३.६१४।
स्वयंभूस्तोत्र—४ ५०८ अ, स्तोत्र ४.४४९ अ, इतिहास १ ३४० ब।
स्वयंवर—तीर्थंकर अभिनदननाथ २ ३८०।
स्वयंवर विधि—अकंपन १ ३० ब।
स्वय शोधक—अतिचार १ ४४ ब।
स्वयं हिंसन—हिंसा ४ ५३४ ब।
स्वर—४ ५०८ ब, अक्षर १.३३ अ।
स्वरकीर्ति—नदिसघ भट्टारक १.३२३ ब।
स्वरक्षा—अहिंसा १ २१६ ब।
स्वरनामकर्म प्रकृति—स्वर ४ ५०८ ब। प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २.५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३.१३६। बंध ३ ९७, बधस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १.३७४ अ, उदयस्थान १ ३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १ ४१२, सत्त्व ४ २७८, सत्त्वस्थान ४.३०३, त्रिसभग १ ४०४। सक्रमण ४.८५ अ, अल्पबहुत्व १ १७१, १ १७६।
स्वरनिमित्त ज्ञान—ऋद्धि १.४४८, निमित्तज्ञान २.६१२ ब।
स्वरसेना—व्यंतरेंद्र वल्लभिका ३.६११ ब।
स्वराज्य क्रिया—सस्कार ४.१५२ अ।
स्वरूप—४ ५०८ ब, चारित्र २.२८३ ब, सामायिक ४.४१७ अ।
स्वरूप (देव)—४ ५०८ ब, भूत जातीय व्यतर देव ३ २३४ अ। इन्द्र—निर्देश ३.६११ अ, सख्या ३ ६११ अ, परिवार ३ ६११ ब, आयु १ २६४ ब। यक्ष ३.३६९ अ।
स्वरूप चतुष्टय—सप्तभंगी ४ ३२१ ब।
स्वरूप फल—उदय १.३६६ ब।
स्वरूपलय—मोक्षमार्ग ३.३३५ ब।
स्वरूप विपर्यास—विपर्यय ३.५५६ अ, सम्यग्ज्ञान २ २६४ ब।
स्वरूप संबोधन—४.५०९ अ, अकलक भट्ट १ ३१ अ, इतिहास १.३४१ ब, १.३४७ ब।
स्वरूप संवेदन—दर्शनोपयोग २.४१२ अ।
स्वरूपाचरण चारित्र—४.५०९ अ, अनुभव १.८५ अ। चारित्र २.२८५ अ, चारित्र (संयमाचरण) २.२८० ब।
स्वरूपाभाव—अभाव १.१२८ अ।
स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास—हेत्वाभास १.२१० अ।
स्वरूपास्तित्व—अस्तित्व १.२१२ ब।

स्वर्ग—४.५०९ अ, वैदिकाभिमत स्वर्लोक ३.४३३।

स्वर्गवासी देव—निर्देश २.४४५ ब, ४.५१० ब, अवगाहना १.१८० ब, अवधिज्ञान १.१९८ ब, आयु १.२६८, आयु बंध के योग्य परिणाम १.२५८ ब, कल्याणक २.३२ ब, जन्म २.३१७ अ-ब, त्रायस्त्रिंश २.३९९ ब, सम्यक्त्वादि गुण २.४४८। इन्द्र—निर्देश ४.५१० ब, परिवार ४.५१२, शक्ति आदि ४.५११ अ-ब, दक्षिण उत्तर विभाग ४.५११ अ, देवियाँ ४.५१३। प्ररूपणा—बंध ३.१०२, बंधस्थान ३.११३, उदय १.३७८, उदयस्थान १.३९२ ब, उदीरणा १.४११ अ, उदीरणा-स्थान १.४१२, सत्त्व ४.२८२, सत्त्वस्थान ४.२९८, ४.३०५, त्रिसंयोगीभंग १.४०६ ब। सत् ४.१८९, संख्या ४.९३ ब, ४.९७, क्षेत्र २.१९१, स्पर्शन ४.४८१, काल २.१०४, अन्तर १.१०, भाव ३.२२० अ, अल्पबहुत्व १.१४५।

स्वर्गसिद्ध—अल्पबहुत्व १.१५३।

स्वर्गोत्कृष्ट—राक्षस वंश १.३३८ अ।

स्वर्ण—४.५२२ अ।

स्वर्णकमल—अर्हंतातिशय १.१३७ ब।

स्वर्णकूला (कुंड)—४.५२२ अ, स्वर्णकूला नदी का द्वार—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४९०, अंकन ३.४४७। इसी कुंड में स्थित द्वीप—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४७, वर्ण ३.४७७।

स्वर्णकूला (कूट)—४.५२२ अ, स्वर्णकूला कुंड में स्थित—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४८४, अंकन ३.४४७, वर्ण ३.४७७। शिखरी पर्वत का—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४।

स्वर्णकूला (देवी)—स्वर्णकूला कुंड की—३.४५५ अ, शिखरी पर्वत के कूट की—निर्देश ३.४७२ ब, अंकन ३.४४४।

स्वर्णकूला (नदी)—४.५२२ अ, हैरण्यवत क्षेत्र की महानदी—निर्देश ३.४५६ अ, विस्तार ३.४८९-४९०, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र सं० ३७) जल का वर्ण ३.४७८।

स्वर्णनाभ—४.५२२ अ, विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

स्वर्णभद्र—४.५२२ अ।

स्वर्णमध्य—४.५२२ अ, सुमेरु ४.४३७ अ।

स्वर्णमयी—सुमेरु की परिधि ३.४४९ ब।

स्वर्णरेखा—४.५२२ अ।

स्वर्णवती—४.५२२ अ, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

स्ववचनबाधित—बाधित ३.१८२ ब।

स्ववश—४.५२२ अ, अनुभव १.८३ ब।

स्ववात्सल्य—उपकार १.४१५ ब।

स्वपर विभाग—सम्यग्दर्शन ४.३५६ ब।

स्ववृत्ति—एकाग्रचितानिरोध १.४६६ अ।

स्वसंयोगी—भंग ३.१९७ अ।

स्वसंवेदन—अनुभव १.८१-८७, अनुभव (केवलज्ञान) १.८३ अ, दर्शन (सम्प्रदाय) २.४०६ ब, विकल्प ३.५३८ अ, शुक्लध्यान ४.३४ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५१ ब, ४.३५२ अ, सुख ४.४३१ ब।

स्वसंवेदन ज्ञान—उपयोग १.४३४ ब, ज्ञान (निश्चय) २.२६२ ब, विकल्प (निर्विकल्प) ३.५३८ अ, प्रत्याख्यान ३.१३२ ब, मोक्षमार्ग ३.३३५ ब, सम्यग्दृष्टि ४.३७६ ब।

स्वसंवेद्य सुख—सुख ४.४३१ ब, ४.४३३ ब।

स्वसमय—४.५२२ अ, चारित्र २.२८२ ब, समय ४.३२८ अ।

स्वसमय-उपक्रम—उपक्रम १.४१६ ब।

स्वसमय-प्रवृत्ति—चारित्र २.२८३ ब।

स्वसमय-वक्तव्यता—वक्तव्यता ३.४९६ अ।

स्वसहाय—सत् ४.१५९ ब।

स्वस्तिक—४.५२२ अ। कुंडलवर पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६७। गजदंत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७३ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४, ३.४५७। तीर्थंकर शीतलनाथ २.३७९। देवकुरु का दिग्गजेंद्र—निर्देश ३.४७१ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४। रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ-ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८।

स्वस्तिमति—४.५२२ अ।

स्वस्त्री—स्त्री ४.४५० ब।

स्वस्थ—यदुवंश १.३३६, स्वास्थ्य ४.५२९ अ।

स्वस्थान-अप्रमत्त—उपशम १.४३९ ब।

स्वस्थान-अल्पबहुत्व—अल्पबहुत्व १.१४३-१७६।

स्वस्थान उद्वेलना—सत्त्व ४.२८१.२८२।

स्वस्थान गुणकर—कृष्टि २.१४० ब।

स्वस्थान-गोपुच्छा—गोपुच्छा २.२५४ अ।

स्वस्थान भागाभाग—संख्या ४.११० अ।

स्वस्थान संक्रमण—संक्रमण ४.८४ अ।

स्वस्थान संयत—संयत ४.१३० अ।

स्वस्थान सत्त्व— सत्त्व ४ २७५ अ ।
स्वस्थान-सन्निकर्ष—सन्निकर्ष ४ ३१२ अ ।
स्वस्थान स्वस्थान—क्षेत्र २ १९७-२०७ ।
स्वस्थान-स्वस्थान-अवस्थान—क्षेत्र २ १९२ अ ।
स्वहस्त क्रिया— क्रिया २ १७४ ब ।
स्वहिंसा—हिंसा ४ ५३२ ब ।
स्वहित– हित ४ ५३८ अ ।
स्वाति—४ ५२२ अ, तीर्थंकर २.३८१, नक्षत्र २.५०४ ब, नाभिगिरि का देव ३ ४७१ अ । मानुषोत्तर पर्वत का देव—निर्देश ३ ४७५ अ, अकन ३ ४६४, सस्थान ४.१५३ ब ।
स्वात्मरक्षा—अहिंसा १ २१६ ब ।
स्वात्मा—चारित्र २ २८४ अ । सप्तभंगी ४.३२१ ब ।
स्वाद्य—४ ५२२ अ, आहार १ २८५ अ ।
स्वाधीन—सुख ४.४३२ ब, ४.४३३ अ, स्वाध्याय ४ ५२४ अ ।
स्वाधीन सुख—सुख ४.४३२ ब, ४.४३३ अ ।
स्वाध्याय—४.५२२ ब, कृतिकर्म २ १३७ ब, धर्मध्यान २ ४७८ अ, श्रावक (कायक्लेश) २.४८ अ, सम्यग्दर्शन ४.३६२ ब ।
स्वानुभव—अनुभव १ ८१-८६, सम्यग्दर्शन ४.३५३ ब ।
स्वानुभव दर्पण—४ ५२६ ब ।
स्वानुभूति—सम्यग्दर्शन ४ ३५३ अ ।
स्वानुभूत्यावरण—अनुभव १.८४ ब ।
स्वाभाविक आनंद—मोक्षमार्ग ३.३३६ अ, सुख ४.४३१ ब ।
स्वाभाविक क्रिया—विभाव ३ ५५७ ब ।
स्वाभाविक दुःख—२.४३४ ब ।
स्वाभाविक विमान—विमान ३ ५५३ अ ।
स्वाभाविक स्वभाव—स्वभाव ४ ५०६ ब ।
स्वाभाविकी शक्ति—विभाव ३ ५५८ अ ।
स्वामित्व—४ ५२६ ब, अनुयोग १.१०२ अ, अर्थावग्रह १.१८३ ब, भावपचक ३ २१९ ब, योगस्थान अल्पबहुत्व १ १६२ अ, व्यंजनावग्रह १.१८३ ब ।
स्वामीकुमार—कुमार २ १२९ ब ।
स्वार्थ—४.५२९ अ ।
स्वार्थप्रमाण—प्रमाण ३ १४१ अ-ब ।
स्वार्थाधिगम—अधिगम १.५० ब ।
स्वार्थानुमान—अनुमान १.९७ अ, १.९८ ब ।
स्वार्थी—उपकार १.४१६ अ, ग्रह २.२७४ अ ।
स्वास्तिक—४ ५२९ अ ।
स्वास्थ्य—४ ५२९ अ, अनुभव १.८१ ब, उपयोग १ ४३१ अ ।
स्वाहा—४ ५२९ ब ।
स्वेच्छा—साधु ४ ४०७ ब ।
स्वेच्छाचारी—साधु ४ ४०९ ब स्वच्छंद साधु ४.५०३ अ ।
स्वेदज जीव २ ३३४ अ ।
स्वेदराहित्य अर्हंतातिशय १.१३७ ब ।
स्वेष्टकृत—अज्ञानवाद १ ३८ ब ।
स्वोदयबंधी प्रकृति—उदय १ ३९८ अ, सयोगी प्ररूपणा १ ३९९ ।
स्वोपकार—उपकार १ ४१५ अ-ब ।

ह

हंस—४ ५२९ ब, तीर्थंकर सीमधर भगवान् २.३९२, ब्रह्मेंद्र का यान ४.५११ ब, शुक्लध्यान ४ ३३ अ ।
हंसगर्भ—४.५२९ ब, विद्याधरनगरी ३ ५४५ ब, ३ ५४६ अ ।
हंसद्वीप—राक्षसवंश १ ३३८ अ ।
हंससंप्रदाय—वैशेषिक दर्शन ३.६०९ अ ।
हंससम श्रोता—श्रोता ४ ७४ ब ।
हंस साधु—वेदांत ३.५९५ ब ।
हठवाद—दे० एकांत ।
हत—४.५२९ ब, गणित २.२२२ ब, २.२२३ अ ।
हतसमुत्पत्तिक स्थान—अनुभाग १ ९० अ, अल्पबहुत्व (अनुभाग सत्त्व) १.१६६ अ, अल्पबहुत्व (मोहनीय) १.१७५ ।
हतहत-समुत्पत्तिक स्थान—अनुभाग १ ९० अ ।
हनन—४ ५२९ ब, गणित २.२२२ ब ।
हनुमंतचारित्र—४.५२९ ब, इतिहास १ ३४७ अ ।
हनुमान्—४.५२९ ब, अंजना १ २ अ । मानुषोत्तर पर्वत के कूट का देव ३ ४७५, अकन ३.४६४ ।
हनुरुह द्वीप—४.५२९ ब ।
हयग्रीव—शलाकापुरुष ४ २६ अ ।
हय राय—मंगल ३.२४४ अ ।
हर—गणित २.२२३ ब, शलाकापुरुष ४.२६ अ ।
हरण—४ ५२९ ब ।
हरणवती—मनुष्यलोक ३.२७६ अ ।

हरि—४.५२९ ब, इतिहास (पौराणिक राज्यवश) १.३३५ अ, रघुवश १ ३३८ अ, हरिवश १ ३३९ ब, १ ३४० अ।

हरि (कुड व कूट)—हरित नदी का कुड – निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४९०, अकन ३ ४४७। इस कुड का द्वीप—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३.४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७। इस कुड मे स्थित कूट—निर्देश ३ ४५६ अ, विस्तार ३ ४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७। महाहिमवान् तथा निषध पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, ३.४८५, ३.४८६, अकन ३ ४४४। गजदंतो के कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अकन ३.४४४, ३ ४५७।

हरि (क्षेत्र) – ४.५३० अ, विशेष दे० हरिवर्ष।

हरिकंठ—शलाकापुरुष ४ २६ अ।

हरिकांत—४.५२९ ब, इतिहास (पौराणिक राज्यवश) १ ३३५ अ। विद्युत्कुमारेंद्र—निर्देश ३ २०८ अ, आयु १ २६५, परिवार ३ २०९ अ, निवास ३ २०९ ब। हरिकाता नदी का कुड तथा देवी—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३.४९०, अकन ३ ४४७। महाहिमवान पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, ३ ४८५, ३.४८६, अकन ३ ४४४।

हरिकांता—४ ५३० अ। हरिक्षेत्र की महानदी—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३ ४८९, ३ ४९०, अकन ३ ४४४, ३.४६४ के सामने, जल का वर्ण ३ ४७८। इस नदी का कुड—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४९०, अकन ३ ४४७। इस कुड मे स्थित द्वीप—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४८४, अकन ३.४४७, वर्ण ३ ४७७। इस कुंड मे स्थित कूट—निर्देश ३ ४५५ ब, विस्तार ३ ४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७।

हरिकेतु – चक्रवर्ती ४.११ ब।

हरिगिरि—हरिवश १ ३४० अ।

हरिग्रीव—राक्षस वश १ ३३८ अ।

हरिघोष - कुरुवश १ ३३५ ब, १.३३६ अ।

हरिचंद्र—४.५३० अ, शलाकापुरुष ४.२५ ब, विद्याधर वंश १ ३३९ अ।

हरिचंद्र कवि—इतिहास—प्रथम १.३३० अ, १.३४२ अ, द्वितीय १ ३३२ ब, १ ३४५ ब।

हरिण—तीर्थंकर शातिनाथ २.३७९, तीर्थंकर बाहु २ ३९२, स्वप्न ४ ५०५ अ।

हरिजय—विद्याधरवंश १ ३३९ अ।

हरित—४.५३० अ। हरिक्षेत्र की महानदी—निर्देश ३.४५५ अ, विस्तार ३.४८९, ३ ४९०, अकन ३ ४४४, ३ ४६४ के सामने, जल का वर्ण ३.४७७। इस नदी का कुड – निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४९०, अकन ३ ४४७। इस कुड का द्वीप—निर्देश ३ ४५५ अ, विस्तार ३ ४८४, अकन ३ ४४७, वर्ण ३ ४७७। इस कुंड मे स्थित कूट—निर्देश ३ ४५५ ब, विस्तार ३ ४८४, अकन २ ४४७, वर्ण ३ ४७७।

हरित (स्वर्ग)—सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१७, विस्तार ४ ५१७, अंकन ४ ५१९ ब, देव आयु १ २६७।

हरितप्रभ—लोकपाल ३ ४९१ ब।

हरिताल—४ ५३० अ।

हरितालमयी—सुमेरु की परिधि ३ ४४९ अ-ब।

हरितालवर—द्वीप सागर—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अकन ३.४४३, जल का रस ३ ४७० अ, ज्योतिष चक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४।

हरिदेव (कवि)—४ ६३० अ, इतिहास १ ३३२ ब, १ ३४५ ब।

हरिद्र—सुमेरु के वनमे लोकपाल का भवन—निर्देश अकन ३ ४५० ब, अकन ३ ४५० ब।

हरिद्वती—४ ५३० अ, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

हरिध्वज—कुरुवश १ ३३५ ब, १ ३३६ अ।

हरिनंदि—नदिसघ के भट्टारक १ ३२३ ब।

हरिपुर -प्रतिनारायण ४ २० ब।

हरिभद्र (याकिनीसूनु) - ४ ५३० अ, इतिहास १.३२९ ब, १ ३४१ ब।

हरिभद्र सूरि—४.५३० अ, इतिहास १.३२९ अ, १.३३१ ब, १ ३४१ अ।

हरिमश्रु—४ ५३० अ, एकान्त १ ४६५ ब, क्रियावाद १ २७५ ब।

हरिसम शुक्ल—वैष्णव दर्शन ३ ६०९ ब।

हरिवंश—४ ५३० अ, इतिहास—पौराणिक राज्यवंश १ ३३५ अ, यदुवश १ ३३६, १ ३३९ ब।

हरिवंश गोस्वामी—वैष्णवदर्शन ३.६०९ ब।

हरिवंश पुराण—४ ५३० ब। इतिहास—प्रथम १.२२९ ब, १.३४१ ब। द्वितीय १ ३३३ अ, १.३४३ ब। तृतीय १.३३२ अ। चतुर्थ १ ३४५ ब। पचम १.३४५ ब। षष्ठ १.३४६ अ। सप्तम १.३३३ अ, १.३४६ ब। हिन्दी अनुवाद १.३३३ ब। अष्टम १ ३३४ ब।

हरि वर्मा—४.५३० ब, तीर्थंकर मुनिसुव्रत २ ३७८।

हरिवर्ष—४ ५३० ब, महाहिमवान् तथा निषध पर्वत का

कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अकन ३ ४४४। महा क्षेत्र—निर्देश ३ ४४६ अ, विस्तार ३.४७९, ३ ४८०, ३ ४८१, अंकन ३.४४४, ३ ४६४ के सामने, भोगभूमि ३ २३५ ब, कालविभाग २ ९२ ब, २ ९३, अवगाहना १ १८०, आयु (तिर्यंच) १ २६३, आयु (मनुष्य) १ २६४। चातुर्द्वीपिक भूगोल ३ ४३७ ब, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब।

हरिवाहन—अच्युत १ ४१ अ।

हरिविजय—निषध पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७२ अ, विस्तार ३ ४८३, अंकन ३ ४४४।

हरि व्यासी—वैष्णव दर्शन ३ ६०९ अ।

हरिश्मश्रु—४.५३० अ, एकात १ ४६५ ब, क्रियावाद २.१७५ ब। विद्याधर वश १ ३३९ अ।

हरिषेण—४.५३० ब, चक्रवर्ती ४ १० अ, तीर्थंकर २.३९१। असुरेन्द्र—निर्देश ३.२०८ अ, परिवार ३.२०९ अ, अवस्थान ३.२०९ ब, आयु १ २६५। हरिवंश १ ३४० अ।

हरिषेण (आचार्य)—इतिहास—प्रथम १.३३० अ, १.३४२ अ। द्वितीय १ ३३० ब, १ ३४३ अ।

हरिषेणा—तीर्थंकर शांतिनाथ २.३८८।

हरिसह—गजदत का कूट तथा देव—निर्देश ३ ४७३ अ, विस्तार ३ ४८३, अकन ३ ४४४, ३ ४५७।

हरे फल-फूल—पूजा ३ ७९ ब।

हर्ष—शलाकापुरुष ४.२६ अ।

हर्षवर्धन—४ ५३० ब।

हर्षसेन—काष्ठासंघ भट्टारक १ ३२७ अ।

हल—चक्रवर्ती ४ १३ अ, करणत्रिक २.९ अ।

हलभृत—गणधर २ २१२ ब।

हल्दी—भक्ष्याभक्ष्य ३ २०४ अ।

हल्दी का दाग—लोभ २ ३८ अ।

हलाहल—अनुभाग १ ९० ब।

हस्त—४.५३० ब, क्षेत्र का प्रमाण २ २१५ अ, तीर्थंकर २ ३८३, नक्षत्र २.५०४ ब।

हस्तकर्म—४ ५३० ब, क्रिया २ १७४ ब।

हस्त प्रहेलित—४ ५३० ब, काल का प्रमाण २ २१६ ब, २.२१७ अ।

हस्ति—एकातवाद का उदाहरण १ ४६३ ब, तीर्थंकर मुनिसुव्रत २ ३८२, सौधर्मेद्र तथा ऐशानेद्र का यान ४ ५११ ब, स्वप्न ४ ५०४ अ।

हस्तिनापुर—४ ५३० ब, तीर्थंकर अरनाथ कुंथुनाथ २ ३७९, तीर्थंकर नेमिनाथ २ ३७८, नारायण ४.१८ ब, प्रतिनारायण ४.२० ब, बलदेव ४ १६ ब, मनुष्यलोक ३.२७६ अ।

हस्तिनायक—४.५३० ब, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

हस्तिपानी—४ ५२० ब, मनुष्यलोक ३ २७५ ब।

हस्तिमल—४.५३० ब, इतिहास १.३३२ अ, १ ३४४ अ।

हस्तिसुडासन तप—कायक्लेश २ ४७ ब।

हाथ—४.५३० ब, क्षेत्र का प्रमाण (हस्त) २ २१५ अ।

हाथी—एकातवाद का उदाहरण १ ४६३ ब, तीर्थंकर मुनिसुव्रत २ ३८२, सौधर्मेद्र तथा एशानेद्र का यान ४ ५११ ब, स्वप्न ४ ५०४ अ।

हानि—४ ५३१ अ, सल्लेखना ४ ३९२ ब।

हार—४.५३१ अ, गणित २ २२३ अ-ब, पर्याय ३.४५ ब।

हारजीत—वाद ३ ५३३ ब।

हारित—४ ५३१ अ, एकात १.४६५ ब, क्रियावाद २.१७५ ब।

हारिद्र—४ ५३१ अ, भक्ष्याभक्ष्य (हल्दी) ३.२०४ अ। सौधर्म स्वर्ग का पटल—निर्देश ४ ५१६, विस्तार ४ ५१६, अकन ४ ५१९ ब, देव आयु १.२६७।

हारी—४ ५३१ अ, विद्या ३ ५४४ अ।

हारीत—(हारित) ४ ५३१ अ, एकात १ ४६५ ब, क्रियावादी २ १७५ ब।

हारीति—साख्यदर्शन ४ ३९८ ब।

हार्य—४ ५३१ अ, गणित २ २२३ अ।

हाव—४ ५३१ अ, विभ्रम विलास ३ ५६२ ब।

हास्तिन—४.५३१ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

हास्तिविजय—४ ५३१ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ ब।

हास्य—४ ५३१ अ, कषाय २ ३५ ब, २ ३९ अ, हिंसा ४ ५३४ ब।

हास्य द्विक्—उदय १ ३७४ ब।

हास्य वचन—समिति ४ ३४० ब।

हास्य वेदनीय कर्मप्रकृति—मोहनीय ३ ३४४ ब, हास्य ४ ५३१ अ। प्ररूपणा—प्रकृति ३ ८८, ३ ३४४ ब, स्थिति ४ ४६१, अनुभाग १.९४, प्रदेश ३ १३६। बंध ३.९३, ३.९४, ३ ९६ ब, ३ ९७, बध की कालावधि का अल्पबहुत्व १ १६१, बधस्थान ३ १०९, उदय १.३७५, उदयस्थान १ ३८९, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४ ३७८, सत्त्वस्थान ४ २९६, स्थिति सत्त्वस्थानो का अल्पबहुत्व १.१६५ ब, त्रिसयोगीभंग १ ४०१ ब। सक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १ १६८।

हाहांग—४.५३१ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ।

हाहा—४ ५३१ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, २ २१७ अ, गंधर्व जाति का व्यंतर देव २ २११ अ।

हिंगुल—४ ५३१ अ।

हिंगुलवर—द्वीप सागर—निर्देश ३ ४७० अ, विस्तार ३ ४७८, अंकन ३ ४४३, जल का रस ३.४७० अ, ज्योतिषचक्र २ ३४८ ब, अधिपति देव ३ ६१४।

हिंसक—अहिंसा १ २१७ अ, अहिंसा (प्रमत्त) १ २१६ अ।

हिंसा—४ ५३१ अ, अध्यवसान १ ५३ अ, कषाय २.३५ अ, अशुद्धोपयोग (अहिंसा) १ २१६ ब, १ २१७ ब, अहिंसा १ २१६ अ-ब, १.२१७ अ-ब, परिग्रह ३.२५ ब, श्रावक ४ ५० ब।

हिंसाऽभाव—अर्हतातिशय १.१३७ ब।

हिंसात्व—परिग्रह ३ २५ ब।

हिंसादान—अनर्थदंड १.६३ ब।

हिंसा दोष—श्रावक ४ ४९ अ।

हिंसानंद—रौद्रध्यान ३ ४०७ अ।

हिंसानंदी—रौद्रध्यान ३ ४०७ ब।

हिंसायज्ञ—यज्ञ ३ ३६९ ब।

हिंसाशुद्धि—श्रावक ४ ४९ अ।

हिजरी सवत्—इतिहास १ ३०९ ब।

हित—४ ५३७ अ, उपदेश १.४२४ ब, १ ४२५ अ, १.४२६ ब, मिथ्यादृष्टि ३ ३०५ ब, समिति ४.३४० अ-ब।

हितकारक वचन—४ २७० ब।

हिताहित वचन—सत्य ४.२७२ ब।

हितोपदेश—उपदेश १.४२४ ब, १.४२५ अ, १ ४२६ ब।

हिम—४ ५३७ अ। नरकपटल—निर्देश २.५७९ ब, विस्तार २ ५७९ ब, अंकन ३.४४१। नारकी अवगाहना १ १७८, आयु १ २६३।

हिमगिरि—हरिवंश १.३४० अ।

हिमनाथ—तीर्थंकर शीतलनाथ २ ३८२।

हिमपुर—४ ५३७ अ, विद्याधर नगरी ३ ५४५ अ।

हिमपुष्टि—यदुवंश १ ३३७।

हिमवत्—४ ५३७ अ।

हिमवान्—४ ५३७ अ, चक्रवर्ती ४ १५ ब, यदुवंश १ ३३७।

हिमवान् (पर्वत)—४.५३७ अ। जैन मान्यता—निर्देश ३ ४४६ ब, विस्तार ३ ४८२, ३.४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४ के सामने, ३.४६४ के सामने, वर्ण ३ ४७७। तुलना ३ ४३६ ब, चातुर्द्वीपिक भूगोल ३ ४३७ ब, बौद्धाभिमत ३.४३४ ब, वैदिकाभिमत ३.४३१ ब।

हिमवान (कूट तथा देव)—कुंडलवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७५ ब, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६७। पद्महृद का कूट—निर्देश ३ ४७४ अ, विस्तार ३ ४८३, ३.४८५, ३ ४८६, अंकन ३.४५४। सुमेरु के वन का कूट—निर्देश ३ ४७३ ब, विस्तार ३ ४८३, ३.४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४१। हिमवान् पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३ ४८५, ३ ४८६, अंकन ३ ४४४ के सामने।

हिमशीतल—४ ५३७ अ, अकलंक भट्ट १ ३१ अ।

हिरण—स्वप्न ४ ५०५ अ।

हिरण्य—४ ५३७ ब।

हिरण्यकशिपु—४.५३७ ब, इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब।

हिरण्यगर्भ—४ ५३७ ब, इक्ष्वाकुवंश १ ३३५ ब, योगदर्शन ३.३८४ अ।

हिरण्यनाभ—४ ५३७ ब।

हिरण्योत्कृष्ट जन्मता—संस्कार ४.१५२ अ।

ही—एकांत १.४६०-४६२।

हीन—४.५३७ ब, गणित २.२२२ ब, व्युत्सर्ग दोष ३.६२२ अ, ३ ६२३ अ।

हीनयान—बौद्धदर्शन ३.१८७ अ।

हीनाधिक मानोन्मान—४ ५३७ ब, अस्तेय व्रतातिचार १.२१३ ब।

हीयमान—४ ५३७ ब, अवधिज्ञान १.१८७ ब, १.१९३ ब।

हीराचंद—४ ५३७ ब, इतिहास १ ३३४ अ।

हीरानंद—४ ५३७ ब।

हीलित—४ ५३७ ब।

हुंकार—व्युत्सर्ग ३.६२२ अ।

हुंडकसंस्थान—संस्थान ४.१५४ ब।

हुंडकसंस्थान नामकर्म प्रकृति—प्ररूपणा—प्रकृति ३.८८, २ ५८३, स्थिति ४ ४६३, अनुभाग १ ९५, प्रदेश ३ १३६, बंध ३.९७, बंधस्थान ३.११०, उदय १ ३७५, उदय की विशेषता १.३७४ अ, उदयस्थान १.३९०, उदीरणा १ ४११ अ, उदीरणास्थान १.४१२, सत्त्व ४.२७८, सत्त्वस्थान ४ ३०३, त्रिसंयोगीभंग १.४०४। संक्रमण ४ ८५ अ, अल्पबहुत्व १.१६९ अ।

हुंडावसर्पिणी—काल २.९१, चक्रवर्ती ४.१६ ब, जन्म २ ३१४ ब।

हुल्लराज—४ ५३७ ब, नंदिसंघ १.३२५।

हूनवंश—४.५३७ ब, कल्की २.३० ब, इतिहास १.३११ अ-ब, १.३१५।

हूहू—४.५३७ ब, काल का प्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ। गन्धर्व जातीय व्यंतर देव २.२११ अ।

हूहू अंग—४.५३८ अ, काल का प्रमाण २.२१६ अ, २.२१७ अ।

हूहूक—काल का प्रमाण २.२१६ अ।

हूहूकांग—काल का प्रमाण २.२१६ अ।

हृदयकमल—पदस्थ ध्यान ३.६ ब।

हृदयंगम—४.५३८ अ, किन्नर जातीय व्यंतर देव २.१२४ ब।

हृदयावली—विभंगा नदी—निर्देश ३.४५६ अ, ३.४६० अ, नामनिर्देश ३.४७४ ब, विस्तार ३.४८९, ३.४९०, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चि० स० ३७)।

हृविक—यदुवंश १.३३६।

हृदिनंदि—नदिसंघ भट्टारक १.३२३ ब।

हेतु—४.५३८ अ, अनुमान अवयव १.९८ ब, कारण २.५४ अ, न्याय २.६३३ ब।

हेतुतत्त्व—धर्माधर्म २.४८८ ब, २.४९०।

हेतुबिंदु टीका—अर्चट १.१३४ ब।

हेतुमत—हेतु ४.५४० ब।

हेतुवाद—पद्धति ३.८ ब, श्रुतज्ञान ४.६० अ, हेतु ४.५४० ब।

हेतुवाद समर्थन—आगम १.२३७ ब।

हेतुविचय—धर्मध्यान २.४८० अ।

हेत्वंतर—४.५४१ ब।

हेत्वंतर निग्रहस्थान—हेत्वंतर ४.५४१ ब।

हेत्वाभास—अज्ञातासिद्ध १.२१० अ, असिद्ध १.२०९ ब, आश्रयासिद्ध १.२१० अ, एकदेशासिद्ध १.२१० अ, न्याय २.६३३ अ, व्याप्यासिद्ध १.२१० अ, सन्दिग्धासिद्ध १.२१० अ, स्वरूपासिद्ध १.२१० अ, हेतु ४.५४० ब, ४.५४१ अ।

हेम (वैद्यराज)—हरिदेव ४.५३० अ।

हेमकीर्ति भट्टारक—नदिसंघ १.३२३ ब, १.३२४ अ।

हेमकूट—विद्याधर नगरी ३.५४५ अ।

हेमग्राम—४.५४१ ब।

हेमचंद्र—४.५४१ ब। प्रथम—काष्ठासंघ १.३२७ अ, इतिहास १.३३० अ। द्वितीय (श्वे० हेमचंद्र सूरि)—स्तोत्र ४.४४९ ब, इतिहास १.३३१ अ, १.३४३ ब, तृतीय—इतिहास १.३४४ अ।

हेममाला—व्यन्तरेंद्र वल्लभिका ४.५१३ ब।

हेमरथ—इक्ष्वाकुवंश १.३३५ ब।

हेमराजपांडे—४.५४२ अ, इतिहास १.३३४ अ।

हेय—मिथ्यादृष्टि ३.३०५ ब, ३.३०६ ब, सम्यग्दर्शन ४.३५६ ब।

हेयबुद्धि—सम्यग्दर्शन ४.३५६ ब।

हेलित—व्युत्सर्ग दोष ३.६२३ अ।

हैमवत् (कूट)—४.५४२ अ, रुचकवर पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७६ अ, विस्तार ३.४८७, अंकन ३.४६८। सुमेरु के वन का कूट—निर्देश ३.४७३ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, अंकन ३.४५१। हिमवान् पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, अंकन ३.४४४ के सामने।

हैमवत् (क्षेत्र)—४.५४२ अ, निर्देश ३.४४६ अ, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने। अवगाहना १.१८०, आयु (तिर्यंच) १.२६३, आयु (मनुष्य) १.२६४, काल विभाग २.९२ अ, २.९३, भोगभूमि ३.२३५ ब।

हैमी नाममाला—(अभिधानचिन्तामणि) इतिहास १.३४३ ब।

हैरण्यवत् (कूट)—४.५४२ अ, शिखरी पर्वत का कूट तथा देव—निर्देश ३.४७२ ब, विस्तार ३.४८३, ३.४८[illegible] अंकन ३.४४४ के सामने।

हैरण्यवत् (क्षेत्र)—४.५४२ अ, निर्देश ३.४४६ अ, विस्तार ३.४७९, ३.४८०, ३.४८१, अंकन ३.४४४ के सामने। अवगाहना १.१८०, आयु (तिर्यंच) १.२६३, आयु (मनुष्य) १.२६४, कालविभाग २.९२ ब, २.९३, भोगभूमि ३.२३५ ब। चातुर्द्वीपिक भूगोल ३.४३७ ब, वैदिकाभिमत हिरण्यमय क्षेत्र ३.४३१ ब।

होय्सल—४.५४२ ब।

होलीरेणुकाचरित्र—४.५४२ ब, इतिहास १.३३३ ब, १.३४७ अ।

ह्यूनसांग—४.५४२ ब।

ह्रद—४.५४२ ब, प्रत्येक वर्षधर पर्वत पर स्थित—निर्देश ३.४४६ ब, ३.४५३ ब, विस्तार ३.४९०, ३.४९१, अंकन ३.४४४, ३.४६४ के सामने (चित्र स ३७), चित्र ३.४५४, गणना ३.४४५ अ, ३.४७४ अ।

ह्रस्व—४.५४२ ब, अक्षर १.३३ अ।

ह्रीं—पदस्थध्यान ३.७ अ।

ह्री (कूट)—४.५४२ ब, महाहिमवान पर्वत का कूट—निर्देश ३.४७२ अ, विस्तार ३.४८३, ३.४८५, ३.४८६, अंकन ३.४४४।

ह्री (देवी)—४.५४२ ब, महापद्म ह्रद की देवी—निर्देश ३.४५३ ब, परिवार ३.६१२ अ, मध्यलोक मे अवस्थान ३.६१४ अ, भवन का विस्तार ३.६१५, आयु १.२६५। महाहिमवान् पर्वत के कूट की देवी—निर्देश ३.४७२ अ, अकन ३.४४४। रुचकवर पर्वत की दिक्कुमारी—निर्देश ३.४७६ अ, अकन ३.४६८, ३.४६९।

ह्रीमत—४.५४२ ब, मनुष्यलोक ३.२७५ ब।

□

शब्दानुक्रमणिका में छूटे हुए शब्द

आकाशपुष्प—२.२२४ ब, असत्, अविद्यमान।
आकाशभूत—१.२२४ ब, भूत जाति के व्यन्तरदेव।
इकट्ठी—१ ३०७ ब, बादाल सख्या।
उज्ज्वल—१ ३५३ अ, विद्युत्प्रभ गजदन्त पर स्थित शतउज्ज्वल कूट तथा देव का नाम।
उत्पादनोच्छेद—१.३५६ ब, एक प्रकार का व्युच्छेद ।
उत्पादलब्धिस्थान—१.३५६ ब, एक प्रकार का लब्धिस्थान।
उत्तरोत्तर—१.३५६ ब, गणित प्रकरण से सम्बन्धित।
उपासकाचार—१.४४४ ब, एक श्रावकाचार।
ऋषि मन्त्र—१ ४५८ अ, मन्त्र विशेष।
कंटकद्वीप—२.१ अ, लवण समुद्र में स्थित एक अन्तर्द्वीप।
क्षायिक सम्यग्ज्ञान—२ १८६ अ, दे सम्यग्ज्ञान।
घनप्रायोगिक शब्द—२ २७४ ब, दे शब्द।
घोषप्रायोगिक शब्द—२ २७५ अ, दे. शब्द।
चन्द्रकल्याणकव्रत—२.२७५ ब, दे. कल्याणकव्रत।
चतुःशिर—२ २७७ ब, दे नमस्कार।
चलितप्रदेश—२.२७९ ब, दे. जीव।
चारक्षेत्र—२ २८० अ, दे विहार-क्षेत्र।
जलशुद्धि—२.३२६ अ, दे. जलगालन।
जसफल—२ ३२६ ब, दे. जयपाल।
जाग्रत—२ ३२६ ब, दे. निद्रा।
जाति आर्य—२.३२८ अ, दे. आर्य।
जैनाभिषेक—२.३४५ अ, दे. पूजापाठ।
जोइंदु—२ ३४५ अ, दे. योगेदु।
ज्ञानवाद—२.२७० अ, दे वाद।
तत्प्रायोगिक शब्द—२ ३५७ अ, दे शब्द।
तद्व्यतिरिक्त संयमलब्धिस्थान—२.३५७ अ, दे लब्धि।
तिर्यक्क्रम—२.३७१ अ, दे क्रम/१।
तीर्थकृद्भावना क्रिया—२ ३९३ ब, दे सस्कार/२।
तृतीय भक्त—२ ३९४ अ, दे प्रोषधोपवास/१।
त्रिराशि गणित—२.४०० अ, दे. गणित/II/४
दत्ति—२.४०२ अ, दे. दान।
दिक्व्रत—२ ४२८ ब, दे. दिग्व्रत।
दिव्यलक्षणपंक्तिव्रत—२ ४३३ ब, दे. पक्तिव्रत।
दीर्घस्वर—२ ४३४ अ, दे अक्षर।
दुगुंछा—२.४३६ ब, दे. जुगुप्सा।
देवारण्यक—२.४५० अ, पूर्व विदेह के वनखण्ड। दे. लोक ३.६१४।
देशचारित्र—२.४५० ब, दे सयतासयत।
दोहासार—२ ४५१ ब, दे. योगसार स./३।
द्योतन—२.४५२ अ, दे. उद्योत।
द्वारपाल—२ ४६२ अ, दे लोकपाल।
धर्मानुकम्पा—२ ४८७ ब, दे. अनुकम्पा।
धर्मी—२ ४९० ब, दे. पक्ष।
धूलिकलशाभिषेक—२ ४९२ अ, दे. प्रतिष्ठा-विधान।
ध्रुवमतिज्ञान—२.५०२ ब, दे. मतिज्ञान/४।
ध्रुववर्गणा—२.५०३ अ, दे. वर्गणा।
नरकायु—२ ५८० अ, दे. आयु/३।
नाग्न्य—२.५८२ अ, दे. अचेलकत्व
नास्तित्व भंग—२.५८५ ब, दे. सप्तभंगी/४।
नास्त्वि स्वभाव—२.५८५ ब, दे असत् स्वभाव, अन्य का अन्य रूप से न होना।
निजगुणानुस्थान—२.६०७ अ, दे परिहार प्रायश्चित्त।
निह्नव—२.६१० अ, ज्ञान का अपलाप करना, छिपाना।
निर्दोषसप्तमीव्रत—२.६२४ ब, दे. नंदसप्तमीव्रत।
निर्लाछन कर्म—२.६२५ ब, दे. सावद्य/५।
निर्वाह—२.६२६ अ, दे. निर्वहण।
निर्विष—२.६२७ ब, दे. निर्विष नाम की एक ऋद्धि (आस्यनिर्विष, दृष्टिनिर्विष)।
निषध ह्रद—२.६२८ ब, देवकुरु का एक ह्रद।
निस्तारक मन्त्र—२.६२९ ब, दे. मन्त्र/१/६।
पंचकल्याणकव्रत—३.१ अ, दे. कल्याणकव्रत।
पत्नी—३.३ ब, दे. स्त्री।
परंपराश्रय हेत्वाभास—३.११ ब, दे. अन्योन्याश्रय।
परमार्थ प्रत्यक्ष—३.२२ ब, दे. प्रत्यक्ष/१।
परस्पर कल्याणकव्रत—३.२३ ब, दे. कल्याणकव्रत।
परिग्रहानन्दी रौद्रध्यान—३.३० अ, दे. रौद्रध्यान।
परिग्राहिकी क्रिया—३ ३० अ, दे क्रिया/३/८
परिणामप्रत्यय प्रकृतियाँ—३.३२ ब, दे. प्रकृतिबन्ध/२।
परिणामशुद्ध प्रत्याख्यान—३.३२ ब, दे. प्रत्याख्यान/१।
पांड्रय—३.५२ अ, आर्यखण्ड स्थित मध्यप्रदेश।
पातालवासी—३.५२ अ, लवण आदि समुद्रो में रहनेवाले।
पानांगकल्पवृक्ष—३.५३ ब, दे. वृक्ष/१।
पिष्टपेसन—३.५९ अ, दे अतिप्रसग।
पुद्गल परिवर्तन—३ ६८ ब, दे. ससार/२।
पुरुस्कार परिषह—३.७१ ब, दे. सत्कार।
पूर्वज्ञान—३.८३ ब, दे. श्रुतज्ञान/III/१।
पृच्छनी भाषा—३.८३ ब, दे. भाषा।

प्रकारक सूरि—३.८६ अ, दे प्रकुर्वी।
प्रज्ञापन नय—३.११४ अ, दे नय/I/५।
प्रज्ञापिनी भाषा—३ ११४ ब, दे भाषा।
प्रच्छना—३ ११४ ब, दे. पृच्छना।
प्रत्यक्षबाधित पक्षाभास—३ १२४ अ, दे. बाधित।
प्रत्यक्षबाधित हेत्वाभास—३.१२४ अ. दे बाधित।
प्रत्ययिक बन्ध—३.१३१ अ, दे बन्ध/१।
प्रमाण सप्तभंगी—३.१४५ ब, दे सप्तभगी/२।
प्रयोगबन्ध—३.१४६ ब, दे बन्ध/१।
प्रलाप—३.१४७ ब, दे. वचन।
प्रवालचारणऋद्धि—३ १४८ ब, दे. ऋद्धि/४।
प्रव्रज्याकाल—३ १५१ अ, काल/१।
प्रव्रज्याक्रिया—३. १५१ अ, दे सस्कार/२।
प्रव्रज्यागुरु—३ १५१ अ, दे गुरु/३।
प्रशस्त उपशम—३.१५१ ब, दे उपशम/१।
प्राभृतकज्ञान—३.१५६ ब, दे श्रुतज्ञान/II/१।
प्राभृतकसमासज्ञान—३.१५७ ब, दे श्रुतज्ञान/II/१।
प्रायोगिक शब्द—३.१६२ अ, दे शब्द।
प्लवंग संवत्—३.१६७ अ, दे इतिहास/२।
बध वचन—३.१८० ब, दे वचन।
बध्यमान आयु—३.१८० ब, दे आयु।
बाह्य उपकरण इन्द्रिय—३.१८३ ब, दे. इन्द्रिय/१।
बाह्य निर्वृति इन्द्रिय—३ १८३ ब, दे. इन्द्रिय/१।
ब्रह्म ऋषि—३ १८८ अ, दे ऋषि।
भाटक जीविका—३.२१६ अ, दे सावद्य/५।
भिन्न अंकगणित—३ २३३ ब, दे गणित/II/१।
भेदग्राही शब्दनय—३.२३७ अ, दे. नय/III/१/६।
मंडलीक वायु—३ २४५ अ, दे. वायु।
मंत्रन्यास—३ २४८ ब, दे प्रतिष्ठाविधान।
मंद—३.२४८ ब, दे. तीव्र।
मंदराभिषेक क्रिया—३.२४८ ब, दे. सस्कार/२।
मनशुद्धि—३.२७२ ब, दे शुद्धि।
मनोदंड—३.२७६ अ, दे योग/१।
मनोविनय—३.२७८ ब, दे. विनय/१।
मरणभय—३.२८८ अ, दे भय।
मशकपरिषह्—३.२८९ अ, दे. दशपरिषह।
मसिकर्म—३.२८९ अ, दे. सावद्य/३।
महातप ऋद्धि—३ २९० अ, दे. ऋद्धि/५।
महामह—३.२९० ब, दे पूजा।
माय—३.२९६ अ, आगमस्वरूप।
मायावाद—३ २९६ ब, दे. वेदान्त/२।
मिथ्यादर्शन शल्य—३.३०१ ब, दे शल्य।
मिष्ट संभाषण—३.३१० ब, दे सत्य।
मुखपटविधान—३ ३१३ ब, दे प्रतिष्ठा विधान।
मृषामन—३.३१९ ब, दे मन।
मृषावचन—३.३१९ ब, दे वचन।
मोष मन—३ ३४० अ, दे. मनोयोग।
युग्मचतुष्टय—३ ३७३ अ, दे अनेकान्त/४।
राजवंश—३ ४०० ब, दे. इतिहास/३।
रेवस्या—३.४०६ ब, आर्यखण्ड की एक नदी।
रेशम—३.४०६ ब, दे वस्त्र।
रूपरेखा—३.४०५ ब, outline
लयनकर्म—३.४१५ ब, दे निक्षेप/४।
लौंच—३ ४९३, अ, दे. केशलोच।
वचनबाधित—३ ४९८ ब, दे. बाधित।
वचनविनय—३.४९८ ब, दे. विनय/१।
वचनातिचार—३ ४९८ ब, दे. अतिचार।
वचनोपगत—३ ४९८ ब, दे निक्षेप/५।
वाल्हीक—३.५३६ अ, भरतक्षेत्र का एक प्रदेश (दे. मनुष्य/४)।
वास्तु—३.५३६ अ, गृह सम्बन्धी शिल्पविद्या।
विद्युच्चोर—३.५४६ ब, दे विद्युत्प्रभ/६।
विद्युन्माला—३.५४६ ब, पश्चिम पुष्करार्द्ध का मेरु।
विधिचंद—३ ५४७ अ, कवि बुधजन।
विपतत्त्व—३.५५५ अ, दे. गरुड तत्त्व।
विपरीत दृष्टान्त—३.५५५ ब, दे. दृष्टान्त।
विपर्यास—३.५५६ अ, दे विपर्यय।
विमिचिता—३ ५६३ ब, विजयार्ध की दक्षिण श्रेणी का एक नगर।
विराग विचय—३ ५६४ अ, दे. धर्मध्यान/१।
विश्वास—३.५७० ब, दे. श्रद्धान।
विषय व्यवस्था हानि—३.५७० ब, दे. हानि।
विष संरक्षण ध्यान—३ ५७० ब, दे. रौद्रध्यान।
विसदृश प्रत्यभिज्ञान—३ ५७२ ब, पूर्व ज्ञानरूप न होना।
वीचार—३ ५७५ ब, दे विचार।
वीचारस्थान—३.५७५ ब, दे स्थिति/१।
वीरशासन दिवस—३.५७६ ब, दे. महावीर।
वृद्ध—३.५८१ अ, गुणो मे वृद्धि को प्राप्त।
वेद्य—३ ६०१ ब, दे. वेदना/१।
वैतृष्णा—३.६०४ ब, दे उपेक्षा।
वैधर्म्यसमा—३.६०५ ब, दे साधर्म्यसमा।
व्यतिरेकी हेतु—३ ६१६ ब, दे. हेतु।
व्यवस्था हानि—३.६१७ ब, दे. हानि।
व्यवहार द्रव्य—३ ६१७ ब, दे नय/V/४/२/४
व्युदास—३.६२४ अ, दे. अभाव।
शक्ति तत्त्व—४.२ अ, दे शैवदर्शन।
शन्मुख—४ २ ब, भ. वासुपूज्य का शासक यक्ष।

शब्द पुनरुक्त निग्रह स्थान—४.४ ब, दे पुनरुक्त।
शरीर मद—४.८ ब, दे मद।
शरीर मिश्रकाल—४.८ ब, दे काल/१।
शामिला यव मध्य—४ २७ ब, दे. यव।
शास्त्राभ्यास—४ २८ ब, दे स्वाध्याय।
शिखाचारण ऋद्धि—४ २८ ब, दे. ऋद्धि/४।
शीतगुह—४ ३० अ, भरतक्षेत्र मे मलयगिरि के निकट का एक पर्वत।
शीतभोगतप—४.३० अ, दे कायक्लेश।
शील कल्याणकव्रत—४ ३१ अ, दे कल्याणकव्रत।
शीलांक—४ ३१ अ, नवागवृत्ति के कर्ता श्वेताम्बराचार्य।
श्यामवर—४.४३ ब, मध्यलोक का तेरहवॉ द्वीप व सागर।
शृंखलित—४ ४३ ब, कायोत्सर्ग का एक अतिचार।
श्रुतमूढ—४ ७१ अ, दे मूढ।
श्रुतिकल्याणव्रत—४ ७१ ब, दे कल्याणकव्रत।
श्वस्ना धारणा—४.७६ अ, दे वायु।
षंड—४.८१ अ, दे नपुसक।
षट्काल—४.८१ अ, दे काल/४।
संकलन धन—४.८२ अ, दे गणित/II/१/३।
संकलन वार—४.८२ ब, दे. गणित/II/१।
संघातज्ञान—४.१२४ अ, दे. श्रुतज्ञान/II।
संथारा—४.१२५ ब, दे सस्तर।
संदिग्धानेकान्तिक हेत्वाभास—४.१२५ ब, दे व्यभिचार।
संपृच्छिनी दोष—४.१२५ ब, दे. भाषा।
संमत सत्य—४.१२६ ब, दे सत्य/१।
संयमी—दे सयत।
संशयानेकान्तिक हेत्वाभास—४ १४६ अ, दे. व्यभिचार।
संशयासिद्ध हेत्वाभास—४.१४६ अ, दे. असिद्ध।
सकलचन्द्र—४.१५६ ब, दे इतिहास/७/५।
सकल विधि विधान—४ १५६ ब, दे. पूजापाठ।
सचित्त संमिश्र—४.१५८ ब, दे. सचित्त/३।
सत्कर्मिक—४.२७० अ, दे सत्त्व।
सत्वाद—४ २७० अ, कपिलादिका मत है कि कारण व्यापार से पूर्व भी कार्य सत् ही है।
सत्संगति—४ २७० अ, दे. सगति।
सत्योपचार—४.२७४ अ, दे. उपचार/१।
सत्त्वकाल—४ ३११ अ, दे काल/१/६।
सप्त व्यसन—४.३२६ ब, दे व्यसन।
समवायिनी क्रिया—४.३३५ ब, दे. क्रिया/३।
समुत्पत्तिक बन्धस्थान—४ ३४२ ब, दे. अनुभाग/१।
सम्मेदाचल माहात्म्य—४ ३४४ अ, प. मनरगलाल कृत छन्दबद्ध रचना।
सम्यक्त्व प्रकृति—४ ३४४ अ, दे मोहनीय/२।
सम्यक्त्व लब्धि—४.३४४ अ, दे. लब्धि/१/३।
सम्यक् मिथ्यात्व गुणस्थान—४.३४४ अ, दे., मिश्र।
सम्यग्दर्शन क्रिया—४.३७३ ब, दे क्रिया/३।
सरःशोष कर्म—४.३७६ अ, दे. सावद्य/५।
सरस्वती पूजा—४.३७६ अ, दे. पूजा।
सर्वघाती प्रकृति—४.३७६ ब, दे अनुभाव/४।
सर्वघाती स्पर्धक—४.३७६ ब, दे स्पर्धक।
सर्वतोभद्रपूजा—४ ३७६ ब, दे पूजा/१।
सहज विपर्यय—४.३६८ अ, दे. विपर्यय।
सहवृत्ति—४ ३६८ अ, दे तादात्म्य सम्बन्ध।
सांपराय—४ ४०० अ, दे सपराय।
सांशयिक मिथ्यात्व—४ ४०० अ, दे. संशय।
साधनमन्त्र—४ ४०१ अ, दे. मन्त्र/१/६।
साधन विकल—४ ४०१ अ, दे दृष्टान्त/१/८।
साध्य विकल्प—४ ४११ अ, दे. दृष्टान्त/८।
साध्य विरुद्ध—४ ४११ अ, दे. विरुद्ध।
सान्निपातिक भाव—४.४११ अ, दे सन्निपातिक भाव।
सिद्धार्था—४.४२८ ब, एक विद्या।
सुखमा काल—४.४३४ ब, दे. काल/४।
सुप्त—४.४३५ अ, दे. निद्रा।
सुरलोक—४ ४३७ अ, दे. स्वर्ग/५।
सुषिर प्रायोगिक शब्द—४.४३८ अ, दे शब्द/१।
सूक्ष्मा वाणी—४.४४२ अ, दे भाषा।
स्थितिबंधोत्सरण—४.४७० ब, दे. उत्कर्षण/५।
स्थितिसत्त्वापसरण—४.४७० ब, दे. अपकर्षण/३।
स्वतन्त्रता—४.५०३ ब, द्रव्य, गुण, पर्याय स्वतन्त्र है।
स्वात्मनि क्रिया विरोध—४.५२२ अ, दे. विरोध।
हड्डी—४.५२६ ब, दे. अस्थि।
हत्या—४.५२६ ब, आत्महत्या, मरण।
हित संभाषण—४.५३७ अ, दे. सत्य/२।